देशी शब्दकोश

जे लक्खणे ण सिद्धा ण पसिद्धा सक्कयाहिहाणेसु।
ण य गउणलक्खणासत्तिसंभवा ते इह णिबद्धा॥

— आचार्य हेमचन्द्र

वाचना-प्रमुख
आचार्य तुलसी

प्रधान-संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

देशी शब्दकोश

वाचना-प्रमुख
आचार्य तुलसी

प्रधान सम्पादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादक
मुनि दुलहराज

सहयोगी

साध्वी अशोकश्री
साध्वी विमलप्रज्ञा
साध्वी सिद्धप्रज्ञा
समणी कुसुमप्रज्ञा

जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं—३४१ ३०६

प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया

प्रकाशन वर्ष :
विक्रम सम्वत् २०४५
मार्च १९८८

पृष्ठांक : ५७०+६८

मूल्य : १००-०० रुपये
१२ डालर (U.S.A.)

मुद्रक :
मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

DEŚĪ ŚABDAKOŚA

Vācanā Pramukha
ĀCĀRYA TULSĪ

Chief Editor
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJÑA

Editor
Muni Dulaharāj

Assistants

Sādhvī Aśokaśrī
Sādhvī Vimalprajñā
Sādhvī Siddhaprajñā
Samaṇī Kusumprajñā

JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI
Ladnun—**341 306**

Managing Editor :
Shrichand Rampuria,

Year of Publication :
Vikram Saṁvat 2045
March 1988

Pages : **570+68**

Price : **Rs. 100**
$ 12

Printers :
JAIN VISHVA BHARATI PRESS,
[Established through the financial co-operation of Mitra Parishad, Calcutta)
Ladnun (Rajasthan)

आशीर्वचन

शब्दकोश का निर्माण जितना कठिन है, उसका उपयोग उतना ही महत्वपूर्ण है। संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, हिन्दी, राजस्थानी आदि सभी भाषाओं के शब्दकोश उपलब्ध हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने संस्कृत शब्दकोश अभिधान-चिन्तामणि के साथ देशी नाममाला की भी रचना की। इसके अतिरिक्त देशी शब्दों का कोई स्वतंत्र कोश प्राप्त नहीं है। आगम और उसके व्याख्या साहित्य में प्राकृत के साथ देशी शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है। उस साहित्य के देशी शब्दों का चयन करना और उनके प्रामाणिक अर्थ का निर्णय करना काफी दुरूह काम था। पर हमारे आगम सम्पादन कार्य में संलग्न साधु-साध्वियां कठिन काम करने के अभ्यस्त हो चुके हैं। इस काम के लिए हमने विशेष रूप से साध्वियों को निर्देश दिया। लगभग पांच वर्ष के बाद उनके श्रम ने एक रूप लिया और 'देशी शब्दकोश' सुसम्पादित होकर सामने आ गया। इस कार्य में प्रवृत्त साध्वी अशोकश्री, विमलप्रज्ञा, और सिद्धप्रज्ञा तथा समणी कुसुमप्रज्ञा के श्रम को संवारने में मुनि दुलहराज ने पूरा समय लगाया। वह इस काम के साथ नहीं जुड़ता तो संभव है इसकी निष्पत्ति में कुछ और अवरोध आ जाता। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे विनीत साधु-साध्वियां पूरे मनोयोग के साथ साहित्य-सेवा अथवा धर्म-शासन की सेवा में संलग्न हैं। उनकी कार्यजाशक्ति निरन्तर विकसित होती रहे, इस शुभाशंसा के साथ मैं इस ग्रन्थ की समीक्षा का काम विद्वानों को सौंपता हूं।

१६ फरवरी, १९८८
भिवानी (हरियाणा)

—आचार्य तुलसी

पुरोवाक्

भगवान महावीर ने अर्धमागधी प्राकृत में प्रवचन किया था। जनता सरलता से उनकी बात समझ सके—यही प्रयोजन था। जनता के लिए जनता की भाषा में बोलना एक नया काम था। उस समय के अधिकांश धर्माचार्य पंडितों की भाषा में ही बोलते और लिखते थे। उनकी बात बड़े लोगों तक पहुंच पाती थी। पाद-विहार और जनता की भाषा में प्रवचन—इन दोनों प्रवृत्तियों के कारण महावीर जनता के बन गए थे। उनके शिष्य भारत के अनेक प्रान्तों में विहार करते थे और अनेक प्रान्तों के मुमुक्षु उनके शिष्य बनते थे। आगम साहित्य में एक अर्थबोध के लिए अनेक शब्दों एवं धातु-पदों का प्रयोग मिलता है। व्याख्याकारों ने उसका कारण बताया है कि अनेक देशों के शिष्यों को समझाने के लिए अनेक शब्दों और क्रिया-पदों का प्रयोग किया गया।

संस्कृत की एक सीमा बन चुकी थी। उसमें विभिन्न देशों में प्रचलित शब्दों के समावेश के लिए अवकाश नहीं रहा। प्राकृत जन-भाषा थी। उसका लचीलापन बना रहा। वह किसी घेरे में नहीं बंधी, इसलिए उसका सम्पर्क देशी शब्दों से बना रहा। देशी शब्द व्याकरण से बंधे हुए नहीं हैं। उनके लिए 'शेषं संस्कृतवत्'—इस सूत्र की कोई अपेक्षा नहीं है। उनके लिए 'प्रकृतिः संस्कृतम्' इस विधि की भी अपेक्षा नहीं है। त्रिविक्रम देव ने प्राकृत के तीन प्रकार बताए हैं—तत्सम, तद्भव और देश्य। संस्कृत के समान शब्द 'तत्सम' और संस्कृत की प्रवृत्ति से सिद्ध शब्द 'तद्भव' कहलाते हैं। देश्य और आर्ष शब्द इन दोनों से भिन्न हैं—

> प्राकृतं तत्समं देश्यं, तद्भवं चेत्यवस्त्रिधा।
> तत्समं संस्कृतसमं नेयं संस्कृतलक्षणा॥
> देश्यमार्षं च रूढत्वात् स्वतंत्रत्वाच्च भूयसा।
> लक्ष्म नापेक्षते तस्य संप्रदायो हि बोधकः॥
> प्रकृतेः संस्कृतात् साध्यमानात् सिद्धाच्च यद् भवेत्।
> प्राकृतस्यास्य लक्ष्यानुरोधि लक्ष्म प्रचक्ष्महे॥[1]

आचार्य हेमचंद्र ने देशी शब्द की बहुत सुन्दर परिभाषा की है। यह परिभाषा बहुत सार्थक और व्यापक है—

१. श्रीत्रिविक्रमदेव, प्राकृतशब्दानुशासनम्, श्लोक ६-८।

जे लक्खणे ण सिद्धा ण पसिद्धा सक्कयाहिहाणेसु ।
ण य गउणलक्खणासत्तिसंभवा ते इह णिबद्धा ॥
देस विसेसपसिद्धीइ भण्णमाणा अणंतया हुंति ।
तम्हा अणाइपाइअपयट्टभासाविसेसओ देसी ॥[1]

प्राकृत के अध्ययन के लिए देशी शब्दों का अध्ययन बहुत आवश्यक है। उनके बिना प्राकृत भाषा संस्कृत आश्रित बन जाती है। इसी आधार पर कुछ विद्वानों ने प्राकृत को संस्कृत से अर्वाचीन बतलाया। प्राकृत का विशाल स्वरूप देशी शब्दों का भण्डार है। उनका सम्बन्ध प्राचीनतम जनभाषा से है। प्रस्तुत देशी शब्दकोश में कुछ शब्द कन्नड़ और तमिल के भी हैं, मराठी आदि भाषाओं के तो हैं ही। उत्तर और दक्षिण की सभी भाषाओं के शब्द आगम साहित्य में मिलते हैं। कुछ शब्द यूनान आदि विदेशी भाषाओं के भी संदृब्ध हैं।

प्रस्तुत देशी शब्दकोश में आगम, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि और टीका आदि में प्रयुक्त देशी शब्दों का संकलन किया गया है। आगम के व्याख्याकारों ने स्थान-स्थान पर देशी शब्दों का प्रयोग किया है और वे किस अर्थ में देशी हैं, इसका उल्लेख भिन्न-भिन्न शब्दावलियों में किया है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

अतिराउल इति देशीपदं स्वामीकुलमित्यर्थः ।
अविहाड—देशीभाषया बालकः ।
आइंति (अव्यय) देशभाषायाम् ।
आरनाल—कंजियं देसीभासाए आरनालं भण्णति ।
उअपोते—देशीपदत्वात् आकीर्णे ।
उंड—देशीवयणतो उंडं मुहं ।
उग्गह—इति जोणिदुवारस्स सामइकी संज्ञा ।
उग्घाडपोरिसि—समयभाषया पादोनप्रहरे ।
अमाघाय—अमारिरूढिशब्दत्वात् ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में आचार्य हेमचन्द्र की देशी नाममाला का भी अविकल संकलन किया गया है। अंगविज्जा आदि अन्य स्रोतों से भी देशी शब्दों का संग्रहण किया है। इसके मूल में लगभग दस हजार से भी अधिक शब्द संगृहीत हैं। आगम संपादन के साथ शब्दकोश की जो योजना है, उसके अन्तर्गत तीन कोश पहले प्रकाशित हो चुके हैं—

१. आगम शब्दकोश
२. एकार्थक कोश
३. निरुक्त कोश

१. देशी नाममाला, आचार्य हेमचन्द्र, १।३,४ ।

यह देशी शब्दकोश चतुर्थ कोश है। यह आगम तथा प्राकृत भाषा के अध्ययन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी है। इसमें आगमकारों के व्यापक दृष्टिकोण, संग्राही मनोवृत्ति और अर्थाभिव्यक्ति के लिए सक्षम शब्दों के चयन की प्रवृत्ति का निदर्शन मिलता है। मुनि दुलहराजजी ने इस कार्य में अत्यधिक निष्ठापूर्ण श्रम किया है। इस कार्य में साध्वी अशोकश्री, साध्वी विमलप्रज्ञा और साध्वी सिद्धप्रज्ञा तथा समणी कुसुमप्रज्ञा ने पूर्ण योगदान किया है। श्रद्धासिक्त भाव से किया गया यह श्रम दूसरों के लिए अनुसरणीय बनेगा।

बृहद् आगम शब्दकोश का विशाल कार्य आचार्यश्री तुलसी के वाचना प्रमुखत्व में हो रहा है। उनके मार्ग-दर्शन में अनेक साधु-साध्वियां इस कार्य में संलग्न हैं। देशी शब्दकोश उसी कार्य का एक अंग है। मैं आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न नहीं कर रहा हूं। यह प्रयत्न उनसे शक्ति-संबल पाने का प्रयत्न है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में जिन साधु-साध्वियों का योग है, उन सबको साधुवाद देता हूं और मंगलकामना करता हूं कि उनका श्रम इस कार्य की प्रगति में निरन्तर नियोजित रहे। एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की सम-प्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

१७ फरवरी १९८८
भिवानी (हरियाणा)

—युवाचार्य महाप्रज्ञ

भूमिका

देशी शब्दों का प्रयोग वैदिक युग की भाषा से होता आ रहा है। ग्रामीण या जनभाषा का प्रभाव वैदिक भाषा पर परिलक्षित होता है। ब्राह्मणकाल की आर्यभाषा के तीन रूप देखे जा सकते हैं—उदीच्या, मध्यदेशीया एवं प्राच्या। उदीच्या परिनिष्ठित भाषा थी। प्राच्या भाषा पूर्व में रहने वाले बर्बर असुरवर्ग के लोगों की भाषा थी। मध्यदेशीया भाषा का स्वरूप उदीच्या और प्राच्या के बीचोबीच था। प्राचीन आर्यभाषा के इन तीनों रूपों के उदाहरण स्वरूप श्रीर, श्रील एवं श्लील— ये तीन शब्द लिए जा सकते हैं। ये तीनों शब्द क्रमशः उदीच्या, मध्यदेशीया एवं प्राच्या आर्यभाषा के माने जा सकते हैं।

प्राकृत भाषाओं के अन्तर्गत पालि भाषा का भी एक विशिष्ट स्थान है। यह अवश्य एक बोलचाल की भाषा थी। इसे पूर्णरूपेण अकृत्रिम प्राकृत कहा जा सकता है, यद्यपि श्रीलंका एवं बर्मा जैसे देशों में इसमें कुछ कृत्रिमता भी आ गई थी, जो बर्मा में अपने प्रकर्ष को पहुंच गई थी। इसी प्रकार 'आयारो' जैसे जैन आगमों में हमें अकृत्रिम प्राकृतभाषा उपलब्ध होती है, जबकि उत्तरवर्त्ती प्राकृतसाहित्य में कृत्रिमता भी दिखाई पड़ती है।

संस्कृत में शब्दों के दो विभाग किए गए हैं—व्युत्पन्न एवं अव्युत्पन्न। व्याकरण के नियमों से सिद्ध होने वाले शब्द व्युत्पन्न कहलाते हैं। जिनकी सिद्धि व्याकरण सम्मत न होकर लोक-परम्परा या व्यवहार से होती है, वे अव्युत्पन्न शब्द कहलाते हैं।

प्राकृत वैयाकरणों द्वारा प्राकृत शब्द तीन भागों में बांटे गए हैं—तत्सम, तद्भव एवं देश्य या देशी। इनमें देश्य शब्द व्युत्पत्ति-सिद्ध नहीं होते।

देशी शब्दों के निर्धारण में आचार्य हेमचन्द्र ने कुछ कसौटियां प्रस्तुत की हैं। त्रिविक्रम ने देशी शब्दों का छह विभागों में वर्गीकरण किया है। आधुनिक भाषा-वैज्ञानिकों की दृष्टि में ये कसौटियां एवं वर्गीकरण सही नहीं हैं। इन विद्वानों ने देशीशब्दों के निर्धारणार्थ काफी ऊहापोह किया है। इन विचार विमर्शों में जार्ज ग्रीयर्सन का मंतव्य काफी महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। वे देशी शब्दों का संबंध आर्यों द्वारा वैदिक काल के पहले ही बोली जाने वाली जनभाषा से बताते हैं। इसके अतिरिक्त वे देशी शब्दों का संबंध

प्रांतीय बोलियों से भी बताते हैं। वे देशी शब्दों को आर्यों और आर्येतर जातियों के आपसी आदान-प्रदान से विकसित शब्द मानते हैं। उनका यह सुदृढ़ मत है कि देशी शब्दों में अधिकतर शब्द आर्यों की ही प्रारंभिक बोलियों से लिए गए हैं। इनमें कुछ शब्द निश्चित रूप से द्रविड़ भाषाओं के हैं। द्रविड़ भाषाओं के शब्द किस रूप में देश की विभिन्न आधुनिक भाषाओं में उपलब्ध होते हैं एवं आर्य भाषा के शब्दों में कैसे परिवर्तन होते हैं इसके दो दृष्टांत हम यहां प्रस्तुत करते हैं—

अड् धातु (बाधा देना) से उत्पन्न शब्द

तमिल—अटइ
कन्नड—अड, अड्ड
तुलु—अटक, अडक
कुइ—अड
ब्राहूई—अड्
लह्न्दा—अड़ण्; अड़क्
पंजाबी—अड्ना; अड्कणा
कुमौनी—अड्णो
हिन्दी—अड्ना
गुजराती—अड्उं; अड्क्वुं
मराठी—अड्णें; अडक्णे

प्सा धातु (खाना, भूखा रहना) से उत्पन्न शब्द

शतपथ-ब्राह्मण—प्सात (मुक्त)
पालि—छात, छातक (भूखा), छातता (भूख)
प्राकृत—छाय (भूखा)
सिंहली—सय, सा, साय (भूख, सूखा)।[1]

इस प्रकार के अनेक शब्द उद्धृत किए जा सकते हैं जिनके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक आर्यभाषाओं में देशी शब्द विभिन्न रूपों में प्रवेश पा गए, जिनका निर्धारण श्रम एवं गवेषणा साध्य है।

प्रस्तुत कोश की संपादन मंडली को हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अथाह परिश्रम पूर्वक इस विषय पर उपलब्ध सारी सामग्री का विद्वत्तापूर्ण उपयोग किया है तथा आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्राकृत व्याकरण

१. देखें—आर. एन. टर्नर : ए कोम्पैरेटिव डिक्शनरी ऑफ द इण्डो-आर्यन लेंग्वेजिज।

एवं देशीनाममाला और इसके अतिरिक्त अन्य प्राकृत व्याकरण एवं कोशग्रंथों का यथेष्ट अनुशीलन किया है। समग्र जैन आगम तथा उन पर लिखे हुए व्याख्या-ग्रंथ—निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीकाओं का सूक्ष्म एवं व्यापक परिशीलन द्वारा प्राप्त देशीशब्द भी इस कोष में संगृहीत हैं। 'अंगविज्जा' जैसे पारिभाषिक शब्दों से परिपूर्ण ग्रंथ से भी देशी शब्दों का इसमें चयन हुआ है। स्थान स्थान पर व्याख्या-ग्रन्थों में 'देशीपदत्वात्', 'देशीवचनत्वात्', 'देशीपदं'—ऐसे उल्लेख मिलते हैं, जिनका अविकल उल्लेख इस कोष में किया गया है। यह इसकी एक नवीन विशेषता है। आधुनिक विद्वानों द्वारा वैज्ञानिक ढंग से सम्पादित प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में प्राप्त देशीशब्दों का संकलन भी ध्यानपूर्वक किया गया है। देशी शब्दों के संग्रह का ऐसा सर्वाङ्गीण उपक्रम पहली बार ही हुआ है। एक ही कोश में इतनी सामग्री का उपलब्ध होना भविष्य के शोधार्थियों के लिए देशी शब्दों पर गवेषणा के क्षेत्र में एक ठोस आधार प्रदान करेगा। हमारे संघ के प्रबुद्ध साधु-साध्वियों एवं समणियों के सम्मिलित प्रयास से ही यह महान् कार्य सम्पन्न हो सका है। सम्मिलित प्रयत्न के बिना ऐसे ग्रंथों का निर्माण होना संभव नहीं है।

विविध कोश-निर्माण की मौलिक कल्पना परमाराध्य आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री की प्रतिभा की देन है। फलस्वरूप तीन महत्त्वपूर्ण कोश हमारे सामने आ चुके हैं। उसी क्रम में यह देशी शब्दकोश चतुर्थ है। यह धारा अविच्छिन्न है, एवं भविष्य में कई और अधिक उपयोगी कोश विद्वानों के समक्ष आएंगे। परमाराध्य आचार्यश्री की आध्यात्मिक प्रेरणा से कई दुःसाध्य कार्य आसानी से सम्पन्न हो जाते हैं। उनकी आध्यात्मिक प्रेरणा का प्रभाव हम पुनः पुनः अपने जीवन में अनुभव करते हैं, जिसका शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं है। हमारे संघ में जो साहित्यिक एवं वैचारिक क्रांति आई है उसका उद्भव-स्थान परमाराध्य आचार्यश्री की आध्यात्मिकता ही है।

प्रस्तुत कोश की सर्वांगीण समायोजना में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है। मुनिश्री परम श्रद्धेय युवाचार्यश्री की साहित्यिक एवं दार्शनिक रचनाओं के सम्पादन में सतत सहयोग प्रदान करते रहे हैं। युवाचार्यश्री के सुदीर्घ सान्निध्य के फलस्वरूप मुनिश्री ने जो दक्षता प्राप्त की है उसका प्रतिफलन प्रस्तुत कोश में दृष्टिगोचर होता है।

मूल ग्रंथों से देशी शब्दों के चयन का कार्य साध्वी अशोकश्रीजी, साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी एवं साध्वी निर्वाणश्रीजी तथा समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने दक्षतापूर्वक सम्पन्न किया। यह गुरुभार-वहन उनकी विद्वत्ता एवं स्थिर अध्यवसाय का ही सुपरिणाम है।

इस कोश में दो परिशिष्ट संलग्न किए गए हैं। पहले परिशिष्ट में आगम साहित्य के अतिरिक्त अनेक प्राकृत ग्रंथों तथा त्रिविक्रम के प्राकृत

शब्दानुशासन से देशीशब्द चुने गए हैं। दूसरे परिशिष्ट में देशीधातुएं तथा धात्वादेश संकलित हैं।

प्राकृत एवं अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन का क्षेत्र उत्तरोत्तर प्रसार लाभ कर रहा है। कई विश्वविद्यालयों एवं स्वतन्त्र शोध-संस्थानों में शोधछात्र एवं अध्यापकगण इस क्षेत्र को समृद्ध बना रहे हैं। हमें पूर्ण विश्वास है, प्राकृत एवं जैन शास्त्रों के अध्येताओं के लिए यह कोश लाभप्रद होगा एवं और भी अधिक शोधपूर्ण ऐसे कोशों के निर्माण की दिशा में उन्हें प्रेरित करेगा।

लाडनूं (राजस्थान)
६-३-८८

नथमल टाटिया
निदेशक, अनेकांत शोधपीठ,
जैन विश्व भारती

संपादकीय

भाषा

भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। संसार के कोने-कोने में निवास करने वाले मनुष्य किसी न किसी भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। भौगोलिक कारणों से मनुष्यों की भांति भाषा के भी अनेक भेद पाए जाते हैं। महाभारत में इसका स्पष्ट उल्लेख है।[1] विद्वानों के मत से वर्तमान में १००० से अधिक जीवित भाषाएं प्रचलित हैं। इस विषय में सैंकड़ों पुस्तकें भी प्रकाश में आ चुकी हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय आर्यभाषाओं को तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है—

१ प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल—इसमें वैदिक एवं लौकिक संस्कृत आती है।

२. मध्य भारतीय आर्यभाषा काल—इसमें पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा का समावेश होता है।

३. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल—इसमें हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, असमिया, तेलगू, कन्नड़, तमिल आदि भाषाएं आती हैं।

प्राकृत—

प्रकृति शब्द के दो अर्थ हैं—स्वभाव और जनसाधारण। इन अर्थों के आधार पर प्राकृत शब्द के भी दो अर्थ समझे जा सकते हैं—

१. जो प्रकृति/स्वभाव से ही सिद्ध है, वह प्राकृत है।

२. जो प्रकृति/साधारण लोगों की भाषा है, वह प्राकृत है।

महाकवि वाक्पतिराज का अभिमत है कि जैसे पानी समुद्र में प्रवेश करता है और समुद्र से ही वाष्प के रूप में बाहर निकलता है। ठीक वैसे ही सब भाषाएं प्राकृत में प्रवेश करती हैं और इसी प्राकृत से सब भाषाएं निकलती हैं।[2] इससे स्पष्ट है कि प्राकृत के आधार पर ही संस्कृत आदि का

---

१. महाभारत, शल्यपर्व ४४।९७,९८ :
नानावर्णभिराच्छन्ना, नानाभाषाश्च भारत! ।
कुशला देशभाषासु, जल्पन्तोऽन्योन्यमीश्वराः ॥

२. गउडवहो ९३ : सयलाओ इमं वायं विसंति एत्तो य णेंति वायाओ ।
एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ च्चिय जलाइं ॥

विकास हुआ है।

प्राकृत भाषा के भेदों के विषय में विद्वानों के विभिन्न मत मिलते हैं। भरत ने अपने नाट्यशास्त्र में प्राकृत की सात भाषाओं का उल्लेख किया है—

१. मागधी
२. अवन्तिजा
३. प्राच्या
४. शौरसेनी
५. अर्धमागधी
६. बाह्लीकी
७. दाक्षिणात्या[1]

संस्कृत नाटकों में विभिन्न प्राकृत भाषा की बोलियां मिलती हैं। प्रसिद्ध वैयाकरण वररुचि ने महाराष्ट्री, पैशाची, मागधी और शौरसेनी—इन चार भाषाओं को प्राकृत के अन्तर्गत माना है।

हेमचन्द्र ने इन चारों के अतिरिक्त चूलिका पैशाची, आर्ष, अर्धमागधी और अपभ्रंश का उल्लेख भी किया है। त्रिविक्रम, लक्ष्मीधर, सिंहराज, नरसिंह आदि वैयाकरणों ने हेमचन्द्र का अनुसरण किया है।

प्राकृत भाषा के दस भेद भी मिलते हैं—

१. पालि
२. पैशाची
३. चूलिका पैशाची
४. अर्ध मागधी
५. जैन महाराष्ट्री
६. अशोकलिपि
७. शौरसेनी
८. मागधी
९. महाराष्ट्री
१०. अपभ्रंश

मार्कण्डेय ने प्राकृत की सोलह भाषाओं का उल्लेख किया है।

प्राकृत में तीन प्रकार के शब्दों का समावेश है—१. तत्सम २. तद्भव ३. देशी।[2]

संस्कृत-निष्ठ शब्द तत्सम हैं। ये बिना किसी रूप परिवर्तन के प्राकृत में प्रयुक्त हैं। जैसे—जल, कमल, देव आदि। संस्कृतसम[3], तत्तुल्य[4] और समान[5] शब्द भी तत्सम के वाचक हैं।

संस्कृत के जो शब्द वर्णागम, वर्णविकार या ध्वनि-परिवर्तन से अपना स्वरूप बदल लेते हैं, वे तद्भव हैं। जैसे—कार्य—कज्ज, ऋषभ—उसभ,

---

१. नाट्यशास्त्र १७।४८ : मागध्यवन्तिजा प्राच्या, शौरसेन्यर्धमागधी।
बाह्लीका दाक्षिणात्याश्च सप्त भाषाः प्रकीर्तिताः॥

२. नाट्यशास्त्र १७।३ : त्रिविधं तच्च विज्ञेयं नाट्ययोगे समासतः।
समानशब्दं विभ्रष्टं देशागतमथापि च॥

३. प्राकृतलक्षण १।१।

४. वाग्भटालंकार २।२।

५. नाट्यशास्त्र १७।३।

वर्धमान–वड्ढमाण आदि। इसके लिए आचार्य हेमचन्द्र ने संस्कृतयोनि[1], वाग्भट ने तज्ज[2] तथा भरत ने विभ्रष्ट[3] शब्द का प्रयोग किया है।

देशी शब्द सामान्यतया ग्राम्य या प्रान्तीय अर्थ का वाचक है। निरुक्तकार यास्क[4] तथा पाणिनि[5] ने देशी शब्द का प्रयोग प्रान्त अर्थ में किया है।

वात्स्यायन ने कामसूत्र, विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस, बाण ने कादंबरी तथा धनञ्जय ने दशरूपक में नाना देशों में बोली जाने वाली भाषाओं को देशी भाषा कहा है। कामसूत्र, महाभारत, नाट्यशास्त्र आदि ग्रंथों में देशभाषा शब्द से देशी भाषा का अर्थ ग्रहण किया गया है। वैयाकरण चण्ड ने देशीभाषा के अर्थ में देशीप्रसिद्ध, भरत ने देशीमत तथा देशागत शब्द का प्रयोग किया है।

अनुयोगद्वार में शब्दों को पांच भागों मे विभक्त किया गया है। उनमें नैपातिक शब्दों को देशी के अन्तर्गत माना जा सकता है।[6]

संस्कृत में तीन प्रकार की शब्द सम्पदा है - रूढ़, यौगिक और मिश्र। इनमें रूढ़ शब्द देशी के अन्तर्गत आते हैं।

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्र ने देशीनाममाला में देशी शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है—जो शब्द व्याकरण ग्रंथों में प्रकृति, प्रत्यय द्वारा सिद्ध नहीं हैं, व्याकरण से सिद्ध होने पर भी संस्कृत कोशो में प्रसिद्ध नहीं हैं तथा जो शब्द लक्षणा आदि शब्द-शक्तियों द्वारा दुर्बोध हैं और अनादि काल से लोकभाषा में प्रचलित हैं, वे सब देशी हैं। महाराष्ट्र, विदर्भ आदि नाना देशों में बोली जाने वाली नाना भाषाएं होने से देशी शब्द अनंत हैं।[7]

इस विशाल दृष्टिकोण के बावजूद भी उन्होंने इन अंतहीन शब्दों के संग्रहण की दुरूहता को ध्यान में रखते हुए केवल प्राकृत भाषा से सम्बन्धित शब्दों को ही देशी मानकर उनका अविकल संकलन किया है।

त्रिविक्रम के अनुसार आर्ष और देश्य शब्द विभिन्न भाषाओं के रूढ़ प्रयोग हैं। अतः इनके लिए व्याकरण की आवश्यकता नहीं है।[8] उन्होने छह विभिन्न सूत्रों द्वारा देशी शब्दों को छह विभागों में विभक्त किया है—

१. वा पुभाव्याद्याः[9]— इसके अन्तर्गत स्वर आदि की विशेष आयोजना से उत्पन्न

---

१. प्राकृत व्याकरण १।१।
२. वाग्भटालंकार २।२।
३. नाट्यशास्त्र १७।३।
४. निरुक्त २।१।
५. अष्टाध्यायी १।१।७५।
६. अनुयोगद्वार २७०।
७. देशीनाममाला १।३,४।
८. प्राकृतशब्दानुशासन ७: देश्यमार्षं च रूढत्वात् स्वतंत्रत्वाच्च भूयसा।
लक्ष्म नापेक्षते तस्य सम्प्रदायो हि बोधकः॥
९. वही, १।२।१०९।

शब्द आते हैं। इनकी संस्कृत पर्याय खोजी जा सकती है। जैसे—पुआई इसका अर्थ है पिशाच। इसी प्रकार ऊणंदिअं—आनंदित, टोम्बरो तुम्बुरू आदि।

२. गोणाद्याः[1]— ये वे देशी शब्द हैं जो प्रकृति, प्रत्यय, वर्णागम तथा वर्णविकार से रहित होते हैं। जैसे— गोणो—गाय, वणाइ—वनराजि, आओ—पानी।

३. गहिआद्या[2]:— इस सूत्र में शब्द निर्वचन के विषय बनते हैं तथा इनकी व्युत्पत्ति की जा सकती है। जैसे—णंदिणी—धेनु, वइरोड— जार, अजड— अनलस, संचारी— दूती।

४. वरइत्तगास्तृनाद्यैः[3]—इस सूत्र के अन्तर्गत वे शब्द संगृहीत हैं जो तद्धित के अनेक प्रत्ययों तथा स्वरों की विशेष आयोजना से युक्त होते हैं। जैसे— वरइत्त—वरयिता, नूतनवर, वाअड—शुक, मइलपुत्ती—रजस्वला, सद्दाल—नूपुर।

५. अपुण्णगाः क्तेन[4]—इस सूत्र में सारे क्त प्रत्ययान्त शब्द संगृहीत हैं। जैसे— अपुण्ण— आक्रान्त, उरुसोल्ल—प्रेरित, उक्खिण्ण—अवकीर्ण, णिसुद्ध— निपातित।

६. झाडगास्तु देश्याः सिद्धाः[5]—इस सूत्र के अन्तर्गत वे शब्द संगृहीत हैं जो देश-विशेष में व्यवहृत होते हैं, जो सिद्ध हैं, प्रसिद्ध हैं और निष्पन्न है। जैसे—झाड—लता आदि का गहन, गोप्पी—बाला, पाणाअअ— चांडाल, सोल्ल—मांस।

आचार्य हेमचन्द्र ने 'गोणादयः'—इस सूत्र के अन्तर्गत देशी शब्दों का संग्रहण किया है।[6]

आधुनिक भाषावैज्ञानिकों ने भी देशी के बारे में पर्याप्त चिन्तन-मनन किया है। जानबीम्स, हार्नले, जार्ज ग्रियर्सन, सुनीतिकुमारचाटुर्ज्या, पी. डी. गुणे आदि ने देशी शब्दों की स्वरूप मीमांसा की है।

जानबीम्स का कहना है कि देशीशब्द वे हैं जो किसी भी संस्कृत शब्द से व्युत्पन्न नहीं किए जा सकते, इसलिए वे या तो आर्यों से पूर्व रहने वाले आदिवासियों की भाषा से लिए गए होंगे या फिर संस्कृत भाषा के विकसित होने से पहले ही स्वयं आर्यों द्वारा आविष्कृत होंगे।[7]

निष्कर्ष की भाषा में कहा जा सकता है कि देशी का अर्थ यह नहीं कि केवल वे शब्द जो देशविशेष में प्रचलित हों, किन्तु वे सभी शब्द देशी हैं, जिनका स्रोत संस्कृत में नहीं है चाहे फिर वे किसी देश-भाषा के क्यों न हों।

१. प्राकृतशब्दानुशासन, १।३।१०५।
२. वही, १।४।१२१।
३. वही २।१।३०।
४. वही ३।१।१३२।
५. वही ३।४।७२।
६. प्राकृत व्याकरण २।१७४।
७. कम्पेरेटिव ग्रामर आफ माडर्न आर्यन लेंग्वेजज, पृष्ठ १२।

एफ. आर. हार्नले[1], श्री आर. जी. भण्डारकर[2], डॉ. पी. डी. गुणे[3] भी इस कथन से सहमत हैं। जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार देशी शब्दों का संबंध वैदिक काल से पूर्व आर्यों द्वारा बोली जाने वाली जनभाषाओं से है। प्रथम प्राकृत से उद्भूत होने के कारण देशी शब्दों को तद्भव कहा जा सकता है।[4]

ए. एन. उपाध्ये[5] तथा पी. एल. वैद्य[6] ने भी देशीशब्दों की उत्पत्ति तथा उसके स्वरूप के बारे में पर्याप्त चिन्तन किया है।

देशी शब्द का प्रयोजन

प्राचीनकाल में गुरु के पास विभिन्न प्रदेशों के शिष्य दीक्षित होते थे। वे सूत्रों के गूढ़ रहस्यों को सरलता से समझ सकें, इस दृष्टि से प्रशिक्षक विभिन्न देशों में प्रचलित एक ही अर्थ के वाचक भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग करते थे। यहां दशवैकालिक सूत्र का भाषा-प्रयोग विषयक एक प्रसंग द्रष्टव्य है। वहां कहा गया है कि मुनि इन संबोधनों से स्त्री को सम्बोधित न करे—

हले हले त्ति अन्नेत्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुले त्ति, इत्थियं नेवमालवे॥(७।१६)

ये शब्द विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित सम्बोधन-शब्दों का परिज्ञान कराते हैं। दशवैकालिक सूत्र की अगस्त्यचूर्णि के अनुसार तरुणी स्त्री के लिए महाराष्ट्र में 'हले' एवं 'अन्ने' संबोधन का प्रयोग होता था। लाट (मध्य और दक्षिणी गुजरात) देश में 'हला' तथा 'भट्टे', गोल देश में 'गोमिणी' तथा 'होले', 'गोले', 'वसुले'—ये शब्द संबोधनरूप में प्रयुक्त होते थे।[7] दशवैकालिक सूत्र की चूर्णि में भोजन के लिए प्रयुक्त संदेण, वंजण, कुसण, जेमण आदि शब्द भिन्न-भिन्न प्रान्तों में इनके प्रचलन का संकेत देते हैं—भिण्णदेसिभासेसु जणवदेसु एगम्मि अत्थे संदेणवंजणकुसणजेमणाति भिण्णमत्थपच्चायणसमत्थमविप्पडिवत्तिरूवेण।[8]

---

१. कम्पेरेटिव ग्रामर आफ गौडियन लेंग्वेजेज, पृ ३९-४०।
२. विल्सन फिलोलोजिकल लेक्चर्स, पृ १०६।
३. इन्ट्रोडक्शन टु कम्पेरेटिव फिलोलोजी, पृ २७५-२७७।
४. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, पृ १२७,१२८।
५. कन्नडीज वर्ड्स इन देशी लेक्सिकन्स, जिल्द १२, पृ १७१,१७२।
६. ओब्जर्वेशन आन हेमचन्द्राज देशीनाममाला, जिल्द ८, पृ ६३-७१।
७. दशवैकालिक, अगस्त्यचूर्णि, पृष्ठ १९८ : हले अन्नेति मरहट्ठेसु तरुणित्थी मामंतणं। हलेति लाडेसु। भट्टेति·····लाडेसु। सामिणित्ति सव्वदेसेसु। गोमिणी गोल्लविसए। होले गोले वसुले त्ति देसीए·····।
८. दशवैकालिक, जिनदासचूर्णि, पृष्ठ १६०

ओदन शब्द के लिए निम्न पंक्तियां पठनीय हैं—

'पुव्वदेसयाणं पुग्गलि ओदणो भण्णइ, लाडमरहट्ठाणं कूरो, द्रविडाणं चोरो, आंध्राणं कनायुं ।'[1]

बृहत्कल्प भाष्य में आचार्यपद के योग्य शिष्य के लिए स्पष्ट निर्देश है कि वह देशी भाषाओं के परिज्ञान के लिए बारह वर्ष तक देशाटन करे। देशाटन का प्रयोजन और उससे होने वाली निष्पत्तियों पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि शास्त्रों में प्रसिद्ध शब्द जिन-जिन देशों और प्रान्तों में व्यवहृत होते हैं, देशभ्रमण के समय उन-उन देशों में उनका प्रत्यक्षीकरण हो जाता है—पयः पिच्चं नीरमित्यादयश्च शास्त्रप्रसिद्धाः शब्दास्तेषु तेषु देशेषु लोकेन तथा तथा व्यवह्रियमाणा देशदर्शनं कुर्वता प्रत्यक्षत उपलभ्यन्ते ।[2]

दूसरी बड़ी उपलब्धि यह होती है कि सतत परिव्रजन करने वाला परिव्राजक मगध, मालव, महाराष्ट्र, लाट, कर्णाट, द्रविड, गौड, विदर्भ आदि नाना देशों की देशीभाषाओं में कुशलता प्राप्त कर लेता है। इसमें एक बड़ी सुविधा यह हो जाती है कि वह नाना देशीभाषाओं में निबद्ध सूत्रों के उच्चारण और उनके यथार्थ अर्थकथन में दक्ष बन जाता है और जब वह आचार्यपद को अलंकृत करता है तो समस्त देशीभाषाओं में निष्णात होने से अभाषिकों (केवल अपने ही प्रदेश की भाषा जानने वालों) को भी उनकी अपनी भाषा में प्रतिबोध देकर प्रव्रजित कर लेता है।[3]

देशीभाषाओं के भेद

आगमों में अनेक स्थलों पर अठारह प्रकार की देशीभाषाओं का उल्लेख मिलता है।[4] राजकुमारों को भी अठारह भाषाओं का ज्ञान कराया जाता था।[5] गणिकाएं भी इन भाषाओं में निष्णात होती थीं।[6] ये अठारह

---

१. दशवैकालिक, जिनदासचूर्णि, पृष्ठ २३६।

२. बृहत्कल्पभाष्य, १२२३, टीका पृष्ठ ३८०।

३. बृहत्कल्पभाष्य, १२२९, १२३० :
णाणादेसीकुसलो, णाणादेसीकयस्स सुत्तस्स।
अभिलावअत्थकुसलो, होइ तओ णेण गंतव्वं ॥
कहयति अभासियाण वि, अभासिए आवि पव्वयावेइ।
सव्वे वि तत्थ पीइं, बंधंति सभासिओ णे त्ति ॥

४. औपपातिक १४९; राजप्रश्नीय, ८०९।

५. ज्ञाताधर्मकथा, १।१।८८ :
एते णं से मेहे कुमारे·····अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए।

६. वही, १।३।८ :
देवदत्ता नामं गणिया·····अट्ठारसदेसीभासाविसारया।

भाषाएं कौन-सी थीं—आगमों में इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। बृहत्कल्प भाष्य की टीका में मगध, मालव, महाराष्ट्र, लाट, कर्णाट, द्रविड़, गौड और विदर्भ आदि देशों में बोली जाने वाली भाषाओं को देशी कहा गया है।[1] कुवलयमाला में विजयपुरी के बाजार में एकत्रित अठारह देशों के व्यापारियों के मुंह से अपने-अपने देश की भाषा के शब्द कहलवाये हैं।[2] उनके उदाहरण इस प्रकार हैं—

देश	भाषा-शब्द	अर्थ
१. गोल्ल	अडड[1]	पशुओं को हांकने का शब्द
२. मध्यप्रदेश	तेरे मेरे आउ[2]	तेरे, मेरे, आओ
३. मगध	एगे ले[3]	ऐसे ले (?)
४. अन्तर्वेद	कित्तो किम्मो[4]	
५. कीर (कश्मीर)	सरि पारि[5]	
६. ढक्क (पंजाब)	एहं तेहं[6]	यहां-वहां, यह-वह
७. सिन्ध	चउडय मे[7]	सुन्दर (?)

---

१. बृहत्कल्पभाष्य, टीका पृ ३८२ :
नानाप्रकारा—मगध-मालव-महाराष्ट्र-लाट-कर्णाट-द्रविड-गौड-विदर्भादि-देशभवा या देशीभाषा·····।

२. कुवलयमाला, पृष्ठ १५२, १५३ :

१. कसिणे णिट्ठुरवयणे बहुक-समर-भुंजए अलज्जे य।
'अडडे' त्ति उल्लवंते अह पेच्छइ गोल्लए तत्थ ॥

२. णय-णीइ-संधि-विग्गह-पडुए बहुजंपए य पयईए।
'तेरे मेरे आउ' त्ति जंपिरे मज्झदेसे य ॥

३. णीहरिय-पोट्ट-दुव्वण्ण-मडहए-सुरय-केलि-तल्लिच्छे।
'एगे ले' जंपुल्ले अह पेच्छइ मगहे कुमरो ॥

४. कविले पिंगलणयणे भोयणकहमेत्तदिण्णवावारे।
'कित्तो किम्मो' पिय-जंपिरे य अह अंतवेए य ॥

५. उत्तुंग-स्थूल-घोणे कणयवण्णे य भार-वाहे य।
'सरि पारि' जंपिरे रे कीरे कुमरो पलोएइ ॥

६. दक्खिण्ण-दाण-पोरुस-विण्णाण-दया-विवज्जिय-सरीरे।
'एहं तेहं' चवंते ढक्के उण पेच्छए कुमरो ॥

७. सललिय-मिउ-मद्दवए गंधव्व-पिए सवेसगयचित्ते।
'चउडय मे' भणिरे सुहए अह सेंधवे दिट्ठे ॥

देश	भाषा-शब्द	अर्थ
८. मारुक (मरुदेश)	अप्पां तुप्पां[९]	हम-तुम
९. गुर्जर	णउ रे भल्लउं[१०]	अरे ! यह अच्छा नहीं है
१०. लाट	अम्हं काउं तुम्हं[१०]	हमने किया, तुमने
११. मालव	भाउय भइणी तुम्हे[११]	तुम भाई-बहिन हो
१२. कर्णाटक	अंडि पांडि मरे[१२]	
१३. ताजिक (परशियन या अरबिक)	इसि किसि मिसि[१३]	
१४. कोशल	जल तल ले[१४]	
१५. महाराष्ट्र	दिण्णल्ले गहियल्ले[१५]	दिया और लिया
१६- आन्ध्र	अटि पुटि रटि[१६]	वह जाना आना

इनमें १६ भाषाओं का उल्लेख है। शेष दो भाषाएं—ओड्री और द्राविडी होनी चाहिए।[१७] उपर्युक्त उदाहरणों में कर्णाटक की भाषा—कन्नड का उदाहरण तेलगु का-सा प्रतीत होता है।

---

८. बंके जडे य जड्डे बहु-भोई कढिण-पीण-सूणंगे।
'अप्पां तुप्पां' भणिरे अह पेच्छइ मारुए तत्तो॥
९. घय-लोणिय-पुट्ठंगे धम्म-परे संधि-विग्गह-णिउणे।
'णउ रे भल्लउ' भणिरे अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे॥
१०. ण्हाओलित्त-विलित्ते कय-सीमंते सुसोहिय-सुगत्ते।
'अम्हं काउं तुम्हं' भणिरे अह पेच्छए लाडे॥
११. तणु-साम-मडह-देहे कोवणए माणजीविणो रोद्दे।
'भाउय भइणी तुम्हे' भणिरे अह मालवे दिट्ठे॥
१२. उक्कड-दप्पे पिय-मोहणे य रोद्दे पयंग-वित्ती य।
'अडि पांडि मरे' भणिरे पेच्छइ कण्णाडए अण्णे॥
१३. कुप्पास-पाउयंगे मासरुई पाण-मयण-तल्लिच्छे।
'इसि किसि मिसि' भणमाणे अह पेच्छइ ताइए अवरे॥
१४. सव्व-कला-पत्तट्ठे माणी पियकोवणे कढिण-देहे।
'जल तल ले' भणमाणे कोसलए पुलइए अवरे॥
१५. दढ-मडह-सामलंगे सहिरे अहिमाण-कलह-सीले य।
'दिण्णल्ले गहियल्ले' उल्लविरे तत्थ मरहट्ठे॥
१६. पिय-महिला-संगामे सुंदर-गत्ते य भोयणे रोद्दे।
'अटि पुटि रटि' भणंते अंधे कुमरो पलोएइ॥
१७. इय अट्ठारस देसी-भासाउ पुलइऊण सिरिदत्तो।
अण्णाइय पुलएई खस-पारस-बब्बरादीए॥

विभिन्न प्रांतीय सीमाओं के साथ देशी भाषाओं के उच्चारण के बारे में विशेष जानकारी देते हुए भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में लिखा है[1]—

गंगा और सागर के मध्यवर्ती क्षेत्रों के निवासी एकारबहुल भाषा का प्रयोग करते हैं। जैसे—भंते, समणे, महावीरे आदि। (गंगा और सागर के मध्य मगध क्षेत्र होने से यह एकारबहुल मागधी भाषा होनी चाहिए)।

विन्ध्य और सागर के मध्य जो देश हैं वहां ण के स्थान पर नकार-बहुल भाषा का प्रयोग होता है। जैसे—नकरं, मइकनो आदि। (यह पैशाची प्राकृत होनी चाहिए)।

सौराष्ट्र, अवन्ती और वेत्रवती नदी के उत्तरी भाग में चकारबहुल भाषा का प्रयोग होता है। (यह प्राच्या या पैशाची प्रभावित प्राकृत भाषा होनी चाहिए)।

हिमवान्, सिन्धु और सौवीर में रहने वाले लोग उकारबहुल भाषा बोलते हैं। जैसे – अप्पणु, वक्कलु, फलु आदि (अपभ्रंश प्राकृत उकारबहुल है)।

चर्मण्वती नदी के तट पर तथा अर्बुद पर्वतवर्ती क्षेत्रों में ओकार प्रधान भाषा का प्रयोग होता है। जैसे— सुज्जो, सीसो आदि। (यह शौरसेनी प्राकृत होनी चाहिए)।

संस्कृत साहित्य-भाषा होने से उसमें देशी शब्दों का समावेश कम हुआ किन्तु प्राकृत जनभाषा होने के कारण उसमें देशी शब्दों का समावेश अधिक हुआ। निशीथ में भी यह उल्लेख मिलता है कि अर्धमागधी प्राकृत भाषा अठारह देशी भाषाओं से युक्त है।[2]

कुवलयमाला के रचनाकार लिखते हैं कि देशी भाषा को जानने वाला व्यक्ति ही इस ग्रन्थ को पढ़े।[3]

इसी प्रकार तरंगवई कहा,[4] लीलावई कहा,[5] पउमचरिउ[6]

---

१. नाटचशास्त्र, १७।५६-६३।

२. निशीथभाष्य, ३६१८, चूर्णि पृष्ठ २५३ :
'अट्ठारसदेसीभासाणियतं अद्धमागहं'।

३. कुवलयमाला, पृष्ठ २८१ :
जो जाणइ देसीओ भासाओ लक्खणाइं धाऊ य।
वय-णय-गाहा छेयं, कुवलयमालं पि सो पढउ॥

४. जेकोबी, सनत्कुमार की भूमिका, पृष्ठ १७८ :
पालित्तएण रइया वित्थरओ तस्स देसीवयणेहिं।

५. लीलावई कहा, गाहा ४१ :
एमेव पुद्ध जुयई मणोहरं पाययाए भासाए।
परिवलदेसी सुलक्खं कहसु कहं दिव्व माणुसियं॥

६. पउमचरिउ, १।२।३,४ :
सक्कयपाययपुलिणालंकिय देसी भासा उभय तडुज्जला।

णायकुमारचरियं[1] आदि के रचयिताओं ने अपने-अपने ग्रन्थों को देशी भाषा के प्रयोगों से युक्त बताया है। यद्यपि ये ग्रन्थ महाराष्ट्री प्राकृत या अपभ्रंश में रचित हैं, किन्तु इनमें देशी शब्दों की प्रचुरता है।

अपभ्रंश तथा महाराष्ट्री प्राकृत को भी अनेक विद्वानों ने देशी भाषा माना है। लीलावई कहा[2] तथा कुवलयमाला में कवि महाराष्ट्री प्राकृत को देशी के रूप में स्वीकार करते हैं।[3] महाराष्ट्र के संत कवि ज्ञानेश्वर ने भी देशी शब्द का प्रयोग मराठी के लिए किया है। शाबरभाष्य में देशी भाषा के संदर्भ में अपभ्रंश का उल्लेख हुआ है।

इसके अतिरिक्त और भी अनेक उल्लेख इन भाषाओं को देशी मानने के सन्दर्भ में मिलते हैं। इनसे स्पष्ट है कि देशी शब्द का प्रयोग अपभ्रंश, महाराष्ट्री तथा जनपदीय बोलियों के लिए भी होता रहा है। ये दोनों — अपभ्रंश और महाराष्ट्री भाषाएं देशी हैं या नहीं - इसके विषय में विद्वानों ने पर्याप्त चिन्तन किया है।

अधिक संभव लगता है कि यहां देशी या देशीशब्द का प्रयोग प्रान्त या उस देशविशेष के लिए किया हो। प्रसिद्ध भाषाविद् जूलब्लाक तथा डा० कीथ ने यह सिद्ध किया है कि अपभ्रंश देशीभाषा नहीं थी किन्तु आभीर एवं गूजरों की भाषा थी।

अपभ्रंश के आज अनेकों ग्रन्थ मिलते हैं जिनमें प्रचुर देशी शब्दों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए डा० देवेन्द्रकुमार शास्त्री द्वारा सम्पादित 'भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य' पुस्तक में उल्लिखित कुछ देशी शब्दों एवं धातुओं का नीचे निर्देश किया जा रहा है—[4]

तलाय (तलाब), हंसि (हंसिनी), संड (सांड), धीवर, अट्ठारह, चउदह, चउसट्ठि, पासु (पास), आजु (आज), मंदलु, कायरा (कायर), गवार (गंवार), अगवाणिय (अगवानी), वणिजारिय (बनजारा) आदि।

इसी प्रकार इसमें देशी क्रिया-रूपों तथा सर्वनामों की भी प्रचुरता है। सर्वनाम के कुछ शब्द-रूप इस प्रकार हैं—जो, सो, ए, को, हउ, हउं, (हौं), कवणु (कौन), मइं (मैं), हमारे, अम्हारिय, इह, यहि, किह (कैसे) इस, जिह (जैसे), जे, ता और जं इत्यादि।

देशी क्रियापदों के कुछ रूप—पूछिय, आयउ, तोडिय, देखेवि, लग्ग (लगे हुए) घल्लिय, ढोइय, छोडइ, पडिउ, छूटउ, हक्क दिंति (हांक देते हैं),

१. णायकुमारचरियं, १।१ : णीसेसदेसभासउ ····चवंति।

२. लीलावई कहा, गाहा १३३० :
भणियं च पियय भाए, रइयं मरहट्ठ देसी भासाए।

३. कुवलयमाला, पृष्ठ ४ : पाइयभासारइया मरहट्ठय-देसि-वण्णय-णिबद्धा।

४. भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य, पृष्ठ ३११।

चालावहि (चलवाये), चलु (चलो), फिरइ, गइय, देइ, बुलावइ, खायइ, खुल्लय (खुला हुआ) इत्यादि।

देशी कोशकार

आज तक कितने देशी कोशकार हुए हैं, इसका ठीक-ठीक संकलन करना इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त दुरूह कार्य है। वर्तमान में देशी शब्दों का सबसे बड़ा कोश आचार्य हेमचन्द्र का मिलता है। त्रिविक्रम ने अपने प्राकृत शब्दानुशासन में लगभग १६०० देशी शब्दों का उल्लेख किया है। धनपाल ने पाइयलच्छीनाममाला में प्राकृत शब्दों के साथ कुछ देशी शब्दों का संग्रहण भी किया है। आचार्य हेमचन्द्र ने अनेक देशी कोशकारों का नामोल्लेख अपने ग्रन्थ—देशी नाममाला में स्थान-स्थान पर किया है। उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

अभिमानचिन्ह—इनका देशीकोश सूत्रात्मक था। इन्होंने शब्दसूची और उदाहरणों से शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया। इन सूत्रों की व्याख्या विद्वान् उद्खल ने की थी।

अवन्तिसुन्दरी—यह भी कोई विदूषी महिला थी, जिसने प्राकृत में काव्य रचना कर, उसमें अनेक देशी शब्दों को प्रयुक्त किया था। इसके विषय में पर्याप्त जानकारी नहीं है।

गोपाल—इन्होंने देशी शब्दकोश की श्लोकबद्ध रचना कर संस्कृत में उन शब्दों का अर्थ किया था। अनेक देशीकारों ने इनका उल्लेख किया है।

देवराज—इन्होंने छन्दबद्ध देशीकोश की रचना की और शब्दों के अर्थ प्राकृत में दिये। इनका सम्पूर्ण कोश शब्दों की प्रकृति के आधार पर प्रकरणों में विभाजित था।

द्रोण—इन्होंने देशीकोश की रचना अवश्य की थी और शब्दों का अर्थ प्राकृत भाषा में प्रस्तुत किया था। परन्तु उस ग्रन्थ का स्वरूप अज्ञात है।

धनपाल—संभवतः पाइअलच्छीनाममाला के कर्त्ता धनपाल से ये भिन्न थे। इनका देशी कोश हेमचन्द्र के समय में प्रचलित रहा हो—ऐसी संभावना है। इनका विशेष परिचय ज्ञात नहीं है।

पादलिप्ताचार्य—हेमचन्द्र के अनुसार ये भी देशीकोश के रचयिता थे। यह सम्भावना की जाती है कि इनके कोशगत विवरण से हेमचंद्र पूर्ण सहमत थे।

राहुलक—इनके द्वारा रचित देशीकोश की कोई विश्वस्त जानकारी प्राप्त नहीं है। 'टोल' शब्द के सन्दर्भ में हेमचन्द्र इनके मत को स्वीकार कर, अन्यान्य कोशकारों के अर्थ का प्रतिषेध करते हैं। संभवतः इनका कोई कोश रहा हो।

शाम्ब—हेमचन्द्र इनके मत का उल्लेख करते हैं, पर इनके द्वारा रचित कोई देशीकोश था, यह स्पष्ट नहीं है।

शीलांक—हेमचन्द्र ने इनके मत का उल्लेख तीन स्थानों पर किया है। संभवतः इन्होंने देशीकोश की रचना की थी।

इन सभी देशी कोशकारों का इतिवृत्त और काल ज्ञात नहीं है। संभवतः इन सभी कोशकारों के देशीकोश हेमचन्द्र को प्राप्त थे और उन्होंने इन सभी कोशों में रही अपर्याप्तताओं को निकालकर देशीनाममाला को समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया है। यह तो सुनिश्चित है कि हेमचन्द्र से पूर्व प्रणीत देशी कोशों से हेमचन्द्र का प्रस्तुत देशीकोश विशिष्ट, व्यवस्थित और शब्द के सही अर्थ को प्रकट करने में सक्षम है।

देशीनाममाला : एक परिचय

देशीनाममाला देशी शब्दों का विशिष्ट कोश है। आचार्य हेमचन्द्र ने इसके प्रारम्भ में लिखा है—

देशी दुःसन्दर्भा प्रायः संदर्भिताऽपि दुर्बोधा।
आचार्यहेमचन्द्रस्तत् तां संदृभति विभजति च॥

देशी शब्दों का चयन करना, उनके सन्दर्भों की समीचीनता को ढूंढना तथा उनके अर्थों के अवबोध को निश्चित करना दुरूह कार्य है।

इसकी रचना आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण ग्रंथ सिद्धहेमशब्दानुशासन के अष्टम अध्याय की पूर्ति के लिए की। आचार्य हेमचन्द्र ने इस कोश के दो नामों का उल्लेख किया है—देसीसद्दसंगहो, रयणावली।[1]

किन्तु इन दोनों नामों के अतिरिक्त प्रत्येक अध्याय के बाद पुष्पिका में 'देशीनाममाला' नाम भी मिलता है।

इसके रचनाकाल के बारे में भी भिन्न-भिन्न मान्यताएं हैं। यह तो स्पष्ट है कि इसकी रचना आचार्य हेमचन्द्र ने सिद्धहेमशब्दानुशासन तथा संस्कृत के कोशों—अभिधान चिंतामणि, अनेकार्थ संग्रह आदि के पश्चात् की। डा० बूलर के अनुसार देशीनाममाला की रचना वि० सं० १२१४-१५ में होनी चाहिए। यह मत विद्वानों में मान्य भी है।

डॉ. भयाणी ने अपने लेख में देशीनाममाला के अनेक शब्दों की संस्कृत छाया करके उनको तद्भव या तत्सम माना है।[2]

---

१. देशीनाममाला, ८।७७ :

इय रयणावलीणामो, देसीसद्दाण संगहो एसो।
वायरणसेसलेसो, रइओ सिरिहेमचन्दमुणिवइणा॥

२. कालूगणि स्मृति ग्रंथ, संस्कृत प्राकृत जैन व्याकरण कोश की परम्परा, पृ ८३-१०७।

प्रस्तुत कोश ग्रंथ में ८ अध्याय तथा ७८३ गाथाएं हैं। इसमें ३९७८ शब्दों का संकलन है। सभी शब्द अकारादि क्रम से संगृहीत हैं। इस पर उनकी स्वोपज्ञ टीका भी है। शब्दों के अर्थावबोध के लिए उन्होंने ६३४ उदाहरण गाथाएं भी दी हैं।

आचार्य हेमचन्द्र ने शब्दों को देशी मानने की कुछेक कसौटियां दी हैं। इन कसौटियों पर सभी शब्द खरे नहीं उतरते—यह अवधारणा व्याख्याकार रामानुज, पिशेल और बनर्जी आदि विद्वानों की है। अनेक ऐसे शब्द भी हैं जिन्हें शब्दानुशासन में संस्कृत मानकर सिद्ध किया गया है तथा जो इस कोश में भी समाविष्ट कर दिये गये हैं। डॉ. शिवमूर्ति शर्मा ने इसके तत्सम,तद्भव एवं देशीशब्दों का लेखा इस प्रकार प्रस्तुत किया है[1]—

तत्सम शब्द १००।
संशययुक्त तद्भव ५२८।
गर्भित तद्भव १८५०।
देशीशब्द १५००।

इन १५०० देशीशब्दों में से ८०० शब्द भारतीय आर्यभाषाओं में प्राप्त होते हैं तथा ७०० शब्द आर्येतर भाषाओं से संबंधित बताये जाते हैं।

विद्वानों का मंतव्य है कि हेमचन्द्र द्वारा दी गई कसौटियों पर केवल १५०० शब्द खरे उतरते हैं। किन्तु आचार्य हेमचन्द्र ने प्रायः प्रत्येक शब्द को देशी मानने में तर्क प्रस्तुत किया है तथा अनेक आचार्यों के मतों का उल्लेख भी किया है।

देशीनाममाला के कई शब्द संस्कृत से व्युत्पन्न किये जा सकते हैं, किन्तु अर्थ की दृष्टि से वे पूर्णतः देशी हैं। स्वयं आचार्य हेमचन्द्र ने अपनी स्वोपज्ञ वृत्ति में स्थान-स्थान पर स्पष्टीकरण दिया है तथा उन शब्दों को देशी मानने का कारण युक्तिपुरस्सर समझाया है। जैसे—

व्यभिचारी अर्थ का द्योतक 'अविणयवर' शब्द संस्कृत के 'अविनयवर' शब्द से सहज व्युत्पन्न किया जा सकता है, किन्तु संस्कृत कोशों में इस अर्थ में अप्रसिद्ध होने से इसे देशी में संगृहीत किया है। अगुज्झहर-अगुह्यधर, अचिरजुवइ-अचिरयुवति आदि शब्दों की भी यही स्थिति है।[2]

'अण्णइअ' शब्द तृप्त अर्थ का वाचक है। इसे संस्कृत के 'अन्नचित' शब्द से निष्पन्न किया जा सकता है, किन्तु उसका अर्थ तृप्त न होकर 'अन्न से पुष्ट' होता है। अतः तृप्त अर्थ का वाचक 'अण्णइअ' शब्द देशी है।[3]

---

१. देशीनाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ ५६।
२. देशीनाममाला, १।१८ वृत्ति।
३. वही, १।१९ वृत्ति।

निमीलन अर्थवाची 'अच्छिवडण' शब्द संस्कृत के 'अक्षिपतन' शब्द से निष्पन्न हो सकता है, तथापि संस्कृत में इस अर्थ में अप्रसिद्ध होने से इसे देशी में निबद्ध किया है।[1]

'अहिहाण' का अर्थ है—वर्णना, प्रशंसा। यह संस्कृत के अभिधान शब्द से व्युत्पन्न किया जा सकता है, किन्तु जो व्यक्ति संस्कृत से अनभिज्ञ हैं, स्वयं को प्राकृत के पंडित मानते हैं उनका ध्यान आकृष्ट करने के लिए ऐसे अनेक शब्दों का संग्रहण किया है।[2] संस्कृत में 'अभिधान' शब्द वर्णना—प्रशंसा के अर्थ में प्राप्त नहीं है।

उल्लिखित संदर्भों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देशी शब्दों के संग्रहण में आचार्य हेमचंद्र बड़े सतर्क एवं जागरूक रहे हैं। इस विषय में उनकी दृष्टि बहुत स्पष्ट एवं विशाल थी, चिंतन युक्तियुक्त एवं गंभीर था। अन्य आचार्यों द्वारा देशी रूप में स्वीकृत होने पर भी जहां आचार्य हेमचन्द्र को कोई शब्द युक्ति संगत नहीं लगा उसे संस्कृतसम या संस्कृतभव कह कर छोड़ दिया है। जैसे —

'अच्छलं अनपराध इति संस्कृतसमः।[3] 'अच्छोडणं मृगया, अल्लिजरं कुण्डम्, अल्लियं कुरण्टककुसुमम्, अच्छभल्लो ऋक्षः' इत्यपि संगृह्णन्ति। तत् संस्कृतभवत्वादस्माभिर्नोक्तम्।[4]

शब्दों के यथार्थ अर्थ को पकड़ना एक कठिन कार्य है। उसमें देशी शब्दों का सही ढंग से निर्णय तथा अर्थ-निर्धारण तो और भी कठिन कार्य है।

देशीनाममाला में आचार्य हेमचन्द्र ने देशी शब्दों के वाचक जिन संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है, उनके अनेक अर्थ होते हैं, हो सकते हैं। उनको कौनसा अर्थ अभिप्रेत था—इसका प्रसंग या संदर्भ के बिना निर्णय करना अत्यंत कठिन है। यही कारण है कि देशीनाममाला के अनेक शब्दों का भ्रमपूर्ण एवं अयथार्थ अर्थ भी कर दिया गया है। उदाहरण के लिए रामानुज स्वामी की शब्द सूची द्रष्टव्य है। उसमें कई शब्दों के अर्थ विमर्शणीय एवं संशोधनीय हैं। जैसे—

आचार्य हेमचन्द्र ने 'आउस' शब्द का संस्कृत अर्थ 'कूर्च' दिया है। कूर्च शब्द के दाढ़ी और कूंची—दो अर्थ होते हैं। रामानुज ने इसका अर्थ कूँची (brush) किया है, किन्तु इसका वास्तविक अर्थ दाढ़ी होना चाहिए। इसके सही या गलत अर्थ का निर्णय आचार्य हेमचंद्र द्वारा प्रस्तुत इस उदाहरण गाथा से हो सकता है—

---

१. देशीनाममाला, १।३९ वृत्ति।
२. वही, १।२१ वृत्ति।
३. वही, १।२० वृत्ति।
४. वही, १।३७ वृत्ति।

"सआयाम-आसयसेन्नं तुह पेच्छिय जाय-आउर-आलीला ।
आलत्थपिच्छच्छत्ते छड्डिय रिउणो अणाउसा जंति ॥ १।५३।६५ ।

इसमें शत्रुओं की पराजय का सुन्दर चित्रण करते हुए कहा गया है कि हे राजन् ! तुम्हारी शक्तिशाली सेना को निकट आयी जानकर युद्ध के निकटवर्ती भय से भयभीत तुम्हारे शत्रु मयूरपिच्छीनिष्पन्न छत्रों को छोड़कर बिना दाढ़ी-मूंछ वाले मर्द बनकर युद्ध-क्षेत्र से पलायन कर रहे हैं। इस वर्ण्य प्रसंग के आधार पर यह स्पष्ट है कि यहां 'आउस' का अर्थ कूंची नहीं, दाढ़ी मूंछ ही होना चाहिए।

इसी प्रकार 'आहुंदुर' (१।६६) शब्द का अर्थ हेमचन्द्र ने 'बाल' किया है। रामानुजस्वामी ने 'बाल' का अर्थ पूंछ (Tail) किया है, जो ठीक नहीं है। निम्न उदाहरण गाथा के संदर्भ में इसका 'बालक' अर्थ उचित प्रतीत होता है—

आमोरय ! सिरिआसंग ! तए आहुंदुरा करि-हरीण ।
मित्त-आसवण-अमित्तआलयण-दुवारेसु संघडिया ॥१।५४।६६।

'हे विशेषज्ञ ! लक्ष्मी के वासगृह ! तुमने मित्रों के गृहद्वारों पर हाथी के बच्चों का तथा शत्रुओं के गृहद्वारों पर बंदर के बच्चों का संघटन/निर्माण किया है।'

डॉ. भयाणी का देशी शब्दों पर किया गया अनुसंधान अत्यन्त महत्व-पूर्ण है। इन्होंने देशीनाममाला के शब्द-अनुक्रम में रामानुजस्वामी द्वारा दिये गए इंग्लिस अर्थों की समालोचना करते हुए १७५ शब्दों की नोंध प्रस्तुत कर उनके द्वारा कृत अर्थों को भ्रामक और अनभिप्रेत बताया है। इन्होंने इन शब्दों का अर्थ जो हेमचंद्र को अभिप्रेत था उसका निर्देश भी किया है। उनमें से कुछेक शब्द सही-गलत अर्थों के साथ इस प्रकार हैं[1]—

मूल शब्द	सही अर्थ	रामानुजकृत गलत अर्थ
अच्छिविअच्छी	परस्पर आकर्षण, आपसी खींचतान	Mutual attraction
अजराउर	उष्ण	Heat
आमलय	नूपुर-गृह, नूपुर रखने की पेटी	Dressing room
आरंदर	१. अनेकान्त, जनसंकुल	Not alone
	२. संकट, संकीर्ण	Difficulty
आलीवण	प्रदीपनक, प्रदीप्त अग्नि	Illuminating
इंदड्ढलअ	इन्द्रोत्थान, इंद्रध्वज को हटाना	Awakening Indra
इरमंदिर	करभ	A young elephent
उअहारी	दोग्ध्री, दूध दुहने वाली स्त्री	A milch cow

१ स्टडीज इन हेमचन्द्राज देशीनाममाला, पृ ५७-८२।

ओरंपिअ	आक्रान्त	Seiged
कोट्टिंब	द्रोणी, नौका	A Wooden tub
गणणाइआ	चण्डी, पार्वती	An angry woman
चिच्च	कटिभाग	Charming
दोद्धिअ	चर्मकूप, दृति	A pore of the skin
माणंसी	चंद्रवधू, वीरबहूटी कीट	The wife of the moon
साहंजण	गोखरू, एक पौधा	A cow's hoof

देशी शब्दों का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

आगम-साहित्य शब्दों का विपुल भंडार है। धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से तो इसका महत्व है ही, किन्तु भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी इसके अनेक शब्द तुलनीय एवं विमर्शणीय हैं। आगम में समागत अनेक देशी शब्द अर्वाचीन हिंदी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल, तेलगु भाषा के शब्दों से तुलनीय हैं।

भाषाविज्ञान की दृष्टि से प्रत्येक शब्द के अर्थ का उत्कर्ष एवं अपकर्ष होता रहा है। डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी के भाषा-विज्ञान सम्बन्धी ये विचार उल्लेखनीय हैं—'शब्दों के अर्थ की ह्रास और विकास की कथा दीर्घकाल से चली आ रही है। कुछेक शब्दों के अर्थ में विकास होता है, कुछेक का ह्रास और कुछेक के अर्थ में विकार आ जाता है। 'वंश' शब्द का विकास 'बांस' अर्थ में हुआ, किन्तु कुल के अर्थ में विकास न होकर 'वंश' शब्द ही बना रहा। इसी प्रकार 'पृष्ठ' शब्द का विकास/विकार 'पीठ' अर्थ के रूप में हुआ, पर पृष्ठ (पन्ने) के अर्थ में नहीं हुआ। 'पन्ने' के अर्थ में पृष्ठ शब्द ही प्रयुक्त होगा, पीठ नहीं। अमुक पुस्तक का पृष्ठ कहा जाएगा, पीठ नहीं। 'सूची' शब्द वस्त्र सीने के उपकरण के रूप में 'सूई' बन गया, किन्तु 'विषय सूची' के लिए 'विषय सूई' नहीं बन सका। इसी प्रकार शताधिक शब्दों की कहानी है।'

किन्तु कुछ शब्द सैंकड़ों-हजारों वर्षों के बाद भी अपने मूल अर्थ को सुरक्षित रखते हैं। आगमों में 'तुप्प' शब्द का अर्थ है—चुपड़ा हुआ, घी और स्निग्ध। कन्नड भाषा में आज भी 'तुप्प' घी का वाचक है तथा मराठी में घी के लिए 'तूप' शब्द का प्रयोग होता है। इसी प्रकार चिकनाहट या तेल का वाचक 'चोप्पड' शब्द राजस्थानी एवं हिन्दी में आज भी प्रसिद्ध है। यद्यपि सभी शब्दों का भाषाशास्त्रीय अध्ययन करना संभव नहीं था कि अमुक शब्द किस भाषा से आया है, किन्तु जहां भी हमें वर्तमान में प्रचलित अन्य भाषा से संबंधित शब्दों की जानकारी मिली वहां उन शब्दों के आगे कोष्ठक में हमने उस भाषा का उल्लेख किया है। नीचे कुछेक ऐसे शब्दों के उदाहरण

हैं जो अन्य भाषाओं में कुछ परिवर्तन से या मूल रूप में आज भी प्रयुक्त होते हैं—

अक्का—बहिन (कन्नड)
अच्चाइय—व्यथित (अच्चिग-व्यथा-कन्नड़)
अज्जिआ—दादी (अज्जी-कन्नड, आजी-मराठी)
कण्ण—गोल (कण्णे-कन्नड)
गय्याल—जिद्दी (मूर्ख-कन्नड)
डग्गल—घर के ऊपर का भूमितल (डागला-राजस्थानी)
पत्थारी—शैया, बिछौना (पत्थारी-गुजराती, पथरणा-राजस्थानी)
मग्गओ—पीछे (मग-मराठी)
हडप्प—ताम्बूलपात्र (हडप-ताम्बूल रखने की छोटी थैली-कन्नड)

अनेक स्थलों पर तो स्वयं व्याख्याकार भी देशविशेष की भाषा या शब्द का उल्लेख करते हैं। जैसे—

अण्णं इति मरहट्ठाणं आमंतणवयणं।
अवसावणं लाडाणं कंजियं भण्णई।
महाराष्ट्रमवोगिल्लमवाचालम्।
उण्ण त्ति लाडाणं गड्डुरा भण्णंति।
एआवन्ती सव्वावन्ती ति एतौ द्वौ अपि शब्दौ मागधदेशीभाषा-प्रसिद्ध्या एतावन्त:....।
लाडाणं कच्छा सा मरहट्ठयाणं भोयडा भण्णति।
पेलुकरणादि लाटविषये रूतप्राणिका (पूणिका ?) महाराष्ट्रविषये सैव पेलुरित्युच्यते।

किसी भी भाषा के विकास का महत्वपूर्ण सूत्र ग्रहणशीलता होता है। संस्कृत आदि भाषाओं के कोशग्रन्थ अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके ही समृद्ध बने हैं। आप्टे, मोनियर विलियम्स आदि विद्वानों ने अपने संस्कृत कोशों में अनेक देशी शब्दों का संग्रहण किया है। आप्टे के संस्कृत-इंग्लिश कोश में बर्बरीक, बर्कर, चिक्खल, लड्डू आदि शब्द संगृहीत हैं। ये शब्द देशी कोशों में इस प्रकार हैं—बब्बरी, बक्कर, चिक्खिल्ल (चिक्खल्ल), लड्डुग (लड्डुय) आदि। अर्थ दोनों कोशों में समान हैं।

यहां डा० शिवमूर्ति का यह मंतव्य भी उल्लेखनीय है—'कोई भी साहित्यिक भाषा लोक भाषा के स्तर से उठकर ही साहित्यिक भाषा बनती है। ऐसी स्थिति संस्कृत की भी रही है। पाणिनि जैसे वैयाकरणों ने इसका संस्कार किया। इस प्रक्रिया में कितनी ही देश्य शब्दावलि संस्कृत हो उठी। अष्टाध्यायी के उणादि प्रत्यय इसी तथ्य की ओर संकेत करते हैं। पाणिनि के समय में भी शिक्षितों की भाषा से अलग हटकर कुछ भाषाएं थीं जिन्हें

अधिकृत विद्वानों ने प्राकृत (अशिक्षितों की) भाषा कहा है। इस बात का समर्थन पतंजलि और भरत भी करते हैं। पाणिनि के धातु पाठ में कई धातुएं ऐसी आई हैं जिनका प्रयोग उनके पूर्व की साहित्यिक भाषा में नहीं मिलता। इनका विकास आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक आर्यभाषाओं, विशेषतया हिंदी में मिलता है। जैसे—

संस्कृत	हिंदी
अड्ड	अड़ना
कड्ड	कड़ा
बाड	बाढ
जिमु	जीमना, भोजन करना

संस्कृत में घोड़े के लिए घोटक और अश्व—ये दो शब्द मिलते हैं। स्थिति के अनुसार प्रथम लोकभाषा से आया हुआ शब्द रहा होगा और द्वितीय शिक्षितों की भाषा का शब्द रहा होगा। शिक्षितों का अश्व शब्द आज हिंदी में भी उसी वर्ग के लोगों का शब्द है, जबकि घोटक-घोडअ-घोड़ा आदि रूपों में परिवर्तित होता हुआ सामान्यजनों द्वारा व्यवहृत होता है। इसी प्रकार कुत्ते के लिए कुक्कुर और श्वान, बिल्ली के लिए बिलाड़ी और मार्जारी शब्द व्यवहृत होते रहे हैं।[1]

वामन के मतानुसार 'जो देशी शब्द बहुत व्यापृत हों, उन्हें संस्कृत काव्यों में प्रयुक्त किया जा सकता है।'[2] यही कारण है कि सैकड़ों शब्द संस्कृत कोशों एवं देशी कोशों—दोनों में हैं। जैसे—

अमरकोश	अभिधानचिन्तामणि	देशीनाममाला
—	कङ्केल्लि ११३५	अंकेल्लि १।७
		कंकेल्लि २।१२
—	गोस १३८ टी	गोस २।९६
गोसर्ग १।४।३	गोसर्ग १३८ टी	गोसग्ग २।९६
जलनीली १।१०।३८	जलनीलिका ११६७	जलणीली ३।४२
डुलि १।१०।२४	दुलि १३५३	दुलि ५।४२
—	तम्पा, तंवा १२६६	तंवा ५।१
तरस २।६।६३	तरस ६२२	तरस ५।४
तुङ्गी २।४।१३९	तुङ्गी १४३ टी	तुंगी ५।१४
दाक्षाय्य २।५।२१	दाक्षाय्य १३३५	दक्खज्ज ५।३४
—	प्रखर, प्रक्षर १२५१	पक्खरा ६।१०
प्रतिसीरा २।६।१२०	प्रतिसीरा ६८०	पडिसारी ६।२२

१. देशी नाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृष्ठ १७०-१७४।
२. काव्यालंकार ५।१।१३।

अभिधानचिन्तामणि कोश की स्वोपज्ञवृत्ति में कहीं-कहीं शब्दों के देशी और संस्कृत—दोनों होने का स्पष्ट निर्देश भी किया गया है। यथा—

गोसो देश्याम्; संस्कृतेऽप्येके (१३८ टी)।
तुङ्गी देश्याम्; संस्कृतेऽपि (१४३ टी)।
विस्कल्लो देश्याम्; संस्कृतेऽपि (१०९० टी)।

इसी प्रकार दोहनपात्र के अर्थ में पारी शब्द का प्रयोग शिशुपालवध (१२।४०) और देशीनाममाला (६।३७)—दोनों में है।

कृश अर्थ के वाचक 'छात' शब्द की भी यही स्थिति है। इस शब्द के बारे में हेमचन्द्राचार्य ने स्वयं प्रश्न उपस्थित कर उस पर पर्याप्त विमर्श किया है। वे लिखते हैं—

'महाकवि माघ ने अपने संस्कृत महाकाव्य शिशुपालवध में 'छात' शब्द का प्रयोग कृश अर्थ में किया है। प्रश्न होता है फिर यह शब्द देशी कैसे? संस्कृत में 'छोंच्' धातु अंतकर्म या छेदन अर्थ में प्रयुक्त है और लोक-व्यवहार में भी इसी अर्थ में प्रचलित है। इस धातु से निष्पन्न 'छात' शब्द कृश अर्थ का वाचक नहीं बन सकता। यद्यपि धातुएं अनेकार्थक होती हैं, किंतु उनका प्रयोग लोक-व्यवहार या लोक-प्रसिद्धि पर निर्भर है। कृश अर्थ में 'छात' शब्द का प्रयोग माघकवि ने ही किया है। अन्यत्र छेदन अर्थ के अतिरिक्त इसका दूसरे अर्थ में प्रयोग देखने में नहीं आया।'[1]

देशीनाममाला में 'दुल्ल' शब्द वस्त्र के अर्थ में प्रयुक्त है। दुकूल शब्द भी वृक्ष तथा वृक्ष की छाल से निष्पन्न वस्त्र के अर्थ में देशी होना चाहिये। बाद में संस्कृत कोशों में यह शब्द सूक्ष्म रेशमी वस्त्र के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा हो—यह अधिक संभव लगता है। नालिकेर, ताम्बूल आदि शब्द भी देशी होने चाहिये। बाद में ये शब्द संस्कृत साहित्य में स्वीकृत कर लिए गये। ऐसे अनेक देशी एवं रूढ शब्द संस्कृत भाषा की सम्पत्ति बन चुके हैं जिन्हें आज देशी कहना कठिन लगता है।

देशी धातुएं

इस कोश में अनेक देशी धातुएं परिशिष्ट २ (देशी धातु-चयनिका) में संगृहीत हैं। पाठक की सुविधा की दृष्टि से हमने इन धातुओं को मूल देशी

१ देशीनाममाला ३।३३ वृत्तिः 'छाओ बुभुक्षितः कृशश्च। ननु 'छातोदरी युवदृशां क्षणमुत्सवोऽभूत्' (माघ सर्ग ५ श्लोक २३) इत्यादौ 'छात' शब्दस्य कृशार्थस्य दर्शनात् कथमयं देश्यः? नैवम्, छेदनार्थस्यैव 'छात' शब्दस्य साधुत्वात्। न च धात्वनेकार्थता उत्तरमत्र। अनेकार्थता हि धातूनां लोकप्रसिद्ध्या। लोके च 'छात' शब्दस्य छेदनार्थं मुक्त्वा अस्यैव कवेः प्रयोगः नान्येषाम्—इत्यलं बहुना।'

शब्दों के साथ न देकर इनका पृथक् संग्रहण किया है। इन धातुओं को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—

१. देशी धातुएं।

२. आदेश प्राप्त धातुएं।

प्रथम कोटि की धातुओं में कहीं-कहीं व्याख्याकारों ने यह देशी वचन है, यह देशी पद है—ऐसा स्पष्ट निर्देश किया है। जैसे—

खलाहि देशीपदमपसरेत्यस्यार्थे।
जूहंति त्ति देशीशब्दत्वाद् आनयन्ति।
णिण्णाइंति देशीपदत्वादधोगच्छति।
फुरांविति त्ति देशीपदमेतद् अपहारयन्ति।
रूसेह त्ति देशीवचनत्वाद् गवेषयत।
वाडुइत्ति देशीवचनमेतत् नश्यतीत्यर्थः।
विप्फालेइ देशीवचनमेतत् पृच्छतीत्यर्थः।

आदेश प्राप्त धातुओं को कुछ विद्वानों ने तद्भव के रूप में स्वीकार किया है। हेमचन्द्राचार्य ने पूर्वाचार्यों की देशी अवधारणा को उल्लिखित कर इन्हें धात्वादेश प्रकरण में समाविष्ट किया है। वे लिखते हैं—**एते चान्यदेंशीषु पठिता अपि अस्माभिर्धात्वादेशीकृताः**[1]—हमारे पूर्ववर्ती देशीकारों ने इन धातुओं को देशीधातुओं के रूप में संगृहीत किया है, पर हमने इन्हें आदेश प्राप्त धातुओं के रूप में ग्रहण किया है।

किंतु आचार्य हेमचन्द्र देशीनाममाला में स्थान-स्थान पर संकेत करते हैं कि अमुक धातु हमने धात्वादेश में बता दी है, इसलिए यहां उसका कथन नहीं किया है। जैसे—

अइच्छइ, अक्कुसइ—गच्छति। अवक्खइ—पश्यति। अप्पाहइ—संदिशति। अल्लत्थइ—उत्क्षिपति। एते धात्वादेशेषु शब्दानुशासने अस्माभिरुक्ता इति नेहोपात्ताः। (१।३७ वृ)

उप्फालइ—कथयति·····उद्धुमाइ—पूर्यते इत्यादयो धात्वादेशेष्वस्माभिरुक्ता इति नोच्यन्ते। (१।११७ वृ)

चुलुचुलइ—स्पन्दते इति धात्वादेशेषूक्तमिति नोक्तम्। (३।१८ वृ)

चोप्पडइ—भक्षति इति धात्वादेशेषूक्तमिति। (३।१६ वृ)

जूरइ खिद्यते क्रुध्यति च इति धात्वादेशेषूक्तमिति नोक्तम्। (३।५२ वृ)

टिविडिक्कइ मण्डयति, टिरिटिल्लइ भ्राम्यति धात्वादेशेषूक्ताविति नोक्तौ। (४।३ वृ)

इन निर्देशों से यह सम्भावना की जा सकती है कि हेमशब्दानुशासन के

१. प्राकृत व्याकरण ४।२ टीका।

धात्वादेश प्रकरण में इन धातुओं का आख्यान यदि पहले नहीं किया होता तो वे अवश्य इन्हें देशीनाममाला में देशीरूप में स्वतंत्र स्थान देते। और यह वास्तविकता भी है कि टिविडिक, टिरिटिल्ल आदि सैकड़ों शब्द ऐसे हैं जिनकी समानता/तुल्यता का वहन करने वाले शब्द संस्कृत में उपलब्ध नहीं हैं। आगम-व्याख्या-ग्रंथों में आचार्य हरिभद्र, आचार्य मलयगिरि आदि व्याख्याकारों ने कई स्थानों पर आदेश प्राप्त धातुओं के देशी होने का स्पष्ट निर्देश भी किया है। जैसे—साहइ त्ति देशीवचनतः कथयति (आवहाटी १ पृ १६०)। 'साह' धातु 'कथ' धातु के आदेशरूप में प्राप्त है।[1]

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं—

जोअ (दृश्) जोएइत्ति देशीवचनमेतद् निरूपयति।
झोस (गवेषय्) झोसेह त्ति देशीवचनत्वाद् गवेषयत।
दुरुह (आ+रुह्) आरोहणे देशी।
फव्वीह (लभ्) फव्वीहामो त्ति देशीपदत्वाद् लभामहे।

इसी आधार पर हमने सभी आदेश प्राप्त धातुओं को देशी धातु के अन्तर्गत रखा है। यद्यपि अनेक आदेश ऐसे हैं जिनका संस्कृत रूप संभव है, वे देशी जैसे प्रतीत भी नहीं होते, जैसे— भञ्ज् को 'सूड' आदेश होता है। सूदन विनाश के अर्थ में संस्कृत में भी प्रसिद्ध है, किन्तु आदेशप्राप्त होने से इसे देशी के अन्तर्गत रखा है। इसी प्रकार 'दुमण' शब्द दून् धातु का आदेश-प्राप्त रूप है।

देशी धातुओं के पृथक् संग्रहण के संदर्भ में आचार्य हेमचन्द्र का अभिमत विशेष ज्ञातव्य है। उनका मन्तव्य है कि देशी शब्दसंग्रह में धात्वादेश-प्रकरण का संग्रह उचित नहीं है, क्योंकि देशीसंग्रह में उन्हीं शब्दों का ग्रहण उचित है जिनका अर्थ सिद्ध या प्रसिद्ध है, जो साध्यमान नहीं है। धात्वादेशों का अर्थ साध्य है, सिद्ध नहीं। दूसरी बात, त्यादि, तुम्, तव्य आदि प्रत्ययों की बहुलता के कारण धातुओं के अनेक रूप बनते हैं जिनका संग्रहण सम्भव नहीं है।[2]

देशीनाममाला में अनेक धातुमूल शब्दों का प्रयोग हुआ है। यथा— आरोग्गिय, आहुडिय, आडुआलिय, आसरिअ। 'करवाना' अर्थ का सूचक 'णिच्' प्रत्यय लगाने से ये नामधातु बन सकती हैं। यथा—आरोग्गं करोति आरोग्गइ। आहुडं करोति आहुडइ। आडुआलिं करोति आडुआलइ इत्यादि।

---

१. प्राकृत व्याकरण, ४।२।

२. देशीनाममाला, १।३७ वृत्तिः 'न च धात्वादेशानां देशीषु संग्रहो युक्तः। सिद्धार्थशब्दानुवादपरा हि देशी साध्यार्थपराश्च धात्वादेशाः। ते च त्यादि-तुम्-तव्यादिप्रत्ययैर्बहुरूपाः संग्रहीतुमशक्या इति।'

इस प्रकार इन नामों से धातु तथा धातु से भूतकृदन्त आदि क्रियावाचक शब्द बनाये जा सकते हैं। सर्वत्र क्रियावाची शब्दों में यह नियम लागू किया जा सकता है।[1] उदाहरण के लिए कुछ अन्य शब्दों को लिया जा सकता है—अविय (कथित), अट्टट्ट (गत), अज्झत्थ (आगत)—यद्यपि ये तीनों शब्द क्रियावाचक भूतकृदन्त के रूप में हैं, तथापि त्यादि के रूप में इनका प्रयोग ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं हुआ इसलिए धात्वादेश में हेमचन्द्राचार्य ने इन्हें निबद्ध नहीं किया।[2]

अवरुंडिय शब्द आलिंगन अर्थ में देशी है। इसके मूल में धातु है—अवरुंड। अवरुंडइ, अवरुंडिज्जइ, अवरुंडिऊण इत्यादि क्रियापदों का प्रयोग मिलने पर भी आचार्य हेमचन्द्र ने इसे धात्वादेश प्रकरण में समाविष्ट नहीं किया, क्योंकि उनके पूर्ववर्ती आचार्यों ने भी इसे धात्वादेश में स्थान नहीं दिया।[3]

आचार्य हेमचन्द्र अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि अज्झस्सइ, अज्झसियं इत्यादि प्रयोगों के आधार पर अज्झस्स शब्द को धात्वादेश में ग्रहण करना चाहिए था। प्राचीन देशीसंग्रहकारों का अनुसरण करते हुए हमने इसे धात्वादेश में न लेकर अज्झस्स (आकृष्ट) शब्द के रूप में देशीसंग्रह में संगृहीत किया है।[4]

इन शब्दों एवं धातुओं को आधार मानकर इस कोश में हमने कुछ ऐसी धातुओं का ग्रहण किया है जो अन्य शब्दकोशों में नहीं हैं। जैसे—

आलंक —लंगड़ा करना, पंगु करना।
आसगल—आक्रांत करना, प्राप्त करना।
आसर—सम्मुख आना।
इंघ सूंघना।
इग्घ—तिरस्कृत करना।
इल्ल—आसिक्त करना, सींचना।

इन धातुओं का निर्माण/संग्रहण सर्वथा मनगढंत या निराधार नहीं है। हेमचन्द्राचार्य के निम्नांकित संदर्भों को इनकी आधारशिला कहा जा सकता है। 'उग्गहिय' शब्द का अर्थ है रचित, जो 'रचि' धात्वादेश से ही सिद्ध है। अर्थात् रच् धातु को 'उग्गह' आदेश हुआ है। उस उग्गह धातु से ही 'उग्गहिय' शब्द रचित अर्थ में निष्पन्न हुआ है।[5]

---

१. देशी नाममाला, १।६६ वृत्ति।
२. वही, १।१० वृत्ति।
३. वही, १।११ वृत्ति।
४. वही, १।१३ वृत्ति।
५. प्राकृत व्याकरण, ४।६४; देशीनाममाला, १।१०४ वृत्ति।

रम् धातु को उब्भाव आदेश होता है। इसी उब्भाव से निष्पन्न हुआ है—उब्भाविय (सुरत, रतिक्रीडा)। इसी प्रकार ऊसलिय, ऊसुंभिय (उल्लसित) शब्द उल्लस् धात्वादेश द्वारा सिद्ध है।[1] पच्चुद्धार और पच्चोवणी —ये दोनों क्रियाशब्द हैं। पच्चुद्धरिअ और पच्चोवणिअ इन्हीं क्रियाशब्दों से निष्पन्न हुए हैं।[2]

कुछ धातुमूल शब्द एवं धातुएं स्वरूप की दृष्टि से तद्भव प्रतीत होती हैं, पर अर्थ की दृष्टि से पूर्णतया देशी हैं। जैसे—

आसरिअ का अर्थ है—सम्मुख आया हुआ, न कि आश्रित।
आलंकिय का अर्थ है—लंगड़ा, न कि अलंकृत।
गुंज का अर्थ है—हंसना, न कि गूंजना।
हण का अर्थ है—सुनना, न कि हिंसा करना।

प्रस्तुत कोश के संकलन की प्रक्रिया

अनेक स्थलों पर आगम तथा आगमेतर ग्रंथों के व्याख्याकारों ने यह 'देशीशब्द' है ऐसा निर्देश किया है। यह निर्देश विभिन्न रूपों में मिलता है—

पहकरो त्ति देशीशब्दोऽयं समूहवाची।
पादाभरणं लोके पागडा इति प्रसिद्धा।
कप्पट्ठ समयपरिभाषया बालक उच्यते।
उत्तूइओ त्ति देशीपदमेतद् गर्वे वर्तते।
इगमवि देशीपदं क्वापि प्रदेशार्थे वर्तते।
अणोरपारम्मि देशयुक्त्या अपारे।
अचियत्तं देशीवचनं अप्रीत्याभिधायकम्।
उप्पित्थशब्दस्त्रस्तव्याकुलवाची देशीति क्वचित्।
खोल्लं देशीशब्दत्वात् कोटरम्।
लोकभाषायां अंबाडी इति प्रसिद्धा।
चिचइअं ति देशीवचनतः खचितमित्युच्यते।
चोल्लकं देशीभाषया भक्तमुच्यते।
जगारीशब्देन समयभाषया रब्बा भण्यते।
णगारो देसीवयणेण पायपूरणे।
चेल्ललकानि देशीवचनाद् देवीप्यमानानि।
चुल्लशब्दो देश्यः क्षुल्लपर्यायः।
चुक्कारशब्दो देश्यां शब्दवाची।

१. प्राकृत व्याकरण, ४।२०२; देशीनाममाला, १।१४१, १४२ वृत्ति।
२ देशीनाममाला, ६।२४ वृत्ति।

निहुयं ति आर्षत्वाद् निह्नुतम् ।
प्राकृते पुष्परजः शब्दस्य तिगिंछ इति निपातः देशीशब्दो वा ।
तुंडियं थिग्गलं देसीभासाए सामयिगी वा एस पडिभासा ।
तिगिंछ त्ति देशीवचनेन बुभुक्षोच्यते ।
दुवग्ग त्ति देशीवचनत्वाद् द्वावपि ।
अमाधातो रूढिशब्दत्वाद् अमारिरित्यर्थः ।
मरहट्ठविसयभासाए वा इत्थी माउग्गामो भण्णति ।
सहणं ति देसीभासा सहेत्यर्थः ।
वाउप्पइय त्ति वातोत्पतिका रूढ्यावसेया ।
वालग्गपोइयातो त्ति देशीपदं वलभीवाचकम् अन्ये त्वाकाशतडागमध्य-
स्थितं क्षुल्लकप्रासादमेव वालग्गपोइया य त्ति देशीपदाभिधेयमाहुः ।
संघाडिय त्ति देशीपदमव्युत्पन्नमेव मित्राभिधायि ।
वियडिशब्देन लोके अटवी उच्यते ।
विसालिसेहिं ति मागधदेशीयभाषया विसदृशैः ।
संगेल्ली समुदायः देश्योऽयं शब्दः ।
सासेरा देशीपदत्वाद् यंत्रमयी नर्तकी ।
साहिशब्दो राजमार्गे देशी ।
सुत्तं मदिराखोलः देशविशेषप्रसिद्धो वा कश्चिद् द्रव्यः ।
सुरूची रूढिगम्या आभरणविशेषः इति केचित् ।
हुरत्था नाम देसीभासातो बहिद्धा ।
होले त्ति निट्ठुरमामंतणं देसीए भविलवचनमिव ।
होला इति देशीभाषातः समवया आमन्त्र्यते ।

प्रारम्भ में हमने प्रायः उन्हीं शब्दों का संकलन किया जहां देशी आदि का उल्लेख था, किन्तु जब आचार्य हेमचंद्र की देशीनाममाला का पारायण किया तब अनेक दृष्टियां स्पष्ट हुईं। इसलिए सभी आगम एवं व्याख्याग्रंथों का पुनः अवलोकन किया। इससे हजारों शब्द इस कोश में और जुड़ गए।

यहां कुछ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत हैं जहां हमने देशीनाममाला को आदर्श मानकर शब्दों का चयन किया है—

यद्यपि कोश में नञ् समास वाले शब्दों का संग्रहण प्रायः नहीं किया जाता, किन्तु देशीनाममाला में कुछ ऐसे शब्द भी मिलते हैं। जैसे—अणच्छिआर (अच्छिन्न), अभिक्खिय (अनिंदनीय)। इस आधार पर हमने भी ऐसे शब्दों का संकलन किया है। जैसे—अतितिण, अचोक्ख, अच्छिक्क, अजढर आदि।

आचार्य हेमचंद्र ने ऐसे अनेक शब्दों को देशी माना है जिनकी संस्कृत छाया संभव है, किन्तु संस्कृत में वे प्रसिद्ध नहीं हैं। जैसे—

अंक (अङ्क) निकट।
अक्खलिय (अस्खलित) आकुल-व्याकुल।
अदंसण (अदर्शन) चोर।
अमय (अमृत) चांद।

इसी आधार पर प्रस्तुत कोश में भी अनेक शब्दों का समावेश किया गया है। जैसे—

अच्चिय (अर्चित) मूल्यवान्।
अवतंस (अवतंस) पुरुषव्याधि नामक रोग।
आयंस (आदर्श) घोड़े का आभूषण।
तरमल्लिहायण (तरोमल्लिहायन) युवा।
पइरिक्क (प्रतिरिक्त) एकांत।

देशीनाममाला में इल्ल और इर प्रत्यय वाले कुछ शब्दों का संग्रहण है। जैसे—अंबिर (आम), सच्चिल्लय (सत्य), तत्तिल्ल (तत्पर); लोहिल्ल (लोभी), णच्चिर (रमणशील)। इसी आधार पर दिट्ठिल्लिय, गतिल्लिय आदि शब्दों को हमने भी देशी की कोटि में रखा है। आचार्य मलयगिरि ने पढमेल्लुग शब्द के लिए देशी का निर्देश किया है।[1] इसलिए संभव लगता है कि किसी क्षेत्र-विशेष में इल्लादि-प्रधान शब्दों का व्यवहार अधिक प्रचलित रहा हो, उसी के आधार पर इसे देशी माना हो। 'इर', 'इल्ल' प्रत्यय से सम्बंधित हजारों शब्द आगम एवं व्याख्याग्रंथों में मिलते हैं। किन्तु सबका समावेश इसमें नहीं हो सका है।

प्राकृत शैली से जिन शब्दों का रूप परिवर्तित हो गया है, वैसे अनेक शब्द देशीनाममाला में संगृहीत हैं। हमने भी कुछ शब्द इस कोश में सम्मिलित किए हैं, जैसे—आघविय[2], तिगिंछ[3] आदि।

देशीनाममाला में राजा तथा गांव-विशेष के नाम भी देशी रूप में लिए गए हैं। राजा सातवाहन के लिए तीन शब्द आए हैं—कुंतल, चउरंचिध और हाल तथा गुजरात के एक गांव 'भोढेरक' के लिए 'भयवग्गाम' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

इसी आधार पर हमने भी कुछ व्यक्तियों, देशों तथा नगरों के नामों को देशी के अंतर्गत लिया है। जैसे—गोब्बर, कुडक्क, कोक्कास, तुरक्क आदि।

आचार्य हेमचंद्र ने संख्यावाची शब्दों को भी देशी के अंतर्गत समाविष्ट

---

१. आवश्यक, मलयगिरि टीका पत्र ११६ : प्रथमा एव प्रथमेल्लुका देशी-पदमेतत्।
२. आघवियं ति प्राकृतशैल्या छांदसत्वाच्च गुरोः सकाशादागृहीतम्।
३. प्राकृते पुष्परजःशब्दस्य तिगिंछ इति निपातः देशीशब्दो वा।

किया है। जैसे—पंचावण्ण, पणवण्ण (पचपन) आदि। इसी आधार पर हमने भी पण, चालीस, पणयाल, अडयाल, पणपण्ण आदि संख्यावाची शब्द लिए हैं। संख्यावाची शब्दों के अंतर्गत अडड, अडडंग, हुहुय, हुहुयंग, अवव, अववंग आदि शब्द भी महत्त्वपूर्ण हैं। ये शब्द संस्कृत कोशों में तो अप्राप्त हैं ही, अन्य परम्पराओं में भी नहीं मिलते। ये जैन गणित के विशेष पारिभाषिक शब्द हैं। अतः इन्हें देशीशब्दों के रूप में स्वीकृत किया है।

सामान्य कोशों में क्त्वा प्रत्ययांत शब्द नहीं मिलते। किन्तु हमने मूल-रूप में प्रत्यय के साथ ही उन शब्दों का इस कोश में समावेश किया है। जैसे—अंगोहलेऊण, अप्पाहट्टु आदि। ऐसे शब्दों को लेने का कारण यह है कि कहीं-कहीं मूल शब्द का प्रयोग आगमों में नहीं मिलने से इन शब्दों द्वारा उन अर्थों का ज्ञान हो जाता है।

अनुकरणवाची शब्दों के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ इन्हें देशी मानते हैं तथा कुछ इन्हें देशी रूप में स्वीकार नहीं करते। किन्तु हमने इस कोश में अनेक अनुकरणवाची शब्दों को देशी रूप में स्वीकार किया है। जैसे—घणघणाइय, चवचव, छडछडा, छु, छुक्कारण, थिविथिविंत, दुहदुहग।

वाक्यालंकार के रूप में प्रयुक्त अव्यय भी देशी शब्दों के अंतर्गत समाविष्ट हैं। क्योंकि कहीं-कहीं टीकाकारों ने भी इन्हें देशी रूप में स्वीकार किया है। जैसे—'आइं ति देशीभाषायां', 'खाइणं' ति देशीभाषया वाक्यालंकारे। प्राकृत के पादपूरक अव्ययों को भी देशी के रूप में स्वीकार किया है। जैसे—जे, मो, र, से, अदुत्तरं, बले। इनके देशी होने के कुछ प्रमाण इस प्रकार हैं—

१. से शब्दः मागधदेशीप्रसिद्धो निपातस्तच्छब्दार्थः।
२. ऊति णाम मरहट्ठादिसु णादि दुगुंछिज्जति।
३. णगारो देसिवयणेण पायपूरणे।
४. वाणमिति पूरणार्थो निपातः।

यद्यपि 'क' प्रत्यय स्वार्थ में होता है किन्तु इस कोश में मूलशब्द के साथ जहां भी स्वार्थ का द्योतक क, अ, य, ग और त आदि जुड़ गए हैं उन्हें अर्थ भिन्न न होने पर भी पृथक् रूप से ग्रहण किया है। जैसे—

अंछण, अंछणय—विस्तार।
कडच्छु, कडच्छुत, कडच्छुय—चम्मच।

इन्हें स्वतंत्र रूप से ग्रहण करने के दो कारण हैं—

१. इन शब्दों का ग्रंथों में ऐसा प्रयोग मिलता है। अतः पाठक की सुविधा की दृष्टि से उनको अलग-अलग ग्रहण किया है। यदि साहित्य में 'कुड' शब्द की अपेक्षा 'कुडग' का प्रयोग है तो पाठक 'कुडग' शब्द ही देखना चाहेगा। आचार्य हेमचंद्र ने देशीनाममाला में कहीं-कहीं ऐसे शब्दों का निर्देश भी किया है। जैसे—

उवकयं कप्रत्ययाभावे उवकयं सज्जितम् (१।११९ वृत्ति)।
जच्छंदओ स्वच्छन्दः कप्रत्ययाभावे जच्छंदो (३।४३ वृत्ति)।

इसी प्रकार कहीं-कहीं दीर्घ-ह्रस्व मात्रा के अंतर वाले, अ/आ/इ/उ/ग/घ/ह के अंतर वाले तथा व्यञ्जन-द्वित्त्व वाले शब्द समानार्थक होने पर भी पृथक् रूप से ग्रहण किए गए हैं। जैसे—

चुडलय, चुडलि, चुडलिय, चुडली, चुडल्लि, चुडिलीय—जलती हुई लकड़ी।

गुम्मी, गुम्ही, गोमी, गोम्मी, गोम्ही—कनखजूरा।
उयरिणिया, ऊरणिया, ऊरणीया—जंतु-विशेष।
भिलुगा, भिलुघा, भिलुहा—भूमि की रेखा।

२. इन्हें भिन्न ग्रहण करने का दूसरा कारण—कभी-कभी शब्द में अ/आ/क/य/ग आदि जुड़ने से अर्थ में बहुत भिन्नता आ जाती है। जैसे—

- अवल्ल—बैल। अवल्लय—नौका खेने का एक उपकरण।
- उद्धच्छवि विपरीत। उद्धच्छविअ—सज्जित।
- उंड—१. मुख, २. ऊंडा। उंडअ—पांव में पिंड रूप में लगे उतना गहरा कीचड़। उंडग—स्थण्डिल।
- पयल—नीड। पयला—निद्रा। पयलाअ—सर्प। पयल्ल प्रसृत।
- पडिसारिअ—स्मृत। पडिसारी—यवनिका।

इस कोश के मूलभाग में आदि नकार वाले शब्दों को नहीं रखा गया है। आगमों में जहां कहीं आदि नकार वाले शब्द प्राप्त हुए, उनके स्थान में 'ण' कर दिया गया है। क्योंकि देशी शब्दों की आदि में नकार का सर्वथा अभाव है। हेमचंद्राचार्य के मतानुसार 'देश्य प्राकृत में आदि नकार असंभव ही है। प्राकृत व्याकरण में 'वा आदौ' सूत्र के द्वारा जो वैकल्पिक आदि ण का विधान किया गया है, वह तो मात्र संस्कृत शब्दों से निष्पन्न प्राकृत शब्दों की अपेक्षा से है।"[1]

सामान्यतः संस्कृत या प्राकृत में उपसर्ग जुड़ने पर अर्थ परिवर्तित हो जाता है। हेमचंद्राचार्य के अभिमत में देशी शब्दों का उपसर्ग के साथ कोई स्वतंत्र सम्बंध नहीं है। जैसे—उच्छिल्ल—छिद्र (दे १/९५)। छिल्ल—छिद्र (दे ३/३५)। यहां उत्पूर्वक छिल्ल शब्द नहीं है, लेकिन छिल्ल और

---

१. देशीनाममाला, ५।६३ वृत्ति :
नकार आदयस्तु देश्याम् असम्भविन एवेति न निबद्धाः। यच्च 'वा आदौ' (प्रा १।२२९) इति सूत्रितम् अस्माभिः तत् संस्कृतभवप्राकृतशब्दापेक्षया न देशी अपेक्षया इति सर्वमवदातम्।

उच्छिल्ल—दोनों स्वतंत्र शब्द हैं। दोनों का अर्थ एक ही है—छिद्र। इसी प्रकार फेस-उप्फेस, उज्झिक्खिय-भिक्खिय आदि शब्दों की स्थिति है।[1]

साहित्य में हमें जो शब्द जिस रूप में प्रयुक्त मिला उसका संकलन हमने उसी रूप में किया है। जैसे—बौद्ध भिक्षु के लिए तच्चण्णिय पाठ प्रसिद्ध है, किंतु कहीं-कहीं ग्रंथों में तव्वण्णिय पाठ भी मिलता है। यहां बहुत अधिक संभावना है कि प्राचीन लिपि में च और व की समानता से तच्चण्णिय के स्थान पर तव्वण्णिय शब्द पढा गया हो। हमें दोनों रूप प्राप्त हुए हैं। अतः दोनों का संकलन कर दिया है। यह भी बहुत संभव है कि 'तव्वण्णिय' शब्द बौद्ध भिक्षु के अर्थ में अनेक स्थानों पर प्रचलित रहा हो। आचार्य हेमचंद्र ने 'च', 'व', 'ब' के व्यत्यय के अनेक शब्द देशीनाममाला में संगृहीत किए हैं। जैसे - चालवास-बालवास, चिद्दविअ-विद्दविअ, चुक्क-वुक्क, चुक्कड-बोक्कड आदि। इसी प्रकार मगदंतिया मालती के लिए प्रसिद्ध है किंतु मदगंतिया पाठ भी मिलता है। संभव है लिपिकार द्वारा वर्ण-व्यत्यय हो गया हो या इसी रूप में यह प्रचलित रहा हो।

कल्पसूत्र में 'अवामंसा' शब्द अमावस्या के अर्थ में प्रयुक्त है। प्रथम दृष्टिपात में लगता है कि यह 'अमावस' शब्द में वर्णव्यत्यय होने से या लिपि-दोष होने के कारण 'अवामंसा' रूप बन गया होगा। किंतु कल्पसूत्र की चूर्णि तथा टिप्पणक की सभी प्रतियों में 'अवामंसा' शब्द मिलने से लगता है कि उस समय अमावस के लिए अवामंसा शब्द ही प्रचलित रहा होगा। मुनि पुण्यविजयजी ने इस पर पर्याप्त विमर्श किया है।[2]

'उत्तुहिय' के स्थान पर उड्डुहिय शब्द भी कहीं-कहीं मिलता है जो कि हेमचंद्राचार्य की दृष्टि में लिपिभ्रम ही है।[3] इसी प्रकार अइरिप-अइरिप्प, अंबसमी-अंबमसी, उत्तम्पिअ-उत्तम्मिअ, झरंक-झरंत—इन शब्दों में भी लिपिभ्रम की संभावना की जा सकती है। इस विषय में आचार्य हेमचंद्र अपना अभिमत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि हो सकता है लिपिभ्रम न भी हो।

---

१. देशीनाममाला, १।९५ वृत्ति :
न हि देशीशब्दानामुपसर्गसम्बन्धो भवति।

२. कल्पसूत्र टिप्पनक, पृष्ठ १६ :
विश्वेष्वपि चूर्ण्यादर्शेषु टिप्पणकादर्शेषु च अवामंसा। इत्येव पाठो वरीवृत्यते इति सम्भाव्यते तत्कालीनभाषाविदां अमावसाऽर्थको अवामंसा-शब्दोऽपि सम्मतः इति नात्राशुद्धपाठाशंका विधेयेति।

३. देशीनाममाला, १।१०५ वृत्ति :
उत्तुहियं तकारसंयोगस्थाने डकारसंयोगं केचित् पठन्ति। स च लिपिभ्रम एव इति।

दोनों रूपों में ही शब्दों का प्रचलन रहा हो। इसमें बहुश्रुत या सर्वज्ञ ही प्रमाण हैं।[1]

लिपिभ्रम के कारण कहीं-कहीं अर्थ का आमूलचूल परिवर्तन भी परिलक्षित होता है। 'पडीर' शब्द का अर्थ है—चोरणिवह अर्थात् चोरों का समूह। लिपिभ्रम के कारण किसी ने 'चोरणिवह' के स्थान पर 'बोरणिवह' पढ़ लिया और इस संदर्भ में 'पडीर' का अर्थ बेरों (बदरी फल) का समूह हो गया।[2]

देशीनाममाला की वृत्ति में आचार्य हेमचंद्र ने अन्य आचार्यों के अर्थभेद, शब्दभेद तथा उनके मतों का भी उल्लेख किया है। जैसे—

केचित् प्रिये कायरो इत्याहुः।
अलमलवसहो सप्ताक्षरं नामेति गोपालः।
ऊसाइअं उत्क्षिप्तमिति धनपालः।
जंबुलं मद्यभाजनमिति सातवाहनः।
टोलं पिशाचमाहुः सर्वे शलभं तु राहुलकः।
खेआलू निःसह, असहन इत्यन्ये।
पेढालं वर्तुलमिति द्रोणः।
पेंडारो महिषीपाल इति देवराजः।

हमने इन सबका समावेश कोश के मूलभाग में किया है।

कहीं-कहीं आचार्य हेमचंद्र ने पूर्वज देशी कोशकारों द्वारा मान्य या प्रयुक्त देशी शब्द-संघटना के विषय में ऊहापोह किया है। जैसे—अच्छिघरुल्ल, अच्छिहरिल्ल तथा अच्छिहरुल्ल—इन तीन शब्द-प्रयोगों में उन्होंने केवल 'अच्छिहरुल्ल' को अपने ग्रंथ में स्थान दिया है। शेष दो के लिए 'बहुज्ञाः प्रमाणम्' कहकर छोड़ दिया है। हमने ऐसे सभी शब्दों का संकलन किया है।

देशी शब्द विभिन्न ग्रंथों में भिन्न-भिन्न रूप से प्रयुक्त हुए हैं। व्याख्याकारों ने किसी एक रूप को मुख्य मानकर दूसरे रूपों को पाठभेद में उल्लिखित किया है। यत्र-तत्र हमने उन पाठभेदों में प्रयुक्त कुछेक देशी रूपों को टि और पा के उल्लेख के साथ इस कोश में समाविष्ट किया है। जैसे—

उस्सूलग-उच्छूलग। कुंडिल्लग-कुंटुल्लिग। फुग्गफुग्ग-फुग्गपुग्ग।
भंभब्भूय-भंभाभूय। भुंभर-भुंभल-सुंभल।

कहीं-कहीं मूलशब्द तो हमें जैसा मिला वैसा ही रखा है, किन्तु कोष्ठक

---

१. देशीनाममाला, १।३७ वृत्ति :
केषांचिद् भ्रमोऽभ्रमो वेति बहुदृश्वान एव प्रमाणम्।
२. वही, ६।८ वृत्ति।

में उसका संभावित शुद्ध रूप भी दे दिया है। जैसे—

ओट्टिय (दोट्टिय, दोद्धिय ?)
गोमाणसिया (गोमासणिया ?)
तल्लकट्ट (तल्लवत्त ?)
तूमणय (णूमणय ?)

जो शब्द आगम एवं आगमेतर ग्रंथों तथा देशीनाममाला दोनों में मिले हैं, उन शब्दों के दोनों प्रमाण-स्थलों का उल्लेख किया है। जैसे—

अइराणी (अंवि पृ २२३; दे १।५८)
अंगुट्ठी (उसुटी प ५४; दे १।६)
अणह (ज्ञा १।१८।२४; दे १।१३)

इसी प्रकार अणुय, पक्खरा, पडिहत्थ, पणवण्ण आदि आदि।

अनेक स्थलों पर मूलपाठ में प्रसंग से शब्द का अर्थ भिन्न प्रतीत होता है तथा व्याख्याकार उसका भिन्न अर्थ करते हैं। ऐसी स्थिति में हमने दोनों अर्थों का सप्रमाण उल्लेख किया है। जैसे—आडोलिया। टीकाकार ने इसका अर्थ रुद्ध किया है जबकि प्रसंग से उसका अर्थ खिलौना होना चाहिए।[1] कन्नड हिन्दी कोश में आदु-आडु शब्द खेलने के अर्थ में गृहीत है।

इसी प्रकार संपादकों द्वारा किए गए अर्थों पर भी हमने विमर्श किया है। निशीथचूर्णि का एक शब्द है अत्थभिल्ल। पादटिप्पण में इसका अर्थ शस्त्र-विशेष किया गया है। शब्द के आधार पर यह अर्थ ठीक भी लगता है – अत्थ अर्थात्-अस्त्र, भिल्ल अर्थात्-भाला। वहां जंगली जानवरों के प्रसंग में यह शब्द आया है, अतः अत्थभिल्ल का अर्थ भालू होना चाहिए।[2]

जिस किसी शब्द के एकाधिक अर्थ हैं उनमें से हमारे द्वारा निरीक्षित ग्रंथों में प्राप्त अर्थों के प्रमाण प्रस्तुत किए गये हैं। शेष अर्थ हमने 'पाइयसद्दमहण्णवो' से बिना प्रमाण के ग्रहण किए हैं, क्योंकि प्रमाण हमने उन्हीं ग्रंथों के प्रस्तुत किए हैं, जिनका हमने स्वयं निरीक्षण किया है।

इस कोश में अनेक ऐसे शब्दों का भी संग्रहण है जो देशी हैं या नहीं, इस दृष्टि से विमर्शणीय हो सकते हैं। किन्तु अन्यान्य विद्वानों तथा कोशकारों द्वारा वे देशी रूप में मान्य रहे हैं, अतः हमने उनका उसी रूप में संकलन किया है। इस संकलन का एकमात्र उद्देश्य है कि विभिन्न विद्वानों द्वारा देशीरूप में स्वीकृत सभी शब्दों की उपलब्धि एक ही ग्रन्थ में हो जाए।

---

१. ज्ञाताधर्मकथा, १।१८।८ : अप्पेगइयाणं आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिंदुसए अवहरइ·····। टीका पत्र २४४ : आडोलियाओ – रुद्धाः।

२. निशीथचूर्णि २, पृष्ठ ९३ :
अदेसिको वा अडविपहेण गच्छति, तत्थ वि तरच्छ-वग्घ-अत्थभिल्लादिभयं।

प्रस्तुत कोश की विशेषता

एक ही अर्थ के वाचक भिन्न शब्दों के संदर्भ में अन्य कोशों की भांति 'देखो' का निर्देश न कर पाठक की सुविधा के लिए उस शब्द का अर्थ वहीं दे दिया गया है। कहीं-कहीं शब्द के अर्थ की विस्तृत जानकारी तथा तुलना की दृष्टि से दो-चार स्थानों पर 'देखो' का निर्देश भी किया है। जैसे—**आणंदवड— देखें वहूपोत्ति। उक्कोडभंग— देखें खोडभंग।**

कोशों में कहीं-कहीं एक शब्द का अर्थ देखने के लिए तीन-चार शब्द देखने पर भी अर्थ नहीं मिलता। पाइयसद्दमहण्णवो में अनेक स्थलों पर ऐसा हुआ है। जैसे - पज्जुसवणा देखो पज्जुसणा। पज्जुसणा देखो पज्जोसवणा। पलोहिय देखो पलोभिअ। पलोभिअ देखो पलोभविअ। रम्ह देखो रंफ। रंफ देखो रंप। अनेक स्थलों पर शब्दों के पास-पास आने से पुनरुक्ति दोष-सा प्रतीत हो सकता है किंतु सुविधा की दृष्टि से हमने सभी शब्दों का अर्थ प्रायः उनके सामने ही दे दिया है।

जहां दो समस्त शब्द एक अर्थ के वाचक हैं वहां देशी शब्द को अलग से प्रदर्शित करने के लिए ' ' चिह्न लगा दिया है, जैसे—'कन्न'लइय', 'अट्टण' साला आदि।

इस कोश में अनेक ऐसे शब्द हैं जो अर्थ की दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं। भिन्न-भिन्न प्रसंगों में उन शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ मिलते हैं। जैसे—अव्वो, कडिल्ल, भंड, वल्लर आदि।

प्रस्तुत कोश में प्रयुक्त ग्रंथों में कुछ ग्रंथ देशी शब्दों की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। जैसे—अंगविज्जा, भगवती, आवश्यकचूर्णि, कुवलयमाला, नंदीचूर्णि, निशीथभाष्य एवं चूर्णि, व्यवहार भाष्य, बृहत्कल्पभाष्य आदि-आदि। इनमें नवीन एवं अप्रचलित देशी शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे—अंबखुज्ज, अक्खु, इद्ध, चोप्प, चोरालि, तेह, वियडासय आदि।

इस कोश में वनस्पति, जीवजंतु, आभूषण, खाद्यपदार्थ से संबंधित अनेक ऐसे शब्द हैं जो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से संबंधित हैं। अनेक स्थलों पर स्वयं व्याख्याकार क्षेत्र-विशेष का उल्लेख भी करते हैं। जैसे—

मूयग—मूयग त्ति मेदपाटप्रसिद्धस्तृणविशेषः।
विरालिया— गोल्लविसए वल्ली।
धरच्छ—मगधकं धराक्षं च रूढिगम्यम्।

देश विशेष में प्रचलित एवं व्यवहृत होने वाले शब्द देश्य की कोटि में आते हैं। क्योंकि इनका मूलरूप न संस्कृत में मिलता है और न प्राकृत में। हमने भी अनेक ऐसे शब्दों का समावेश इसमें किया है जो क्षेत्र-विशेष से संबंधित हैं। जैसे— नारिकेल, ताम्बूल, घोडग आदि। यद्यपि ये शब्द संस्कृत

साहित्य एवं कोशों में भी मिलते हैं, किन्तु ये शब्द क्षेत्र-विशेष में प्रचलित भाषाओं के हैं। बाद में इनका संस्कृत साहित्य में प्रयोग होने लगा। इसी प्रकार वारक/वारग शब्द संस्कृत में घड़े के लिए प्रसिद्ध है किन्तु यह शब्द मरुधर देश में मंगलघट के अर्थ में प्रसिद्ध था—'वारकः मरुदेशप्रसिद्धनाम्ना मांगल्यघटः।'

पण्णवणा सूत्र में अनेक जीव-जंतुओं एवं वनस्पतियों का नामोल्लेख हुआ है। उनकी पहचान को कठिन बताते हुए स्वयं टीकाकार कहते हैं—देशतोऽवसेयाः। सम्प्रदायादवसेयः। लोकप्रतीतः। रूढ़िगम्यम् आदि।

जहां हमें नाम के बारे में निश्चित जानकारी मिली उसका नामोल्लेख किया है। अन्यथा वनस्पति-विशेष, लता-विशेष, पुष्प-विशेष का उल्लेख किया है। इसी प्रकार आभूषणों के बारे में भी आभूषण-विशेष का उल्लेख किया है।

इस कोश में ऐसे अनेक देशी शब्द संकलित हैं जो प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं। जैसे—

आवाह, विवाह, आहेणग, पहेणग, गिरिजन, करडुयभत्त, मडगगिह, एमिणिआ, अण्णाण, आणंदवड, वहूपोत्ति, भोयडा आदि आदि शब्द सामाजिक रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं के संवाहक हैं। अधिक्कमणक, अवयार, इंदड्ढलय आदि शब्द उत्सवों तथा अइराणी, इंदियाली, उंत, उयणिसय, कोंटल, विंटल आदि शब्द विशेष अनुष्ठानों एवं मंत्रों के वाचक हैं।

अप्पसत्थभ, आपुरायण, आमोसल, कंडूसी, ककितजाण, गल्लोल आदि अनेक शब्द विविध गोत्रों के वाचक हैं।

इसी प्रकार नानाप्रकार के शिल्पकर्म, पुस्तकें, जातियां, सिक्के, यान-वाहन, शस्त्र, रोग, खेल, जाल, वाद्य, वेशभूषा, खानपान, घर के अवयव, घरेलु उपकरण, पारिवारिक सम्बंध आदि के संसूचक सैंकड़ों शब्द इस कोष में संगृहीत हैं।

अमोसली, कडजुम्म, उग्गह, अमुदग्ग, किट्टि, णिगोद, फड्डग, पउट्ट-परिहार आदि पारिभाषिक शब्द भी इसमें संगृहीत हैं।

इस कोश में अनेक एकार्थक देशी शब्दों का संकलन है। जैसे—छोटी तलाई के वाचक तीन शब्द हैं—खल्लर खिल्लूर छिल्लर शब्दा देश्या एकार्थकाः।

इसी प्रकार और भी उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

१. विदग्ध—छलिआ छइल्ल छप्पण्ण।

२. मां—अल्ला अव्वा अम्मा।

३. दुष्टघोडा—तंडीति वा गलीति वा मरालीति वा एगट्ठा।

४. पैबंद—पडियाणिया थिग्गलयं छंदंतो य एगट्ठं।

कोश परम्परा में प्रायः यह देखा जाता है कि पुल्लिग शब्द लेने के बाद उसी का स्त्रीलिंग शब्द स्वतंत्ररूप में नहीं लिया जाता। किंतु हमने स्त्रीलिंग एवं पुल्लिग दोनों प्रकार के शब्दों को संगृहीत किया है। जैसे—पिल्लक-पिल्लिका, सिंगक-सिंगिका, कब्बट्ठ-कब्बट्ठी आदि आदि। इनको संगृहीत करने का एक विशेष उद्देश्य यह भी था कि कहीं-कहीं शब्द में लिंग-परिवर्तन के साथ अर्थ-परिवर्तन भी हो जाता है। जैसे—हालाहल—स्वामी। हालाहला—ब्राह्मणी (कीट-विशेष)।

ओवासण, उवासणा और उपासना—ये तीनों एकार्थक हैं। इनका अर्थ है—क्षुरकर्म। उपासना टीकाकारों द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ शब्द है, किन्तु संस्कृत से अर्थ भिन्न होने के कारण यह देशी है। ऐसे अनेक संस्कृत-निष्ठ देशी शब्द इस कोश में संगृहीत हैं। जैसे—छेलापनक, परिपूणक आदि।

कोश का बाह्य स्वरूप

प्रस्तुत ग्रन्थ के मूल भाग में लगभग दस हजार देशी शब्दों का संकलन है। प्रायः शब्दों के साथ संदर्भ-स्थल भी निर्दिष्ट हैं जिससे पाठक उस अर्थ को भली-भांति हृदयंगम कर सके। जैसे—

१. अंतोवगडा नाम उवस्सयस्स अब्भंतरं अंगणं।

२. एरंडइए साणे त्ति हडक्कायितः श्वा।

३. कुब्बंति निम्नं क्षाममित्यर्थः।

४. रज्जं कागिणी भण्णति।

जहां अर्थ की स्पष्टता के लिए संदर्भ-स्थल अपेक्षित या अत्यावश्यक नहीं समझे गये, वहां केवल शब्द का अर्थ और प्रमाण का उल्लेख मात्र किया गया है।

इस देशी शब्दकोश का उद्देश्य आगम एवं उसके व्याख्या-ग्रन्थों के देशी शब्दों को संकलित करना था किन्तु कुवलयमाला, पाइयलच्छीनाममाला, प्राकृत व्याकरण एवं सेतुबंध के देशी शब्द भी मूल भाग में संकलित हैं।

प्रस्तुत कोश के साथ दो परिशिष्ट भी संलग्न हैं। प्रथम परिशिष्ट अवशिष्ट देशी शब्दों का है। इसमें आगमेतर प्राकृत तथा अपभ्रंश ग्रन्थों के ३३८१ देशी शब्दों का समावेश है। ग्रन्थ के मूलभाग में हमने मूल ग्रन्थों का दो या तीन बार पारायण किया तथा अर्थ-निर्धारण की दृष्टि से भी मूलग्रन्थों का अनेक बार अवलोकन किया। इस परिशिष्ट में हमने मूलग्रंथ को नहीं देखा, किन्तु उनके संपादकों ने जहां अन्त में देशी शब्दों की सूची दी है, अथवा शब्द-सूची में जिन शब्दों को देशीचिह्न से चिह्नित किया है, उन शब्दों का इसमें संकलन कर दिया है। पाइअसद्दमहण्णवो के सैकड़ों शब्द जो कोश के मूल भाग में नहीं आए उनको भी इसी के अन्तर्गत रखा है। त्रिविक्रम के प्राकृत-

शब्दानुशासन के अन्त में १६०० देशी शब्दों की सूची है। उनमें से कुछ शब्द हेमचन्द्र के देशी संग्रह में आ चुके हैं। शेष सभी शब्द इस परिशिष्ट में समाविष्ट हैं। यह ग्रंथ हमें बहुत बाद में प्राप्त हुआ अतः हम इसके शब्दों को ग्रन्थ के मूल भाग में समाविष्ट नहीं कर सके।

समीक्षात्मक एवं आलोचनात्मक ग्रन्थों में भी यदि कहीं देशी शब्दों की सूची मिली है, उन शब्दों को भी हमने इस परिशिष्ट में सम्मिलित किया है। जैसे—'हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन'' में लेखक 'भाषा शैली और उद्देश्य'—अध्याय के अन्तर्गत कुछ देशी शब्दों का संकेत करते हैं। वे कहते हैं—'यहां कुछ देशी शब्दों की तालिका दी जाती है। यद्यपि इन शब्दों में कुछ शब्दों को संस्कृत से व्युत्पन्न किया जा सकता है पर मूलतः इन शब्दों को देशी कहा गया है।' ऐसा कह कर लेखक ने लगभग १६३ शब्दों का अर्थ सहित उल्लेख किया है, जिनमें कुछ शब्द देशीनाममाला के भी हैं। इस प्रकार जहां भी हमें देशी शब्द मिले, उनका बिना संदर्भ एवं प्रमाण के अर्थ सहित संकलन कर दिया है। इस परिशिष्ट में प्रयुक्त ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं—

१. मुणिचन्द कहाणयं, २. कंसवहो, ३. वज्जालग्गं, ४. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन, ५. जंबूसामिचरिउ, ६. पउमचरियं, ७. आख्यानकमणिकोश, ८. अपभ्रंश काव्यधारा, ९. चउप्पन्नमहापुरिसचरियं, १०. गउडवहो, ११. वड्ढमाणचरिउं, १२. सुदंसणचरिउ, १३. रावणवह-महाकाव्यम्, १४. महापुराणम्, १५. णायकुमारचरिउ, १६. पउमचरिउ-भाग १ से ३, १७. पुहविचंदचरियं, १८. करकंडुचरिउ, १९. मयणपराजयचरिउ, २०. जसहरचरिउ, २१. सिरिवालचरिउ, २२. प्राकृतशब्दानुशासन।

इस परिशिष्ट में एकत्रित कुछेक देशीशब्द विमर्शणीय हैं। किन्तु हमने तत् तत् ग्रन्थ के विद्वान् संपादकों के चिन्तन को मान्य कर उन शब्दों का यहां अविकल संकलन कर दिया है। अधिक से अधिक देशी शब्द एक ही ग्रन्थ में प्राप्त हों, यह इस संकलन का उद्देश्य है। प्रत्येक शब्द की समीक्षा हमें अभिप्रेत नहीं रही। सुधी पाठक इस बात को ध्यान में रखें।

दूसरा परिशिष्ट देशी धातुओं से सम्बन्धित है। इसमें १७४५ धातुएं हैं। हमने सन्दर्भ सहित तथा बिना सन्दर्भ वाली – दोनों प्रकार की धातुओं को साथ में ही रखा है। इनमें प्राकृत व्याकरण की सभी आदेशप्राप्त धातुओं का समावेश है तथा आगम तथा आगमेतर साहित्य में अन्य विद्वानों द्वारा मान्य देशी धातुओं का भी संकलन है। जिस संस्कृत धातु को आदेश हुआ है उसे भी कोष्ठक में दिया गया है। यह परिशिष्ट छोटा होते हुए भी व्याकरण एवं धातुज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

पंचांग प्रणति

विक्रम संवत् २०४० । नाथद्वारा की ऐतिहासिक भूमि । मर्यादा महोत्सव की सम्पन्नता । एक गोष्ठी का आयोजन । इसका उद्देश्य था आगम के कार्य को गति देना । उसी समय आचार्य श्री ने मुझे तथा कुछ साध्वियों को लाडनूं भेजा । एक दिन ग्रन्थागार में जब मैंने साध्वियों, समणियों एवं मुमुक्षु बहिनों द्वारा किए गए आगम-कार्य के विविध पहलुओं को देखा तो चिन्तन उभरा कि इस बिखरे कार्य को समेटना आवश्यक है । उस समय तीन कोशों को सम्पन्न करने का निश्चय किया । एकार्थक कोश और निरुक्तकोश तो उसी वर्ष प्रकाश में आ गए । देशी शब्दकोश का कार्य चालू था । देशी शब्दों के चयन और अर्थ-निर्धारण के लिए शताधिक ग्रन्थों का अवलोकन आवश्यक था । अन्यान्य बाधाओं के कारण कार्य में गति नहीं आ सकी । कार्य स्थगित कर दिया गया । वि० सं० २०४३ के लाडनूं चातुर्मास में फिर कार्य प्रारम्भ किया, पर उसका नैरन्तर्य नहीं रहा । वि० सं० २०४५ का पूरा वर्ष (२०४४ चैत्र शुक्ला १ से २०४५ चैत्र शुक्ला १ तक) इस कार्य की फलश्रुति/निष्पत्ति का वर्ष रहा । इसमें कार्य की निरन्तरता और सघनता भी रही ।

साध्वी अशोकश्री तथा साध्वी विमलप्रज्ञा इस कार्य में प्रारम्भ से ही संलग्न रही हैं । कुछेक अनिवार्य कारणों से इन दो वर्षों में इनकी संलग्नता व्यवहित रही, किन्तु इन दोनों की संपूर्ति कर दी साध्वी सिद्धप्रज्ञा ने । इन्होंने जिस निष्ठा, उत्साह और आनन्दप्रवणता से कार्य किया वह स्तुत्य है । शारीरिक अस्वास्थ्य के बावजूद भी इनका पूरा समय इसी कार्य में नियोजित रहा । ये तन्मना होकर कोश कार्य के प्रत्येक अवयव की संपूर्ति में संलग्न रहीं । इस कार्य से इन्होंने अपनी उपादेयता को बरकरार रखा । विधि-विधान के अनुसार आने-जाने में इन्हें एक साध्वी का सहयोग अपेक्षित था और वह अपेक्षा पूरी की साध्वी सूरजकुमारी ने । वे प्रसन्नता से इनके साथ आतीं और अपना पूरा समय आगम-स्वाध्याय में बितातीं । इनकी अनुपस्थिति में पूर्ण उत्साह एवं प्रसन्नता से सहयोग किया अस्सी वर्षीया साध्वी सूवटांजी ने ।

साध्वी निर्वाणश्री ने भी प्रारम्भ में कुछेक ग्रन्थों के देशी शब्द-चयन में सहयोग दिया है ।

समणी कुसुमप्रज्ञा प्रारम्भ से ही देशी शब्द-संकलन में संलग्न रही हैं । इस बार लगभग ८-१० माह का अधिकांश समय इस देशी शब्दकोश को संवारने में लगाया । कोश की समायोजना में इनका सहयोग बहुत मूल्यवान है । समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने समणी श्रुतप्रज्ञा को इनके साथ नियोजित कर इनके कार्य को सुगम बना डाला । समणी श्रुतप्रज्ञा ने अपने समय का पूरा उपयोग किया और पूर्ण प्रसन्नता और उत्साह से सहयोग दिया । इनकी अनुपस्थिति में अन्यान्य समणियों का नियोजन भी रहा और सभी ने कर्तव्य-

भावना से सहयोग किया।

मुमुक्षु बहिन निरंजना, इदु, अमिता, मधु, आशा, जतन, गुलाब आदि-आदि ने देशीकोश के कार्डों की प्रतिलिपि करने तथा अन्यान्य कार्यों में पूर्ण सहयोग दिया।

यह सारा कोशकार्य के सहभागियों का स्मरणमात्र है। इन सबके सहयोग का स्मरण आत्मतोष की अनुभूति कराता है।

मैं श्रुत-परम्परा के संवाहक और संवर्धक प्राचीन आचार्यों तथा मुनिजनों के प्रति प्रणत हूं, जिन्होंने श्रुतपरम्परा को अविच्छिन्न रखने का सतत प्रयास किया है और उसे अपने ज्ञानकणों से सींचा है, विकसित किया है। उन सबकी श्रुतोपासना की ही यह फलश्रुति है कि जैन साहित्य भंडार उनके सारस्वत अवदान से भरा रहा है। उन्होंने श्रुतसागर का जो मंथन किया, वह अपूर्व है। उनकी ग्रन्थराशि से कुछेक ग्रन्थों का अवलोकन कर हमने इस कोश ग्रन्थ का निर्माण किया है। मैं सभी श्रुतसमृद्ध आचार्यों को श्रद्धासिक्त भाव से नमन करता हूं।

इसी श्रुतपरम्परा के वर्तमान संवाहक तथा त्रिविध स्थविर भूमिकाओं के धनी अक्षर पुरुष हैं---आचार्य तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञ। तेरापंथ धर्मसंघ को इनका सारस्वत अवदान अपूर्व है। आगम-सम्पादन इनका शलाका-कार्य है और है साहित्यिक प्रसाद जो तन-मन का कायाकल्प करने में समर्थ है। उसी आगम-सम्पादन महाकार्य का यह कोशकार्य एक स्फुलिंग है। ऐसे स्फुलिंग अनेक हैं। आचार्य श्री ने उन स्फुलिंगों के संवाहक अनेक मुनियों, साध्वियों और समणियों को तैयार किया है और अपने इन सहस्रकरों से कार्य करवा रहे हैं। नए-नए आयामों का सर्जन, पोषण और संरक्षण इन्हीं घटकों पर आधृत है। दोनों युगपुरुषों के मार्गदर्शन ने इस बहु आयामी आगम कार्य को सुगम बनाया है और कार्य की मंथरता में भी नई निष्पत्तियों की सर्जना की है। मैं उनके इस शाश्वतिक अवदान को सहस्रशः नमन करता हूं।

तीन साध्वियों को इस कोश-कार्य में नियोजित करने और उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करने में साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी का महान् योग रहा है। कोश के यात्रापथ की निर्विघ्न संपूर्ति में उनकी मंगलभावना बहुत ही कार्यकर रही है। मैं उनके इस भावना-योग के प्रति प्रणत हूं।

मैं उन सभी ग्रन्थकर्त्ताओं, व्याख्याकारों तथा कोशकारों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिनके ग्रन्थों के अवलोकन से हमारा दुरूह कार्य सुगम बना, दृष्टि परिमार्जित हुई और नए-नए उन्मेष आते रहे।

अनेकांत शोधपीठ के डाइरेक्टर डॉ० नथमल टाटिया ने इस ग्रन्थ की भूमिका लिखकर हमें उत्साहित किया है। अभी-अभी एक मेजर आपरेशन

से गुजरने के बावजूद भी उन्होंने समय निकाल कर भूमिका लिखी, यह उनका श्रुत-सेवा के प्रति बनी हुई श्रद्धा का ही परिणाम है। श्रुत की उपासना उनका जीवनमंत्र है। इसी मंत्र ने उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर लाकर खड़ा किया है। मैं उनकी प्रेरणा का बहुत मूल्यांकन करता हूं।

मुनि प्रमोदकुमारजी मेरे सहयोगी हैं। वे अपने कर्तव्य-पालन के प्रति जागरूक हैं। उन्होंने मुझे अन्यान्य कार्यों से मुक्त रखकर, निरंतर इसी कार्य में संलग्न रहने का अवकाश दिया। उनका सहयोग भी स्मरणीय है।

इसी प्रकार मुनि सुदर्शनजी, मुनि श्रीचन्दजी 'कमल', मुनि राजेन्द्र कुमारजी, मुनि प्रशान्तकुमारजी आदि का सहयोग भी स्मृति-पटल पर अंकित है। उन सबको प्रणाम।

अन्त में पंचांग प्रणति उन सबको जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग मुझे मिला है/मिल रहा है।

वि० सं० २०४५, नूतन वर्ष का पहला दिन — **मुनि दुलहराज**
चैत्र शुक्ला १/२, ता० १९-३-८८
जैन विश्व भारती, लाडनूं (राजस्थान)

प्रयुक्त ग्रन्थ सूची

अंगविज्जा—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९५७)।

अंतकृद्दशा—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

अंतकृद्दशा टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०)।

अनुत्तरौपपातिकदशा—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

अनुत्तरौपपातिकदशा टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०)।

अनुयोगद्वार—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६)।

अनुयोगद्वार चूर्णि—(श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था, रतलाम, सन् १९२८)।

अनुयोगद्वार मलधारीया टीका—(श्री केशरबाई ज्ञानमन्दिर, पाटण, सन् १९३९)।

अनुयोगद्वार हारिभद्रीया टीका—(सेठ देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई,संवत् १९७३)।

अपभ्रंश काव्यधारा—(संपादक डॉ. प्रेमसुख जैन, डॉ. कृष्णकुमार शर्मा, सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदाबाद, सन् १९७४)।

अभिधानचिंतामणि नाममाला—(श्री जैनसाहित्यवर्धक सभा, अहमदाबाद, वि. सं. २०३२)।

अमरकोश—(चौखम्बा संस्कृत सिरीज, वाराणसी, सन् १९६८)।

अल्पपरिचित शब्दकोश—(संपा. आचार्य आनन्द सागर सूरि, देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, प्रथम संस्करण, १९७४)।

अष्टाध्यायी—(पणिनि'ज ग्रेमेटिक, १९७७, जोर्ज ओल्म्स वरलेग, हिलडेशियम, न्यूयार्क)।

आख्यानक-मणिकोश—(संपा. मुनि पुण्यविजय प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, सन् १९६२)।

आचारांग—(अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

आचारांग चूर्णि—(श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वे. संस्था, रतलाम, सन् १९४१)।

आचारांगचूला— (अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४) ।

आचारांग टीका— (मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, सन् १९७८) ।

आचारांग निर्युक्ति— (मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, सन् १९७८) ।

आवश्यक— (नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६) ।

आवश्यक चूर्णि १— (श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वे. संस्था, रतलाम, सन् १९२८) ।

आवश्यक चूर्णि २— (श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वे. संस्था, रतलाम, सन् १९२९) ।

आवश्यक टिप्पणकम्— (शाह नगीनभाई घेलाभाई जवेरी, बम्बई) ।

आवश्यक निर्युक्ति— (भैरुलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बम्बई, संवत् २०३८) ।

आवश्यक निर्युक्तिदीपिका— (श्री विजयदानसूरीश्वर जैनग्रंथमाल, सूरत, सन् १९३९) ।

आवश्यक मलयगिरि टीका— (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२८) ।

आवश्यक हारिभद्रीया टीका १— (भैरुलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बम्बई, संवत् २०३८) ।

आवश्यक हारिभद्रीया टीका २— (भैरुलाल कन्हैयालाल कोठारी धार्मिक ट्रस्ट, बम्बई, संवत् २०३८) ।

इन्ट्रोडक्शन टु कम्पेरेटिव फिलोलोजी— (सम्पा. पी. डी. गुणे) ।

इसिभासियाइं— (सुधर्मा ज्ञान मन्दिर, बम्बई, सन् १९६३; श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४) ।

उत्तराध्ययन— (नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय संस्करण, सन् १९८६) ।

उत्तराध्ययन चूर्णि— (देवचन्द लालभाई, जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सं. १९६३) ।

उत्तराध्ययन निर्युक्ति— (देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, भांडागार संस्था, बम्बई, सं. १९७२, ७३) ।

उत्तराध्ययन शान्त्याचार्य टीका— (देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, भांडागार संस्था, बम्बई, सं. १९७२) ।

उत्तराध्ययन सुखबोधा टीका— (पुष्पचन्द्र खेमचन्द्र, वलाद, वीर सं. २४६७) ।

उपासकदशा— (अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

उपासकदशा टीका— (श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय, कोटा, सन् १९४६)।

उर्दू हिन्दी शब्द कोश—(अंजुमन तरक्की उर्दू (हिंद), नई दिल्ली, सन् १९५५)।

ओघनिर्युक्ति— (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९, देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, सं० १९८४)।

ओघनिर्युक्ति टीका— (आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९, देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, सं० १९८४)।

ओघनिर्युक्तिभाष्य—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९! देवचन्द लालभाई, जैन पुस्तकोद्धार, सूरत, सन् १९८४)।

ओब्जर्वेशन्स ऑन हेमचन्द्राज देशीनाममाला—(सम्पा. पी. एल. वैद्य, एनेल्स ऑफ भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट)।

औपपातिक—(उवंगसुत्ताणि (४) खण्ड १, जैन विश्व भारती, लाडनूं सन् १९८७)।

औपपातिक टीका—(पण्डित दयाविमलजी ग्रन्थमाला, द्वितीय संस्करण, सं. १९९४)।

कंसवहो—(सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्याय, मोतीलाल बनारसीदास, द्वितीय संस्करण, १९६६)।

कन्नड़ हिन्दी शब्दकोश—(सम्पा. डॉ. एन. एस. दक्षिणामूर्ति हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण, सन् १९७१)।

कन्नडीज वर्ड्ज इन देशी लेक्सिकन्स—(सम्पा. ए. एन. उपाध्ये, एनेल्स ऑफ भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट)।

कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ गौडियन लेंग्वेजिज—(सम्पा. हार्नले)।

कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ मॉडर्न आर्यन लेंग्वेजिज—(सम्पा. जान बीम्स)।

करकंडचरिउ—(ले. मुनि कनकामर, सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९६४)।

कल्पसूत्र—(सम्पा. मुनि पुण्यविजयजी, साराभाई मणिलाल नवाब, अहमदाबाद, सन् १९५२)।

कुवलयमाला भाग १, २—(सम्पा. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, सन् १९५९)।

कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन—(सम्पा. डॉ. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध-संस्थान, वैशाली, सन् १९७५)।

गउडवहो—(बम्बई संस्कृत सिरीज, सं० १८८७)।

गच्छाचारपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

चउप्पन्नमहापुरिसचरिय—(सम्पा. पण्डित अमृतलाल मोहनलाल भोजक, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, सन् १९६१)।

चंदावेज्झयपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

चन्द्रप्रज्ञप्ति—(उवंगसुत्ताणि (४) खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८८)।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—(उवंगसुत्ताणि (४), खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८८)।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका—(नगीनभाई घेलाभाई झवेरी, बम्बई, सन् १९२०)।

जम्बूसामिचरिउ—(सम्पादक डॉ. विमलप्रकाश जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९४४)।

जसहरचरिउ—(ले. महाकवि पुष्पदन्त सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९७२)।

जीतकल्प—(बबलचन्द्र केशवलाल मोदी, अहमदाबाद, सं. १९९४)।

जीतकल्पभाष्य—(बबलचन्द्र केशवलाल मोदी, अहमदाबाद, सं. १९९४)।

जीतकल्प विषमपद व्याख्या।

जीवाजीवाभिगम—(उवंगसुत्ताणि (४), खण्ड १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८७)।

जीवाजीवाभिगम टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सं. १९९५)।

ज्ञाताधर्मकथा—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

ज्ञाताधर्मकथा टीका—(श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति, सूरत, सन् १९५२)।

डिंगलकोश—(सम्पादक डॉ. नारायणसिंह भाटी, राजस्थान शोध संस्थान, जोधपुर, द्वितीय संस्करण, सन् १९७८)।

णायकुमारचरिउ—(ले. पुष्पदन्त, सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९७२)।

तंदुलवेयालियपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

तित्थोगालीपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

तुलसी मञ्जरी—(जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८३)।

तुलसीशब्दसागर—(सम्पा. हरगोविन्द)।

दशवैकालिक—(जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय संस्करण, सन् १९७४)।

दशवैकालिक अगस्त्यसिंहचूर्णि—(प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, सन् १९७३)।

दशवैकालिक चूलिका—(जैन विश्व भारती, लाडनूं, द्वितीय संस्करण, सन् १९७४)।

दशवैकालिक जिनदासचूर्णि—(श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था, रतलाम, सन् १९३३)।

दशवैकालिक निर्युक्ति—(प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, सन् १९७३)।

दशवैकालिक हारिभद्रीया टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, सूरत)।

दशाश्रुतस्कन्ध—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६)।

दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णि—(श्री मणिविजयजीगणिग्रन्थमाला, भावनगर, सं. २०११)।

दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति—(श्री मणिविजयजीगणिग्रन्थमाला, भावनगर, सं. २०११)।

देशीनाममाला—(संपा० आर. पिशेल, बोम्बे संस्कृत सिरीज १७, संस्कृत विभाग, दूसरा संस्करण, सन् १९३८)।

देशीनाममाला का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन—(सम्पा. शिवमूर्ति शर्मा, देवनागर प्रकाशन, जयपुर)।

देशीशब्दसंग्रह—(संपा० बेचरदास दोशी, श्री फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, प्रथम संस्करण, सन् १९४७)।

नंदी—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६)।

नंदी चूर्णि—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९६६)।

नंदी टिप्पणक—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९६६)।

नंदी टीका—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, बनारस, सन् १९६६)।

नाट्यशास्त्र—(भरतमुनि)।

निरयावलिका—(उवंगसुत्ताणि (४), खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८८)।

निरयावलिका टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई)।

निरुक्तम्—(यास्क)।

निशीथ—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६)।

निशीथचूर्णि भाग १-४—(सन्मति ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण, सन् १९८२)।

निशीथभाष्य—(सन्मति ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण, सन् १९८२)।

पउमचरिउ भाग १ से ३—(ले. स्वयम्भूदेव, सम्पा. डॉ. हरिवल्लभ चुन्नीलाल भायाणी, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ, भारतीय विद्या भवन, बम्बई-७, वि. सं. २००९, २०१७)।

पउमचरियं—(सम्पा. डॉ. हर्मन जेकोबी, मुनि पुण्यविजयजी, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, सन् १९६८)।

पंचकल्पभाष्य—(आगमोद्धारक ग्रन्थमाला, पारडी, वि. सं. २०२८)।

पंचवस्तु—हस्तलिखित।

पाइयलच्छीनाममाला—(सम्पा. बेचरदास दोशी, श्री शादीलाल जैन, बम्बई-३, सन् १९६०)।

पाइयसद्दमहण्णवो—(पण्डित हरगोविन्ददास सेठ, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, ईस्वी सन् १९६३)।

पिण्डनिर्युक्ति—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सन् १९१८)।

पिण्डनिर्युक्ति टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सन् १९१८)।

पिण्डनिर्युक्ति भाष्य—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, बम्बई, सन् १९१८)।

पुहइचन्दचरियं—(ले. आचार्य शान्तिसूरि, सम्पा. मुनिश्री रमणीक विजय, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, सन् १९७२)।

प्रज्ञापना—(उवंगसुत्ताणि (४) खण्ड-२, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८८)।

प्रज्ञापना टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१८)।

प्रवचनसारोद्धार—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, द्वितीय संस्करण, सं. १९८१)।

प्रवचनसारोद्धार टीका—(देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, द्वितीय संस्करण, सं. १९८१)।

प्रश्नव्याकरण—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

प्रश्नव्याकरण टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९)।

प्राकृतलक्षण—(चण्ड)।

प्राकृत वर्ड्स् विद प्राकृत टर्मीनेशन्स—(सम्पा. पी. एल. वैद्य)।

प्राकृतव्याकरण—(हेमचन्द्र, जैन दिवाकर दिव्यज्योति कार्यालय, ब्यावर, सं. २०१६)।

प्राकृत शब्दानुशासन—(त्रिविक्रमदेव, सम्पा. पी. एल. वैद्य, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर, सन् १९५४)।

प्राचीनकर्मग्रन्थ टीका—(जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, वि. सं. १९७२)।

बृहत्कल्प—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६)।

बृहत्कल्प चूर्णि—(हस्तलिखित, लाडनूं भंडार)।

बृहत्कल्प टीका—(जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सन् १९३६)।

बृहत्कल्प भाष्य—(जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सन् १९३६)।

भगवती—(अंगसुत्ताणि भाग २, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

भगवती टीका, पत्र १-३२७—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१८)।

भगवती टीका, पृष्ठ ६०१-१२०८—(ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था, रतलाम, द्वितीय संस्करण, सन् १९४०)।

भत्तपरिण्णापइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, द्वितीय संस्करण, सन् १९८४)।

भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथा काव्य—(सम्पादक देवेन्द्रकुमार शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, सन् १९७०)।

भारतीय भाषाएं—(सम्पा. कैलाशचन्द्र भाटिया, दिल्ली, सन् १९८१)।

भाषा विज्ञान कोश—(डॉ. भोलानाथ तिवारी)।

मयणपराजयचरिउ—(ले. हरिदेव, सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, सन् १९६२)।

मरणविभत्तिपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

महापच्चक्खाणपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

महापुराण—(ले. महाकवि पुष्पदन्त, सम्पा. परशुराम शर्मा, माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति) ।

महाभारत—(भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, सन् १९६१) ।

मुणिचन्द कहाणय—(सम्पा. के. आर. चन्द्र, जय भारत प्रकाशन एण्ड कं., अहमदाबाद, द्वितीय संस्करण, सन् १९७७) ।

यशस्तिलकचम्पू का सांस्कृतिक अध्ययन— (सम्पा. गोकुलचन्द्र जैन, अमृतसर)।

राजप्रश्नीय—(उवंगसुत्ताणि (४) खण्ड १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८७) ।

राजप्रश्नीय टीका—(गूर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय, अहमदाबाद, वि. सं. १९९४) ।

राजस्थानी शब्दकोष—(सम्पा. सीताराम, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर, प्रथम संस्करण, सं. २०१८) ।

रावणवहमहाकाव्य—(सम्पा. डॉ. राधागोविन्द, संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता, सन् १९५९) ।

लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया—(सम्पा. ग्रियर्सन) ।

वज्जालग्गम्—(सम्पा. माधव वासुदेव पटवर्धन, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, सन् १९६९) ।

वड्ढमाणचरिउ—(सम्पादक डॉ. राजाराम जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, सन् १९७५) ।

वाग्भटालंकार—(चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, सन् १९५७) ।

वाचस्पत्यम् भाग ६—(सम्पादक तारानाथ, चौखम्बा संस्कृत सिरीज, वाराणसी, तृतीय संस्करण, सं. २०२५) ।

विपाकश्रुत—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४) ।

विपाकश्रुत टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९२०) ।

विलग्न्स फिलोलोजिकल लेक्चर्स—(सम्पा. श्री आर. जी भंडारकर) ।

विशेषावश्यकभाष्य—(दिव्य दर्शन कार्यालय, अहमदाबाद, वीर सं. २४८९) ।

विशेषावश्यकभाष्य कोट्याचार्य टीका—(ऋषभदेव केशरीमल, रतलाम, सन् १९३६) ।

विशेषावश्यकभाष्य मलधारीहेमचन्द्र टीका—(दिव्य दर्शन कार्यालय, अहमदाबाद, वीर सं. २४८९) ।

व्यवहार—(नवसुत्ताणि (५), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८६) ।

व्यवहारभाष्य टीका—(वकील केशवलाल प्रेमचन्द, अहमदाबाद, सन् १९२६)।

शब्दकल्पद्रुम भाग १ से ५—(सम्पा. राधाकांतदेव, चौखम्बा संस्कृत सिरीज, वाराणसी, तृतीय संस्करण, वि. सं. २०२४)।

शब्दार्थ कौस्तुभ—(रामनारायणलाल अग्रवाल, प्रयाग)।

संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर—(सम्पा. रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण, सन् १९६६)।

संथारगपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी—(सम्पा. वी. एस. आप्टे, प्रसाद प्रकाशन, पूना)।

संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी—(सम्पा. मोनियर विलियम्स)।

संस्कृत प्राकृत जैन व्याकरण और कोश की परम्परा—(श्री कालूगणी जन्म-शताब्दी समारोह समिति, छापर, सन् १९७७)।

समवायांग—(अंगसुत्ताणि भाग ३, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

समवायांग टीका—(कांतिलाल चुन्नीलाल, अहमदाबाद, सन् १९३८)।

सारावलीपइण्णय—(श्री महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण, सन् १९८४)।

सिरिवालचरिउ—(ले. नरसेन देव, सम्पा. डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, सन् १९४४)।

सुदंसणचरिउ—(ले. नयनन्दी, सम्पा. डॉ. हीरालाल जैन, प्राकृत शोध-संस्थान, वैशाली, सन् १९७०)।

सूत्रकृतांग—(अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

सूत्रकृतांग चूर्णि (प्रथमश्रुतस्कन्ध)—(प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, वाराणसी, सन् १९७५)।

सूत्रकृतांग चूर्णि (द्वितीय श्रुतस्कन्ध)—(ऋषभदेव केशरीमल श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सन् १९४१)।

सूत्रकृतांग टीका १ (प्रथम श्रुतस्कन्ध)—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९)।

सूत्रकृतांग टीका २ (द्वितीय श्रुतस्कन्ध)—(श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन ग्रन्थमाला, सन् १९५३)।

सूत्रकृतांग निर्युक्ति—(मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, सन् १९७८)।

सूरशब्दसागर—(सम्पा. हरदेव बाहरी, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, सन् १९८१)।

सूर्यप्रज्ञप्ति—(उवंगसुत्ताणि (४), जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९८८)।

सूर्यप्रज्ञप्ति टीका—(आगमोदय समिति, बम्बई, सन् १९१९)।

सेतुबन्ध—(सम्पा. पण्डित शिवदत्त, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, सन् १९८२)।

स्टडीज इन हेमचन्द्राज देशीनाममाला—(सम्पा. हरिवल्लभ सी. भयाणी, पी. वी. रिसर्च इंस्टीट्यूट, जैनाश्रम हिन्दी यूनिवर्सिटी, बनारस)।

स्थानांग—(अंगसुत्ताणि भाग १, जैन विश्व भारती, लाडनूं, सन् १९७४)।

स्थानांग टीका—(सेठ भाणेकलाल चुनीलाल, अहमदाबाद, सन् १९३७)।

हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन—(सम्पा. डॉ. नेमीचंद शास्त्री, प्राकृत शोध संस्थान, वैशाली, सन् १९६५)।

हिन्दीशब्दसागर ११ भाग—(सम्पा. श्यामसुन्दर, शम्भुनाथ बाजपेयी, नागरी मुद्रण, वाराणसी, प्रथम संस्करण, वि. सं. २०२२)।

हिन्दी शब्दानुशासन—(सम्पा. किशोरीदास बाजपेयी)।

संकेत सूची

अंत	अंतकृद्दशा
अंतटी	अंतकृद्दशा टीका
अंवि	अंगविज्जा
अचि	अभिधानचिंतामणि नाममाला
अनु	अनुत्तरौपपातिकदशा
अनुटी	अनुत्तरौपपातिकदशा टीका
अनुद्वा	अनुयोगद्वार
अनुद्वाचू	अनुयोगद्वार चूर्णि
अनुद्वामटी	अनुयोगद्वार मलधारीयटीका
अनुद्वाहाटी	अनुयोगद्वार हारिभद्रीयटीका
आ	आचारांग
आचू	आचारांगचूर्णि
आचूला	आचारांगचूला
आटी	आचारांग टीका
आनि	आचारांग निर्युक्ति
आव	आवश्यकसूत्र
आवचू-१	आवश्यक चूर्णि १
आवचू-२	आवश्यक चूर्णि २
आवटि	आवश्यक टिप्पणकम्
आवदी	आवश्यक निर्युक्तिदीपिका
आवनि	आवश्यक निर्युक्ति
आवमटी	आवश्यक मलयगिरीटीका
आवहाटी-१	आवश्यक हारिभद्रीयटीका १
आवहाटी-२	आवश्यक हारिभद्रीयटीका २
इ	इसिभासियाइं
उ	उत्तराध्ययन
उचू	उत्तराध्ययन चूर्णि
उनि	उत्तराध्ययन निर्युक्ति
उपा	उपासकदशा

उपाटी	उपासकदशा टीका
उशाटी	उत्तराध्ययन शान्त्याचार्यटीका
उसुटी	उत्तराध्ययन सुखबोधा टीका
ओटी	ओघनिर्युक्ति टीका
ओनि	ओघनिर्युक्ति
ओभा	ओघनिर्युक्तिभाष्य
औप	औपपातिक
औपटी	औपपातिक टीका
कु	कुवलयमाला
ग	गच्छाचारपइण्णय
चं	चंदावेज्झयपइण्णय
चन्द्र	चन्द्रप्रज्ञप्ति
जंबू	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति
जंबूटी	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका
जीत	जीतकल्प
जीभा	जीतकल्पभाष्य
जीव	जीवाजीवाभिगम
जीवटी	जीवाजीवाभिगम टीका
जीविप	जीतकल्प विषमपदव्याख्या
ज्ञा	ज्ञाताधर्मकथा
ज्ञाटी	ज्ञाताधर्मकथा टीका
तंदु	तंदुलवेयालियपइण्णय
ति	तित्थोगालीपइण्णय
द	दशवैकालिक
दअचू	दशवैकालिक अगस्त्यसिंहचूर्णि
दचूला	दशवैकालिकचूलिका
दजिचू	दशवैकालिक जिनदासचूर्णि
दनि	दशवैकालिक निर्युक्ति
दश्रु	दशाश्रुतस्कन्ध
दश्रुचू	दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णि
दश्रुनि	दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति
दहाटी	दशवैकालिक हारिभद्रीया टीका
दे	देशीनाममाला; देशीशब्दसंग्रह
नंदीचू	नंदी चूर्णि
नंदीटि	नंदी टिप्पणक

नंदीटी	नंदी टीका
नि	निशीथ
निचू १, २, ३, ४.	निशीथचूर्णि भाग १ से ४
निभा	निशीथभाष्य
निर	निरयावलिका
निरटी	निरयावलिका टीका
पंक	पंचकल्पभाष्य
पंव	पंचवस्तु
पा	पाइयलच्छीनाममाला
पिटी	पिण्डनिर्युक्ति टीका
पिनि	पिण्डनिर्युक्ति
पिभा	पिण्डनिर्युक्ति भाष्य
प्र	प्रश्नव्याकरण
प्रज्ञा	प्रज्ञापना
प्रज्ञाटी	प्रज्ञापना टीका
प्रटी	प्रश्नव्याकरण टीका
प्रसा	प्रवचनसारोद्धार
प्रसाटी	प्रवचनसारोद्धार टीका
प्रा	प्राकृतव्याकरण
प्राक	प्राचीनकर्मग्रन्थ टीका
बृ	बृहत्कल्प
बृचू	बृहत्कल्प चूर्णि
बृटी	बृहत्कल्प टीका
बृभा	बृहत्कल्प भाष्य
भ	भगवती
भटी	भगवती टीका
भत्त	भत्तपरिण्णापइण्णय
म	मरणविभत्तिपइण्णय
महा	महापच्चक्खाणपइण्णय
राज	राजप्रश्नीय
राजटी	राजप्रश्नीय टीका
विपा	विपाकश्रुत
विपाटी	विपाकश्रुत टीका
विभा	विशेषावश्यकभाष्य
विभाकोटी	विशेषावश्यकभाष्य कोट्याचार्यटीका

विभामहेटी	विशेषावश्यकभाष्य मलधारीहेमचन्द्रटीका
वृ	देशीनाममालावृत्ति
व्य	व्यवहार
व्यभाटी १-१०	व्यवहारभाष्य टीका भाग १-१०
सं	संथारगपइण्णय
सम	समवायांग
समटी	समवायांग टीका
सा	सारावलीपइण्णय
सू	सूत्रकृतांग
सूचू-१	सूत्रकृतांग चूर्णि, प्रथमश्रुतस्कंध
सूचू-२	सूत्रकृतांग चूर्णि, द्वितीयश्रुतस्कंध
सूटी-१	सूत्रकृतांग टीका प्रथमश्रुतस्कन्ध
सूटी-२	सूत्रकृतांग टीका द्वितीयश्रुतस्कंध
सूनि	सूत्रकृतांग निर्युक्ति
सूर्य	सूर्यप्रज्ञप्ति
सूर्यटी	सूर्यप्रज्ञप्ति टीका
से	सेतुबन्ध
स्था	स्थानांग
स्थाटी	स्थानांग टीका

अनुक्रम

१. आशीर्वचन —आचार्य तुलसी
२. पुरोवाक् —युवाचार्य महाप्रज्ञ
३. भूमिका —डॉ० नथमल टाटिया
४. संपादकीय —मुनि दुलहराज
५. प्रयुक्त ग्रन्थ सूची
६. संकेत सूची
७. देशी शब्दकोश

परिशिष्ट

१. अवशिष्ट देशी शब्द
२. देशी धातु-चयनिका

देशी शब्दकोश

अअंख—निःस्नेह, स्नेह रहित (दे १।१३)।

अइगय—१ मार्ग का पश्चाद् भाग। २ समागत। ३ प्रविष्ट (दे १।५७)।

अइण—गिरि-तट, तराई, पहाड़ का निम्न-भाग (दे १।१०)।

अइणिअ—लाया हुआ (दे १।२४)।

अइर—१ अतिरोहित (पिनि ५६०)। २ गांव का मुखिया, राज्य द्वारा नियुक्त गांव का अधिकारी (दे १।१६)।

अइरजुवइ—नववधू (दे १।४८)।

अइराउल—स्वामीकुल—'देशीपदमेतत्' (प्रज्ञाटी प २५३)।

अइराणी—१ इन्द्राणी (अंवि पृ २२३; दे १।५८)। २ सौभाग्य प्राप्त करने के लिए इन्द्राणी का व्रत करने वाली स्त्री (दे १।५८)।

अइरिण—कथाबंध, कहानी (दे १।२६)।

अइरिका—देवी-विशेष, इन्द्राणी (अंवि पृ ६६)।

अइहारा—विद्युत्, बिजली (दे १।३४)।

अंक—निकट (दे १।५)।

अंककरेलुय—जलज-वनस्पति (आचूला १।११३)।

अंकार—सहायता, मदद (दे १।६)।

अंकिअ—आलिंगन (दे १।११)।

अंकिल—नर्तक (ज्ञाटी प ४४)।

अंकिल्ल—नट (औपटी पृ ४)।

अंकुसइअ—अंकुश के आकार वाला (दे १।३८)।

अंकेल्ल—नट (निचू २ पृ ४६८)।

अंकेल्लण—चाबुक-विशेष (जंबू ३।१०६)।

अंकेल्लि—अशोक वृक्ष (दे १।७)।

अंकोल्ल—१ अंकोठ वृक्ष (प्रज्ञा १।३५।१)। २ गुच्छ-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)। ३ नर्तक (ज्ञाटी प ४६)।

अंगवडुण—रोग (दे १।४७)।

अंगवलिज्ज—शरीर को मोड़ना (दे १।४२)।

अंगारइय—घुण कीट द्वारा खाया हुआ—'घुणकाणियं अंगारइयं वा वुत्तयं होति' (निचू ४ पृ ६६)।

अंगालिअ—ईख का टुकड़ा, गंडेरी (दे १।२८)।

अंगुजट्ठ—अंगूठा (आचू पृ ३५२)।

अंगुट्ठी—१ घूंघट—'रंगम्मि नच्चियाए, अलाहि अंगुट्ठिकरणेणं' (उसुटी प ५४; दे १।६)। २ अंगूठा (प्रसा २००)।

अंगुत्थल—अंगूठी (दे १।३१)।

अंगुलिणी—प्रियंगु, वृक्ष-विशेष (दे १।३२)।

अंगोहली—१ देश-स्नान, शरीर को पोंछना, हाथ-मुंह आदि धोना (नंदीटि पृ १३४)।

अंगोहलेऊण—देश-स्नान कराकर—'अंगोहलेऊण दारगं पेसेइ' (व्यभा १० टी प ५२)।

अंघोलि—देश-स्नान, शरीर को पोंछना, हाथ-मुंह आदि धोना (आचू १ पृ ५४५)।

अंचित—दुर्भिक्ष—'अंचितं नाम दुर्भिक्षम्' (आवटि प ५३)।

अंचिय—१ नाट्य का एक प्रकार—'नट्टं चउव्विहं—अंचियं रिभियं आरभडं भसोलं ति' (निचू ४ पृ २)। २ दुर्भिक्ष (निचू २ पृ ११६)।

अंछण—विस्तार, फैलाव (निचू २ पृ २२३)।

अंछणय—विस्तार, फैलाव (निभा १५२६)।

अंछणिका—रज्जु-विशेष (अंवि पृ ११५)।

अंछिय—आकृष्ट, खींचा हुआ (प्र १।२६; दे १।१४)।

अंजणइसिआ—तमाल का वृक्ष (दे १।३७)।

अंजणई—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

अंजणईस—तमाल का वृक्ष (दे १।३७)।

अंजणिआ—तमाल का वृक्ष (दे १।३७)।

अंजणी—१ आभूषण-विशेष (अंवि पृ १८३)। २. भांड-विशेष (अंवि पृ २६०)।

अंजणेकसक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।

अंजस—ऋतु (दे १।१४)।

अंडअ—मत्स्य (दे १।१६)।

अंतरिज्ज—कटीसूत्र, करधनी (दे १।३५)।

अंतरिया—समाप्ति, अंत (जंबू २)।

अंतालूहण—प्रिय—'अंतालूहणो मम एस पुत्तो' (कु पृ ४७)।

अंतोहरी—दूती (दे १।३५)।

अंतेल्ली—१ मध्य। २ जठर, पेट। ३ तरंग (दे १।५५)।

अंतोखरियत्ता—१ नगर में रहने वाली वेश्या। २ विशिष्ट-वेश्या (भ १५।१८६)—'अंतोखरियत्ताए त्ति नगराभ्यन्तर-वेश्यात्वेन' विशिष्टवेश्यात्वेनेत्यन्ये' (टी पृ १२७६)।

अंतोवगडा—घर का आंगन (बृ २।१)—'अंतोवगडा नाम उवस्सयस्स अब्भंतरं अंगणं' (चू प १४१)।

अंतोहुत्त—अधोमुख (दे १।२१)।

अंधंधु—कूप, कुआ (दे १।१८)।

अंधक—फल-विशेष, वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३८)।

अंधग—वृक्ष (भ १८।९५)।

अंधगवण्हि—स्थूल अग्नि (भ १८।९५)।

अंधार—अन्धकार (पंव २५७)।

अंधारइअ—अन्धापन (आचू पृ ३७२)।

अंधिया—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (भ १५।१८)।

अंबकधूवि—खाद्यपदार्थ-विशेष (अंवि पृ ७१)।

अंबकूणग—आम्रफल (भटी पृ १२५७)।

अंबकोइलिया—१ आम्रविष्ठा। २ आम की छाल के टुकड़े (दअचू पृ २३)।

अंबखुज्ज—तलवे का मध्य भाग—'यदाम्रकुब्जं पादतलमध्यम्' (बृटी पृ १०६२)।

अंबट्ठिक—भोज्य-विशेष—'अंबट्ठिकधतउण्हे पोवलिका ....' (अंवि पृ २४६)।

अंबड—कठिन (दे १।१६)।

अंबपिंडी—भोज्य-विशेष (अंवि पृ ७१)।

अंबप्पहार—प्रहार से दुःखी (उशाटी प १९३)।

अंबमसी—गूंदा हुआ बासी गीला आटा—'अंबसमीत्यत्र सकारमकारयोर्व्यत्यये अंब मसीति केचित् पठन्ति' (दे १।३७ वृ)।

अंबर—मत्स्य का मद—'अम्बरशब्देनात्र मत्स्यमदोऽभिधीयते स हि किलात्यन्त-सुगन्धो भवति' (आवटि प ६५)।

अंबसमी—गूंदा हुआ बासी गीला आटा (दे १।३७)।

अंबाडग—बहुबीज वाला आम्रातक फल (प्रज्ञा १।३६)।

अंबाडगधूवि—खाद्यपदार्थ-विशेष (अंवि पृ ७१)।

अंबाडिय—तिरस्कृत (बृटी पृ ५४)।

अंबिर—आम्र (दे १।१५)।

अंबिलिका—इमली (अंवि पृ ७०)।

अंबुसु—सिंह से भी अति बलवान पशु, शरभ (दे १।११)।

अंबेट्टिआ—मुष्टिद्यूत, बालकों द्वारा मुट्ठी से खेला जाने वाला जूआ—'मा रम अंबेट्टिआइ पुत्त ! तुमं' (दे १।७ वृ)।

अंबेट्टी—मुष्टिद्यूत, बच्चों की क्रीडा-विशेष जो 'एकोवेकी' के रूप में खेली जाती है (दे १।७)।

अंबेल्ली—खट्टी राब—'एहि किराइं सीतलीहोति अंबेल्ली' (आवचू १ पृ १११)।

अंबेसी—घर का द्वार-फलक (दे १।८)।

अंबोच्ची—फूलों को चुनने वाली स्त्री (दे १।९)।

अकंडतलिम—१ निःस्नेह। २ अविवाहित (दे १।६०)।

अकरंडुय—मांस के उपचित होने के कारण जिसके पीठ के पास की हड्डी दिखाई न पड़े (प्र ४।७ टी प ८१)।

अकारय—भोजन की अरुचि, रोग-विशेष (ज्ञा १।१३।२८)।

अकासि—निषेध-सूचक अव्यय, पर्याप्त (दे १।८)।

अकोप्प—रम्य (प्र ४।८)।

अक्क—दूत (दे १।६)।

अक्कंत—प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ (दे १।९)।

अक्कंद—परित्राता, रक्षा करने वाला (दे १।१५)।

अक्कबोंदि—वल्ली-विशेष (भ २२।६)।

अक्कसाला—१ बलात्कार। २ उन्मत्त-सी स्त्री (दे १।५८)।

अक्का—भगिनी, बहिन (दे १।६)। अक्का (कन्नड)।

अक्कुट्ठ—अध्यासित, अधिष्ठित (दे १।११)।

अक्कोड—बकरा (दे १।१२)।

अक्कोडिय—चुभाना, घुसाना—'तंबियाओ सुईओ····वीससु वि अंगुलीनहेसु अक्कोडियाओ' (बृटी पृ ५७)।

अक्ख—उत्कृष्ट उपकरण (बृभा १५४५)।

अक्खक—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६०)।

अक्खणवेल—१ मैथुन। २ संध्याकाल (दे १।५६)।

अक्खणिया—विपरीत मैथुन (पा ४३२)।

अक्खपूप—खाद्यपदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।

अक्खर—आंख का रोग-विशेष (आवचू २ पृ १०२)।

अक्खरा—आंख की पुतली—'आसमक्खिया अक्खिमि अक्खरा उक्कड्ढिज्जइ त्ति' (आवहाटी २ पृ ६०)।

अक्खल—१ अखरोट वृक्ष। २ अखरोट वृक्ष का फल (प्रज्ञा १६)।

अक्खलिअ—१ प्रतिफलित, प्रतिबिंबित। २ आकुल-व्याकुल (दे १।२७)।

अक्खवाया—दिशा (दे १।३५)।

अक्खिवण—अपहरण (बृभा २०५४)।

अक्खु—आम की छाल—'अक्खुं—अंबसालमित्यर्थः' (निचू ३ पृ ४८२)।

अक्खुय—आम की छाल (निभा ४७००)।

अक्खेवि—वशीकरण के द्वारा चोरी करने वाला (प्र ३।३)।

अक्खोड—१ राजकुल में दातव्य द्रव्य, बेगार तथा सैनिक आदि की भोजन-व्यवस्था (व्यभा २ टी प १०)। २ वह भूभाग, जो बिना बोया हुआ तथा जनता से अनाक्रांत हो (आवटि प ६०)।

अक्खोडभंग—राजकुल में दातव्य द्रव्य की राजा द्वारा दी जाने वाली छूट—'खोडभंगोत्ति वा उक्कोडभंगोत्ति वा अक्खोडभंगोत्ति वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ २८०)। देखें—खोडभंग।

अक्खोल—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

अक्खोला—ककड़ी (अंवि पृ ७१)।

अखरय—भृत्य-विशेष (पिनि ३६७)।

अगअ—दानव (दे १।६)।

अगंडिगेह—यौवन से उन्मत्त बना हुआ (दे १।४०)।

अगड—१ कूप (स्था २।३६०)। २ कूप के पास पशुओं के जल पीने का गर्त्त।

अगत्थि—गुल्म-विशेष (जीव ३।५८०)।

अगय—असुर (प्रा २।१७४)।

अगहण—कापालिक, वाममार्गी (दे १।३१)।

अगिला—अवगणना, अवज्ञा (दे १।१७)।

अगुज्झहर—रहस्यभेदी, गुप्त बात को प्रकाशित करने वाला (दे १।४३)।

अग्ग—१ ताजा—'अग्गेहि वरेहिं पुप्फेहिं जक्खमच्चेइ' (उसुटी प ३५)। २ परिहास। ३ वर्णन।

अग्गक्खंध—रणमुख, युद्ध का अग्रिम मोर्चा (दे १।२७)।

अग्गवेअ—नदी का पूर (दे १।२६)।

अग्गहण—अवगणना, अवज्ञा (दे १।१७)।

अग्गाधमक—मत्स्य की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

अग्गाहार—१ उच्च जीविका, बहुमान—'दिट्ठो सक्कारिओ अग्गाहारो य से दिन्नो' (उसुटी प २३)। २ छोटी बस्ती—'अत्थि णाइदूरे सरलपुरं णाम बंभणाणं अग्गाहारं' (कु पृ २५८)।

अग्गिअ—१ इन्द्रगोप कीट। २ मन्द (दे १।५३)।

अग्गिचुल्लक—अग्नि का स्थान (अंवि पृ २४४)।

अग्गिरस—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

अग्गिलिय—आगे, पहले (पंवटी प ५६)।

अग्गुमर—घर का प्रवेश द्वार—'गिहमुहं अग्गुमरो' (आचू पृ ३७०)।

अग्घाड—अपामार्ग, लटजीरा (दे १।८)।

अग्घाडग—अपामार्ग, लटजीरा (प्रज्ञा १।३७।४)।

अग्घाण—तृप्त (दे १।१६)।

अग्घातित—आख्यात (आचू पृ ३०३)।

अघ—१ गढा। २ ह्रद—'अघा गर्त्ता ह्रदो वा' (बृटी पृ २०२)।

अचल—१ गृह। २ कहा हुआ। ३ घर का पिछला भाग। ४ निष्ठुर, निर्दय। ५ नीरस, विरस (दे १।५३)।

अचाइ—अशक्त, असमर्थ (आ ६।३०)।

अचिट्ठ—अप्रगाढ—'अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति' (आ४।१८)

अचियत्त—१ अप्रीतिकर (द ५।१७)। २ अप्रीति—'अचियत्तं देशीवचनं अप्रीत्याभिधायकम्' (आवहाटी १ पृ १२७)।

अचोक्ख—अपवित्र (आवचू १ पृ १२२)।

अचोक्खलिणी—जल आदि से हाथ न धोने वाली (पिनि ६०२)।

अच्चंकारिय—असत्कारित, अपूजित—'अच्चंकारिओ उवघातं करेस्सति' (निचू ३ पृ ४१८)।

अच्चाइय—व्यथित—'अच्चाइओ सागडिओ' (दहाटी प ६१)।
अच्चिग—व्यथा (कप्पड़)।

अच्छ—१ प्रचुर। २ शीघ्र (दे १।४६)। ३ वृक्ष (से ६।४७)।

अच्छंत—आसीन (उ १६।७८)।

अच्छण—१ बैठना (अच्छणघर-विश्रामगृह) (ज्ञा १।३।१६)। २ अवस्थान, आसन (उ २६।७)। ३ अपसर्पण—'अच्छणं ति ओसक्कणं' (निचू १ पृ ८३)। ४ अवलोकन (व्यभा ३ टी प १०२)। ५ सेवा, शुश्रूषा (बृ ३)।

अच्छभल्ल—यक्ष, देव-विशेष (दे १।३७)।

अच्छरानिवात—१ चुटकी। २ चुटकी बजाने जितना समय (सूचू २ पृ ३५६)।

अच्छरानिवाय—चुटकी (जीव ३।८६)—'अप्सरोनिपातो नाम चप्पुटिका' (टी प १०६)।

अच्छहल्ल—रीछ (पा ३०२)।

अच्छारिय—नौकर, कर्मचारी—'तत्थ सरदकाले अच्छारियभत्ताणि दधि-कूरेण णिसट्ठं दिज्जंति' (आवचू १ पृ २६१)।

अच्छिक्क—अस्पृष्ट (व्यभा ४।२ टी प २४)।

अच्छिघरुल्ल—१ अप्रीतिकर। २ वेश, पोशाक (दे १।४१ वृ)।

अच्छिच्छय—फल-विशेष (आटी प ३४६)।

अच्छिरोड—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

अच्छिरोडय—चार इन्द्रिय वाला जीव-विशेष (उ ३६।१४८)।

अच्छिल—चार इन्द्रिय वाला जंतु-विशेष (उ ३६।१४८)।

अच्छिवडण—निमीलन, आंखों का मूंदना (दे १।३६)।

अच्छिविअच्छि—आपस की खींचतान, परस्पर आकर्षण (दे १।४१)।

अच्छिवेह—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

अच्छिवेहय—चार इन्द्रिय वाला जंतु-विशेष (उ ३६।१४७)।

अच्छिहरिल्ल—१ अप्रीतिकर, द्वेष्य। २ वेश, पोशाक (दे १।४१ वृ)।

अच्छिहरुल्ल—१ अप्रीतिकर। २ वेश, पोशाक (दे १।४१)।

अच्छुल्लूढ—निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (बृभा ५७५)।

अज—सर्प की एक जाति (अंवि पृ० ६३)।

अजढर—नया, ताजा (सूचू २ पृ ३१२)।

अजराउर—उष्ण, गरम (दे १।४५)।

अजिणविलाल—पर्वत की गुफा में रहने वाले सिंह की एक जाति (अंवि पृ २२७)।

अजुअ—सप्तच्छद, सतौना का वृक्ष (दे १।१७)।

अजुअलवण्णा—इमली का वृक्ष (दे १।४८)।

अजुअलवन्न—सप्तपर्ण, छितवन का पेड़ (पा ८९५)।

अजुंगित—शरीर तथा जाति से अजुगुप्सित (निचू ३ पृ ४५७)।

अज्ज—जिन, अर्हत्, बुद्ध (दे १।५)।

अज्जअ— १ सुरस नामक तृण। २ गुरेटक नामक तृण (दे १।५४)।

अज्जणी—भांड-विशेष (अंवि पृ ६३)।

अज्जय—१ वनस्पति-विशेष, लघु तुलसी का पौधा (प्रज्ञा १।४४।३)। २ दादा। ३ नाना (द ७।१८)।

अज्जा—१ वृक्ष विशेष (भ २१।२१)। २ दुर्गा देवी का प्रशांत रूप—'दुर्गायाः पूर्वरूपं अत्र कुष्मांडिवत् तथाठिता अज्जा भन्नति' (अनुद्वाचू पृ १२)। ३ यह स्त्री (पा ८४३)।

अज्जिआ—१ दादी। २ नानी (द ७।१५)। आजी—दादी (मराठी)। अज्जी (कन्नड़)।

अज्जिडुीय—दिया, प्रस्तुत किया—'आसेण हिसियं, पट्ठी अज्जिडुीया' (व्यभा २ टी प ९४)।

अज्जुण—तृण-विशेष (भ २१।१९)।

अज्जोरुह—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १)।

अज्झ—यह (पुरुष) (दे १।५०)।

अज्झअ—पड़ौसी (दे १।१७)।

अज्झत्थ—आगत (दे १।१०)।

अज्झवसिअ—मुंडित मुख (दे १।४०)।

अज्झसिअ—दृष्ट, देखा हुआ (दे १।३०)।

अज्झस्स—आक्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे १।१३)।

अज्झा—१ असती, कुलटा। २ प्रशस्त स्त्री। ३ नववधू। ४ तरुणी। ५ यह (स्त्री) (दे १।५०)।

अज्झायक—उपयाचित, मांगा हुआ (बृटी पृ १३२७)।

अज्झायग—उपयाचित, मांगा हुआ (बृभा ४९६२)।

अज्झोण—अध्ययन, विभाग—'अज्झयणं अज्झीणं आओ झवणा य एगट्ठा' (निचू १ पृ ५)।

अज्झेल्ली—बार-बार दोहन-योग्य गाय (दे १।७)।

अज्झोल्लिआ—वक्षस्थल के आभूषण में की जाती मोतियों की रचना-विशेष (दे १।३३)।

अज्झोस—अध्यवसाय, भावना—'अज्झोसो भावण त्ति एगट्ठं' (आचू पृ ३७३)।

अणिंखिय—अनिन्दनीय (दे ३।५५ वृ)।

अटिट्टियाविज्जमाण—टिट्-टिट् की आवाज नहीं करता हुआ (ज्ञा १।३।२६)।

अट्ट—१ आकाश—'अट्टे इ वा वियट्टे इ वा आधारे इ वा' (भ २०।१६)। २ कृश। ३ महान्। ४ तोता। ५ सुख। ६ धृष्ट। ७ आलसा। ८ ध्वनि। ९ असत्य (दे १।५०)।

अट्टग—आटा (सूचू १ पृ १७८)।

अट्टट्ट—गया हुआ (दे १।१०)।

अट्टट्टहास—खिलखिलाकर हंसना (पंवटी प २३०)।

'अट्टण' साला—व्यायामशाला (भ ११।१३८)।

अट्टमट्ट—१ निरर्थक, ऊटपटांग—'अट्टमट्टं च सिक्खेज्जा, सिक्खियं ण णिरत्थयं। अट्टमट्टपसाएण, भुंजए गुडतुंबयं॥' (उशाटी प २४५)। २ आलवाल, क्यारी (प्रा २।१७४)। ३ अशुभ संकल्प-विकल्प।

अट्टयकल्ली—कमर पर हाथ देकर खड़ा रहना (पा ७२८)।

अट्टरुसग—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।४)।

अट्टालग—प्राकार के भीतर आठ हाथ चौड़ा मार्ग (आचू पृ ३६६)।

अट्ठिओ—पुनः पुनः—'अट्ठिओ पुणो पुणो' (निचू १ पृ १२४)।

अट्ठित्तो—पुनः पुनः (निभा ३५७)।

अट्ठिल्लय—बिनौला (पिनि ६०३)।

अट्ठीलय—बिनौला (पिनि ६०३)।

अड—१ लोमपक्षी (जीवटी प ४१)। २ कूप, कुंआ (पा ३०८)। ३ कूप के पास में पशुओं के पानी पीने के लिए बनाया हुआ गढा (प्रा १।२७१)।

अडउज्झिअ—विपरीत मैथुन (दे १।४२)।

अडंबहल्ला—देश-विशेष (आवहाटी १ पृ ९९)।

अडखम्मिअ—जागरूकता, देखभाल (दे १।४१)।

अडड—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अडडंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अडणि—धनुष्य का प्रांतभाग (?) (से १५।५६)।

अडणी—मार्ग (इ २६।३; दे १।१६)।

अडय—१ आत्मवान्। २ प्रशंसनीय (इ १।५)।

अडयणा—असती, कुलटा (दे १।१८)।

अडया—कुलटा (दे १।१८)।

अडयाल—१ अड़तालीस (निभा २१३२)। २ प्रशंसा—'अडयालशब्दो देशी-वचनत्वात् प्रशंसावाची' (प्रज्ञाटी प ८६)।

अडयालग—प्राकार का एक भाग—'अडयालग त्ति अट्टालकः प्राकारावयवः सम्भाव्यते' (उपाटी पृ १००)।

अडाड—बलात्, जबरदस्ती—'अडाडाए बला हरंतो अक्कंतिओ' (निचू ३ पृ २५६; दे १।१६)।

अडिल—चर्मपक्षी-विशेष (जीवटी प ४१)।

अडिला—चतुष्पद प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

अडिल्ल—चर्मपक्षी का एक भेद (प्रज्ञा १।७८)।

अड्ड—१ तिर्यक् (आवटि प ४६)। २ जो आड़े आता हो, बीच में बाधक होता हो, वह।

अड्डग—जो आडे आता हो, बीच में बाधक बनता हो—'गलए अड्डगं अट्ठि वा कट्ठं वा' (सूचू २ पृ ३५५)।

अड्डपलाण—यान-विशेष, थिल्लि (भटी पृ ७३०)।

अड्डपल्ल—लाट देश में प्रसिद्ध खच्चरों से वाह्य यान (ज्ञाटी प ४७)।

अड्डपल्लाण—लाट देश में प्रसिद्ध यान-विशेष (औपटी पृ ११२)।

अड्डवियड्ड—१ आडा-टेढा, अस्त-व्यस्त—'वितिकिण्णं विप्रकीर्णं अणाणुपुव्वीए अड्डवियड्डं ति वुत्तं भवति' (निचू ४ पृ ३७)।

अड्डित—चढ़ाया, आरोपित किया—'खंधे य अड्डितो' (व्यभा २ टी प ६४)।

अड्डिय—१ भिड़ने की क्रिया-विशेष (निचू ३ पृ ३४८)। २ आरोपित (व्यभा २ टी प ६४)।

अड्डुपल्लाण—लाट देश में प्रसिद्ध यान-विशेष (अनुद्वाहाटी पृ १४६)।

अड्डुयक्कली—कमर पर हाथ रखना (दे १।४५)।

अड्ढेऊण—रोककर—'अड्ढेऊण सणियं विगिंचइ, जह उज्जरा न जायंति' (आवहाटी २ पृ ८७)।

अड्ढोरुग—जैन साध्वी के पहनने का एक वस्त्र (पंक १४८१)।

अण—पाप (भटी प ३५)।

अणंगण—गुल्म-विशेष (अंवि पृ ६३)।

अणंत—१ अंगूठी (अंवि पृ ६५)। २ निर्माल्य, देवता को चढ़ाया गया उपहार (दे १।१०)।

अणंतग—वस्त्र (नि १।१३)।

अणंतिक्क—जुलाहा, बुनकर (आवचू १ पृ १५६)

अणक्क—१ म्लेच्छ जाति। २ म्लेच्छ देश-विशेष (प्र १।२१)।

अणघ—नीरोग (निचू १ पृ १२७)।

अणच्छिआर—अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ (दे १।४४)।

अणड—जार पुरुष (दे १।१८)।

अणत्त—निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (दे १।१०)।

अणप्प—खड्ग, तलवार (दे १।१२)।

अणप्पज्झ—१ पराधीन—'देशीपदमनात्मवशवाचकम्' (बृटी पृ १०३३)। २ भूताविष्ट (निचू २ पृ २६)।

अणप्फुण्ण—अव्याप्त, अस्पृष्ट (अनुद्वाचू पृ ५६)।

अणप्फुन्न—अनापूर्ण, अस्पृष्ट (अनुद्वा ४३८)।

अणफुण्ण—अपूर्ण, अस्पृष्ट, अनाक्रांत (अनुद्वाहाटी पृ ८६)।

अणरामय—अरति, बेचैनी (दे १।४५)।

अणराह—शिर पर बांधी जाने वाली रंग-बिरंगी पट्टी (दे १।२४)।

अणरिक्क—१ अवकाश रहित, व्यस्त (दे १।२०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य (निचू १६)।

अणवदग्ग—१ अनन्त, निस्सीम—'अणवदग्गं····संसारकंतारं अणुपरियट्टइ' (भ १।४५)। २ अविनाशी (सू २।५।२)।

अणवयग्ग—अनन्त, अपरिमित (आचू पृ १५६)।

अणवरिक्क—अवकाश सहित (दे १।२० वृ)।

अणह—१ अक्षत, सुरक्षित—'कयकज्जे अणह-समग्गे' (ज्ञा १।१८।२४; दे १।१३)। २ नीरोग (निचू १ पृ १२७)।

अणहप्पणय—अनष्ट, विद्यमान (दे १।४८)।

अणहारअ—खल्ल, वह भूमी जिसका मध्यभाग नीचा हो (दे १।३८)।

अणागलिय—अपरिमित (उपा २।३४)।

अणाड—जार पुरुष (दे १।१८)।

अणाडिया—१ कुचेष्टा, विक्रिया (आवचू १ पृ ४६७)। २ नटखटपन—'एक्का वि मए पुत्तस्स अणाडिया न दिट्ठा' (बृटी पृ ५७)।

अणाढायमाण—अस्मरण (आचू पृ ३०३)।

अणादुआल—बिना हिलाये (सूचू १ पृ १२२)।

अणालिआ—कुचेष्टा, विक्रिया—'अणालिआ करेइ' (आवहाटी १ पृ २४७)।

अणिट्ठुह—अविगलक, नहीं थूकने वाला (सू २।२।६६)।

अणिट्ठुहअ—१ अनिष्ठीवक। २ सचेष्ट, जागरूक (भ २५।५७१)।

अणिड्डुगलित—अत्यधिक लिप्त—'अणिड्डुगलिते अतीव लेत्थरियं' (निचू २ पृ ३०१)।

अणिदा—अनुभव शून्य, ज्ञानशून्य—'सव्वे असण्णी असण्णीभूतं अणिदाए वेदणं वेदेंति' (भ १।७८)।

अणिदाय—ज्ञान का अभाव (भटी पृ १४१७)।

अणिवोच्च—१ भय का होना। २ अस्वास्थ्य (व्यभा ६ टी प ५१)।

अणिय—अग्रभाग (प्र ७।२)।

अणियण—कल्पवृक्ष का एक प्रकार (प्रसाटी प ३१४)।

अणिलुक्क—प्रकट, अतिरोहित—'अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाणं मण्णइ' (भ १५।१०२)।

अणिल्ल—प्रभात (दे १।१६)।

अणिह—१ सदृश। २ मुख (दे १।५१)।

अणु—चावल की एक जाति (दे १।५)।

अणुअल्ल—प्रभात (दे १।१६)।

अणुआ—यष्टि, लकड़ी (दे १।५२ वृ)।

अणुइअ—चना (दे १।२१)।

अणुज्जल—अचंचल (अंवि पृ ४)।

अणुदवि—प्रभात (दे १।१६)।

अणुद्धरी—कुंथु आदि कीट-विशेष (निचू ३ पृ १२४)।

अणुबंधिअ—हिक्का रोग, हिचकी (दे १।४४)।

अणुय—१ धान्य-विशेष (दनि १५५; दे १।५२)। २ आकृति (दे १।५२)।

अणुरंगा—गाड़ी—'अणुरंगा णाम घंसिओ' (निचू ४ पृ १११)।
अणुल्लय—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१२९)।
अणुव—बलात्कार (दे १।१९)।
अणुवज्जण—सेवा-शुश्रूषा, देखभाल (दे १।४१ वृ)।
अणुवज्जिअ—१ जागरूकता, देखभाल (दे १।४१)। २ गत (वृ)।
अणुवहुआ—नववधू (दे १।४८)।
अणुसंधिअ—निरंतर हिचकी आना (दे १।५९)।
अणुसुत्ति—अनुकूल (दे १।२५)।
अणुसूआ—शीघ्र ही प्रसव करने वाली स्त्री (दे १।२३)।
अणेकज्झ—चंचल (दे १।३०)।
अणोभट्ठ—अप्रार्थित, अयाचित (ओनि १४८)।
अणोयविय—अपरिकर्मित (निचू २ पृ ४२६)।
अणोरपार—१ अनादि-अनन्त—'संसारे घोरम्मि अणोरपारे' (सू २।६।४९)। २ प्रचुर—'अणोरपारमिति देशीवचनं प्रचुरार्थे' (आवहाटी १ पृ २३०)। ३ अपार—'अणोरपारम्मि देशयुक्त्या अपारे' (आवदी प १६१)।
अणोलय—प्रभात (दे १।१९)।
अणोहट्टय—उच्छृंखल (ज्ञाटी प २४५)।
अणोहट्टिय—स्वच्छंद (ज्ञा १।१८।१७)।
अणोहट्ठ—अनिच्छित, अप्रार्थित—'अणोहट्ठं अजाणियं' (निचू २ पृ १९९)।
अण्ण—१ पुरुष के लिए प्रयुक्त सम्बोधन (द ७।१९)—'अण्णं' इति मरहट्ठाणं आमंतणवयणं' (दअचू पृ १६९)। २ आरोपित। ३ खण्डित।
अण्णअ—१ तरुण। २ धूर्त्त। ३ देवर (दे १।५५)।
अण्णइअ—तृप्त (दे १।१९)। २ सर्वार्थ-तृप्त, सभी विषयों में तृप्त (वृ)।
अण्णत्ति—अवज्ञा, अनादर (दे १।१७)।
अण्णमय—पुनरुक्त, पुनः कहा हुआ (दे १।२८)।
अण्णाण—१ विवाह-काल में वधू को दिया जाने वाला उपहार—दहेज। २ विवाह के लिए वर को वधू का दान—कन्यादान (दे १।७)।
अण्णाय—आर्द्र, गीला (से ४।९)।
अण्णिआ—१ देवरानी। २ ननद। ३ फूफी (दे १।५१)।
अण्णी—१ देवरानी, देवर की पत्नी। २ ननद, पति की बहिन। ३ फूफी, पिता की बहिन (दे १।५१)।

अण्णे—१ महाराष्ट्र में प्रयुक्त तरुणी स्त्री के लिए संबोधन-शब्द–'अण्णे त्ति मरहट्ठेसु तरुणित्थीसामंतणं' (द ७।१६; अचूपृ १६८)। २ महाराष्ट्र में वेश्याओं के लिए प्रयुक्त चाटु वचन–'मरहट्ठविसए आमंतणं दोमूलइक्खरगाणं चाटुवयणं अण्णेत्ति (जिचू पृ २५०)।

अण्णोसरिअ—अतिक्रान्त, उल्लंघित (दे १।३६)।

अण्हेअअ—भ्रान्त (दे १।२१)।

अतितिण—बड़-बड़ न करने वाला, बकवास न करने वाला (द ८।२६)।

अतिकिमण—अलस, मंथर–'अलसमभारो भीरू अतिकिमणो मंथरो त्ति वा' (अंवि पृ २४१)।

अतित्थित—अतिक्रान्त (व्यभा १० टी प ६)।

अतिप्पणया—अश्रु न बहाना (भ ७।११४)।

अतिर—निरन्तर–'अतिर णिरंतरं भण्णति' (जीभा १६८०)।

अतिराउल—स्वामीकुल–'अतिराउले इति देशीपदं, स्वामिकुलमित्यर्थः' (प्रज्ञाटी प २५३)।

अतिस—अप्रीति (अंवि पृ १२)।

अतीत्थित—अतिक्रान्त (व्यभा १० टी प ६)

अत्ता—१ फूफी। २ सासू। ३ सखी (दे १।५१)।

अत्थ—अनवसर, अकस्मात् (दे १।१४)।

अत्थक्क—अकस्मात् (से ११।२४)। २ अखिन्न। ३ अनवरत।

अत्थग्घ—१ मध्यवर्ती (ओनि ३४)। २ अगाध, गहरा। ३ आयाम, लंबाई। ४ स्थान (दे १।५४)।

अत्थणिउर—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अत्थणिउरंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अत्थभिल्ल—रीछ (निचू २ पृ ६३)।

अत्थयारिआ—सखी, सहेली (दे १।१६)।

अत्थावक्क—अकस्मात् (से ११।२४)।

अत्थार—सहायता, सहयोग (दे १।१६)।

अत्थारिय—कर्मकर, मूल्य लेकर खेत में धान आदि काटने वाला नौकर–'अत्थारिएहिं तु ये मूल्यप्रदानेन शालिलवनाय कर्मकराः' (व्यभा ६ टी प ३८)।

अत्थाह—१ अगाध, गहरा, ऊंडा। २ आयाम, लम्बाई। ३ स्थान। ४ मध्यवर्ती, बीच का (दे १।५४)।

अत्थिय—१ वृक्ष-विशेष। २ बहुत बीज वाला फल (भ २२।३)।

अत्थिल—क्षुद्र जंतु (अंवि पृ २५३)।

अत्थुड—लघु (दे १।६)।

अत्थुरण—आस्तरण (निचू ३ पृ ३२३)।

अत्थुरणग—आस्तरण-विशेष (निचू ३ पृ ५६८)।

अत्थुरिय—फैलाया हुआ, बिछाया हुआ (बृभा ६१०)।

अत्थुवड—भल्लातक, भिलावा वृक्ष का फल (दे १।२३)।

अत्थेक्क—आकस्मिक, अचिन्तित (से १२।४७)।

अथक्क—१ अकस्मात्, अनवसर (ओटी प ८७) २ प्रसरणशील, फैलने वाला।

अदंतवणय—अदन्तधावन, दतौन का निषेध (स्था ६।६२)।

अदंसण—चोर (दे १।२६)।

अदक्खेयव्व—ग्राह्य (ओनि)।

अदिसल्ल—अंधा (निचू ४ पृ १०६)।

अदु—१ अब (आ ६।३।१०)। २ अथ, इसलिए (सू १।२।२४)। ३ अथवा (उ २।२३)। ४ अधिकारान्तर का सूचक। ५ इससे।

अदुत्तरं—आनन्तर्य सूचक अव्यय, अब (सू २।२।१८)।

अदुल—आम आदि का रूंछा (अनुद्वाहाटी पृ ७६)।

अदुव—अथवा (द ६।२)।

अदुवा—अथवा (द ५।७५)।

अदूयालिय—मिश्रित—'जत्तियाणि भरहे धण्णानि.....ताणि सव्वाणि अदूयालियाणि' (उशाटी प १४६)।

अद्द—१ अभिमुख (आवचू १ पृ २७८)। २ परिहास। ३ वर्णन।

अद्दण—आकुल (दे १।१५)।

अद्दण्ण—१ व्याकुल (पंक ६६१; दे १।१५)। २ असत्य (व्यभा ६ टी प ३)।

अद्दन्न—आकुल-व्याकुल (बृभा ३६३३)।

अद्दाइअ—आदर्श, पवित्र आचरण वाला (बृ १)।

अद्दाग—दर्पण (स्था ४।४३१)।

अद्दाय—१ दर्पण, आदर्श,—'जे भिक्खू अद्दाए अप्पाणं देहति' (नि १३।३२; दे १।१४)। २ वह विद्या जिससे दर्पण में प्रतिबिम्बित रोगी के

बिम्ब को पोंछने से रोगी नीरोग हो जाता है।
(व्यभा ५ टी प २६)।

अद्धंत—१ पर्यन्त, अंतभाग (दे १।८)। २ कतिपय, कई एक।

अद्धक्खण—१ प्रतीक्षा (दे १।३४)। २ परीक्षण—'परीक्षणमिति केचित्' (वृ)।

अद्धक्खिअ—संकेत करना (दे १३४)।

अद्धजंघा—'मोचक' नाम का जूता-विशेष (दे १।३३)।

अद्धजंघिया—पाद-रक्षक, जूता-विशेष (दे १।३३ वृ)।

अद्धविआर—१ मंडन, भूषण (दे १।४३)। २ मंडल, गोल (वृ)।

अद्धा—१ समय (स्था २।३६)। २ लब्धि, शक्ति-विशेष। ३ वस्तुतः। ४ साक्षात्। ५ दिन। ६ रात्रि। ७ संकेत।

अद्धाण—महान् अटवी—'अद्धाणं महंता अडवी' (निचू १ पृ ८०)।

अद्धुट्ठ—साढ़े तीन—'अद्धुट्ठणावि कुमारकोडीणं' (प्र ४।५)।

अधंकण—अमायी (सूचू १ पृ १८६)।

अधवण—अथवा (बृभा ४१६३)।

अधिकरणिखोडि—अहरन को रखने का काष्ठ-विशेष (भ १६।७)।

अधिक्कमणक—उत्सव-विशेष (अंवि पृ १२१)।

अनिदोच्च—भयभीत, अस्वस्थ—'अणिदोच्चमित्यनिर्भयमस्वस्थमित्यर्थः' (व्यभा ७ टी प ५१)।

अन्न—पुरुष के लिए प्रयुक्त संबोधन-शब्द (द ७।१६)।

अन्नइलाय—बासी भोजन करने वाला (प्रटी प ११०)।

अन्नओहुत्त—पराङ्मुख—'रोसेण य अन्नओहुत्तो जाओ राया' (उसुटी प २६)।

अन्नतिलाय—बासी भोजन करने वाला (प्रटी प प०६)।

अन्ना—१ तरुण स्त्री का सम्बोधन-शब्द (द ७।१६)। २ माता।

अपडिच्छिर—जड़-मति, मूर्ख (दे १।४३)।

अपडिहत—भोज्य पदार्थ-विशेष—'पूणे वा फेणके वा अक्खपूणे वा अपडिहते वा' (अंवि पृ १८२)।

अपलोकणिक—सिर का आभरण-विशेष (अंवि पृ १६२)।

अपातय—अकाल (?)—'अपातयं सस्सवापत्ति' (अंवि पृ ११२)।

अपारमग्ग—विश्राम (दे १।४३)।

अपुप्फिय—स्वच्छ, सुगंधित (बृभा ४३८)।
अपोल—पोल रहित, अशुषिर (पंवटी प ६७)।
अपोल्ल—अशुषिर, निबिड (प्रसा ६७४)।
अप्प—पिता (दे १।६)।
अप्पगुत्ता—कपिकच्छू, कवाछ, (दे १।२६)।
अप्पजूहिअ—पके हुए चावल आदि (आटी प ३३४)।
अप्पज्झ—आत्मवश, स्वस्थचित्त (बृभा ३७३२; दे १।१४)।
अप्पत्तिय—१ अप्रीति। २ अविश्वास (दश्रु ६।४)।
अप्पदृण्ण—आत्मरक्षा में तत्पर, स्वयं को बचाने में तत्पर (बृभा ११५३)।
अप्पसत्थभ—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।
अप्पाह—संदेश (व्यभा ७ टी प २६)।
अप्पाहट्टु—जानकर, कहकर (सू २।१।१२)।
अप्पाहण—संदेश (बृभा २३६)।
अप्पाहणी—संदेश (पिनि ४३०)।
अप्पाहित—संदिष्ट (बृभा ३२८४)।
अप्पाहिय—संदिष्ट (बृटी पृ ७४)।
अप्पोया—आस्फोता, वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।
अप्पोल—पोल रहित (निभा २१७०)।
अप्पोल्ल—पोल रहित, निगर (ओभा ३२२)।
अप्फचिय—अपरिचित (निचू ३ पृ ३३७)।
अप्फचित—अपरिचित (निचू २ पृ ११७)।
अप्फाया—वनस्पति-विशेष (जीवटी प ३५१)।
अप्फुण्ण—१ पूर्ण, भरा हुआ (विपा १।२।५३; दे १।२०)। २ आक्रांत, स्पृष्ट (अनुद्वाचू पृ ५६)। ३ आच्छादित (से २।४)।
अप्फुन्न—आपूर्ण, स्पृष्ट, आक्रान्त (अनुद्वा ४३६)।
अप्फेया—आस्फोता, वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।
अप्फोता—वनस्पति-विशेष (जीव ३।२६६)।
अप्फोतिका—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।
अप्फोय—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।
अप्फोया—१ वनस्पति-विशेष (राज १८४)। २ वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।३)।

अप्फोव—१ लता (उ १८।५)। २ वृक्ष आदि से आकीर्ण, गहन (उशाटी प ४३८)।

अफुण्ण—परिपूर्ण (प्रज्ञा २६।५६)।

अफुन्न—स्पृष्ट (प्रसाटी प ३०४)।

अबीय—दुर्भिक्ष (निचू ४ पृ १२८)।

अबोट—अनाक्रमणीय (ओटी प ६२)।

अब्बुद्धसिरी—इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति (दे १।४२)।

अब्भ—अध्यारोह वृक्ष, वृक्ष पर उत्पन्न होने वाला विजातीय वृक्ष—'अब्भेति वृक्षे समुत्पन्नो विजातीयो वृक्षविशेषोऽध्यवरोहकः' (भटी पृ १४७६)।

अब्भंगिएल्लअ—घी आदि से चुपड़े हुए शरीर वाला (ओनि ८२)।

अब्भक्खण—अकीर्ति (दे १।३१)।

अब्भड—आहत, टकराना (आवहाटी १ पृ २८८)।

अब्भडवंचिउ—अनुगमन करके (प्रा ४।३६५)।

अब्भपिसाअ—राहु (दे १।४२)।

अब्भवालुय—अभ्रक का चूर्ण (उ ३६।७४)।

अब्भाकारिय—कर्मजीवी (?) (अंवि पृ ६७)।

अब्भायत्त—प्रत्यागत, वापस आया हुआ (दे १।३१)—'अब्भायत्ता भमन्ति तुह रिउणो' (वृ)।

अब्भायत्थ—पश्चाद्गत, फिर गया हुआ—'अब्भायत्थो पश्चाद् गत इति तु गोपालः' (दे १।३१ वृ)।

अब्भिडिअ—१ सार, मजबूत। २ संगत, युक्त (दे १।७८)।

अब्भिडिऊण—टकरा कर—'सो चक्के अब्भिडिऊण भग्गो' (उशाटी प १४६)।

अब्भुट्ठि—हिंसक—'आउट्टि त्ति वा अब्भुट्ठि त्ति वा एगट्ठा' (आचू पृ २७५)।

अब्भुत्त—प्रदीप्त, चमकदार (निचू ३ पृ ३२१)।

अब्भुत्तिअ—१ प्रदीप्त, प्रकाशित। २ उत्तेजित (से १५।३८)।

अब्भूआण—उफनता हुआ—'आकंठा आदाणस्स भरिया, तो तप्पमाणी भरिया अब्भूआणा छड्डिज्जति, अंगि पि विज्झावेति' (निचू ३ पृ ८५)।

अभिचार—उच्चाटन आदि (निचू १ पृ १६३)।

अभिणूम—१ माया (सू १।२।७)। २ कर्म (सूचू पृ ५३)।

अभिण्णपुड—खाली पुडिया जिसको बच्चे लोगों को ललचाने के लिए रास्ते पर रख देते हैं (दे १।४४)।

अभिनिपिया—प्रत्येक का पृथक्-पृथक् चूल्हा (व्य ९।१०)।

अभिनिव्वगड—१ अनेक और निश्चित परिक्षेप वाला स्थान। २ पृथग्-पृथग् परिक्षेप वाला स्थान (बृ १।११ टी पृ ६४९)। ३ वह परिक्षेप जिसमें प्रवेश और निष्क्रमण का एक द्वार हो पर भीतर अनेक घर हों (व्यभा ८ टी प ४)।

अमंगुल—इष्ट (निचू ३ पृ १४२)।

अमज्जाइल्ल—अमर्यादित, अव्यवस्थित (निभा ४०३)।

अमणाम—मन के लिए अप्रिय (स्था २ २३३)।

अमय—१ चन्द्रमा, चांद (दे १।१५)। २ असुर, दैत्य।

अमयणिग्गम—चन्द्रमा (दे १।१५)।

अमाघाय—अमारि—'अमाघातो रूढिशब्दत्वात् अमारिरित्यर्थः' (उपाटी पृ ९१)।

अमिय—प्राप्त—'अमिया गावीतो, जुज्झं संपलग्गं' (निचू ३ पृ १९७)।

अमिल—१ मेष, भेड़ (ओनि ३६८)। २ भांड-विशेष (अंवि पृ ७२)।

अमिला—१ भेड़ की ऊन से बना वस्त्र (आचूला ५।१४)। २ देश-विशेष में सूक्ष्म रोओं से निर्मित वस्त्र (निचू २ पृ ३९९)।

अमुदग्ग—अतीन्द्रिय मिथ्याज्ञान-विशेष, जीव पुद्गलों से बना हुआ नहीं है—ऐसा ज्ञान (स्था ७।२)।

अमुय—अस्मृत, अज्ञात (भ १।४२९)।

अमोग्गतिया—सम्मुख जाना, त्वरित गति से जाना—'तस्सागमणवेलाए सव्वो परियणो पच्चोवणीए णिग्गतो अमोग्गतिया एति' (निचू ३ पृ ४११)।

अमोसली—अप्रमादयुक्त प्रतिलेखना का एक प्रकार (स्था ६।४६)।

अम्मका—मां (आवदी प ८०)।

अम्मगा—मां (भ ९।१४८)।

अम्मणअंचिअ—अनुगमन, पीछे-पीछे जाना (दे १।४९)।

अम्मया—माता, अम्बा (ज्ञा १।९।४)।

अम्मा—मां (अंत ५।१६; दे १।५)।

अम्माइआ—अनुगमन करने वाली, पीछे-पीछे जाने वाली (दे १।२२)।

अम्मिय—प्राप्त (बृटी पृ ७७९)।

अम्मो—१ माता का सम्बोधन (ज्ञा १।१४।२६)। २ आश्चर्यसूचक अव्यय (प्रा २।२०८)।

अम्मोगइया—सम्मुख-गमन, स्वागत करने के लिए सामने जाना—'राया सयमेव अम्मोगइयाए निग्गओ' (उसुटी प २३)।

अम्मोगतिया—सम्मुख-गमन (आवचू १ पृ ३६५)।

अय—१ विस्मृत। २ आदरणीय। ३ परित्यक्त (दे १।४६)।

अयक्क—दानव (दे १।६)।

अयग—दानव (दे १।६)।

अयड—कुंआ, कूप (दे १।१८)।

अयतंचिअ—हृष्ट-पुष्ट, मांसल (दे १।४७)।

अयसा—सुरा-विशेष (अंवि पृ १८१)।

अयालि—मेघाच्छन्न दिवस, आकाश में बादलों के छा जाने से होने वाला अन्धकार, दुर्दिन (दे १।१३)।

अयोइल्ल—कारावास—'डंडं पुरस्कृत्य राया अयोइल्लए ठवेति' (दशचू प ३६)।

अरइय—१ अर्श, मसा (आचूला १३।२८)। २ अजीर्ण (नि ३।३४)।

अरंजरग—जलघट (सूचू १ पृ ११७)।

अरक—कृमि-विशेष (अंवि पृ ६६)।

अरतीअ—मसा, अर्श (आचू पृ ३७२)।

अरबाग—१ एक अनार्य देश, अरब देश (प्रसा ८३)। २ अरब देश के वासी (कु पृ ४०)।

अरल—१ कीट-विशेष, चीरी। २ मच्छर (दे १।५२)।

अरलाया—चीरी, चार इन्द्रिय वाला छोटा प्राणी जो रात को लयबद्ध ध्वनि करता है, पर दृष्टिगोचर नहीं होता (दे १।२६)।

अरलूसा—अडूसा का वृक्ष (अंवि पृ ७०)।

अरविंदर—दीर्घ (दे १।४५)।

अरहट्ट—रहट (ओटी प १६)।

अरिअल्लि—व्याघ्र (दे १।२४)।

अरिज्ज—अग्र, परिमाण (आचू पृ ३३६)।

अरिसिल्ल—बवासीर रोग वाला (विपा १।७।७)।

अरिहट्ट—निश्चित, अवश्य (दे १।२२)।

अरुग—व्रण, फोडा (बृभा ६०२८)।

अरुण—कमल (दे १।८)।
अरुय—व्रण (बृभा २२२५)।
अलंदक—कटोरा (अंवि पृ ६५)।
अलंदिका—थाली के आकार का पात्र (अंवि पृ ७२)।
अलंदिग—पात्र-विशेष (आचू पृ ३४५)।
अलंप—कुक्कुट (दे १।१३)।
अलक्कडअ—पागल कुत्ता (बृटी पृ ८२६)।
अलग्ग—कलंक, आरोप (दे १।११)।
अलमंजुल—आलसी, सुस्त (दे १।४६)।
अलमल—दुर्दान्त वृषभ, दुष्ट बैल (दे १।२५)।
अलमलवसह—दुर्दान्त वृषभ, दुष्ट बैल—'अलमलवसहो सप्ताक्षरं नामेति गोपालः' (दे १।२५ वृ)।
अलय—विद्रुम, प्रवाल (दे १।१६)।
अलस—१ मोम। २ कुसुंभ रंग से रंगा हुआ (दे १।५२)। २ मंद-मधुर ध्वनि (पा ६०२)।
अलसंदक—अतसी, धान्य-विशेष (अंवि पृ २२०)।
अलाहि—पर्याप्त, परिपूर्ण (ज्ञा १।१।९१)।
अलिय—बिच्छू का डंक, कांटा (विपा १।६।२३)।
अलिअल्ली—१ कस्तूरिका। २ व्याघ्र (दे १।५६)।
अलिआ—सखी (दे १।१६)।
अलिआर—दुग्ध (दे १।२३)।
अलिजरअ—रंगने का बड़ा पात्र (पा ६२३)।
अलिंद—पात्र-विशेष (अनुद्वा ३७५)।
अलिंदिगा—एक प्रकार का जलपात्र (आवचू २ पृ ७०)।
अलिण—वृश्चिक, बिच्छू (दे १।११)।
अलित्तय—नौका खेने का बड़ा बांस—'अलित्तओ कोट्टिंबियाए फिट्टो महल्लो वंसो' (आचू पृ ३५७)।
अलियाण—अकुशल (प्र २।१४)।
अलिसिंद—धान्य-विशेष—'अलिसिंदा चवलागारा' (निचू २ पृ १०९)।
अलीपट्ट—बिच्छू के डंक की आकृति वाली तीखी खूंटी (विपा १।६।२०)।
अलीसअ—शाक वृक्ष (दे १।२७)।

अलेभड—अस्थिर—'तत्थ नवमो वासारत्तो कओ, सो य अलेभडो जाओ' (आवहाटी १ पृ १४१)।

अल्ल—दिन (अंवि पृ २४२; दे १।५)।

अल्लअ—परिचित (दे १।१२)।

अल्लकम्म—१ दैनिक व्यवहार की कला। २ सिंचन-कला (कु पृ २३३)।

अल्लट्टपलट्ट—पार्श्व का परिवर्तन (दे १।४८)।

अल्लट्टपलट्टया—पार्श्व का परिवर्तन (दे १।४८ वृ)।

अल्लत्थ—१ पानी से भीगा हुआ। २ केयूर, बाजूबंद (दे १।५४)।

अल्लपल्ल—बिच्छू के डंक की आकृति वाली तीखी खूंटियां (विपाटी प ७१)।

अल्लमुत्था—कंद-विशेष (प्रसा २३८)।

अल्लल्ल—मयूर (दे १।१३)।

अल्लविय—उठाना, भार ढोना—'तेण तस्स सत्थकोत्थलओ अल्लविओ' (उसुटी प २७)।

अल्ला—१ जननी, माता (दे १।५)। २ अवमीलन, आंख बंद करना (से १३।४३)।

अल्लिय—पास में आना (पंव ९३७)।

अल्लियअ—समीप—'गंतू साहूणमल्लियओ' (पंक ६००)।

अल्लियाव—१ छीना हुआ (पंक ४९२)। २ प्रवेश (आवचू १ पृ ४४६)।

अल्लीण—आया—'न कोइ कयगो अल्लीणो' (व्यभा २ टी प ४६)।

अवअक्खिअ—मुंडाया हुआ मुंह (दे १।४०)।

अवअच्चिअ—मांसल (दे १।४७ वृ)।

अवअच्छ—१ कौपीन, कक्षावस्त्र (दे १।२६)। २ कांख, बगल (वृ)।

अवअच्छिअ—निवापित मुख, मुंडाया हुआ मुंह (दे १।४०)।

अवअणिअ—असंघटित, अयुक्त (दे १।४४)।

अवअण्ण—उदूखल, उलूखल (दे १।२६)।

अवइ—अनंतकाय वनस्पति-विशेष (भटी पृ १४८५)।

अवउज्जिअ—नीचे झुककर—'अवउज्जिअत्ति अधोऽवनम्य' (आटी प ३४२)।

अवएज—पात्र-विशेष (ज्ञाटी प ४८)।

अवएड—पात्र-विशेष (ज्ञाटी प ४७)।

अवएडय—तापिकाहस्त, तवे का हाथा (भ ११।१५९)।

अवओडय—गले को मरोड़ना (विपा १।२।१४)।

अवओडयबंधणय—वह व्यक्ति जिसके गले और हाथों को मरोड़कर उनको पृष्ठभाग के साथ रस्सी से बांध दिया जाए (अंत ६।२२)।

अवंग—कटाक्ष (दे १।१५)।

अवंगुणित्ता—खोलकर (भ १५।१४२)।

अवंगुणेत्ता—खोलकर (ज्ञा १।१६।६५)।

अवंगुत—उद्घाटित (बृभा ४०७१)।

अवंगुय—उद्घाटित (भ २।९४)।

अवकड्ढित—पराजित—'अवकड्ढिते पराहूते पराजित परम्मुहे' (अंवि पृ १०८)।

अवकीरिअ—विरहित (दे १।३८)।

अवकोडक—गले को मरोड़ना, कुकाटिका—गले के पिछले भाग को नीचे ले जाना (प्र ३।१२)।

अवक्करस—मद्य, मदिरा (दे १।४६)।

अवग—जलीय वनस्पति-विशेष (सू २।३।४३)।

अवगद—विस्तीर्ण, विशाल (दे १।३०)।

अवगर—कूड़ा (भटी पृ ७३०)।

अवगूढ—अपराध (दे १।२०)।

अवचुल्ल—छोटा चूल्हा (निचू ३ पृ १०९)।

अवचुल्ली—छोटा चूल्हा—'चुल्लीए समीवे अवचुल्ली' (निचू ३ पृ १०९)।

अवच्छुरण—क्रोध के वशीभूत होकर अनर्गल बोलना—'किमिह जुत्तं पिअम्मि अवच्छुरणं' (दे १।३९ वृ)।

अवछुरण—क्रोध के वशीभूत होकर अनर्गल बोलना (दे १।३९)।

अवज्झर—निर्झर-विशेष (ज्ञाटी प १०६)।

अवज्झस १ कटि, कमर। २ कठिन (दे १।५६)।

अवठंभ—ताम्बूल (दे १।३६)।

अवड—१ कूप। २ आराम, बगीचा (दे १।५३)।

अवडअ—१ तृण-पुरुष, घास की बनी हुई पुरुषाकृति (दे १।२०)। २ कूप। ३ बगीचा (दे १।५३ वृ)।

अवडक्किअ—कूप आदि में गिरकर मरा हुआ, जिसने आत्महत्या की हो वह (दे १।४७)।

अवडाहिअ—१ अभिशप्त। (दे १।४७)। २ उत्कृष्ट।

अवडिअ—खिन्न (दे १।२१)।

अवडिच्छि—अनपेक्षित (से १०।४१)।

अवडुअ—उलूखल, ऊखल (दे १।२६)।

अवड्डा—कृकाटिका (भटी पृ १२५७)।

अवण—१ पानी की तीव्र धारा जो नीचे से ऊपर की ओर निकलती है। २ घर का फलहक (दे १।५५)।

अवण्ण—अवगणना, अवज्ञा (दे १।१७)।

अवतंस—'पुरुषव्याधि' नामक रोग-विशेष (बृभा ६३३६)।

अवतासाविय—अवश्लिष्ट (विपा १।१।५५)।

अवतासित—बलात् आलिंगित—'बलामोटिकया आलिंगितः' (बृटी पृ १५१०)।

अवत्त—उपलिप्त (बृभा ५८४)।

अवत्तय—विसंस्थुल, अव्यवस्थित (दे १।३४)।

अवत्थरा—पाद-प्रहार (दे १।२२)।

अवद्दुस—ऊखल, छाज आदि सामान्य उपकरण (दे १।३०)।

अवधिका—उपदेहिका, दीमक (प्र १।३३)।

अवपक्क—तवा (ज्ञाटी प ४७)।

अवपुसिअ—संघटित, संयुक्त (दे १।३६)।

अवमद—भाजन-विशेष (जंबूटी प १००)।

अवमिय—जिसको घाव हो गया हो वह, जख्मी (बृ ३)।

अवयक्का—कड़ाही (भ ११।१५६)।

अवयक्खिअ—मुंडित मुख (दे १।४०)।

अवयग्ग—अंत, अवसान—'अवयग्गं ति देशीवचनोऽन्तवाचकः' (भटी प ३५)।

अवयच्छिय—१ प्रपारित (ज्ञाटी प १४४)। २ मुण्डित मुख (दे १।४०)।

अवयड्ढिय—युद्ध-क्षेत्र में अपहृत (दे १।४६)।

अवयत्थिय—प्रसारित—'अवयत्थिय-महल्ल-विगय-बीभच्छरत्ततालुयं' (ज्ञा १।८।७२)।

अवयरिअ—विरह, वियोग (दे १।३६)।

अवयाण—आकर्षण-रज्जु, खींचने की डोरी (दे १।२४)।

अवयार—माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव-विशेष, जिसमें इक्षु-खंड से दतवन करना आदि क्रियाएं की जाती हैं (दे १।३२)।

अवयास—आलिंगन (पिनि ५८१)।

अवयासण—आलिंगन (कु पृ १७३)।

अवयासाविअ—आलिंगित (विपाटी प ६७)।

अवयासिअ—आलिंगित (बृभा ५७१०)।

अवयासिणी—नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर (दे १।४६)।

अवयि—रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

अवरज्ज—१ गत दिवस। २ आगामी दिवस। ३ प्रभात (दे १।५६)।

अवरत्तअ—पश्चात्ताप (दे १।४५)।

अवरत्तेअ—पश्चात्ताप, अनुताप (दे १।४५ वृ)।

अवरद्धिग—१ लूतास्फोट, मकड़ी के काटने से होने वाला फोड़ा। २ सर्पदंश (पिनि १४)।

अवराह—कटि, कमर (दे १।२८)।

अवरिक्क—अवकाश-रहित, व्यस्त (दे १।२०)।

अवरिज्ज—अद्वितीय (दे १।३६)।

अवरिद्धि—१ मकड़ी के काटने से होने वाला फोड़ा। २ सर्पदंश (पिटी प १६३)।

अवरिहडुपुसण—१ अकीर्ति। २ असत्य। ३ दान (दे १।६०)।

अवरुंडण—परिरंभण, आलिंगन (पा ४६२)।

अवरुंडिअ—आलिंगन (आवहाटी १ पृ १८३; दे १।११)।

अवरेय—रिक्तता (उशाटी प ३०५)।

अवरोह—कटि, कमर (दे १।२८)।

अवलय—घर, मकान (दे १।२३)।

अवलिंब—१ बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (ओलिंद ?)। २ दीमक का ढूह (ओलिंभा दे १।१५३ ?)। (स्था २।३६१)।

अवलिच्छिअ—अप्राप्त—'अवलिच्छिअसेससाअरो मअरहरो' (से ६।७८)।

अवलिय—असत्य (दे १।२२)।

अवलुआ—कोप (दे १।३६)।

अवल्ल—बैल (आवचू २ पृ १५३)।

अवल्लक—नौका खेने का उपकरण-विशेष (सूचू १ पृ ३६)।

अवल्लय—नौका खेने का उपकरण-विशेष (आचूला ३।१६)।

अवल्लाव—असत्य कथन, अपलाप (दे १।३८ वृ)।

अवल्लावअ—अपलाप, असत्य कथन (दे १।३८)।

अवव—संख्या-विशेष—'चतुरशीतिरववाङ्गा शतसहस्राणि एकमववम्' (जीवटी प ३४५)।

अववंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

अवसंतुइय—बाहर निकालकर (दअचू पृ ११५)।

अवसमिआ—गूंदा हुआ बासी आटा (दे १।३७)।

अवसह—१ उत्सव। २ नियम (दे १।५८)

अवसावण—१ काञ्जिका—'अवसावणं लाडाणं कंजियं भण्णई' (बृटी पृ ८७१)। २ भात वगैरह का पानी।

अवह—शरीर का अवयव (अंवि पृ ६६)।

अवहट्ठ—अभिमानी, अहंकारी (दे १।२३)।

अवहड—मुसल (दे १।३२)।

अवहण्ण—उलूखल (दे १।२६ वृ)।

अवहत्थरा—पाद-प्रहार (दे १।२२ वृ)।

अवहन्न—ऊखल (बृभा २६३३)।

अवहाअ—विरह (दे १।३६)।

अवहित्था—मन की अस्त-व्यस्तता, अकुलाहट (से ११।६ टी)।

अवहेअ—दया-पात्र, अनुकंपा का पात्र (दे १।२२)।

अवहेडग—आधासीसी रोग (उशाटी प १४३)।

अवहेडय—आधासीसी रोग, आधे शिर का रोग (उनि १५०)।

अवहेडिय—नीचे की तरफ मुड़ा हुआ, झुका हुआ—'अवहेडिय पिट्ठसउत्तमंगे' (उ १२।२६)।

अवहेरी—तिरस्कार, अवहेलना (उसुटी प १६२)।

अवहोडय—बन्धन का एक प्रकार, हाथ और सिर को पीठ से बांधना—'अवहोडएण जक्खस्सेव पुरओ बंधेऊण' (उसुटी प ३५)।

अवार—बाजार, दुकान (निचू २ पृ १६०; दे १।१२)।

अवारी—दुकान, बाजार (दे १।१२)।

अवालुआ—होठ का प्रान्त भाग (दे १।२८)—'अवालुआ फुडं फुडइ' (वृ)।

अविअ—कहा हुआ (दे १।१०)।

अविच्छिय—प्रसारित (ज्ञाटी प १४४)।
अविणयवइ—जार-पुरुष (दे १।१८ वृ)।
अविणयवर—जार-पुरुष (दे १।१८)।
अवियत्त—अप्रीति (व्यभा २ टी प ३४)।
अवियाउरी—१ प्रसव करने पर जिसकी संतान तत्काल मर जाती हो, वह स्त्री (ज्ञा १।२।८)। २ वन्ध्या (आवचू १ पृ २६४)।
अविरल्ल—अविस्तारित, एकत्रित (व्यभा ४।४ टी प १०)।
अविरल्लण—अविस्तारित, एकत्रित (व्यभा ५ टी प १०)।
अविराय—अविध्वस्त (जी ३।११८)।
अविरिक्क—अविभक्त (व्यभा ६ टी प ६)।
अविल—१ पशु। २ कठिन (दे १।५२)।
अविला—गड्डरिका (पिटी प २०)।
अविहाड—१ बालक, बच्चा—'देशीभाषया बालकः' (बृटी पृ ६०८)। २ अप्रकट (व्यभा ७ टी प ५)।
अविहाविअ—१ दीन। २ मौन (दे १।५६)।
अवेलि—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ ७१)।
अवेसि—द्वार-फलक (दे १।८)।
अवेसिण—चौखट, द्वार-फलिह (पा ७६१)।
अवोगिल्ल—अवाचाल—'महाराष्ट्रकमवोगिल्लमवाचालं' (व्यभा ७ टी प २५)।
अवोच्चत्थ—अविपरीत (निचू २ पृ १२६)।
अवोवच्छ—अविपर्यस्त (व्यभा ८ टी प ६)।
अव्वंग—अक्षत (व्यभा ६ टी प ६६)।
अव्वा—जननी, माता (दे १।५)।
अव्वो—सम्बोधन-सूचक अव्यय (उसुटी प २१)।
अव्वोकड्ढ—खींचा हुआ—'उक्कड्ढमोकड्ढे त्ति वा पुणो' (अंवि पृ ८६)।
अव्वोगड—१ अविभक्त—'अव्वोगडमविभत्तं' (बृभा ४७६६)। २ अविकृत—'अव्वोगडं अविगडं' (व्यभा ७ टी प ६१)।
असंखड—वाचिक कलह (निचू १ पृ ४६)।
असंखडिय—कलह करने वाला (ओभा २२६)।
असंखडी—कलह (प्रसाटी प २२८)।

असंगय—वस्त्र (दे १।३४)।

असंगिय—१ अश्व। २ अनवस्थित, चंचल (दे १।५५)।

असंथड—असमर्थ (आचूला ४।३२)।

असंथडिय—अतृप्त (बृचू प २०८)।

असंथडो—अतृप्त (बृभा ५८१७)।

असंथर—१ दुर्भिक्ष—'असंथरं दुब्भिक्खं'। २ असमर्थ (निचू १ पृ ११६)। ३ अप्राप्ति। ४ अतृप्ति (व्यभा ४ टी प ८)।

असंथरंत—१ तृप्त न होता हुआ (ओनि १८३)। २ समर्थ न होता हुआ (ओनि २१०)।

असंथरण—१ निर्वाह का अभाव (आचू पृ ३३७)। २ असमर्थता (निचू १)। ३ पर्याप्त लाभ का अभाव (पंव ३)।

असंथरमाण—१ तृप्त न होता हुआ (नि १०।३२)। २ समर्थ न होता हुआ। ३ खोज न करता हुआ (व्यभा ४ टी प ७१)।

असंफर—नग्न पैर (बृभा ३८६५)।

असंफुर—ऐसा रोगी जिसकी शक्ति क्षीण होने के कारण पैर सकुचा जाते हैं और जो ठीक से सो नहीं पाता (बृभा ३६०७)।

असण—वृक्ष विशेष, एकास्थिक वृक्ष (भ ८।२१६)।

असधीण—प्रवास में गए हुए (निचू २ पृ १४२)।

असरमाण—अनिर्वाह (निचू १ पृ ४१)।

असराल—प्रचुर—'असराललोहपडिबद्धो' (कु पृ ३७)।

असरासअ—कठोर हृदय वाला, निष्ठुर (दे १।४०)।

असवत्तअ—तृणविशेष—'दब्भो कुंभीचक्को वा गोल्लविसए असवत्तओ भण्णति' (आचू पृ ३५७)।

असहीण—परदेश-गमन (निचू २ पृ १६१)।

असाढय—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

असारा—कदली-वृक्ष, केले का वृक्ष (दे १।१२)।

असारिय—निर्जन स्थान (बृटी पृ १३७१)।

असिअय—दात्र, दांती (भ १४।८५)।

असिय—दात्र, दांती—'असिएहिं लुणंति' (ज्ञा १।७।१५; दे १।१४)।

असियग—शस्त्र-विशेष, दांती—'सत्थं वा असियगमादी' (सूचू २ पृ ३४१)।

असिया—मसा का रोग (आचू पृ ३७२)।

असीमालिका—कंठ का आभूषण (अंवि पृ १६२)।

अह—दुःख (दे १।६)।

अहट्ट—आडम्बर, उपाधि (आवचू १ पृ ४४६)।

अहर—असमर्थ (दे १।१७)।

अहवण—१ अथवा—'अहवण' त्ति अखण्डमव्ययं अथवार्थे वर्त्तते' (बृटी पृ ३०३)। २ वाक्यालंकार में प्रयुक्त होने वाला अव्यय।

अहव्वा—असती, कुलटा (दे १।१८)।

अहासंथड—निष्कम्प, निश्चल—'अहासंथडं नाम णिप्पकंपं' (निचू २ पृ १७०)।

अहिअल—कोप, क्रोध (दे १।३६)।

अहिआर—लोकयात्रा, लोक-व्यवहार, जीवन-यात्रा (दे १।२६)।

अहिक्खण—१ उपालंभ (दे १।३५)। २ बार-बार—'अभीक्ष्णमित्यन्ये' (वृ)।

अहिगर—अजगर (जीव १)।

अहिगरणसाला—लोहकारशाला (भटी पृ १२८२)।

अहिगरणिखोडि—अहरन को रखने का काष्ठ-विशेष (भटी पृ १२८२)।

अहिगरी—अजगरी (जीव २)।

अहिड्डुय—पीड़ित (पा ५४६)।

अहिणुका—सांप की एक जाति (अंवि पृ २२६)।

अहिणूका—सर्पिणी (अंवि पृ ६६)।

अहिपच्चुइअ—१ अनुगमन, पीछे-पीछे चलना (दे १।४६)। २ आयात, आगत।

अहिमर—१ वधक (निचू ३ पृ ३७)। २ आघात करने वाले चोर, अश्व आदि को चुराने वाले चोर—'अहिमरा णाम दद्दरचोरा, अस्सहरणं वा मारणं वा काउकामा' (निचू १ पृ ५३)।

अहिमार—पुष्प-फल वाला वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३२)।

अहिमारु—वृक्ष-विशेष—'एगं अहिमारुदारुयं' (उशाटी प १४३)।

अहिरिक्क—उत्त्रास, भय (व्यभा ३ टी प ६२)।

अहिरीअ—निस्तेज, फीका (दे १।२७)।

अहिरेमइअ—पूर्ण, भरा हुआ (पा १४२)।

अहिलाण—मुख का बन्धन-विशेष (भटी पृ ८८२)।

अहिलिअ—१ अभिभव, पराभव। २ कोप (दे १।५७)।
अहिलूका—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २३७)।
अहिलोडिका—जीव-विशेष, गोपालिका (बृटी पृ १५४८)।
अहिलोढी—सरटी, मादा गिरगिट—'अहिलोढी सरडी वि भण्णति' (दश्रुचू प ६८)।
अहिल्ल—ईश्वर, धनवान् (दे १।१०)।
अहिवण्ण—पीले और लाल रंग वाला (दे १।३३)।
अहिविण्णा—उपपत्नी (दे १।२५)।
अहिसंधि—बार-बार, पुनः-पुनः (दे १।३२)।
अहिसाय—परिपूर्ण (दे १।२०)।
अहिसिअ—१ अनिष्ट ग्रहों की आशंका से खेद करना, रोना (दे १।३०)। २ अनिष्ट ग्रह से भयभीत।
अहिहर—१ देवकुल, पुराना मन्दिर। २ वल्मीक (दे १।५७)।
अहिहाण—प्रशंसा, स्तुति (दे १।२१)।
अहोरण—उत्तरीय वस्त्र (दे १।२५)।

आ

आअ—१ अध्ययन, परिच्छेद—'अज्झयणं अज्झीणं आओ झवणा य एगट्ठा' (निचू १ पृ ५)। २ बहुत। ३ दीर्घ। ४ कठिन। ५ लोहा। ६ मुसल (दे १।७३)।
आअड्डिअ—दूसरे की प्रेरणा से चलित (दे १।६८)।
आअड्ढि—आकृष्ट (से १।१६)।
आअर—१ उदूखल। २ कूर्च, दाढी (दे १।७४)।
आअल्ल—१ रोग। २ चंचल (दे १।७५)।
आअल्लि—लताओं से सघन प्रदेश (दे १।६१)।
आअल्ली—लताओं से सघन प्रदेश (दे १।६१)।
आइं—वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त अव्यय—'आइं ति देशभाषायाम्' (ज्ञाटी प १६५)।

आइंखणा—कर्णपिशाची देवी (प्रसा ११३)।

आइंखणिया—१ कर्णपिशाचिका देवी। २ डोंबी, चांडाली—'आइंखणिय त्ति ईक्षणिका दैवज्ञा आख्यात्री लोकसिद्धा डोंबी' (पंवटी प २३२)।

आइंखिणिया—१ डोमिनी, चंडालिनी (बृभा १३१२)। २ कर्णपिशाचिका देवी (निभा ४२६०)।

आइण्ण—१ कुलीन घोड़ा (प्र ४।७)। २ पिरोना—'मोत्तियं आइण्णंतो आगासे उक्खिवित्ता' (आवहाटी १ पृ २८५)।

आइद्ध—प्रेरित (से ६।७)।

आइप्पण—१ चूर्ण, आटा। २ उत्सव में गृह-शोभा के लिए चूना आदि की पुताई (दे १।७८)। ३ उत्सव के प्रसंग पर गृह, गृहद्वार को सजाने के लिए गीले चावल के आटे से विभिन्न आकृतियों का निर्माण करना (वृ)।

आइसण—उज्झित, त्यक्त (दे १।७१)।

आउ—१ नक्षत्र देव-विशेष (स्था २।३२४)। २ जल (सू २।१।२७; दे १।६१)।

आउंबालिय—आप्लावित (पा १३६)।

आउट्ट—१ आदर, सम्मान—'किं मम एद्दहेण आउट्टेण' (उशाटी प १४६)। २ प्रणत (व्यभा ६ टी प १८)। ३ करना—'करणार्थे आउट्ट शब्दः' (दशचू प ६८)।

आउट्टण—निवेदन (बृभा २६३)।

आउट्टणा—आराधना, प्रसन्न करना (निचू २ पृ १०६)।

आउट्टि—असंयम (व्यभा १ टी प २४)।

आउट्टित—आराधित—'आउट्टिता इट्ठदाणं देहिति' (निचू २ पृ १०६)।

आउट्टिया—जानबूझकर—'आउट्टिया णाम आभोगो—जानान इत्यर्थः' (निचू ३ पृ ३१७)।

आउडिज्जमाण—१ आसंबध्यमान। २ परस्पर आहन्यमान (भटी प २१६)। ३ पीटे जाते हुए (सू २।२।४०)।

आउर—संग्राम (दे १।६५)।

आउल—अरण्य (दे १।६२)।

आउलि—वृक्ष-विशेष (राजटी पृ ८६; दे ५।५)।

आउस—१ क्षुरकर्म (नंदीटि पृ १३८)। २ कूर्च, दाढी (दे १।६५)।

आऊडिअ—जुए में की जाने वाली प्रतिज्ञा (दे १।६८)।

आऊर—१ अत्यधिक। २ उष्ण, गरम (दे १।७६)।

आऊसिय—प्रविष्ट, संकुचित (ज्ञा १।८।७२)।

आएस—अतिथि, पाहुना (व्य ६।१)।

आओडण—मजबूत करना, दृढ करना (से ६।६)।

आओडिम—दबाकर या कूटकर बिठाना, जैसे किसी धातु आदि में मूर्ति या अक्षर उकेरना,—'आओडिमं जहा रूवओ बिंबेण बिंबेओ ओवीलिज्जति' (दअचू पृ ३६)।

आओस—सन्ध्या—'आओसे संगारो अमुइ वेलाए निग्गए ठाणं' (ओभा ६१)।

आंबिली—इमली (व्यभा ६ टी प ८)।

आकर—१ भाजन-विशेष—'आकरो नाम गृहस्थ-सम्बन्धि सक्तुभृत-स्थाल्यादिभाजनम्' (आवटि प ६६)। २ भीलों की बस्ती। ३ भीलों का कोट्ट, दुर्ग—'आकरो नाम भिल्लपल्ली भिल्लकोट्टं वा' (बृटी पृ ११०४)।

आगत्ति—कूपतुला—कूप से पानी खींचने का साधन (दे १।६३)।

आगर—१ भीलों की बस्ती। २ भीलों का गांव या दुर्ग (बृभा ४०३५)।

आगल—आगामी काल में होनेवाला—'आगलफलाणि वि मग्गइ त्ति' (सूचू १ पृ ११८)।

आगल्ल—ग्लान—'से कम्मण तेण एस आगल्लो' (बृभा ५३२१)।

आघतण—वध-स्थान (आवहाटी २ पृ १६६)।

आघयण—वध-स्थान—'तत्थ णं महं एगं आघयणं पासंति' (ज्ञा १।६।२५)।

आघवण—कथन (अंत ३।८६)।

आघविय—गुरु के पास ग्रहण करना—'आघवियं ति प्राकृतशैल्या छांदसत्वाच्च गुरोः सकाशादागृहीतम्'। (अनुद्वाहाटी पृ १५)।

आचमणिका—भाण्ड-विशेष (अंवि पृ २५५)।

आडंबर—पाणजातीय लोगों का यक्ष-विशेष (व्यभा ७ टी प ५५)।

आडा—पक्षिणी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

आडाडा—बलात्कार (दे १।६४)।

आडुआलि—मिश्रण (दे १।६६)।

आडुआलित्त—मिश्रित (आवहाटी १ पृ २२८)।

आडुताल—मिश्रित करना, ठंडा करने के लिए हिलाना (दअचू पृ २८; दे १।६६)।

आडोलिया—१ खिलौना-विशेष (ज्ञा १।१८।८)। २ रुद्ध, रोका हुआ (?) (टी प २४४)।

आडोविअ—कुपित (दे १।७०)।

आढत्त—१ आरब्ध (उशाटी प २२३)। २ आक्रान्त।

आढिअ—१ अभीष्ट। २ माननीय। ३ अप्रमत्त। ४ गाढ, सघन (दे १।७४)।

आणंदवड—आनन्दपट—प्रथम बार रजस्वला वधू के रक्त से रंजित वस्त्र। विवाह की सुहागरात्रि में पति अपनी नवोढा पत्नी के कुंवारेपन का अपहरण करता है। उस समय योनिद्वार से रुधिर निकलता है। उस रुधिर से रंगा हुआ वस्त्र अन्यान्य बंधुजनों को आनंदित करता है, इसलिए इस पट का नाम 'आणंदवड' है (दे १।७२)। देखें—वहूपोत्ति।

आणक्खिऊण—परीक्षा करके (आवहाटी १ पृ १६४)।

आणाइ—शकुनिका पक्षी, चील (दे १।६४)।

आणामा—१ एक प्रकार की प्रव्रज्या। २ वैनयिकवादियों का एक भेद (सूचू १ पृ २०७)।

आणावचरणिग—जलचर प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

आणिअ—१ अभीष्ट। २ माननीय। ३ अप्रमत्त। ४ गाढ, सघन (दे १।७४)।

आणिक्क—१ तिर्यक् मैथुन (दे १।६१)। २ तिरश्चा—'आणिक्क तिर्यगर्थे देशी' (से ६।८६ टी)।

आणिमल—हाथी का मल—'दिट्ठोऽणलगिरिस्स (गंधहत्थिणो) आणिमलो' (निचू ३ पृ १४५)।

आणुअ—१ मुख। २ आकृति (दे १।६२)।

आणूव—श्वपच, डोम (दे १।६४)।

आतिण्ण—पूजित—'आतिण्णं ति वा पूजितं ति वा एगट्ठा' (दजिचू पृ २०४)।

आदंचण—शुद्धि के साधन—गोमूत्र, गोबर, खारी मिट्टी आदि (व्यभा ३ टी प १३)।

आदण्ण—आकुल (दअचू पृ २५)।

आदिल्ल—आदि, प्रथम (पंक १२१)।

आदुयाल—मथित, विलोडित (आवचू १ पृ १२३)।

आद्दहण—श्मशान—'तत्त्वविगतं शरीरं आद्दहणं परेहिं णिज्जू' (सूचू २ पृ ३१६)।

आधारिका—तापसों का चर्ममय 'थोकनउ' जो कांख में धारण किया जाता है (नंदीटि पृ १०१)।

आपुरायण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

आफकी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

आफर—द्यूत, जुआ (दे १।६३)।

आभट्ठ—विज्ञप्त, संभाषित (उशाटी प १७३)।

आभोग—उपकरण—'एगाभोग पडिग्गह केई सव्वाणि न य पुरओ', आभोगः उपकरणम्' (ओनि ३६, टी प ३३)।

आभोगिणी—मानसिक निर्णय कराने वाली विद्या-विशेष (बृभा ४६३३)।

आमंड—आंवला (आवहाटी १ पृ २६१)।

आमंडण—भाण्ड, पात्र (दे १।६८)।

आमंथिय (ओमंथिय ?)—औंधा किया हुआ (कु पृ २७)।

आमडाग—१ कच्चे पत्ते। २ अर्द्धपक्व या अपक्व अरणिक-तंदुलक (आटी प ३४८)।

आमलक—बहुबीजक वनस्पति-विशेष—'नवरमिहामलकादयो न लोकप्रसिद्धाः प्रतिपत्तव्याः, तेषामेकास्थिकत्वात्, किन्तु देशविशेषप्रसिद्धा बहुबीजका एव केचन' (प्रज्ञाटी प ३१)।

आमलय—१ नूपुर रखने की पेटी। २ सज्जागृह (दे १।६७)।

आमलिता—पूपिका (?) (आचू पृ ३४२)।

आमली—छोटे आंवलों का वृक्ष (अंवि पृ ७०)।

आमिल—समस्त प्रकार के रोम, केश—'आमिलं सव्वरोमजाति' (दनि १५८, अचू पृ १४१)।

आमेल—केशों का एक प्रकार का जूडा, बालों को बांधने की एक पद्धति (दे १।६२)।

आमेलअ—आमोडक, बालों को बांधने का पुष्प-निर्मित बंध-विशेष (उशाटी प १४३)।

आमेलिअ—आपीड, पुष्पमाला (से ६।२१)।

आमोअ—हर्ष (दे १।६४)।

आमोड—केशों का एक प्रकार का जूडा, बालों को बांधने की एक पद्धति (दे १।६२)।

आमोरअ—विशेषज्ञ, दक्ष (दे १।६६)।

आमोसल—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

आय—१ कुहन वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४७)। २ वनस्पति-विशेष से बना वस्त्र—'आयं णाम तोसलिविसए सीयतलाए अयाणं खुरेसु सेवालतरिया लग्गंति, तत्थ वत्था कीरंति' (निचू २ पृ ३९९)। ३ देश-विशेष की अजा-बकरी के सूक्ष्म रोम से निर्मित वस्त्र (आटी प ३९३)।

आयंचण—गोमूत्र, गोबर, मेंगनी तथा खारी मिट्टी आदि (निचू ४ पृ ३५८)।

आयंचणिया—कुंभकार का वह पात्र, जिसमें वह घड़ा आदि बनाते समय मिट्टी का पानी रखता है (भटी पृ १२५७)।

आयंस—बैल आदि के गले का आभूषण—'आदर्शस्तु वृषभादिग्रीवाभरणं' (अनुद्वामटी प ४३)।

आयड्ढि—विस्तार (दे १।६४)।

आयल्ल—रोग (पा ८२)।

आयल्लय—बेचैन करने वाला, दर्दनाक—'आयल्लयवुत्तंतो जइ वि तए साहिओ' (कु पृ १८१)।

आयाबल—बाल-आतप, प्रातःकालीन सूर्य का आतप (दे १।७०)।

आयाम—१ बल। २ दीर्घ (दे १।६४)।

आयावल—सुबह की धूप (दे १।७०)।

आयावलय—सुबह की धूप (पा ६०९)।

आयासतल—प्रासाद का पिछला भाग (दे १।७२)।

आयासलव—पक्षिगृह, नीड (दे १।७२)।

आयुस—क्षुरकर्म, हजामत—'ण्हाविता पुच्छिता—केण आउसं कारितं ?' (नंदीटि पृ १३९)।

आयोइल्लाग—कैदी (दशचू प ३९)।

आरंवर—१ जनसंकुल। २ संकीर्ण (दे १।७८)।

आरंभिअ—मालाकार, माली (दे १।७१)।

आरकुड—धातु-विशेष, पीतल (अंवि पृ १६२)।

आरडिअ—१ विलाप, क्रन्दन। २ सचित्र (दे १।७५ वृ)।

आरण—अधर, होठ (दे १।७६)।

आरणाल—१ कमल (दे १।६७)। २ कांजी (वृ)।

आरद्ध—१ प्रवृद्ध। २ उत्सुक। ३ घर में आया हुआ (दे १।७५)।

आरनाल—१ कांजी—'कंजियं देसीभासाए आरनालं भण्णति' (निचू १ पृ ७४)। २ कमल (दे १।६७)।

आरबी—देश-विशेष की दासी, अरब देश की दासी (ज्ञा १।१८२)।

आराइअ—१ स्वीकृत। २ प्राप्त (दे १।७०)।

आराडि—क्रन्दन (आवचू २ पृ १६५)।

आराडी—१ विलाप। २ चित्रों से मंडित (दे १।७५)।

आरिग—आरी, शस्त्र-विशेष (पंक २०२४)।

आरिल्ल—तत्काल उत्पन्न (दे १।६३)।

आरेइअ—१ मुकुलित। २ मुक्त। ३ भ्रान्त। ४ रोमाञ्चित, पुलकित (दे १।७७)।

आरोग्गिअ—भक्षित, खाया हुआ (दे १।६६)।

आरोट्ट—१ 'अरोडा' जाति-विशेष। २ छात्रजाति का संबोधन (कु पृ १५१)।

आरोस—म्लेच्छ जाति-विशेष (प्र १।२०)।

आरोह—स्तन (दे १।६३)।

आल—१ व्यर्थ, निरर्थक—'मए आलो अब्भुवगओ, किं सक्का इयाणिं निव्वहिउं ?' (बृटी पृ ५६)। २ कलंक, दोषारोपण (प्रसाटी प १४५)। ३ छोटा प्रवाह। ४ कोमल, मृदु (दे १।७३)।

आलइअ—पहना हुआ, आविद्ध—'आलइअमालमउडो' (आवहाटी १ पृ १२३)। देखें—लइअ।

आलंकिअ—लंगड़ा किया हुआ (दे १।६८)।

आलंब—भूमिछत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा में उत्पन्न होती है (दे १।६४)।

आलक—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २३७)।

आलजाल—ऊलजलूल, निरर्थक—'आलजालं अणेगविहाइं सदेसकहं तेसिं दूरं' (निचू ३ पृ ३५५)।

आलत्थ—मयूर (दे १।६५)।

आलप्पाल—१ आल-जंजाल—'एयं आलप्पालं अव्वो दूरं विसंवयइ' (उसुटी प २१)। २ दुराचार, कलंक—'आलप्पालं आढत्तं' (कु पृ ४७)।

आलयण—शय्यागृह (दे १।६६)।

आलास—वृश्चिक, बिच्छू (दे १।६१)।

आलि—वनस्पति-विशेष (जंबूटी प ४५)।

आलिंगिणी—१ जानु, कूर्पर आदि के नीचे रखने का तकिया (बृभा ३८२४)। २ रूई का बड़ा बिछौना (व्यभा १० टी प ७१)।

आलिसंद—धान्य-विशेष (प्रज्ञा १।४५।१)।
आलिसंदग—धान्य-विशेष, चवला (भ ६।१३०)।
आलीघरय—वनस्पति-विशेष (ज्ञा १।६।२०)।
आलील—निकट भविष्य में होने वाला भय (दे १।६५)।
आलीवण—प्रदीप्त अग्नि (दे १।७१)। पलेवणं (गुज)।
आलु—आलू, कन्द-विशेष (भ २३।२)।
आलुका—कुण्डिका, छोटा घड़ा (अनुटी पृ ५)।
आलुगा—छोटा घड़ा (सूचू १ पृ ११७)।
आलुय—आलू, कंद-विशेष (भ २३।१)।
आलुया—कुंडिका (अंतटी पृ ५)।
आवंग—अपामार्ग का वृक्ष (दे १।६२)।
आवट्टिआ—१ नववधू। २ परतन्त्र स्त्री (दे १।७७)।
आवडिअ—१ संबद्ध। २ सार (दे १।७८)।
आवरेइअ—कारिका, मद्य परोसने का पात्र (दे १।७१)।
आवलिका—कंठ का आभूषण—'हार-अद्धहार-आवलिका' (अंवि पृ १६२)।
आवल्ल—बलीवर्द, बैल (उशाटी प १६२)।
आवल्लक—१ नौका चलाने का एक साधन। २ वलयबाहा—नौका का लंबा काष्ठ जिस पर ध्वजा बांधी जाती है—'दीर्घकाष्ठलक्षणबाहुषु आवल्लकेष्विति सम्भाव्यते' (ज्ञाटी प १४३)।
आवाडा—चिलात, एक अनार्य जाति—'आवाडा नाम चिलाता परिवसंति' (आवचू १ पृ १६४)।
आवाल—जल के निकट का प्रदेश (दे १।७० वृ)।
आवालय—जल के निकट का प्रदेश (दे १।७०)।
आवाह—१ वरपक्षसंबंधी भोज (व्यभा ६ टी प ८)। २ नव विवाहित वर-वधू को लाना—'आवाहः अभिनवपरणीतस्य वधूवरस्यानयनम्' (प्रटी प १३६)।
आविं—१ प्रसव-पीड़ा। २ नित्य। ३ दृष्ट, देखा हुआ (दे १।७३)।
आविअ—१ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष। २ मथित (दे १।७६)। ३ पिरोया हुआ (पा ६५५)।
आविअज्जा—१ नववधू। २ पराधीन स्त्री (दे १।७७)।
आविद्ध—प्रेरित (दे १।६३)।

आवेल्लक—नौका चलाने का साधन, डांड (ज्ञाटी प १४३)।
आवेल्लय—यानपात्र चलाने का साधन—'चालियाइं आवेल्लयाइं' (कु पृ ६७)।
आसंग—शयनकक्ष, वासगृह (दे १।६६)।
आसंघ—१ अध्यवसाय, परिणाम (से १।२५)। २ श्रद्धा। ३ आशंसा।
आसंघा—१ इच्छा (दे १।६३)। २ आस्था (वृ)। ३ आसक्ति।
आसंघिअ—१ अध्यवसित। २ अवधारित (से १०।६६)। ३ संभावित।
आसक्खअ—पक्षि-विशेष (दे १।६७)।
आसय—निकट (दे १।६५)।
आस'मिठ'—अश्व-प्रशिक्षक (नि ६।२५)।
आसरिअ—सम्मुख आया हुआ (दे १।६६)।
आसल—स्वादिष्ट (जीवटी प ३५१)।
आसवण—शयनकक्ष, वासगृह (दे १।६६)।
आसातिका—कृमि-विशेष (अंवि पृ २२६)।
आसालिका—द्वीन्द्रिय जन्तु (अंवि पृ २३७)।
आसिअअ—लोहमय, लोह-निर्मित (दे १।६७)।
आसित्तिया—खाद्य विशेष—'विसाहाहिं आसित्तियाओ भोच्चा कज्जं साधेति' (सूर्य १०।१२०)।
आसिय—जाना, निकलना—'आसियं ति णिग्गच्छति' (निचू २ पृ २७६)।
आसियग—लोह निर्मित शस्त्र-विशेष (सूचू १ पृ ११६)।
आसियावण—अपहरण—'तुच्छलोभेण य आसियावणादी भवे दोसा' (निभा २४५२)।
आसियावित—अपहृत (निचू ३ पृ २१)।
आसीवअ—दरजी, वस्त्र सीने वाला (दे १।६६)।
आसीसा—आशीर्वाद (प्रा ३।१७४)।
आसूणिय—श्लाघा, प्रशंसा—'आसूणिकं णाम श्लाघा, येन परैः स्तूयमानः सुज्जति' (सूचू १ पृ १७८)।
आसूय—औपयाचितक, मनौती (पिनि ४०५)।
आसेक्क—नपुंसक-विशेष (अंवि पृ २२४)।
आहच्च—१ आकर, उपस्थित होकर—'संति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंतिय' (आ १।१६४)। २ कदाचिद् (प्रज्ञा १७।२)।

३ अत्यधिक (दे १।६२)। ४ शीघ्र। ५ व्यवस्था करके। ६ छीनकर। ७ अन्यथा। ८ निष्कारण।

आहट्ट—प्रहेलिका, पहेलियां—'तेसु न विम्हयइ सयं, आहट्ट-कुहेडएहिं च' (वृभा १३०१)—'आहट्ट त्ति प्रहेलिका (प्रसाटी प १८०)।

आहरणा—खरोंटे, घोरण—'आहरणा-घोरयति घोरणं करोति महता शब्देन' (ओटी प ५८)।

आहाडक—बिलाशयी प्राणी (अंवि पृ २२९)।

आहाडोय—बार-बार आना-जाना (आवटि प २४)।

आहित्थ—१ आकुल—'आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च' (जीवटी प १९४; दे १।७६)। २ कुपित। ३ चलित (दे १।७६)।

आहिरिक्क—प्रतीकार (दश्रुचू प ४३)।

आहु—उल्लू (दे १।६१)।

आहुंदुर—बालक—'आहुंदुरा करि-हरीण' (दे १।६६)।

आहुंदुरु—बालक (दे १।६६ वृ)।

आहुड—१ अनुराग की आवाज, सीत्कार—'रति में 'सी' 'सी' की ध्वनि। २ बेचने योग्य वस्तु (दे १।७४)।

आहुडिअ—निपातित, गिराया हुआ (दे ६९)।

आहेण—१ विवाह के बाद वधू-प्रवेश के समय किया जाने वाला भोज। २ अन्य घरों से लाई जाने वाली भोजन-सामग्री। ३ जो भोज्य-पदार्थ वधू के घर से वर के घर में ले जाया जाता है, वह। ४ वरपक्ष और वधूपक्ष का पारस्परिक लेन-देन—'जमन्नगिहातो आणिज्जति तं आहेण, जं बहूगिहातो वरगिहं णिज्जति तं आहेणं, अहवा वरवहूण जं आभव्वं परोप्परं णिज्जति तं सव्वं आहेणकं' (निचू ३ पृ २२२-२३)।

आहेणक—देखें—आहेण (निचू ३ पृ २२३)।

आहोंडिय—संप्रधूमित, धूप-वासित (आचू पृ ३६३)।

इ

इंखिणि—कर्ण-पिशाचिका देवी—'विज्जाभिमंतिया घंटिया कण्णमूले

चालिज्जति, तत्थ देवता काधिति, कहेंतस्स पसिणापसिणं भवति, स एव इंखिणि भण्णति' (निचू ३ पृ ३८३)।

इंखिणिया—१ अवहेलना—'अदु इंखिणिया उ पाविया' (सू १।२।२४)। २ घुघरु, घंटिका—इंखिणियाओ—घंटियाओ' (आवचू १ पृ १५७)।

इंखिणी—१ खिसणा, निन्दा—'अहऽसेयकरी अण्णेसि इंखिणी' (सू १।२।२३) —'इंखिणी णाम खिसणा निन्दणा हीलणा' (सूचू १ पृ ५६)। २ किंकिणी, छोटी घंटिका (आवदी प ६०)।

इंगाली—इक्षुखण्ड (दे १।७६)।

इंघिय—घ्रात, सूंघा हुआ (दे १।८०)।

इंचक—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)—'इंचका कुडुकालक सित्थमच्छका....'

इंदगाइ—वे कीट जो युक्त होकर एक के ऊपर एक चढ़कर घूमते हैं (दे १।८१)।

इंदग्गि—हिम, बर्फ (दे १।८०)।

इंदग्गिधूम—हिम, बर्फ (दे १।८०)।

इंददुलअ—'इन्द्रमह' उत्सव की संपन्नता पर विधिपूर्वक 'इन्द्रध्वज' को हटाना (दे १।८२)

इंददुलय—'इन्द्रमह' उत्सव की संपन्नता पर विधिपूर्वक 'इन्द्रध्वज' को हटाना (दे १।८२)।

इंदमह—१ कार्तिकेय। २ कुमारावस्था (दे १।८१)।

इंदमहकामुय—कुत्ता (दे १।८२)।

इंदिआलि—भूमीकर्म की विद्या का अभीष्ट शब्द, मंत्र-विशेष का शब्द—'इमा भूमीकम्मस्स विज्जा—इंदिआली इंदिआलि माहिंदे मारुदि स्वाहा' (अंवि पृ ८)।

इंदिआली—भूमिकर्म की विद्या का अभीष्ट शब्द, मंत्र-विशेष का शब्द (अंवि पृ ८)।

इंदिंदिर—भ्रमर (दे १।७६)—'कैश्चित् इंदिंदिर शब्दोऽपि देश्य उक्तः'।

इंदोवत्त—इन्द्रगोपक, वर्षाऋतु में होने वाला लाल या सफेद रंग का कीट-विशेष (दे १।८१)।

इक—प्रवेश—'इकमप्पए पवेसणमेयं' (विभा ३४८३)—'इकशब्दो देशीवचनः क्वापि प्रवेशार्थे वर्तते' (टी पृ ३४३)।

इक्कड—तृण-विशेष—'वणस्सतिभेदो इक्कडा लाडाणं पसिद्धा' (निचू २ पृ ४८१)।

इक्कण—चोर (दे १।८०)।

इक्कलिया—अकेली (उसुटी प १४५)।

इक्कल्लय—अकेला (उसुटी प ११२)।

इक्कास—१ रस-विशेष (अंवि पृ १३४)। २ भोज्य (अंवि पृ १०१)। ३ गुग्गुल वृक्ष का गोंद (अंवि पृ २३२)।

इक्कुस—नीलोत्पल (दे १।७६)।

इग—अवयव, प्रदेश—'इगमवि देशीपदं क्वापि प्रदेशार्थे वर्तते' (आवहाटी १ पृ ३१६)।

इग्ग—भयभीत (दे १।७६)।

इग्घिअ—भर्त्सित (दे १।८०)।

इज्जा—१ मां। २ देवी। ३ देवपूजा—'इज्जत्ति वज्जा माया मज्जा भणिया देवपूया वा इज्जा' (अनुद्वाचू पृ १३); 'देशीभाषया इज्येति माता' (अनुद्वामटी प २६)।

इट्टग—खाद्य-विशेष, सेवई (पिनि ४६१)।

इट्टगा—खाद्य-विशेष, सेवई (जीभा १३६७)।

इट्टाल—ईंट (द ५।६५)।

इड्ढकार—वर्धकी, बढई (अंवि पृ १६१)।

इड्ढर—१ धान्य रखने का कोठा (अनुद्वा ३७५)। २ गाड़ी का एक अवयव (ओटी पृ ३७४)। ३ ढक्कन (भटी प ३१३)।

इड्ढरक—बड़ी पेटी—'इड्ढरकं महत् पिटकं येन समस्तापि रसवती स्थभ्यते' (राजटी पृ ३२५)।

इड्ढरग—ढक्कन—'पईवं इड्ढरयं अंतो अंतो ओभासेइ....., नो चेव इड्ढरगस्स बाहिं' (भ ७।१५६)।

इड्ढरय—ढक्कन—'तं पईवं इड्ढरएणं पीहेज्जा' (भ ७।१५६)।

इड्ढरिका—१ खाद्यविशेष, इडली—'रात्रिपरिवसनेन सम्पन्न इड्ढरिकादिः, यतस्ताः पर्युषित-कलनीकृताः अम्लरसा भवन्ति' (स्थाटी प २१३)। २ एक प्रकार की मिठाई (प्रसाटी प ५१)। इड्डलिगे—'चावल का रवा और उड़द से निष्पन्न खाद्य-विशेष (कन्नड़)।

इड्ढिर—गाड़ी का एक अवयव (ओनि ४७८)।

इड्ढसिय—याचक-विशेष (भटी पृ ८८४)।

इणं—यह (दे १।७९ वृ)।

इण्हि—अब (पिनि ६३४; दे १।७९ वृ)।

इणमो—यह (दे १।७९ वृ)।

इतिपिंडि—भोज्य-विशेष—'सत्तुपिंडि.....तप्पणपिंडि त्ति इतिपिंडि त्ति' (अंवि पृ ७१)।

इत्ताहे—इस समय (व्यभा ४।३ टी प १९)।

इत्तोप्पं—इतः प्रभृति, यहां से लेकर (पा ४४८)।

इत्थीदोस—व्यभिचारिणी—'इत्थीदोसो णाम व्यभिचारिणी' (सूचू १ पृ १०८)।

इदूर—सूत आदि से बुना हुआ धान्य रखने का साधन-विशेष—सुम्बादिव्यूतं ढञ्चनकादि तदिदूरं' (अनुद्वामटी प १३९)।

इद्दंड—भ्रमर (दे १।७९)।

इद्ध—चित्त—'इद्धं चित्तं भण्णति' (जीभा २५२६)।

इब्भ—वणिक्, व्यापारी (दे १।७९)।

इय—१ इस प्रकार (बृभा २१५२)। २ प्रवेश।

इर—किल—संभावना, निश्चय आदि अर्थों का सूचक अव्यय (प्रा २।१८६)।

इरमंदिर—करभ, ऊंट (दे १।८१)।

इरहा—अथवा—'जइ रायवसेणं अन्नेणं समं वसेज्जा। इरहा बंभचारिणी' (उसुटी प ३०)।

इराव—हाथी (दे १।८०)।

इरिआ—कुटी, झोंपड़ी (दे १।८०)।

इरिकाक—पुष्प-विशेष—'तधा चंपगपुप्फं ति इरिकाकं ति वा पुणो' (अंवि पृ ६३)।

इरिण—१ स्वर्ण (दे १।७९)। २ सुन्दर—'रमणीयेसु इरिणं वा' (अंवि पृ १३४)।

इरिमंदिर—लक्ष्मी-मंदिर—'इरिमंदिरि पत्तहारतो गततो मज्झ कंतो वणिजारतो' (दअचू पृ २८)।

इलअ—छुरिका—'इलएण छिहलिं छिदित्ता भणति' (निचू १ पृ २१)।

इलिका—क्षुद्र जंतु, इल्ली (अंवि पृ २२९)।

इलिया—क्षुद्र जन्तु (बृभा १२०)।

इल्ल—१ दरिद्र । २ कोमल । ३ प्रतीहार, द्वारपाल । ४ लवित्र । ५ कृष्णवर्ण वाला (दे १।८२) ।

इल्लि—१ व्याघ्र । २ सिंह । ३ छाता (दे १।८३) । ४ व्याघ्र-चर्म से बना प्रावरण (अंवि पृ ७१) ।

इल्लीर—१ गृहद्वार । २ वृषी, ऋषियों का आसन । ३ वर्षा से बचने का साधन (दे १।८३) ।

इसिय—तृणमय शलाका (सू २।१।१७) ।

इहरा—अन्यथा (उशाटी प १६०) ।

ई

ईय—इस प्रकार (बृभा २१५३) ।

ईस—कीलक (दे १।८४) ।

ईसअ—'रोझ' नामक मृग की एक जाति (दे १।८४) ।

ईसर—कामदेव (दे १।८४) ।

ईसिअ—१ भील के सिर पर बांधा जाने वाला पत्रपुट, पत्तों का वेष्टन । २ वशीकृत (दे १।८४) ।

ईसिणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२) ।

ईसी—भूमि—'ईसिं पाडेइ त्ति भूम्यां पातयति' (भटी पृ १२६४) ।

उ

उअ—१ देखो—'उअ निच्चल-निप्फंदा भिसिणीपत्तंमि रेहइ बलाआ ।
निम्मल-मरगय-भायण-परिट्ठिआ संखसुत्तिव्व ।।' (प्रा २।२११) ।
२ सरल, ऋजु—'उअउण्णमदेहलिमुल्लंघिअ' (दे १।८८ वृ) ।

उअअ—ऋजु, सरल (दे १।८८) ।

उअक्किअ—पुरस्कृत (दे १।१०७) ।

उअचित्त—अपगत (दे १।१०८) ।

उअचिय—परिकर्मित (औपटी पृ ३२)।

उअट्टी—नीवी, स्त्री का कटिवस्त्र या कटिवस्त्र के दी जाने वाली रस्सी की गांठ, नाडा (नारा) (पा ४६१)।

उअत्त—निष्क्रांत, अतिक्रांत—'जाहे जलं वेलाए उअत्तं भवति' (निचू ३ पृ १४०)।

उअपोत—आकीर्ण, व्याप्त—'उअपोते देशीपदत्वाद् आकीर्णे' (वृटी पृ ८८६)।

उअरी—शाकिनी, देवी-विशेष (दे १।६८)—'उंछयवाडे मज्जारिरूवयाओ भमन्ति उअरीओ' (वृ)।

उअह—देखो—'उअह त्ति पेच्छहत्थे' (दे १।६८)।

उअहारी—दोहन करने वाली स्त्री (दे १।१०८)।

उआलि—अवतंस, शिरोभूषण (दे १।६०)।

उइंतण—उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १।१०३)।

उंगुणी—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।

उंचहिआ—चक्रधारा (दे १।१०६)।

उंछ—१ गर्ह्य, जुगुप्सनीय (सूटी १ प १०८)। २ छींपा, कपड़ों को छापने वाला (पा ७७०)।

उंछय—वस्त्र छापने का काम करने वाला (दे १।६८)।

उंजण—उत्सेचन (दजिचू पृ १५६)।

उंड—१ मुख—'देसीवयणतो उंडं—मुहं' (अनुद्वाचू पृ १३)। २ ऊंडा, गहरा (औपटी पृ ५; दे १।८५)—'खणिआ उड्डेहिं कूवया य अइउंडा' (वृ)।

उंडअ—पांव में पिण्डरूप में लग जाए उतना गहरा कीचड़ (ओभा ३३)—'उंडका—पिण्डकास्तद्रूपो यो भवति, पादयोर्यः पिण्डरूपतया लगति स पिण्डक इत्यर्थः' (टी प २६)। उंडे—मिट्टी, गोबर (कन्नड़)।

उंडग—१ स्थण्डिल (द ४।२३)। २ पिण्ड, लोथड़ा—'बालाई मंसउंडग मज्जाराई विराहेज्जा' (ओभा २४६)।

उंडणाही—अंतरिक्ष में होने वाले क्षुद्र जंतु—'अंतलिक्खेसु संताणका उंडणाही घुक्कभरधा वा वि विण्णेया' (अंवि पृ २२६)।

उंडय—मांसपिण्ड—'तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडए गिण्हावेइ' (विपा १।५।१४)।

उंडरुक्क—मुंह से वृषभ की भांति शब्द करना—'देसीवयणतो उंडं—मुहं तेण

रुक्कंति सद्दकरणं, तं च वसभढिक्किकयाइं' (अनुद्वाचू पृ १३)।

उंडल—१ मंच, मचान। २ समूह (दे १।१२६)।

उंडि—मुद्रा (व्यभा ६ टी प ३५)।

उंडिअ—मुद्रा वाला (व्यभा ६ टी प ३५)।

उंडिय—मांस-पिण्ड—'तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडियाओ गिण्हावेइ' (विपा १।५।१५)।

उंडिया—मुद्रा-विशेष, पत्र पर लगाई जाने वाली मुहर (बृभा १८६) —उंडिया लेहस्स मुद्दा इति चूर्णौ' (टी पृ ६१)।

उंडी—पिंड, गोलाकार वस्तु—'तत्थ णं एगा वणमयूरी दो पुट्ठे परियागए पिट्टुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए पसवइ' (ज्ञा १।३।५)।

उंडुय—स्थान—'सपिंडपायमागम्म उंडुयं पडिलेहिया' (द ५।१।८७)।

उंडेरग—एक प्रकार का धान्य (आवचू २ पृ ३१७)।

उंडेरय—खाद्य वस्तु, बड़ा (आवचू २ पृ १६८)।

उंढिय—संकुचित—'जह वा उंढियपादे पाअं काऊण हत्थिणो पुरिसे' (व्यभा १० टी प ७३)।

उंत—मंत्र का अभीष्ट शब्द, देव-विशेष (अंवि पृ ६)।

उंदर—चूहा (उशाटी प १६६)।

उंदु—मुख—'देशीवचनं उन्दु—मुखं' (अनुद्वामटी प २६)।

उंदुक—स्थान—'उंदुकं इति स्थानम्' (बृटी पृ ३८०)।

उंदुय—स्थान (बृभा १२२३)।

उंदुर—१ वृक्ष पर रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२६)। २ पर्वत की कन्दरा में रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

उंदुरअ—लम्बा दिन (दे १।१०५)।

उंदुरी—चुहिया (अंवि पृ ६६)।

उंदुरुक्क—मुंह से वृषभ की भांति शब्द करना—'उंदुरुक्क त्ति देशीवचनं उन्दु—मुखं तेन रुक्कं—'वृषभादिशब्दकरणमुन्दुरुक्कं देवतादिपुरतो वृषभगर्जितादिकरणमित्यर्थः' (अनुद्वामटी प २६)।

उंदोइया—चुहिया (बृटी पृ ३६०)।

उंबभरिया—एकास्थिक वृक्ष-विशेष (भ ८।२१६।२)।

उंबर—प्रचुर (दे १।६०)।

उंबरउप्फ—नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति (दे १।११६)।

उंबा—बन्धन (दे १।८६)।

उंबी—पका हुआ गेहूं (दे १।८६)।

उंबेभरिया—एकास्थिक वृक्ष-विशेष (प्रज्ञा १।३५)।

उकरड—कूड़ा-करकट डालने का स्थान—'भाषायाम् उकुरडो इति प्रसिद्धं मलनिक्षेपणस्थानम्' (राजटी पृ २६)।

उकुरटिका—अकुरड़ी, कूड़ा डालने का स्थान (ओटी प १६२)।

उक्क—पाद-पतन, पैरों में गिरना (दे १।८५)।

उक्कंचण—१ बंधन—'वंसग कडणोक्कंचण छावण छेवण दुवार भूमी य' (बृभा ५८३)। २ माया (दश्रुचू प ४०)। ३ झूठी प्रशंसा, चापलूसी, अगुणी के गुण बताना (ज्ञाटी प ८६)। ४ घूंस, रिश्वत। ५ मूर्ख या भोले पुरुष को ठगने वाले धूर्त्त का, समीपस्थ विचक्षण व्यक्ति के भय से, कुछ समय के लिए निश्चेष्ट रहना (ज्ञाटी प २४५)। ६ मानोन्मान में कुटिलता करने वाले ठग का, अधिकारी की उपस्थिति में, कहीं यह राजा को मेरी शिकायत न कर दे, इस चिन्तन से छुप जाना (सूचू २ पृ ४६२)।

उक्कंठुलय—उत्सुक (कु पृ १३४)।

उक्कंडा—रिश्वत, लंचा (दे १।९२)।

उक्कंति—कूपतुला, कुएं से पानी खींचने का साधन (दे १।८७)।

उक्कंती—कूपतुला (दे १।८७)।

उक्कंदि—कूपतुला, कूप से पानी खींचने का साधन (दे १।८७)।

उक्कंदी—कूपतुला (दे १।८७)।

उक्कंपित—बांस की खपचियों से बांधा हुआ (दश्रुचू प ६५)।

उक्कंबिय—बांस की खपचियों से बांधा हुआ—'कडिए वा उक्कंबिए वा छन्ने वा लित्ते वा' (आचूला २।१०)।

उक्कड—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

उक्कडिअ—तोड़ा हुआ, छिन्न (पा ४९६)।

उक्कल—मकड़ी (उ ३६।१३७)।

उक्कलिय—१ त्रीन्द्रिय जन्तु, मकड़ी (प्रज्ञा १।५०)। २ उबला हुआ।

उक्कली—मकड़ी, लूता (दअचू पृ १८८)।

उक्का—कूपतुला, कुएं से पानी खींचने का साधन (दे १।८७)।

उक्कारिका—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।

उक्कारिग—अलग होने का भेद-विशेष, जैसे एरंड के बीज से छिलका अलग होता है (सूचू १ पृ १३०)।

उक्कासिअ—उत्थित, उठा हुआ (दे १।११४)।

उक्किट्ठि—निन्दा—'पाणिए निब्बुड्डो, उक्किट्ठी कया, एवं डंभएहिं लोगो खज्जइ त्ति' (आवहाटी १ पृ २७५)।

उक्कुंड—उन्मत्त (दे १।९१)।

उक्कुट्ठ—आनन्द की महाध्वनि—'उत्कृष्टिनाद—आनन्दमहाध्वनिरित्यर्थः' (प्रटी प ४६)।

उक्कुट्ठि—१ खुशी की ध्वनि (ति १३५)। २ ऊंचे स्वर से पुकारना—'उक्कुट्ठी पुक्कारो' (जीभा १७२२)। ३ निंदा—'ण य कोलाहलं करे, ण उक्कुट्ठिबोलं वा करेज्ज रायसंसारियं वा' (सूचू १ पृ १८२)।

उक्कुडनिक्कुडिया—बार बार उठ-बैठकर झांकना—'उक्कुडनिक्कुडियाहिं पलोएइ भिक्खा वेला हूया न व त्ति' (आवमटी प २८१)।

उक्कुडिक—कूड़ा-करकट डालने का स्थान (अंवि पृ २०६)।

उक्कुड्डनिउडिया—बार बार उठ-बैठकर झांकना—'उक्कुडुनिउडियाहिं पलोएति कं वेलं देसकालो भविस्सइ त्ति' (आवचू १ पृ २८९)।

उक्कुरुड—१ ईंट, काठ आदि का ढेर (बृभा २६५३)। २ अकुरडी, घूरा, कचरा डालने का स्थान (बृभा १९२५; दे १।११०)। ३ रत्नों की राशि—'उक्कुरुडो रत्नादीनामपि राशिः' (वृ)।

उक्कुरुडय—ढेर, कूड़ा डालने का स्थान (अनुद्वा ३४६)।

उक्कुरुडिक—घूरा, कूड़ा डालने का स्थान (अंवि पृ २०६)।

उक्कुरुडिया—कूड़ा डालने की जगह—'एयं तुमं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि' (विपा १।१।६५)।

उक्कुरुडी—घूरा, कचरा डालने का स्थान (दे १।११०)—'णच्चसि चडिअ उक्कुरुडि' (वृ)।

उक्कुलिणी—गृह-उपकरण, भांड-विशेष (अंवि पृ ७२)।

उक्केर—१ समूह (ओनि ७०४)। २ उपहार, भेंट (दे १।९६)।

उक्केलाविय—उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ—'राइणा उक्केलावियाइं चोल्लयाइं, निरूवियाइं समंतओ' (उसुटी प ६५)।

उक्केल्ल—उकेलना, एक-एक कर उखाडना (दजिचू पृ १२४)।

उक्कोड—१ राज्यकर (प्र ३।११)। २ रिश्वत (आचू पृ २३७)।

३ राजकुल में दातव्य द्रव्य, बेगार तथा सैनिक आदि की भोजन-व्यवस्था (निचू ४ पृ २८०)।

उक्कोडभंग—राजकुल में दातव्य की राजा द्वारा दी जाने वाली छूट, देखें—'खोडभंग' (निचू ४ पृ २८०)।

उक्कोडा—रिश्वत, लंचा (विपा १।१।४६; दे १।९२)।

उक्कोडी—प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (दे १।९४)।

उक्कोल—घाम, गरमी (दे १।८७)।

उक्कोस—अरुण रंग का पक्षी-विशेष (अंवि पृ २२५)।

उक्ख—जैन साध्वियों के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश—'परिधाण-वत्थस्स अब्भितरचूलाए उवरिकण्णो नाभिहेट्ठा उक्खो भण्णइ' (बृटी पृ ३३४)।

उक्खंड—१ संघात। २ विषमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६)।

उक्खंडिय—आक्रांत (दे १।११२)।

उक्खंद—छावनी, घेरा डालना (निचू २ पृ ४२७)।

उक्खडमड्डा—पुनः पुनः—'उक्खडमड्डा इति देशीपदमेतत् पुनः पुनः शब्दार्थश्च' (व्यभा २ टी प ४७)।

उक्खणण—खांडना, निस्तुषीकरण (दे १।११५ वृ)।

उक्खणिअ—कंडित, निस्तुषीकृत (दे १।११५)।

उक्खल—ओखली (निचू ३ पृ ३७८)।

उक्खलित—उन्मूलित, चलित (आचू पृ ३३९)।

उक्खलिय—उन्मूलित, उत्पाटित (से ६।२९)।

उक्खलिया—१ स्थाली, पात्र-विशेष (पिनि २५०) २ उलूखल, ऊखल (आवचू २ पृ ३१७)।

उक्खली—थाली, पिठर—'अलिंदक त्ति पत्ति त्ति उक्खली थालिक त्ति वा' (अंवि पृ ७२; दे १।८८)।

उक्खलुंपिय—खुजला कर—'णो गाहावइं अंगुलियाए उक्खलुंपिअ-उक्खलुंपिअ जाएज्जा'—(आचूला १।६२)

उक्खल्लय—अंगूठे को आच्छादित करने वाला जूता (आचू पृ ३५२)।

उक्खा—पिठर, स्थाली—'दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए' (आचूला १।२१)।

उक्खिण्ण—१ अवकीर्ण। २ गुप्त, आवृत। ३ पार्श्व में शिथिल, एक तरफ से ढीला (दे १।१३०)।

उक्खिन्न—व्याप्त (बृचू प १४१)।

उक्खिरण—दान, उपहार—'रहग्गतो य विविधफले खज्जगे य कवड्डगवत्थमादी य उक्खिरणे करेति' (निचू ४ पृ १३१)।

उक्खिरणग—दान, उपहार (निभा ५७५४)।

उक्खुंड—१ उल्मुक, अलात। २ समूह। ३ वस्त्र का एक भाग, अंचल (दे १।१२५)।

उक्खुडहुंचिय—उत्क्षिप्त, उछाला हुआ (दे १।४ वृ)।

उक्खुरुहुंचिय—उत्क्षिप्त, उछाला हुआ (दे १।४ वृ)।

उक्खुलंपिय—खुजला कर (आटी प ३४०)।

उक्खुलंबिय—खुजला कर (आचूला १।६२ पा)।

उक्खुलणियत्थ—जिसके वस्त्र अस्त-व्यस्त हों, वह (बृभा ४११२)।

उक्खुलि—ऊखली (अंवि पृ १६३)।

उखडुमड्डा—बार बार—'उखडुमडु त्ति वा बहुसो त्ति भूयो भूयो त्ति वा पुणो पुणो त्ति वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ ३०८)।

उखलिका—ऊखली (अंवि पृ २२१)।

उखली—उलूखल, ऊखली (आवहाटी २ पृ २४३)।

उखा—थाली (भटी प ३२६)।

उखुल—अस्तव्यस्त (बृटी पृ ११२१)।

उगारिया—क्षुद्र जन्तु, दीमक (सूचू १ पृ १४५)।

उगाल—फलक (व्यभा ४।४ टी प १०२)।

उगाली—फलक (व्यभा ४।४ टी प १०२)।

उग्गह—योनिद्वार—'उग्गह इति जोणिदुवारस्स सामइकी संज्ञा' (निचू २ पृ १८६)।

उग्गहिय—अच्छे प्रकार से ग्रहण किया हुआ (दे १।१०४)।

उग्गाल—पान की पिचकारी (पंव ३८)।

उग्गाहिय—१ गृहीत। २ उत्क्षिप्त। ३ प्रवर्तित (दे १।१३७)। ४ उच्चालित (पा ५४६)।

उग्गुंडिय—धूल से सना हुआ—'पंसुउग्गुंडियंगमंगा' (भ ७।११६)।

उग्गुतिय—उत्तेजित—'सिंगाररसुग्गुतिया मोहकुवितफुफगा' (दअचू पृ ५६)।

उग्गुलुंछिआ—हृदय-रस का उछलना—१ भावोद्रेक। २ वमन के संवेदन के कारण होने वाली उथल-पुथल (दे १।११८)।

उग्घट्टि—अवतंस, शिरोभूषण (दे १।९०)।

उग्घाडपोरिसि—प्रहर का तीन चौथाई भाग—'उद्घाटपौरुष्यां समयभाषया पादोनप्रहरे' (प्रसा ५९० टी प १६६)।

उग्घाय—१ संघात। २ विषमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६)।

उग्घुट्ट—१ पौरुष, शूरता (दे १।९९)। २ लुप्त, विनष्ट।

उच्चूलयालग—नीचा सिर और ऊपर पांव कर पानी में डुबोना (विपाटी प ७२)।

उच्च—नाभितल (दे १।८६)।

उच्चंतग—दंतराग, दांतों को रंगने की मसी—'उच्चंतगो दंतरागो मन्नइ' (प्रज्ञाटी प ३६२)।

उच्चंपिअ—१ दबाया हुआ, रौंदा हुआ—'सीसं उच्चंपिअं कबंधम्मि' (तंदु १४९)। २ दीर्घ (दे १।११६)।

उच्चड्डिय—उत्क्षिप्त, ऊपर उछाला हुआ (दे १।१०६)।

उच्चत्त—निश्चित अवधि तक स्वामी के कथनानुसार कार्य करने वाला (भृतक)—'एच्चिरकालोच्चत्ते, कायव्वं कम्म जं बेंति' (निभा ३७२०)।

उच्चत्तवरत्त—१ दोनों पार्श्व में स्थूल। २ अनियत भ्रमण (दे १।१३९)।

उच्चत्तवरत्तय—दोनों पार्श्वों को ऊंचा-नीचा करना, इधर-उधर करना (पा ६६३)।

उच्चत्थ—दृढ़, मजबूत (दे १।९७)।

उच्चप्प—आरूढ, ऊपर बैठा हुआ (दे १।१००)।

उच्चरग—कमरा, कक्ष (निचू १ पृ ६७)।

उच्चाड—विपुल (दे १।९७)।

उच्चाडिर—१ रोकनेवाला। २ अफसोस करने वाला (प्रा २।१९३)।

उच्चात—परिश्रान्त (व्यभा ६ टी प २५)।

उच्चाय—परिश्रान्त (ओनि ५१८)। २ आलिंगन, परिरम्भ।

उच्चार—विमल, स्वच्छ (दे १।९७)।

उच्चारिय—गृहीत (दे १।११४)।

उच्चिइय—आभूषण-विशेष (जीवटी प १४७)।

उच्चिंचवलय—गंदा पानी (पा १५८)।

उच्चिंडिम—मर्यादा-रहित, निर्लज्ज—'उच्चिंडिमं मुक्कमज्जायं' (पा ५११)।

उच्चुंच—दृप्त, अभिमानी (दे १।९९)।

उच्चुप्पिय—आरूढ़ (दे १।१००)।

उच्चुलउलिय—कुतूहलवश त्वरता से जाना (दे १।१२१)।

उच्चुल्ल—१ उद्विग्न। २ अधिरूढ़, चढ़ा हुआ। ३ भयभीत (दे २।१२७)।

उच्चूर—विविध प्रकार—'उच्चूरपउरलंभे' (व्यभा ४।२ टी प ८२)।

उच्चेल्लर—१ हल आदि से बिना जोती हुई भूमी। २ साथल के रोम (दे १।१३६)।

उच्चेव—प्रकट (दे १।९७)।

उच्चोल—१ विश्रान्त। २ नीवी, स्त्री के अधोवस्त्र के दोनों छोरों पर दी जाने वाली गांठ (दे १।१३१)। ३ चुल्लू, चुलुक—'पाणिए उच्चोल-एहि मारिज्जइ' (आवहाटी २ पृ १२५)।

उच्चोली—गठरी—'परिकरेण बंधह चुण्णस्स उच्चोलीओ' (सूचू १ पृ १९३ टि)।

उच्छ—आंतों का आवरण (दे १।८५)।

उच्छंगिय—पुरस्कृत (दे १।१०७)।

उच्छंट—जल्दी-जल्दी चोरी करना (दे १।१०१)।

उच्छंटअ—शीघ्र चोरी करना (पा ६७६)।

उच्छंद—छीला हुआ, तोड़ा हुआ (आचू पृ ३४४)।

उच्छंदण—मर्दन, अभ्यंगन—'मक्खणऽब्भंगण उच्छंदण उव्वट्टण' (अंवि पृ १९३)।

उच्छट्ट—चोर, डाकू (दे १।१०१)।

उच्छडिय—चुराई हुई वस्तु (दे १।११२)।

उच्छय—व्याप्त—'देवेहि य देवीहि य समंतओ उच्छयं गयणं' (आवहाटी १ पृ १२३)।

उच्छल्लिउं—एक ओर ले जाकर—'उच्छल्लिउं ति एकपार्श्वे नयित्वा' (निचू १ पृ ९८)।

उच्छल्लित्तु—एक ओर ले जाकर (निचू १ पृ ९८)।

उच्छल्लिय—१ एक ओर ले जाकर (निभा २८१) २ जिसकी छाल छील दी गई हो वह (दे १।१११)।

उच्छविय—शय्या, बिछौना (दे १।१०३)।

उच्छाह—सूत का तंतु (दे १।९२)।

उच्छिंदण—१ ब्याज पर लेना। २ उधार लेना (पिनि ३१७)।

उच्छिंपक—चोरों का एक प्रकार (प्र ३।३)।

उच्छित्त—१ विक्षिप्त। २ उत्क्षिप्त (दे १।१२४)।

उच्छिल्ल—छिद्र (दे १।९५)।

उच्छु—१ राई (उसुटी प ५९)। २ वायु, पवन (दे १।८५)।

उच्छुअ—भय से की हुई चोरी (दे १।९५)।

उच्छुअरण—ईक्षु का खेत (दे १।११७)।

उच्छुआर—संछन्न, ढका हुआ (दे १।११५)।

उच्छुआरिअ—छादित, ढका हुआ (दे १।११५ वृ)।

उच्छुंडिअ—१ बाण आदि से अत्यन्त व्यथित। २ अपहृत (दे १।१३५)।

उच्छुच्छु—दृप्त, अभिमानी (दे १।९९)।

उच्छुड्ड—आहत—'ततो उच्छुड्डं फुमति रागो लग्गति' (निचू २ पृ २२०)।

उच्छुद्ध—१ विक्षिप्त—'उच्छुद्धणयणकोसे' (अनु ३।५२)। २ रोगग्रस्त—'उच्छुद्धसरीरे वा, दुब्बलतवसोसिते व जो होज्जा' (बृभा ४५५८)। ३ परित्यक्त (बृभा ३१३२)। ४ बिखरा हुआ (ओभा २२१)।

उच्छुर—अविनश्वर (दे १।९०)।

उच्छुरण—१ ईख का खेत (दे १।११७)। २ ईख—'उच्छुरणं इक्षुरिति केचित्' (वृ)।

उच्छुल्ल—१ अनुवाद। २ विश्रान्त (दे १।१३१)।

उच्छूढ—चुराना, अपहरण करना—'सायं एक्कल्लयाइं जायाइं चोरेहिं उच्छूढाइं' (बृटी पृ १०८)।

उच्छूर—१ असमय, विलंब—'रन्धनवेलां तामुच्छूर एव करोति येन साधोरपि भक्तं भवति' (ओटी प १४८)। २ प्रचुर (निचू ३ पृ २०६)।

उच्छूरिय—सुप्रावृत—'उच्छूरिया णडी विव दीसति कुप्पासगादीहिं' (बृभा ४१२५)।

उच्छूलग—परिखा, शत्रु-सेना का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त-विशेष (उ ९।१८ पा)।

उच्छेव—१ छत का नीचे गिरना—'परिपेलवच्छातिते णेव्वे गलणं उच्छेवो' (निचू २ पृ ३३८)। २ दीवार का छेद (व्यभा ४।४ टी प ६)।

उच्छेवण—घृत (दे १।११६)।

उच्छोलणा—प्रचुर जल (द ४।२६)—'उच्छोलणा—पभूओदगेण' (जिचू पृ १६४)।

उजल्ल—बलवान् (प्रा २।१७४)।

उज्जंगल—१ बलात्कार। २ दीर्घ (दे १।१३५)।

उज्जग्गिर—जागृति, अनिद्रा (दे १।११७)।

उज्जग्गुज्ज—स्वच्छ (दे १।११३)।

उज्जड—उजाड़, बस्ती-रहित स्थान (दे १।९६)।

उज्जणिअ—टेढ़ा, वक्र (दे १।१११)।

उज्जर—१ प्रवाह (आवहाटी २ पृ ८७)। २ मध्यगत, भीतर का। ३ निर्जरण, क्षय।

उज्जल—अत्यधिक—'वेयणा पाउब्भूया—'उज्जला विउला कक्खडा....' (अंत ३।९०)।

उज्जला—छोटी संघाटी (व्यभा ७ टी प ४५)।

उज्जल्ल—१ पसीने से लथपथ, मलिन—'मुंडा कंडू विणट्ठंगा, उज्जल्ला असमाहिया' (सू १।३।१०)। २ हठ (प्रा २।१७४)।

उज्जल्ला—१ अत्यन्त मलिन (बृभा २४५७)। २ बलात्कार (दे १।९७)।

उज्जाण—प्रतिलोमगामी नौका (निभा १८३)।

उज्जाणिय—नीचा किया हुआ (दे १।११३)।

उज्जात—(विवेक) शून्य (सूचू १ पृ ९१)।

उज्जीरिय—अपमानित, तिरस्कृत (दे १।११२)।

उज्जुग—बिल—'उज्जुगं बिलं' (दशचू प ६८)।

उज्जूरिय—१ क्षीण (दे १।११२)। २ शुष्क (वृ)।

उज्जूहिगा—जंगल की ओर जाने वाली गायों का समूह—'गोसंखडी उज्जूहिगा भन्नति' (निचू ३ पृ ३४८)।

उज्जोमिआ—रस्सी, डोरी (दे १।११५)।

उज्जोवण—१ गायों को चरने के लिए खुला छोड़ना। २ गाड़ी आदि को चलाने में प्रवृत्त होना—'उज्जोवणं ति गावीणं पसरणं सगडादीणं वा पयट्टणं' (निचू २ पृ ९)।

उज्झंखणी—१ लोकापवाद (निभा ६५८)। २ फुंहार, शीतल वायु—'दगवातो सीतभरो, सा य उज्झंखणी भण्णति' (निचू २ पृ ३३८)।

उज्झमण—पलायन (दे १।१०३)।

उज्झरिय—१ टेढ़ी नजर से देखा हुआ, कानी आंख से देखा हुआ। २ विक्षिप्त, पागल। ३ क्षिप्त, फेंका हुआ। ४ त्यक्त (दे १।१३३)।

उज्झस—उद्यम, प्रयत्न (दे १।९५)।

उज्झाइ—विरूप, मैला (बृभा ३६१३)।

उज्झाइग—विरूप (बृभा ३६६४)।

उज्झिखिअ—लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३।५५ वृ)।

उट्ट—१ जल-जंतु विशेष। २ सिंधु देश के कोमल चमड़ी वाले मत्स्य-विशेष—'उट्टा मच्छा सिंधुविसए, तेसिं चम्मयं मउयं भवति' (आचू पृ ३६४)। ३ कुत्ते की आकृति वाले जलचर प्राणियों का चर्म (निचू २ पृ ४००)। देखें—'उद्द'।

उट्टिक—बड़ा भाजन-विशेष (अंवि पृ २१४)।

उट्टिया—पात्र-विशेष (अंवि पृ २२१)।

उट्ठ—१ घड़े आदि का किनारा, कांगरा—'बोडो जस्स उट्ठा णत्थि' (आवचू १ पृ १२२)। २ कुत्ते की आकृति वाले जलचर प्राणियों का चमड़ा—'सुणगागिती जलचरा सत्ता तेसिं अजिणा उट्ठा' (निचू २ पृ ४००)।

उट्ठल—उल्लास (दे १।६१)।

उट्ठल्ल—उल्लास (दे १।६१)।

उट्ठी—१ मुट्ठी। २ अंश—'महीए एका उट्ठी छुब्भइ' (आवहाटी २ पृ ६०)।

उट्ठोणा—उठकर—'उट्ठोणा (? उट्ठित्ता) से णं इमं लोगं तिरियं करेति' (सूचू १ पृ २११)।

उडव—उरद, माष (निरटी पृ २७)।

उडिब—उरद, माष (दे १।६८)।

उड्ड—तृण का आच्छादन (दे १।८६)।

उड्डुक्किय—दांतों से काट कर दागी करना—'सव्वतउसाणि दंतेहिं उड्डुक्कियाणि' (दअचू पृ २६)। उडि—काटना, टुकड़े करना (कन्नड)।

उड्डुक्क—मुंह से वृषभ की भांति शब्द करना (अनुद्वाहाटी पृ १६)।

उड्डुक्कस—मुंह से वृषभ की भांति शब्द करना—'उड्डुक्कसं ति देशीवचनं वृषभगर्जितकरणार्थम्' (अनुद्वाहाटी पृ १६)।

उड्ढिय—१ विवाहित स्त्री का कोप। २ जूठा, उच्छिष्ट (दे १।१३७)।

उड्ड—१ दीर्घ, बड़ा (सू १।५।३४)। २ उड़ीसा देश का वासी (प्र १।२१)। ३ कुआ आदि खोदने वाला (निभा ३७२०; दे १।८५)। ओड्ड (कन्नड)। ४ तीव्र (आचू पृ १४३)। ५ कूप (आवटि प २४)।

उड्डंचक—उड्डाह, उपहास—'देशीपदमेतत्' (बृटी पृ १६०)।

उड्डंचग—१ उपहास करने वाला (निभा १०९५)। २ याचक—'उदञ्चका याचकाः' (बृटी पृ १६०)।

उड्डंचय—अवहेलना—'वंदणादिसु उड्डंचये करेज्ज' (निचू २ पृ १७२)।

उड्डंडग—वे भिक्षु जो पाणिपात्र होते हैं (आचू पृ १६९)।

उड्डंबालग—कोतवाल—'तत्थ चारियत्ति काऊण उड्डंबालगा अगडे पक्खिविज्जंति' (आवहाटी १ पृ १३६)।

उड्डंस—खटमल (उ ३६।१३७)।

उड्डण—अंगीकार—'तत्थोड्डणं अप्पणो कुणति' (व्यभा ४।३ टी प १८)। २ दीर्घ। ३ बैल (दे १।१२३)।

उड्डट्ठ—प्रविष्ट (आचू पृ १४३)।

उड्डस—खटमल (दे १।९६)।

उड्डहण—१ लोकापवाद (निचू ३ पृ ४९८)। २ चोर (दे १।१०१)।

उड्डाअ—उद्गम, उदय (दे १।९१)।

उड्डाण—१ प्रतिध्वनि। २ कुरर पक्षी। ३ विष्ठा। ४ अभिमानी। ५ मनोरथ (दे १।१२८)।

उड्डावणक—आकर्षण—'तस्स कड्ढणट्ठाए उड्डावणकं करेति' (निचू ४ पृ ७६)।

उड्डास—संताप, परिताप (दे १।९९)।

उड्डाह—निन्दा (पिनि ४१४)।

उड्डिआहरण—छुरी के अग्रभाग पर रखे हुए फूल को पांव की अंगुलियों से लेकर ऊपर उछलना (दे १।१२१)।

उड्डिय—१ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ—'अस्सेण हेसियं पट्ठी च उड्डिया' (निचू ४ पृ ३४३)। २ बेचने के लिए रखना (आवहाटी १ पृ २६४)।

उड्डिहिअ—ऊपर फेंका हुआ (पा ५१७)।

उड्डुय—डकार (आचूला ८।२९)।

उड्डुयर—जो मलमूत्र का विसर्जन करते हुए चंचलता के कारण हाथ आदि पर भी लेप लगा लेता है (बृटी पृ ५१४)।

उड्डुहिअ—छिन्न (दे १।१०५ वृ)।

उड्डोय—१ डकार (जीभा ९०८)। २ उबाक, ओकाई (निचू ३ पृ ८०)।

उड्ढ—१ दीर्घ, बड़ा (सू १।५।३४)। २ वमन (बृटी पृ १५३९)। ३ पात्र का किनारा (निचू ४ पृ १५७)।

उड्ढल—उल्लास (दे १।९१)।

उड्ढल्ल—उल्लास (दे १।९१)।

उणुयत्त—अवस्थित, ठहरा हुआ—'सावि तं पलोएंती तहेव उणुयत्तेति' (आवहाटी १ पृ १८२)।

उण्णम—समुन्नत (दे १।८८)।

उण्णलिय—१ कृश, दुर्बल। २ ऊंचा किया हुआ (दे १।१३६)।

उण्णुइअ—१ हुंकार। २ आकाश की ओर मुंह किए हुए कुत्ते की आवाज (दे १।१३२)। ३ गर्वित (व्यभा ४।२ टी प ६९)।

उण्हाली—चतुष्पद प्राणी-विशेष—'मज्जारी मुंगसी व त्ति उण्हाली अडिल त्ति वा' (अंवि पृ ६९)।

उण्हिआ—खिचड़ी (दे १।८८)।

उण्हेला—कीट-विशेष, घृतपिपीलिका—'उण्हेला णाम तेल्लपाइयाओ, तातो तिक्खेहिं तुंडेहिं अतीव दंसंति' (आवमटी प २८९)।

उण्होवयमंड—भ्रमर (दे १।१२०)।

उण्होलक—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

उण्होला क्षुद्र जन्तु-विशेष—'उण्होला-तेल्लपातियाओ। तातो तिक्खेहिं अतीव दंसंति' (आवचू १ पृ ३०४)।

उतपोत—आकीर्ण (बृभा ३१७२)।

उत्तइय—उत्तेजित (दअचू पृ ५९ पा)।

उत्तंपिअ—खिन्न, उद्विग्न (दे १।१०२)।

उत्तप्प—१ गर्वित। २ अधिक गुण वाला (दे १।१३१)।

उत्तम्मिअ—खिन्न (दे १।१०२)।

उत्तरणवरंडिआ—उडुप, नौका, जहाज आदि (दे १।१२२)—'समुद्रनद्यादौ जलतरणोपकरणं प्रवहणादि' (वृ)।

उत्तरणवरंडी—जलसंतरण के साधन नौका आदि—'भवउत्तरणवरंडि संभर सव्वण्णुमण्णहा तुज्झ। णरगोत्तिरिविडिमज्झे होही उत्थल्ल-पत्थल्ला॥' (दे १।१२२ वृ)।

उत्तरिविडि—एक के ऊपर एक रखे हुए भाजनों का ढेर (दे १।१२२ पा)।

उत्तलहअ—वृक्ष (दे १।११९)।

उत्ताणपत्त—एरण्ड से संबंधित, एरण्ड के पत्ते (दे १।१२० वृ)।

उत्ताणपत्तय—एरण्ड-संबंधी, एरण्ड के पत्ते (दे १।१२०)।

उत्ताणय—तत्पर (आवचू १)।

उत्ताल—लगातार रुदन, अंतर रहित क्रन्दन की आवाज (दे १।१०१)।

उत्तावल—१ उतावल, शीघ्रता। २ शीघ्रकारी, आकुल—'उत्तावलो सहिसत्थो' (कु पृ १८०)।

उत्ताहिय—ऊपर उछाला हुआ (दे १।१०६)।

उत्तिग—१ चींटियों का बिल (आ ८।१०६)। २ सर्पच्छत्र वनस्पति (द ८।११)। ३ छिद्र—'उत्तिगो पुण छिड्डं' (निभा ६०१८)।

उत्तिरिविडि—एक के ऊपर एक रखे हुए भाजनों का ढेर (दे १।१२२)। उतरड (गुज), उत्तरंड (मराठी)।

उत्तुइय—उत्तेजित (दनि १११ पा)।

उत्तुण—अभिमानी, गर्वयुक्त (उसुटी प २३४; दे १।९९)।

उत्तुपित—चिकना किया हुआ (प्रटी प ५९)।

उत्तुपिय—स्निग्ध, चिकना (प्र ३।१६)।

उत्तुयय—उत्तेजित (व्यभा ६ टी प ३२)।

उत्तुरिद्धि—१ अभिमानी (दे १।९९)। २ दर्प, गर्व (वृ)।

उत्तुहिअ—उत्खोटित, छिन्न, नष्ट (दे १।१०५)।

उत्तूइय—गर्व—'एवं भणितो संतो उत्तूइओ सो कहेइ सव्वं—उत्तूइओ त्ति देशीपदमेतद् गर्वे वर्तते' (व्यभा ४।२ टी प ६९)।

उत्तह—तटशून्य कूप (दे १।९४)।

उत्तेड—बिन्दु—'भंडगपासवलग्गा उत्तेडा बुब्बुया न सम्मंति' (पिनि १९)।

उत्थंघिय—उत्थापित (से ५।६०)।

उत्थग्घ—संमर्द, उपमर्द (दे १।९३)।

उत्थरिय—१ उत्थित (दे ७।९२)। २ आक्रांत (पा ५८५)। ३ निर्गत।

उत्थलिअ—१ गूढ। २ ऊंचा गया हुआ (दे १।१०७)।

उत्थल्ल—उथलना, पलटना (दअचू पृ ११५)।

उत्थल्लण—धकेलना, उछालना (प्र ३।१०)।

उत्थल्लपत्थल्लण—उथल-पुथल—'उत्थल्ल-पत्थल्लणेण भुक्तम्' (ओटी प १९२)।

उत्थल्लपत्थल्ला—दोनों पार्श्वों से परिवर्त्तन, उथल-पुथल (दे १।११२)।

उत्थल्ला—१ परिवर्त्तन (दे १।९३)। २ उद्वर्तन।

उत्थाण—अतिसार रोग (व्यभा ७ टी प ८५)।

उदअ—गढा, अवपात—'गर्त्ताविशेषेषु उदक इत्येवंरूढेषु' (प्रटी प २२)।

उदंक—जल का पात्र-विशेष जिससे जल ऊंचा छिड़का जाता है (जीवटी प १४६)।

उदकधसर—नाली, मोरी (ओटी पृ ३६५)।

उदग—अनंतकायिक वनस्पति—'तत्थ उदगं नाम अणंतवणप्फई, से भणियं च उदए अवए पणए सेवाले' (दजिचू पृ २७७)।

उदरिय—१ आजीविका के लिए इधर उधर घूमने वाले। २ पाथेय युक्त यात्री—'उदरिया णाम जहिं गता तेहिं चेव रुवगावी छोढुं समुद्दिसंति पच्छा गम्मति। गहियसंबला उदरिया' (निचू ४ पृ ११०)।

उदसी—छाछ—'तक्कं उदसी छासि त्ति एगट्ठं' (निचू १ पृ ९२)।

उदाण—वनस्पति का एक प्रकार (अंवि पृ २६६)।

उदूक्खल—मुशल—'मुशलं उक्खलं वा' (आचू पृ ३३९)।

उद्द—१ सिन्धु देश के मत्स्य-विशेष—'उद्राः सिन्धुविषये मत्स्याः'। २ मत्स्य-चर्म का बना हुआ वस्त्र-विशेष (आचूला ५।१५; टी प ३९३)। —देखें—'उट्ट'। ३ जल-मानुष। ४ ककुद, बैल के कंधे का कूबड़ (दे १।१२३)।

उद्दंसग—मत्कुण, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

उद्दद्दर—सुभिक्ष—'दुविधा दरा—धण्णदरा पोट्टदरा य, ते उद्दं जाव भरिया तं उद्दद्दरं भण्णति। पर्यायवचनेन सुभिक्षमित्यर्थः' (निचू ३ पृ ८०)।

उद्दरिअ—१ उखाड़ा हुआ (दे १।१००)। २ स्फुटित, विकसित (पा ५१३)। ३ उद्दर्पित (नंदीटि पृ १०१)। ४ युद्ध से पलायित।

उद्दा—ऊदबिलाव, जलमार्जार (सू १।७।१५)।

उद्दाइंत—शोभमान (ज्ञा १।१।३३)।

उद्दाइय—दीमक, कीट (निचू १ पृ १५५)।

उद्दाण—१ परित्यक्त (निचू २ पृ १४)। २ मृत—'उद्दाणे भोइयम्मि चेइयाइं वंदामि' (उसुटी प २)। ३ चुल्हा (दे १।८७)।

उद्दाणग—मृत—'उद्दाणगं जायं तं मए विगिंचियं' (आवहाटी २ पृ १४०)।

उद्दाणभत्तारा—पति के द्वारा परित्यक्त स्त्री—'उद्दाणभत्तारा भत्तारेण परिठविता' (निचू २ पृ १४)।

उद्दाम—१ संघात। २ विषमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६)।

उद्दाल—वृक्ष-विशेष (जीव ३।५८१)।

उद्दालक—वृक्ष-विशेष (जीवटी प १४५)।

उद्दिक—घट का एक प्रकार (अंवि पृ २५५)।

उद्दिट्ठा—अमावस्या (स्था ४।३६२)।

उद्दिसिअ—उत्प्रेक्षित (दे १।१०६)।

उद्दीढ—भक्षित, खाया हुआ (निचू ३ पृ ५८७)।

उद्दुंडुग—उपहास का पात्र (बृभा ४००२)।

उद्दूढ—१ चुराया हुआ, मुषित—'देशीवचनत्वाद् मुषितं' (बृटी पृ ८२५)। २ पराजित (अंवि पृ २५०)।

उद्देसग—जंतु-विशेष, दीमक (जीवटी प ३२)।

उद्देहि—उपदेहिका, दीमक (दे १।९३)।

उद्देहिगा—१ दीमक। २ दीमक द्वारा कृत वल्मीक की मिट्टी (पिटी प २०)।

उद्देहिया—दीमक—'उद्देहियाखइयं वा कट्ठं दुब्बलं' (आचू पृ २१२)।

उद्धइय—आभ्यंतर—'उद्धइयाहि देसीभासातो जं अब्भंतरं वुच्चति' (आचू पृ २१५)।

उद्धच्छवि—विसंवादित, विपरीत, अप्रमाणित (दे १।११४)।

उद्धच्छविअ—सज्जित (दे १।११९)।

उद्धच्छिअ—निषिद्ध (दे १।१११)।

उद्धट्ट—ऊंचा (सूचू १ पृ १०४)।

उद्धट्टक—उपहास पैदा करने वाली भाषा या आवाज (बृटी पृ १६७०)।

उद्धत्थ—विप्रलब्ध, वंचित (दे १।९६)।

उद्धरण—उच्छिष्ट, जूठा (दे १।१०६)।

उद्धवअ—उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ (दे १।१०६)।

उद्धविअ—पूजित (दे १।१०७)।

उद्धाअ—१ ऊबड़-खाबड़ प्रदेश, ऊंचा-नीचा प्रदेश। २ श्रान्त, थका हुआ। ३ संघात, समूह (दे १।१२४)।

उद्धाण—उद्वसित, उजड़ा हुआ (व्यभा ४।४ टी प ७०)।

उद्धाविय—समुद्रचारी डाकू आदि अत्यन्त क्रूर मनुष्य—'किं वा अहं सभग्गो त्ति चिंतयंतो चिय सहसा उद्धाविएहिं बद्धो' (कु पृ ६९)।

उद्धि—गाड़ी का एक अवयव (सूर्य १०।३७)। उंध (गुज)।

उद्धुमात—व्याप्त (नंदीचू पृ ६)।

उद्धुमाय—पूर्ण (पा १४२)।

उधेइ—दीमक (निचू ३ पृ १२४)। उदई (राज)।

उन्नालिअ—उन्नामित, ऊंचा किया हुआ (पा ५०८)।

उप्पघसर—नाली, मोरी (ओटी पृ ३६५ पा)।

उपासना—नापित-कर्म, हजामत—'उपासना नाम श्मश्रुकर्त्तनादिरूपं नापित-कर्म' (आवमटी प १९९)।

उप्पंक—१ कर्दम, पंक। २ ऊंचाई। ३ समूह। ४ अत्यधिक (दे १।१३०)।

उप्पर—ऊपर (जीभा १४६२)।

उप्पल—संख्या-विशेष—'चतुरशीतिरुत्पलाङ्गा-शतसहस्राणि एकमुत्पलम्' (जीवटी प ३४५)।

उप्पलंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

उप्पल्लाणित—अश्व से पलाण उतारना—'उप्पल्लाणितो आसो। विस्सामितो राया' (उसुटी प २५१)।

उप्पाडक—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

उप्पातिका—मत्स्य की एक जाति (अंवि पृ २२८)।

उप्पाय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

उप्पाहल—उत्कण्ठा (पा ८०३)।

उप्पि—ऊपर (अनु ३।९)।

उप्पिंगलिआ—करोत्संग, हाथ को गोदरूप बनाना (दे १।११८)।

उप्पिंजल—१ मैथुन। २ धूल। ३ अपकीर्ति, अपयश (दे १।१३५)।

उप्पिच्छ—१ त्वरित। २ तीव्र श्वास—'श्वासयुतं त्वरितं वा' (अनुद्वाचू पृ ४६)। ३ त्रस्त, भीत (ज्ञाटी प १६८)। ४ आकुल। ५ कुपित—'उप्पिच्छं नाम आकुलम् आहितयं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च' (जीवटी प १९४)।

उप्पित्थ—१ व्याकुल—'उप्पित्थशब्दस्त्रस्तव्याकुलवाची देशीति क्वचित्' (से ११।४०)। २ लयबद्ध श्वास (राजटी पृ १८९)। ३ कुपित। ४ विधुर (दे १।१२९)।

उप्पियण—बार-बार श्वास लेना (व्यभा ४।४ टी प ५०)।

उप्पीड—समूह, राशि (से ४।३७)।

उप्पील—१ संघात, समूह—'पसरिओ बहुलो धूमुप्पीलो' (कु पृ १०८; दे १।१२६)। २ विषमोन्नत-प्रदेश (दे १।१२६)।

उप्पुय—उत्सुक (प्रटी प ५२)।

उप्पेअ—अभ्यंग, तैल आदि से मालिस—'उप्पेअं देशीपदमेतत् अभ्यङ्गम्' (व्यभा ६ टी प १०)।

उप्पेस—त्रास (से १०।६१)।

उप्पेहड—१ उद्भट, तीव्र (दे १।११६)। २ आडंबरयुक्त (पा ६०)।

उप्फंदोल—अस्थिर (दे १।१०२)।

उप्फल्ल—दुर्जन, खल (ति ६०१)।

उप्फाल—दुर्जन (ति ६००; दे १।६०)।

उप्फिस—उफनना (बृटी)।

उप्फुंकिआ—धोबिन, कपड़ा धोने वाली (दे १।११४)।

उप्फुंडिअ—बिछाया हुआ, आस्तृत (दे १।११३)।

उप्फुण्ण—आपूर्ण, भरा हुआ (दे १।६२)।

उप्फुन्न—स्पृष्ट, छुआ हुआ (प्रसाटी प ३०४)।

उप्फुरहंसिगा—प्रज्वलित अंगीठी (सूचू १ पृ १२५)।

उप्फेणउप्फेणिय—क्रोध से उफनते हुए—'उप्फेणउप्फेणियं सीहसेणं रायं एवं वयासी' (विपा १।६।१८)।

उप्फेणओफेणीय—क्रोध से उफनते हुए (विपाटी प ८३)।

उप्फेस—१ मुकुट (स्था ५।७२)। २ त्रास, भय (दे १।६४)। ३ अपवाद, निन्दा (वृ)।

उप्फेसण—त्रास, भय (उसुटी प ५८)।

उप्फेसया—निन्दा—'असरिसजण उप्फेसया ण हु सहियव्वा कुले पसूएण' (दे १।६४ वृ)।

उप्फोअ—उद्गम, उदय (दे १।६१)।

उप्फोस—१ त्रास (निभा १४८०)। २ प्रक्षालन (निभा ४०८५)।

उप्फोसण—सिंचन, छिड़काव—'आवरिसणं पाणिएण उप्फोसणं' (निचू २ पृ १७५)।

उबेहु—अन्तःप्रविष्ट (आवचू २ पृ १६५)।

उब्बिब—१ खिन्न। २ शून्य। ३ भयभीत। ४ उद्भट, उग्र। ५ क्रांत। ६ प्रकट वेष वाला (दे १।१२७)।

उब्बिबल—कलुषित जल, मैला पानी (दे १।१११)।

उब्बुक्क—१ प्रलपित। २ संकट। ३ बलात्कार (दे १।१२८)।

उब्बुड्ड—अन्तःप्रविष्ट, गड़ी हुई—'उब्बुड्डणयणकोसे' (अनुटी प ७)।

उब्बूर—१ अधिक। २ संघात, समूह। ३ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १।१२६)।

उब्भ—१ खड़ा हुआ (निचू १ पृ ५४)। २ ऊर्ध्व (दे १।८६ वृ)।

उब्भंड—फूहड़, अस्त-व्यस्त वेशभूषा (बृभा ६१५७)।

उब्भंत—ग्लान (दे १।९५)।

उब्भग्ग—व्याप्त (दे १।९५)—'तिमिरोब्भग्गणिसाए' (वृ)।

उब्भज्जी—क्षीरपेया—'कलमोतणो उ पयसा, उक्कोसो हाणि कोद्दवुब्भज्जी' (ओभा ३०७)।

उब्भट्ठ—मांगा हुआ—'उब्भट्ठपरिन्नायं अन्नं लद्धं पओयणे घेत्थी' (पिनि २८१)।

उब्भाअ—शांत (दे १।९६)।

उब्भालण—१ धान्य को छाज आदि से साफ-सुथरा करना (दे १।१०३)। २ अपूर्व (वृ)।

उब्भालिअ—सूर्प आदि से साफ किया हुआ (पा ५३८)।

उब्भावण—परिभव (ओनि १४८)।

उब्भावणा—अपभ्राजना, तिरस्कार (उशाटी प १६९)।

उब्भाविअ—मैथुन (दे १।११७ वृ)।

उब्भासुअ—शोभा-हीन (दे १।११०)।

उब्भुआइअ—उभरा हुआ (दे १।१०५ वृ)।

उब्भुआण—उफनता हुआ, अग्नि से तप्त दूध आदि का उछलना (दे १।१०५)।

उब्भुग्ग—चल, अस्थिर (दे १।१०२)।

उब्भुत्तिअ—उद्दीपित, प्रदीपित (पा १६)।

उब्भुभंड—भांड-विशेष (अंवि पृ १९३)।

उब्भे—तुम सब (दे १।८६ वृ)।

उभज्झी—क्षीरपेया (ओटी प १९६)।

उमत्थिय—बांधकर—'सव्वोवही (एगट्ठा कज्जति भायणं उमत्थिए) एगट्ठाणे पुढो कज्जति' (निचू ३ पृ ३७४)।

उमाण—प्रवेश—'उमाणं ति प्रवेशः' (आटी प ३२६)।

उमुत्तिल्लय—१ बहु-मूत्र रोगवाला। २ मूत्राशय में सूजनवाला—'जेण वा कट्ठाइणा संचालेति तं सविसं उमुत्तिल्लयं वा खयं वा कट्ठेण हवेज्जा' (निचू २ पृ २८)।

उम्मइअ—मूढ़, मूर्ख (दे १।१०२)।

उम्मंड—१ हठ, आग्रह। २ उद्वृत्त, बचा हुआ (दे १।१२४)।

उम्मच्छ—१ असंबद्ध। २ भंगयुक्त, विकल्प से कथित। ३ क्रोध (दे १।१२५)।

उम्मच्छविअ—उद्भट, तीव्र (दे १।११६)।

उम्मच्छिअ—१ रुष्ट। २ आकुल (दे १।१३७)।

उम्मड्ड—बलात्कार (दे १।९७)।

उम्मत्त—१ धतूरा (दे १।८९)। २ एरण्ड (वृ)।

उम्मत्थ—अधोमुख, विपरीत (दे १।९३)।

उम्मर—देहली (आचू पृ ३६४; दे १।९५)।

उम्मरिअ—उत्खात (दे १।१००)।

उम्मल—जमा हुआ, स्त्यान, कठिन (दे १।९१)।

उम्मल्ल—१ नृप। २ मेघ। ३ पुष्ट, पीवर। ४ बलात्कार (दे १।१३१)।

उम्मल्ला—तृष्णा (दे १।९४)।

उम्माल—देवता को चढाई गई वस्तु, निर्माल्य (पा ३५२)।

उम्मुह—अभिमानी (दे १।९९)।

उम्हाविअ—मैथुन (दे १।११७)।

उयचित—परिकर्मित, संस्कारित (ज्ञाटी प १७)।

उयचिय—परिकर्मित (ज्ञाटी प १७)।

उयट्टिणी—जंघा—'उयट्टिणीए णीणेऊण दरिसिओ'—जंघाया निष्काश्य दर्शितः' (उशाटी प ११८)।

उयट्टी—१ कटी। २ जंघा—'जेण घेत्तुं उयट्टीए छूढो—येन गृहीत्वा कट्यां (जंघायां ?) क्षिप्तः' (उशाटी प ११८)।

उयणिसय—रहस्य-कला, जादू-टोना, मुगटनी कला (कु पृ २२)।

उयरिय—उतरकर—'मज्झे वा उयरिय पाणियं पियह' (ओटी पृ ३६२)।

उयरी—गर्भवती (कु पृ १६२)।

उयल्ल—मृत—जाहे अदिस्सो जाओ ताहे तहठिया चेव रागसंमोहियमणा उयल्ला' (आवहाटी १ पृ १८२)।

उयविय—जीत लेने पर—'उयविए प्रसाधिते अर्धभरते' (व्यभा ६ टी प ४५)।

उर—आरम्भ (दे १।८६)।

उरंउरेण—साक्षात्—'रहबलेण वा चाउरंगेणं पि उरंउरेणं गिण्हित्तए' (विपा १।३।५०) ।

उरंमुह—ओंधेमुंह—'परंमुहा पडंतु उरंमुहा पासेल्लिया (वा)' ? (आवहाटी १ पृ २८५) ।

उरच्छक—मद्य का बड़ा पात्र (अंवि पृ २५६) ।

उरणा—वेणी में गूंथा जाने वाला ऊन का आभरण (अंवि पृ ६४) ।

उरणि—जन्तु-विशेष (बृभा ५८८३) ।

उरणी—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २३७) ।

उरत्त—खण्डित, विदारित (दे १।६०) ।

उरत्थय—कवच, वर्म (पा २७४) ।

उररि—पशु, बकरा (दे १।८८) ।

उरल—१ स्थूल, बड़ा । २ असघन, विरल—'उरलं तिं विरलं न तु घनम्' (प्रज्ञाटी प २६६) ।

उराल—१ सुन्दर—'अणुस्सुओ उरालेसु जयमाणो परिव्वए' (सू १।६।३०) । २ प्रधान (स्था १०।१०३) । ३ भीषण—'भीमा भय भेरवा उराला' (उ १५।१४) । ४ विशाल, विस्तृत—'भण्णइ य तहोरालं वित्थरवंतवणस्सति पप्प । पयतीय णत्थि अण्णं एद्दहमेत्तं विसालंति ।।' (अनुद्वाहाटी पृ ८७) । ५ हरित वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४) ।

उरालक—धान्य-विशेष (अंवि पृ ६६) ।

उरालिय—औदारिक शरीर—'मंसट्ठिण्हारुबद्धं उरालियं समयपरिभासा' (अनुद्वाहाटी पृ ८७) ।

उरिणण—कपास निकालना (ओटी पृ ३७३ पा) ।

उरुणण—कपास निकालना (ओटी पृ ३७३) ।

उरुणी—गृह-उपकरण (अंवि पृ १४२) ।

उरुपुल्ल—१ अपूप, पूआ । २ धान्यों के मिश्रण से बना खाद्य, खिचड़ी आदि (दे १।१३४) ।

उरुमिल्ल—प्रेरित (दे १।१०८) ।

उरुलुंचग—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०) ।

उरुसोल्ल—प्रेरित (दे १।१०८) ।

उलइय (ओलइय ?)—लटका दिया (व्यभा १० टी प ८०) ।

उलग—हल चलाने वाला—'उलगादिभतओ भतीए घेप्पति' (दअचू प ३८) ।

उलणा—देवी-विशेष (अंवि पृ २२३)।

उलवी—पानी को सुगंधित करनेवाला एक प्रकार का घास (पा ६२८)।

उलाण—बाज पक्षी—'उलाणसिंगतससयाण जालच्छइयाए' (निचू २ पृ २८१)।

उलिअ—निकूणित आंख वाला, टेढी आंख वाला (दे १।८८)।

उलित्त—ऊंचा कुंआ, ऊंची भूमी पर स्थित कुंआ (दे १।८६)।

उलुउंडिअ—१ प्रलुठित। २ विरेचित (दे १।११६)।

उलुकसिअ—पुलकित (दे १।११५)।

उलुखंड—उल्मुक, अलात (दे १।१०७)।

उलुफुंटिअ—१ विनिपातित। २ प्रशान्त (दे १।१३८)।

उलुहंत—काक, कौआ (दे १।१०६)।

उलुहलिअ—जो कभी तृप्त नहीं होता, अतृप्त (दे १।११७)।

उल्लअण—अर्पण (से ११।५१)।

उल्लंकय—काष्ठपात्र—'उल्लंकओ कट्ठमओ पत्तो' (निभा ४११३)।

उल्लंचिय—खाली करना—'सो तस्स कए समुद्दं उल्लंचिउमाढत्तो' (आवहाटी १ पृ २७६)।

उल्लंठ—उद्धत—'उल्लंठवयणा विग्घाणि करेंति' (उसुटी प ६६)।

उल्लंडग—मिट्टी का गोला—'उल्लंडगा परिवज्झंति मृद्गोलकमित्यर्थः' (निचू ३ पृ १६०)।

उल्लंडिअ—बाहर निकाला हुआ, रिक्त किया हुआ (पा ५६२)।

उल्लग—कृश, क्षीण—'सा उल्लगसरीरा जाया' (उशाटी प ३००)।

उल्लढ—शुष्क, सूखा (औटी पृ ३५६ पा)।

उल्लण—छाछ से गीला किया हुआ ओदन, खाद्य-विशेष (पिनि ६२४)।

उल्लणिया—शरीर पोंछने का वस्त्र, तोलिया (उपा १।२६)।

उल्लत्थपल्लत्थ—असमंजस, उलट-पलट, अव्यवस्थित—'उल्लत्थपल्लत्था से आलावया दिज्जंति' (आवहाटी २ पृ ६१)।

उल्लद—उतार कर—'तत्थ बइल्ले उल्लदेत्ता उवक्खडेंति' (आवहाटी १ पृ १६४)।

उल्लरय—कौडिओं का आभूषण (दे १।११०)।

उल्ललिअ—शिथिल, ढीला (दे १।१०४)।

उल्लसिय—पुलकित (दे १।११५)।

उल्लाय—पाद-प्रहार (तंदु १६२)।

उल्लायक—कर्मजीवी (अंवि पृ ६०)।

उल्लिअ—१ खींचा हुआ, छीला हुआ—'उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओ य अणंतसो' (उ १६।६४)। २ उपागत (कु पृ १६१)।

उल्ली—काई, शैवाल—'पणओ उल्ली' (निचू २ पृ १६७)। २ दांत पर जमनेवाली पपड़ी—'उल्ली दंतेसु दुग्गंधा' (आवचू २ पृ ७२)। ३ चुल्हा, चुल्ली (दे १।८७)।

उल्लुंटिअ—चूर्णित, चूरा-चूरा किया हुआ (दे १।१०६)।

उल्लुक्क—त्रुटित, टूटा हुआ (दे १।६२)।

उल्लुग—विकृत, त्रुटित (प्रटी प २२)।

उल्लुट्ट—मिथ्या (दे १।८६)।

उल्लुरुह—छोटा शंख (दे १।१०५)।

उल्लूड—विध्वंस (व्यभा ५ टी प ७)।

उल्लूडित—विध्वंसित, नष्ट (व्यभा ५ टी प ७)।

उल्लूढ—१ आरूढ़ (दे १।१००)। २ अंकुरित (वृ)।

उल्लूरधूविता—खाद्य-पदार्थ-विशेष (अंवि पृ ७१)।

उल्लूरिया—मिठाई (उसुटी प ८६)।

उल्लूह—शुष्क, सूखा—'उल्लूहं च नलवणं हरियं जायं' (ओटी प ३५६)।

उल्लेव—हास्य, हंसी (दे १।१०२)।

उल्लेवअ—हंसी, हास्य (दे १।१०२ वृ)।

उल्लेहड—लम्पट, लुब्ध (दे १।१०४)।

उल्लोइय—खड़ी आदि से भींत को पोतना (जंबू १।३७)।

उल्लोग—थोड़ा, अल्प (बृभा १६०५)।

उल्लोच—वितान, चंदोवा (दे १।६८)।

उल्लोट्ट—अपवर्तन, मुड़ना (प्रटी प ८६)।

उल्लोपिक—भोज्य-पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।

उल्लोय—चंदोवा, वितान (बृभा ५६८१)।

उल्लोल—१ शत्रु (ति ८८५; दे १।६६)। २ जलतरंग (पा ५६)। ३ कोलाहल।

उल्लोहित—पुता हुआ—'उल्लोहितं उव्वलितं तधा उच्छाडितं ति वा' (अंवि पृ १०६)।

उल्हक—छोटा चूल्हा (पिनि ५४)।
उल्हसिअ—उद्भट, तीव्र (दे १।११६)।
उव—पक्षी-विशेष (अंवि पृ ६२)।
उवअ—हाथी को पकड़ने के लिए बनाया गया गढा (पा ६००)।
उवइक—दीमक (बृटी पृ १६६६)।
उवइग—दीमक (निचू १ पृ ६६)।
उवइय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीव १।८८)।
उवउज्ज—उपकार (दे १।१०८)।
उवएइआ—मद्य परोसने का पात्र (दे १।११८)।
उवक—गढा, खातिका (बृटी पृ २२२)।
उवकय—सज्जित (दे १।११६)।
उवकयय—सज्जित (दे १।११६ वृ)।
उवकसिअ—१ सन्निहित, पास में पड़ा हुआ। २ परिसेवित। ३ सर्जित, सृष्ट (दे १।१३८)।
उवक्खडाम—कोरडू, जो धान्य-कण पकाने पर भी नहीं पकता—'उवक्खडामं णाम जहा चणयादीण उक्खडियाण जे ण सिज्झंति ते कंकडुया, तं उवक्खडामं भण्णति' देखें—'कंकडुय' (निचू ३ पृ ४८४)।
उवग—१ योग्य—'उवगा नाम योग्याः' (सूचू १ पृ ४५)। २ गढा (निचू ४ पृ ४८)।
उवचिक—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २६७)।
उवचुल्ल—छोटा चूल्हा (निचू १ पृ ८२)।
उवचुल्लग—छोटा चूल्हा (निचू १ पृ ८२)।
उवजंगल—दीर्घ (दे १।११६)।
उवट्टिअ—अनाथ, अशरण—'उवट्टितो अणाहो असरणेत्यर्थः' (निचू १ पृ १२२)।
उवतिग—दीमक—'संचारोवतिगादी, संजमे आयाऽहि विच्चुगादीया' (बृभा ६३२२)।
उवत्थवण—अस्तमन (वेला) (निचू १ पृ ८७)।
उवदीव—द्वीपान्तर, अन्यद्वीप (दे १।१०६)।
उवयिय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीवटी प ३२)।
उवर—कक्ष, कोठरी, तलघर (निभा १७३)।

उवरिग—माल का निरीक्षण करने वाला अधिकारी—'सामि ! पेसेह उवरिगो जो भंडं निरूवेइ' (उसुटी प ६५)।

उवरिल्ल—ऊपर (पंक १४१)।

उवरिल्लअ—मजबूत वस्त्र, मोटा कपड़ा—'विरइओ उवरिल्लएण पासो, णिबद्धो य कीलए' (कु पृ ५३)।

उवरेग—व्यापाररहित—'तत्थ वरिसमेत्तं उवरेगं गओ' (उसुटी प ७६)।

उवलभत्ता—कंगन (दे १।१२०)।

उवलयभग्गा—कंगन (दे १।१२०)।

उवललय—मैथुन (दे १।११७)।

उवलुअ—लज्जायुक्त, लज्जालु (दे १।१०७)।

उवलेट्ट—सन्तुष्ट—'तीसे महिलाए कप्पासमोल्लं दिन्नं, सा य उवलेट्ठा' (उशाटी प १६२)।

उवसग्ग—मंद (दे १।११३)।

उवसेर—रति-योग्य (दे १।१०४)।

उवहत्थिय—समारचित, सज्जित (दे १।११६ वृ)।

उवहा—मच्छ (निभा ४२२३ पा)।

उवहावण—परिभव (ओटी प १३१)।

उवाई—'पोताकी' विद्या की प्रतिपक्षी विद्या (उसुटी प ७३)।

उवातिय—खाद्य-विशेष (निचू ३ पृ ५२१)।

उवारस—एक प्रकार का प्रावरण—'उवारसा कंबला खरडगपारिगादि पावारगा' (निचू २ पृ ४००)।

उवासणा—क्षौरकर्म, हजामत (बृभा २०६७)।

उविअ—१ संस्कारित, परिकर्मित (ज्ञा १।१।२४)। २ शीघ्र (दे १।८६)।

उव्वक्क—धौत, दूध में भिगोकर निकाला हुआ—'जह पुण ते चेव तिला उसिणोदगधोयखीरउव्वक्का' (व्यभा ३ टी प ११०)।

उव्वट्ट—१ नीराग, रागरहित। २ गलित (दे १।१२६ वृ)।

उव्वट्टी—नीवी, स्त्री के कटिवस्त्र की नाडी (दे १।१५१ पा)।

उव्वण्ण—उत्कण्ठित (व्यभा ७ टी प ६)।

उव्वत्त—१ रागरहित। गलित (दे १।१२६)।

उव्वर—१ कक्ष, तलघर—'पुव्वखओ जो भूघरोव्वरो' (निचू १ पृ ६७)। २ धान्य रखने का कोठा (बृभा ३२६६)। ३ घाम, ऊष्मा (दे १।८७)।

उव्वरअ—कोष्ठागार—'उव्वरओ त्ति वा कोट्ठगो त्ति वा एगट्ठं' विशेषचूर्णी' (बृटी पृ ९२६)।

उव्वरग—कोठरी—'सव्वोवगरणं उव्वरगे छुभंति, अह णत्थि उव्वरगो तो सव्वोवकरणं एगकोणे करेंति' (निचू २ पृ १७८)।

उव्वरिअ—१ अधिक। २ अनीप्सित। ३ निश्चित। ४ ताप। ५ अगणित (दे १।१३२)। ६ अतिक्रान्त, उल्लंघित।

उव्वविय—तीन इन्द्रिय वाला जन्तु-विशेष (जीव १।८८)।

उव्वहण—महान् आवेश (दे १।११०)।

उव्वा—घर्म, ताप (दे १।८७)।

उव्वाअ—खिन्न (दे १।१०२)।

उव्वाउल—१ गीत। २ उपवन (दे १।१३४)।

उव्वाडुअ—१ विपरीत मैथुन। २ मर्यादा-शून्य मैथुन (दे १।१३३)।

उव्वाढ—१ विस्तीर्ण, विशाल। २ दुःखमुक्त (दे १।१२९)।

उव्वात—श्रान्त, थका हुआ (निचू ४ पृ २८७)।

उव्वाय—परिश्रान्त, थका हुआ—'धावंतो उव्वाओ, मग्गन्नू किं न गच्छइ कमेणं' (बृभा ३२०)।

उव्वाह—घर्म, ताप (दे १।८७)।

उव्वाहिअ—उत्क्षिप्त, ऊपर उछाला हुआ (दे १।१०६)।

उव्वाहुल—१ कामासक्ति से उत्पन्न उत्सुकता। २ द्वेष्य, द्वेष-पात्र (दे १।१३६)।

उव्विडिम—१ अधिक प्रमाणवाला। २ मर्यादारहित, स्वच्छंद (दे १।१३४)।

उव्विवार—भूकंप—'उव्विवारा जलोहंता तेतणीए मतोट्ठितं' (इ ४५।१४)।

उव्विव्व—१ उद्भट वेषयुक्त (पा ५६७)। २ क्रुद्ध।

उव्वीढ—उत्खात, खोदा हुआ (दे १।१००)।

उव्वुण्ण—१ उद्विग्न। २ उत्सिक्त। ३ उद्भट, तीव्र। ४ शून्य (दे १।१२३)।

उव्वेत्ताल—निरन्तर रुदन (दे १।१०१)।

उव्वेल्लय—त्वरा—'एसो सो चेय मओ चल-चल्लुव्वेल्लयं करेऊण' (कु पृ १८६)।

उव्वेल्लिर—१ उत्फुल्ल, चंचल (कु पृ ७८)। २ शीघ्रगामी (कु पृ २०१)।

उव्वेहलिया—वनस्पति-विशेष (भ २३।४)।

उव्वेहासित—ऊंचा किया हुआ (अंवि पृ १४८)।

उसणसेण—बलभद्र (दे १।११८)।

उसणी—एक प्रकार का धान्य जिसमें से तेल निकलता है (अंवि पृ २३२)।

उसद्ध—उत्कृष्ट—'उसद्धं—उत्कृष्टं' (आचू पृ ३६२)।

उसध—पुष्प-विशेष (अंवि पृ २३२)।

उसोर—पद्मनाल, कमलनाल (दे १।९४)।

उसु—बालक का इषु के आकार का एक आभरण (पिनि ४२४)।
२ तिलक—'उसू तिलगा' (निचू ३ पृ ४०७)।

उसुअ—दूषण, भूल (दे १।८९)।

उसुक—तिलक, आभरण-विशेष (निचू ३ पृ ४०७)।

उसुकाल—उदूखल (निचू ३ पृ ३७८)।

उसुयाल—ऊखल, उदूखल (आचूला ५।३६)।

उस्स—ओस (स्था ४।६४०)।

उस्सण्ण—१ प्रायः (बृभा २०४)। २ प्रभूत (व्यभा २ टी प ९२)।

उस्सन्न—प्रायः (भ १५।१८६ वृ)।

उस्सयण—अभिमान—'पलिउंचणं च भयणं च थंडिल्लुस्सयणाणि च। (सू १।९।११)।

उस्सरण—वपन, बुआई—'निच्चुदग नदी कुडंगमुस्सरणं' (बृभा ४०३५)।

उस्सा—गाय (दे १।८६ वृ)।

उस्सिंघण—मर्दन—'उस्सिंघण-मक्खणऽब्भंगण उच्छंदण उव्वट्टण' (अंवि पृ १९३)।

उस्सुग—मध्य-भाग (आचूला १।११६ पा)।

उस्सूलग—परिखा, खाई (उ ९।१८)। देखें—'उच्छूलग'।

उस्सूलय—१ परिखा। २ शत्रु सेना का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त-विशेष (उशाटी प ३१०)।

उस्सेल्लय—सर्षपनाल से निष्पन्न शाक—'एगेण साहुणा सासवणालुस्सेल्लयं सुसंभृतं लद्धं' (निचू ३ पृ २६४)।

उहर—१ छोटा घर, उपगृह (प्र १।१२)—'उहर त्ति उपगृहाणि आश्रय-विशेषाः' (टी प ११)। २ छोटा—'उहरगाममयंमी' (व्यभा ७ टी प ५६)।

उहरक—छोटा गांव (व्यभा ७ टी प ५६)।
उहावणा—अपमान (व्यभा ६ टी प ५)।

ऊ

ऊ—१ गर्हा, निन्दा सूचक अव्यय—'ऊति णाम मरहट्ठादिसु णादिदुगुंछिज्जति' (आचू पृ २३३)। २ प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटना। ३ विस्मय। ४ सूचना।

ऊआ—यूका, जूं (दे १।१३६)।

ऊढिअय—१ प्रावृत, आच्छादित। २ आच्छादन, प्रावरण (पा ६३७)।

ऊणंदिअ—आनन्दित (दे १।१४१)।

ऊणिमा—पूर्णिमा—'तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भंडस्स पत्थिओ' (उसुटी प ६४)।

ऊणिस—तकिया 'सामायंति मुहाइं ऊणिसगहियाण व थणाण' (कु पृ १७)।

ऊमुत्तिअ—दोनों पार्श्वों में आघात करना (दे १।१४२)।

ऊयरिणिया—जंतु-विशेष—'पत्तगबंधे ऊयरिणिया लग्गा' (निचू १ पृ ६८)।

ऊर—१ ग्राम। २ संघ (दे १।१४३)।

ऊरणिया—जन्तु-विशेष (निभा २८१)।

ऊरणी—मेष, भेड़ (दे १।१४०)।

ऊरणीया—जंतु-विशेष। (निचू १ पृ ६८)

ऊल—गतिभंग, उतावल (दे १।१३६)।

ऊसढ—श्रेष्ठ, वर्ण आदि गुणों से युक्त, ताजा—'ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति वा' (आचूला १।५७)।

ऊसण—कामासक्ति से उत्पन्न उत्सुकता (दे १।१३६)।

ऊसत्थ—१ जम्भाई। २ आकुल (दे १।१४३)।

ऊसय—उपधान, तकिया (दे १।१४०)।

ऊसल—पीन, पुष्ट (दे १।१४०)।

ऊसलिअ—१ रोमांचित, पुलकित (दे १।१४१)। २ उल्लसित (वृ)।

ऊसविअ—१ उद्भ्रांत। २ ऊंचा किया हुआ (दे १।१४३)।

ऊसाइअ—१ विक्षिप्त (दे १।१४१)। २ उत्क्षिप्त—'ऊसाइअं उत्क्षिप्तमिति धनपालः' (वृ)।

ऊसायंत—खेद होने पर शिथिल (दे १।१४१)।

ऊसार—विशेष प्रकार का गढा (दे १।१४०)।

ऊसिक्किअ—प्रदीप्त (पा १६)।

ऊसिग—मध्यभाग (आचूला १।११६ पा)।

ऊसुंभिअ—१ अवरुद्ध गले से रोना, धीरे रोना (दे १।१४२)। २ उल्लसित (वृ)।

ऊसुक्किअ—विमुक्त (दे १।१४२)।

ऊसुय—मध्य-भाग (आचूला १।११६)।

ऊसुर—ताम्बूल, पान (प्रा २।१७४)।

ऊसुरुसुंभिअ—अवरुद्ध गले से रोना, धीरे रोना (दे १।१४२)।

ऊहट्ठ—उपहसित (दे १।१४०)।

ए

एआवंती—इतने—'एआवन्ती सव्वावन्ती ति एतौ द्वौ शब्दौ मगधदेशीभाषाप्रसिद्धचा एतावन्तः सर्वेऽपीत्येतत्पर्यायौ' (आटी प २६)।

एकल्ल—अकेला (ज्ञा १।१।१५७)।

एकहेला—एक साथ (प्रटी प ४६)।

एकाणंसा—देवी-विशेष (अंवि पृ २२३)।

एकुडिया—तीतर आदि का मांस पकाने की प्रक्रिया—'आतंकाभिभूता रसगादिहेउं वगतित्तिरादीहि य एकुडियाओ पकरेंति' (आचू पृ १६)।

एक्क—स्नेहिल (दे १।१४४)।

एक्कंग—चन्दन (दे १।१४४)।

एक्कक्कअ—परस्पर (से ५।५६)।

एक्कघरिल्ल—देवर, पति का छोटा भाई (दे १।१४६)।

एक्कणड—कथिक, कथा कहने वाला (दे १।१४५)।

एक्कमुह—१ धर्म रहित। २ दरिद्र। ३ प्रिय, इष्ट (दे १।१४८)।

एक्कमेक्क—परस्पर (प्र ४।६)।

एक्कयाण—अकेला—'किमंगरायं तुमं हरिणजातीण एक्कयाण परिनिव्विट्ठो' (व्यभा ४।३ टी प ८)।

एक्कल्लग—एकाकी (अनुद्घाहाटी पृ ३५)।

एक्कल्लपुंडिग—अल्प बिन्दु वाली वृष्टि (दे १।१४७)।

एक्कल्लय—अकेला (उसुटी प ८६)।

एक्कल्लु—अकेला (उसुटी प ८०)।

एक्कवई—रथ्या (दे १।१४५ वृ)।

एक्कसरय—एक बार (व्यभा ६ टी प २)।

एक्कसराए—१ एक साथ। २ एक बार (बृटी पृ ४६६)।

एक्कसरिअं—१ शीघ्र (आवचू १ पृ २४६)। २ संप्रति, आजकल (प्रा २।२१३)।

एक्कसाहिल्ल—एक स्थान में रहने वाला, स्थिरवासी (दे १।१४६)।

एक्कसि—एक बार (व्यभा १० टी प ६०)।

एक्कसिंबली—शालमली पुष्पों के साथ नूतन फली (दे १।१४६)।

एक्कसिय—एक बार (बृचू प २०८)।

एक्कार—लोहकार (दे १।१४४ वृ)।

एक्कावण्ण—इक्यावन (निचू ४ पृ ११३)।

एक्केक्कम—अन्योन्य, परस्पर (दे १।१४५)।

एगओवत्त—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

एगट्ठिया—नौका—'एगट्ठियाए मग्गण-गवेसणं करेंति' (ज्ञा १।१६।२८२)।

एगल्ल—एकाकी (जीभा २१५)।

एगसरग—एक बार—'एगसरगं ति एक्कं वारं दिज्जति' (निचू ४ पृ ३४६)।

एगायत—अकेला—'एगायताऽणुक्कमणं करेंति' (सू १।५।४८)।

एगाहच्च—एक ही प्रहार से मारना—'तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ' (भ ७।२०२)।

एगुणि—उन्नीस (उशाटी प ६)।

एडण—उत्सर्जन—'तए णं सा नागसिरी·····तित्तालाउयस्स बहुसंभार-संभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्ठयाए' (ज्ञा १।१६।१४)।

एडावण—उत्सर्जन—'अंबकूणग-एडावणट्ठयाए एगंतमंते संगारं कुव्वंति' (भ १५।१३४)।

एडिज्जमाण—उत्सृज्यमान, उत्सर्जन करता हुआ (ज्ञा १।१६।७५) ।
एडेत्ता—उत्सृज्य, उत्सर्जन करके (ज्ञा १।१६।७३) ।
एणुवासिअ—मेंढक (दे १।१४७) ।
एत्ताहे—अब (दे १।१४४ वृ) ।
एत्तोप्पं—यहां से लेकर, यहां से (दे १।१४४) ।
एद्दह—इतना (दे १।१४४ वृ) ।
एमाण—प्रवेश करता हुआ (दे १।१४४) ।
एमिणिआ—वह स्त्री, जिसके शरीर को, किसी देश के रिवाज के अनुसार, सूत के धागे से नाप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है (दे १।१४५) ।
एयावंति—इतना (आ १।७) ।
एरंडइअ—पागल—'एरंडइए साणे त्ति हडक्कायितः श्वा' (बृटी पृ ८२६) ।
एरंडइत—पागल (दश्रुचू प ५१) ।
एरग—नागरमोथा (बृभा १२२३) ।
एराणी—१ इन्द्राणी । २ इंद्राणीव्रत का पालन करने वाली स्त्री (दे १।१४७) ।
एरावण—गुच्छ-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।४) ।
एल—कुशल (दे १।१४४) ।
एलवालुंकी—एक प्रकार की ककड़ी की बेल (प्रज्ञा १।४०।१) ।
एलविल—१ धनाढ्य । २ वृषभ, बैल (दे १।१४८) ।
एलालुय—आलू की एक जाति, कंद-विशेष (अनु ३।५१) ।
एलालुग—ककड़ी—'एलालुग माउलिंग फलमादी' (बृभा २४४२) ।
एलावालुंकी—वनस्पति-विशेष (भ २२।६) ।
एवडु—इतना—'एवडुं आलावगं सक्केहिति गेण्हिउं' (आवहाटी १ पृ ६६) ।
एवण्हं—वाक्यालंकार—'एवण्हमिति वाक्यालङ्कारे (बृटी पृ १४६१) ।
एव्वेल—अधुना, अभी—'एव्वेलं पहामोत्ति नमोक्कारं घोसंतस्सेव' (आवहाटी १ पृ ३०३) ।

ओ

ओअ--वार्त्ता, कहानी (दे १।१४६)।

ओअंक—गर्जारव, गर्जित (दे १।१५४)।

ओअग्गिअ—१ अभिभूत। २ केश आदि को एकत्रित करना (दे १।१७२)।

ओअग्घिअ---घ्रात, सूंघा हुआ (दे १।१६२)।

ओअल्ल—१ पर्यस्त, प्रक्षिप्त। २ प्रकंप, थरथराहट। ३ गौओं का बाडा। ४ लटकता हुआ (दे १।१६५)। ५ खराब आचरण। ६ जिसकी आंखें निमीलित होती हों वह (से १३।४३)।

ओआअ—१ गांव का स्वामी। २ अपहृत, जिसका अपहरण कर लिया गया हो वह। ३ आज्ञा। ४ हाथी आदि को बांधने के लिए बनाया हुआ गर्त्त (दे १।१६६)।

ओआअव—अस्त-समय, अस्तमन-वेला (दे १।१६२)।

ओआल—छोटा प्रवाह (दे १।१५१)।

ओआलित---द्रवित किया, पिघाला—'रण्णो चित्तं ओआलितं' (आवहाटी १ पृ २३४)।

ओआली--- १ खड्ग का एक दोष। २ पंक्ति (दे १।१६४)।

ओआवल—बाल-आतप, सुबह का सूर्य-ताप (दे १।१६१)।

ओइत्त—परिधान, वस्त्र (दे १।१५५)।

ओइत्तण—परिधान, वस्त्र (दे १।१५५)।

ओइल्ल---आरूढ (दे १।१५८)।

ओउंबालग—कोट्टपालक, आरक्षक (आवचू १ पृ २८६)।

ओएल्ल---कुण्ठित—'तत्थ वि य से धारा ओएल्ला' (ज्ञा १।१४।७७)।

ओंडल--केश-रचना, धम्मिल्ल (दे १।१५०)।

ओंडि—मुट्ठी (आवचू २ पृ १०१)।

ओकड्ढक—१ घर से धन आदि ले जाने वाले चोर। २ जो चोरों को बुलाकर चोरी कराते हैं। ३ चोरों के पृष्ठवाहक—सहायक (प्र ३।३)।

ओकासक—कर्ण का आभूषण जो नीचे लटकता रहता है (अंवि पृ १६२)।

ओक्कणी—यूका, जूं (दे १।१५६)।

ओक्कतल्लिय---चबाकर निकाला हुआ, वमन किया हुआ—'अंबकोइलियाओ कुक्कुडएहिं ओक्कतल्लियाओ हरिएसेहिं णिज्जाइयातो' (दअचू पृ २३)। ओक्करिसु (कन्नड)।

ओक्किअ—१ निवास, अवस्थान (दे १।१५१)। २ वमन (वृ)।

ओक्कुट्ठ—सचित्त वनस्पति का चूर्ण—'सचित्तवणस्सती चुण्णो ओक्कुट्ठो भण्णति' (निचू २ पृ २६०)।

ओक्खंडिअ—आक्रान्त (दे १।११२)।

ओक्खंद—शत्रु-सेना द्वारा नगर का घेराव—'कोसलेण रण्णा ओक्खंदं दाऊण भेल्लियं तं संणिवेसं' (कु पृ ६६)।

ओक्खिण्ण—१ अवकीर्ण। २ आच्छादित। ३ जिसके दोनों पार्श्व अत्यंत शिथिल हों, वह (दे १।१३० वृ)।

ओखंद—१ सेना का पडाव या सेना का घेराव (निभा २४०१)। २ डाका, धाटी (बृभा ४८३८)।

ओगुंठी—घूंघट, मस्तक पर डाला हुआ वस्त्र—'कंबलरयणोगुंठि काउं रण्णो ठिओ पुरतो' (ति ७६१)।

ओग्गाल—जल का लघु प्रवाह (दे १।१५१)।

ओग्गिअ—अभिभूत, पराजित (दे १।१५८)।

ओग्गीअ—हिम, बर्फ (दे १।१४६)।

ओघसर—१ अनर्थ। २ घर से निकलने वाला जलप्रवाह (दे १।१७०)।

ओचार—धान्य रखने का कोठा या पात्र-विशेष—'अपचारि—दीर्घतरधान्य-कोष्ठाकारविशेषः' (अनुद्वामटी प १४०)।

ओचिय—आरोपित (जीवटी प १६६)।

ओचुल्ल—चुल्ली का एक भाग (दे १।१५३)।

ओचूलयालग—नीचा सिर और ऊपर पांव कर पानी में डुबोना (विपाटी प ७२)।

ओच्चेल्लर—१ खिल भूमि, ऊषर भूमि, हल आदि से बिना जोती हुई भूमि। २ साथल के रोम (दे १।१३६)।

ओच्छग—वस्त्र (आवहाटी २ पृ १२८)।

ओच्छट्ट—चोर (दे १।१०१ वृ)।

ओच्छत्त—दतौन, दतवन (दे १।१५२)।

ओच्छविय—आच्छादित (ज्ञाटी प ३१)।

ओच्छाइय—आच्छादित (प्रटी प १३४)।

ओच्छिअ—केशों को संवारना (दे १।१५०)।

ओच्छुपीय—बीज, धान्य—'एगत्थ ओच्छुपीया णीणिज्जंति' (आवचू १ पृ १११)।

ओछाडित—आच्छादित (अंवि पृ २४४)।

ओज्जल्ल—बलवान्, प्रबल (दे १।१५४)।

ओज्जाय—गर्जित (दे १।१५४)।

ओज्झ—मैला, अस्वच्छ (दे १।१४८)।

ओज्झमण—पलायन (दे १।१०३ वृ)।

ओज्झर—निर्झर (से १।५६)।

ओज्झरिय—१ टेढी नजर से देखा हुआ, कानी आंख से देखा हुआ। २ विक्षिप्त, पागल। ३ क्षिप्त, फेंका हुआ। ४ त्यक्त (दे १।१३३ वृ)।

ओज्झरी—ओझ, आंत का आवरण (दे १।१५७)।

ओज्झाय—दूसरे को धक्का देकर छीन लेना (दे १।१५६)।

ओट्टिय (दोट्टिय, दोद्धिय ?) तुंबा (आवहाटी १ पृ २८३)।

ओड—१ भूमि खोदने वाला (स्थाटी प १६६)। २ कूप (आवटि प २४)।

ओडड्ड—अनुरक्त, रागी (दे १।१५६)।

ओडिका—अंश, खंड (आवटि प ६७)।

ओड्ड—वस्त्र-शिल्पी (अंवि पृ १६१)।

ओड्डुय—छिपाव, गुप्त—'तेसिं च पोत्ताणि हीरंति, ओड्डुएण अच्छंति' (आवचू १ पृ १११)।

ओड्ढण—ओढन, उत्तरीय वस्त्र (दे १।१५५)।

ओड्ढिय—ओढा हुआ, धारण किया हुआ—'परिहिअमोड्ढणमोड्ढिअमोइत्तं' (दे १।१५५ वृ)।

ओणिव्व—वल्मीक, कृमि-पर्वत, चींटियों द्वारा खोदी गई मिट्टी का ढेर (दे १।१५१)।

ओणीवी—नीव्र, छत का प्रान्त भाग (दे १।१५०)।

ओणुअ—अभिभूत, पराभूत (दे १।१५८)।

ओणेज्ज—सांचे में मोम आदि की विभिन्न आकृतियों की रचना—'ओणेज्जं मदणविच्छित्ति-विसेसा' (दअचू पृ ३६)।

ओत्तलहअ—वृक्ष (दे १।११६ वृ)।

ओत्थइअ—व्याप्त (से ११।५६)।

ओत्थय—१ पिहित, ढका हुआ—'अत्थरयमिउमसूरगोत्थयं' (दश्रु ८।४२)। २ अवसन्न, खिन्न (दे १।१५१)।

ओत्थर—उत्साह (दे १।१५०)।

ओत्थरिअ—१ आक्रांत, जिस पर आक्रमण किया हो वह। २ आक्रमण करता हुआ (दे १।१६६)।

ओत्थल्लपत्थल्ला—उथल-पुथल, दोनों पार्श्वों से परिवर्तन (दे १।१२२ वृ)।

ओथुक्किक—अत्यंत जुगुप्सित—'धिद्धि त्ति ओथुक्किक-तालियस्सा' (बृभा ४११५)।

ओद्दंपिअ—१ आक्रांत। २ नष्ट (दे १।१७१)।

ओपल्ल—कुण्ठित, अपदीर्ण (ज्ञाटी प १६६)।

ओपविका—क्षुद्र जंतु (अंवि पृ २२६)।

ओपित—संस्कारित, परिकर्मित (प्रटी प ७६)।

ओपुप्फ—निष्फल, व्यर्थ—'जुण्णं ओपुप्फनिप्फलं' (अंवि पृ ८१)।

ओपेसेज्जिक—धान्य पीस कर आजीविका चलाने वाला (अंवि पृ १६०)।

ओप्प—चमक—'तूवरिया सुवण्णस्स ओप्पकरणभट्टिया' (दअचू पृ ११०)।

ओप्पा—शाण आदि पर मणि आदि रत्नों का घर्षण करना (दे १।१४८)।

ओप्पिअ—शाण पर घिसा हुआ (दे १।१४८ वृ)।

ओप्पील—समूह (पा १८)।

ओप्फिट्ट—अलग होना, पृथक् होना—'ताहे सो (गोसालो) सामिस्स मूलओ ओप्फिट्टो' (आवचू १ पृ २६६)।

ओब्भालण—१ सूर्प आदि से धान्य को साफ करना। २ अपूर्व (दे १।१०३ वृ)।

ओभंजलिया—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

ओभट्ठ—प्रार्थित, वांछित (ओनि १४७)।

ओमंथ—नत, अधोमुख (बृभा ६६५)।

ओमंथिय—नमाया हुआ, अधोमुख किया हुआ—'ओमंथियवयणनयणकमला' (ज्ञा १।१।३४)।

ओमच्छग—अधोमुख (निचू २ पृ १२७)।

ओमत्थ—अधोमुख (अनुद्वाचू पृ ५०)।

ओमत्थग—अन्तिम—'चरिमस्स आदिसमयातो आरब्भ ओमत्थगं' (नंदीचू पृ २५)।

ओमत्थिय—नत, अधोमुख किया हुआ (ओनि ३८६)।
ओमालय—शोभित (कु पृ २२८)।
ओमालिय—पूजित (कु पृ २५)।
ओमोदरिता—दुर्भिक्ष—'ओमोदरिता दुब्भिक्खं' (निभा ३४२)।
ओयड्ढया—चादर, दुपट्टा (उसुटी प ४५)।
ओयड्ढी—दुपट्टा, चादर—'वेत्तुं ओयड्ढीए छूढो' (उसुटी प ४५)।
ओयम—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।
ओयल्ल—मृत (आवटि प ३८)।
ओयविय—१ परिकर्मित, संस्कारित—'ओयविय-खोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छन्ने' (दश्रु ८।२०)। २ खेदज्ञ—'ओयविय खेदज्ञ' (ओटी प ५१)।
ओयाण—अनुस्रोत में चलने वाली नौका (निभा १८३)।
ओयिंघण—उपबृंहण, वृद्धि (सूचू १ पृ ११५)।
ओर—१ चारु, सुंदर (दे १।१४६)। २ समीप।
ओरंपिअ—१ आक्रान्त। २ नष्ट (दे १।१७१)। ३ छिला हुआ (पा ५८१)।
ओरत्त—१ विदारित। २ अभिमानी। ३ कुसुंभ रंग से रंगा हुआ (दे १।१६५)।
ओरल्ली—दीर्घ और मधुर ध्वनि (दे १।१५४)।
ओराणि—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।
ओराल—१ उदार, प्रधान (स्था ४।४५१)। २ भयंकर—'ओराले त्ति भीमो भयानकः' (ज्ञाटी प ८)। ३ विस्तृत, विशाल—'ओरालं नाम वित्थरालं विसालं ति भणियं होई'। ४ मांस आदि से युक्त शरीर—'समयपरिभाषया····' (प्रज्ञाटी प २६६)।
ओरालिय—१ व्याप्त। २ उपलिप्त—'दिट्ठो रुहिरोरालियसिरो' (उसुटी प ५)। ३ पोंछा हुआ। ४ फैलाया हुआ।
ओरिल्ल—अचिरकाल का, थोड़े समय का, नया (दे १।१५५)।
ओरुंज—वह क्रीडा जिसमें बार-बार 'नहीं-नहीं' कहा जाता है (दे १।१५६)।
ओलअ—१ बाज पक्षी (दे १।१६०)। २ अपलाप (वृ)।
ओलअणी—नववधू, नवोढा (दे १।१६०)।
ओलइणी—प्रिया, प्रिय पत्नी (दे १।१६०)।
ओलइय—१ संलग्न, लगा हुआ, चिपका हुआ (जीभा ५३८)। २ छिपाया हुआ—'आउहाणि ओलइयाणि' (उशाटी प ११६)। ३ शरीर से

सटा हुआ, पहना हुआ—'अंगपिणद्धम्मि ओलइअं' (दे १।१६२)।

ओलंडण—अवलंघन (ज्ञा १।१।१८६)।

ओलंडिय—अवलंघित—'तुमं मेहा ! राओ समणेहिं····अप्पेगइएहिं ओलंडिए अप्पेगइएहिं पोलंडिए' (ज्ञा १।१।१५५)।

ओलंभ—उपालम्भ—'भगवया महावीरेणं····अप्पोलंभनिमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते' (ज्ञा १।१।२१३)। (राज० ओलंभा)

ओलग्ग—सेवक (दजिचू पृ २९६)।

ओलग्गअ—सेवक—'कुमारोलग्गएहिं सद्धिं····पव्वतितो' (उशाटी प ११५)।

ओलग्गग—ग्रामवासी (दशुचू प ६५)।

ओलवणी—छत—'कडणं डंडगोवरि ओलवणी' (पंवटी प ११२)।

ओलायग—बाज पक्षी—'वीरल्लो ओलायगो' (निचू २ पृ १३७)।

ओलावय—बाज पक्षी (दे १।१६०)।

ओलावी—मादा बाजपक्षी (आवचू १ पृ ४२५)।

ओलिंप—खोलना—'ओलिंपमाणे वि तहा तहेव काया कवाडंमि विभासियव्वा' (पिनि ३५४)।

ओलिंभा—दीमक (दे १।१५३)।

ओलित्ती—खड्ग आदि का एक दोष (दे १।१५९)।

ओलिप्प—हास, हंसी-मजाक (दे १।१५३)।

ओलिप्पंती—खड्ग आदि का एक दोष (दे १।१५९)।

ओलिया—कुलपरिपाटी—'अहं ओलिया कहिज्जामि' (सूचू २ पृ ४१४)।

ओली—१ फली—'ओली सिंगा' (आचू पृ ३४१)। २ कुलपरिपाटी, कुल का आचार (दे १।१४८)। ३ पंक्ति (वृ)।

ओलुंकी—१ बालकों की क्रीडा-विशेष, लुकाछिपी का खेल (दे १।१५३)। २ आंखमिचौनी—'ओलुंकी छन्नरमणम्। नष्ट्वा यत्र शिशवः क्रीडन्ति। चक्षुःस्थगनक्रीडेति केचित्' (वृ)।

ओलुंपअ—तापिका-हस्त, तवे का हाथा (दे १।१६३)।

ओलुग्ग—१ जीर्ण, रुग्ण (ज्ञा १।१।३४)। २ कृश, निर्बल (विपा १।२।२४)। ३ सेवक। ४ निस्तेज (दे १।१६४)।

ओलुट्ट—१ अघटमान, अनुचित। २ मिथ्या, असत्य (दे १।१६४)।

ओलेहड—१ दूसरे में आसक्त। २ तृष्णापर। ३ प्रवृद्ध, बूढा (दे १।१७२)।

ओल्ल—१ ओला, हिमपात (जीचू पृ ६) । २ पति । ३ राजपुरुष-विशेष ।

ओल्लणी—इलायची, दालचीनी आदि मसालों से संस्कारित दही, श्रीखंड (दे १।१५४) ।

ओल्लरण—सोना, शयन (दे १।१६३ वृ) ।

ओल्लरिअ—सुप्त (दे १।१६३) ।

ओव—हाथी आदि को बांधने के लिए किया गया गर्त्त (दे १।१४६) ।

ओवइय—तीन इन्द्रियवाला क्षुद्र जन्तु-विशेष (जीव १।८८) ।

ओवग—गढा—'ओवग कूडे मगरा, जइ धुंटे तसे य दुहतो वि' (बृभा २३६०)

ओवग्गिअ—आक्रांत, अभिभूत (पा ५८५) ।

ओवट्टिअ—खुशामद, चाटुकारिता (दे १।१६२) ।

ओवट्टी—नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाडी (दे १।१५१ पा) ।

ओवट्ठ—१ मेघ के पानी का सिंचन, छिड़काव (दे १।१५२) । २ वृष्टि, बारिश (से ६।२५) ।

ओवड—गढा, गर्त्त—'ओवड त्ति खड्डातीते पडेज्ज' (निचू ४ पृ ४८) ।

ओवड्ढी—पहनने के वस्त्र का एक भाग (दे १।१५१) ।

ओवयण—प्रोञ्छणक (ज्ञा १।१।६०) ।

ओवर—निकर, समूह (दे १।१५७) ।

ओवरअ—समूह (दे १।१५७ वृ) ।

ओवसेर—१ चन्दन । २ मैथुन-योग्य (दे १।१७३) ।

ओवात—आचार्य-निर्देश—'ओवातो णाम आचार्यनिर्देशः' (सूचू १ पृ२२१) ।

ओवातिका—जलचर प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६६) ।

ओवारि—१ धान्य भरने का कोठा । २ भीतरी कमरा (अंवि पृ १६५) । ओरी (राजस्थानी) ।

ओवारिया—१ भीतरी अपवरक । २ धान्य भरने का कोठा (व्यभा ७ टी प १०) ।

ओवास—कान का आभूषण-विशेष—'वतंसक ओवास कण्णपीलक कण्णपूरक' (अंवि पृ १८३) ।

ओवासण—नापित-कर्म, हजामत (आवचू १ पृ१५६) ।

ओविय—१ परिकर्मित (ज्ञा १।१।२४) । २ सुन्दर (ज्ञा १।१।६५) । ३ प्रकाशित—'ओपितानां—उज्ज्वलितानाम्' (ज्ञाटी प २२६) ।

४ आरोपित (जंबूटी प ४३ ; दे १।१६७) । ५ रुदित । ६ खुशामद । ७ मुक्त, परित्यक्त । ८ हृत, छीना हुआ (दे १।१६७) । ९ व्याप्त, खचित (आवमटी) १० विभूषित ।

ओवुलीक—प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६९) ।

ओव्वरग—ओरी, भीतर का कमरा (दअचू पृ ४२) ।

ओस—ओस, निशाजल (भ १५।१८६) ।

ओसअ—ओस (से १३।५२) ।

ओसक्क—अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे १।१४९) ।

ओसट्ट—ऐसा भोजन, जिसमें फेंकना अधिक होता है (निभा २४९४) ।

ओसण—उद्वेग, खेद (दे १।१५५) ।

ओसण्ण—त्रुटित, खंडित (दे १।१५६) ।

ओसण्णं—१ अनेक बार—'ओसण्णंति—अणेगसो एक्केक्कं पावायतणं हिंसादि आयरति' (दश्रुचू प ४०) । २ प्रायः (जीभा १९०) । ३ प्राचुर्य, बाहुल्य (स्थाटी प १८३) ।

ओसद्ध—पातित, गिराया हुआ (पा ५६५) ।

ओसन्न—१ प्रायः—'ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे' (दचूला २।६) । २ खंडित, अपूर्ण—'ओसन्नो खुतायारो सबलायारो' (दश्रुचू प ९) ।

ओसर—छोटा कमरा (अंवि पृ १३६) । आसरा (राजस्थानी) ।

ओसरिअ—१ अधोमुख । २ आंख को संकुचित कर देखना, कानी आंख से देखना । ३ आकीर्ण, व्याप्त (दे १।१७१) ।

ओसरिआ—अलिंदक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (दे १।१६१) ।

ओसव्विअ—१ शोभा-रहित । २ अवसाद (दे १।१६८) ।

ओसा—१ ओस, निशाजल (आव ४।४) । २ हिम (दे १।१६४) ।

ओसाअ—प्रहार की पीड़ा (दे १।१५२) ।

ओसाणिहाण—विधि-पूर्वक अनुष्ठित (दे १।१६३) ।

ओसायंत—१ जंभाई खाता हुआ आलसी । २ दुःख करता हुआ । ३ वेदना-युक्त (दे १।१७०) ।

ओसार—गो-वाट, गो-बाड़ा (दे १।१४९) ।

ओसिअ—१ बलरहित (दे १।१५०) । २ अपूर्व ।

ओसिंघिअ—घ्रात, सूंघा हुआ (दे १।१६२)—'ओसिंघिअशब्दोऽपि देश्य एव' (वृ) ।

ओसिक्खिअ—१ गमन में व्याघात । २ अरति-निहित (दे १।१७३) ।

ओसित्त—उपलिप्त (दे १।१५८)।

ओसीअ—अधोमुख, अवनत (दे १।१५८)।

ओसीस—अपवृत्त, दुश्चरित्र (दे १।१५२)।

ओसुंखिअ—उत्प्रेक्षित, कल्पित (दे १।१६१)।

ओसुद्ध—१ नीचे गिरा हुआ, विनिपतित (दे १।१५७)। २ विनाशित (से १३।२२)।

ओस्स—ओस, निशाजल (नि १३।८)।

ओहंक—हास, हास्य (दे १।१५३)।

ओहंजलिया—चतुरिन्द्रिय जीव की जाति-विशेष (जीवटी प ३२)।

ओहंस—१ चंदन। २ चंदन घिसने का शिलापट्ट (दे १।१६८)।

ओहट्ट—१ घूंघट। २ कटि-वस्त्र। ३ अपसृत (दे १।१६६)।

ओहट्टिअ—दूसरे को धक्का देकर छीन लेना (दे १।१५९)।

ओहट्ठ—१ प्रार्थित, वांछित—'ओभट्ठमणोभट्ठं लब्भइ जं जत्थ पाउग्गं' (ओटी प ६७)। २ हास्य (दे १।१५३)।

ओहडणी—अर्गला (दे १।१६०)।

ओहत्त—अवनत (दे १।१५६)।

ओहरण—१ विनाशन, हिंसा। २ असंभव अर्थ की संभावना (दे १।१७४)। ३ अस्त्र। ४ आघात।

ओहरिय—१ प्रहत—'खुरधारे असी खंधंसि ओहरिए' (ज्ञा १।१४।७७)। २ उत्तारित, उतारा हुआ—'ओहरियभारोव्व भारवहे' (उ २९।१३)। ३ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ (से १३।३)। ४ नीचे गिराया हुआ (से ३।३७)।

ओहरिस—१ घ्रात, सूंघा हुआ। २ चन्दन घिसने की शिला, चन्द्रौटा (दे १।१६९)।

ओहसिअ—१ वस्त्र। २ कम्पित (दे १।१७३)।

ओहाइअ—अधोमुख (दे १।१५८)।

ओहाडण—१ प्रायश्चित्त का एक प्रकार। २ पिधानक (निचू ४ पृ ४२८)।

ओहाडणी—पिधानक, ढक्कनी (जीव ३। २६४; दे १।१६१)।

ओहाडिअ—ढका हुआ—'ओहाडियचिलिमिलियागंसि' (बृ १।१४)।

ओहामिअ—१ तिरस्कृत (ओनि ६०)। २ तोला हुआ (पा ५३९)। ३ स्थगित। ४ अभिभूत।

ओहार—१ जलजंतु-विशेष, मत्स्य (प्र३।७)। २ कछुआ। ३ नदी आदि का अन्तर द्वीप, मध्यद्वीप। ४ अंश, विभाग (दे १।१६७)।

ओहावण—अपभ्राजन, तिरस्कार (उशाटी प १९२)।

ओहिंजलिया—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१४८।

ओहिज्जंत—अतीत, अतिक्रांत, क्षीण (अंवि पृ ८१)।

ओहित्थ—१ विषाद। २ वेग। ३ विचारित (दे १।१६८)।

ओहीरमाणी—नींद लेती हुई (ज्ञा १।१।१८)।

ओहीरिअ—१ उद्गीत (दे १।१६३)। २ अवसन्न, खिन्न—'ओहीरिअं उद्गीतम्। अवसन्नमित्यन्ये' (वृ)।

ओहुअ—अभिभूत (दे १।१५८)।

ओहुड—विफल (दे १।१५७)।

ओहुप्पंत—जिस पर आक्रमण किया जाता हो, वह (से ३।१८)।

ओहुर—१ खिन्न (दे १।१५७)। २ अवनत। ३ स्रस्त, खिसका हुआ—'ओहुरं खिन्नम्। 'ओहुरं अवनतं स्रस्तं चेत्यवन्तिसुन्दरी' (वृ)।

क

कइअंक—निकर, समूह (दे २।१३)।

कइअंकसइ—निकर, समूह (दे २।१३)।

कइउल्ल—थोड़ा, अल्प (दे २।२१)।

कइक—कोई (अंवि पृ २५१)।

कइतविय—कृत्रिम (सूनि ५९)।

कइलबइल्ल—स्वच्छन्दचारी वृषभ, चिन्हित सांड (दे २।२५)—'कइलबइल्लोव्व तुमं घरा घरं किं भमेसि णिल्लज्ज !' (वृ)।

कइल्लिय—कृत—'अणुकंपा कइल्लिया होहित्ति' (उशाटी प ८६)।

कइवाह—तत्काल, शीघ्र—'सव्वं ते पज्जत्तं णणु कइवाहं पडिच्छामि' (ति ६५६)।

कइविया—पात्र-विशेष, पीकदान (ज्ञाटी प ४७)।

कउअ—१ प्रधान। २ चिह्न (दे २।५६)।

कउल—१ करीष, कंडा। २ कंडे का चूरा (दे २।७)।

कउह—नित्य (दे २।५)।

कंकडुय—चना आदि धान्य जो अग्नि से नहीं पकता, कोरडू—'चणयादीणं उवक्खडियाण जे ण सिज्झंति ते कंकडुया' (निचू ३ पृ ४८४)। देखें—उवक्खडाम

कंकण—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१४७)।

कंकडुय—कोरडू धान, वह धान जो पकाए जाने पर भी नहीं पकता (कु पृ २१०)।

कंकिल्लि—अशोक वृक्ष (प्रसा ४४०)।

कंकेल्लि—अशोक वृक्ष (औपटी पृ १७; दे २।१२)।

कंकोड—१ वनस्पति-विशेष, ककरैल की सब्जी (दे २।७)। २ सांप की एक जाति।

कंगु—१ धान्य-विशेष—'बृहच्छिरा कंगू' (निचू २ पृ १०६)। २ पीत तण्डुल (प्रसा ६६६)।

कंगुलिया—मलमूत्र—'कंगुलिकां—लघ्वीं महतीं च नीतिं विधत्ते' (प्रसा ४३३)।

कंचणिका—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।

कंचणिया—रुद्राक्ष की माला (भ २।३१)।

कंचिक्क—नपुंसक—'भेसेति कतो इधेस कंचिक्को' (बृभा ५१८३)।

कंची—मुसल के मुख पर रहने वाला लोह-वलय (दे २।१)।

कंजुसिणोदेहि—कांजिका—'कंजुसिणोदेहि त्ति इह च लाटदेशेऽवश्रावणं काञ्जिकं भण्यते' (बृटी पृ ८७१)।

कंटउच्चिय—कण्टकप्रोत, कांटों से बींधा हुआ (दे २।१७)।

कंटक—बिच्छु की विष-प्रधान पूंछ—'वृश्चिकस्य महाविषलांगूलं कण्टक उच्यते' (व्यभा ६ टी प ५७)।

कंटाली—वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका (दे २।४)।

कंटासक—फल-विशेष, पनस (?) (अंवि पृ ६४)।

कंटिका—करधनी—'जंबूका मेखल त्ति वा कंटिक त्ति व जो बूया' (अंवि पृ ७१)।

कंटुल्ल—ककरैल, एक प्रकार की सब्जी जो वर्षा में ही होती है (पा ३८२)।

कंटेण—पशु-विशेष (अंवि पृ ६२)।

कंटोल—ककरैल वनस्पति की सब्जी (दे २।७)।

कंठ—१ सूकर, सूअर। २ मर्यादा, सीमा (दे २।५१)।

कंठकप्पड—कंधे पर रखी जाने वाली चादर—'णिबद्धं च णेण कंठकप्पडे तं पुट्टलयं' (कु पृ १०५)।

कंठकुंची—१ वस्त्र आदि के अन्त में लगाई गई गांठ। २ कंठ के ऊपर उभरी नाडिग्रन्थि 'रसोली' (दे २।१८)।

कंठदीणार—बाड़ का छिद्र (दे २।२४)—'आवंति कंठदीणारएण कुडिय-भमिरा भुयंग त्ति (वृ)।

कंठमल्ल—१ शव को वहन करने का साधन (दे २।२०)। २ यानपात्र, वाहन (वृ)।

कंठमुखी—आभूषण-विशेष (भ ६।१६०)।

कंठाकंठि—गले मिलना—'अब्भुट्ठेत्ता कंठाकंठिं अवयासेइ' (ज्ञा १।२।६६)।

कंठाकंठिय—गले मिलना (ज्ञा १।२।६०)।

कंठाल—मोटे कंठ वाला (कु पृ १३५)।

कंठिअ—द्वारपाल, दौवारिक (दे २।१५)।

कंड—१ दुर्बल। २ विपन्न। ३ फेन (दे २।५१)।

कंडपडवा—यवनिका, परदा (दे २।२५)।

कंडरा—शरीर का एक अवयव (अंवि पृ ११६)।

कंडरिय—अनंतकाय वनस्पति-विशेष (भ २३।१)।

कंडु—पात्र-विशेष (सूचू १ पृ १२४)।

कंडूर—बगुला (दे २।६)।

कंडूसग—रजोहरण का बंधन-विशेष (नि ५।७०)—'कंडूसगबंधो णाम जाहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेणं वेढियं भवति' (निचू २ पृ ३६७)।

कंडूसी—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

कंतार—मार्ग—'कंतारं नाम अध्वानं' (निचू १ पृ १६४)।

कंतु—कन्दर्प, कामदेव (दे २।१)।

कंथा—टुकड़ा, अंश—'कण्हेण भेरी जोयाविया जाव कंथा कया' (बृभा ३५६)।

कंद—१ दृढ। २ उन्मत्त। ३ आच्छादन (दे २।५१)।

कंदल—१ प्रत्यग्र लता (ज्ञा १।६।२०) २ कपाल (दे २।४)। ३ पुष्प-विशेष (अंवि पृ ६३)।

कंदी—मूला, कन्द-विशेष (दे २।१)।

कंदुग्घुसिय—नील कमल (?) (कु पृ ३५)।
कंदुट्ट—नील कमल (पा ५७)।
कंदोट्ट—नील कमल (दे २।६)।
कंपड—पथिक (दे २।७)।
कंबर—विज्ञान, प्रज्ञा, कलाकौशल (दे २।१३)।
कंबलिक—धान्य-विशेष (अंवि पृ २२०)।
कंबिया—पुस्तक का आवरण पृष्ठ (जीव ३।४३५)।
कंसार—कसार, एक प्रकार की मिठाई (बृटी पृ ४०३)।
कंसारिआ—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (बृटी पृ ८००)।
कंसारिका—कसारी, त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (बृटी पृ ६६७)।
कंसारी—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (जीत १८)।
कंसाल—वाद्य-विशेष (भटी पृ ८८३)।
ककाणय—गरदन—'आरुस्स विज्झंति ककाणओ से' (सू १।५।४२)।
ककितजाण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।
ककी—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३६)।
ककुलुंडि—पात्र-विशेष (अंवि पृ २१४)।
ककुह—१ राजचिन्ह—'अवहट्टु रायककुहाइं' (प्रसाटी प १३)। २ प्रधान (ज्ञाटी प २४०)।
कक्ककुरुय—माया (प्रसा ११५)।
कक्कडग—तर्कशास्त्रगत हेतु का एक प्रकार—'कक्कडगहेऊ जत्थ भणिते उभयहा वि दोसो भवति' (निचू ३ पृ ३८०)।
कक्कडय—वायु-विशेष जो पेट में उत्पन्न होती है—'कक्कडए नामं वाए समुच्छइ जेणं' (भ १०।३६)।
कक्कडी—ककडी (बृभा १०५१)।
कक्कडीय—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ १८३)।
कक्कब—इक्षुरस का विकार, गुड की पूर्व अवस्था (पिनि २८३)।
कक्कय—गुड़ की पूर्व अवस्था—'गिल्लसन्निही-गुलकक्कयघयतेल्लाई' (जीचू पृ १४)।
कक्कर—मधुर—'कक्करं नाम महुरं' (उचू पृ १६०)।
कक्करपिंडग—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ २४६)।
कक्करी—घट-विशेष (जंबूटी प १००)।

कक्कस—दध्योदन, करंबा (दे २।१४)।

कक्कसार—दध्योदन, करम्बा (दे २।१४)—'मयकरिअं लहसि कक्कसार' (वृ)।

कक्कावंस—पर्व वनस्पति, बांस का एक प्रकार (भ २१।१७)।

कक्किकड—कृकलास, गिरगिट (दे २।५)।

कक्कुस—तुष—'तुस त्ति कोंटको व त्ति कक्कुसो तप्पणो त्ति वा' (अंवि पृ १०६)।

कक्खड—पीन, पुष्ट (दे २।११)।

कक्खडंगी—सखी, सहेली (दे २।१६)।

कक्खल—कठोर, कर्कश—'कक्खलफासाहि कमणीहिं' (निभा ६२६)।

कक्खारुग—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

कघाड—१ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा। २ किलाटी, मावा (दे २।५३)।

कघायल—किलाटी, दूध का विकार (दे २।२२)।

कचक्खी—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

कच्च—कार्य (दे २।२)।

कच्चग—पात्र-विशेष (व्यभा ८ टी प २२)।

कच्चाल—प्रवृत्ति या व्यापार का स्थान, कार्यालय (दे २।५२ पा)।

कच्चोल—कलश, पात्र-विशेष (उसुटी प २८०)।

कच्छ—गुठली का एक अवयव जो तुष रहित हो (आचू पृ ३४०)।

कच्छभाणिया—साधारण वनस्पति-विशेष (सू २।३।४३)।

कच्छभाणी—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

कच्छभी—तापस का उपकरण-विशेष—'हत्थकयकच्छभीए—कच्छपिका तदुपकरणविशेषः' (ज्ञाटी प २२७)।

कच्छर—पंक, कीचड़ (दे २।२)।

कच्छवी—पुस्तक का एक प्रकार जिसके दोनों किनारे छोटे तथा मध्यभाग मोटा हो—'कच्छवि अंते तणुओ मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो' (प्रसा ६६५)।

कच्छा—कच्छा, लाट देश में पहना जाने वाला स्त्रियों का परिधान-विशेष—'लाडाणं कच्छा सा मरहट्ठयाणं भोयडा भण्णति' (निचू १ पृ ५२)।

कच्छुरिअ—ईर्षित, जिसकी ईर्ष्या की गई हो वह (दे २।१६)।

कच्छुरी—कपिकच्छू, केंवाच (प्रज्ञा १।३७।१; दे २।११)।

कच्छुल्ल—१ गुल्म-विशेष (प्रज्ञा १।३८।२)। २ खाज रोग से ग्रस्त—'तत्थं णं पासइ एगं पुरिसं—कच्छुल्लं कोढियं दाओयरियं' (विपा १।७।७)।

कच्छोटक—लंगोटी धारण करने वाला (भटी प ५०)।

कच्छोट्टग—कच्छा, लंगोटी (आवहाटी १ पृ २७६)।

कज्ज—कचरा (ओटी प १६२)।

कज्जउड—अनर्थ (दे २।१७)।

कज्जत्थ—कूड़ा-करकट डालने का स्थान, अकुरड़ी—'कज्जत्थोकुरटिकास्थानम्' (ओटी प १६२)।

कज्जलमाणी—डूबती हुई (नि १८।१६)।

कज्जलावेमाणा—डूबती हुई—'णावं कज्जलावेमाणं पेहाए' (आचूला ३।२२)।

कज्जव—१ तृण आदि का समूह (दे २।११)। २ विष्ठा (वृ)।

कज्जवय—कूड़ा-कचरा (अनुद्वा ३४६)।

कज्जूरी—खजूर का वृक्ष (अंवि पृ ७०)।

कज्जोव—उल्का (अंवि पृ २४५)।

कज्झाल—सेवाल, एक प्रकार की घास जो जलाशयों में होती है (दे २।८)।

कटार—छुरी (प्रा ४।४४५)।

कट्ट—१ खंड, टुकड़ा (अनुटी प ५)। २ काट, जंग (व्यभा ५ टी प ६)।

कट्टर—१ खंड, अंश—'चित्तकट्टरे इ वा' (अनु ३।४०)। २ कढी में डाला हुआ घी का बड़ा—'तीमनोन्मिश्रघृतवटिकारूपस्य देशविशेषप्रसिद्धस्य' (पिटी प १७२)।

कट्टरिगा—शस्त्र-विशेष, छुरी (निचू २ पृ ५६)।

कट्टारिया—कटार, छुरी (निचू २ पृ ५६)।

कट्टारी—क्षुरिका, छुरी (दे २।४)।

कट्टित—कटा हुआ (अंवि पृ २५५)।

कट्ठ—आभूषण-विशेष, एक प्रकार का हार (अंवि पृ ६५)।

कट्ठंसालुक—कंठ का रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

कट्ठकरण—खेत—'कट्ठकरणं णाम छेत्तं' (आवहाटी १ पृ १५२)।

कट्ठखोड—आसन-विशेष—'भद्दासणं पीढगं वा कट्ठखोडो नहट्ठिका' (अंवि पृ १५)।

कट्टगंध—नौका खेने का बड़ा बांस (आचू पृ ३५७)।

कट्ठाहार—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

कट्ठिअ—द्वारपाल (दे २।१५)।

कट्ठियव्वग—खाद्य-विशेष (निचू २ पृ २४१)।

कट्ठेवट्टक—कण्ठ का आभूषण (अंवि पृ १६३)।

कट्ठोरग—कटोरा (निचू १ पृ ५१)।

कड—१ क्षीण। २ मृत (दे २।५१)।

कडअल्ल—द्वारपाल (दे २।१५)।

कडअल्ली—कण्ठ, गला (दे २।१५)।

कडइअ—स्थपति, बढ़ई (दे २।२२)।

कडइल्ल—द्वारपाल (दे २।१५)।

कडंत—१ मूली का शाक। २ मुसल (दे २।५६)।

कडंतर—पुराना छाज आदि उपकरण (दे २।१६)।

कडंतरिअ—विदारित (दे २।२०)।

कडंब—करटिका, वाद्य-विशेष (राज ७७)।

कडंभुअ—१ कुम्भग्रीव नामक पात्र-विशेष (दे २।२०)। २ घड़े का कण्ठ-भाग—'कडंभुअं घटस्यैव कण्ठ इति शीलाङ्कः' (सू)।

कडग—१ यवनिका, परदा (आवहाटी २ पृ १७८)। २ बांस की चटाई से बना घर (व्यभा ४।४ टी प १०१)।

कडच्छकी—कडछी—'दव्वी तध कवल्ली य दीविक त्ति कडच्छकी' (अंवि पृ ७२)।

कडच्छु—लोहे की कर्छी, डोई (दे २।७)।

कडच्छुत—कर्छी (निचू २ पृ २५१)।

कडच्छुय—चम्मच (ज्ञा १।८।५५)।

कडजुम्म—युग्म राशि जिसमें चार शेष रहते हैं—'सर्वासां दिशां प्रत्येकं ये प्रदेशास्ते चतुष्केनापह्रियमाणाश्चतुष्कावशेषा भवन्तीति कृत्वा तत्प्रदेशात्मिकाश्च दिश आगमसंज्ञया कडजुम्मत्ति शब्देनाभिधीयन्ते' (आटी प १३)।

कडणा—१ छत (भ ८।२५७)। २ त्रट्टिका, बाड़ (भटी पृ ६६१)।

कडतला—लोहे का वह हथियार जो एक ओर से धारवाला और वक्र होता है (दे २।१६)।

कडपल्ल—धान्यशाला—'कडपल्ल त्ति वा तणपल्ल त्ति वा धन्नसालत्ति वा वलय त्ति वा एगट्ठा' (बृचू प १४१)।

कडप्प—१ निकर, समूह (बृटी पृ ५४; दे २।१३)। २ वस्त्र का एक भाग (वृ)।

कडयडाविअ—कड़-कड़ आवाज से चबा जाना (कु पृ ६८)।

कडला—पैर का आभूषण (जंबूटी प १०६)।

कडवय—समूह (बृटी पृ ५४)।

कडवल्ल—१ बांस की टोकरी (निचू ४ पृ १९२)। २ सूखे मांस से बना भोज्य—'मंसा सुक्खाविंति सुक्खस्स वा कडवल्ला कता' (आचू पृ ३३५)।

कडसक्करा—बांस की शलाका—'बहवे लोहखीलाण य कडसक्कराण य चम्मपट्टाण य' (विपा १।६।२०)।

कडसो—श्मशान (दे २।६)।

कडार—नालिकेर, नारियल (दे २।१०)।

कडाली—घोड़े के मुख को बांधने का उपकरण-विशेष (अनु ३।५२)।

कडाहक—कडाही (अंवि पृ २१४)।

कडाहपल्हत्थिअ—दोनों पार्श्वों को बदलना, दोनों पार्श्वों का अपवर्तन (दे २।२५)।

कडिक—खिड़की (अंवि पृ २९)।

कडिखंभ—१ कमर पर रखा हुआ हाथ (दे २।१७)। २ कमर पर किया हुआ आघात—'कडिखंभो कटीन्यस्तो हस्तः। कट्याघात इति केचित्' (वृ)।

कडिण—तृण-विशेष (सू २।२।४)।

कडिल्ल—१ मांड आदि पकाने का बर्तन (उपा २।२१)। २ तवा—'तत्तकडिल्ले व जह बिंदु' (पंक १८७४)। ३ गहन (बृभा ५५९६; दे २।५२)। ४ कटीवस्त्र (जीविप पृ ५३; दे २।५२)। ५ द्वारपाल। ६ शत्रु। ७ आशीर्वाद। ८ जंगल। ९ निश्छिद्र (दे २।५२)। १० गहन-प्रदेश (व्यभा ४।१ टी प ६०)।

कडिल्लक—लोहे का बड़ा पात्र (पिटी प १५८)।

कडिल्लग—अटवी, जंगल—'सो अभिमुहेति लुद्धो संसारकडिल्लगम्मि अप्पाणं' (पंक २३७८)।

कडिल्लय—कटि-वस्त्र—'अहवा रज्जसि पावे एयं पि कडिल्लयं णत्थि' (कु पृ ८१)।

कडिल्लक—लोहे का बड़ा पात्र (प्रसाटी प १५३)।

कडुआल—१ घण्टा। २ छोटी मछली (दे २।५७)।

कडुइया—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।

कडुच्छ—चम्मच (भ ५।१८६)।

कडुच्छय—चम्मच (भ ११।५६)।

कडुच्छिका—कर्छी डोई (ओटी प १६६)।

कडुच्छुग—कर्छी (जंबू १।४०)।

कडुच्छुत—चम्मच—'कडुच्छुते घयं ताविज्जति' (निचू २ पृ २५१)।

कडुच्छुय—चम्मच (अनुद्वा ३६२)।

कडुभ—कूब, पीठ का उभरा हुआ भाग (निचू २ पृ १६१)।

कडुभंड—मसाला—'वेसणं कडुभंडं जीरयं' (निचू २ पृ २५)।

कडुमाय—पशु-विशेष (अंवि पृ ६२)।

कडुय—अपराधी को दंड का निर्देश देनेवाला—'कडुओ उ दंडकारी' (बृभा ३५७६)।

कडुयाल—छोटी मछली (पा ३०१)।

कडुयालय—छोटी मछली (कु पृ १६१)।

कडुहुंड—भोजन में प्रयुक्त सामग्री-विशेष—तत्थ भोयणे उवउज्जंति कडुहुंडाइं' (आवचू १ पृ २८०)।

कडूकोका—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

कडेवर—१ शरीर (भटी पृ १२६०)। २ निश्चेतन देह, शव। ३ द्वीन्द्रिय आदि जीव (भटी पृ १३७१)।

कड्ढण—तृण-विशेष (निचू २ पृ ४३०)।

कढ—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

कढिआ—कढी—'तक्कोल्लणसूवकंजिककढियाई' (पिनि ६२४; दे २।६७)।

कढिण—तृण-विशेष (आवचू २ पृ १२७)।

कढिणग—तृण-विशेष (प्र ८।१०)।

कढिय—कढ़ी, खाद्य पदार्थ विशेष (जीभा ३६४)।

कणइअ—१ आर्द्र, गीला। २ किया हुआ। ३ चित्रित। ४ कण-धान्य से आकीर्ण (दे २।५७)।

कणइल्ल—शुक, तोता (दे २।२१)।

कणई—लता (दे २।५)।

कणंगर—पाषाणमय लंगर (विपा १।६।१७)।

कणक—बाण—'नाराय-कणक-कप्पणि-वासि-परसु' (प्र १।२८)।

कणकाली—अस्तर-विशेष (ज्ञाटी प १६)।

कणग—१ ग्रह-विशेष—'कणगा गिम्हे सिसिरे पंच वासासु सत्त उवहणंति' (निचू ४ पृ २४५)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

कणय—१ बाण (भ २।८६; दे २।५६)। २ बिल्व, बेल (उशाटी प १४२)। ३ अवचय, फूलों का चुनना (दे २।५६)।

कणयंदी—पाटला, पाढर वृक्ष (दे २।५८ वृ)।

कणिआरिअ—कटाक्ष, टेढी नजर से देखना, कानी आंख से देखना (दे २।२४)।

कणिक्क—मत्स्य की एक जाति (जीवटी प ३६)।

कणिक्का—समित, आटा—'समिता-कणिक्का सा महुघएहि तुप्पेउं मद्दिउं च भगंदले छुभति ते किमिया तत्थ लग्गंति' (निचू १ पृ १००)।

कणिस—शस्य का तीक्ष्ण अग्रभाग (उपाटी पृ ९६; दे २।६)।

कणिसवाया—धान्य का अग्रभाग (कु पृ १५३)।

कणी—फडकना, धड़कना (पा ९८५)।

कणुय—१ त्वक् का अवयव-विशेष। २ गुठली का तुषरहित अवयव (आचू पृ ३४०)।

कणेरु—हथिनी (अंवि पृ ६९)।

कणोड्डिआ—गुंजा, घुङ्गची (दे २।२१)।

कणोवअ—गरम किया हुआ जल, घृत, तैल आदि (दे २।१६)।

कण्ण—१ गोल आकृति—'जहानामए कण्णावली य गोलावली य वट्टावली य' (अनु ३।३९)। कण्णे—गोला, गोलाकृति (कन्नड़)। २ कोण (निचू १ पृ ९९)।

कण्णंबाल—कान का आभूषण, कुण्डल आदि (दे २।२३)।

कण्णच्छुरी—गृहगोधा, छिपकली (दे २।१९)।

कण्णत्तिय—खेचर पंचेन्द्रिय प्राणी-विशेष (जीवटी प ४१)।

कण्णरोडय—कानों को बहरा करने वाला (शब्द)—'सो तीसे कण्णरोडयं असहंतो भणति' (आवहाटी १ पृ ६०)।

कण्णविखोड—कान खींचना (बृटी पृ १५२३)।

कण्णस्सरिअ—कानी नजर से देखना, कटाक्ष (दे २।२४)।

कण्णाआस—कान का आभूषण, कुण्डल आदि (दे २।२३)।

कण्णाइंधण—कान का आभूषण, कुंडल आदि (दे २।२३)।

कण्णाउडय—कान मरोडना—'कुंभकारेण तस्स खुड्डगस्स कण्णाउडओ दिण्णो' (आवचू १ पृ ६१४)।

कण्णाकण्णि—आकंठ—'कण्णाकण्णि भरिते' (निचू ४ पृ १५६)।

कण्णास—पर्यन्त, अन्त भाग (दे २।१४)।

कण्णासय—पर्यन्त—'रच्छाकण्णासयम्मि दट्ठूण' (दे २।१४ वृ)।

कण्णाहड—कर्णाकर्णिकया—'अम्हं आयरियाणं सुतीए कण्णाहडं च सोउं जे' (ति ७०७)।

कण्णाहाडिय—कानों से गुपचुप सुनकर जान लेना—'तेण तेसिं पासओ विज्जा कण्णाहाडिया' (आवहाटी १ पृ २७४)।

कण्णाहेडित—कान लगाकर सुनना—'गुरुसमीवातो तेणागतं, ण कण्णाहेडितं' (अनुद्वाचू पृ ८)।

कण्णिवल्लि—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ५)।

कण्णु—मकान का अग्रभाग आदि (?)—'तत्थ जूयं खेल्लिमो, खत्तं खणिमो कण्णुं तोडिमो, पंथं मूसिमो' (कु पृ ५७)।

कण्णोच्छडिया—१ दत्तकर्णा, ध्यानपूर्वक सुनने वाली स्त्री। २ प्रत्युत्तर करने के लिए दूसरे की बात को पकड़ने वाली (दे २।२२)।

कण्णोडिया—नीरंगिका, घुंघट, आवरण (दे २।२०)।

कण्णोड्डी—घुंघट, नीरंगिका—'मुंच कण्णोड्डिं' (दे २।२० वृ)।

कण्णोढत्ती—१ दत्तकर्णा, ध्यानपूर्वक सुनने वाली स्त्री। २ प्रत्युत्तर करने के लिए दूसरे की बात को पकड़ने वाली (दे २।२२)।

कण्णोल्ली—१ चोंच। २ अवतंस, कलंगी (दे २।५७)।

कण्णोस्सरिअ—१ कानी नजर से देखना, कटाक्ष, टेढ़ी नजर से देखना (दे २।२४)। २ टेढ़ी नजर से देखा हुआ (वृ)।

कण्ह—१ वल्ली-विशेष, जटामासी (प्रज्ञा १।४०)। २ हरित वनस्पति-विशेष, कृष्ण तुलसी (प्रज्ञा १।४४)।

कण्हगुलिका—बिलाशयी जंतु-विशेष—'तत्थ बिलासयेसु कण्हगुलिका सेतगुलिका खुल्लिका' (अंवि पृ २२६)।

कण्हाकडभु—वनस्पति-विशेष (भ २३।१)।

कण्हाल—काली मिट्टी की भूमी—'जहा कण्हाले जं पाणियं पडति तं ण कतोवि ओलुटति' (आवचू १ पृ १२१)।

कण्हुइ—१ कुतश्चित्, कहीं भी (उ १।७)। २ किंचित् (दशचू प ६१)।

कण्हेरी—मादा पशु-विशेष (अंवि पृ ६६)।

कतवार—तृण आदि का समूह (दे २।११)।

कत्ता—अन्धिका द्यूत की कपर्दिका, कौड़ी (दे २।१)।

कत्तोइ—कहीं (विपाटी प ८३)।

कत्थइ—क्वचित् (प्रा २।१७४)।

कत्थभाणी—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३४)।

कत्थलायण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

कत्थूल—गुल्म-विशेष (जीव ३।५८०)।

कदुक्का—नालिकाक्रीड़ा (सूचू १ पृ १७६)।

कद्दमिअ—महिष, भैंसा (दे २।१५)।

कद्दुइय—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।२)।

कनंगर—पाषाणमय लंगर (विपाटी प ७१)।

कन्न 'लइअ'—कानों में पहिना हुआ, कानों में पिनद्ध (पिनि ५६१)।

कन्नामोडि—कान मरोड़ना, कान खींचना (बृचू प २०६)।

कन्नारोडग—कानों को बहरा करने वाला (शब्द) (आवचू १ पृ ११०)।

कन्नारोडय—कानों के लिए अवरोधक, रोड़ा (बृटी पृ ५३)।

कन्नोली—कान का आभूषण (पा ८४)।

कपिह—दुष्ट घोड़ा (उचू पृ ३०)।

कप्पट्ठ—१ बच्चा (व्यभा ७ टी प ४०)। २ ईश्वर—पुत्र, धनिक-पुत्र (व्यभा ४।२ टी प ३७)।

कप्पट्ठग—बच्चा (निभा ३८०)।

कप्पट्ठिया—श्रेष्ठिवधू। २ कुलपुत्री (स्थाटी प २५३)।

कप्पट्ठी—१ तरुण स्त्री (बृभा १८४२)। २ बालिका (व्यभा ४।४ टी प १२)। ३ कुलवधू (व्यभा ४।३ टी प ५२)।

कप्पड—कपड़ा, वस्त्र (प्रसा ४३४)।

कप्पणिय—जाति-विशेष—'मुरुंडोड्डगोडकप्पणिया' (कु पृ ४०)।

कप्पयारी—दासी—'दासीओ कप्पयारीउ त्ति' (सूचू १ पृ २०१)।

कप्परिअ—विदारित, फाड़ा हुआ (दे २।२०)।

कप्पाग—डंडा, शस्त्र-विशेष—'सो य मणिप्पहं कप्पागं मग्गइ' (आवहाटी २ पृ १४०)।

कप्पासट्ठिमिंज—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१३८)।

कप्पासट्ठिसंमिंजिय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

कप्फाड—कंदरा, गुफा (पा ६६८)।

कफाड—गुफा, गुहा (दे २।७)।

कब्बट्ठ—बालक—'कल्पस्थः समयपरिभाषया बालक उच्यते' (बृभा ८६५ टी)।

कब्बट्ठी—१ तरुण स्त्री (बृभा १८४२)। २ छोटी लड़की—'इह समयपरिभाषया कब्बट्ठी लघ्वी दारिका भण्यते' (पिटी प ६१)।

कब्बाल—ठेके पर भूमि खोदने वाला—'चत्तारि भयगा पण्णत्ता, तं जहा—दिवसभतए····कब्बालभयए' (स्था ४।१४७)।

कभल्ल—१ मिट्टी का पात्र-विशेष, खप्पर—'भज्जणयकभल्लेइ वा' (अनु ३।३७)। २ खोल, कपाल—'यथा कच्छभो·····अंगाणि कभल्ले संहरति' (दअचू पृ १६५)।

कभेइका—कृमि-जाति (अंवि पृ ७०)।

कम—मार्ग—'भणंति आयरिया—वेण्णे ! कमं देहि त्ति' (निचू ३ पृ ४२५)।

कमढ—१ मैल—'जल्लो तु होति कमढं' (निभा १५२२), 'खरंटो उ जो मलो तं कमढं भण्णति' (निचू २ पृ २२१)। २ साध्वियों का पात्र-विशेष (पंव ७६०)। ३ दही की कलशी। ४ बलदेव। ५ मुख, मुंह। ६ पिठर, स्थाली (दे २।५५)। ७ कच्छप (व्यभा ३ टी प ६२)।

कमढग—पात्र-विशेष (व्य २।२६)।

कमढय—पात्र-विशेष—'लेपिततुम्बकभाजनरूपं कांस्यमयबृहत्तरकरोटिकाकारमेकैकं संयतीनां निजोदरप्रमाणेन विज्ञेयम्' (प्रसाटी प १२५)।

कमढित—घूर्णित, निमग्न—'निद्दाकमढितो जोण्हं मण्णमाणो दिवा' (निचू ३ पृ २६७)।

कमणिल्ल—जूते पहने हुए (निभा ६२५)।

कमणी—निःश्रेणी, सीढी (दे २।८)।

कमल—१ हरिण, मृग (अनुद्वहाटी पृ १६; दे २।५४)। २ पिठर, स्थाली। ३ पटह, ढोल। ४ मुख, मुंह (दे २।५४)। ५ झगड़ा।

कमिअ—उपसर्पित, पास आया हुआ (दे २।३)।

कमेडु—छिपकली, गिलहरी (?)—'एमेव अडति बोडो लुक्कणिलुक्को जह कमेडो' (जीभा १२३७)।

कम्मण—कंकड आदि (अंवि पृ ५)।

कम्मिअ—माली, मालाकार (दे २।८)।

कयंत—भाग्य (प्र ३।२४)।

कयग—कैतव, माया (निभा २१७४)।

कयल—अलिंजर, पानी भरने का बड़ा घड़ा (दे २।४)।

कयवर—कचरा (आ १।८५)।

कयार—१ कचरा (बिभा ११६७; दे २।११)। २ धूल—'कयारो त्ति व जो वूया·····धूली रयो त्ति रेणु त्ति' (अंवि पृ १०६)।

कयाह—उत्तम जाति का अश्व (कु पृ २३)।

करइल्ली—शुष्क वृक्ष, सूखा पेड़ (दे २।१७)।

करंक—१ बड़ा बर्तन (सूचू १ पृ ११६)। २ भिक्षापात्र। ३ अशोक वृक्ष (दे २।५५)।

करंज—१ एक अस्थि वाला वृक्ष-विशेष (प्रज्ञा १।३५)। २ सूखी छाल (दे २।८)।

करंडय—पीठ के पास की हड्डी—'अणगारस्स पिट्ठिकरंडयाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था' (अनु ३।३६)।

करंडुक—पीठ के पास की हड्डी (प्रटी प ८४)।

करंडुय—पीठ के पास की हड्डी (जंबू २।४७)।

करक—शव—'उक्खित्तं तं करकं' (कु पृ २२५)।

करकर—१ तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)। २ अत्यंत व्यक्त (शब्द) (आवहाटी १ पृ १६५)।

करकराण—करकर शब्द करना (व्यभा ४।३ टी प १६)।

करकी—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।

करगिल्ल—पात्र (आवमटी प ३६७)।

करघायल—दूध का विकार, मावा (दे २।२२)।

करच्छोडिया—ताली बजाना—'दिन्ना य करच्छोडिया' (उसुटी प २८)।

करटिका—वाद्य-विशेष (नंदीटि पृ ६६)।

करड—१ श्राद्ध-विशेष—'सिवढोढसिवाइ करडं वा' (निभा ३४८३)। २ व्याघ्र। २ चितकबरा (दे २।५५)।

करडयभत्त—मृतभोज, श्राद्ध-विशेष (आचू पृ ३३५)।

करडा—चिड़िया (दे २।५५ वृ)।

करडाक—धूम्रपान का साधन (अंवि पृ २५४)।

करडि—वाद्य-विशेष (जंबूटी प १००)।

करडुयभत्त—मृतभोज (पिनि ४६४)।

करणि—१ शपथ, सौगंध—'अण्णहा तेहिं भणितो—मज्जे णिज्जीवे को दोसो ? तेहिं य सो भणंतेहिं करणिं गाहितो लज्जमाणो एगंते परेण आणियं पियति' (निचू ३ पृ ५२१)। २ क्रिया, कर्म (आवचू २ पृ २८१)। ३ सादृश्य, समानता—'तेण चाणक्कभज्जा ओलग्गिता, ताहे सो करणिं गाहितो····' (आवहाटी २ पृ २१८)। ४ रूप, आकार (दे २।७)। ५ अनुकरण। ६ स्वीकार।

करणी—आकार, रूप (पा ७८६)।

करदुय—मृत्यु के उपलक्ष में किया जाने वाला भोज—'मरणे त्ति करदुयादीणि कारवेइ वा' (आचू पृ १६)।

करधाण—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ १८७)।

करम—क्षीण, दुर्बल (दे २।६)।

करमंद—१ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३१)। २ फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

करमद्द—गुच्छवनस्पति, करौंदा (प्रज्ञा १।३७।४)।

करमरिअ—बलात् अपहृत स्त्री (पा २१२)।

करमरी—अपहृत स्त्री (दे २।१५)।

करयंदी—मल्लिका, मोगरा (दे २।१८)।

करयडी—स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा (दे २।१६ वृ)।

करयरी—स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा (दे २।१६)।

करल—भोजन से संबंधित रोग-विशेष—'सव्वाहारगते खंडोट्ठं वा गुरुलं वा करलं वा बूया' (अंवि पृ २०३)।

करह—धनुष का वह भाग जहां प्रत्यंचा आरोपित होती है (पिटी प २०)।

कराइणी—शाल्मली वृक्ष, सेमल का पेड़ (दे २।१८)।

कराटिया—मिट्टी का बर्तन (ज्ञाटी प ११७)।

करायणी—शाल्मली वृक्ष (दे २।१८ वृ)।

करालो—दतवन, दतौन (दे २।१२)।

करिआ—मदिरा परोसने का पात्र (दे २।१४)।

करिण्हुका—उद्भिज्ज जंतु-विशेष (अंवि पृ २२९)।

करिमअर—जलहस्ती (से ५।५७)।

करिलेग—करील वृक्ष, करील (अंवि पृ २३८)।

करिल्ल—१ वंशांकुर, बांस का कोपड़ (दे २।१०)। २ अंकुर (अनु ३।३५)। ३ करैला (विभा २९३)। ४ करील वृक्ष। ५ वंशांकुर के समान।

करुल्ल—कपाल, खप्पर, फूटे घड़े का टुकड़ा—'गोवालाणं जेणं जं करुल्लं आसाइयं सो तत्थ पजिमिओ' (आवहाटी १ पृ १३४)।

करेडु—कृकलास, गिरगिट (दे २।५)।

करेडुयभत्त—मृतभोज—'वणियकुले मयकिच्चं करेडुयभत्तं' (निचू ३ पृ ४१८)।

करोड—१ कटोरा (निभा ३२८३)। २ नारियल। ३ कौआ। ४ बैल (दे २।५४)।

करोडक—कटोरा (अंवि पृ ६५)।

करोडय—पात्र-विशेष (सूचू १ पृ ११८)।

करोडि—परोसने का एक उपकरण (जीवटी प १४६)।

करोडिया—मिट्टी का पात्र (भ २।३१)।

करोडी—१ एक प्रकार की चींटी (दे २।३)। २ शव। ३ भाजन-विशेष, कटोरी (अंवि पृ ७२)।

कलअ—१ फली (आचू पृ ३४१)। २ अर्जुन वृक्ष। ३ स्वर्णकार (दे २।५४)।

कलंक—१ बांस की बनाई हुई जालीदार बाड़ (ज्ञा २।१।१९)। २ बांस (दे २।८)।

कलंकल—अनिष्ट, अशुभ—'कम्मकलंकलवल्लिं छिंदइ संथारमारूढो' (महा १३०)।

कलंकवई—वृति, बाड़ (दे २।२४)।

कलंबचीरपत्त—एक प्रकार का शस्त्र—'खुरपत्ताण य कलंबचीरपत्ताण य' (विपा १।६।१९)।

कलंबचीरिया—तृण-विशेष जिसका अग्रभाग अत्यंत तीक्ष्ण होता है (जीव ३।८५)।

कलंबु—नालिका नाम की वल्ली (दे २।३)।

कलंबुया—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

कलकल—चूने से मिश्रित जल—'अप्पेगइया कलकलभरिएहिं अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति' (विपा १।६।८)।

कलम—१ उत्तम चावल (जीभा ३६८)। २ चना—'कलमो चणगो भण्णति' (निचू १ पृ ७०)। ३ चोर (पा १२४)।

कलमल—दुर्गन्ध, अशुचि (तंदु १४६)।

कलयंदि—१ पाटला, पाढर वृक्ष। २ विख्यात (दे २।५८)।

कलव—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

कलवू—तुम्बी-पात्र (दे २।१२)।

कलह—तलवार की म्यान (दे २।५)।

कलहिभी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३८)।

कलाय—सुवर्णकार (प्रटी प ३०)।

कलाल—१ घोड़ों की देखरेख करने वाला (आवहाटी २ पृ ६८)। २ मदिरा बनाने-बेचने वाला (अनुद्वाहाटी पृ ७२)।

कलासिक—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६)।

कलि—शत्रु (दे २।२)।

कलिअ—१ अभिमानी। २ नेवला, नकुल। ३ मित्र, सखा (दे २।५६)।

कलिआ—सखी (दे २।५६ वृ)।

कलिओअ—वह युग्म-राशि जिसमें एक शेष रहता है—'एगपज्जवसिए कलिओए' (आटी प १३)।

कलिंच—बांस की खपाची (नि १।२)।

कलिंचि—तृणपूलिका—'कलिंचि त्ति तणपूलिया इति विशेषचूर्णौ' (बृटी पृ ४४३)।

कलिंज—१ बांस की टोकरी—'कलिंजो णाम वंसमयो कडवल्लो सट्टती वि भण्णति' (निचू ४ पृ १६२)। २ छोटी लकड़ी (दे २।११)।

कलिंदक—गाय आदि पशुओं का भोजन-पात्र (प्रसाटी प २७)।

कलिंब—सूखी लकड़ी (कु पृ १७६)।

कलिग—कंगण (उचू पृ १७६)।

कलिम—नीलकमल (दे २।६)।

कलिमाजक—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

कलुय—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

कलेर—१ कंकाल। २ भयंकर (दे २।५३)।

कलोवाइ—पात्र-विशेष (आचूला १।२१)।

कल्किक—मांस (सूचू १ पृ २०१ टि)।

कल्पिक—मांस—'मांसं कल्पिक इत्यपदिश्यते' (सूचू १ पृ २०१)।

कल्ल—बीता हुआ कल—'गयसुकुमालेणं अणगारेणं ममं कल्लं पच्चावरण्ह-कालसमयंसि वंदइ नमंसइ' (अंत ३।१०१)।

कल्लविअ—१ भिगोया हुआ, आर्द्रित। २ विस्तारित (दे २।१८)।

कल्ला—मद्य (आवचू २ पृ २६७; दे २।२)।

कल्लाकल्लि—१ प्रतिदिन (ज्ञा १।८।४१)। २ प्रातःकाल (विपाटी प ८६)।

कल्लाडक—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।

कल्लाण—१ वृक्ष-विशेष (आचू पृ ३४१)। २ चक्रवर्ती का आहार-विशेष (निभा ५७२)।

कल्लाणग—चक्रवर्ती का आहार-विशेष—'कल्लाणगं णाम आहारो' (निचू २ पृ २१)।

कल्लाल—कलाल, मदिरा बेचनेवाला (जीभा ४२६)।

कल्लुग—नुकीला—'कोंकणविसए णदीसु अंतो जलस्स कल्लुगा पासाणा भवंति' (निचू ३ पृ ३७०)।

कल्लूरिका—मिष्ठान्न, मिठाई (आवमटी प ३६०)।

कल्लेउय—कलेवा—'कल्लेउयं च करेइ' (ओटी प १७२)।

कल्लोल—शत्रु (दे २।२)।

कल्हार—सफेद कमल (प्रज्ञा १।४६)।

कल्होड—बछड़ा (दे २।६)।

कल्होडक—बछडा (बृटी पृ ६६६)।

कल्होडी—वत्सतरी, बछिया (दे २।६)।

कवचिका—उपकरण-विशेष (अंवि पृ ७२)।

कवचिया—पात्र-विशेष (भ ११।१५६ पा)।

कवय—वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र (दे २।३)।

कवल—प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६४)।

कवल्ल—१ तवा—'तत्तंसि अयकवल्लंसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा' (भ ३।१४८)। २ कडाही (सू १।५।१५)।

कवल्लि—कडाह—'डज्झंतेण वि गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूयाए' (सं ११६)।

कवल्ली—१ पकाने का भाजन-विशेष (विपा १।३।२)। २ कडाह (अंवि पृ ७२)।

कवल्लुय—कडाही (ति ६५१)।

कवल्लूर—कडाही (सूचू २ पृ ४४४)।

कवास—अर्धजंघा, एक प्रकार का जूता (दे २।५)।

कविचिया—पात्र-विशेष, कलाचिका (भ ११।१५६)।

कविड—घर का पिछला आंगन (दे २।६)।

कविल—कुत्ता (दे २।६)—'अलस! ण लज्जसि कविलोव्व कडसीए' (वृ)।

कविल्ली—पात्र-विशेष (अनुद्वामटी प १४६)।

कविल्लुय—कडाही (आचू पृ ३७३)।

कविस—मद्य, मदिरा (दे २।२)।

कविसा—अर्धजंघा, एक प्रकार का जूता (दे २।५)।

कवेली—पात्र-विशेष (अनुद्वाचू पृ ५४)।

कवेल्लक—लोहे का पात्र-विशेष (भ ३।४८)।

कवेल्लुअ—खपरैल (स्था ८।१०)।

कवेल्लुग—१ तवा (जंबू २।१४१)। २ खपरैल, खापड़ (आचू २ पृ २३)।

कवेल्लुय—कडाही (जंबूटी प २२)।

कवोडी—कांवर (निचू ३ पृ २१३)।

कव्व—१ पानी उलीचने का पात्र-विशेष—'उत्तिंगादिणावाए चिट्ठमुदगं अण्णयरेण कव्वादिणा उस्सिचणएण उस्सिचइ' (निचू ४ पृ २०६)। २ मांस।

कव्वय—काष्ठपात्र—'कव्वयं तं पि कट्ठमयं (पत्तं)' (निचू ३ पृ ३४३)।

कव्वाड—१ ठेके पर भूमि खोदने वाला (स्था ४।१४७ पा)। २ दाहिना हाथ (दे २।१०)।

कव्वाल—१ ठेके पर भूमि खोदने वाला—'कव्वालो खितिखणतो उड्डमादी' (निचू ३ पृ २७३)। २ कर्म-स्थान, प्रवृत्ति का स्थान। ३ घर (दे २।५२)।

कसई—अरण्यचारी वनस्पति का फल (दे २।६)।

कसक—बिल में रहने वाला जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

कसकी—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।

कसट्ट—कचरा (ओनि ५५७)।

कसणसिअ—बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई (दे २।२३)।

कसर—खुजली (भ ७।११६)। २ अधम बैल (दे २।४)।

कसरक्क—१ चर्वण-शब्द—'खज्जइ न उ कसरक्केहिं' (प्रा ४।४२३)। २ फूल की कली।

कसरि—मिष्ठान्न-विशेष (अंवि पृ १७६)।

कसव्व—१ अल्प। २ आर्द्र, गीला। ३ प्रचुर। ४ वाष्प, भाप (दे २।५४)। ५ कर्कश।

कसिआ—अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल (दे २।६)।

कसित—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १४६)।

कसुग—हीन वचन—'भणंति कक्कसकसुगादीणि वा' (सूचू १ पृ २२१)।

कसोति—खाद्य-विशेष—'महाहिं कसोतिं भोच्चा कज्जं संधेंति' (सूर्य १०।१७)।

कस्स—कर्दम (दे २।२)।

कस्सय—उपहार, भेंट (दे २।१२)।

कहकहग—'कह-कह' की आवाज, खुशी की आवाज (राज २८१)।

कहक्कह—अट्टहास—'चलणे देहे पत्थर, सविगार कहक्कहे लहुओ' (बृभा ६३१६)। २ आनन्द की ध्वनि (ति १३५)।

कहल्ल—खप्पर, कपाल—'चियथाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खइरिंगाले कहल्लेणं गेण्हइ' (अंत ३।८६)।

कहितेल्लय—कहा (आवचू १ पृ २३३)।

कहेड—तरुण (दे २।१३)।

कहेडय—तरुण (दे २।१३ वृ)।

काअ—१ लक्ष्य बींधने योग्य। २ उपमानभूत पदार्थ या व्यक्ति (दे २।२६)।

काइणी—गुंजा, लाल रत्ती (दे २।२१)।

काइय—मूत्र—'सण्णं काइयं च वोसिरंति' (आवहाटी १ पृ १४५)।

काउ—कांवर (निभा १४८६)।

काउंबरि—१ बहु बीज वाली वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३६)। २ औषधि-विशेष (कु पृ ८६)।

काउडी—कांवर (आवचू २ पृ ५५)।

काउड्डावण—उच्चाटन, मंत्र-तंत्र से पर-शरीर को आकृष्ट करना—'कम्मजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा' (ज्ञा १।१४।४३)।

काउल्ल—बक, बगुला (दे २।६)।

काउल्ली—बगुली (सूचू १ पृ ५६)।

काओलि—वनस्पति-विशेष (भ २३।८)।

कांचनिया—रुद्राक्ष की माला (ज्ञाटी प ११७)।

काकंडक—वर्ण-विशेष (अंवि पृ १०५)।

काकणि—१ छोटे-छोटे टुकड़े—'काकणिमंसाइं खावेंति' (विपा १।३।१४)। २ राज्य—'काकणि क्षत्रियभाषया राज्यम्' (विभामहेटी १ पृ ३४६)।

काकमज्जुक—काले रंग का पक्षी-विशेष (अंवि पृ २२५)।

काकुंथिका—उद्भिज्ज जन्तु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

काकुरुडी—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

कागणि—१ कांगनी, वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)। २ राज्य—'राय-पुत्ताणं रज्जं कागणि भण्णति' (अनुद्वाहाटी पृ ११)।

कागिणी—राज्य—'रज्जं कागिणी भण्णति' (निचू २ पृ ३६२),
'चंदगुत्तपवोत्तोउ, बिंदुसारस्स णत्तुओ।
असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायति कागिणिं॥'
(अनुद्वाहाटी पृ ११)।

काण—१ सच्छिद्र, खाया हुआ (आचू पृ ३४१)। २ चुराया हुआ।

काणइल्ल—प्रातिहारिक (आवहाटी १ पृ १३४)।

काणक—१ चुराई हुई वस्तु (प्रसाटी प २३२)। २ न्यून (प्रटी प ५८)।

काणग—१ सच्छिद्र (आचूला १।११६)। २ चुराई हुई वस्तु (प्रसा ७६६)।

काणच्छि—कटाक्ष, टेढी नजर से देखना (निभा ५१४४; दे २।२४)।

काणच्छिया—टेढी नजर से देखने की क्रिया—'काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेइ' (आवहाटी १ पृ १४६)।

काणटिट्टि—कृमि जाति का प्राणी (अंवि पृ ७०)।

काणत्थेव—विरल जल-वृष्टि, बूंद-बूंद बरसना (दे २।२६)।

काणद्धी—परिहास (दे २।२८)।

काणवी—लता-विशेष (अंवि पृ ७०)।

काणिट्ट—लोहे की ईंट (पंक १०७६)।

काणिय—कीट द्वारा खाया हुआ—'घुणकाणियं अंगारइयं वा वुत्तयं' (निचू ४ पृ ६६)।

कातरिया—माया—'कातरिया णाम माया' (सूचू १ पृ ५५)।

कातोदूक—मंगूस की एक जाति (अंवि पृ २२६)।

कानंगर—पाषाणमय लंगर (विपाटी प ७१)।

काम—खेचर पक्षी-विशेष (जीवटी प ४१)।

कामकिसोर—गर्दभ, गधा (दे २।३०)।

कामगद्दभ—काम-प्रवृत्त—'अवि कामगद्दभेसु वि ण णासए किं पुण जतीसु' (निभा ४४२१)।

कामजल—स्नान-पीठ—'कामजलं ण्हाणपीढं' (निचू ३ पृ ३७८)।

कामज्जेग—जलकाक, बतख (सूचू १ पृ १५८)।

कामिंजुल—जल-पक्षी-विशेष (दे २।२६)।

कामेयग—लोमपक्षी (जीवटी प ४१)।

काय—१ कुहन वनस्पति-विशेष (भ २३।४)। २ वस्त्र-विशेष (नि १७।१२)। ३ कांबर, कापोतिका (बृभा २७८३)। ४ कायस्थ जाति (कु पृ ४०)।

कायंचुल—कामिञ्जुल, जल-पक्षी-विशेष (दे २।२६)।

कायंदी—परिहास, उपहास (दे २।२८)।

कायंधुअ—कामिञ्जुल, जल-पक्षी-विशेष (दे २।२६)।

कायक—इन्द्रनीलवर्ण वाले कपास से निष्पन्न वस्त्र-विशेष (आचूला ५।१४)—'क्वचिद्देशे इन्द्रनीलवर्णः कर्पासो भवति तेन निष्पन्नानि कायकानि' (टी प ३६३)।

कायपिउच्छा—कोकिला, कोयल (दे २।३०)।

कायमाइ—गुच्छ वनस्पति-विशेष, काकमाची (प्रज्ञा १।३७।२)।

कायमाण—तृणकुटी—'तेहि रण्णो कायमाणं कयं' (ओटी प ४६)।

कायर—१ प्रिय, स्नेहपात्र—'केचित् प्रिये कायरो इत्याहुः' (दे २।५८ वृ)। २. पक्षी-विशेष (अंवि पृ ६२)।

कायल—१ प्रिय, स्नेहपात्र। २ कौआ (दे २।५८)।

कार—कटु, कड़वा, तीता (दे २।२६)।

कारंकड—परुष, कठिन (दे २।३०)।

कारंकडअ—परुष, कठिन (दे २।३० वृ)।

कारा—रेखा (दे २।२६)।

कारिअल्लिका—करैले की लता (अंवि पृ ७०)।

कारिम—कृत्रिम, बनावटी, नकली (दे २।२७)।

कारियल्ल—करैला की वल्ली (प्रज्ञा १।४०।२)।

कारियल्लई—वल्ली-विशेष, करैला का गाछ (प्रज्ञाटी प ३३)।

कारिया—करैले का गाछ, गुच्छवनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)।

कारेल्लय—करैला (अनु ३।५०)।

कारेल्ला—करैला (अनुटी पृ ६)।

कारोडिय—कापालिक—'....लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया' (भ ६।२०८)।

काल—१ काला, अन्धकार (विपा १।८।१२; दे २।२६)। २ पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

कालअ—धूर्त, ठग (दे २।२८)।

कालंची—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।

कालवट्ठ—धनुष (दे २।२८)।

कालाडग—मत्स्य की जाति (अंवि पृ ६३)।

कालापरण्णपिंडि—खाद्य-विशेष (अंवि पृ ५)।

कालिआ—१ शरीर। २ कालान्तर। ३ मेघ (दे २।५८)।

कालिंग—तरबूज की वल्ली (अंवि पृ २३६)।

कालिंगी—जंगली तरबूज की बेल (प्रज्ञा १।४०।१)।

कालिंजण—तमाल का वृक्ष (दे २।२६ वृ)।

कालिंजणी—तमाल की लता (दे २।२६)।

कालिब—१ शरीर। २ मेघ (दे २।५६)।

कालियवाय—प्रतिकूल वायु—'थणियसद्दे कालियवाए जाव समुट्ठिए' (ज्ञा १।६।६)।

काली—१ तृण-विशेष। २ काकजंघा नामक तृण—'काली नाम तृणविशेषो, केइ काकजंघां भणंति' (उचू पृ ५३)।

कालेज्ज—१ कलेजा, हृदयवर्ती मांस-खंड (सूनि ७३)। २ तमाल वृक्ष का पुष्प (दे २।२६ वृ)।

कालेयक—फल-विशेष (अंवि पृ २३२)।

काव—कांवर वहन करने वाला (जीव ३।६१६)।

कावलिअ—असहिष्णु (दे २।२८)।

कावी—नीलवर्ण वाली (दे २।२६)।

कावेल्ली—पात्र-विशेष (अनुद्वाहाटी पृ ७६)।

कावोडि—कांवर (आवहाटी २ पृ ४४)।

कावोडी—कांवर—'बालादिसल्लविद्धवहणट्ठा कावोडी' (निचू ४ पृ १०६)।

कावोय—कांवर वहन करने वाला (अनुद्वामटी प ४२)।

कास—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।४)।

कासार—सीसकपत्र, सीसे की चादर (Lead-Sheet) (दे २।२७)।

कासिअ—१ सूक्ष्म वस्त्र। २ श्वेत वर्ण (दे २।५६)।

कासिज्ज—काकस्थल नामक देश (दे २।२७)।

काहल—१ वाद्य-विशेष (भटी पृ ८८३)। २ मृदु। ३ ठग (दे २।५८)।

काहली—तरुणी (दे २।२६)।

काहल्ली—१ प्रतिदिन उपभोग में आने वाला धान्य आदि। २ तपनी, तवी, रोटी आदि बनाने-सेकने का साधन (दे २।५६)।

काहार—१ नक्षत्र का संस्थान-विशेष (सूर्य १०।२८)। २ कहार, जल आदि लाने वाला कर्मकर (दजिचू पृ १२६; दे २।२७)।

काहिल—गोपाल, ग्वाला (दे २।२८)।

काहिल्लिआ—तवा (पा ६३६)।

काहेणु—गुंजा, लाल रत्ती (दे २।२१)।

किकाणत—कुकाटिका, गरदन का पिछला भाग (सूचू १ पृ १३८)।

किकिअ—सफेद, श्वेत (दे २।३१)।

किखाइ—फिर कैसे—'से किं खाइ णं भंते!' (भ २।१३४)—'किं खाइं ति अथ किं पुनरित्यर्थः' (भटी प १४६)।

किखाति—फिर कैसे (भटी प १४८)।

किजक्ख—शिरीष वृक्ष (दे २।३१)।

किधर—छोटी मछली (दे २।३२)।

किपअ—कृपण, कंजूस (दे २।३१)।

किंबोड—स्खलित (दे २।३१)।

किंकिकड—गिरगिट (दे २।७४)।

किंकिकडि—सर्प (दे २।३२)।

किच्चण—प्रक्षालन, धोना—'किच्चणं च पोत्ताणं' (ओनि १६८)।

किज्जर—भाजन-विशेष (अंवि पृ २२१)।

किट्ट—लोह आदि धातुओं का मल—'अट्ठिरासिसि वा किट्टरासिसि वा, तुसरासिसि वा' (आचूला १।३)।

किट्टि—विभाग-विशेष की प्रक्रिया—'किट्टयो नाम पूर्वस्पर्धकेभ्यः प्रथमादिवर्गणा गृहीत्वा विशुद्धि-प्रकर्षवशादत्यन्तहीनरसाः कृत्वा तासामेकोत्तरवृद्धिन्यासेन बृहदन्तरालतया व्यवस्थापनम्' (प्रसाटी ५ १९८)।

किट्टिका—वनस्पति-विशेष (जीव १।७३)।

किट्टिया—अनंतकाय वनस्पति विशेष (भ ७।६६)।

किट्टिस—१ ऊन आदि का शेष बचा हुआ अंश। २ एक प्रकार का सूता—'उण्णितादीणं अवधाडो किट्टिसमहवा।...साणगादयो रोमा ते सव्वे किट्टिसं भन्नति' (अनुद्धाचू पृ १५)।

किट्टी—समझा बुझा कर संभोग के लिए एकांत में ले जाई जाने वाली स्त्री (व्यभा ४।३ टी प ५७)।

किट्ठिया—अनन्तकाय वनस्पति-विशेष (भ ७।६६)।

किडि—१ वृद्ध—'किडि खुड्ड वसभा वा' (निभा ३०६०)। २ सूअर (दे २।३१ वृ)।

किडिका—खिड़की (अंवि पृ २७)।

किडिकिडिया—निर्मांस अस्थि के कारण उठने-बैठने से होने वाली ध्वनि—'निम्मंसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे' (ज्ञा १।१।२०२)।

किडिग—रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

किडिभ—कुष्ठविशेष—'किडिभं कुट्ठभेदो सरीरेगदेसे भवति' (निचू ३ पृ ३२४) —'किडिभं जंघासु कालाभं रसियं बहति' (निचू ३ पृ ६२)।

किडिभक—व्यापन्न शरीर वाला (अंवि पृ २०३)।

किडिभिल्ल—कोढी—'कच्छुल्ले किडिभिल्ले छप्पतिगिल्ले य णिल्लोम' (निभा ४०१८)।

किडिया—छोटा द्वार, खिड़की—'सावयादिभए दुवारगुत्तीकरणं तेहिं देहाहि दंडएहिं किडिया कज्जति' (निचू २ पृ ४०)।

किड्डि—वृद्धा—'अणिच्छे किड्डि सावित्रा धोवति' (निचू ३ पृ १०९)।

किड्डी—समझा बुझाकर संभोग के लिए एकांत में ले जाई जाने वाली स्त्री (व्यभा ४।३ टी प ५७)।

किढ—वृद्ध, बूढा (बृभा ४१४१)।

किढग—वृद्ध—'जह किढगाण विमोहो समुदीरति किं तु तरुणाणं' (व्यभा ७ टी प ४१)।

किढि—१ वृद्धा (निचू २ पृ ३७९)।

किढिण—तापसों का पात्र-विशेष जो बांस से बना हुआ होता है (भ ११।६४)।

किढिया—वृद्धा (निभा २२३२)।

किढी—१ काठ लाने वाली (आवहाटी १ पृ १५८)। २ वृद्धा, स्थविरा (बृभा १९५९)।

किणिक—वाद्यों को चर्म से मढने वाले शिल्पी (व्यभा ४।३ टी प २१)।

किणिकाण—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०९)।

किणिय—१ जो वादित्रों को चर्म आदि से मढने का काम करते हैं। २ जो नगर में घुमाते हुए ले जाने वाले वध्य पुरुषों के आगे वादित्र बजाते हैं (व्यभा ४।३ टी प २१)।

किणिह—कृमि की एक जाति (अंवि पृ ७०)।

किणो—क्यों, किसलिए ? (प्रा २।२१६)।

किण्ण—शोभित, सुन्दर (दे २।३०)।

किण्णि—मदिरा का मैल—'सुराए किण्णिमादिकिट्ठिसंपक्कसं' (निचू ४ पृ २२३)।

किण्ह—१ सूक्ष्म वस्त्र। २ श्वेत वर्ण (दे २।५९)।

किण्हपत्त—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

कित—चुंगी लेने वाला (व्यभा २ टी प ९५)।

किपिल्लक—प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

किपिल्लिका—कृमि की एक जाति (अंवि पृ ७०)।

किमिराय—लाख से रंगा हुआ वस्त्र (दे २।३२)।

किमिहरवसण—कौशेय वस्त्र, रेशमी वस्त्र (दे २।२३)।

कियत—चुंगी लेने वाला—'सुंकठाणेसु कियतो उवट्ठितो भणइ' (व्यभा २ टी प ९५)।

कियाडिया—कान का ऊपरी भाग—'तं चेल्लगं कियाडियाए घेत्तुं सीसे खडुक्कं दाउं····' (व्यभा १ टी प १३)।

किर—सूकर, सूअर (दे २।३०)।

किराड—खुदरा माल बेचने वाला व्यापारी (कु पृ १०६)।

किराडय—व्यापारी—'जाहि किराडयं उच्छिण्णं मग्गाहि' (आवहाटी २ पृ २२१)।

किरि—ज्येष्ठ, बड़ा—'सिरिओ वि किरि भायनेहेण कोसाए गणियाए घरमल्लियइ' (उसुटी प ३०)।

किरिहरिआ—१ कर्णोपकर्णिका, एक कान से दूसरे कान गई हुई बात। २ कुतूहल (दे २।६१)।

किरिकिरिया—बांस आदि की कम्बा से निष्पन्न वाद्य-विशेष (आचूला ११।३)।

किरीडय—रेशम का कीड़ा—'किरीडयलाला मलयविसए मयलाणि पत्ताणि कोविज्जति' (निचू २ पृ ३६६)।

किलणी—रथ्या, गली (दे २।३१)।

किलिंच—बांस की खपची (द ४।सू १८; दे २।११)।

किलिम्मिअ—कथित, उक्त (दे २।३२)।

किविड—१ खलिहान, अन्न साफ करने का स्थान। २ खलिहान में जो हुआ हो वह (दे २।६०)।

किविडी—१ पार्श्वद्वार। २ घर का पिछला आंगन (दे २।६०)।

किविल्लिका—कीट-विशेष (अंवि पृ २५३)।

किविल्लिग—क्षुद्र जन्तु (अंवि पृ २२६)।

किसोर—घोड़ी का गर्भस्थ बच्चा (निचू ३ पृ ४११)।

कीडी—चींटी—'जस्स कीडीओ खायंति उत्तमंगं' (आवदी प १६८)।

कीर—शुक, तोता (दे २।२१)।

कील—१ कंठ—'कीलेहिं विज्झंति असाहुकम्मा'—कीलेषु—कण्ठेषु (सूटी १ प १२६)। २ स्तोक, अल्प (दे २।२१)।

कीलणिआ—रथ्या, गली (दे २।३१)।

कीलणी—रथ्या (दे २।३१ वृ)।

कीला—नववधू, दुलहिन (दे २।३३)।

कुइग—दही के ऊपर का तिरता हुआ पानी—'कूचिका नाम दध्न उपरि

द्रवस्वरूपो माधुर्यशब्दतया ख्यातो वस्तुविशेषः, स च किल जीरकादिभिः संस्कृतोऽतीव स्वादुर्भवति' (आवटि प २४)।

कुउआ—तुम्बी-पात्र (दे २।१२)—'भिक्खु ! को तुह कुउअं पूरिस्सइ पिण्डवाएण' (वृ)।

कुऊल—१ नीवी, अधोवस्त्र को बांधने का नाड़ा (दे २।३८)। २ पहने हुए कपड़े का प्रांत भाग, अञ्चल—'कुऊलं परिहितवस्त्रप्रान्त इति केचित्' (वृ)।

कुंकुण—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१४६)।

कुंचल—मुकुल, कलिका (दे २।३६)।

कुंचवीरग—जलयान-विशेष—'कुंचवीरगो सगडपक्खसारिच्छं जलयाणं कज्जति' (निचू ४ पृ ५०)।

कुंटल—जादू-टोना (दजिचू पृ २८२)।

कुंटलविंटल—१ मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग (व्यभा ४।३ टी प ४६)। २ मंत्र-तंत्र से आजीविका चलाने वाला।

कुंटार—म्लान (दे २।८०)।

कुंटि—१ गठरी। २ वस्त्र में बंधा हुआ (दे २।३४)। ३ वस्त्रविशेष।

कुंटुल्लिग—बच्चों का खिलौना (सूचू १ पृ ११७ टि)।

कुंड—१ गोत्र-विशेष (अंवि पृ १४६)। २ बांस से बना हुआ ईख पेरने का जीर्ण काण्ड (दे २।३३)।

कुंडग—तुष मिश्रित चावलों की भूसी—'तुसमुहीकणिया कुक्कसमीसा कुंडग भण्णति' (निचू २ पृ २३७)। २ कुंडा (अंवि पृ ६५)।

कुंडरोट्ट—निस्तुषधान्य—'कुंडरोट्टो पुण णितुसा' (निचू २ पृ २३७)।

कुंडिअ—ग्राम का अधिपति, गांव का मुखिया (दे २।३७)।

कुंडिअपेसण—ब्राह्मणविष्टि, ब्राह्मण को जबरदस्ती से दी जाने वाली सेवा (दे २।४३)।

कुंडिल्लगा—बच्चों का खिलौना—'कुंडिल्लगा चेडरूव-रमणिका' (सूचू १ पृ ११८)।

कुंडुक्क—वनस्पति-विशेष (आटी प ५७)।

कुंडुल्लिग—बच्चों का खिलौना (सूचू १ पृ ११८ टि)।

कुंढ—१ आलसी (उशाटी प १०८)। २ मूर्ख (उसुटी प ३२)।

कुंढय—१ चुल्ली, चुल्हा। २ छोटा बरतन (दे २।६३)।

कुंत—१ ठेका, इजारा—'कुन्तकम्—एतावद् द्रव्यं त्वया देयमित्येवं नियंत्रणया

नियोगिकस्य देशादेर्यत् समर्पणमिति' (विपा १।१।४६ टी प ३६)। २ शुक तोता (दे २।२१)।

कुंतक—ठेका, इजारा (विपाटी प ३६) देखें—'कुंत'।

कुंतल—सातवाहन, नृप-विशेष (दे २।३६)।

कुंतली—करोटिका, परोसने का एक उपकरण (दे २।३८)।

कुंती—मंजरी, मांजर (दे २।३४)।

कुंतीपोट्टलय—चतुष्कोण (दे २।४३)।

कुंदअ—कृश, दुर्बल (दे २।३७)।

कुंदीर—बिम्बीफल, कुन्दरु का फल (दे २।३६)।

कुंदुरुक्क—मुर्गे की ध्वनि—'सो गंतुकामो रयणिपज्जवसाणे भणइ कुंदुरुक्क-पडिबोहियल्लओ' (आवमटी प ५१२)।

कुंदुल्लुय—उल्लू (पा ३६३)।

कुंधर—छोटी मछली (दे २।३२)।

कुंपल—कोंपल (पा ८८)।

कुंबर—छोटी मछली (पा ३०१)।

कुंभ—ललाट—'सिंगं पुण कुंभपासेहि, कुंभशब्देन ललाटमेव भण्यते' (प्रसाटी प ३८)।

कुंभकंडक—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३२)।

कुंभकारिआ—क्षुद्र जंतु-विशेष (अंवि पृ २३८)।

कुंभिणी—जल का गर्त्त (दे २।३८)।

कुंभिया—लोहमय या ताम्रमय पात्र (सूचू २ पृ ३७३)।

कुंभिल—१ चोर। २ पिशुन (दे २।६२)।

कुंभिल्ल—खोदने योग्य (दे २।३६)।

कुंभी—केश-रचना, केश-संयम (दे २।३४)।

कुंभेल्ल—खाद्य-विशेष—'कुंभेल्लसालिमाति पिहुखज्जा' (दअचू पृ १७३)।

कुकह—थूभ, ककुद (आवचू १ पृ ३७२)।

कुकुंदल—शरीर का अवयव-विशेष (अंवि पृ १२३)।

कुकुड—मत्त, उन्मत्त (सूचू २ पृ ३१८)।

कुकुला—नववधू (दे २।३३)।

कुक्कयय—तुम्बवीणा (सू १।४।३८)।

कुक्कस—धान्य आदि का तुष (निचू २ पृ २३७)।

कुक्कुड—१ उन्मत्त, मत्त (बृभा २०१६; दे २।३७)। २ शरीर का अवयव-विशेष (अंवि पृ ११४)।

कुक्कुडिगा—ककड़ी (अंवि पृ ७१)।

कुक्कुरुड—निकर, समूह (दे २।१३)।

कुक्कुस—धान्य आदि का तुष (आचूला १।७६; दे २।३६)।

कुक्कुह—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

कुक्कुहग—ताम्रवीणा—'कुक्कुहगो णाम तंबवीणा' (सूचू १ पृ ११६)।

कुक्कुहाइय—चलते समय के अश्व का शब्द-विशेष—'सीहे कुडुंबयारस्स पोट्टलं, कुक्कुहाइयं अस्से। जाणंति बुद्धिमंता, महिलाहिययं न जाणंति॥' (तंदु १६४)।

कुक्खलिका—उपकरण-विशेष (अंवि पृ १६१)।

कुक्खि—कुक्षि, पेट (दे २।३४)।

कुच्चविच्च—गृहस्थों की क्रियाएं—'ण य ताण कुच्चविच्चाणि निज्झाति-यव्वाणि' (आवचू १ पृ ३५४)।

कुच्चोलि—संवत्सर (?) (अंवि पृ २३६)।

कुच्छर—दक्ष (दे २।१३ पा)।

कुच्छिमइ—गर्भवती (दे २।४१)।

कुच्छिल्ल—१ बाड़ का छिद्र (दे २।२४)। २ छिद्र, विवर (पा १०५)।

कुट्टयरी—चण्डी, पार्वती (दे २।३५)।

कुट्टविंद—मिट्टी के साथ कूटी हुई वट, पीपल, आदि वृक्षों की छाल—'वड-पिप्पल-आसत्थयमादियाण वक्को मट्टियाए सह कुट्टिज्जंति सो कुट्टविंदो भण्णति' (निचू ४ पृ २०६)।

कुट्टा—१ इमली—'कुट्टा चिञ्चनिका' (बृभा १७०६ टी)। २ गौरी, पार्वती (दे २।३५)।

कुट्टाअ—चर्मकार, मोची (दे २।३७)।

कुट्टि—नकल—'कुट्टिं वा करोतीत्यर्थः' (निचू ३ पृ ३६)।

कुट्टिब—द्रोणी, नौका (पा ३२६)।

कुट्टिद—नकल करने वाला, नकलची (निचू २ पृ १२१)।

कुट्टिया—नकल (निचू २ पृ १७२)।

कुठारी—कुठार (अंवि पृ ७२)।

कुठारीक—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।

कुडंग—१ बांस का झुरमुट (ज्ञा १।१८।२१)। २ लतागृह, निकुञ्ज (बृभा ६१४६; दे २।३७)।

कुडंगअ – लतागृह (पा ७२१)।

कुडंगी—१ वन, जंगल-अइगुविलगव्वरा वंसकुडंगी सिग्घं लंघियव्वा' (आवहाटी १ पृ २५६)। २ बांस की जाली (प्राक १ टी पृ २१)।

कुडंड—बांस की डोरी, खपाची—'अपवरकस्य द्वारं बहिः 'कुडण्डेन' वंशटोक्करादिना बध्यते येन न निर्गंत्यापगच्छति' (बृटी पृ १६४१)।

कुडंडिता—ताला लगाना, कूंटा लगाना—'घरे छोढूण बाहिरि कुडंडिता' (आवचू १ पृ ३१६)।

कुडक्ख—कुडक्क (कुर्ग) देश का निवासी (कु पृ ४०)।

कुडग—कुक्कसमिश्रित तुषमुखी कणिका (निचू २ पृ २३७)।

कुडपूरि—मादा पक्षी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

कुडभी—छोटी पताका (उशाटी प ३०३)।

कुडय—१ लतागृह, लता से आच्छादित घर (अनुद्वा ३५२; दे २।३७)। २ कुरैया का वृक्ष (औप ६)।

कुडा—१ बांस का एक प्रकार, पर्व वनस्पति। २ वृक्ष-विशेष (भ २१।१७)।

कुडिअ – कुब्ज, वामन (पा ४११)।

कुडिआ—बाड़ का विवर (दे २।२४)।

कुडिच्छ—१ बाड़ का विवर। २ कुटी, झोंपडी। ३ त्रुटित, छिन्न (दे २।६४)।

कुडिय—चुराई हुई वस्तु की खोज करने वाला (उशाटी प १०६)।

कुडियंठ—पाल—'ततो कुविएण कुडियंठो मत्थए दाऊण अंगाराणं से भरिता' (आवहाटी १ पृ १८२)।

कुडियंडी—शिरोवेष्टन—'कुडियंडी सीसकरणं वा' (आचू पृ ३५८)।

कुडिल्ल—छिद्र (पा १०५)।

कुडिल्लय—कुटिल (दे २।४०)।

कुडोर—बाड़ का छिद्र (दे २।२४)।

कुडुंब—महावत (पिटी प ७२)।

कुडुंबक—१ वनस्पति-विशेष, धनिया। २ कन्द-विशेष। (अंवि पृ २४३)।

कुडुंबिय—ताला लगाना, कूंटा लगाना (आवहाटी १ पृ १५०)।

कुडुंभग—जलमंडूक की भांति फुदकना अथवा जल में मंडूक की भांति आवाज करना—'कुडुंभगो जलमंडुओ भण्णति·····सुंदरं कुडुंभगं करेसि त्ति मं पि सिक्खावेहि' (निचू १ पृ ७०)।

कुडुक—कुरुदेश का वासी (व्यभा ४।४ टी प ५२)।

कुडुकालक—मत्स्य की एक जाति (अंवि पृ २२८)

कुडुक्क—१ कुरु देश का वासी (व्यभा ४।४ टी प ५२)। २ लतागृह (व्यभा १० टी प १५)। ३ निर्दय, निष्ठुर (निचू २ पृ २६६; दे २।९३)। ४ देश-विशेष (व्यभा ४।४ टी प ५२)।

कुडुच्चिअ—संभोग, मैथुन (दे २।४१)।

कुडुह—उभरा हुआ भाग (नंदीचू पृ ६४)।

कुड्ड—१ दीवार (भ ८।२५७)। २ पात्र-विशेष (निचू ३ पृ ३८९)। ३ कुतूहल, आश्चर्य (आवमटी प ५३०; दे २।३३)।

कुड्डगिलोई—छिपकली (दे २।१९)।

कुड्डलेवणी—चूना, खड़ी, खटिका (दे २।४२)।

कुढ—१ चुराई हुई या छीनी हुई वस्तु की खोज करने वाला (दअचू पृ ५१; दे २।६२)। २ चुराई हुई चीज को छुड़ानेवाला (दे २।६२)।

कुढारक—घटाकार पात्र (अंवि पृ ६५)।

कुढावय—अनुगमन—'तुरयस्स कुढावयम्मि पडिलग्गो' (विभामहेटी पृ ५३४)।

कुढिय—१ चुराई वस्तु को खोजने वाला (पंक ५७४)। २ चुराई वस्तु को खोजकर लानेवाला (निचू १ पृ १२२)। ३ ग्रामप्रधान। ४ आरक्षक (आवहाटी १ पृ १८१)।

कुढेरग—कन्द-विशेष (पंक ७३३)।

कुण—हास्यास्पद शब्द—'वेयणचेट्ठाहिं एवं कुणं·····वा करोतीत्यर्थः' (निचू ३ पृ ३९)।

कुणक्कय—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।

कुणिआ—बाड़ का छिद्र (दे २।२४)।

कुणिक—सेवक-विशेष—'कुणिकाश्च सेवकविशेषाः' (प्रटी प १५)।

कुणिणह—अक्षिरोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

कुणिम—१ मांस (सू १।४।८)। २ रुधिर, मांस, वसा आदि से संकीर्ण अपवित्र स्थान (सू १।५।२७)। ३ शव (प्र ३।९)। ४ शव का

रुधिर, वसा आदि–'तं च से कुणिमं गलति उवरिं' (आवहाटी २ पृ ४८)।

कुणिय—हास्यास्पद शब्द–'कुणियं वा भणंतो हसिज्जसि' (निचू ३ पृ ३६)।

कुतकिट्ट—रोम-विशेष–'कुतकिट्टा वि रोमविसेसा चेव देसंतरे, इह अप्पसिद्धा' (निचू ३ पृ ५७)।

कुतसी—मनोरथ, वांछा (दे २।३६)।

कुतलग—छोटे-छोटे टुकड़े (दअचू पृ ११५)।

कुतव—चूहे के रोमों से बना वस्त्र–'कुतवं उंदररोमेसु' (अनुद्वाहाटी पृ २२)।

कुतिपि—बिल में रहने वाला क्षुद्र-कीट (अंवि पृ २२६)।

कुत्त—ठेका, इजारा (विपा १।१।४६ पा) देखें–कुंत।

कुत्तिका—मधुनिष्पन्न करने वाली मक्षिका-विशेष (प्रसाटी प ५३)।

कुत्तिय—चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (आवचू २ पृ ३१६)।

कुत्तुंबक—वाद्य-विशेष (जीव ३।७८)।

कुत्थर—१ विज्ञान, प्रज्ञा, कलाकौशल (दे २।१३)। २ वृक्ष-कोटर। ३ सर्प आदि का बिल।

कुत्थुंबरी—बहुबीजक वनस्पति-विशेष (भ ८।२२०)।

कुत्थुहवत्थ—१ नीवी, अधोवस्त्र को बांधने का नाड़ा (दे २।३८)।

कुत्थूंभरिय—वनस्पति-विशेष, धनिया (भ २२।३)।

कुदुक्का—नालिका से खेला जाने वाला द्यूत–'नालिकाक्रीडा कुदुक्का-क्रीडत्ति' (सूचू १ पृ १७६)।

कुदुव्वर—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६)।

कुद्द—प्रभूत, प्रचुर (दे २।३४)।

कुद्दण—रासक, एक प्रकार का नृत्य (दे २।३८)।

कुधवा—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।

कुधुलूक—पक्षी-विशेष, उलूक की एक जाति (अंवि पृ ६२)।

कुप्पढ—१ गृहाचार, घर का रिवाज (दे २।३६)। २ समुदाचार–'कुप्पढो गृहाचारः समुदाचार इत्यन्ये' (वृ)।

कुप्पर—१ तीक्ष्ण, तीखा (पिनि ४१८)। २ कीलाघात, रति-क्रीडा के समय छाती पर एक विशेष प्रकार का आघात करना। ३ समुदाचार, आचार-व्यवहार का सम्यक् पालन। ४ क्रीडा, उपहास (दे २।६४)।

कुप्पल—जलयंत्र का एक भाग (अंवि पृ २५५)।

कुप्पासया—केंचुली (कु पृ १७०)।
कुप्पिस—कञ्चुक, कांचली (दे २।४० वृ)।
कुब्ब—धंसा हुआ, क्षीण—'कुब्बं ति निम्नं क्षाममित्यर्थः' (उपाटी पृ ६७)।
कुभिधि—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।
कुमार—आश्विन मास, कुंआर का महीना (स्था २।१)।
कुमारी—गौरी, पार्वती (दे २।३५)।
कुमारोल—केशमय बहुपदी जन्तु-विशेष (अंवि पृ २२८)।
कुमुली—चुल्ली, चुल्हा (दे २।३६)।
कुम्मण—म्लान, शुष्क (दे २।४०)।
कुम्मरिय—कसाई (ओभा ६०)।
कुयवा—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।
कुरबक—कर्णाभूषण, कुंडल (अंवि पृ ६४)।
कुरर—मार्जार नाम का पक्षि-विशेष (उशाटी प ५२१)।
कुररी—पशु (दे २।४०)।
कुराइ—सीमान्तवर्ती राजा—'पच्चंत णिवो कुराया' (निचू २ पृ ४६८)।
कुरिण—बड़ा जंगल—'कुरिणमिव पोयाला जे मुक्का पव्वई मेत्ता' (ओनि ४४६)।
कुरिल—कुरल पक्षी (अंवि पृ २३७)।
कुरुंडित—जासूस, चर (व्यभा १० टी प ७)।
कुरुंडिय—जासूस, चर—'कुरुंडितो नाम उवचरओ' (व्यभा १० टी प ८)।
कुरुकया—पाद-प्रक्षालन (व्यभा ६ टी प २६)।
कुरुकुया—पाद-प्रक्षालन, शौचक्रिया (ओनि ३१८)।
कुरुकुरिअ—कामासक्ति से उत्पन्न उत्कंठा, औत्सुक्य (दे २।४२)।
कुरुग—माया (आवहाटी २ पृ १६)।
कुरुचिल्ल—१ ग्रहण, उपादान। २ कुलीर, केकड़ा (दे २।४१)।
कुरुच्च—अनिष्ट, अप्रिय (दे २।३६)।
कुरुड—१ निपुण। २ निर्दय (दे २।६३)।
कुरुडूक—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।
कुरुण—१ राजकीय अथवा अन्य खेत जिसमें बीज बो दिए गए हों (व्यभा ४।१ टी प ८)। २ राजा का या दूसरे का धन।
कुरुमाण—म्लान (दे २।४०)।

कुरुमुयाग—घर का एक उपकरण–'उंमरो कुरुमुयागं उक्खलं मुसलं वा' (आचू पृ ३६४)।

कुरुय—मायावी–'णिंदा वा सा पसंसा वा पप्पाति कुरुए जगे' (इ ४।२०)।

कुरुल—१ निर्दय। २ निपुण। ३ कुटिलकेश, घुंघराले बाल (दे २।६३)।

कुरुविंद—तृण-विशेष (प्र ४।७)।

कुरुविल्ल—केकड़ा (पा ३०५)।

कुलत्थ—कुलथी, धान्य-विशेष (जंबू २।३७)।

कुलफंसण—कुलकलंक (दे २।४२)।

कुलसंतइ—चुल्हा, चुल्ली (दे २।३६)।

कुलिंगवच्छा—चींटी के सदृश जीव-विशेष (भटी पृ १३८६)।

कुलिच्चग—क्रूर (दश्चू प २४)।

कुलित—घास काटने के लिए दो हाथ प्रमाण का छोटा काठ जिसके अंत में लोहे की दंती लगी रहती है–'कुलितं णाम सुरट्ठाविसते दुहत्थप्पमाणं कट्ठं, तस्स अंते अयकीलगा, तेसु एगायओ एगाहारो य लोहपट्टो अडिज्जति, सो जावतियं दोव्वादि तणं तं सव्वं छिंदंतो गच्छति (निचू १ पृ ३१)।

कुलिय—खेत में घास काटने का छोटा काष्ठ (निभा ६०)। देखें कुलित।

कुलीयंधक—आभूषण-विशेष (अंवि पृ १८३)।

कुल्ल—१ नितंब (उसुटी प १३०)। २ ग्रीवा, गला। ३ असमर्थ। ४ छिन्नपुच्छ, जिसकी पूंछ कट गई हो वह (दे २।६१)।

कुल्लग—कुल्हा, पुतभाग (निचू ३ पृ ३२३)।

कुल्लड—१ चुल्ली। २ छोटा पात्र (दे २।६३)।

कुल्लडय—कुलडी, छोटा बरतन (पा ७३६)।

कुल्लडिका—मिट्टी का खिलौना (सूटी १ प ११८)।

कुल्लरिअ—हलवाई, मिठाई बनाने वाला (दे २।४१)।

कुल्लरिका—एक प्रकार की मिठाई (प्रसाटी प ५१)।

कुल्लुरी—खाद्य-विशेष (प्रसाटी प ५६) कुलेर (गुज)।

कुल्लूरिक—हलवाई (आवहाटी १ पृ १८३)।

कुल्ह—शृगाल (दे २।३४)।

कुवण—यष्टि, लाठी–'कुवण त्ति लउडगो' (निचू ३ पृ ५०१)।

कुवणय—यष्टि, लाठी (बृभा ६१५)।

कुविक—हीन अवयव वाला (अंवि पृ १५३)।

कुव्वरग—खप्पर (आवचू २ पृ २४७)।

कुसण—१ गोरस। २ पानक, मूंग की दाल आदि का पानी—'कुसणं गोरसं पाणगं वा' (आचू पृ २५०)। ३ तीमन, कढी आदि व्यञ्जन (पिनि २०२; दे २।३५)। ४ गोरस से बना हुआ करंबा आदि खाद्य (पिनि २८२)।

कुसत्त—आस्तरण-विशेष (ज्ञा १।१।१८)।

कुसी—कृमि की एक जाति (अंवि पृ ७०)।

कुसुंभिल—पिशुन, चुगलखोर (दे २।४०)।

कुसुकुंडी—मधुर सुरा-विशेष (अंवि पृ २२१)।

कुसुण—दही आदि (पिनि ६०७)।

कुसुणित—गोरस से बना हुआ करंबा आदि खाद्य—'कुसुणितमपि करंबादि-रूपतया कृतमपि' (पिटी प ६१)।

कुसुमण्ण—कुंकुम (दे २।४१)।

कुसुमाल—चोर (दे २।१०)।

कुसुमालिअ—अन्यमनस्क (दे २।४२)।

कुहंडिय—ताला लगाना, ढकना—'सा घरे छोढूणं बाहिरि कुहंडिया' (आवहाटी १ पृ १५०)

कुहड—कुब्ज, कूबड़ा (पंव ८३२; दे २।३६)।

कुहणय—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।

कुहव्वय—कन्द-विशेष (उ ३६।९७)।

कुहाड—कुल्हाड़ी, फरसा (निचू २ पृ ५)।

कुहावणा—बहुरूपिये की वृत्ति से अर्थार्जन करना—'वट्टादि इंदजालं, खेड्डा उ कुहावणा एसा' (जीभा १७२१)।

कुहिअ—लिप्त, पोता हुआ (दे २।३५)।

कुहिणी—१ कोहनी, कूर्पर। २ रथ्या, गली (दे २।६२)।

कुहिय—वायु-विशेष, दौड़ते हुए अश्व के उदर-प्रदेश के पास उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का वायु—'घणगज्जिय-हयकुहियं विज्जूदुग्गेज्झ-गूढहियआओ' (ग ९५)।

कुहुण—वनस्पति-विशेष (भ २३।४)।

कुहेड—१ चमत्कार, मंत्र-तंत्र के द्वारा झूठा चमत्कार (उसुटी प २७१)। २ गुरेटक, एक प्रकार का हर्रे का गाछ (दे २।३५)।

कूहेडग—१ अदरक (प्रसा २१०)। २ अजवायन।

कूइय—दुग्ध-वराटिका, खोआ, मावा (आवटि प १३)।

कूचित—छेना, भोज्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ २२०)।

कूचिया—छेना (नंदीटि पृ १८२)।

कूड—जाल, फंदा (बृभा २३९०; दे २।४३)।

कूडाहच्च—कुचल कर मारना (भ ७।२०२)।

कूणिअ—ईषद् विकसित (दे २।४४)।

कूभंड—बड़ा फल, कुम्हडा (अंवि पृ २३१)।

कूभंडग—कुम्हडा, कुष्मांडक (अंवि पृ २३९)।

कूभंडी—वल्ली-विशेष (अंवि पृ ७०)।

कूय—जहाज का मध्य-स्तंभ जहां पाल बांधा जाता है (निचू १ पृ ७४)।
२ कुतुप, तैल-भाजन (ज्ञाटी प ६३)।

कूर—थोड़ा (प्रा २।१२९)।

कूरउंडिया—खाद्य-विशेष (आवचू २ पृ ९९)।

कूरओडिया—खाद्य-विशेष (आवहाटी २ पृ ८८)।

कूरखोट्ट—ओदन का भोजन (ओटी पृ ३७९)।

कूल—१ तिनका—'इतरोवि य तं नेड्डं घेत्तूणं पादवस्स सिहराओ। कूलं एक्केक्कं अंछिऊण तो उज्झती कुवितो॥ (आवचू १ पृ ३४५)।
२ सेना का पिछला भाग (दे २।४३)।

कूव—१ चुराई हुई चीज को लाने वाला (ज्ञा १।१६।२०९)। २ चुराई हुई वस्तु की खोज में जाना (दे २।६२)।

कूवग्गाह—तैलपात्र को धारण करने वाला (भ ९।२०४)।

कूवल—जघन-वस्त्र, अधोवस्त्र (दे २।४३)।

कूविय—१ चोर की खोज करने वाला—'सुबहुस्स वि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था' (ज्ञा १।१८।१८)। २ चुराई हुई वस्तु को खोजकर लाने वाला (पिनि ११९)।

कूवियत्त—मुक्तता (दिलाना)—'जो कुणति कूवियत्तं, सो वण्णं कुणति तित्थस्स' (निभा ३५१)।

'कूविय'बल—१ शत्रु-व्यावर्तक सेना। २ चोरों की खोज करने वाली सेना (ज्ञा १।१८।१८)।

कूसार—गर्त्त, खड्डा (दे २।४४)।

केआरबाण—पलाश वृक्ष (दे २।४५)।

केउ—कन्द, कांदा (दे २।४४)।

केकर—ऐंचाताना, आंख का रोग, जिसमें आंख की पुतली ताकते समय दूसरी तरफ खिंची रहे (दअचू पृ १६७)।

केचइ—वलय-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४३)।

केतरात—मुद्रा-विशेष, एक प्रकार का सिक्का (निचू ३ पृ १११)।

केदकंदली—कन्द-विशेष (उ ३६।६७)।

केद्दह—कितना—'केद्दह त्ति किंप्रमाणानि' (बृभा ७६८ टी)।

केयण—१ माया। २ टेढ़ी वस्तु चंगेरी आदि—'छज्जिया-लेवणगंडो केयणं ति भण्णति' (निचू ३ पृ १४६)।

केयर—टेढ़े अंग वाला (कु पृ १३०)।

केयवसक—फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।

केया—रज्जु, रस्सी (भ १३।१४६; दे २।४४)।

केयाघडिया—रज्जु के प्रान्त से बंधी हुई घटिका (भ १३।१।१ टी पृ ११५२)।

केर—संबंधित वस्तु (प्रा ४।३५६)।

केला—भांड-विशेष (अंवि पृ ३०)।

केली—कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (दे २।४४)।

केवग—कितना (निचू ३ पृ १०४)।

केवडिय—१ पूर्वदेश में प्रचलित 'केतर' नाम का सिक्का (बृभा १६६६)। २ कितना (पंक १८०१)।

केसुक—पलास (अंवि पृ २३६)।

कोआसित—विकसित (जंबूटी प ११३)।

कोइलच्छद—तैलकण्टक, वनस्पति-विशेष—'जो एत्थ कोइलच्छदो सो तिलकंटओ भण्णइ' (प्रज्ञाटी प ३६२)।

कोइला—कोयला (दे २।४६)।

कोउआ—कंडे की अग्नि, करीषाग्नि (दे २।४८)।

कोऊहल्लिल—कुतूहल करने वाला (ओटी पृ २१६)।

कोंटक—तुष—'तुस त्ति कोंटको व त्ति कक्कुसो तप्पणो त्ति वा' (अंवि पृ १०६)।

कोंटल—१ शकुन आदि की सूचना (ओभा २२१)। २ जादू-टोना (दश्रुचू प ७६)।

कोंटलय—१ ज्योतिष संबंधी सूचना। २ शकुन आदि निमित्त-संबंधी सूचना—'पउंजणे कोंटलयस्स य' (ओभा २२१)।

कोंटलवेंटल—जादू-टोना—'कोंटलवेंटलेण कार्मणवशीकरणादिना' (आवहाटी १ पृ १२६)।

कोंटि—शस्त्र-विशेष—'कोंटि आभामिऊणं पहाविओ' (कु पृ ४७)।

कोंड—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १४६)।

कोंडइल—पक्षि-विशेष (निचू ३ पृ २६०)।

कोंडलिआ—१ कुत्ते को बींधने वाला जंतु-विशेष, साही (दे २।५०)। २ कीट (वृ)।

कोंडल्लु—उल्लू (दे २।४६)।

कोंडिअ—ग्रामनिवासी लोगों के संगठन को छिन्न-भिन्न कर छल-कपट से गांव की उपज का उपभोग करने वाला ग्राम-भोक्ता (दे २।४८)।

कोंढुल्लु—उल्लू (दे २।४६)।

कोंतिय—१ तृण-विशेष (भ २१।१६)। २ शहद का एक प्रकार (निचू २ पृ २३८)।

कोक—वृक-विशेष (प्रटी प ६)।

कोकंतिका—लोमड़ी (प्रटी प ६)।

कोकंतिय—लोमड़ी—'शृगालाकृतिर्लोमटकः' (आटी प ३३८)।

कोकंतिया—लोमड़ी (प्रज्ञा १।६६)।

कोकासित—विकसित (जीव ३।५६६)।

कोकासिय—विकसित (प्र ४।७)।

कोकि—मादा पक्षि-विशेष (अंवि पृ ६६)।

कोक्कास—इस नाम का एक व्यक्ति जिसने यंत्रमय कापोत बनाकर शालि उत्पन्न की थी (व्यभा ५ टी प २०)।

कोक्कासिअ—विकसित (दे २।५०)।

कोच्चप्प—झूठा हित (दे २।४६)।

कोच्चित—शैक्ष, नया शिष्य—'कोच्चितो नाम शैक्षकः' (व्यभा ६ टी प १४)।

कोच्छ—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १४६)।

कोच्छर—दक्ष (दे २।१३ पा)।

कोज्जक—कमल की एक जाति—'इंदीवरं कोज्जकं ति पाडलं कंदलं ति वा' (अंवि पृ ६३)।

कोज्जन—पक्षि-विशेष (भटी पृ ११५३)।

कोज्जप्प—स्त्री-रहस्य, स्त्री-चरित्र (दे २।४६)।

कोज्झरिअ—आपूरित, भरा हुआ (दे २।५०)।

कोटिंब—उडुप, नाव (निचू ३ पृ ३६४)।

कोट्टुंभ—हाथ से आहत जल (पा ३२७)।

कोट्ट—१ नगर (सूचू १ पृ १३८; दे २।४५) २ किला, दुर्ग (प्रटी प १७)। ३ आक्रमण—'परबलकोट्टं च वट्टति' (निचू १ पृ ८)। ४ फल पकाने का स्थान—'फलाणि व जत्थ पच्चंति तं कोट्टं' (निचू ३ पृ २१४)। ५ क्रीडा। ६ दुर्गा (प्रटी प १७)।

कोट्टंब—गौड देश में बना वस्त्र-विशेष—'कोट्टंबानि गौडदेशोद्भवानि' (व्यभा ७ टी प ७)।

कोट्टकवास—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३८)।

कोट्टकिरिया—दुर्गा—'कोट्टकिरिया महिषावरूढदुर्गा' (ज्ञाटी प १४६)।

कोट्टग—१ चण्डाल-बस्ती (बृभा ६६३)। २ अटवी का वह स्थान जहां फलों के ढेर किए जाते हैं (बृटी पृ २७६)। ३ हरे फलों को सुखाने का स्थान-विशेष (निभा ४७३२) ४ बढ़ई (जीभा ४२६)।

कोट्टज्जा—नगर की देवी (कु पृ ८३)।

कोट्टनी—महिष का व्यापादन करने के पश्चात् उस रूप में अवस्थित दुर्गा देवी का एक नाम—'दुर्गा महिषव्यापादनकालात् प्रभृति तद्रूपस्थिता कोट्टनी भण्णति' (अनुद्वाचू पृ १२)।

कोट्टपाल—कोतवाल (प्रटी प ४६)।

कोट्टर—पोला भाग—'अज्झुसिरो जत्थ कोट्टरं णत्थि' (निचू २ पृ १५२)।

कोट्टा—१ गला, गर्दन—'पच्छा तेण कोट्टाए गहिओ' (उसुटी प ५३)। २ पार्वती (दे २।३५)।

कोट्टाक—वर्धकी, बढ़ई (अंवि पृ १६०)।

कोट्टाग—बढई, काष्ठतक्षक (आचूला १।२३)।

कोट्टिंब—१ गाय—'जह पढमपाउसम्मि, गोणो वातो उ हरितगतणस्स। अणुमज्जति (अणुसज्जति) कोट्टिंबं, वावण्णं दुब्भिगंधीयं॥' (निभा ३५७८)।
२ गोशाला, ऐसा स्थान जहां गायों के लिए खाद्य रखा जाता है

—'कोट्टिवे त्ति जत्थ गोभत्तं दिज्जति' (निचू ४ पृ १२२)।
कोट्टिगे—गोशाला (कन्नड़)। ३ नौका (अंवि पृ १६६; दे २।४७)।

कोट्टिबिया—नौका (आचू पृ ३५७)।

कोट्टिबी—गाय—'गोणो अणुसज्जति कोट्टिबि' (बृभा ५१५५)।

कोट्टित—कूट कर पिंडीभूत किया हुआ (अंवि पृ २३६)।

कोट्टिल्ल—छोटा मुद्गर-विशेष (विपा १।६।२१)।

कोट्टी—१ दुर्दोहा, दुहते समय जो हैरान करती है वह गाय या भैंस।
२ स्खलना, भूल (दे २।६४)।

कोट्टुंभ—हाथ से आहत जल (दे २।४७)।

कोट्ठग—पाठशाला—'क्रोष्टका नाम वट्टानां (चट्टानां ?) शाला' (व्यभा १० टी प ६६)।

कोट्ठिब—नौका—'उडुपे त्ति कोट्ठिबो' (निचू १ पृ ७०)।

कोठार—धान्य का कोठा (निभा १२८)।

कोड—वृद्ध (आवहाटी २ पृ ३१)।

कोडय—छोटा शराव (पा ७३६)।

कोडलग—पक्षि-विशेष (औप ६)।

कोडिअ—१ मिट्टी का छोटा पात्र, लघु शराव (दे २।४७)। २ दुर्जन।

कोडित—दबा-दबाकर भरा हुआ (बृभा ४०११)।

कोडिय—दबा-दबा कर भरा हुआ—'कोडियं ति गाढचम्पितम्' (बृटी पृ १०६८)।

कोडिल्ल—पिशुन, चुगलखोर (दे २।४०)।

कोडुंब—१ प्रयोजन—'कारणेसु य कोडुंबेसु य मंतेसु य रहस्सेसु य' (भ १८।४०)। २ कार्य (दे २।२)।

कोड्ड—१ स्पष्ट, प्रसिद्ध—'दोण्हं भाउगाण एगा भज्जा लोगे कोड्डं दोण्ह वि समा' (आवहाटी १ पृ २८०)। २ आश्चर्य, कुतूहल, जिज्ञासा (उशाटी प १२७; दे २।३३)।

कोण—१ लकड़ी, यष्टि (जीभा ५०७)। २ श्याम वर्ण (दे २।४५)।
३ वीणा-वादन-दंड—'वेयालियवीणाए····चंदणसारनिम्मियकोण-परिघट्टियाए' (राज १७३)।

कोणय—यष्टि—'कोणओ लगुडो भण्णति' (निचू २ पृ ५)।

कोणु—रेखा (दे २।२६)।

कोण्ण—घर का कोना (दे २।४५)।

कोण्हुय—गीदड़—'चुक्को मंसं च मच्छं च कलुणं झायसि कोण्हुया !' (आवहाटी १ पृ २३४)।

कोतव—चूहों के रोओं से बना प्रावरण (नि १७।१२)।

कोत्तलंका—मद्य परोसने का पात्र-विशेष (दे २।१४)—'मयकोत्तलंकसउणं' (वृ)।

कोत्थ—उदर-प्रदेश—गणियारकणेरुकोत्थहत्थी—कोत्थं ति उदरदेशस्तत्र हस्तो यस्य कामक्रीडापरायणत्वात्' (ज्ञाटी प ७४)।

कोत्थकापल—थैला—'पडलं कोत्थकापलं मंजूसा कट्ठभायणं' (अंवि पृ २७)।

कोत्थर—१ कोटर, गह्वर—'खोल्लं कोत्थरं' (निचू ३ पृ ५००)। २ विज्ञान, प्रज्ञा, कलाकौशल (दे २।१३)।

कोत्थल—१ कपड़े का थैला—'जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो' (उ १९।४०)। २ कुशूल, अनाज का कोठा (दे २।४८)। ३ कीट-विशेष, भौंरी (प्रज्ञा १।५०)।

कोत्थलकारी—भौंरी, भ्रमरी (बृभा १७८७)।

कोत्थलग—जमड़े की मशक, थैला (पिटी प १८)।

कोत्थलगारी—भौंरी, कीट-विशेष (पंव २७४)।

कोत्थलय—वस्त्र का थैला (उसुटी प २७)।

कोत्थलवाहग—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

कोद्दविया—क्षुद्र कीट-विशेष, मातृवाहा (उसुटी प २३६)।

कोद्दालक—वृक्ष-विशेष (जीवटी प १४५)।

कोनाली—गोष्ठी—'कोनाली त्ति गोष्ठी' (बृभा २३९६ टी)।

कोप्प—१ कुए का पानी (अंवि पृ २६६)। २ अपराध (दे २।४५)।

कोप्पर—१ सेना का पड़ाव, छावनी (आवचू २ पृ १५५)। २ नदी का तट—'णतिकोप्परो' (निचू १ पृ ७२)।

कोमुई—पूर्णिमा (दे २।४८)—'कोमुइमाह च शाम्बो या काचित् पौर्णमासी स्यात्' (वृ)।

कोमार—मिट्टी—'कोमारा मट्टिया' (निचू २ पृ ४०७)।

कोयर—(कोयव ?)—'कोयव' देश में निष्पन्न वस्त्र (निचू २ पृ ३९८)।

कोयव—रूई से भरा कपड़ा, रजाई (ज्ञा १।१७।२२)।

कोयवग—१ रूई से भरे हुए कपड़े का बना हुआ प्रावरण-विशेष, रजाई (निभा ४००२)। २ सिल्हक का सूता—'कोयवगो वरक्को' (निचू ३ पृ ३२१)।

कोयवय—रजाई (ज्ञा १।१७।२२)।

कोयवी—१ रूई की रजाई (जीभा १७७०)। २ सिल्हक का सूता (निभा ४००२)।

कोयहा—रजाई, रूई से भरे हुए कपड़े का बना प्रावरण (आचूला ५।१४)।

कोयासिय—विकसित (औप १६)।

कोरण—पात्र आदि का मुंह बांधना—'भायणस्स मुहकोरणे णिक्कोरणे वा' (निचू ३ पृ ४७२)।

कोरिल्लय—पुराना, जीर्ण-शीर्ण—'कोरिल्लएणं धणुणा कोरिल्लयाए जीवाए कोरिल्लएणं उसुणा' (राज ७५६)।

कोल—ग्रीवा, गला (सू १।५।६; दे २।४५)।

कोलंब—१ पर्वत का अग्रभाग—'गिरिकडकोलंब' (ज्ञा १।१८।१८)। २ पात्रविशेष—'कट्ठकोलंबए इ वा (अनु ३।३७; दे २।४७)। ३ गुफा का प्रान्त भाग (विपा १।३।६)।

कोलक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २३१)।

कोलज्जा—नीचे गोल और ऊपर से खाई के आकार का धान्य-कोष्ठक (आचूला १।८६)।

कोलथ—धान्य-विशेष (अंवि पृ २२०)।

कोलवाल—डोरा—'मोत्तियं आइण्णंतो आगासे उक्खिवित्ता तहा णिक्खिवइ जहा कोलवाले पडइ' (आवहाटी १ पृ २८५)।

कोलाहल—१ पक्षियों का कलरव (भ ७।११७; दे २।५०)।

कोलिक—१ अधम जाति का मनुष्य—'न व्यत्याम्रेडितं कोलिकपायसवत्' (अनुद्वाहाटी पृ ६)। २ मकड़ी, जाल का कीड़ा (अंवि पृ २३७)।

कोलिज्जा—नीचे गोल और ऊपर खाई के आकार का धान्य-कोष्ठक (आचूला १।८६ पा)

कोलित—तंतुवाय, जुलाहा (नंदीटि पृ १३६)।

कोलित्त—अलात, अधजली लकड़ी (दे २।४६)।

कोलिय—१ जुलाहा, तन्तुवाय (नंदी ३८।६; दे २।६५)। २ जाल बनाने वाला कीड़ा, मकड़ा (बृभा १७०७; दे २।२५)।

कोलियग—जाल बनाने वाला कीड़ा, मकड़ा (आवचू २ पृ ७२)।

कोलियापुडग—मकड़ी का जाला—'कोलियापुडगो मक्कडसंताणओ' (निचू २ पृ ४०७)।

कोली—मकड़ी (अंवि पृ ६६)।

कोलीर—हिंगुल, कुरुविन्द (दे २।४६)।

कोलेज्जय—नीचे गोल और ऊपर खाई के आकार का धान्य-कोष्ठक (आचू पृ ३३६)।

कोलेज्जा—नीचे से वृत्त और ऊपर से खाई के आकार का धान्य भरने का कोठा (आचूला १।८६ पा)।

कोल्ल—१ शृगाल (निभा १३४६)। २ कोयला (निचू १)।

कोल्लर—१ हौदा (भटी पृ ७३०)। २ पिठर, स्थाली (औपटी पृ ११२; दे २।४७)।

कोल्लु—कोल्हू (बृभा ५७५)।

कोल्लुक—कोल्हू (बृटी पृ १६७)।

कोल्लुग—सियार—'कोल्लुगा णाम सिगाला' (निचू २ पृ १७६)।

कोल्हाहल—कुन्दरुन का फल, बिंबीफल (दे २।३६)—'दट्ठु कुंदीरोट्ठि पहिआ कोल्हाहलाइ चुण्टन्ति' (वृ)।

कोल्हुक—गीदड़ (आवचू १ पृ ४६५)।

कोल्हुग—१ कोल्हू (निचू ४ पृ ४३५)। २ सियार (उसुटी प १८६)।

कोल्हुय—१ शृगाल, सियार (उसुटी प १८६; दे २।६५)। २ कोल्हू, चरखी (दे २।६५)।

कोविआ—शृगाली (दे २।४६)।

कोविडाल—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

कोविराल—वृक्ष की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

कोवीण—एक प्रकार का कल्पवृक्ष जो आभरण देता है (ति ५६)।

कोस—१ अंगुलियों एवं अंगुष्ठ को आच्छादित करने वाला जूता (निचू २ पृ ८७)। २ कुसुंभ रंग से रंगा हुआ वस्त्र। ३ समुद्र (दे २।६५)।

कोसग—१ उपकरण-विशेष (जीभा १७७२)। २ नाखूनों की सुरक्षा के लिए अंगूठे और अंगुलियों को आच्छादित करने वाला उपकरण—'कोसग नहरक्खट्ठा' (बृभा २८८५)।

कोसट्ट—आवरण, कोश—'रुहिरे उप्पन्ना किमितो तत्थेव मलेत्ता कोसट्टं उत्तारेत्ता' (अनुद्घाचू पृ १५)।

कोसट्टइरिआ—चंडी, पार्वती (दे २।३५)।

कोसय—लघु शराव (दे २।४७)।

कोसल—नीवी (दे २।३८)।

कोसलिअ—भेंट, उपहार (दे २।१२)।

कोसलिआ—भेंट (दे २।१२ वृ)।

कोसल्ल—उपहार, भेंट—'तं पुरजणकोसल्लं, नरवइणा अप्पियं कुमारस्स' (उसुटी प ८६)।

कोसल्लिअ—भेंट, उपहार (दे २।१२ वृ)।

कोसेज्जा—टसर, सूती वस्त्र—'कोसेज्जा वडओ भण्णति' (निचू २ पृ ६८; दे २।३३)।

कोहलिआ—कुष्मांडी, कोहंडा का गाछ (पा ३७२)।

कोहल्ली—तापिका, तवा (दे २।४६)।

कोहिल्ल—क्रोधी (ओटी पृ २१६)।

ख

खइय—स्वभाव (स्थाटी प २६२)।

खइव—स्वभाव—'खइव त्ति संवेगशून्यधर्मकथनलक्षणो हेवाकः स्वभावो यस्यां सा तथा' (स्थाटी प २६२)।

खउर—१ तापसों का पात्र-विशेष (बृभा ३४५)। २ खैर आदि का गोंद (निचू ४ पृ ६७)। ३ नीच—'असूयपुत्ता! खउरपुत्ता! सुट्ठु अक्कोसामि' (आवहाटी १ पृ १४१)। ४ कलुषित—'दरदट्ठविवण्ण-विद्दुमरअक्खउरा' (से ५।४७)। ५ व्याप्त (से ६।११)।

खउरकढिणय—तापसों का उपकरण-विशेष, जो बांस, शुम्ब आदि द्रव्यों को अत्यंत कूट-पीसकर कमठ के आकार का बनाया जाता है। उसको बिल्व और भिलावे के रस से लिप्त कर देने पर उसमें से पानी भी परिस्रवित नहीं होता (नंदीटि पृ १०५)।

खउरल्लिय—कलुषित, लिप्त (जीभा ७०५)।

खउरित—निर्भर्त्सित, तिरस्कृत—'खउरिता खरंटिता रोषेणेत्यर्थः' (निचू २ पृ २६२)।

खउरिय—१ कलुषित (बृभा ३७३०)। २ मुण्डित। ३ धवलित (से १०।४३)।

खउस—एक प्रकार का जूता (निचू २ पृ ९०)।

खंजण—१ कज्जल—'खञ्जनं दीपादीनाम्' (स्थाटी प २०८)। २ गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच (प्रज्ञाटी प ५२५)। ३ कर्दम, पंक (दे २।६९)।

खंजर—शुष्क वृक्ष (दे २।६८)।

खंड—१ मुंड। २ मदिरा-पात्र (दे २।७८)।

खंडई—असती, कुलटा (दे २।६७)।

खंडरक्ख—१ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करने वाला (प्र ३।३)। २ घुमक्कड़ (बृभा ३४९६)। ३ कोतवाल (प्रटी प ४६)।

खंडिय—१ स्तुतिपाठक (भ ९।२०८; दे २।७८)। २ विद्यार्थी (उ १२।३०)। ३ जिसका निषेध न किया जा सके वह (दे २।७८)।

खंडियग—भाट, विरुद-पाठक (ज्ञा १।१।१४३)।

खंडी—१ किले का छिद्र (ज्ञा १।२।११)। २ छोटा द्वार (विपा १।३।६)।

खंडोट्ठ—भोजन से संबंधित रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

खंत—१ पिता (पिनि ४३२)। २ वृद्ध (दअचू पृ ४१)।

खंतग—पिता (निचू ४ पृ १२३)।

खंतय—पिता (उसुटी प २४)।

खंतिग—पिता (निभा ४३९९)।

खंतिगा—माता (निचू ४ पृ १२३)।

खंतिया—माता (पिनि ४३०)।

खंती—माता, जननी (पिनि ४३१)।

खंध—१ प्राकार। २ पीठ। ३ घर (निचू ३ पृ ३७९)। ४ दीवार (आचू पृ ३३९)।

खंधग्गि—स्थूल काष्ठ की अग्नि (व्यभा ३ टी प ७; दे २।७०)।

खंधमंस—बाहु, भुजा (दे २।७१)।

खंधयट्ठि—बाहु, भुजा (दे २।७१)।

खंधीधार—अत्यन्त उष्ण जल की धारा (दे २।७२)।

खंस—१ ललाट का आभूषण बनाने वाला (अंवि पृ १६०)। २ कर्मजीवी (अंवि पृ १६०)।

खक्खर—१ घोड़े को संत्रस्त करने का साधन—हन्टर, चाबुक आदि। २ टूटे

हुए बांस का टुकड़ा (विपा १।२।१४ टी)। ३ खर्खर् आवाज (आवहाटी १ पृ २८३)।

खग्गिअ—गांव का मुखिया (दे २।६६)।

खग्गूड—१ निद्रालु (मृभा १५४३)। २ रसलोलुप (निभा ४४६२)। ३ धूर्त्त-सदृश—'खग्गूडो शठप्रायो भवेत्'। ४ नास्तिक—'खग्गूडत्ति निर्धर्मप्रायाः' (ओटी प ४४)। ५ उच्छृंखल, स्वच्छंद (व्यभा ४।३ टी प २३)।

खघाणस—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

खच्चल्ल—भालू, रींछ (दे २।६६)।

खच्चोल—व्याघ्र, बाघ (दे २।६६)।

खज्जग—जीर्ण (आचू पृ ३२६)।

खज्जिअ—१ जीर्ण। २ उपालब्ध (दे २।७८)।

खज्जोअ—नक्षत्र (दे २।६६)।

खट्ट—१ खट्टा (जीव १।६५)। २ खाट (आवहाटी १ पृ २३६)। ३ तीमन (दे २।६७)।

खट्टंग—छाया (दे २।६८)।

खट्टकि—कसाई (निचू ३ पृ २७१)।

खट्टिक्क—कसाई (दे २।७०)।

खड—१ तृण, घास—'जह अग्गिम्मि वि पबले खडपूलिय खिप्पमेव झामेइ' (म २६२; दे २।६७)। २ म्लेच्छ जाति-विशेष।

खडइअ—संकुचित (दे २।७२)।

खडक्किका—खिड़की, छोटा द्वार (ओटी प १६८)।

खडक्किया—खिड़की, छोटा द्वार—'तओ अज्जा खडक्कियाए नयरं पविट्ठा' (उसुटी प १४१)।

खडक्की—लघुद्वार, खिड़की (दे २।७१)।

खडखड—खट्-खट् की आवाज (निचू १ पृ १२)।

खडखडग—छोटा और लंबा (जीव ३।१६२ पा)।

खडपूयय—घास का पूला (व्यभा ३ टी प १७)।

खडपूलग—घास का पूला—'तेहिं य ते दंता खडपूलगेहिं गोविता' (निचू ४ पृ ३६१)।

खडपूलय—तृण का पूला—'तेण तीसे सिंगे खडपूलओ बद्धो' (विभाकोटी पृ ४१८)।

खडफडा—हलचल–'किं एवट्टाए खडफडाए' (आवचू २ पृ १३)।

खडय—टक्कर–'ते भीता····खडयं देज्जा' (निचू ३ पृ ३४५)।

खडयप्पयाण—दौड़ना (जीविप पृ ३४)।

खडहड—गीले गुड का एक प्रकार–'फाणिओ गुलो भण्णति, सो दुविहो–छिड्डगुडो खडहडो य' (निचू २ पृ २३८)।

खडहडअ—खड-खड की आवाज–'चालियमहल्लघंटाखडहडओ कोट्टज्जाघरेसु' (कु पृ ८३)।

खडहडग—१ छोटा और लंबा (जीव ३।२९२)। २ गिलहरी (ति ३१)।

खडहडी—गिलहरी (दे २।७२)।

खडियाचुप्पडिया—जादू-टोना–'कुंटलविंटलं नाम खडियाचुप्पडियादि' (आवमटी प २७०)।

खडुआ—१ मोती (दे २।६८)। २ कंकड (?) (कु पृ ४१)।

खडुक्का—मुंड सिर पर अंगुली का आघात, ठुनकाना, 'ठोला' मारना (व्यभा १ टी प १३)।

खडुग—१ मुंड मस्तक पर अंगुली का प्रहार (निचू ४ पृ ३१२)। २ हाथ का आभूषण (अंवि पृ ६४)।

खडुहा—ठोकर, आघात–'कण्णामोड-खडुहा-चवेडादी' (जीभा २३७६)।

खडु—१ श्मश्रु, दाढीमूंछ (दे २।६६)। २ बड़ा, महान्। ३ गर्त्त के आकार वाला।

खडुग—बड़ा–'खडुगच्छगलमहिससूगरादिसु' (सूचू २ पृ ३५९)।

खडुय—गर्त्त (आवचू २ पृ ७२)।

खड्डा—१ गर्त्त के आकार वाला (उपा २।२१)। २ गर्त्त–'जारिसियाओ इच्छिज्जंति तारिसा खड्डा खणंति' (आवचू १ पृ ८१)। ३ खानि, आकर (दे २।६६)। ४ पर्वत का गर्त्त–'खड्डा-खानिः। पर्वतखातमित्यन्ये' (वृ)।

खड्डिअ—मत्त, उन्मत्त (दे २।६७)।

खड्डुग—मुद्रारत्न, राजमुद्रा से अंकित अंगूठी (आवचू १ पृ ५४६)।

खड्डुय—बालक (अनुद्वाहाटी पृ ११)।

खड्डुया—आघात, मुंड मस्तक पर अंगुली का प्रहार–'खड्डुया मे चवेडा मे' (उ १।३८)।

खणय—सेंध–'रत्तिं खणओ णीहिति' (आवचू १ पृ ३१३)।

खणि—खाली, रिक्त—'भायणाणि खणीकरेंतीए दोसीए छड्डेउकामाए' (आवचू १ पृ ३००)।

खणुसा—मानसिक दुःख (दे २।६८)।

खण्ण—१ सेंध—'चोरो खण्णमुहेण पविट्ठो' (दअचू पृ ८४)। २ संपूर्ण रूप से लुंटित, त्रस्त—'खण्णा इति देशीपदमेतत् सर्वात्मना लूषिताः' (व्यभा ३ टी प ७७) ३ खोदा हुआ (दे २।६६)।

खण्णवाय—खनन-विद्या (कु पृ १०४)।

खण्णुअ—१ स्थाणु (ज्ञा १।२।६)। २ कीलक, खूंटी (दे २।६८)।

खतय—राहु का नाम—'राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—सिंघाडए जडिलए खतए खरए····' (भ १२।१२३)।

खत्त—१ खाई, परिखा (भ १५।१८६)। २ गोबर-विशेष (पिनि १३)। ३ सेंध, चोरी के लिए दीवार में किया जाने वाला छेद (दअचू पृ २७)। ४ खोदा हुआ (नंदीटि पृ १३३; दे २।६६)।

खत्तपक—सिक्का-विशेष—'काहापणो खत्तपको पुराणो त्ति' (अंवि पृ ६६)।

खत्तय—१ ग्रह-विशेष, राहु (भ १२।१२३ पा)। २ सेंध लगाकर चोरी करने वाला। ३ खेत खोदने वाला।

खत्तोदय—गोबर का पानी (भ १५।१८६)।

खत्थ—विमना, झुंझलाया हुआ—'स खत्थो भणति—मए पुव्वं भणितं' (दअचू पृ २७)।

खदुया—कंकड (?) (कु पृ ४१)।

खद्ध—१ शीघ्र (आचूला १।४६)। २ प्रचुर—'जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्धं-खद्धं दलयइ'। ३ उच्च, उद्धततापूर्वक (सम ३३।१)। ४ भुक्त, भक्षित (ओनि १५२; दे २।६७)। ५ विशाल (ओनि ३०८)।

खद्धं-खद्धं—१ त्वरित। २ बहुत (आचूला १।४६)।

खद्धादाणिय—धनी—'खद्धि आदाणि जेसु गिहेसु ते खद्धादाणियगिहा—ईश्वरगृहा' (निचू ३ पृ १४७)।

खद्धाययण—बड़े-बड़े ग्रास लेना (प्रसाटी प ३३)।

खन्न—१ मत्स्य की एक जाति (जीव ३।७८१)। २ खोदा हुआ (पा ७०३)।

खपल्लापाडण—रूक्ष पदार्थ विशेष (अंवि पृ १०६)।

खपुसा—१ शीत, कंटक आदि से पैर की सुरक्षा करने वाला जूता—'हिमाऽहि-कंटाइसू उ खपुसादी' (बृभा २८८५)। २ टखने को ढकने वाला जूता—'या घुंटकं पिदधाति सा खपुसा' (निचू २ पृ ८७)।

खप्पर—रूक्ष (दे २।६६)।

खप्पुर—रूक्ष (दे २।६६ वृ)।

खफुट्ट—रूक्ष पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १०६)।

खम्मक्खम—१ संग्राम। २ मानसिक दुःख (दे २।७६)। ३ विशेष मनोदुःख, पश्चात्ताप के साथ निःश्वास छोड़ना—'खम्मक्खमो संग्रामो मनोदुःखं च। मनोदुःखविशेषोऽनुशयनिःश्वसितमित्यन्ये' (वृ)

खयक्का—कीलक, खैर का कांटा—'सो खंतो पाए खयक्काए विद्धो' (उशाटी प ८५)।

खर—१ तैल—'किं देमि त्ति नरवई, तुब्भं खरमिखिया दुचक्कि त्ति' (बृभा ४६८)। २ दास (बृभा ३३७७)। ३ घास-विशेष (व्यभा ८ टी प ५)।

खरंट—१ उपालंभ (निभा ५४०६)। २ चिपका हुआ—'खरंटो उ जो मलो तं कमढं भण्णति' (निचू २ पृ २२१)। ३ तिरस्कार (निचू ३ पृ ४६७)।

खरंटणा—निर्भर्त्सना—'धी मुंडिओ दुरप्पा, धिरत्थु·····मुक्कोसि खरंटणा एसा' (निभा ४७५६)।

खरंटिय—तिरस्कृत (निचू २ पृ ५२)।

खरग—कर्मकर, नौकर (निचू ३ पृ २४५)।

खरड—१ हाथी की पीठ पर बिछाया जाने वाला आस्तरण-विशेष—'हस्तिनः पृष्ठे यदास्तीर्यते खरडः' (प्रसा ६८० टी)। २ विकलांग (अंवि पृ १५२)। ३ रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

खरडग—प्रावरण-विशेष (निचू २ पृ ४००)।

खरडिअ—१ रूक्ष। २ भग्न (दे २।७६)।

खरण—बबूल की कण्टकमय डाली—'खरकण्टं—बब्बूलादिडालं खरणमिति लोके यदुच्यते' (स्थाटी प २३६)।

खरत—१ दास, नौकर (बृचू प १४२)। २ इस नाम का एक वैद्य—'तस्स य मित्तो खरतो नाम वेज्जो' (आवमटी प २६७)।

खरमुहि—वाद्य-विशेष (भ ६।१८२)।

खरय—१ राहु का एक नाम (भ १२।१२३)। २ दास (निभा ४०५०)। ३ कर्मकर, नौकर (ओनि ४४०)।

खरहिअ—पौत्र (दे २।७२)।

खरिअ—भुक्त (दे २।६७)।

खरिंसुय—कंद-विशेष (प्रसा २३८)।

खरिगा—दासी (निभा ३६६५)।

खरिमुही—नपुंसक दासी (व्यभा ६ टी प १७)।

खरियत्ता—वेश्या के रूप में—'.....रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिति' (भ १५।१८६)।

खरियमुही—नपुंसक दासी (व्यभा ६ टी प १८)।

खरिया—१ दासी (बृभा २५१७)। २ वेश्या।

खरी—दासी (बृभा ३३७७)।

खरुल्ल—१ कठिन। २ स्थपुट, विषमोन्नत (दे २।७८)।

खलइअ—खाली, रिक्त (दे २।७१)।

खलक—शरीर का अवयव विशेष—'घूणीयाओ त्ति जंघाः खलका वा' (सूटी प ३२३)। २ खलिहान, धान्य साफ करने का स्थान (ज्ञाटी प १२६)। ३ पानक (अंवि पृ ६४)।

खलखल—चूड़ियों की आवाज (उशाटी प ३०३)।

खलखलाविय—क्षुब्ध होना, लड़खड़ाते चलना (आवचू २ पृ ६४)।

खलखिल—निर्जीव—'खलखिलं निर्जीवमित्यर्थः' (व्यभा ६ टी प ६६)।

खलग—मांस सुखाने का स्थान—'खलगं जत्थ मंसं सोसंति' (निभा ३४८१)।

खलगंडिअ—मत्त (दे २।६७ वृ)।

खलय—पुंज, राशि, ढेर—'मच्छखलए करेंति—मत्स्यपुञ्जान् कुर्वन्ति' (विपाटी प ८१) २ खलिहान—'निद्धन्नयं च खलयं, पुप्फेहि विवज्जियं च आरामं' (तंदु १६६)। ३ स्थान—'जूयखलयाणि य पाणागाराणि य' (ज्ञा १।२।११)।

खलयारिय—तिरस्कृत—'डिंभेहिं भुणिउ त्ति काऊण खलयारिओ' (आवहाटी १ पृ १४३)।

खलहल—चूड़ियों का आपस के आघात से होने वाला 'खल-खल' शब्द (उसुटी प १४१)।

खलाविय—नुकसान किया, हानि पहुंचाई (आवचू १ पृ ४६३)।

खली—तिल-पिण्डिका, खली, तेल रहित तिलों की सीठी (दे २।६६)।

खलुंक—१ अविनीत बैल। (स्थाटी प २४८)। २ अविनीत शिष्य (उ २७।१५)।

खलुंकिज्ज—१ अविनीत बैल संबंधी। २ उत्तराध्ययन सूत्र का सत्ताइसवें अध्ययन का नाम (उ २७)।

खलुंग—अविनीत बैल (सूचू २ पृ ३५६)।

खलुक्का—मुंड मस्तक पर अंगुली का प्रहार—'खल्लाडसिरे खलुक्का दिण्णा' (निचू ४ पृ ३१२)।

खलुग—टखना (निभा १४०२)।

खलुय—गुल्फ, पांव का मणिबंध (विपा १।६।२३)।

खलुहय—टखना (निचू २ पृ ६१)।

खल्ल—१ गढा (अनुद्वा ३६८)। २ बाड का छिद्र। ३ विलास (दे २।७७)। ४ धंसा हुआ, निम्न-मध्य (दे १।३८)। ५ खाली, रिक्त।

खल्लइअ—१ संकुचित। २ प्रकृष्ट (दे २।७६)।

खल्लग—१ चमड़े का थैला (जीभा १७७२)। २ पत्रपुट, दोना (निचू ३ पृ ४३)। ३ जूता (निचू २ पृ ८७)।

खल्लय—१ पत्र-पुट, दोना (बृभा २७१४)। २ जूता-विशेष (निचू २ पृ ८८)।

खल्लर—१ छोटी तलाई—'खल्लर-खिल्लूर-छिल्लर-शब्दा देश्या एकार्थकाः' (दअचू पृ ८)। २ पाल—'खल्लरं बद्धं' (अनुद्वाहाटी पृ २६)।

खल्ला—१ खाल, चमड़ा (भटी पृ १२८२; दे २।६६)। २ जूता (निचू २ पृ ८७)। खल्ला (राज)।

खल्लित—टखने तक पहना जाने वाला जूता (दहाटी प ६६)।

खल्लिरी—संकेत (दे २।७०)।

खल्ली—गंजा सिर—'सा खल्ली उण्हेण डज्झति' (उशाटी प १६५)।

खल्लीड—गंजा, खल्वाट (आवचू १ पृ ४२३)।

खल्लूड—कंद-विशेष (जीव १।७३ पा)।

खल्लूडक—कंद-विशेष—'खल्लूडकाः—कन्दभेदाः' (प्रसाटी प ५७)।

खव—१ बायां हाथ। २ गधा (दे २।७७)।

खवअ—कंधा (दे २।६७)।

खवडिअ—स्खलित (दे २।७१)।

खवलिअ—१ आमंत्रित। २ कुपित—'किह अकाले मच्चू खवलिओ' (आवचू १ पृ २३३; दे २।७२)।

खवल्ल—मत्स्य की जाति-विशेष (प्रज्ञा १।५६)।

खवुसा—टखने तक पहना जानेवाला जूता—'खवुसा उ खलुगमेत्तं' (निभा ६१८)।

खव्व—१ बायां हाथ । २ गधा (दे २।७७) ।

खव्वुल्ल—मुख (दे २।६८) ।

खसर—रोग-विशेष, खुजली (जंबू २।१३३) ।

खस्सिअ—टखनों तक पहना जाने वाला जूता—'उवरितला मे फुट्टंति । खस्सिताओ से कताओ' (दश्चू पृ ४१) ।

खाइ—१ वाक्यालंकार में प्रयुक्त अव्यय । २ पुनः अर्थ का सूचक अव्यय—'से कहिं खाइ णं भंते ! सिद्धा परिवसंति ?' (औप १९२) । ३ परिखा (आवचू १ पृ ३९) ।

खाइआ—१ परिखा (दे २।७३) ।

खाइं—वाक्यालंकार के रूप में प्रयुक्त अव्यय—'से केणं खाइं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ' (भ १७।२१) ।

खाइणं—वाक्यालंकार में प्रयुक्त अव्यय—'खाइणं ति देशी-भाषया वाक्यालंकारे' (औपटी पृ २१८) ।

खाइया—खाई, खातिका (भ ५।१९९) ।

खाखट्टिका—सेवई आदि खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२) ।

खाडइअ—प्रतिफलित (दे २।७३) ।

खाडइला—गिलहरी, वह प्राणी जिसके शरीर पर काली और श्वेत धाराएं होती हैं (नंदी ३८।४) ।

खाडलिल्ल—गिलहरी (प्रटी प १०) ।

खाडहिला—गिलहरी (प्र १।८) ।

खाडहिल्ला—गिलहरी (उपाटी पृ ९६) ।

खाडहेल्ला—गिलहरी (आवहाटी १ पृ २७८) ।

खात—१ भूमिगृह (निचू १ पृ ११४) । २ कूप, बावड़ी आदि (आवटि प ५८) ।

खातिका—खाई, परिखा (प्र १।१४) ।

खातोदग—खुदे हुए जलाशय का पानी (भ १५।१८६) ।

खायं—वाक्यालंकार में प्रयुक्त अव्यय—'तो खायं अहमवि ओलग्गामि' (बृटी पृ ५३) ।

खायर—खदिर वृक्ष सम्बंधी—'खायरो य सूलो····पादो छिज्जए' (निचू १ पृ १६) ।

खार—गायों के विचरण करने का वह स्थान जहां तिक्त कुंतल आदि जलाए जाते हैं, जिससे कि गायों के कीट-जन्य उपद्रव शांत हो जाएं—

'खारो जत्थ तित्तकुंतलया डज्झंति, गावीसु रमंतीसु मसगाइं सरीराइ उवसमणत्थं डज्झंति' (आचू पृ ३७०)।

खारंफिडी—गोधा, छिपकली (दे २।७३)।

खारक—चतुष्पद प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

खारय—अर्ध विकसित फूल या कली (दे २।७३)।

खारा—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।६)।

खारापक—राख—'छगणि छारिक्खारापको' (अंवि पृ २५४)।

खालक—१ वृक्षवासी प्राणी-विशेष—'तत्थ वुक्खचरा विराला उंदुरा खालका' (अंवि पृ २२६)। २ छोटा पशु-विशेष (अंवि पृ २२७)।

खालग—चतुष्पद जंतु-विशेष (अंवि पृ २३८)।

खाह—खांसी—'खाहुत्थूभाउ कुणइ जत्तेणं' (बृभा २६२५)।

खाहिया—खाई, परिखा (अनुद्घाहाटी पृ ७८)।

खिखिणी—१ लघु घंटिका (आवचू १ पृ १८६)। २ शृगाली (दे २।७४)।

खिखिय—सियार की खि-खि आवाज (उशाटी प १२१)।

खिग—उद्दण्ड (जीविप पृ ५२)।

खिसणा—तिरस्कार (ओनि ७१५)।

खिसा—निष्ठुर और निःस्नेह वचन, निंदा, अवहेलना—'णिट्ठुरं णिण्हेहवयणं खिसा' (निचू ३ पृ ६)।

खिंखिड—गिरगिट (दे २।७४)।

खिक्खिरी—डोम आदि लोगों की चिह्नरूप लाठी जिसे देखकर लोग उनको न छूने का परिज्ञान कर लेते हैं (दे २।७३)।

खिच्च—खिचड़ी (दे १।१३४)।

खिज्जिय—१ रोष (ज्ञा १।६।४१) २ उपालम्भ (दे २।७४)।

खित्तय—१ अनर्थ। २ दीप्त, प्रज्वलित (दे २।७६)।

खिल्ल—फोड़ा-फुंसी (तंदु ११६)।

खिल्लर—१ तलैया (निचू २ पृ ३०३)। २ चारों ओर गोलाकार पाल (आवहाटी १ पृ ३७)।

खिल्लूर—छोटी तलाई—'खल्लर-खिल्लूर-छिल्लरशब्दा देश्या एकार्थकाः' (दअचू पृ ८)।

खिवल—(नौका को) खेना, आगे ले जाना—'खिवलं ढोक्कणं णयणं वा' (आचू पृ ३५७)।

खीरपक—मिट्टी-विशेष (अंवि पृ २३३)।

खुइत—१ खांसना। २ छींकना—'खुत्ति कतं तं खुइतं छीयं वा होति इह उ खुइतं तु' (जीभा ६०७)।

खुंखुणअ—नाक का छिद्र, नथुना (दे २।७६)।

खुंखुणक—१ आभूषण-विशेष। २ वीणा-विशेष (सूटी प ११६)। ३ टखना, गुल्फ—'खुंखुणका नाम घुर्घुरुकास्ते धावतां पततां भज्यन्ते' (आवटि प २४)।

खुंखुणग—गुल्फ, टखना—'जाणूणि य फोडिज्जंति, अप्पेगइयाणं खुंखुणगा भज्जंति' (आवहाटी १ पृ १३७)।

खुंखुणी—गली, मुहल्ला (दे २।७६)।

खुंडय—स्खलित (दे २।७१)।

खुंडिय—अर्जित, प्राप्त—'वाणियएण छ रयणाणि खुंडियाणि' (दजिचू पृ १३)।

खुंपक—वर्षा को रोकने वाला पलास-पत्रों से बना हुआ उपकरण—'कुडसीसगं पलासपत्तमयं खुम्पकम्' (जीविप पृ ५०)।

खुंपा—वर्षा के निवारण के लिए बनाया हुआ तृणमय उपकरण (दे २।७५)

खुक्खुरक—चमड़े का थैला (आवटि प ५६)।

खुखु—खु-खु शब्द, दौड़ते हुए घोड़े की आवाज—'आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु त्ति करेति' (भ १०।३६)।

खुज्जा—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

खुट्ट—१ त्रुटित (दे २।७४)। २ न्यून, कम (कु पृ २०६)।

खुट्टिमा—गंधार स्वर की एक मूर्च्छना (जीवटी प १६३)।

खुडलग—छोटा (निचू ४ पृ १४८)।

खुडि—खंडित (से १।३०)।

खुडिय—स्खलित (आवहाटी २ पृ ४४)।

खुड्ड—१ अधम, नीच (स्था ६।६८)। २ छोटा (उ १।६; दे २।७४)। ३ कामचेष्टा (निचू २ पृ २४)। ४ अंगूठी।

खुड्डंत—हंसी मजाक करते हुए क्रीडा करना (बृभा ४६३८)।

खुड्डक—१ बालक (अंवि पृ १६६)। २ अंगूठी (ज्ञाटी प ३०)।

खुड्डग—१ अप्राप्त वय वाले और काम करने में अयोग्य—'खुड्डग त्ति अप्राप्तवयसः अकर्मयोग्या वा (सूचू १ पृ ८४)। २ लघु, छोटा (द ६।६)। ३ मुद्रिका, अंगूठी (आवहाटी २ पृ १२१)।

खुड्डगुल—फाणित, गीला गुड़ (बृटी पृ ६६६)।

खुड्डगुल्ल—गीला गुड़–'खुड्डगुल्लो त्ति फाणितं' (बृटी पृ ९६९)।
खुड्डमुह—मधुरभाषी–'खुड्डमुहा संति इहं, जे कोविज्जा जिणवइं पि' (बृभा २१३९)।
खुड्डय—छोटा (आ ३।५७)।
खुड्डल—छोटा (निचू ४ पृ १४६)।
खुड्डलग—१ छोटा (निचू ४ पृ १४८)। २ जंतु-विशेष (अंवि पृ २३८)।
खुड्डलय—छोटा (ओनि ९१)।
खुड्डलिय—स्वल्प (आवचू २ पृ २८८)।
खुड्डाखुड्डि—अत्यंत छोटा (आचू पृ ३५२)।
खुड्डाखुड्डिया—अत्यधिक छोटी (जंबूटी प ४१)।
खुड्डाग—१ लघु (भ ८।१८७)। २ अंगूठी (भटी पृ ८४३)।
खुड्डालिंजर—लघु पात्र, छोटा कुंडा (जीव ३।७२६)।
खुड्डिअ—मैथुन (दे २।७५)।
खुड्डित्ता—तोड़कर (भ १५।७४)।
खुड्डिमा—गंधार स्वर की मूर्च्छना (जंबूटी प ३८)।
खुड्डिय—छोटा (राज ७७२)।
खुड्डी—छोटी (निभा २३७७)।
खुणक्खुडिआ—नाक (दे २।७६)।
खुण्ण—मढ़ा हुआ, परिवेष्टित (दे २।७५)।
खुण्णिय—नमित (भ ९।१६८)।
खुत—भिन्न, खंडित–'भावसबलो खुतायारो' (दशचू प ९)।
खुत्त—निमग्न, डूबा हुआ (प्र ३।१७; दे २।७४)।
खुत्तग—निमग्न, फंसा हुआ (औप ९०)
खुत्थ—जीर्ण, खाया हुआ–'कालेण वा खुत्थं परिजुण्णं' (निचू २ पृ ३१७)।
खुद्दग—छोटा (व्यभा ४।४ टी प ६०)।
खुम्मिय—नमित (ज्ञा १।१।१०५)।
खुरुखुरक—चमड़े का पात्र (बृटी पृ ७७९)।
खुरुड्क्खुडी—प्रणय-कोप (दे २।७६)।
खुल—टखने के नीचे का भाग (अंवि पृ ११९)।
खुलखेत्त—ऐसा क्षेत्र जहां कम भिक्षा मिलती हो या केवल रूखा आहार ही मिलता हो (बृभा १५५६)।

खुलग—१ फोड़ा, फफोला (निभा १०५६)। २ गुल्फ (बृभा ४०८७)।

खुलत्त—वैसा गांव जहां पर्याप्त भिक्षा न मिलती हो अथवा घृत आदि पौष्टिक द्रव्य न मिलते हों—'खुलत्तेणं णाम मंदभिक्खं जत्थ वा घयादि उवग्गहदव्वं न लब्भति' (निचू ४ पृ ३००)।

खुला—फोड़ा, फफोला (निचू २ पृ ११४)।

खुलुक—१ कीट-विशेष (अंवि पृ ६३)। २ कर्मांजीवी-विशेष (अंवि पृ १६०)।

खुलुह—गुल्फ, टखना (दे २।७५)।

खुल्ल—१ छोटा (निचू २ पृ ११५)। २ दो इन्द्रिय वाला जंतु-विशेष—'खुल्लाः लघवः शंखाः सामुद्रशंखाकाराः' (जीवटी प ३१)। ३ कुटी (दे २।७४)।

खुल्लक—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २३७)।

खुल्लय—कौड़ी-विशेष—'अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ' (ज्ञा १।१८।८)।

खुल्लिका—बिल में रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२६)।

खुल्लिरी—संकत (दे २।७०)।

खुवअ—गंडुत् तृण के सदृश कंटकी-तृण (दे २।७५)।

खुवग—दोना, पत्तों का पुडवा (व्यभा ४।२ टी प ८४)।

खुव्वग—पत्तों का दोना, पुडवा (व्य २।२६)।

खुव्वय—दोना, पत्तों का पुडवा (व्यभा ४।२ टी प ८४)।

खुसिय—कुरेदा हुआ (निचू ३ पृ ५८७)।

खूण—१ न्यून, कमी—'किमेत्थ खूणं' (उसुटी प ६०)। २ अपराध—'तहाविहे खूणे जाए' (उसुटी प १८६)।

खेआलु—१ निःसह, अधीर, आलसी (दे २।७७)। २ असहनशील—'खेआलू निःसहः। असहन इत्यन्ये' (वृ)।

खेआलुय—असहनशील (पा ७०५)।

खेड—मिट्टी के प्राकार वाला छोटा गांव (विपा १।१।४६)।

खेडिय—क्रम, वारी (विभाकोटी पृ ३३१)।

खेडुखंड—आसन-विशेष—'कट्ठुच्छगणपीढं वा खेडुखंडं समंथणी' (अंवि पृ १७)।

खेडु—१ खेल (प्रा २।१७४)। २ शस्त्र-विशेष (कु पृ १५०)।

खेड्डा—क्रीडा (जीभा १७२१)।

खेत्ताद—क्षिप्तचित्त (बृभा २७३१)।

खेरि—१ परिशाटन, बिखराव—'रासी ऊणे दट्ठुं, सव्वं णीतं व घण्णखेरिं वा' (बृभा ३३५७)। २ खेद, उद्वेग। ३ उत्कण्ठा।

खेलूड—अनंतकाय-वनस्पति-विशेष (भ ७।६६)।

खेल्लर—पाल (आवमटी प ६२)।

खेल्लिय—हंसी-ठट्ठा (आवचू १ पृ ४५१; दे २।७६)।

खेल्लूड—कंद-विशेष (प्रसा २३८)।

खेविय—खिन्न (उसुटी प २६४)।

खोइय—विच्छेदित—'संधी खोइया' (उसुटी प २६)।

खोखर—चाबुक, त्राजन—'खोखरेण पिट्टित्ता' (आवहाटी १ पृ १७४)।

खोटन—खटखटाना, ठोकना (व्यभा ८ टी प ४६)।

खोट्टरिका—खंड, अंश (आवटि प ६७)।

खोट्टिता—खोरक, कटोरा—'ते गता सुवण्णस्स खोट्टिताओ गहाय' (नंदीटि पृ १३६)।

खोट्टिया—खोरक, कटोरा—'ते रत्तपडगवेसेणं गता सुवण्णस्स खोट्टियाओ गहाय' (आवचू १ पृ ५५०)।

खोट्टी—दासी—'किं वा कम्मं खोट्टिपुत्ताणं ?' (दअचू पृ २७; दे २।७७)।

खोड—१ प्रमार्जन, प्रतिलेखन का एक प्रकार (ओनि २६५)। २ लकड़ी का प्राकार (बृभा ११२३)। ३ प्रदेश, स्थान (ओभा ७६)। ४ लकड़ी का बड़ा फलक (प्रटी प ५७)। ५ खूंटा (आवचू २ पृ २२६)। ६ राजकुल में दातव्य द्रव्य, देखें—खोडभंग (व्यभा १ टी प १०)। ७ सीमानिर्धारक काष्ठ। ८ धार्मिक। ८ खंज, लंगड़ा (दे २।८०)।

खोडक—खाद्य पदार्थ-विशेष, खाजा (अंवि पृ १८२)।

खोडपज्जाली—स्थूल काष्ठ की अग्नि (दे २।७०)।

खोडभंग—राजकुल में दातव्य द्रव्य, बेगार तथा सैनिक आदि की भोजन-व्यवस्था में राजा के द्वारा दी जाने वाली छूट—'खोडं नाम जं रायकुलस्स हिरण्णादि दव्वं दायव्वं वेट्ठिकरणं परं परिणयणं चारभडादियाण य चोल्लगादिप्पदाणं तस्स भंगो खोडभंगो। तं रायणुग्गहेणं मज्जायाए भंजंतो एक्कं दो तिण्णि वा सेवति जावतिय अणुग्गहो से कज्जति तत्तियं कालं सो दव्वादिसु परिहरिज्जति तावत् कालं न दाप्यतेत्यर्थः' (निचू ४ पृ २८०)।

खोडा—खोटक, वस्त्र-प्रतिलेखन की एक विधि (उ २६।२५)।

खोडित—१ स्वीकृत—'पडहओ खोडितो वहणं कारितं' (आवचू १ पृ ३६७, ३६८)। २ खंडित (अंवि पृ २१५)।

खोडिय—खण्डित, दूषित (निचू ३ पृ ४४०)।

खोडी—१ बड़ा काष्ठ (प्र ३।१२)। २ टुकड़ा—'गोसीसचंदणक्खोडी हरिचंदणक्खोडी वा' (आचू पृ १६८)। ३ काष्ठ-पेटी (सूचू २ पृ ४३०)। ४ कटोरा, पात्र-विशेष (आवहाटी १ पृ २८१)। ५ लकड़ी का बना हुआ बंधन-विशेष—'विहाडेयव्वा खोडी' (उसुटी प २५३)। ६ पोला काष्ठ (उसुटी प २६२)। ७ काष्ठ-विशेष (आवहाटी १ पृ १६६)। ८ काठ का गट्ठर (व्यभा ४।३ टी प २०)।

खोमडक्खाय—भिक्षु के लिए प्रयुक्त अपशब्द (सूचू १ पृ २३१)।

खोर—१ खोरक, कटोरा (आचू १ पृ ५५२)। २ नट (कु पृ १७१)।

खोरक—वृत्ताकार भाजन-विशेष (व्यभा ३ टी प ४१)।

खोरय—पात्र-विशेष (दअचू पृ २७)।

खोरिय—कटोरा (व्यभा ३ टी प ४०)।

खोल—१ मद्य के नीचे जमा हुआ कर्दम (आचूला १।११२)। २ गुप्तचर, जासूस (पिनि १२७)। ३ दूध से भावित वस्त्र (बृटी पृ ८१७)। ४ सिर पर बांधने का वस्त्र—'विशेषचूर्णौ 'खोल' त्ति सीसखोला तीए सिरं वेढियव्वं' (बृटी पृ ८१६)। ५ वस्त्र का एक भाग (बृटी पृ २३७; दे २।८०)। ६ छोटा गधा (दे २।८०)।

खोलकमालिका—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

खोला—१ कोशी, गोलाकार एक वस्तु—'काञ्चनकोशी—सुवर्णमयी खोला' (भटी पृ ८८२)। २ शिरोवेष्टन—'खोला नाम शीर्षवेष्टनम्' (बृटी पृ ८१६)।

खोल्ल—१ एक देश का नाम (आचू पृ ३४०)। २ कोटर, गह्वर—'देशीशब्दत्वात् कोटरम्' (बृटी पृ २८६)।

खोसलअ—दंतुर, बाहर निकले हुए दांत वाला (दे २।७७)।

खोसिय—जीर्णप्रायः—'मइलिय फालिय खोसिय हियनट्ठे वावि अन्न मग्गंते' (पिनि ३२१)।

ग

गंगावडिय—श्वेत रेशम से बना चीन देश का वस्त्र जो भारत में गंगाजुल नाम से प्रसिद्ध था—'अहं चीण-महाचीणेसु गओ महिसगवले घेत्तूण, तत्थ गंगावडिओ णेत्तपट्टाइयं घेत्तूण लद्धलाभो णियत्तो त्ति' (कु पृ ६६)।

गंछ—वरुड नाम की म्लेच्छजाति (दे २।८४ वृ)।

गंछअ—वरुड नाम की म्लेच्छ जाति (दे २।८४)।

गंछिअ—तैली (जंबूटी प १६४)।

गंज—१ खाद्य-विशेष (प्र १०।६)। २ गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)। ३ गाल (दे २।८१)।

गंजिल्ल—विधुर, निरंकुश, पागल (दे २।८३)—'कामगंजिल्लो, भमिअ किमिमाइ गोसे करसि' (वृ)।

गंजोल्लिय—१ रोमांचित। २ हंसाने के लिए किया जाने वाला अंग-स्पर्श, गुदगुदी (दे २।१००)।

गंठिल्ल—गांठों वाला (भटी पृ १२६७)।

गंड—१ वस्त्र-विशेष (जीभा १७६६)। २ वन। ३ कोतवाल। ४ लघु मृग। ५ नापित (दे २।६६)। ६ गुच्छा।

गंडग—१ भिक्षुक, याचक—'पिंडेसु दिज्जमाणेसु उल्लंतीति पिंडोलगा, जं भणितं—दमगा गंडगा वा' (आचू पृ ३२३)। २ गांव के आदेश की उद्घोषणा करने वाला—गामतित्तिवाहगा' (आचू पृ ३३१)।

गंडमाणिया—बांस का बना हुआ पात्र-विशेष (भ ७।१५६)।

गंडय—उद्घोषणा करने वाला पुरुष, नाई—'तत्थ अमावसा होहिति त्ति गंडओ उग्घोसेइ' (आवहाटी १ पृ २४८)।

गंडरिया—श्वेत मिट्टी—'सेडिया—गंडरिया' (दजिचू पृ १७६)।

गंडवाणिया—बांस का पात्र-विशेष (भटी प ३१३)।

गंडाक—नापित, नाई, उद्घोषणा करने वाला पुरुष—'गण्डाकः—नापितः यो हि ग्राम उद्घोषयति' (आटी प ३२७)।

गंडाग—नापित (आचूला १।२३)।

गंडि—१ यानविशेष (अनुद्वाचू पृ ५३)। २ दुष्ट बैल या घोड़ा (उशाटी प ४६)।

गंडी—पुस्तक का एक प्रकार जिसके चारों कोण समान तथा लम्बाई-चौड़ाई समान हो—'बाहल्लपुहुत्तेहिं गंडीपोत्थो उ तुल्लगो दीहो' (प्रसा ६६५)।

गंडोरी—ईख का टुकड़ा, गंडेरी (दे २।८२)।

गंडीव—धनुष (दे २।८४)।

गंडूपक—पैर का आभूषण, नूपुर—'गंडूपकं ति वा बूया·····तधा णीपूरगं व त्ति' (अंवि पृ ६५)।

गंडूपयक—जंघा का आभूषण—'गंडूपयकं णीपुराणि परिहेरकाणि' (अंवि पृ १६३)।

गंद—जाति-विशेष—'चंडाल-पुलिंद-गंद-गोपालादि च' (सूचू १ पृ २३१)।

गंदित—गंदा कर दिया (अंवि पृ १४८)।

गंदीणी—आंख-मिचौनी का खेल (दे २।८३)।

गंधपिसाअ—गंधिक, पंसारी (दे २।८७)।

गंधलया—नासिका (दे २।८५)।

गंधिअ—दुर्गन्ध (दे २।८३)।

गंधेल्ली—१ छाया। २ मधुमक्खी (दे २।१००)।

गंधोल्ली—१ इच्छा। २ रात्री (दे २।९९)।

गंभीर—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

गग्गर—१ स्त्रियों के पहनने का वस्त्र, घाघरा (निचू ३ पृ ६०) २ गद्गद, अस्पष्ट आवाज—'सरोवि से·····खूभियगग्गरो (निचू ४ पृ ३०५)।

गग्गरग—घाघरा (निभा ७८२)।

गज्ज—यव (दे २।८१)।

गज्जणसद्द—पशुओं को निवारण करने की ध्वनि (दे २।८८)।

गज्जफल—देश-विशेष में उत्पन्न वस्त्र-विशेष (आटी प ३९३)।

गज्जर—गाजर, कंद-विशेष (प्रसा २३७)।

गज्जल—पहनते समय बिजली के समान कड़कड़ शब्द करने वाला वस्त्र—'गज्जलाणि कडकडेंताणि कायकंठलपावारादीणि' (आचू पृ ३६४)।

गज्जह—पश्चिमोत्तर दिशा का पवन (आवचू १ पृ ५१२)।

गट्ठि—गुठली (जीभा १७०१)।

गट्ठिया—गुठली (अनु ३।४५)।

गडगड—चिंघाड, हाथी की आवाज (जीवटी प २४७)।

गडयडी—वज्रनिर्घोष, मेघ की गड़गड़ाहट (दे २।८५)।

गडु—स्तन, कुच (उसुटी प १३२)।

गडुअय—काष्ठपात्र—'मत्तो दगवारगो गडुअओ (निचू ३ पृ ३४३)।

गडुक—लघु कलश (उपाटी पृ १८७)।

गडुल—चावल आदि का धावनजल (प्रसाटी प ४६)।

गडूल—अलसिया, शिशुनाग—'अलसो त्ति वा गडूलो त्ति वा सुसुणागो त्ति वा एगट्ठं' (निचू १ पृ ६६)।

गडु—१ गढा, गर्त्त (भटी पृ १२५५)। २ शकट, गाड़ी।

गडुक—गाड़ी (अनुद्वामटी प १४६)।

गडुरक—भेड़ (पिटी प २१)।

गडुरा—भेड़—'उण्ण त्ति लाडाणं गडुरा भण्णंति' (निचू २ पृ २२३)।

गडुरिका—१ भेड़ (आटी प २२४)। २ कीट-विशेष (जीवटी प १८७)।

गडुरी—१ बकरी (दे २।८४)। २ भेड़।

गडुलिक—गाड़ी वाला (अंवि पृ ६२)।

गडुलिया—गाड़ी (जीचू पृ १७)।

गडुली—गाड़ी, शकट (आचू पृ ३५०; दे २।८१)।

गड्डुय—घड़ा (दजिचू पृ १८१)।

गड्डु—१ गढा (भ ३।६५)। २ शय्या (दे २।८१)।

गढ—दुर्ग, किला (दे २।८१)।

गणणाइआ—चण्डी, पार्वती (दे २।८६)।

गणसम—गोष्ठी में लीन (दे २।८६)।

गणायमह—विवाह-गणक, विवाह का मुहूर्त्त आदि बताने वाला ज्योतिषी (दे २।८६)।

गणिकाखंसक—कर्माजीवी-विशेष (अंवि पृ १६०)।

गणियार—समान शरीर वाले—'गणियार त्ति गणिकाकारा: समकाया: (ज्ञाटी प ७४)।

गणेत्तिया—कलई में पहनी जाने वाली रुद्राक्ष की माला—'जन्नोवइय-गणेत्तिय-मुंजमेहलावागलधरे—गणेत्रिका रुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणं' (ज्ञा १।१६।१८५ टी प २२७)।

गणेत्ती—अक्षमाला (दे २।८१)।

गतिल्लिय—गया (उचू पृ ६६)।

गतेल्लत—गया (आवभटी प २६६)।

गत्त—१ ईषा, चारपाई की लकड़ी-विशेष—'जंबूणयमयाइं गत्ताइं' (राज ३७)। २ अवयव (भटी पृ १३८६)। ३ हलदंड। ४ कीचड़ (दे २।६६)। ५ गया हुआ।

गत्ताडी—१ गवादनी—गायों के खाने के लिए घास, भूसा आदि रखने का बड़ा बर्तन या गोचर-भूमी (दे २।८२)। २ गायिका (वृ)।

गद्द—पक्षी-विशेष—'गद्दो कुरलो····भासा वीरल्लससघाती' (अंवि पृ २३६)।

गद्दत्तण—लज्जा (वृभा २३३८)।

गद्दब्भ—कटु-ध्वनि (दे २।८२)।

गद्दभ—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)

गद्दभग—कुमुद, चन्द्रविकासी कमल—'कुमुदं गद्दभगं' (दअचू पृ १२८)।

गद्दभिया—धान्य-विशेष (आवहाटी १ पृ २६०)।

गद्दह—कुमुद, चन्द्रविकासी कमल (दे २।८३)।

गद्दिअ—गर्वयुक्त (दे २।८३)।

गद्दिका—गादी, बिछौना (बृटी पृ १०५५)।

गद्दियाणग—एक प्रकार का सिक्का—'लग्गो वाडकम्मे, निप्फत्तीए विढत्ता दस गद्दियाणगा' (उसुटी प २५१)।

गप्पडिय—बकवास करने वाला, गप्पें करने वाला (कु पृ ४४)।

गब्भिज्ज—नौका में काम करनेवाला, खलासी—'कण्णधार-कुच्छिधार-गब्भिज्ज-संजत्ता-नावावाणियगा' (ज्ञा १।८।६६)।

गब्भेल्लग—जहाज में काम करने वाला—'कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य' (ज्ञा १।१७।६)।

गम्मो—विकल्प, भंग (अंवि पृ ६)।

गय—१ नींद से घूर्णित। २ भ्रमण किया हुआ। ३ मृत (दे २।६६)।

गयणरइ—मेघ, बादल (दे २।८८)।

गयमारिणी—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)।

गयसाउल—विरक्त (दे २।८७)।

गयसाउल्ल—विरक्त (दे २।८७ वृ)।

गय्याल—जिद्दी (दअचू पृ २१७)। गय्याल—मूर्ख (कन्नड़)।

गरुलक—मुकुट का एक प्रकार (अंवि पृ ६४)।

गल—कांटा—'मच्छोव्व गलं गिलित्ता' (दचू १।६)। **गलगाल**—कांटा, मछली फंसाने की बंसी (कन्नड़)।

गलंतिया—गर्गरी—'पाणिगलंतिया य दिज्जइ' (आवहाटी २ पृ १३५)।

गलच्छल्ल—गला पकड़ना (प्रटी प ५६)।

गलत्थण—१ क्षेपण। २ प्रेरण (से ५।५३)।

गलत्थलिअ—बाहर निकाला हुआ (दे २।८७)।

गलत्थल्ल—गलहत्थ, हाथ से गला पकड़ना (ज्ञा १।६।४२)।

गलत्थल्लिअ—प्रेरित—'सरवेअगलत्थल्लिअ' (से ५।४३)।

गलत्थिअ—१ प्रेरित (से १२।११)। २ बाहर निकाला हुआ, क्षिप्त (दे २।८७)।

गलि—अविनीत—'गिलत्येव केवलं न तु वहति गच्छति वेति गलिः' (उशाटी प ४६)।

गलिअ—स्मृत, याद किया हुआ (दे २।८१)।

गलोलइय—गले का आभूषण (निचू २ पृ ३६८)।

गल्ल—१ गाल, कपोल (उपा २।२१)। २ हाथी का कुम्भस्थल। ३ गढा। ४ मलिन (दअचू पृ ५२)—'गल्लोदगेण गल्लोदकेन यद्वा मलिनोदकेन' (टी)।

गल्लत्थलिय—क्षिप्त, फेंका हुआ (से ८।६१)।

गल्लप्फोड—डमरुक (दे २।८६)।

गल्लर—चपटा—'मुहं च से पेल्लियं गल्लरं भविस्सति' (निचू ३ पृ ४०६)।

गल्लिका—यान-विशेष (अंवि पृ २६)।

गल्लिवग—गले में पहनने योग्य—'गल्लिवगा व से णक्खत्तमालादी पाए कया' (निचू ३ पृ ४०७)।

गल्लोल—गडुक, पात्र-विशेष—'गल्लोलपाणिएणं व्हवेति' (निचू १ पृ १०)।

गवच्छ—आच्छादन (जंबूटी प ५८)।

गवच्छिय—आच्छादन—'ते णं वायकरगा किण्हसुत्तसिक्कग-गवच्छिया णीलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया' (जीव ३।३२६)।

गवत्त—घास, तृण (पिनि २२४; दे २।८५)।

गवर—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १ टी)।

गहकंडुक—क्षुद्र जंतु-विशेष (अंवि पृ २३८)।

गहकल्लोल—राहु (दे २।८६)।

गहण—१ निर्जल प्रदेश (आचूला ३।४८; दे २।८२)। २ धरोहर।

गहणी—बलात् अपहृत स्त्री (दे २।८४)।

गहर—गृध्र, गीध पक्षी (प्रज्ञा १।७६; दे २।८४)।

गहवइ—१ ग्रामीण। २ चन्द्र (दे २।१००)।

गहिअ—मोड़ा हुआ, टेढा (दे २।८५)।

गहिआ—१ कामभोग के लिए इष्ट स्त्री (दे २।८५)। २ ग्रहण करने योग्य स्त्री।

गहिक—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

गहिल्ल—पागल, भूताविष्ट (आचू पृ ३३७)।

गाअ—गाय—'तहेव गाओ दुज्झाओ' (द ७।२४)।

गागर—१ स्त्री का परिधान विशेष, घाघरा (प्र ४।१४)। २ मत्स्य-विशेष (प्रज्ञा १।५६)।

गागरक—मत्स्य की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

गागरी—गगरी, कलशी—'दोससयगागरीणं' (तंदु १६१)।

गागेज्ज—मथित (दे २।८८)।

गागेज्जा—नवोढ़ा, नवपरिणीता (दे २।८८)।

गाडिअ—विधुर (दे २।८३)।

गाणी—गवादनी—गायों के खाने के लिए घास, भूसा आदि रखने का बड़ा बर्तन या गोचर भूमी (दे २।८२)।

गाधा—घर—'गाधा गृहमित्येकोऽर्थः इति चूर्णौ' (बृटी पृ ७८८)।

गामउड—ग्राम-प्रमुख (निचू २ पृ ५७; दे २।८६)।

गामगोह—गांव का मुखिया, ग्राम-प्रधान (दे २।८६)।

गामचडय—गांव का अधिकारी (कु पृ १३)।

गामणिसुअ—ग्राम-प्रधान, गांव का मुखिया—'गामणिसुअशब्दोऽपि ग्रामप्रधानवाचीत्यन्ये' (दे २।८६ वृ)।

गामणी—गांव का मुखिया, ग्राम-प्रधान (दे २।८६)।

गामपिंडोलग—ग्रामभिक्षु, भिखारी (आ ६।४।११)।

गामरोड—छल से गांव का मुखिया बन बैठने वाला, गांव के लोगों में फूट डालकर गांव का उपभोग करने वाला (दे २।६०)।

गामवोद्दह—गांव का युवक-अधिकारी (कु पृ ५२)।

गामेणी—बकरी (दे २।८४)।

गायरी—कलशी, छोटा घड़ा (दे २।८९)।

गार—१ गीली मिट्टी, कर्दम (निभा ४२३६)। २ कंकड़ (व्यभा ४।४ टी प ९)।

गारि—गीली मिट्टी, कर्दम (निचू ३ पृ ३७०)।

गावाण—पर्वत (प्रा ३।५६)।

गाविआलोग—जहां गायों को बांटा आदि खिलाया जाता है—'गाविआलोगे जत्थ गाविओ लिइंति' (भाचू पृ ३७०)।

गावी—गाय (द ५।१२)।

गाह—घर—'गाह त्ति वा गिह त्ति वा एगट्ठं' (आचू पृ ३३८)।

गाहा—घर—'गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा' (व्यभा ८ टी प १)।

गाहावइ—१ गृहपति, गृहस्थ (बृ १।३२)। २ धनी कौटुम्बिक (स्थाटी प २५८)। ३ आश्रयदाता (स्थाटी प ३२२)।

गाहुलि—क्रूर जलचर प्राणी-विशेष (दे २।८९)।

गाहुल्लिया—गाथा—'अण्णा गाहुल्लियं पढइ' (कु पृ २६)।

गिंधुअ—स्तन पर गांठ देकर बांधा हुआ वस्त्र—'कयगंठि थणोवरि विरइ-अंसुअं गिंधुअं जाणं' (पा ६५९)।

गिंधुल्ल—कञ्चुक, चोली (पा ११६)।

गिड्डिया—गेंद को फेंकने वाली वक्र यष्टिका (प्रसा ४३५)।

गिणि—स्वजन (व्यभा ५ टी प २६)।

गिर—बीज-कोश (निचू २ पृ १८५)।

गिरि—बीजकोश (दे ६।१४८)।

गिरिकण्णइ—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

गिरिजन्न—१ कोंकण देश में होने वाला सायंकालीन भोज—'गिरियज्ञो नाम कोंकणादिदेशेषु सायाह्नकालभावी प्रकरणविशेषः। आह च चूर्णिकृत्—'गिरियज्ञः कोंकणादिषु भवति उस्सूरे त्ति'। २ लाट देश में वर्षा ऋतु में होने वाला भोज—'गिरिजन्नो मत्तवालसंखडी भन्नइ सा, लाडविसए वरिसारत्ते भवइ त्ति। ३ भूमिदाह—'गिरिकं (ज)न्न त्ति भूमिदाहो त्ति भणितं होइ' (बृटी पृ ८०७)।

गिरोलिया—छिपकली, गृहगोधा (कु पृ १८४)।

गिल्ल—गीला, आर्द्र—'गिल्ल-सन्निही-गुल—कक्कय-घयतेल्लादिया मुणेतव्वा' (जीचू पृ १४)।

गिल्लि—१ दो पुरुषों द्वारा उठाई जाने वाली पालकी, शिविका (दश्रु ६।३)। २ अंबाडी, हौदा—'हस्तिनः उपरि कोल्लरूपा या मानुषं गिलतीवेति। लोकभाषायां अंबाडी इति प्रसिद्धा' (राजटी पृ १७)।

गिल्लिरी—जाल-विशेष (विपा १।८।१६)।

गिहेलुग—दहलीज, देहली (आचू पृ ३६४)।

गिहेलुय—दहलीज (नि १३।६)—'गिहेलुओ उंबरो उ णायव्वो' (निभा ४२६८)।

गुंगुयंत—भय से आकुल-व्याकुल—'ते गुंगुयंता अच्छंति' (उशाटी प १७६)।

गुंछा—१ बिंदु। २ अधम। ३ मूंछ (दे २।१०१)।

गुंजेल्लिअ—पिंडीकृत, एकत्रित किया हुआ (दे २।६२)।

गुंठ—१ घोड़ा—'गुंठो घोडगो' (निचू ४ पृ १११)। २ महिष—'गुण्ठो नाम घोटको महिषो वा' (बृटी पृ ८६४)। ३ मायावी (व्यभा ४।३ टी प ६६)। ४ दुष्ट घोड़ा (दे २।६१)।

गुंठा—माया (व्यभा ४।३ टी प ७०)।

गुंठी—नीरंगी, घुंघट (दे २।६०)।

गुंड—मुस्ता से उत्पन्न होने वाला 'लचक' नाम का तृण-विशेष (दे २।६१)।

गुंदा—१ बिन्दु। २ अधम (दे २।१०१)।

गुंपा—१ बिन्दु। २ अधम (दे २।१०१)।

गुंफ—गुप्ति, कारावास (दे २।६०)।

गुंफी—शतपदी, कनखजूरा (दे २।६१)।

गुज्झक्खिणी—स्वामिनी (बृभा ५७०४)।

गुट्ठ—स्तम्ब, तृण-काण्ड (उपा २।२१)।

गुट्ठी—मित्र—'दो गुट्ठिओ गोट्ठिया वा पव्वाविता' (निचू ३ पृ २८४)।

गुट्ठीय—मित्र (निचू ३ पृ २८४)।

गुडदालिअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे २।६२)।

गुडधाना—गुडपपडी—'गुडपर्पटिका लोकप्रसिद्धा गुडधाना' (भटी प ३२६)।

गुडोलद्धिआ—चुंबन (दे २।६१)।

गुणनिया—व्यायाम-विशेष (ज्ञाटी प २४)।

गुण्हुपय—कृमि-विशेष (अंवि पृ २२६)।

गुत्तण्हाण—पितृतर्पण, पितरों को जलांजलि देना (दे २।६३)।

गुत्ति—१ बंधन, जेल। २ इच्छा। ३ वचन। ४ लता। ५ मुकुट की माला, शिरोमाल्य (दे २।१०१)।

गुत्थंड—भासपक्षी (दे २।९२)।

गुप्पंत—१ शय्या, बिछौना। २ रक्षित (दे २।१०२)। ३ व्याकुल (से १।२; दे २।१०२)

गुफगुमिअ—सुगन्धयुक्त (दे २।९३)।

गुब्बर—गांव-विशेष, गोबर गांव (आवमटी प ३३७)।

गुमिल—१ मूढ। २ गहन। ३ प्रस्खलित। ४ आपूर्ण (दे २।१०२)।

गुम्म—१ समूह—'गुम्मो समूहो' (दश्रुचू प ९१)। २ स्थान (ओटी प ८१)।

गुम्मइअ—१ मूढ (ओनि १३६; दे २।१०३)। २ संचलित। ३ स्खलित। ४ विघटित। ५ पूरित (दे २।१०३)।

गुम्मिअ—उन्मूलित, मूल से उखाड़ा हुआ (दे २।९२)।

गुम्मिय—१ स्थान-विशेष का रक्षक, कोतवाल (ओनि १९३)। २ जेल-रक्षक, गुप्तिपाल (ओनि ७६६)। ३ घूर्णित।

गुम्मी—१ कनखजूरी (उ ३६।१३८)। २ राशि, ढेर (दश्रुचू प ९१)। इच्छा (दे २।९०)।

गुम्हि—कनखजूरा—'गुम्हि-विच्छुग-सप्पादिया पविसंति' (निचू २ पृ १९७)।

गुरुल—भोजन से संबंधित रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

गुल—चुम्बन (दे २।९१)।

गुलइय—गुल्मित, गुल्मवाला (औप ५)।

गुलखित—चुंबित (अंवि पृ १४८)।

गुलगुलाइय—हाथी का हर्ष से चिंघाड़ना (जीव ३।४४७)।

गुलभग—गोल पात्र (अंवि पृ ६५)।

गुललावणिया—गुड से निष्पन्न खाद्य-विशेष (पंक ७२८)।

गुलिअ—१ मथित (दे २।१०३)। २ गेंद (पा ८४६)।

गुलिका—१ पिटक। २ बुसपुञ्ज (बृटी पृ ८०५)।

गुलिया—१ पिटक (बृटी पृ ८०५)। २ बुसपुंज, भूसा (बृटी पृ ८०५; दे २।१०३)। ३ वल्कल—'विशेष-चूर्णा—गुलियत्ति वक्कलाणि घेप्पंति' (बृटी पृ ८१९)। ४ मथित, विलोडित। ५ गेंद। ६ गुच्छा (दे २।१०३)।

गुलुइय—गुल्मित, लताओं से युक्त (भ १।५०)।
गुलुगुंछिअ—१ बाड से व्यवहित (दे २।९३)। २ उन्नमित (वृ)।
गुलुगुलिय—हाथी की चिंघाड़ (उसुटी प ६४)।
गुलुच्छ—१ घुमाया हुआ (दे २।९२)। २ गुच्छा (पा ३४७)।
गुविय—क्षुब्ध, उद्वेलित (स्था ३।४६५)।
गुविल—१ गहन, सघन (बृभा ६४८९)। २ जंगल—'जर-मरण-चउग्गई-गुविलं' (महा ४४)। ३ चीनी से निष्पन्न वस्तु।
गुहा—१ समवाय, साधुओं का समूह। २ उपाश्रय—'गुहास्तु समवायाः प्ररूपणगुहा वा गृह्यन्त इति' (नंदीटी पृ ९)।
गुहिर—गम्भीर (पा ३२३)।
गेंठुअ—स्तन के ऊपर के वस्त्र की गांठ (दे २।९३)।
गेंठुल्ल—कञ्चुक, चोली (दे २।९४)।
गेंड—स्तन के ऊपर की वस्त्र-ग्रन्थि (दे २।९३)।
गेंडुई—क्रीडा (दे २।९४)।
गेज्ज—मथित (दे २।८८)।
गेज्जल—कंठ का आभूषण (दे २।९४)।
गेडु—१ पंक, कर्दम। २ यव (दे २।१०४)।
गेण्हिअ—मुक्ता-माला जो छाती पर लटकती है (दे २।९४)।
गेल्लि—हौदा (भटी प १८७)।
गेहि—आसक्ति, गृद्धि (आ ६।३७)।
गोअंट—१ गाय के चरण (दे २।९८)। २ जमीन पर उगने वाले सिंघाड़े—'गोअंटो स्थलशृंगाट इत्यन्ये' (वृ)।
गोअग्गा—गली (दे २।९६)।
गोअला—दूध बेचने वाली (दे २।९८)।
गोआ—छोटा घड़ा, गगरी (दे २।८९)।
गोआलिआ—वर्षा ऋतु में होने वाला कीट-विशेष (दे २।९८)।
गोंजी—मंजरी (दे २।९५)।
गोंठी—मंजरी (दे २।९५)।
गोंड—कानन, वन (दे २।९४)।
गोंडी—मंजरी, मांजर (दे २।९५)।
गोंदी—मंजरी (कु पृ ३२)।

गोंदीण—मोर का पित्त (दे २।९७)।
गोकिलंज—पात्र-विशेष (भटी प ३१३)।
गोकिलिंज—गाय को चारा आदि खिलाने के लिए बांस का बना हुआ भाजन-विशेष (भ ७।१५९)।
गोखलक—गवाक्ष (व्यभा ३ टी प ६३)।
गोच्चअ—कोड़ा (दे २।९७)।
गोच्चिय—राज्य का अधिकारी, कोतवाल (पिटी प ६९)।
गोच्छणव—१ कृषि का उपकरण-विशेष। २ खाद (इ २६।११)।
गोच्छय—मुनि का एक उपकरण जो पात्र तथा वस्त्र का प्रमार्जन करने के काम आता है—'होइ पमज्जणहेउं तु गोच्छओ भाणवत्थाणं' (पंव ८००)।
गोच्छा—मंजरी (दे २।९५)।
गोज्ज—१ गायक (जीभा ६१४)। २ शारीरिक दोष वाला बैल।
गोज्झ—नाटक, नृत्य-विशेष—'गोज्झपेक्खिया—नृत्यविशेषप्रेक्षकाः' (आवहाटी १ पृ ६२)।
गोज्झक्खिणी—स्वामिनी (बृ टी पृ १५०९)।
गोट्ठ—आभीरपल्ली (कु पृ ७७)।
गोट्ठग—मित्र—'गोट्ठगेहिं लड्डुगा सामण्णं कता' (निचू ३ पृ ४३७)।
गोट्ठिय—मित्र (निचू ३ पृ २८४)।
गोट्ठी—मित्र (निचू ३ पृ २८४)।
गोडी—मिट्टी की गुटिका—'गोडीए घडो भिण्णो' (दअचू पृ ४४)।
गोड्ड—१ गुड़ से बनी मिठाई (भ १८।१०७)। २ घुटना (आवचू १)।
गोड्डिका—गेंद खेलने की लकड़ी जो अन्त में मुड़ी हुई होती है (प्रसा ४३५)।
गोण—१ गाय (प्रज्ञा १।६४) २ बैल (इ २६।१२; दे २।१०४)। ३ साक्षी (दे २।१०४)।
गोणक—पात्र-विशेष (उपाटी पृ १०१)।
गोणपोतल—बछड़ा (आवहाटी १ पृ १३२)।
गोणिवक—गायों का समूह (दे २।९७)।
गोणिय—गौओं का व्यापारी (व्यभा ९ टी प ५)।
गोणी—१ गाय (पिनि २२४)। २ पात्र-विशेष (उपाटी पृ १०१)।

गोतिहाणी—गोवत्सा, बछिया—'तियासजायाए गोतिहाणीए' (तंदु ८८)।

गोत्तफुसिया—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

गोत्थूभग—बकरा (निचू १ पृ ६)।

गोद्दह—नट, नर्तक—'गाममज्झयारे गोद्दहे रममाणे····' (निचू १ पृ १०३)।

गोध—१ ग्रामीण। २ म्लेच्छ व्यक्ति (उचू पृ १४८)।
३ राजपुरुष (आवचू १ पृ ५१७)।

गोधसालक—सुरा-विशेष (अंवि पृ ६४)।

गोप—चतुरिंद्रिय प्राणी-विशेष (निचू १ पृ ९७)।

गोपच्छेलक—प्राणी-विशेष (अंवि पृ ९२)।

गोप्फण्ण—चमड़े की डोरी से बना पत्थर फेंकने का साधन—'गोप्फण्णेण धणुएण वा वग्घादीण अभिभवंति' (निचू २ पृ ६)।

गोफणा—पत्थर फेंकने का साधन—'गोफणा चम्मदवरगमया पसिद्धा, ताए लेट्ठुओ उवलओ वा घत्तिज्जंति' (निचू २ पृ ६)।

गोबर—गोबर (बृटी पृ ५११)।

गोब्बर—१ गोबर (बृभा १७३१)। २ एक गांव का नाम—'मगहा गोब्बरगामो' (आवनि ४९३)।

गोमट्ठा—गली (दे २।९६)।

गोमाणसिया (गोमासणिया ?)—शय्यारूप स्थान-विशेष (जीव ३।३९८ टी प २३०)।

गोमिणी—स्त्री का संबोधन, चाटुवचन—'गोमिणी गोल्लविसए, सामिणी-गोमिणीओ चाटुवयणं' (दअचू पृ १६८)।

गोमिय—१ आदरसूचक संबोधन (द ७।१९)—'भट्टि सामिय गोमिया पूयावयणाणि निद्देसातिसु सव्वविभत्तिसु' (अचू पृ १६९)। २ कोतवाल (निभा ३३७१)। ३ कारावास का आरक्षक, जेलर (प्र २।१२)।

गोमी—१ शृगाली, सियारिन (व्यभा ६ टी प ५७)। २ कनखजूरा (व्यभा ८ टी प ७)।

गोमुहिय—वक्षस्थल का आच्छादक वस्त्र (ज्ञाटी प २४६)।

गोम्मि—कनखजूरा, श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

गोम्मी—कनखजूरा (व्यभा ८ टी प ७)।

गोम्हि—कनखजूरा (निभा १२४५)।

गोम्हिय—कनखजूरा (अनुद्वा ५२५)।

गोम्ही—कनखजूरा, कर्णशृगालिका (प्रज्ञा १।५०)।

गोर—गेहूं—'गोर त्ति गोधूमा' (निचू ४ पृ १११)।

गोरंफिडी—गोधा, गोह (दे २।९८)।

गोरह—वाहनयोग्य तथा रथयोग्य बैल (आचूला ४।२७)।

गोरहग—१ तीन वर्ष का बैल (द ७।२४)। २ रथ की भांति तीव्र गति से दौड़ने वाला बैल। ३ प्रसव-समर्थ (दजिचू पृ २५३)।

गोरा—१ हल का दंड। २ चक्षु। ३ ग्रीवा (दे २।१०४)।

गोल—१ युवा के लिए प्रयुक्त प्रिय संबोधन—'गोल जुवाणप्रियवयणं' (दअचू पृ १६९)। २ गोलदेश में व्यवहृत अवमानना सूचक शब्द—'होल इति वा गोल इति वा एतौ च देशान्तरेऽवज्ञा-संसूचकौ' (आटी प ३८८)। ३ साक्षी (दे २।९५)। ४ गोत्र-विशेष (अंवि पृ १४९)।

गोला—१ गाय। २ गोदावरी नदी। ३ नदी। ४ सखी (दे २।१०४)।

गोलिका—रथ के आकार का यान-विशेष (अंवि पृ १६६)।

गोलिय—छाछ आदि बेचने वाला—'एमेव तेल्लि-गोलिय-पूविय-मोरंड-दुस्सिए चेव' (बृभा ३२८१)।

गोलिया—१ गुटिका—तीए दासीए घडो गोलियाए भिन्नो' (दनि २)। २ बड़ी थाली—'भंडिका—स्थाल्यः ता एव महत्यो गोलिकाः' (स्थाटी प ३९८)।

गोलियालिंग—विशेष प्रयोजनों के लिए बनाए जाने वाले चुल्ली-स्थान—'अग्नेराश्रयविशेषाः। अन्ये तु देशभेदनीत्या पिष्टपाचन-काग्न्यादिभेदेनैतेषां स्वरूपं कथयन्ति तदप्यविरुद्धम्' (जीवटी प १२३)।

गोलियालिंछ—विशेष प्रयोजनों के लिए बनाए जाने वाले चुल्लीस्थान (जीव ३।११८)।

गोली—मंथनी (दे २।९५)।

गोलुकि—वितत वाद्य का एक प्रकार (नि १७।१३६)।

गोलोम—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४९)।

गोल्ला—बिम्बी फल, कुंदरुन का फल (आवमटी प १९३)।

गोल्हा—१ बिम्बी, कुन्दरुन की वल्ली (प्रटी प ८१; दे २।९५)। २ बिंबीफल (जंबूटी प ११२)।

गोवर—गोबर (दे २।९६)।

गोवहिया—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

गोवालिया—वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला अहिलोडिका नामक कीट (बृभा ५८७०)—'गोवालिया णाम अहिलोडिकाख्यो जीवविशेषः' (चू प २१३)।

गोविअ—अजल्पाक, नहीं बोलने वाला (दे २।९७)।

गोविल्ल—कञ्चुक, कांचली (दे २।९४)।

गोवी—बाला (दे २।९६)।

गोव्वर—गोबर (दे २।९६)।

गोस—प्रभात, प्रातःकाल—'गोसे य पभायम्मी' (पंक ५७३; दे २।९६)।

गोसंखडी—जंगल की ओर जाने वाली गायों का समूह—'गोसंखडी उज्जूहिगा भन्नति' (निचू ३ पृ ३४८)।

गोसग्ग—प्रभातकाल—'बिती गोसग्गम्मी पभाते पव्वावइस्सामो' (पंक ६०१; दे २।९६)।

गोसण्ण—मूर्ख (दे २।९७)।

गोह—१ गांव का मुखिया (दजिचू पृ ५५; दे २।८९)। २ राजपुरुष (निचू १ पृ १०४)। ३ ग्रामीण (निचू ३ पृ १३९)। ४ जार, उपपति (आवहाटी १ पृ २७७)। ५ अधम (आवहाटी २ पृ १३४)। ६ क्रूर मनुष्य (उसुटी प ७५)। ७ योद्धा। ८ पुरुष (दे २।८९ वृ)।

गोहट्ठाण—प्रदेश-विशेष—'जह ते गोहट्ठाणे वोसट्ठनिसट्ठचत्तदेहगा' (व्यभा १० टी प ८०)।

गोहातक—कोतवाल, राजपुरुष (अंवि पृ १६१)।

गोहिया—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

गोही—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।९)।

गोहुर—गोबर (दे २।९६)।

घ

घंघ—१ बृहत्, बड़ा (आवहाटी २ पृ १०९)। २ गृह (दे २।१०५)।

घंघल—१ झगड़ा (प्रा ४।४२२)। २ घबराहट।

घंघसाला—१ अनाथालय (निचू २ पृ १८)। २ कार्पटिक भिक्षुओं का आवास-स्थल (आचू २ पृ २३०)।

घंघोर—भ्रमणशील (दे २।१०६)।

घंसा—भूमि की रेखा (जीवटी प १५२)।

घंसिय—गाड़ी, यान (निचू ४ पृ १११)।

घंसिया—गाड़ी (बृटी पृ ८६४)।

घग्गर—घाघरा, स्त्रियों का वस्त्र-विशेष (निचू ४ पृ १४३; दे २।१०७)।

घच्चण—उपमर्दन (ओनि १६८)।

घट्ट—१ कुसुंभ रंग से रंगा हुआ वस्त्र। २ नदी का घाट। ३ वेणु, बांस (दे २।१११)।

घड—मित्र, समवयस्क (निचू ३ पृ ४६८)।

घडभोज्ज—गोष्ठी, मंडली—'घडभोज्जं नाम महत्तरग-अणुमहत्तरग-ललिता-सणिता कडुगदंड-धारपरिग्गहिता गोट्ठी' (दश्रुचू प ५०)।

घडा—गोष्ठी (निभा ११७५)।

घडाभोज्ज—गांव-प्रधान और अनुप्रधान द्वारा गांव के बाहर दिया जाने वाला भोज (व्यभा १० टी प ६)।

घडिअघडा—गोष्ठी (दे २।१०५)।

घडिगा—घंटी, बच्चों का खिलौना—'घडिगा णाम कुंडिल्लगा चेडरूवरमणिका' (सूचू १ पृ ११८)।

घडिया—गोष्ठी (नंदीटि पृ १४२)।

घडी—गोष्ठी (दे १।२०५)।

घडुल्लय—घडा (दश्रुचू पृ ११२)।

घडोपल—चतुष्पद परिसर्प-विशेष (अंवि पृ २२६)।

घढ—टीला, स्तूप (पा ६५६)।

घण—छाती, वक्षस्थल (बृभा ६१६८)।

घणघणाइय—अनुकरणवाची शब्द, रथ की आवाज (भटी पृ ८८७)।

घणपिच्छलिका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

घणवाहि—इन्द्र (दे २।१०७)।

घणसंताण—जाल का कीड़ा, मकड़ा (पंक २७४)।

घण्ण—१ वक्षस्थल। २ रंगा हुआ (दे २।१०५)। ३ घात्य, मार डालने योग्य।

घतण—भांड, विदूषक (बृभा ६३२५)।

घम्मकरक—पानी छानने का कपड़ा—'घम्मकरकादि परिपूयं घेप्पति' (निचू १ पृ ७४)।

घम्मोई—तृण-विशेष (दे २।१०६)।

घम्मोडी—१ मध्याह्न। २ मच्छर। ३ ग्रामणी नामक तृण (दे २।११२)।

घयगोलिय—घी बेचने वाला (निचू २ पृ ३६२)।

घयघट्ट—घी का मैल (पंव ३७६)।

घयण—भाण्ड, बहुरूपिया (नंदी ३८।३)।

घयमंडु—घृतसार, ऊपर का घी (व्यभा ३ टी प १०६)।

घर—गृह (अनु ३।२४)।

घरकुडी—१ घर के बाहर का कमरा। २ घर के चौक में स्थित कमरा (ओनि १०५)।

घरकुडीरी—स्त्री का शरीर—'किह ताव घरकुडीरी कई सहस्सेहिं अपरितंतेहिं' (तंदु १२०)

घरघंट—चिड़िया, गोरैया पक्षी (दे २।१०७)।

घरघुला—छिपकली (अंवि पृ २२६)।

घरट्ट—१ अरहट, पानी निकालने का यंत्र—'घरट्टे वाहेऊण तुसे खवावेइ' (उसुटी प ६६)। २ कच्चा चावल—'लोट्टः—घरट्टादिचूर्णः (पिटी प १०)।

घरणी—गृहिणी (उ २१।४)।

घरतोलिया—छिपकली (दशचू प ६८)।

घरत्थ—गृहस्थ (दशचू पृ ४)।

घरपूपल—बिलशायी जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

घरपोपलिका—छिपकली (अंवि पृ २३७)।

घरयंद—दर्पण (दे २।१०७)।

घरास—गृहवास (निभा १६८५)।

घरिणी—घरवाली, पत्नी, गृहिणी (उसुटी प १३७)।

घरिल्ली—पत्नी (दे २।१०६)

घरोइला—छिपकली (प्रज्ञा १।७६)।

घरोल—घर में बना हुआ भोजन-विशेष (दे २।१०६)।

घरोलिका—छिपकली (ओटी प १२६)।

घरोलिया—छिपकली (प्र १।८)।

घरोली—छिपकली—'भमइ जं उमत्ता घरोलिव्व' (दे २।१०५)।

घल्ल—अनुरक्त (दे २।१०५)।

घल्लिअ—१ क्षिप्त, डाला हुआ (दे ६।११६ वृ)। २ निर्मित किया हुआ।

घल्लित—आक्रांत होना, दबना—'सो रायगिहच्छणपिंडोलगो वेभारगिरिसिलाए घल्लितो' (सूचू १ पृ २३२)।

घसा—१ पोली भूमि (द ६।६१)—'घसा नाम जत्थ एगदेसे अक्कममाणे सो पदेसो सव्वो चलइ सा घसा भण्णइ' (जिचू पृ २३१)। २ भूमिरेखा।

घसी—१ पोली भूमि। २ पुराने भूसे का ढेर—'गसति सुहुमसरीरजीवविसेसा इति घसी अंतोसाणो भूमिपदेसो पुराणभूसातिरासी वा' (दअचू पृ १५६) ३ ढालू भूमि—'घसी नाम स्थलादधस्तादवतरणं' (आटी प ३३७)। ४ भूमि-रेखा (जीव ३।६२३)। ५ अवतरण, नीचे उतरना।

घाड—मस्तक के नीचे का भाग (ति ६५३)।

घाडा—मस्तक के नीचे का भाग (जंबूटी प १७०)।

घाडिय—मित्र—'घाडिउ त्ति वयंसो' (निचू २ पृ ५२)।

घाडियय—मित्र (ज्ञा १।२।६५)।

घाण—१ पावा, कड़ाही आदि में एक बार डालने का परिमाण (प्रसाटी प ५३)। २ कोल्हू—'तिलपीडनयन्त्रे' (पिटी प ६)।

घाणक—कोल्हु, घानी (प्रसाटी प १४३)।

घाणी—दुर्गन्ध (निचू २ पृ ४१)।

घायण—गायक (दे २।१०८)।

घार—प्राकार, परकोटा (दे २।१०८)।

घारंत—घृतपूर, घेवर (दे २।१०८)।

घारिया—मिष्टान्न-विशेष (दअचू पृ २१७)। धारी (गुजराती)।

घारी—१ चील पक्षी (दे २।१०७)। २ छन्द-विशेष।

घालह—एक प्रकार के तापस (निरटी पृ २५)।

घासिआ—घास लाने वाली (ओटी प ६७)।

घिं—१ ग्रीष्म ऋतु—'घिं-सिसिरवासे' (ओभा ३१०)। २ गरमी।

घिंघिणोपित—घूर्णित (?) (अंवि पृ १४८)।

घिसु—१ गरमी—'घिसु मे विद्धयणं विजाणाहि' (सू १।४।४१)। २ ग्रीष्म ऋतु।

घिसुरि—गरमी (सूचू १ पृ १४७)।
घिट्ट—कुब्ज (दे २।१०८)।
घिय—निन्दित (दे २।१०८)।
घिरोलिया—छिपकली (आवहाटी १ पृ २१३)।
घिसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१६)।
घुंघुरुड—उत्कर, ढेर (दे २।१०६)।
घुंट—घूंट (बृभा २३६०)।
घुंटिय—घूंट (तंदु ११७)।
घुंटिआ—घूंट—'जाव अइसाउरस त्ति अंजलीहिं घुंटिया तेण' (उसुटी प ३७)।
घुंटित—घुटा हुआ (जंबूटी प २०)।
घुक्कभरध—अंतरिक्ष में समुद्भूत क्षुद्रजंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।
घुक्किय—चपल, कपि-चेष्टा—'दे मंदभग्ग ! घुक्किय, तूससि तं णाममेत्तेणं' (जीभा ८३८)।
घुग्घुच्छण—खेद (दे २।११० वृ)।
घुग्घुच्छणय—खेद (दे २।११०)।
घुग्घुरक—टखना, गुल्फ (आवहाटी १ पृ १३७)।
घुग्घुरि—मेंढक (दे २।१०६)।
घुग्घस्सुसय—आशंका युक्त वचन (दे २।१०६)।
घुघुयंत—'घु-घु' आवाज करना, उल्लू का बोलना (ज्ञा १।८।७२)।
घुट्टघुणिअ—पर्वत की बड़ी शिला (दे २।११०)।
घुणघुणिआ—कर्णोपकर्णिका, अफवाह (दे २।११०)।
घुणाहुणी—कर्णोपकर्णिका, एक कान से दूसरे कान, कानाकानी (उसुटी प १६२)।
घुत्तिय—गवेषित (दे २।१०६)।
घुरुघुरि—मेंढक (दे २।१०६)।
घुल्ला—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।
घुल्लिका—द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (जीवटी प ३१)।
घुसिणिअ—गवेषित (दे २।१०६)।
घुसिरसार—अवस्नान, विवाह आदि के अवसर पर किया जानेवाला मसूर आदि का उबटन (दे २।११०)।

घुसुली—बिलौना करने वाली स्त्री (पिनि ५७३)।

घूरा—१ जंघा। २ खलक—शरीर का अवयव-विशेष (सू २।२।२२)।

घूरीया—१ जंघा। २ खलक—शरीर का अवयव-विशेष (सूटी २ प ६६)।

घेइण—बहुरूपिया—'घेइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करेंतो कंदप्पा भवंति (निचू ४ पृ २५)।

घेवर—मिष्टान्न-विशेष, घृतपूर (दे २।१०८)।

घोट्ट—घूंट—'आउक्काए जति सो घोट्टे करेइ ततिया चउलहुगा' (निचू ४ पृ ४८)।

घोड—१ धूर्त (निभा १७१३)। २ कामासक्त (निचू २ पृ ४४०)। ३ नीच जाति के लोग, डंगर आदि (व्यभा ७ टी प ४१)। ४ राज्य-कर्मचारी (बृभा २०६६)। ५ सफाई करने वाले (बृभा २६३४)।

घोडग—घोड़ा (आचू पृ ३७३)।

घोडा—घोड़ा (जीवटी प ३८)।

घोडिय—मित्र (बृ ५)।

घोर—१ विनष्ट। २ गीध पक्षी (दे २।११२)।

घोरण—खर्राटे भरना (ओटी प ५८)।

घोरि—शलभ-विशेष (दे २।१११)।

घोरुहणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञाटी प ४७)।

घोल—१ वेष्टित (आवहाटी १ पृ २८३)। २ वस्त्र से छाना हुआ दही (प्रसा २२६)।

घोलचम्म—एक प्रकार का थैला (नंदीटि पृ १३८)।

घोलवड—खाद्य पदार्थ, दहीबड़ा (प्रसा २२६)।

घोलिय—१ अत्यंत लीन—'अज्जरक्खिओ जविएसु अईव घोलिओ पुच्छइ' (उसुटी प २४)। २ शिलातल। ३ बलात्कार (दे २।११२)।

घोलिर—घूमने वाला (उसुटी प ६०)।

घोसालई—लता-विशेष (प्रज्ञाटी प ३३)।

घोसाली—शरद् काल में होने वाली लता-विशेष (दे २।१११)।

घोसेडिय—पटोल का शाक (राजटी पृ ८६)।

घोहणुमच्छ—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।

च

चउक्क—१ चौराहा (औप १)। २ आंगन, चौक (दे ३।२)—'हिअयचउक्के' (वृ)।

चउक्कर—कार्तिकेय (दे ३।५)।

चउरंचिध—राजा सातवाहन (दे ३।७)।

चउर—पर्वत—'पत्ता य इमे चउरसिहरम्मि' (कु पृ १६२)।

चंग—सुन्दर, मनोहर (दे ३।१)।

चंगबेर—१ काष्ठ पात्र—'कट्ठमय समिताितिम्मणमलणं चंगेरिगासंठितं चंगबेरं' (दअचू पृ १७२)। २ बाँस से बना पात्र (दजिचू पृ २५४)।

चंगिमा—सौन्दर्य (विभा १००)।

चंगेरि—तृण से निर्मित पात्र, टोकरी (जीभा २३६७)।

चंगेरिया—टोकरी (राज १२)।

चंगेरी—१ बांस का पात्र (दजिचू पृ २५४)। २ काष्ठ का बड़ा पात्र। ३ बड़ी पट्टलिका (प्रटी प १३)।

चंगोड—सिक्के, रुपये आदि रखने का कोष्ठागार (बृभा ५११६)।

चंचइय—१ उपचित, खचित। २ शोभित (कु पृ २०८)।

चंचट—क्षुद्रकीट-विशेष (जीवटी प २८२)।

चंचपुड—आघात, प्रहार (जंबू ३।१०६ पा)।

चंचप्पर—असत्य (दे ३।४)।

चंचुच्चिय—कुटिल गमन, टेढी चाल (औप ६४)।

चंचुमालइय—रोमांचित, पुलकित—'धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चंचुमालइयतणुए' (भ ११।१३४)।

चंचुय—जाति-विशेष (कु पृ ४०)।

चंडातक—अर्धोरुक, स्त्रियों का वस्त्र-विशेष (दे ३।१३)।

चंडिअ—छिन्न (दे ३।३)।

चंडिक्कित—क्रोधी (निचू २ पृ ३८४)।

चंडिक्क—क्रोध, रौद्रता—'कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे' (भ १२।१०३; दे ३।२)।

चंडिक्कय—अत्यधिक कुपित, भयंकर—'रुट्ठा कुविया चंडिक्किया' (भ ३।४५)।

चंडिज्ज—१ पिशुन, चुगलखोर। २ क्रोध (दे ३।२०)।

चंडिल—पीन, पुष्ट (दे ३।३)।

चंदइल्ल—मयूर (दे ३।५)।

चंदट्ठिआ—१ कंधा। २ गुच्छा (दे ३।६)।

चंदण—द्वीन्द्रिय जंतु, बेहडा या रुद्राक्ष के पेड़ में होनेवाला जीव (जीवटी प ३१)।

चंदणि—वर्चोगृह, शौचालय (आवहाटी २ पृ १२८)।

चंदणिउदय—आचमन का पानी बहने का स्थान (आचूला १।६२)।

चंदणिका—१ वर्चोगृह, शौचस्थान (उशाटी प १०६)। २ पुष्प-विशेष (अंवि पृ २३२)।

चंदणिया—१ गंदे पानी की नाली—'ताए चंदणियाए छूढो—गृहस्रोतसि इत्यर्थः' (उसुटी प ३१)। २ वर्चोगृह, शौचालय (आवहाटी १ पृ २३६)।

चंदणी—रोहिणी, चांद की पत्नी—'बंभदत्तो वि गुरुगुणवरधणुकलिओ त्ति माणिउं मणइ। रयणवइं रयणिवई चंदो इव चंदणीजोगो' (उसुटी प १६२)।

चंदवडाया—वह स्त्री जिसका आधा शरीर ढंका हुआ हो (दे ३।७)।

चंदाणिउदय—१ जूठे बर्तन धोने का स्थान—'चंदाणिउदकं जहिं उच्छिट्ठ-भायणादि धुव्वति' (आचू पृ ३२८)। २ कुल्ला करने का स्थान—'चंदाणिउदयत्ति आचमनोदकप्रवाहभूमिः' (आटी प ३४०)।

चंदालग—पूजा के लिए ताम्र-पात्र (सू १।४।४४ पा)।

चंदिल—नापित, नाई (दे ३।२)।

चंदोज्ज—चन्द्र विकासी कमल, कुमुद (दे ३।४)।

चंदोज्जय—कुमुद (दे ३।४ वृ)।

चंपय—ढक्कन—'गोयमा! नो पदीवे झियाइ,...नो तेल्ले झियाइ, नो दीव-चंपए झियाइ, जोती झियाइ' (भ ८।२५६)।

चंपिय—आक्रमण, दबाव (तंदु १४६)।

चंभ—१ हल से जोतने योग्य खेत—'करिसए एक्केक्कं हलचंभं देह' (उसुटी प ४५)। २ हल द्वारा विदारित भूमिरेखा (दे ३।१)।

चक्प्पा—त्वक्, छाल (दे ३।३)।

चकोरित—विद्योतित (नंदीचू पृ ६)।

चक्कणभय—नारंगी का फल (दे ३।७)।

चक्कणाहय—ऊर्मि, तरंग—'णीसासचक्कणाहयताविय' (दे ३।६)।

चक्कल—१ सिंहासन के चार पादों के नीचे का वर्तुलाकार भाग (जंबूटी प ५५)। २ गोलाकार तकिया (बृटी पृ १०५५)। ३ कुंडल। ४ वर्तुल। ५ झूले का फलक। ६ विशाल (दे ३।२०)।

चक्कलंडा—दुमुही सर्पिणी (आवटी प १६३)।

चक्कलित—गोलाकार टुकड़ा (आचू पृ ३४४)।

चक्कलिय—गोल (निचू ३ पृ ४८१)।

चक्कवुंडा—दुमुही सर्पिणी (आवमटी प ४६७)।

चक्किम—अति उत्तम—'चक्किमातिउत्तमा ते णियमा तप्पमाणजुत्ता भवंति' (अनुद्वाचू पृ ५२)।

चक्किय—समर्थ—'चक्किया णं गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए' (भ १३।८७)।

चक्कुलंडा—सर्प-विशेष (दे ३।५)।

चक्कुलेंडा—दुमुही सर्पिणी (आवहाटी १ पृ २३८)।

चक्कोडा—अग्नि-विशेष (दे ३।२)।

चक्खडिअ—जीवितव्य, जीवन (दे ३।६)।

चक्खणिक—आस्वादनिक, चखने योग्य (अंवि पृ २५८)।

चक्खिअ—चखा हुआ, आस्वादित (प्रा ४।२५८)।

चक्खुडुण—प्रेक्षणीय नाटक आदि (दे ३।४)।

चक्खुमेंट—एक आंख को खोलना और दूसरी आंख को बंद करना—'चक्खुमेंटा णाम एक्कं अच्छि उम्मिल्लेति, बितियं णिमिल्लेति' (निचू ४ पृ ३५४)।

चक्खुरक्खणी—लज्जा (दे ३।७)।

चच्च—विलेपन (दे ६।७६)।

चच्चपुट—घोड़ों का विशेष पादघात जिससे उनकी उन्मत्तता द्योतित होती हो (जंबू ३।१०६ पा)।

चच्चपुड—आघात, घोड़ों का पाद-प्रहार—'खुरचलणचच्चपुडेहिं धरणियलं अभिहणमाणं अभिहणमाणं' (जंबू ३।१०६)।

चच्चय—विलेपन—'गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ (राज ३५१)।

चच्चरिक्का—फोड़ा-फुन्सी (आवचू २ पृ १६८)।

चच्चसा—वाद्य-विशेष (राजटी प १२६)।

चच्चा—१ विलेपन, शरीर पर सुगंधित द्रव्य लगाना (ज्ञा १।१।१२७)। २ हस्तबिंब, कुंकुम आदि से लिप्त हथेली का छापा। ३ हस्ततल का आघात, हथेली से धक्का मारना (दे ३।१६)।

चच्चाग—सुगन्धित द्रव्य से उपलिप्त (राज १३१)।

चच्चाय—सुगंधित द्रव्य से उपलिप्त (जीव ३।४४६)।

चच्चिक—स्थासक, सुगंधित वस्तु का विलेपन (प्रा २।१७४)।

चच्चिक्क—विभूषित—'साहू गुणरयणचच्चिक्को' (चउ ३६; दे ३।४)।

चच्चिर—विलेपित (कु पृ १२८)।

चटुलग—खंड-खंड किया हुआ (आवटि प १०४)।

चट्ट—१ हर किसी का द्वार खोलने वाला व्यक्ति, धूर्त्त—'चट्टा धारउग्घट्टगादि' (आचू पृ ३२६)। २ विद्यार्थी (आवचू २ पृ ६०)। ३ आवारा (निचू ३ पृ २४५)। ४ सफाई करने वाले कर्मचारी (बृटी पृ ७४०)। ५ तंत्र-मंत्र का ज्ञाता—'राइणा वाहरावित्रा गारुडिया भोइयभट्टचट्टाइणो' (उसुटी प १७४)। ६ ब्राह्मण (आवहाटी १ पृ २६६)। ७ बुभुक्षा।

चट्टक—काष्ठनिर्मित चम्मच (नंदीटि पृ १३६)।

चट्टसाला—पाठशाला (बृटी पृ १७१)।

चट्टिय—चाट गया—'धयं····सुणएहिं चट्टियं' (बृटी पृ १०८)।

चट्टु—दारुहस्त, काठ का चम्मच (दे ३।१)।

चट्टुअ—दारुहस्त, काष्ठ-चम्मच (दे ३।१ वृ)।

चट्टुक—काठ की बड़ी कड़छी (पिटी प ४६)।

चड—१ चोटी (दे ३।१)। २ शीघ्र (बृटी पृ १३१६)।

चडकर—१ समूह (जंबू २।६५)। २ बार-बार कहना (बृटी पृ १६१३)। ३ विस्तार (विपाटी प ३६)।

चडक्क—१ चटत्कार (प्रा ४।४०६)। २ शस्त्र-विशेष।

चडगर—१ समूह—'भडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते' (अंत ३।६४)। २ बहाना, आरोप (जीभा ८७०)। ३ अधिक कहना, बार-बार

कहना (बृभा ६१०५)। ४ बढ़ा-चढ़ा कर कहना—'महता चडगरत्तणेण अत्यकधा हणति' (सूचू १ पृ २३५)। ५ विस्तृत (भटी पृ ८५२)।

चडप्फडंत—छटपटाना—'चडप्फडंते य त्ति अभीक्ष्णमितस्ततो भ्राम्यतः' (बृटी पृ १६६६)।

चडफड—हलचल (आचू पृ ३५७)।

चडवेला—चपेटा (प्रटी प ५७)।

चडाविय—प्रेषित—'तिण्णिवि छिन्नकडए चडावियाणि' (दहाटी प ६६)।

चडिय—चढा हुआ, आरूढ (प्रा ४।४४५)।

चडिआर—आटोप, आडंबर (दे ३।५)।

चडुग—पात्र-विशेष (व्यभा ८ टी प २२)।

चडुत्तर—चढ़ना-उतरना (बृटी पृ ११४५)।

चडुलग—खण्ड-खण्ड किया हुआ—'विदुलगचडुलगछिन्ने' (सूनि ६६)।

चडुला—रत्न-तिलक, तिलक के स्थान पर पहना जाने वाला मस्तक का आभूषण-विशेष (दे ३।८ वृ)।

चडुलातिलय—स्वर्ण-शृंखला में लटकता हुआ रत्न-तिलक, मस्तक का आभूषण-विशेष—'चडुलातिलयं कंचणसंकलियालंबिरयण-तिलयम्मि' (दे ३।८)।

चडु—१ पिठर के आकार का पात्र (बृभा १६५१)। २ उद्दंड। ३ बहुभक्षी (ति ११६३)।

चडुग—काष्ठपात्र-विशेष—'कट्ठमयवारचडुग' (निभा ३०६०)।

चडुय—काष्ठपात्र—'वारओ चडुयं कव्वयं तं पि कट्ठमयं' (निचू ३ पृ ३४३)।

चणट्ठिया—गुञ्जा (अनुद्वाहाटी पृ ७६)।

चणविका—चना, धान्य-विशेष (अंवि पृ २२०)।

चणा—बुद्धि, निपुणता, चतुराई—'दव्वं चणाए सव्वं आकड्ढितं' (आवचू १ पृ ५२४)।

चणोठिया—गुंजा (अनुद्वामटी प १४३)।

चण्णाडीतय—ऊर्ध्व ग्रीवा—'दव्वुण्णतो जो चण्णाडीतएण विणिहालितो जाति' (दअचू पृ १०२)।

चत्त—तकली, सूत कातने का उपकरण (दे ३।१)।

चत्ताल—चालीस (निचू ४ पृ ११३)।

चत्थरि—हास्य (दे ३।२)।

चदुलग—तिर्यक्—'चदुलगछिन्नं तिर्यक्छिन्नं' (आवहाटी २ पृ १०७)।

चप्पडग—काष्ठ-यंत्र-विशेष (प्र ३।१२)।

चप्पडय—१ चार पल के भार वाला (?) (बृभा ५६७५)। २ चपटा (निभा ८४४)।

चप्पडिज्जंत—आक्रान्त होता हुआ (सूचू १ पृ १६१)।

चप्पाचप्प—ठूंस-ठूंस कर भरना—'ताहे सुक्कस्स चप्पाचप्पं भरेइ' (निचू ४ पृ १४६)।

चप्पाचप्पि—ठूंस-ठूंस कर भरना—'चप्पाचप्पि भरेमाणं दट्ठुं भणति' (निचू ४ पृ १५६)।

चप्पुट्टिका—जादू-टोना—'विंटलानि खिटिका चप्पुटिकादीनि प्रयुञ्जते' (व्यभा ७ टी प ४१)।

चप्पुडिया—चुटकी (ज्ञा १।३।२६)।

चप्पुडी—चुटकी (दे ८।४३)।

चप्फल—१ शेखर-विशेष, शिरोभूषण। २ असत्य, झूठ (दे ३।२०)। ३ झूठा, मिथ्याभाषी (कु पृ २२७)।

चप्फलया—मिथ्याभाषिणी (प्रा ३।३८)।

चप्फलिग—शेखर, मुकुट (नंदीटि पृ १४२)।

चप्फलिगाइय—असत्य, कुतूहलपूर्ण—'सो भणइ—चप्फलिगाइयं कहेइ' (आवहाटी १ पृ २८८)।

चब्बच्चब—भोजन करते समय चब-चब शब्द करना—'पूवलियं खायंतो चब्बच्चबसद्दं सो परं कुणइ' (बृभा २६२४)।

चमढण—१ खिन्नता, उद्विग्नता (बृभा ५२६६)। २ गर्हणा, खिंसना (ओनि ७६)। ३ कदर्थना (ओनि १६३)। ४ जिसकी कदर्थना की जाय वह (ओनि २३७)। ५ मर्दन, अवमर्दन (ओटी प १२६)। ६ आंखें बंद करना (निभा १७३०)। ७ आक्रमण। ८ भोजन।

चमढणा—१ उद्विग्नता (बृभा १५८४)। २ पादप्रहार आदि (ओनि १६३)। ३ मर्दन (ओभा १८७)।

चमढिय—विनष्ट, विनाशित (व्यभा ४।२ टी प २०)।

चमढेत्ता—तिरस्कार कर—'चमढेत्ता गओ—तिरस्कृत्य गतः' (आवहाटी १ पृ १३६)।

चम्मडिल—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २२६)।

चम्मरुक्ख—पुरुष—'दवावेसु इमस्स चम्मरुक्खस्स दीणाराणं अद्धलक्खं' (कु पृ ३२)।

चम्मिरा—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।

चम्मिराज—मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।

चम्मेट्ठ—व्यायाम में काम आने वाला उपकरण मुद्गर आदि (भटी पृ १४१३)।

चरक्ख—पशु-विशेष (दश्रु ७।२४)।

चरु—१ नाम, आख्या (निचू ३ पृ २२५)। २ मंत्रित खाद्य-विशेष—'मा मम पुत्तोवि एवं नासउत्ति तीए खत्तियचरू जिमिओ' (आवहाटी १ पृ २६१)। ३ चरु-पात्र में तैयार किया गया चावल आदि द्रव्य जो बलि के काम आता है (निरटी पृ ३२)।

चरुग—१ नाम, आख्या (निभा ३४६०)—दाणरुई सड्ढो वा णिवेयण-चरुववदेसं कातुं साधूण देति' (चू ३ पृ २२५)। २ मंत्रित खाद्य-विशेष—'अहं ते चरुगं साहेमि जेणं ते पुत्तो बंभणस्स पहाणो होहिति' (आवहाटी १ पृ २६१)।

चरुल्लेव—नाम, आख्या (दे ३।६)।

चरेडिया—छेना (नंदीटि पृ १८२)।

चलणि—पैर तक लगने वाले कीचड़ का स्थान—'पंकबहुला पणगबहुला चलणिबहुला' (भ ७।११८)।

चलणिया—उपकरण-विशेष (पंव ७८२)।

चलणी—पैरों का स्पर्श करने वाला कीचड़—'चलनी चरणमात्रस्पर्शी कर्दमः' (जीवटी प २९२)।

चलिका—फल-विशेष (अंवि पृ ७०)।

चल्ल—चरण (अंवि पृ ६०)।

चवग—भट्टी—'महल्ले चवगे चुल्लीसु य दहंति' (सूचू १ पृ १२५)।

चवचव—चबाते समय होने वाली 'चब-चब' की आवाज (भ ७।२५)।

चवलग—धान्य-विशेष (दअचू पृ १४०)।

चवलय—धान्य-विशेष (दश्रुचू प ३८)।

चवला—अन्न-विशेष (बृटी पृ ६०)। चवला (राज)।

चवलिका—धान्य-विशेष, चवला (भटी प २७४)।

चवलिय—भाजन-विशेष—'थाल-मल्लग-चवलिय-दगवारक' (जीव ३।५८७)।

चवेडी—१ श्लिष्ट करसंपुट, बद्धांजलि (दे ३।३)। २ संपुट (वृ)।

चवेण—निन्दा (दे ३।३)।

चसणिका—बहुपाद-प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

चहित—१ दृष्ट, वांछित। २ चन्दन आदि से चर्चित—'चहिता मनोरथ-दृष्टिदृष्टा अथवा गोशीर्षचन्दनादिचर्चिता' (नंदीचू पृ ४६)।

चहिय—अभिलषित, वांछित, चाहा हुआ—'सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-चहिय-महिय-पूइए' (उपा ७.१०)।

चहुट्ट—१ निमग्न, लीन—'चहुट्टणक्खो वि कुणइ चंडिक्कं' (दे ३।२)। २ चिपका हुआ।

चाउरंतय—लग्न-मंडप, चंवरी—'तत्थ कयं धवलहरस्स बहुमज्झदेसभाए सव्वधण्णविरूढंकुरा चाउरंतयं' (कु पृ १८१)।

चाउल—१ चावल (स्था ३।३७६; दे ३।८)। २ चावल का, चावल से संबंधित—'तहेव चाउलं पिट्ठं' (द ५।२।२२)।

चाउलय—चावल (दे ३।८ वृ)।

चाउल्ल—चपल (अंवि पृ ३)।

चाड—१ चुगलखोर, धूर्त (दअचू पृ २५५; दे ३।८)। २ पलायन—'पलायनं चाडो णासणं इति चूर्णौ' (बृटी पृ ४०८)।

चाडय—चुगलखोर (निचू ३ पृ ४२)।

चाय—कंद-विशेष (अंवि पृ १८१)।

चार—१ चिरौंजी का पेड़ (अनुद्वामटी प ४२; दे ३।२१)। २ बंधन-स्थान, कारावास। ३ इच्छा (दे ३।२१)। ४ फल-विशेष (प्रज्ञा १६।५५)।

चारक्खपाल—कैदखाने का अध्यक्ष, जेलर (आवचू २ पृ १८२)।

चारण—ग्रन्थिच्छेदक (दे ३।६ वृ)।

चारणअ—ग्रन्थिच्छेदक, पॉकेटमार (दे ३।६)।

चारवाय—ग्रीष्म ऋतु का पवन (दे ३।६)।

चारायण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

चारि—चारा (ओनि २३८)।

चारुपोणय—पात्र-विशेष (जंबूटी प १००)।

चालणा—पूछताछ—'ता किं करेमि किंचि से चालणं, अहवा ण करेमि, कज्जं पुणो विहडइ' (कु पृ १५१)।

चालवास—मस्तक का आभूषण-विशेष (दे ३।८)।

चालीस—चालीस (उसुटी प १६१)।

चावल्ल—धान्य-विशेष (निचू २ पृ १०६)।

चाववंस—पर्व-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४१।१)।

चास—हल द्वारा विदारित भूमि-रेखा (दे ३।१)।

चाहित—प्रेक्षित—'चहितं ति चाहितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यनर्थान्तरं' (नंदीचू पृ ४६)।

चिंच—इमली (दशचू प ३८)।

चिंचइअ—१ खचित—'चिंचइअं ति देशीवचनतः खचितमित्युच्यते' (आवहाटी १ पृ १२३)। २ मण्डित, शोभित—'समणो समण-गुणनिउणचिंचइओ' (ति ७०२)। ३ चलित (दे ३।१३)।

चिंचणिया—इमली (व्यभा ६ टी प ८)।

चिंचणी—१ घरट्टिका, धान पीसने की चक्की (दे ३।१०)। २ इमली का पेड़।

चिंचा—इमली, इमली का पेड़ (विपा १।६।१६; दे ३।१०)।

चिंचिणिआ—१ इमली (ओनि २६)। २ इमली का पेड़ (निभा २६१३; दे ३।१०)।

चिंचिणिचिंचा—इमली—'कैश्चित् चिंचिणिचिंचाशब्दः समस्त एव अम्लिकावाचकत्वेन प्रोक्तः' (दे ३।१० वृ)।

चिंचिणी—इमली का पेड़ (निचू ६ पृ ७४; दे ३।१०)।

चिंचिय—१ मेंढक की चिं-चिं की आवाज (उसुटी प ३०५)। २ मंडित, भूषित।

चिंचिल्लिअ—भूषित (पा १४६)।

चिंधाल—१ रम्य। २ उत्तम (दे ३।२२)। ३ नये रंगे वस्त्र की पगड़ी (कु पृ ४७)।

चिंफलक—बैठने का आसन-विशेष—'फलकी भिसी चिंफलको मंचकोऽथ मसूरको' (अंवि पृ १५)।

चिंफुल्लणी—अधोरुक, स्त्रियों का ऐसा अधोवस्त्र जो साथल तक आता हो (दे ३।१३)।

चिकिचिकि—चिक्-चिक् करना, फुसफुसाना (सूचू २ पृ ३९८)।

चिक्कण—१ चिकना, दारुण, सघन—'विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं' (द ६।६५)। २ श्लक्ष्ण (भ १६।५२)।

चिक्कदोरिया—द्वार पर पर्दे के रूप में लगाई जाने वाली चटाई आदि (दजिचू पृ २५९)।

चिक्का—१ अल्प वस्तु। २ पानी आदि की पतली धारा (दे ३।२१)।

चिक्खय—परिष्कृत (?) (निचू ३ पृ ४४३)।

चिक्खल्ल—कर्दम, कीचड़—'चिच्चं करोति खल्लं च भवति चिक्खल्लं' (अनुद्वा ३६८; दे ३।११)।

चिक्खित—खुला हुआ—'चिक्खितदारं पिहए' (पंक ५९९)।

चिक्खिलिच्चिय—कीचडयुक्त (आचू १ पृ १३१)।

चिक्खिल्ल—कर्दम—'चिक्खिल्लशब्दः कर्दमे देशी' (से १०।४३)।

चिगचिगंत—चमकता हुआ, चकचकाहट करता हुआ—'मुग्गसेलो चिगचिगंतो अच्छइ' (बृटी पृ १०१)।

चिच्च—१ चिक्-चिक् होना (अनुद्वा ३६९)। २ त्याज्य (पंक ३७१)। ३ चिपटी नासिका वाला (दे ३।९)। ४ रमण, कटिभाग—'चिच्चठिअचिल्ला उअ धावइ जणणी' (दे ३।१०)। (रमण :— The hip and the loins, Apte)।

चिच्चर—चपटी नासिका वाला (दे ३।९ वृ)।

चिच्चरय—चपटी नाक वाला (दे ३।९)।

चिच्चि—अग्नि (दे ३।१०)।

चिच्ची—चीत्कार—'महया महया चिच्चीसद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए' (विपा १।२।३४)।

चिट्ठं—१ निश्चेष्ट (आ ८।८।२०)। २ गाढ—'चिट्ठंति वा गाढंति वा' (आचू पृ १४१)।

चिट्ठणा—अवस्था—'अवत्थाणं अवत्था या एगट्ठा चिट्ठणा ति व' (जीभा १९९६)।

चिडग—पक्षि-विशेष (प्रज्ञा १।७९)।

चिडिग—चटक पक्षी (प्र १।९)।

चिणोट्ठी—गुंजा (दे ३।१२)।

चित्त—काष्ठ-विशेष—'चित्तशब्देन किलिञ्जादिकं वस्तु किञ्चिदुच्यते' (अनुटी प ५)।

चित्तठिअ—परितोषित, सन्तुष्ट (दे ३।१२)।
चित्तदाउ—मधुपटल, मधुमक्खियों का छाता (दे ३।१२)।
चित्तपक्ख—चार इन्द्रिय वाला जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।
चित्तपत्तय—चार इन्द्रिय वाला जंतु-विशेष (उ ३६।१४८)।
चित्तपरिच्छेय—लघु, छोटा (औप ५७)।
चित्तपरिच्छोक—लघु, छोटा—'चित्तपरिच्छोको—लघुः' (भटी प ३१८)।
चित्तपरिच्छोय—लघु (भटी प ३१८)।
चित्तल—१ गोलाकार टुकड़े (दजिचू पृ १९८)। २ हरिण की आकृति वाला जंगली पशु-विशेष (प्रटी प १०)। ३ विभूषित (दे ३।४)। ४ रमणीय (वृ)। ५ चित्रविचित्र, चितकबरा (पा १६७)।
चित्तविय—प्रोत्साहित किया—'चित्तविया आडत्तिया' (कु पृ ६५)।
चित्ताचिल्लडय—जंगली पशु-विशेष (आचूला १।५२)।
चित्ताचेल्लरय—जंगली पशु-विशेष (आचूला १।५२ पा)।
चित्ति—चिता—'गहियाइं कट्ठाइं, रइया महाचित्ती, लाइओ जलणो' (कु पृ १०८)।
चिद्दविअ—विनष्ट (दे ३।१३)।
चिप्पग—कूटी हुई छाल (बृटी पृ १०२१)।
चिप्पिडय—धान्य-विशेष (दश्रुचू प ३८)।
चिप्पित—१ नपुंसक-विशेष—'चिप्पितो णाम जस्स जायमेत्तस्सेव अंगुट्ठपदेसिणीमज्झियाहिं चड्डिज्जंति' (निचू ३ पृ २४९)। २ चिपका हुआ, आक्रांत—'गृद्धा नरा कामेसु चिप्पिता' (सुचू १ पृ ९३)।
चिप्पिय—नपुंसक-विशेष, जन्म के समय अंगूठे से मर्दन कर जिसका अण्डकोष दबा दिया गया हो (बृभा ५१६७)।
चिप्पिस—नपुंसक-विशेष—'जातमेत्ताण चेद जेसिं मिलितेहिं चोतिआ ते चिप्पिसा' (निचू २ पृ ४५२)।
चिमिटा—चपटी—'पेल्लिया णासिका चिमिटा भविस्सति' (निचू ३ पृ ४०६)।
चिमिण—रोमश, दाढ़ी आदि न बनाने के कारण जिसके केश लंबे हो गए हों वह—'चिल्लिरि-डसिया तुह अरिणो चिमिणा' (दे ३।११)।
चियत्त—१ सम्मत—चियत्तोवहि-साइज्जणया' (स्था ३।३८२)। २ प्रीतिकर—'चियत्तं पविसे कुलं' (द ५।१।१७)।
चियाय—त्याग (स्था १०।१६)।
चिरंडिहिल्ल—दही (दे ३।१४ पा)।

चिरड्ढहिल्ल—दही (पा २८१)।
चिरया—झोंपड़ी, कुटीर (दे ३।११)।
चिरिचिरा—जलधारा (दे ३।१३)।
चिरिडिहिल्ल—दही (दे ३।१४ पा)।
चिरिका—फोड़ा-फुन्सी—'कोढियरूवेणं निविट्ठो तं चिरिका फोडित्ता सिंचइ' (आवहाटी २ पृ १२७)।
चिरिक्का—१ छींटे—'लोहियचिरिक्काहिं भरिज्जंतो—रुधिरच्छटाभिः . . .' (उशाटी प ११६)। २ मशक, पानी भरने का चर्म-भाजन। ३ प्रातःकाल। ४ लघु प्रवाह (दे ३।२१)।
चिरिचिरा—जलधारा, पानी का लघु प्रवाह (दे ३।१३)।
चिरिट्ठिहिल्ल—दही (दे ३।१४)।
चिरिहिट्टी—गुंजा (दे ३।१२)।
चिलमीणि—पर्दा (पंक ८५०)।
चिलाई—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।
चिलातिया—किरात देश की दासी (भ ६।१४४)।
चिलिचिलि—शब्द-विशेष—'चिलिचिलिसद्दो पुन्नो सामए सूलिसूलि घन्नो उ' (प्रसाटी प ४१०)।
चिलिचिलिय—भीगा हुआ (तंदु ११६)।
चिलिच्चिल्ल—कर्दमयुक्त (प्रटी प ४६)।
चिलिच्चिल—कीचड़ से लथपथ (मार्ग)—'कद्दमचिलिच्चिलपहे' (प्र ३।५; दे ३।१२)।
चिलिच्चील—आर्द्र, गीला (दे ३।१२)।
चिलिण—मलिन, आर्द्र—'सेयागयरोमकूवपगलंतचिलिणगत्ता' (भ ६।१६८)।
चिलिमिणि—पर्दा (आवनि १४०१)।
चिलिमिणी—पर्दा (पंक ७२३)।
चिलिमिलि—पर्दा (नि १।१४)।
चिलिमिलिका—पात्र को प्रमार्जित करने का वस्त्र-विशेष (प्रसाटी प ११८)।
चिलिमिलिगा—परदा (सू २।२।२५)।
चिलिमिलियाग—परदा (बृ १।१४)।

चिलिमिली—यवनिका, पर्दा (आचूला २।४६)।

चिलीन—गीला, कर्दममय (प्रटी प ६६)।

चिलीय—पर्दा (बृभा ३५०१)।

चिल्ल—१ लड़का (दे ३।१०)। २ शिष्य, चेला। ३ सूर्प, छाज।

चिल्लक—१ देदीप्यमान (आवचू १ पृ २५७)। २ वृक्ष-विशेष, चीड का वृक्ष (अंवि पृ ६३)।

चिल्लग—१ चमकीला, देदीप्यमान—'चिल्लगं दप्पणं गहेऊण (ज्ञा १।१६।१६३)। २ बच्चा (आवहाटी २ पृ १२०)। ३ लीन (प्रटी प ७१)। ४ नर्तकों की विशेष वेषभूषा (कु पृ ४७)।

चिल्लग्ग—बच्चा, शिशु (उसुटी प ५३)।

चिल्लय—१ अपचक्षु (प्र १।३७)। २ देदीप्यमान (औप ४६)।

चिल्लल—१ कर्दमयुक्त जलाशय (भ ५।१८६)। २ चीता (जीव ३।६२०)।

चिल्ललग—१ देदीप्यमान—'चिल्ललगानि देशीवचनत्वात् देदीप्यमानानि' (प्रज्ञाटी प ६६)। २ चीता (भ ६।२५१)।

चिल्ललय—चीता, श्वापद पशु-विशेष (प्रज्ञा ११।२१)।

चिल्ला—चील (दे ३।६)।

चिल्लिक—नपुंसक का एक प्रकार (अंवि पृ ७३)।

चिल्लिक्का—१ लीन, आसक्त। २ देदीप्यमान—'चिल्लिकाहिं' ति लीनैः दीप्यमानैः' (प्रटी प ७७)।

चिल्लिय—१ देदीप्यमान—'विचित्तउल्लोगचिल्लियतले' (भ ११।१३३)। २ लीन (ज्ञाटी प ६१)।

चिल्लिया—देदीप्यमान—'देशीपदमेतत् दीप्यमानं' (जंबूटी प १०२)।

चिल्लिरि—मच्छर (दे ३।११)।

चिल्ली—पत्ते वाली वनस्पति-विशेष (आटी प ५७)।

चिल्लूर—मुसल, चावल आदि कूटने की मोटी लकड़ी (दे ३।११)।

चीड—१ मांस के टुकड़े—'मंसं चीडं वा आमिसं पुंजेसु ठविज्जइ' (अनुद्घाचू पृ १५)। २ काले कांच की मणि वाला।

चीण—१ छोटा—'चीणचिमिढ-वंकभग्गनासं' (ज्ञा १।८।७२)। २ धान्य-विशेष, व्रीहि का एक प्रकार—'चीणाकूरं छेलियातक्केण दिन्नं' (उसुटी प २४१)।

चोप—भौंह—'चोपादीण पमज्जणं' (निभा १५१६)।

चोर—चिथडों को जोड़कर बना वस्त्र, फीता (कु पृ १४५)।

चोवट्ठी—भाला, शस्त्र-विशेष (दे ३।१४)।

चोही—मुस्ता का तृणविशेष (दे ३।१४)।

चुंचुअ—शेखर, मस्तक की माला, किलंगी (दे ३।१६)।

चुंचुण—इभ्यजाति-विशेष (प्रज्ञा १।६४)।

चुंचुणिअ—चलित, कम्पित (दे ३।२३ वृ)।

चुंचुणिआ—१ च्युत, भ्रष्ट। २ गोष्ठी की प्रतिध्वनि। ३ रमण, संभोग। ४ इमली का वृक्ष। ५ मुष्टिद्यूत। ६ यूका, जूं (दे ३।२३)।

चुंचुमालइय—रोमाञ्चित—'चुंचुमालइयतणू ऊसवियरोमकूवे तं सुमिणे ओगिण्हइ (ज्ञा १।१।२०)।

चुंचुमालि—आलसी (दे ३।१८)।

चुंचुलि—१ चोंच। २ चुलुक (दे ३।२३)।

चुंचुलिअ—१ अवधारित, निश्चित। २ सस्पृहता, लालच (दे ३।२३)।

चुंचुलिपूर—चुलुक, चुल्लू (दे ३।१८)।

चुंचुली—१ चोंच। २ चुल्लु (दे ३ २३ वृ)।

चुंचु—गुच्छ-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।२)।

चुंछ—परिशोषित, सूखा हुआ, (दे ३।१५)।

चुंटिर—चुनने वाला (दे ६।११६ वृ)।

चुंढी—थोड़े पानी वाला अखात जलाशय—'चुंढीसु य जूहेसु य कच्छेसु य नदीसु य' (ज्ञा १।१।६७)।

चुंदप्पडिय—काठ से बना हुआ आच्छादन-विशेष (निचू २ पृ ३६६)।

चुंपाल—झरोखा, गवाक्ष (कु पृ २४६)।

चुंमल—१ पुष्पनिष्पन्न आभरण-विशेष (अंवि पृ ६४)। २ शेखर, कलंगी (दे ३।१६)।

चुक्क—१ विस्मृत (बृभा ५१८१)। २ स्खलना (पंक ३६८)। ३ मुष्टि (दे ३।१४)। ४ चूर्ण (कु पृ २२३)। ५ अनवहित (से १।६)।

चुक्कय—गलती—'समायरीए किंचि चुक्कयं कयं खलितं वा' (निचू ३ पृ २५२)।

चुक्कार—आवाज, सिंहनाद—'चुक्कारशब्दो देश्यां शब्दवाची' (से १३।२५)।

चुक्किकतक—खाद्य-विशेष, चूरमा (अंवि पृ २४६)।

चुक्कुड—बकरा, छाग (दे ३।१६)।

चुचय—अनार्य देश की एक जाति (भ ३।६५)

चुज्ज—आश्चर्य (दे ३।१४)।

चुडण—जीर्णता (पिनि २५)।

चुडलग—खण्ड खण्ड किया हुआ (सूनि ७१)।

चुडलय—अलात (निचू १ पृ १६३)।

चडलि—उल्मुक, जलती हुई लकड़ी (बृभा ३१०२)। २ जलता हुआ घास का पूला—'चुडलि तणपिंडी अग्गे पज्जलिता' (नंदीचू पृ १६)।

चुडलिया—जलता हुआ घास का 'पूला' (नंदी १२)।

चुडली—अलात, जलती हुई लकड़ी (उशाटी प ३३०)।

चुडल्लि—जलता हुआ घास का पूला (भटी पृ ८६३)।

चुडिलीय—उल्का, अलात (अंवि पृ ६२)।

चुडुप्प—छाल उतारना (दे ३।३ वृ)।

चुडुप्पा—त्वक्, छाल (दे ३।३)।

चुडुल—उल्का, जलती हुई लकड़ी (जीभा ४२)।

चुडुलि—गुरु-वन्दन का एक दोष (आवनि १२११)।

चुडुलिय—गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात की तरह घुमाते हुए वन्दन करना (प्रसाटी प ३८)।

चुडुली—अलात, जलती हुई लकड़ी (जीभा ४०; दे ३।१५)।

चुडुल्ली—उल्का (प्रज्ञाटी प २६)।

चुणअ—१ चंडाल। २ अल्प। ३ बालक। ४ मुक्त। ५ छंद, अभिप्राय। ६ अरोचक, अरुचिकर। ७ व्यतिकर, प्रसंग (दे ३।२२)। ८ 'विअरअ' (?)। ९ आघ्रात, सूंघा हुआ—'चुणओ विअरओ इति धनपालः। आघ्रातार्थेऽपीति केचित्' (वृ)।

चुणय—पुत्र (व्यभा ७ टी प ८५)।

चुणिअ—निधारित, विशेष रूप से धारण किया हुआ (दे ३।१५)—'सा अच्छइ आसतंतुचुणिअप्पा' (वृ)।

चुण्णइअ—चूर्ण से आहत, जिस पर चूर्ण फेंका गया हो वह (दे ३।१७)।

चुण्णय—भयभीत, संत्रस्त (विपा १।२।१४)।

चुण्णाआ—कला, विज्ञान (दे ३।१६)।

चुण्णासी—दासी (दे ३।१६)।

चुप्प—स्नेहिल, स्नेहयुक्त (दे ३।१५)।

चुप्पल—शेखर, मस्तक की माला, कलंगी (दे ३।१६)।

चुप्पलिअ—रंगा हुआ नया वस्त्र (दे ३।१७)।

चुप्पालअ—वातायन, गवाक्ष (दे ३।१७)।

चुप्पुडिआ—चुटकी (उशाटी प १०८)।

चुप्फुल—शेखर-विशेष, शिरोभूषण। २ असत्य (दे ३।२० पा)।

चुब्भल—कलंगी, शेखर (पा ३४६)।

चुरु—कृमि-विशेष (अंवि पृ २२६)।

चुलचुल—उत्कंठा, गुदगुदी—'तहमोहकम्मपामाबियणाए चुलचुलेंत सव्वंगे' (कु पृ २२१)।

चुलुक—हाथ के सम्पुट की आकृति वाला जलाशय—'विकटाशयो जलाशय', अमुं च प्रस्तावात् चुलुकमाहुर्बुधाः' (भटी पृ १२२७)।

चुलुग—चुल्लू—'पसयमिति पसती चुलुगो भण्णति' (निचू २ पृ २२०)।

चुलुचुलिअ—स्पन्दित (पा ५५१)।

चुलुप्प—बकरा (दे ३।१६)।

चुल्ल—१ भोजन (पिनि ३८३)। २ चूल्हा (जीभा १२०५)। ३ छोटा—'चुल्लशब्दो देश्यः क्षुल्लपर्यायः' (जंबूटी प ६६)। ४ शिशु। ५ दास (दे ३।२२)।

चुल्लक—१ चूल्हा (अंवि पृ २५४)। २ भोजन—'चुल्लको देशयुक्त्या भोजनम्' (आवदी प १६०)।

चुल्लग—१ भोजन (आवनि १०७२)। २ बारी-बारी से भोजन—'परिपाटी-भोजनम्' (उशाटी प १४५)।

चुल्लमाउया—सौतेली मां, विमाता (विपा १।६।१४)

चुल्लमातुय—छोटी मां, चाची (अंवि पृ २१६)।

चुल्लि—१ चूल्हा (बृभा १६५६; दे १।८७)। २ चूल्हे की अग्नि (अंवि पृ २५४)।

चुल्ली—१ चूल्हा (सूचू १ पृ १२५)। २ शिला, पाषाणखंड (दे ३।१५)।

चुल्लोडअ—जेठ, पति का बड़ा भाई (दे ३।१७)।

चूअ—चूचुक, स्तन का अग्रभाग (दे ३।१८)।

चूचु—दूधी (उपाटी पृ २२)।

चूड—चूडा, बाहु-भूषण (दे ३।१८)।

चूडलिक—१ उल्का, जलती हुई लकड़ी। २ वंदना का एक दोष। (प्रसाटी प ३५)।

चूरिम—मिष्टान्न-विशेष (प्रसाटी प ५६)। चूरमा (राजस्थानी)।

चूलय—चूडा, बाहु-भूषण (उचू पृ १५८)।

चूलियंग—संख्या-विशेष (भ ५।१८)।

चूलिया—संख्या-विशेष—'चतुरशीति चूलिकाङ्गशतसहस्राणि एका चूलिका' (जीव ३।८४१ टी प ३४५)।

चेच्च—विशेषरूप से जड़ित (जंबूटी प ५५)।

चेट्ट—बच्चा, बालक (निचू ३ पृ ४०८)।

चेड—१ बालक (पिनि ४१; दे ३।१०)। २ लघु, छोटा (व्यभा ३ टी प ७)।

चेडरूव—शिशु, कुमार (दश्रुनि ९७)।

चेडी—बालिका (आवनि १३६)।

चेढ—राज्यकर्मचारी (आवचू १ पृ ४८०)।

चेला—१ अनार्य देश में उत्पन्न स्त्री। २ दासी—'चेलाहि ति चेटिकाभिः अनार्यदेशोत्पन्नाभिर्वा' (औपटी पृ १४५)।

चेलिक—वस्त्र (अवि पृ १८)।

चेलुंप—मुसल (दे ३।११)।

चेल्ल—शिष्य (आचू पृ १३३)।

चेल्लग—शिष्य (दअचू पृ २१)।

चेल्लय—१ शिष्य (आवचू २ पृ ९५)। २ बच्चा—'एगो हत्थी जाए जाए हत्थिचेल्लए मारेइ' (आवहाटी २ पृ १२८)।

चेल्ललक—देदीप्यमान—'देशीवचनाद् देदीप्यमानानि' (जीवटी प १७३)।

चेल्लिक्क—बालपुत्र—'नलदामकोलियस्स य चेल्लिक्कं मक्कोडएण खतितं' (दअचू पृ २६)।

चेवइय—अलंकृत, शोभित (आचूला १५।२८।८)।

चोअक—सुगंधित द्रव्य (जंबूटी प ८२)।

चोंकण—नोचना—'करेति चोंकण-णत्थण-वाहण-मारणातिगं' (दअचू पृ १७८)।

चोंबग—माया—'चाड-चोंबग-कूडसक्खिसमुब्भावितदुव्वरारंभं' (दअचू पृ २५५)।

चोक्ख- पवित्र, शुद्ध—'चोक्खा परमसूईभूया' (दश्रु ८।६६)।

चोक्खतरय—अच्छा—'अणागए चेव तस्स कालस्स छड्डेति अण्णं चोक्खतरयं कसाइमं लद्धूणं ति' (निचू ३ पृ ५६६)।

चोक्खलिणी—शुद्धता रखने वाली स्त्री (पिनि ६०२)।

चोज्ज—आश्चर्य (ज्ञा १।१८।१७; दे ३।१४)।

चोट्टी—चोटी (दे ३।१)।

चोढ—बिल्व-फल या बिल्व का वृक्ष (दे ३।१६)।

चोत्त—चाबुक (दे ३।१६)।

चोत्तय—प्रतोद, बांस का बना हुआ प्राजन-दण्ड (पा ६२४)।

चोदग—छाल—'चोदगं उच्छिूतोदय छल्ली' (आचू पृ ३४४)।

चोद्द—पुत्र—'चारभडचोद्देण पण्णे मग्गितो' (निचू ४ पृ ३१२)।

चोपग—राज्याधिकारी—'चोर-पारदारिय-सूय-चोपगादिबहुजणं' (सूचू १ पृ १६७)।

चोपलय—गवाक्ष, वरण्डा (दजिचू पृ १७४)।

चोप्प—मूर्ख—'हिंडति चोप्पायरितो, निरंकुसो मत्तहत्थिव्व' (बृभा ३७३)।

चोप्पग—राज्याधिकारी—'राया रायअमच्चो वा चोप्पगसमीवातो सोउं' (निचू ३ पृ १०३)।

चोप्पड—१ चिकनाहट (पंव २६५)। २ घी, तैल (प्रसाटी प ७५)। ३ मलिन (पंक ४६६)।

चोप्पाल—१ देवता की आयुधशाला—'जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे' (भ ३।११२)। २ वरण्डा (जीव ३।६०४)।

चोप्पालक—देवता की आयुधशाला (जीवटी प २३२)।

चोप्पालग—वरंडा (जंबू २।१६)।

चोप्पालय—१ खिड़की। २ खुला आकाश—'छिड्डाते पुणो लोए चोप्पालयं भण्णति' (निचू १ पृ ८४)।

चोप्फाल—वरण्डा (जंबूटी प १२१)।

चोप्फुच्च—स्नेहिल, प्रेमयुक्त (दे ३।१५)।

चोय—१ छाल (प्र १०।१६)। २ आम आदि का रंछा—'ण्हारुणिभागा जे केसरा तं चोयं भण्णति' (निचू ३ पृ ४८१)। ३ सुगन्धित द्रव्य-विशेष (राज ३०)।

चोयग—१ सुगंधित द्रव्य-विशेष (भ ११।१५६) २ छाल (आटी प ४०५)।
चोयट्ठि—चौंसठ (भ १३।१२१)।
चोयय—१ छाल (भ १५।१३७)। २ फल-विशेष (अनुद्वा ३७६)—'चोयओ फलविशेषः'। ३ आम आदि का रुंछा (निचू ३ पृ ४८१)।
चोयाल—चवालीस (निभा ५६०५)।
चोरग—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।
चोरली—श्रावण कृष्णा चतुर्दशी (दे ३।१६)।
चोरा—वनस्पति-विशेष (भ २१।२१)।
चोराली—खाद्य-विशेष (अंवि पृ ७१)।
चोल—१ पुरुषचिन्ह, लिंग—'चोलस्य—पुरुषचिन्हस्य' (प्रसाटी प १२२)। २ ठिगना, वामन (दे ३।१८)।
चोलपट्ट—जैन-मुनि का कटिवस्त्र (जीभा १७२७)।
चोलाडिगा—क्षुद्र जंतु-विशेष (अंवि पृ २३८)।
चोल्लक—भोजन—'देशी-भाषया भक्तमुच्यते' (प्रसाटी प १४३)।
चोल्लग—भोजन (जीभा १२७७)।
चोल्लय—१ भोजन (बृभा ३१२७)। २ थैला, बोरा—'मम समक्खं तोलेह चोल्लए' (उसुटी प ६५)।
चोवालय—ऊपर की मंजिल का कमरा (दहाटी प ६८)।

छ

छइल्ल—विदग्ध, पटुप्रज्ञ (दे ३।२४)।
छउअ—पतला, दुबला (दे ३।२५)।
छंकुई—कपिकच्छू, कवाछ का वृक्ष (दे ३।२४)।
छंछइय—कुलटा—'अण्णा छंछइओ इय परपुरिसदंसणे....' (कु पृ ७)।
छंट—१ जल का छींटा। २ शीघ्रता करने वाला (दे ३।३३)।
छंटा—जल का छींटा, जल का छिड़काव (पा ६५०)।
छंटित—ऊखल में कूटे हुए—'उदूखले च्छंटितेषु तन्दुलेषु' (व्यभा १० टी प ५)।

छंटेउं—छींटा देकर, छिड़काव कर—'चालणीए पाणियं छोढूणं गंतूणं तिण्णि वारे छंटेउं उग्घाडाणि भविस्संति' (आवहाटी २ पृ २०७)।

छंदंत—पैबंद—'पडियाणिया थिग्गलयं छंदंतो य एगट्ठं' (निचू २ पृ ५६)।

छंदड़िया—चर्ममय आसन-विशेष (निचू १ पृ ६४)।

छक्कट्ठ—१ घर के बाह्य द्वार का प्रकोष्ठ। २ द्वार—'षट्काष्ठकं गृहस्य बाह्यालन्दकं षड्दारुकमिति यदागमप्रसिद्धं, द्वारमित्यन्ये' (ज्ञाटी प १६)।

छक्किय—छींक (निचू १ पृ ८४)।

छग—पुरीष, विष्ठा (बृभा ३७७०)।

छगण—गोमय, गोबर (पिनि २४६)।

छगणि—कंडा (अंवि पृ २५४)।

छगणिय—गोबर (ओनि ३९६)।

छगणिया—गोबर का ढेर (अनु ३।४२)।

छगली—शरीर का एक अवयव (अंवि पृ ६६)।

छज्जिय—१ टोकरी, पुष्प-पात्र (राज १२)। २ राजित, शोभित।

छज्जिया—पुष्पपात्र, चंगेरी—'पुप्फछज्जियाए अच्चणं काऊण वच्चइ' (आवहाटी २ पृ १६)।

छट्ठि—छिद्र, दोष—'जो जग्गइ परछट्ठिं, सो नियछट्ठीए किं सुयइ' (उसुटी प ८८)। २ हृदय का रोग-विशेष। ३ अतिसार (अंवि पृ २०३)।

छडक्खर—स्कन्द, कार्त्तिकेय (दे ३।२६)।

छडछड—वमन करते समय होने वाली ध्वनि (विपा १।६।२३)।

छडछडा—सूर्प से अन्न को झाड़ते समय होने वाली अव्यक्त ध्वनि—'अखंडाणं अफुडियाणं छडछडायाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए' (ज्ञा १।७ १५)।

छडा—विद्युत् (दे ३।२४)।

छडुग—बांस से बनी हुई टोकरी (आचू पृ ३४४)।

छडुछडु—सूर्प से अन्न को झाड़ते समय होने वाली अव्यक्त ध्वनि (ज्ञा १।७।१५ पा)।

छड्डियल्लय—बचा हुआ या छोड़ा हुआ (बृटी पृ १०८)।

छण्णालय—त्रिदंड, संन्यासी का एक उपकरण (भ २।३१)।

छण्णी— १ वाहन-विशेष, रथ—'छण्णी सगडं वा' (आचू पृ ३४७)। २ कंडा, छाणी (आचू पृ ३४६)।

छत्त—१ आचार्य—'छत्तो आयरिओ' (निचू २ पृ १३३)। २ इन्द्रजाल—छत्तो कउग्गो भण्णति' (निचू ३ पृ १६)।

छत्तधन्न—घास-विशेष (पा २०४)।

छद्दी—शय्या (दे ३।२४)।

छन्नालय—तिपाई, संन्यासियों का एक उपकरण (ज्ञा १।५।५२)।

छप्पंती—नियम-विशेष जिसमें पद्म लिखा जाता है; छह रेखाओं में कमल का आलेखन करने का नियम (दे ३।२५)।

छप्पग—पात्र-विशेष (आवचू २ पृ ७०)।

छप्पण्णय—१ चतुर, चालाक। २ विदग्ध, गणितियों और चित्र-वचनों के प्रयोग में दक्ष कवि (कु पृ ३)।

छप्पण्ण—विदग्ध, चतुर, पटुप्रज्ञ (दे ३।२४)।

छप्पण्णय—दक्ष (पा १९३)।

छब्ब—१ पानक आदि छानने के लिए बांस का बना हुआ उपकरण-विशेष (आचूला १।१०४)। २ पात्र-विशेष (पिनि ५६१)।

छब्बग—पात्र-विशेष (पिनि २७८)।

छब्बय—वंशपिटक—पानक आदि छानने का उपकरण विशेष—'मूइंगाई-मक्कोड-एहिं संसत्तगं च नाऊणं। गालिज्ज छब्बएणं—वंशपिटकेन (ओनि ५६०)।

छमलअ—सप्तपर्ण, सतौना का वृक्ष (दे ३।२५)।

छम्माणि—गांव-विशेष का नाम—'ततो भयवं छम्माणि नाम गामं गतो' (आवमटी प २९७)।

छलंत—सेंटिका करता हुआ (अंवि पृ १३५)।

छलिअ—विदग्ध, पटुप्रज्ञ (दे ३।२४)।

छलिक—प्रिय (अंवि पृ १२०)।

छल्लिया—छाल—'मूलाछल्लिया इ वा वालुंकछल्लिया इ वा' (अनु ३।५०)।

छल्ली—छाल, त्वक् (अनु ३।३१; दे ३।२४)।

छवडी—चर्म (ओटी प २१७; दे ३।२५)।

छवण—गोबर—'छवणमट्टियाए लिपणं उवलेवणं' (निचू २ पृ ३३४)।

छवाविय—प्रावृत, (घर को) छवाया, आच्छादित किया—'घरं....छवावियं' (आवहाटी १ पृ १७५)।

छवि—फली (द ७।३४)।

छव्विय—१ चटाई आदि बनाने वाला (प्रज्ञा १।९७)। २ पिहित, आच्छादित।

छव्वी—वेत्रासन (आवहाटी २ पृ ७३)।

छाअ—१ भूखा। २ कृश (दे ३।३३)।

छाइ—माता, देवी, (दे ३।२६ वृ)।

छाइल्ल—१ प्रदीप। २ सदृश। ३ न्यून। ४ सुरूप, सुन्दर (दे ३।३५)।

छाइल्लय—दीप—'जोइक्खं तह छाइल्लयं च दीवं मुणेज्जाहि' (व्यभा ७ टी प ६२)।

छाई—जगदंबा आदि देवी माताएं (दे ३।२६)।

छाउव्वाय—भूख से व्याकुल (कु पृ ७६)।

छाएल्लय—छाया का इच्छुक (उशाटी प ११९)।

छाण—१ छांद, दर्भपटल (भ ८।२५७)। २ गोबर (बृभा ३३१२; दे ३।३४)। ३ धान्य आदि का मलना (दे ३।३४)। ४ वस्त्र (जीव ३; दे ३।३४)।

छाणन—छानना (प्रटी प २५)।

छाणिय—गालित, छानना (बृभा ५१७)।

छाणी—१ छाणा, कंडा (प्रसा ४३४)। २ धान्य आदि का मलना। ३ गोमय, गोबर। ४ वस्त्र, कपड़ा (दे ३।३४ वृ)।

छात—बुभुक्षित (निभा १११७)।

छातक—भूखा, गरीब (अंवि पृ २५१)।

छातता—भूख (अंवि पृ १३५)।

छातेल्लय—भूखा, बुभुक्षित (उचू पृ ७६)।

छाद—भूखा—'छादो वेयावच्चं ण तरति काउं' (जीभा १६५९)।

छाय—१ बालक (भ १८।१५९)। २ बुभुक्षित, भूखा (द ९।२।७; दे ३।३३)। ३ कृश (दे ३।३३)।

छाया—१ कीर्त्ति। २ भ्रमरी (दे ३।३४)।

छायाल—छयालीस (निचू ४ पृ ३६७)।

छार—भालू (दे ३।२६)।

छारय—१ ईख का टुकड़ा या ईख की छाल। २ मुकुल, कली (दे ३।३४)।

छासी—छाछ, मट्ठा—उदसी छासि त्ति एगट्ठं' (निचू १ पृ ९२; दे ३।२६)।

छाही—गगन, आकाश (दे ३।२६)।

छिछ—शलाटु-फल (दे ३।३६ वृ)।

छिछअ—१ शरीर। २ जार-पुरुष (दे ३।३६)। ३ शलाटु-फल (वृ)।

छिछई—कुलटा, व्यभिचारिणी (उसुटी प २५०)।

छिछटरमण—आंखमिचौनी (दे ३।३०)।

छिछोली—लघु जल-प्रवाह, छोटी नाली (दे ३।२७)।

छिड—१ चूड़ा, चोटी। २ छत्र। ३ धूपयंत्र (दे ३।३५)।

छिडिका—१ बाड का छिद्र (ज्ञाटी प ८७)। २ अपवाद, आगार (प्रसाटी प २७८)।

छिडिया—अपवाद, छूट—'छ छिडियाओ जिणसासणम्मि' (प्रसा १४८)।

छिडी—वृत्ति-छिद्र, बाड का छेद (ज्ञा १।२।११)।

छिडीया—छोटा द्वार (बृभा २५७)।

छिपक—वस्त्र छापने वाला (व्यभा ३ टी प १०)।

छिपा—कपड़े रंगने व छापने का काम करने वाला (प्रसाटी प २३०)।

छिक्क—१ स्वीकृत (निचू ३ पृ १४०)। २ स्पृष्ट, छुआ हुआ। ३ छींक (दे ३।३६)। ४ गुल्म का एक प्रकार (अंवि पृ ६३)।

छिक्कप्परोइया—वनस्पति-विशेष जो स्पर्शमात्र से संकुचित हो जाती है—'छिक्कप्परोइया छिक्कमेत्तसंकोयओ कुलिगोव्व' (विभा १७५४)।

छिक्का—१ छीं-छीं आवाज से पुकारना (ओभा १२४)। २ छींक।

छिक्कार—छीं-छीं की आवाज से बुलाना (निचू २ पृ २४६)।

छिक्कारिय—छीं-छीं की आवाज से आहूत—'वीरसुणिआ····छिक्कारिआ तित्तिराईणि गिण्हेइ' (ओटी प ९६)।

छिक्कोअण—असहन, असहिष्णु (दे ३।२९)।

छिक्कोट्टली—१ पैर की आवाज। २ पांव से धान्य का मलना। ३ गोमय-खण्ड (दे ३।३७)।

छिक्कोलिअ—पतला (दे ३।२५)।

छिक्कोवण—असहिष्णु, असहनशील (बृभा ६१५७)।

छिग्गल—मैल—'छिग्गलं जल्लो भण्णति' (निचू २ पृ २२१)।

छिच्चोलय—१ अरुचिप्रकाशक मुखविकार-विशेष। २ विकूणित मुख (पा ६६७)।

छिच्छिक्कार—१ निवारणसूचक या घृणासूचक शब्द, छिः-छिः (पिनि ४५१)। २ घोड़े की आवाज—'छिच्छिक्कार हयाणं' (जीभा १३७७)।

छिडु—१ खुला आकाश। २ बरंडा, खिड़की (निचू १ पृ ८४)।

छिण्ण—१ निःस्नेह (झाटी प १७५)। २ जार-पुरुष (दे ३।२७)।

छिण्णंगाल—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३६)।

छिण्णच्छोडण—शीघ्र (दे ३।२६)।

छिण्णयड—टंक से छेदा हुआ (पा ३६१)।

छिण्णा—कुलटा (दे ३।२७ वृ)।

छिण्णाल—जार-पुरुष (दे ३।२७)।

छिण्णालिंगा—सुवर्ण वाला पक्षी-विशेष (अंवि पृ २२६)।

छिण्णाली—कुलटा (दे ३।२७ वृ)।

छिण्णोब्भवा—दर्भ, दूर्वा (दे ३।२६)।

छित्त—१ छींक (निचू १ पृ ८५)। २ स्पृष्ट (नंदीटि पृ १३४; दे ३।२७)।

छित्तर—१ बांस की खपच्चियां जिन पर घास आदि छाया जाता है (भ ८।२५७)—'छित्तराणि—वंशादिमयानि छादनाधारभूतानि किलिञ्जानि' (टी पृ ६६१)। २ पुराना छाज आदि गृह-उपकरण।

छिद्द—१ अवसर—'हत्थिजूहेण समं चरंती छिद्देण आगंतूण थणं देइ' (आवहाटी २ पृ १२३)। २ लघु मत्स्य (दे ३।२६)।

छिधा—पत्र (नंदीटि पृ १३४)।

छिन्न—व्यभिचारी, छिनरा (बृभा २३१५)।

छिन्नगाली—पक्षी-विशेष की ध्वनि—'विगतदारुणेसु छिन्नगालीय रतं। इति पक्खिगतरतं ति' (अंवि पृ १८३)।

छिन्नाल—तुच्छ जाति का बैल, दुष्ट बैल (उ २७।७)।

छिप्प—१ भिक्षा। २ पूंछ (दे ३।३६)।

छिप्पंती—१ व्रत-विशेष। २ उत्सव-विशेष (दे ३।३७)।

छिप्पंदूर—१ गोमय-खंड, कंडे का टुकड़ा। २ विषम (दे ३।३८)।

छिप्पाल—धान्य खाने में आसक्त बैल (दे ३।२८)।

छिप्पालुअ—पूंछ (दे ३।२६)।

छिप्पिय—झरित, झरा हुआ (पा १३६)।

छिप्पिडी—१ व्रत-विशेष। २ उत्सव-विशेष। ३ पीसा हुआ आटा (दे ३।३७)।

छिप्पोर—पलाल (दे ३।२८)।

छिप्पोली—बकरी की विष्ठा—'ततो जंमि पदेसे छगणछिप्पोली वरिसो-वट्ठाविया ततो घेप्पति' (निचू १ पृ ६६)।

छिया—लोहे की पतली छड़ी (सू २।२।१२)।

छिर—प्राणी-विशेष (अंवि पृ २३७)।

छिरिया—अनंतकाय वनस्पति-विशेष (भ ७।६६)।

छिल्ल—१ छिद्र। २ कुटी (दे ३।३५)। ३ बाड़ का छिद्र (वृ)। ४ पलाश का पेड़।

छिल्लर—१ अखात जलाशय, छोटा तालाब—'छिल्लराणि—अखाताः स्तोक-जलाश्रयभूताः भू प्रदेशाः गिरिप्रदेशा वा' (प्रज्ञा २।४ टी; दे ३।२८)। २ असार।

छिल्ली—शिखा (दे ३।२७)।

छिवअ—१ समूह। २ नीवी, अधोवस्त्र का नाड़ा (दे ३।३६)।

छिवा—चिकना चाबुक (प्र ३।१३)।

छिवाडिआ—फली (जंबूटी प ३५)।

छिवाडी—१ फली—'छेवाडी शब्दो देश्यः' (राज २९ टी पृ ९०)। २ पतले पन्नों वाली ऊंची पुस्तक—'तणुपत्तेहिं उस्सीओ छेवाडी' (निचू ३ पृ ३२१)। ३ जिसके पन्ने विशेष लंबे और कम चौड़े हों तथा जो मोटी हो ऐसी संपुट फलक वाली पुस्तक—'दुमाइ-फलगसंपुडं दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पवाइल्लो छेवाडी' (निचू ३ पृ ३२१)।

छिविअ—१ ईख का टुकड़ा (दे ३।२७)। २ स्पृष्ट (से २।८)।

छिव्व—कृत्रिम, बनावटी (दे ३।२७)।

छिव्वोल्ल—१ निन्दासूचक मुख की आकृति-विशेष (दे ३।२८)। २ विकूणित मुख (वृ)।

छिहंडअ—दही का बना हुआ मिष्टान्न, श्रीखंड—'छिहंडेहिं धवल ! पुट्ठोसि' (दे ३।२९)।

छिहंडि—दही (दे ३।३० पा)।

छिहंडिभिल्ल—दही (दे ३।३० पा)।

छिहली—शिखा (बृभा ५१७७)।

छिहिडिभिल्ल—दही (दे ३।३०)।

छु—पशुओं को निषेध करने का अनुकरणवाची शब्द—'छुत्ति हडि त्ति वा भन्नइ' (निचू ४ पृ ६२)।

छुई—बलाका (दे ३।३०)।

छुंछिका—छुछुंदरी (अंवि पृ ६६)।

छुंछुई—कपिकच्छू, कवाछ का वृक्ष (दे ३।२४)।

छुंछुमुसय—कामासक्ति से होने वाली उत्सुकता (दे ३।३१)।

छुंद—अधिक (दे ३।३०)।

छुक्कारण—निषेधकारक अनुकरणवाची शब्द (निभा ५४०५)।

छुट्ट—१ मुक्त (व्यभा ४।३ टी प ५७)। २ छोटा, लघु (पा ४७)। ३ बन्धनमुक्त।

छुट्टगुल—गीला गुड़, फाणित—'छुट्टगुलो फाणियं' (बृभा ३४७६)।

छुडु—१ सुष्ठु—तेण भण्णति—छुडु अब्भासत्थो होउ तो सक्केमि' (उशाटी प २४५)। २ यदि, जो (प्रा ४।३८५)। ३ शीघ्र (प्रा ४।४०१)।

छुड्डिया—आभरण-विशेष, अंगूठी (प्र १०।१४)।

छुद्दहीर—१ शिशु। २ शशी, चन्द्रमा (दे ३।३८)।

छुद्दिया—आभरण-विशेष (प्र १०।१४)।

छुभत्थ—अप्रिय (दे ३।३३ वृ)।

छुरमड्डि—नाई, नापित (दे ३।३१)।

छुरहत्थ—नाई, नापित (दे ३।३१)।

छुरिया—मृत्तिका (दे ३।३१)।

छुस—भूसा (निचू २ पृ ४३२)।

छुहिअ—लिप्त (दे ३।३०)।

छेअ—१ विशुद्ध (आवनि ११३८)। २ अन्त, सीमा (क १।३६)। ३ देवर (दे ३।३८)। ४ एक देश, एक भाग (से १।७)। ५ निर्विभाग अंश (क ४।८२)। ६ कालोपयुक्त हित।

छेंड—१ चूड़ा, चोटी। २ छत्र। ३ धूपयंत्र (दे ३।३५ वृ)।

छेंडा—१ चोटी। २ नवमालिका, लता-विशेष (दे ३।३६)।

छेंडी—छोटी गली (दे ३।३१)।

छेणक—१ झाग, फेन। २ कल्लोल (अंवि पृ २५५)।

छेत्तर—पुराना छाज आदि गृह-उपकरण (दे ३।३२)।

छेत्तसोवणय—खेत में जागना (दे ३।३२)।

छेध—स्थासक—कुंकुम, चंदन आदि सुगंधित द्रव्यों से दिए गए हाथ के पांचों अंगुलियों के छापे, हस्तबिंब। २ स्थासक—चंदन आदि सुगंधित द्रव्य से शरीर का विलेपन करना। ३ चोर (दे ३।३९)।

छेप्प—पूंछ (विपा १।२।२४)।

छेभअ—हथेली का थापा, हस्तबिम्ब (दे ३।३२)।

छेरित्ता—लीद करके—'गद्दभी····छेरित्ता गया' (उसुटी प ७३)।

छेल—बकरा (उसुटी प ५४; दे ३।३२ वृ)।

छेलअ—बकरा (दे ३।३२)।

छेलण—हर्ष ध्वनि, आनन्द की आवाज—'छेलणं णाम उक्कट्ठी हसितादि' (आवचू १ पृ १५७)।

छेलापनक—बालक्रीडा, उत्कृष्ट हर्षध्वनि, सीत्कार करना आदि—'छेलापनकमिति देशीवचनमुत्कृष्टबाल-क्रीडापनं सेण्टिताद्यर्थवाचकमिति' (आवहाटी १ पृ ८६)।

छेलावण—१ उत्कृष्ट हर्षध्वनि। २ बाल-क्रीडापन। ३ सीत्कार करना—'छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावणं च सेंटाइ' (आवमटी प २०१)।

छेलावणय—हर्ष-ध्वनि, हसना आदि—'छेलणं णाम उक्कट्ठीहसितादि' (आवचू १ पृ १५७)।

छेलित—सेंटिका करता हुआ (अंवि पृ ४६)।

छेलिका—बकरी (प्रटी प १५)।

छेलिय—सेंटित, सीत्कार करना, अव्यक्त ध्वनि-विशेष (प्र ३।५)।

छेलिया—बकरी (उसुटी प २४१)।

छेल्लिय—नाक से छींकने का शब्द (दजिचू पृ २३९)।

छेली—थोड़े फूल वाली माला (दे ३।३१)।

छेवग—महामारी (व्यभा ५ टी प १८)।

छेवट्ट—संहनन का एक प्रकार, अस्थि-रचना-विशेष (जीव १।१७)।

छेवट्ठ—संहनन का एक प्रकार, अस्थि-रचना-विशेष (स्था ६।३०)।

छेवडित—महामारी से पीड़ित (निचू २ पृ १७२)।

छेवाडिया—फली (जीवटी प १६१)।

छेवाडी—१ फली—'छेवाडी शब्दो देश्यः' (राजटी पृ ६०)।
२ पुस्तक का एक प्रकार (निचू ३ पृ ३२१)। देखें—'छिवाडी'।

छेह—क्षेपण, प्रेरण (से ४।१७)।

छोअ—छिलका—'अयमाउसो ! खोयरसे, अयं छोए' (सू २।१।१७)।

छोइअ—दास, नौकर (दे ३।३३)।

छोइया—छिलका, ईख आदि की छाल—'उच्छुखंडे पत्थिए छोइयं पणामेइ' (उसुटी प ६१)।

छोटि—१ उच्छिष्टता, जूठन—'छोटिरिति कृत्वा लोके गर्हा स्यात्' (पिटी प १०६)। २ नखच्छोटिका (व्यभा १० टी प ३०)।

छोट्टि—उच्छिष्टता, जूठाई—'भुंजंती आयमणे उदगं छोट्टी य लोगगरिहा य' (पिनि ५८७)।

छोढूण—१ घुसेडकर—'अवाणे सूलं छोढूण मुहेण णिक्कलिज्जति' (सूचू २ पृ ३६५)। २ रखकर, भरकर—'चालणीए पाणियं छोढूणं' (आवहाटी २ पृ २०७)।

छोति—१ छिलका (आचू पृ ३६७)। २ जुगुप्सा (व्यभा ८ टी प ४७)।

छोब्भ—पिशुन, दुर्जन (दे ३।३३)।

छोब्भत्थ—अप्रिय (दे ३।३३)।

छोब्भाइत्ती—१ अस्पृश्य स्त्री, छूने के अयोग्य स्त्री। २ अप्रीतिकर स्त्री, द्वेष्या (दे ३।३६)।

छोभ—१ निस्सहाय, दीन (प्र ३।२४)। २ झूठा आरोप (बृभा ३३५४)। ३ वंदन का एक प्रकार—नर्तन करते हुए वंदन करना (आवनि ११२७)। ४ आघात। ५ पिशुन, दुर्जन।

छोभग—१ झूठा आरोप—'छोभगो अब्भक्खाणं' (निभा ४३८५)। २ अपयश (निचू ४ पृ ५५)।

छोय—छिलका (सू २।१।१७)।

छोह—१ आघात—'ताव य सो मायंगो, छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि' (उसुटी प ६१)। २ समूह। ३ विक्षेप (दे ३।३६)।

ज

जंकयसुकअ—अल्प उपकार से अधीन होने वाला (दे ३।४५)।
जंगय—शिविका-विशेष—'अवरे जंपाणेसु, अवरे जंगएसु' (कु पृ २४)।
जंगल—जंगल, वन (उसुटी प २३७)।
जंगलिक—जंगली (अंवि पृ २२६)।
जंगा—गोचर भूमी, पशुओं के चरने की भूमि (दे ३।४०)।
जंगोल—विषापहार विद्या, विषविघातक तन्त्र (विपा १।७।१५)।
जंघाछेअ—चौराहा (दे ३।४३)।
जंघामअ—तीव्र गति से चलने वाला (दे ३।४२)।
जंघालुअ—तीव्र गति से चलने वाला (दे ३।४२)।
जंपण—१ अकीर्ति। २ मुंह (दे ३।५१)।
जंपिच्छअ—जिसको देखे उसी को चाहनेवाला (दे ३।४४ वृ)।
जंपुलिग—कुल्माष-विशेष—'जंपुलिगादि कुम्मासा' (दअचू पृ १२४)।
जंपेच्छिरमग्गिर—जो-जो देखता है, उसी की मांग करनेवाला (दे ३।४४)।
जंबाल—१ जरायु, गर्भवेष्टन चर्म (स्था २।३६६)। २ सेवाल (दे ३।४२ वृ)।
जंबालय—सेवाल (दे ३।४२)।
जंबुअ—१ वेतसवृक्ष, बेंत। २ पश्चिम दिक्पाल (दे ३।५२)।
जंबुल—१ वानीर वृक्ष, बेंत (दे ३।४१)। २ मदिरा-पात्र—'जंबुलं मद्य-भाजनमिति सातवाहनः' (वृ)।
जंबुल्ल—वाचाल (पा १११)।
जंबूका—करधनी (अंवि पृ ७१)।
जंबूलय—पात्र-विशेष (उपा ७।७)।
जंभ—तुष, भूसा (ति ६६१; दे ३।४०)।
जंभणअ—इच्छानुसार बोलने वाला, स्वच्छंदभाषी (दे ३।४४)।
जंभणभण—स्वच्छंदभाषी (दे ३।४४ वृ)।
जंभल—जड, मन्द (दे ३।४१)।
जक्खरत्ती—यक्षरात्री, दीवाली (दे ३।४३)।
जग—जीव—'विरते गामधम्मेहिं, जे केई जगई जगा' (सू १।११।३३)।

जगडिअ—१ कदर्थित (दे ३।४४)। २ लड़ाया हुआ।

जगडिज्जंत—उत्तेजित होते हुए—'धन्नाणं तु कसाया जगडिज्जंता वि परकसाएहिं' (चं १४१)।

जगडित—प्रेरित (निभा ३५१)।

जगल—१ पंकवाली मदिरा, मदिरा का नीचे का भाग (दे ३।४१)। २ पंकिल सरका—'पंकिलसरकं जगलं इत्यन्ये' (वृ)।

जगार—राब, यवागू (प्रसाटी प ५१)।

जगारी—राब, यवागू—'जगारीशब्देन समयभाषया रब्बा भण्यते' (प्रसाटी प ५१)।

जग्गह—जो मिले वह लूटने की राजाज्ञा—'रन्ना जग्गहो घोसितो' (आवचू १ पृ ३१८)।

जग्गिक—जंगम जीवों के रोम का बना वस्त्र (अंवि पृ २३२)।

जच्च—पुरुष (दे ३।४०)।

जच्चंदण—१ गंध द्रव्य-विशेष, अगर। २ कुंकुम (दे ३।५२)।

जच्छंद—स्वच्छंद, स्वतंत्र (दे ३।४३ वृ)।

जच्छंदअ—स्वच्छंद, स्वतंत्र (दे ३।४३)।

जडिअ—जड़ित, खचित (दे ३।४१)।

जडियाइल—एक महाग्रह (स्था २।३२५ पा)।

जडियाइलग—एक महाग्रह (स्था २।३२५)।

जडियाइलय—एक महाग्रह (चन्द्र २०)।

जडिलय—राहु, ग्रह-विशेष (सूर्य २०)।

जड्ड—१ हाथी (पिनि ३८६)। २ मोटा (निचू ३ पृ ३)। ३ अशक्त, असमर्थ (ति ११९३)।

जड्डतरी—जाडी, मोटी (निचू ३ पृ ५१५)।

जड्ड—रहित, त्यक्त (प्रसाटी प ३८)।

जढ—परित्यक्त—'वाहिओ वा अरोगी, वा सिणाणं जो उ पत्थए। वोक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो॥' (द ६।६०)।

जणउत्त—१ ग्राम-प्रधान, गांव का मुखिया। २ विट, भांड (दे ३।५२)।

जणक—कान का कुंडल जैसा आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६२)

जणत्ता—बराती (आवहाटी २ पृ ४६)

जण्णत्ता—बराती (आवहाटी २ पृ ४६)।

जण्णोहण—राक्षस (दे ३।४३)।

जण्ह—१ छोटी थाली। २ कृष्ण, काला (दे ३।५१)।

जण्हली—नीवी, नारा (दे ३।४०)।

जण्हुआ—जानु, घुटना (पा ८५६)।

जप्पसरीर—अनेक रोगों से ग्रस्त शरीर (निभा ६३३७)।

जमइत्ता—अति परिचित कर, स्थिर कर—'पुनः पुनरावर्तनेन अतिपरिचितं कृत्वा' (औप २६ वृ)।

जमग—पक्षि-विशेष, शकुनी (जीवटी प २८६)।

जमगसमगं—एक साथ (भ ६।१८२)।

जमण—विषम को सम करना—'जमणं विसमाण समकरणं' (निभा ६६४)।

जमल—एक साथ—'महागइंददंतजुवल-जमलाहएण' (कु पृ ५७)।

जम्मपक्क—मत्स्य-विशेष (विपाटी प ८०)।

जयण—घोड़े का बख्तर (दे ३।४०)।

जयार—एक प्रकार का अपशब्द—'जत्थ जयार-मयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं' (ग ११०)।

जरंड—वृद्ध (दे ३।४०)।

जरड—वृद्ध (दे ३।४० वृ)।

जरढ—१ जीर्ण, पुराना (औप ५)। २ मजबूत (से १।४३)। ३ कठिन (ज्ञाटी प ५)।

जरल—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

जरलद्धिअ—ग्रामीण (दे ३।४४)।

जरलविअ—ग्रामीण (दे ३।४४)।

जरुला—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

जलणीली—सेवाल (दे ३।४२)।

जलूसक—जलोदर रोग (आवचू २ पृ १८१)।

जल्ल—१ शरीर का मैल (भ १।४६)। २ रस्सी पर खेलने वाला नट (जीव ३।६१६)। ३ स्तुति-पाठक (नि ६।२२)—जल्लाः राज्ञः स्तोत्रपाठकाः' (चू २ पृ ४६८)। ४ एक म्लेच्छ देश। ५ जल्ल देश में रहने वाली जाति-विशेष (प्रटी प १५)।

जल्लिय—१ शरीर के मैल से खरंटित—'वत्थस्स जल्लियस्स वा पंकियस्स वा' (भ ६।२३)। २ मल, शरीर का मैल—जल्लियं नाम मलो, णो कप्पइ उवट्टेउं' (दजिचू पृ २७६)।

जल्लिया—शरीर का मैल—'जल्लिया मलो' (दअचू पृ १८९)।

जल्लूसत—जलोदर (आवहाटी २ पृ १३४)।

जल्लूसय—जलोदर रोग (आवहाटी २ पृ १३४)।

जल्लोसहि—एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग नष्ट होता है—'खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं' (प्र ६।६)।

जवअ—यव-अंकुर (दे ३।४२)।

जवण—हल का ऊपरी भाग (दे ३।४१)।

जवरअ—यव-अंकुर (दे ३।४२)।

जहणरोह—जंघा (दे ३।४४)।

जहणसव—अर्धोरुक, आधी साथल तक पहनने का वस्त्र, स्त्रियों का वस्त्र-विशेष (दे ३।४५)।

जहाजाअ—जड, मूर्ख—'जहाजायपसुभूया' (प्र ३।२४; दे ३।४१)।

जहिमा—विद्वान् द्वारा रचित गाथा (दे ३।४२)—'तुह जहिमं तत्थ गायन्ति' (वृ)।

जाइ—१ गुल्म वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३८।२)। २ मदिरा (दे ३।४५)। ३ मदिरा-विशेष—सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च' (विपा २।२४)।

जाइंभर—मादक—'जाइंभराइं मण्णे इमाइं णयणाइं होंति लोयस्स' (कु पृ २२४)।

जाउ—कपित्थ का फल (बृटी पृ ५४)।

जाउर—कपित्थ वृक्ष (दे ३।४५)।

जाउलग—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)।

जाउलया—क्षीरपेया (ओटी प १९६)।

जागु—खाद्य-विशेष, लपसी आदि (अंवि पृ ७१)।

जाडी—गुल्म, लता-प्रतान (दे ३।४५)।

जामइल्लय—पहरेदार (कु पृ १२३)।

जामिलिका—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७)।

जार—मणि का लक्षण-विशेष (राज २४)।

जारु—अनंतकाय वनस्पति-विशेष (भ २३।१)।

जारुकण्ह—गोत्र-विशेष (स्था ७।३७)।

जालगद्दह—रोग-विशेष–'एयस्स हत्थो पादो वा जालगद्दहमादिणा सडितो' (निचू ३ पृ ४४८)।

जालघडिआ—अट्टालिका, अटारी (दे ३।४६)।

जाली—सघन झाड़ी (पा ८७६)।

जावइ—१ कन्द-विशेष (उ ३६।६७)। २ गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)।

जावति—वृक्ष-विशेष (भ २२।१)।

जाहे—यदा, जब (उशाटी प १४८)।

जिंघिअ—सूंघा हुआ (पा ४६७)।

जिंडह—गेंद–'जिंडहगेहिंआइरमण' (प्रसा ४३५)।

जिंडुह—कन्दुक (प्रसा ४३५)।

जिग्घिअ—सूंघा हुआ (दे ३।४६)।

जिण्णोब्भवा—दूब, दूर्वा (दे ३।४६)।

जिमिअ—भुक्त (बृभा ३६६५)।

जिम्ह—मंद–'जिम्हीभवंति उदया कम्माणं' (बृभा १२३)।

जोण—१ जीन, अश्व की पीठ पर बिछाया जाने वाला ऊनमय या चर्ममय आसन (प्रसाटी प १६१)। जीणपोस (फारसी)। २ ऊन का बना वस्त्र-विशेष (भटी पृ ११५२)।

जोवयमई—अन्य मृगों को आकर्षित करने के लिए शिकारी द्वारा बनाई गई कृत्रिम मृगी, व्याधमृगी (दे ३।४६)।

जुअल—तरुण (दे ३।४७)।

जुअलिअ—द्विगुणित, दुगुना (दे ३।४७)।

जुंगलिका—त्रीन्द्रिय प्राणी-विशेष (अंवि पृ २६७)।

जुंगित—जाति, कर्म या शरीर से हीन (पंक २०१)।

जुंगिय—१ खंडित (पिनि ४४६)। २ जाति, कर्म या शरीर से हीन। ३ दूषित।

जुंजिय—बुभुक्षित, भूखा (ज्ञाटी प ७३)।

जुंजुरुड—अपरिग्रही, परिग्रहरहित (दे ३।४७)।

जुक्कार—प्रणाम (बृटी पृ ५३)।

जुगय—पृथक् (दहाटी प ४७)।

जुण्ण—विदग्ध, दक्ष (दे ३।४७)।

जुयक—पृथक्, अलग (दअचू पृ २५)।

जुयग—पृथक्—'तओ जुयगं घरं कयं' (आवहाटी २ पृ २०६)।

जुरुमिल्ल—गहन, निविड (दे ३।४७)।

जुरुमिल्लय—गहन, गहरा (दे ३।४७ पा)।

जुवय—चन्द्र-प्रभा और संध्या-प्रभा का मिश्रण—'सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च यद् युगपद् भवतस्तत् जुयगोत्ति भणितम्' (स्थाटी प ४५१)।

जुहार—जयकार, जुहार, नमस्कार (आवहाटी १ पृ ६७)।
जुहार (राज)।

जूअअ—चातक (दे ३।४७)।

जूयत—संध्या और चन्द्रमा की प्रभा का मिश्रण (स्था १०।२० पा)।

जूरण—खेदन (सू २।२।३१)।

जूरणया—खेदन (भ १२।५४)।

जूरावणया—खेदापन (भ ३।१४५)।

जूरिय—खिन्न (पा ५७५)।

जूरुम्मिलय—गहन (दे ३।४७ वृ)।

जूवय—१ ऐसा स्थान जिसके चारों ओर पानी हो—'जूवय णाम विट्ठं (वीउं) पाणियपरिक्खित्तं' (निचू ४ पृ ५४)। २ द्यूतकार (कु पृ १७२)।

जूह—कांजी, मांड या मूंग का पानी—'जूहं च कांजिकं, तंदुलोदगं मुद्गरसो वा जूहं भण्णति' (निचू ३ पृ १०३)।

जे—१ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त अव्यय (उ २२।२१) २ अवधारण सूचक अव्यय।

जेमण—मीठा भोजन (ओटी प ४६)।

जेमणय—दक्षिण अंग, दाहिना हाथ आदि (दे ३।४८)।

जोअ—१ युगल (ज्ञाटी प ४७)। २ चन्द्र, चांद (दे ३।४८)।

जोअण—आंख, लोचन (दे ३।५०)।

जोइंगण—कीट-विशेष, इन्द्रगोप (दे ३।५०)।

जोइक्ख—१ दीप—'जोइक्खं तह छाइल्लयं च दीवं मुणेज्जाहि' (व्यभा ७ टी प ६२)—'जोइक्खशब्दः देश्यो दीपे वर्तते' (प्रसाटी प ४६; दे ३।४६)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश (ओनि ६५४)।

जोइज्जमाण—दृष्ट (अनु ३।५२)।

जोइय—१ दृष्ट, देखा हुआ (आवचू १ पृ ५२८)। २ खद्योत (दे ३।५०)।

जोइर—स्खलित (दे ३।४६)।

जोइल्लय—कीट-विशेष, इन्द्रगोप (आवचू २ पृ ८३)।

जोइस—नक्षत्र (दे ३।४६)।

जोई—विद्युत् (दे ३।४६)।

जोक्ख—मलिन (दे ३।४८)।

जोग्ग—चाटु, खुशामद (दे ३।४८)।

जोड—१ नक्षत्र (दे ३।४६)। २ रोग-विशेष। ३ जोड़ी, युगल।

जोडिअ—१ व्याध, शिकारी (दे ३।४६)। २ जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ।

जोडिऊण—जोड़कर, संयुक्त कर—'जोडिऊण करजुयलं कहिओ सुविणगवइयरो' (उसुटी प ६३)।

जोण्णलिआ—धान्य-विशेष, जुआरि (दे ३।५०)।

जोय—युग्म, जोड़ा (भ ११।१५६)।

जोयण—देखना—'उवओग चंदजोयण, साहुत्ति विगिंचणे णाणं' (जीभा १४१७)।

जो रं—वाक्य के आदि में प्रयुक्त 'जो' का अर्थ है—यह तथा 'रं' का अर्थ है—निश्चय—'जो रं च जो किरत्थम्मि' (दे ३।४८)।

जोव—१ बिन्दु। २ अल्प (दे ३।५२)।

जोवण—१ यन्त्र। २ धान्य का मर्दन। ३ धान की बुवाई—'जोवणं—धान्य-प्रकरः। प्रकरो मर्दनं धान्यस्य, लाटविषये जोवणं धण्णपइरणं भण्णइ' (ओटी पृ १६६)।

जोवारि—धान्य-विशेष, जुआरि (दे ३।५०)—'जोवारी शब्दोऽपि देश्य एव (वृ)।

जोव्वण—मध्य भाग (से २।१)।

जोव्वणणीर—वृद्धत्व, बुढ़ापा (दे ३।५१)—'जोव्वणणीरं तरुणत्तणे विजिएन्दिआण पुरिसाण' (वृ)।

जोव्वणवेअ—बुढ़ापा, वृद्धत्व (दे ३।५१)।

जोव्वणोवय—बुढ़ापा, वृद्धत्व (दे ३।५१)।

जोहार—जयकार, नमस्कार—'जयोत्कारकरणं पित्रादीनाम्' (प्रसाटी प १०५)।

झ

झंकक —हाथ का आभूषण-विशेष—'तधेव झंककी व त्ति कडगं खडुगं ति वा' (अंवि पृ ६४)।

झंकारिअ—अवचयन, फूल आदि चुनना (दे ३।५६)।

झंख —१ तुष्ट, तृप्त (दे ३।५३)।

झंखणय—कोधी (अनुद्घाहाटी पृ २६)।

झंखर —सूखा पेड़ (दे ३।५४)।

झंखरिअ—फूलों को चुनना (दे ३।५६)।

झंझ —कलह—'अज्झीणझंझे पुरिसे, महामोहं पकुव्वइ' (सम ३०।१।६)।

झंझडिय —डांट-फटकार—'रिणे अदिज्जंते वणिएहिं अणेगप्पगारेहिं दुव्वयणेहिं झडिया—झंझडिया' (निचू ३ पृ २७०)।

झंझा —१ व्याकुलता (आ ३।६६)। २ कलह (स्था ८।१११)। ३ क्रोध। ४ माया (सूटी १ पृ २४०)।

झंझिय—बुभुक्षित (ज्ञा १।१।१६०)।

झंटलिआ—चंक्रमण, भ्रमण (दे ३।५५)।

झंटिय—प्रहत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह (निचू ३ पृ २६४; दे ३।५५)।

झंटी—छोटे किन्तु खड़े केश (दे ३।५३)।

झंडली—कुलटा, असती (दे ३।५४)।

झंडुअ—पीलु का वृक्ष (दे ३।५३)।

झंडुली—१ असती, कुलटा। २ क्रीडा (दे ३।६१)।

झंपक—बुझाने वाला—'झंपको णिव्वावको' (निचू १ पृ ७६)।

झंपणा—स्थगन, आच्छादन (निभा २७०३)।

झंपणी—पक्ष्म, आंख की बरौनी, आंख के बाल (दे ३।५४)।

झंपिअ—१ त्रुटित, टूटा हुआ। २ घट्टित, आहत (दे ३।६१)।

झंपित—आहत (व्यभा ७ टी प ३०)।

झंपुल्लिया—ऊंची छलांग—'झंपुल्लिया खेल्लणइं' (कु पृ ११२)।

झक्किअ—लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३।५५)।

झज्झरी—स्वयं को कोई न छूए—यह बताने के लिए चांडाल आदि जाति के लोग अपने हाथ में एक यष्टि रखते हैं, वह। इसका दूसरा नाम 'खिक्खिरी' है (दे ३।५४)।

झड—१ झडा हुआ—पत्र-पुष्पों से रहित—'वणसंडे····जुण्णे झडे परिसडिय-पंडुपत्ते' (राज ७८२)। २ शीघ्र (बृटी पृ १३१६)।

झडप्पड—शीघ्र (प्रा ४।३८८)।

झडप्पिअ—छीना हुआ (दे ५।३४ वृ)।

झडिज्जंत—आहत होता हुआ, खिन्न होता हुआ—'वासेण झडिज्जंतं दट्ठूणं वानरं थरथरेंतं' (आवमटी प ३४५)।

झडित—झड़ा हुआ (निचू ३ पृ २७०)।

झडिय—१ डांटना, फटकारना (निचू ३ पृ २७०)। २ शिथिल, ढीला। ३ श्रान्त, खिन्न (म ४४७)। ४ झड़ा हुआ, गिरा हुआ।

झडी—निरन्तर वर्षा (दे ३।५३)।

झडुरविडुर—जादू-टोना (व्यभा ४।३ टी प ४६)।

झत्थ—१ गत, गया हुआ। २ नष्ट (दे ३।६१)।

झपित—कम्पित (अंवि पृ १४३)।

झमाल—इन्द्रजाल (दे ३।५३)।

झरअ—सुवर्णकार (दे ३।५४)।

झरंक—तृण का बनाया हुआ पुरुष, चच्चा (दे ३।५५)।

झरंत—तृण-पुरुष, चच्चा (दे ३।५५ वृ)।

झरक—१ स्मरण करने वाला—'सुत्तत्थे मनसा झायंतो झरको' (नंदीचू पृ ८)। २ ध्यान करने वाला (नंदी टी पृ १२)।

झरणा—१ स्मरण—'एवं सो झरणाए दुब्बलो जातो' (आवचू १ पृ ४१०)। २ झरना, टपकना (बृभा ६००७)।

झरय—ध्यान करने वाला—'जो दुब्बलिओ सो झरओ' (आवचू १ पृ ४०६)।

झरुअ—१ मच्छर, मशक (दे ३।५४)। २ झींगुर—'मशकवाचकशब्दाश्चीर्या-मपि वर्तन्ते। यदाह—मशकाख्याश्चीर्यामप्युच्यन्ते काव्यतत्त्वज्ञैः' (वृ)।

झलक्किय—दग्ध, संतप्त (प्रा ४।३६५)।

झलज्झल—पानी का शब्द (ओटी प ३७६)।

झलझलिआ—थैली (दे ३।५६)।

झला—मृगतृष्णा, मृगमरीचिका (दे ३।५३)।

झलुंकिअ—जला हुआ, दग्ध (दे ३।५६)।

झलुसिअ—जला हुआ (दे ३।५६)।

झल्लमल्ल—परिपूर्ण, भरा हुआ (विभाकोटी पृ २९४)।

झस—१ अयश, अकीर्ति। २ तट, किनारा। ३ छैनी से कटा हुआ। ४ तटस्थ, मध्यस्थ।। ५ दीर्घ-गंभीर, लंबा और गंभीर, बहुत गहन (दे ३।६०)। ६ शस्त्र-विशेष (कु पृ १९८)।

झसिअ—१ पर्यस्त, उत्क्षिप्त। २ आकृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३।६२)।

झसुर—१ ताम्बूल, पान। २ अर्थ, प्रयोजन (दे ३।६१)।

झाउल—कर्पास-फल, डोडा (दे ३।५७)।

झाड—झाड़ी, निकुंज (निचू ३ पृ २६७; दे ३।५७)।

झाम—दग्ध (जीव ३।९६)।

झामण—जलाना (जीभा २३२३)।

झामणिक—जलानेवाला (नंदि पृ २५४)।

झामर—वृद्ध, बूढा (दे ३।५७)।

झामल—आंखों का रोग-विशेष—'पुत्तसोगेण य, से किल झामलं चक्खु जायं रुयंतीए' (आवहाटी १ पृ ९९)। झांवला (राज)। झामरो (गुज)।

झामित—दग्ध (जीभा २३२१)।

झामिय—१ जलाया हुआ, दग्ध (भ ५।५१; दे ३।५६)। २ श्यामल। ३ कलंकित।

झारुआ—झींगुर, क्षुद्र कीट-विशेष (दे ३।५७)।

झिखिअ—लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३।५५)।

झिगिर—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, झींगुर (प्रज्ञा १।५०)।

झिगिरिड—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

झिझिय—बुभुक्षित, भूखा—'आउरे झिझिए पिवासिए तवस्सी' (बृ ४।२८)।

झिज्झिरि—वल्ली-विशेष (आचूला १।१०८)।

झिज्झिरी—वल्ली-विशेष (आचू पृ ३४१)।

झिमिय—जड़ता, शरीर के अवयवों का अकड़ जाना (आ ६।८)।

झिरिड—जीर्ण कूप (दअचू पृ १००, दे ३।५७)।

झिल्लिय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, झिल्ली (प्रज्ञा १।५०)।

झिल्लिरिआ—१ 'चीही' नामक तृण। २ मशक, मच्छर (दे ३।६२)।

झिल्लिरी—मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १।८।१६)।
झिल्ली—१ अनंतकाय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४८।४२)। २ तरंग।
झीण—१ अंग, शरीर। २ कीट (दे ३।६२)।
झीम—मन्द—'झीमीभवंति ति मंदीभवंति इति चूर्णौ' (बृटी पृ ३८)।
झीरा—लज्जा (दे ३।५७)।
झुंख—तुणय नामक वाद्य (आवचू १ पृ ३०६; दे ३।५८)।
झुंझिडित—सेवा करने वाला—'झुंझिडिओ णाम उवचरतो' (दशचू प ५०)।
झुंझिय—१ भूखा (प्र ३।६)। २ मुरझा हुआ (भ १६।४)।
झुंझुमुसय—मन का दुःख (दे ३।५८)।
झुंटण—१ प्रवाह (दे ३।५८)। २ पशु-विशेष।
झुंपडा—झोंपडी, कुटिया—'मंहु कंतहो गुट्ठडिअहो कउ झुंपडा बलंति' (प्रा ४।४१६ टी)।
झुंबनक—लटकने वाला आभूषण, झूमका (भटी पृ ८७६)।
झुझुरायित—जीर्ण-शीर्ण (अवि पृ १४८)।
झुट्ठ—असत्य (दे ३।५८)।
झुत्ती—विच्छेद (दे ३।५८)।
झुपित—दग्ध, झुलसा हुआ (अवि पृ १४८)।
झुमुझुमुसय—मन का दुःख (दे ३।५८ वृ)।
झुरित—क्षीण, मुरझाया हुआ (भटी पृ १२६७)।
झुल्लुरी—गुल्म (दे ३।५८)।
झुसिय—बुभुक्षित—'आउरे झुसिए पिवासिए' (भ १६।५२)।
झूर—टेढा, कुटिल (दे ३।५६)।
झूसरिअ—१ अत्यन्त। २ स्वच्छ, निर्मल (दे ३।६२)।
झूसिय—१ बुभुक्षित—'आउरं झूसियं पिवासियं' (अंत ३।६५)। २ परित्यक्त, क्षपित (स्थाटी प २२५)।
झेंडुअ—गेंद, कन्दुक (दे ३।५६)।
झेर—पुराना घण्टा (दे ३।५६)।
झोंडलिआ—रास के सदृश एक प्रकार की क्रीडा (दे ३।६०)।
झोट्टी—अप्रसूत अवस्था वाली भैंस (दे ३।५६)।
झोड—पत्रविहीन वृक्ष, ठूंठ (ज्ञा १।११।२)।
झोडण—शाटन, पातन (प्र १।३५)।

झोडप्प—१ चना (दे ३।५६)। २ सूखे चने का शाक—'झोडप्पो चणकधान्यम्। शुष्कचणकशाकमित्यन्ये' (वृ)।

झोडय—वीणा-विशेष (नि १७।१३७)।

झोडिअ—बहेलिया, व्याध, शिकारी (दे ३।६०)।

झोलिआ—१ शिविका-विशेष (कु पृ २४)। २ थैली, झोली (दे ३।५६)।

झोलिका—झोली, थैली—'झोलिकाशब्दो यदि संस्कृते न रूढस्तदायमपि देश्यः' (दे ३।५६ वृ)।

झोस—१ समीकरण—'झोस त्ति वा समकरणं ति वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ ३२३)। २ झाड़ना, दूर करना।

झोसण—१ क्षपणा, छोड़ना—'झोसण खवणा मुंचण एगट्ठा' (जीभा २२७६)। २ आसेवन, मार्गण—'आभोगणं ति वा मग्गणं ति वा झोसणं ति वा एगट्ठं' (व्यभा ४।१ टी प २४)।

ट

टंक—१ तलवार (प्र १।२८; दे ४।४)। २ एक दिशा में छिन्न पर्वत—'छिन्नं तडं टंकं' (नंदीचू पृ ६४)। ३ किनारा (निचू १ पृ ४४; दे ४।४)। ४ भित्ति (उसुटी प १६५; दे ४।४)। ५. कुदाल। ६ छिन्न, काटा हुआ। ७ खात. खुदा हुआ जलाशय। ८ जंघा (दे ४।४)।

टंकण—टंकण देश में रहने वाली म्लेच्छजाति, पर्वतीय लोग—'अक्कोसे सरणं जंति टंकणा इव पव्वयं' (सू १।३।५७)।

टंका—जंघा (पा ८५१)।

टंकिअ—फैला हुआ (दे ४।१)।

टंबरअ—भारी (दे ४।२)।

टक्क—म्लेच्छ जाति (कु पृ १५३)।

टक्कर—१ मुद्गरविशेष (प्रटी प ४८)। २ ठोकर, आघात (उसुटी प १३)।

टक्करा—टकोरा, मुंड-सिर पर अंगुली का आघात (निचू ४ पृ ३१२)।

टक्कारा—टकोरा, आघात (व्यभा २ टी प ५२)।

टक्कारिआ—अरणि का फूल (दे ४।२)।

टक्कारी—१ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)। २ अरणि का फूल (दे ४।२ वृ)।

टट्टइआ—पर्दा (दे ४।१)।

टप्पर—१ विकराल कान वाला (प्रटी प ८१)। २ छाज के आकार के कान (उपाटी पृ ९६)।

टप्परअ—विकराल कान वाला (दे ४।२)।

टमर—केशों का समूह (कु पृ ७३; दे ४।१)।

टसर—१ सूती वस्त्र (निचू २ पृ ६८)। २ मोड़ना (दे ४।१)।

टसरोट्ट—अवतंस (दे ४।१)।

टार—१ दुष्ट अश्व (दे ४।२)। २ टट्टू, छोटा घोड़ा।

टाल——फल की वह अवस्था जिसमें गुठली न पड़ी हो (द ७।३२)—'टालाणि नाम अबद्धट्ठिगाणि भन्नंति' (जिचू पृ २५६)।

टिंबरु—तेंदू का वृक्ष (दे ४।३)।

टिंबरुय—तेंदु का वृक्ष (दजिचू पृ १८४)।

टिक्क—१ तिलक (दे ४।३)। २ सिर पर फूलों का गुच्छा (वृ)।

टिक्किद—तिलक वा 'टीकी' से विभूषित—'मंडियटिक्किदविभूसिया एगा साहुणी' (उसुटी प ५४)।

टिग्घर—स्थविर, वृद्ध (दे ४।३)।

टिट्टि—टिट्-टिट् की आवाज, बछड़े आदि को प्रतिषेध करने का शब्द (बृभा ७७)।

टिट्टिभीय—टिट्टिभ, टि-टि करने वाला प्राणी (अंवि पृ १८३)।

टिप्पी—तिलक (दे ४।३)।

टिविडिक्किय—अलंकृत, विभूषित—'संजइं पासति मंडिय-टिविडिक्किया' (उशाटी प १३८)।

टुंट—छिन्न-हस्त, कटे हुए हाथ वाला (प्रसा ७९५; दे ४।३)।

टुंटय—छिन्न-हस्त (दे ४।३ वृ)।

टेंकण—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

टेंटा—१ जूआ खेलने का स्थान (दे ४।३)। २ अक्षि-गोलक। ३ छाती का शुष्क व्रण।

टेंटिअ—द्यूतक्रीडा के स्थान पर रहने वाला (दे ४।३ वृ)।

टेंबरुय—तेंदु का फल (आटी प ३४९)।

टेक्कर—स्थल, प्रदेश (दे ४।३)।

टेक्करय—स्थल (दे ४।३ वृ)।

टेट्टिकालक—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३८)।

टेट्टिवालक—चित्र-विचित्र रंगों वाला पक्षी-विशेष, तितली (?) (अंवि पृ २२५)।

टेणग—झाग (अनुद्वाचू पृ १३)।

टोक्कण—दारू मापने का बर्तन (दे ४।४)।

टोक्कणखंड—दारु मापने का पात्र (दे ४।४ वृ)।

टोक्कर—जाली या डोरी (बृटी पृ १६४१)।

टोप्परिया—पात्र-विशेष (आवहाटी १ पृ २७५)।

टोल—१ अप्रशस्त (जंबू २।१३३)। २ ऊंट (भटी प ३०८)। ३ टिड्डी—'टोलोव्व उप्फिडंतो' (प्रसा १५७)। ४ शलभ—'टोलोव्व मा पड तुमं उज्जाणे' (दे ४।४)। ५ पिशाच—'टोलं पिशाचमाहुः सर्वे शलभं तु राहुलकः' (वृ)। ६ टोली, यूथ।

टोलंब—महुआ का पेड़ (दे ४।४)।

'टोल' गति—१ टेढ़ी-मेढ़ी गति (भ ७।११९)। २ गुरुवंदन का एक दोष, टिड्डी की तरह फुदक-फुदक कर वंदना करना (प्रसाटी प ३६)।

टोला—टिड्डी—'टोला तिड्डया इति चूर्णौ विशेषचूर्णौ' (बृटी पृ ६७५)।

टोल्ल—मुंड सिर पर अंगुली का आघात, ठुनकाना (व्यभा १ टी प १३)। ठोला मारना (राज)।

ठ

ठइअ—१ उत्क्षिप्त (दे ४।५)। २ अवकाश (वृ)।

ठक्कुर—ठाकुर (बृटी पृ ५४)।

ठरिअ—१ सम्मानित। २ ऊर्ध्वस्थित (दे ४।६)।

ठल्ल—निर्धन (दे ४।५ वृ)।

ठल्लय—निर्धन (दे ४।५)।

ठविआ—प्रतिमा (दे ४।५)।

ठाग—अवकाश, स्थान (बृभा ४८५०)।

ठाण—अभिमान (दे ४।५)।

ठाणइल्ल—कोतवाल—'ठाणइल्ला रायपुरिसा गहण-कड्ढणं करेज्ज' (निचू ३ पृ १९९)।

ठाणिज्ज—१ सम्मानित (दे ४।५)। २ गौरव।

ठिअअ—ऊर्ध्व, ऊंचा (दे ४।६ वृ)।

ठिक्क—शिश्न, पुरुष-चिह्न (दे ४।५)।

ठिक्करिया—ठीकरी, कपाल—'ठिक्करियं अच्चेहि' (आवहाटी १ पृ २६४)।

ठिक्किरिया—ठीकरी, घड़े का टूटा हुआ अंश—'सरक्खाणं ढुक्काहि ठिक्किरियं च अच्चेहि' (आवचू १ पृ ५२२)।

ठियल्ल—अवस्थित (उसुटी प ७२)।

ठिविअ—१ ऊर्ध्व। २ निकट। ३ हिचकी (दे ४।६)।

ठुंठ—स्थाणु—'छिन्नावशिष्टवनस्पतीनां शुष्कावयवाः ठुंठा इति लोकप्रसिद्धाः' (जंबूटी प ६६)।

ठोठिका—एक प्रकार की मिठाई (प्रसाटी प ५१)।

ड

डआलुय—नौका-विशेष (अंवि पृ १४६)।

डउर—जलोदर रोग (निभा २६५)।

डंक—१ (बिच्छू आदि का) दंश (प्र १।२३)। २ क्षत-विक्षत (निचू २ पृ ८८)।

डंगर—नीच जाति के लोग—'डंगरा पादमूलिया' (निचू ३ पृ ५२१)। २ लाठी रखने वाले चोर—'लाकुटिकाः डङ्गराः' (बृटी पृ ११५७)।

डंड—वस्त्र के जोड़े हुए टुकड़े (दे ४।७)।

डंडअ—रथ्या (दे ४।८)।

डंडपरिहार—जीर्ण-शीर्ण बड़ी कंबल—'महंता जुण्ण कंबली सरडिता डंड-परिहारो भण्णति' (निचू २ पृ ३२२)।

डंडि—सांधा हुआ जीर्ण वस्त्र (निचू ३ पृ ६०)।

डंडी—सिले हुए वस्त्र-खण्ड (दे ४।७ वृ)।

डंबर—घर्म, गर्मी (दे ४।८)।

डंभण—सूची की भांति तीक्ष्ण शस्त्र-विशेष (विपा १।६।२१)।

डंभिअ—द्यूतकार (दे ४।८)।

डक्क—१ सांप द्वारा डसा हुआ (निचू १ पृ ८२)। २ दन्तगृहीत (दे ४।६)। ३ वाद्य-विशेष।

डक्कुरिज्जंत—पीड़ित होता हुआ—'महाणगरडाहे वा डक्कुरिज्जंतेसु वा णगरगामेसु वा समंता हाहाकाररवा' (सूचू १ पृ १३१)।

डगण—यान-विशेष (बृभा ३१७१)।

डगल—१ फल का छोटा और विषम गोल टुकड़ा (नि १५।७)। २ खण्ड—'डगलं तु होइ खंडं' (निभा ४६९८)। ३ आधाभाग—'डगलं अद्धं भण्णति' (निचू ३ पृ ४८२)। ४ ईंट का टुकड़ा (ओनि ३६०)। ५ पाषाण-खंड (ओभा ७८)।

डगलग—ईंट, पाषाण आदि के टुकड़े (पिनि ३७)।

डग्गल—घर के ऊपर का भूमितल (दे ४।८)। डागला (राजस्थानी)।

डड्ढाडी—दवमार्ग, अग्निमार्ग (दे ४।८)।

डड्ढाली—दवमार्ग, दावानल से निर्मित मार्ग (दे ४।८ पा)।

डप्फ—सेल्ल नामक आयुध (दे ४।७)।

डब्ब—बायां—'चउरंगुल मुहपत्ती उज्जुए डब्बहत्थ रयहरणं' (आवनि १५४५)।

डमर—अशोभनीय—'पच्चंता करिंति डमराइं' (आवहाटी २ पृ ४५)।

डल—लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ४।७)।

डल्ल—१ बांस की बड़ी छाबड़ी—'गवां चरणार्थं यद्वंशदलमयं महद्भाजनं तद्गोकिलञ्जं डल्ले त्ति यदुच्यते' (उपाटी पृ ९६; दे ४।७)।

डल्ला—बांस का बना हुआ भाजन-विशेष (भटी प ३१३)।

डव्व—बायां हाथ (दे ४।६)।

डहर—१ बालक (सू १।२।२; दे ४।८)। २ छोटा—'जे यावि नागं डहरं ति नच्चा आसायए से अहियाय होइ' (द ९।१।४)। ३ अकुलीन—'डहरो अकुलीणोत्ति' (जीविप पृ ४१)।

डहरप्फर—हड़बड़ाहट (दअचू पृ ८)।

डहरय—छोटा (उसुटी प २४)।

डहराक—छोटा (अंवि पृ ११९)।

डहरिया—छोटी, अठारह वर्ष तक की लड़की (आवचू २ पृ १५४)।

डहरी—१ छोटी (दश्रुनि ५)। २ अलिञ्जर, मिट्टी का घड़ा (दे ४।७)।

डाअ—पत्ती वाला हरित शाक-विशेष (दश्रु ३।३)।

डाअल—नेत्र, लोचन (दे ४।६)।

डाउ—१ फलिहंसक वृक्ष। २ गणपति की प्रतिमा-विशेष (दे ४।१२)।

डाग—१ पत्ती वाला शाक (जीभा १२१३)। २ हरा शाक—'मूलफलं हरियगं डागो' (पंक ७२८)। ३ डालो (आटी प ४११)।

डागल—फल का गोल टुकड़ा (नि १५।७)।

डागवच्च—पत्र-प्रधान शाक सुखाने का स्थान (आचूला १०।२६)।

डामित—झामित, जलाया हुआ (व्यभा ७ टी प ५५)।

डाय—१ बैंगन, ककड़ी, चना, पत्ती आदि का शाक। २ मसालों से पकाई हुई बथुआ, राई आदि की भाजी (प्रसा १३६)।

डायलअ—चक्षुष्मान्, आंख वाला—'ता तरलिअडायलओ गुत्तिद्दहे डिड्डुरोव्व डिफेसु' (दे ४।६ वृ)।

डायाल—हर्म्यतल, प्रासाद-भूमि (निचू २ पृ ३६)।

डाल—वृक्षशाखा (निचू ३ पृ २४)।

डालग—१ शाखा का एक भाग—'डालग त्ति शाखैकदेशः' (आटी प ३५४)। २ सूक्ष्म खण्ड (आटी प ४०५)।

डालय—शाखा (ज्ञा १।३।१८)।

डाला—वृक्ष की शाखा (पा ३३३)।

डाली—शाखा (निचू ३ पृ ४७२; दे ४।६)।

डाव—वाम हस्त, बांया हाथ (निर १।३८; दे ४।६)। डावो (राज, गुज)।

डिअली—स्थूणा, खम्भा (दे ४।६)।

डिडि—सिले हुए वस्त्र-खंड (दे ४।७)।

डिडिबंध—गर्भ-संभव (पंक २४४)।

डिडिम—१ कांस्य पात्र (आचूला १।१४५)। २ गर्भ-संभव (निचू २ पृ २६०)।

डिडिल्लिअ—१ तैल-किट्ट से व्याप्त वस्त्र, खलि-खचित वस्त्र (दे ४।१०)। २ स्खलित हस्त (वृ)।

डिडिल्लिअय—स्खलित हस्त (दे ४।१० वृ)।

डिड्डुर—मेंढक (दे ४।६ वृ)।

डिफ—जल—'डिड्डुरो व्व डिफेसु' (दे ४।६ वृ)।

डिफिअ—पानी में गिरा हुआ (दे ४।६)।

डिक्क—बालक (आवचू १ पृ ४६६)।

डिक्कर—पुत्र (आवहाटी १ पृ ६२)। डीकरो (गुज)।

डिक्करिका—छोटी कन्या (आटी प ४१३)। डीकरी (गुज)।

डिक्करुका—लड़की (आवचू २ पृ २६०)।

डिक्करूव—बालक–'एए पव्वइया डिक्करूवाणि घेत्तुं मारेंति' (उसुटी प २०५)।

डिडुर—मेंढक (दे ४।६)।

डिड्डुर—मेंढक (दे ४।६ वृ)।

डिप्फर—आसन-विशेष–'डिप्फरो पीढफलकं सत्थियं तलियं ति वा'। (अंवि पृ ६५)।

डिलय—शाखा–'डिलयम्मि ओलइया' (जीभा ५३८)।

डीण—अवतीर्ण (आचू पृ ८५; दे ४।१०)।

डीणोवय—ऊपर (दे ४।१०)।

डीर—नया अंकुर, कन्दल (दे ४।१०)।

डुंग—१ शिलाओं का उपचय। २ चोरों का समुदाय–'डुंगानि शिलावृन्दानि चोरवृन्दानि वा' (जंबूटी प १६८)।

डुंगर—१ छोटी पहाड़ी। २ चोरों की बस्ती (जंबूटी प १६८)। ३ पर्वत (दे ४।११)।

डुंघ—नारियल का बना पात्र जो पानी निकालने के काम आता है (दे ४।११)।

डुंडुअ—१ पुराना घण्टा (दे ४।११)। २ बडा घंटा।

डुंब—१ महावत (पिनि ३८७)। २ चाण्डाल (सूचू २ पृ ३५७; दे ४।११)।

डुंबिय—चांडाल (निचू २ पृ २६६)।

डुप्पक—नाव (अंवि पृ ७६)।

डेप—१ गहरा–'डेपकूपे प्रतिबिम्बं मरुकूपसदृशमतीवोण्डं कूपं दृष्वेत्यर्थः'। २ प्रतिक्षेपण, गिराना (व्यभा ४।३ टी प ६)।

डेपन—लंघन, अतिक्रमण (व्यभा ४।३ टी प ६)।

डेरग—छोटा, लघु (आवहाटी १ पृ २७०)।

डेवण—कूदना-फांदना–'डेवणं गत्तवरंडाई फडणं' (जीविप पृ ३४)।

डेवेमाण—प्लवमान (भ १३।१५५)।

डोअ—दाल-शाक आदि परोसने की काष्ठ-निर्मित बड़ी कडछी (नंदी ३८।६; दे ४।११)। डोयो (गुज)।

डोअण—लोचन (दे ४।६)।

डोंगर—१ छोटी पहाड़ी (जंबू २।१३१)। २ ढेर, टीला—'छारेण डोंगरा कता' (आवचू १ पृ २२३)। ३ पर्वत (ओटी प २०)।

डोंगिली—१ ताम्बूल का भाजन-विशेष (दे ४।१२)। २ पान बेचने वाली स्त्री (वृ)।

डोंगी—१ स्थासक—कुंकुम आदि से लिप्त हथेली का छापा। २ पान रखने का पात्र-विशेष, पानदानी (दे ४।१३)।

डोंडिणी—ब्राह्मणी (आवहाटी १ पृ ३७)।

डोंब—१ चाण्डाल, डोम (प्र १।२१)। २ महावत (बृभा ४१२४)। देश-विशेष (प्रज्ञा १।८६)। ४ पटह बजाने वाला—'किं कोइ डोंबडिंभो पडहयसद्दस्स उत्तसइ' (कु पृ ३८)।

डोंबिल—डोम, चाण्डाल (जीभा ४२५)।

डोंबिलग—१ एक अनार्य-जाति। २ म्लेच्छ देश-विशेष (प्रज्ञा १।८६)।

डोंबिल्लिय—अनार्य जाति का नृत्य, वादन आदि (कु पृ १५०)।

डोंबी—कर्णपिशाचिनी, चांडाली (पंवटी प २३२)।

डोड—ब्राह्मण (उसुटी प ५८)।

डोडकित—वनस्पति की वह अवस्था जिसमें अनाज के 'डोडे' उत्पन्न हो गये हों (ज्ञाटी प १२५)।

डोडिणी—ब्राह्मणी (अनुद्वा ६८)।

डोड्डुग—आक का डोडा—'अक्कडोड्डुगाइ तूलभरिया वा तूली' (निचू ३ पृ ३२१)।

डोड्डुनी—ब्राह्मणी (स्थाटी प १४४)।

डोतीय—बड़ा चम्मच (जीभा १२११)।

डोभ—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

डोल—१ चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष, टिड्डी (उ ३६।१४७)। २ फल-विशेष, मधूक (प्रसा २१६)। ३ अक्षिगोलक—'बेवि अक्खिडोलए पाडेति' (आचू पृ २२६)। ४ आंख (दे ४।६)।

डोला—१ शिविका (दे ४।११)। २ हिंडोला, झूला (पा ७४१)। ३ टिड्डी—'डोलाः तिड्डुका उच्यन्ते' (बृटी पृ ६७५)।

डोलिअ—काला हिरण (दे ४।१२)।

डोलिका—बैठने की डोली (जंबूटी प १२३)।

डोव—१ म्लेच्छ जाति (निचू १ पृ १०३)। २ कड़छी (आचटि प ६१)।

डोवलिय— शाक आदि परोसने का काष्ठ-पात्र (आवहाटी २ पृ २४४)।

डोविलिय—शाक आदि परोसने का काष्ठ-पात्र (आवचू २ पृ ३१०)।

डोहल—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

डोहिय—फल की अस्थिविहीन अवस्था (आचू पृ ३४१)।

ढ

ढंक—१ जंगली कौआ, मांसभक्षी पक्षी—'सियाल-णंतिक्क-ढंकादी' (जीभा २४६७)। २ जलचर पक्षि-विशेष—'.....जलचरपक्षि-जातिरेव.....एते हि न तृणाहाराः केवलोदकाहारा वा' (सूचू १ पृ २०१)। ३ मांसभक्षी क्षुद्र जीव (सूटी १ प २४६)। ४ कौआ (दे ४।१३)।

ढंकण—ढक्कन, पिधानक (अनुद्वा)।

ढंकणी—पिधानिका, ढकनी (दे ४।१४)।

ढंकराली—बडे पक्षी-विशेष—'महासकुणा दिग्घग्गीवा....पारिप्पव-ढंकरालीओ' (अंवि पृ २३६)।

ढंकुण—१ वाद्य-विशेष (आचूला ११।२)। २ खटमल (जंबूटी प १२४; दे ४।१४)।

ढंखरिअ—विशेष प्रकार की वीणा रखने वाला (दे ४।१४ वृ)।

ढंखरी—वीणा का एक प्रकार (दे ४।१४)।

ढंढ—१ पङ्क। २ निरर्थक (दे ४।१६)। ३ कपटी, दाम्भिक।

ढंढणी—१ तृण-विशेष (बृटी पृ २०६)। २ कपिकच्छु का वृक्ष (दे ४।१३)।

ढंढर—१ पिशाच। २ ईर्ष्या (दे ४।१६)।

ढंढरिअ—कर्दम (दे ४।१५)।

ढंढसिअ—१ ग्रामयक्ष (दे ४।१५)। २ ग्रामवृक्ष (वृ)।

ढंढा—भेरी—'णेहो त्ति णाम डड्ढं (ढंढं ?) भणियं मज्झण्हढंढाए' (कु पृ १६६)।

ढंसय—अपयश (दे ४।१४)।

ढक्क—म्लेच्छ जाति-विशेष (कु पृ १५३)।

ढक्कण—ढक्कन–'संवरं ढक्कणं पिहाणं ति एगट्ठा' (जीचू पृ ५)।

ढक्कय—तिलक (दे ४।१४)।

ढक्कारि—अद्भुत (प्रा ४।४२२)।

ढक्कवत्थुल—एक प्रकार की भाजी (प्रसा २३६)।

ढक्किय—१ आच्छादित (पिनि १६८)। २ वृषभ की आवाज (उसुटी प १३५)।

ढड्ढ—भेरी (दे ४।१३)।

ढड्ढर—१ तेज आवाज (बृभा २५६१)। २ गुरुवन्दन का एक दोष—ऊंचे स्वर से वन्दन करना (प्रसा १७३)।

ढमर—१ पिठर, स्थाली। २ उष्णजल (दे ४।१७)।

ढयर—१ पिशाच। २ ईर्ष्या (दे ४।१६)।

ढावरा—बालक (अंवि पृ ६६)। डावरा (राजस्थानी)।

ढिउल्लिका—पुतली (पिटी प ६)।

ढिंक—बड़ा काक (प्रटी प १०)।

ढिंकिय—वृषभ की गर्जना–'वसभं ढिंकिएणं' (अनुद्वा ५२२)।

ढिंकुण—१ खटमल (जंबू २।४०)। २ गौ आदि को लगने वाला क्षुद्र जंतु-विशेष 'चींचड' (उ ३६।१४६)।

ढिढ—जल में गिरा हुआ–'दिट्ठो कह वि मह पई ढिढो' (दे ४।१५ वृ)।

ढिढय—जल में गिरा हुआ (दे ४।१५)।

ढिक्कय—नित्य (दे ४।१५)।

ढिविकय—वृषभ का शब्द–'वसभढिक्किकयाइ' (अनुद्वाचू पृ १३)।

ढुंढुल्लिअ—खोजा हुआ (पा ५२६)।

ढुक्कड—उपस्थित, मिलित–'इमं समोसरणं ढुक्कडं' (सूचू २ पृ ४१४)।

ढेंका—१ ढेंकुवा पक्षी (निचू १ पृ १०३)। २ हर्ष। ३ कूपतुला (दे ४।१७)।

ढेंकी—बलाका (दे ४।१५)।

ढेंकुण—खटमल (दे ४।१४)।

ढेंढिअ—धूपित (दे ४।१६)।

ढेकुय—कूप-तुला–'दो जणा ढेकुयादवरकेण····वद्धा' (आवमटी प २७६)।

ढेक्किय—सांड की गर्जना—'गोट्ठंगणस्स मज्झे ढेक्कियसद्देण जस्स भज्जंति' (आवहाटी २ पृ १५३)।

ढेणिआल—टिड्डी (अंतटी पृ ४)।

ढेणिकाल—कीट-विशेष (अनुटी पृ ४)।

ढेणियालग—पक्षि-विशेष (प्र १।९)।

ढेणियालिया—पक्षि-विशेष (अनु ३।३३)।

ढेल्ल—निर्धन (दे ४।१६)।

ढेल्लिका—नितम्ब (अंवि पृ ११४)।

ढेल्लिय—ढेला, मृत्खंड (अंवि पृ २१५)।

ढेल्लिया—मिट्टी का ढेला (अंवि पृ २१५)।

ढोइत—प्रविष्ट (निचू २ पृ २८५)।

ढोंघर—भ्रमणशील (दे ४।१६ वृ)।

ढोंघरय—भ्रमणशील (दे ४।१६)।

ढोंढसिव—भगवान् महावीर के समय से प्रचलित ग्राम-देवता—'ततो तप्पभिइं ढोंढसिवो पवत्तो' (आवमटी प २९१)।

ढोक्कणिय—आच्छादन—'कुतित्थाणि य जाणासि, अच्छिढोक्कणियाणि य' (आवहाटी २ पृ ४८)।

ढोय—गमन, प्रवेश—'चेल्लणाइ कयाइ ढोयं न देइ' (आवहाटी २ पृ १२९)।

ढोल्ल—१ प्रिय (प्रा ४।३३०)। २ पटह, ढोल। ३ देशविशेष।

ण

णइकुक्कुडिका—जलचर पक्षि-विशेष (अंवि पृ २३८)।

णइमासय—पानी में होने वाला फल-विशेष (दे ४।२३)।

णउत—संख्या-विशेष—'चतुरशीतिर्नयुताङ्गशतसहस्राणि एकं नयुतम्' (स्थाटी प ३४५)।

णउलग—नौली, रुपयों की थैली (उसुटी प ११८)।

णं—पादपूरक अव्यय—'णगारो देसिवयणेण पायपूरणे, जहा—समणे णं रुक्खा णं गच्छा णं ति' (निचू १ पृ २९)।

णंकार—पादपूर्ति के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द—'णंकार पूरणे देसी-भाषातो वा' (सूचू १ पृ १४२)।

णंगणिगा—नग्नभाव—'नग्नभावो हि णंगणिगा स्यात्' (सूचू १ पृ १५६)।

णंगर—लंगर, जहाज को जल-स्थान में थामने के लिए पानी में डाला जाने वाला लोहे या पत्थर का साधन (ज्ञाटी प १६५)।

णंगल—लांगूल, पूंछ—'गद्दभनंगलेण गाहाविया' (आवहाटी २ पृ १३१)।

णंत—वस्त्र—'णंतमिति देशीवचनं वस्त्रवाचकम्' (आवमटी प ८८)।

णंतक—कपड़ा (आवचू २ पृ २११)।

णंतग—वस्त्र—'उग्गह णंतग पट्टो अड्ढोरुग' (पंक १४८१)।

णंतिक्क—१ बुनकर, जुलाहा—'णंतिक्क-रयग-देवड-डोंबिल-पाडहिय रायपहे' (जीभा ४२५)। २ पशु-विशेष—'अण्णे वि अत्थि संघा, सियाल-णंतिक्क-ढंकादी' (जीभा २४६७)। ३ वस्त्र छापने वाला, छींपा (व्यभा १० टी प ६६)।

णंतुका—पक्षिणी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

णंद—१ ईख पेरने का काण्ड। २ कुंडा, पात्र-विशेष (दे ४।४५)। ३ लोहे, का वृत्त आसन-विशेष (ज्ञाटी प ४७)।

णंदण—१ भृत्य, नौकर (दे ४।१६)। २ एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष (कु पृ १४६)।

णंदा—गाय (दे ४।१८)।

णंदिअ—सिंहनाद, सिंह का दहाड़ना (दे ४।१६)।

णंदिक्ख—सिंह (दे ४।१६)।

णंदिणी—गाय (दे ४।१८)।

णंदिविणद्धण—सिर का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६२)।

णंदी—गाय (दे ४।१८)।

णंदीविणद्धक—सिर का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १८३)।

णक्क—१ नाक (विपा १।१।६२; दे ४।४६)। २ मूक (दे ४।४६)।

णक्खच्चण—नखचूंटी, नहरनी (पंक २०२४)।

णक्खच्चणि—नहरनी (बृभा २८८३)।

णक्खत्तणेमि—विष्णु (दे ४।२२)।

णगर—घर—'णगरं घरं आश्रयेत्यर्थः' (निचू १ पृ ६६)।

णगरग—घर (निभा २८३)।

णच्चिर—रमणशील, उन्मत्त—'ण सुणेसि णच्चिराणं जइ गीयं' (दे ४।१८)।
णच्छक—रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।
णच्छोटि—नाखून काटने का शस्त्र, नहरनी (व्यभा १० टी प ३०)।
णज्जर—मलिन (दे ४।१६)।
णज्झर—निर्मल (दे ४।१६)।
णट्टुल्लग—नाटक (ज्ञाटी प १०२)।
णट्टोसक—नाटकाचार्य (अंवि पृ ६८)।
णड—तृण-विशेष (जीवटी प १२३)।
णडइल्ल—नाटकीय (कु पृ ४२)।
णडवेलंब—कोलाहल, छीनाझपटी—'तारिसं णडवेलंबं घरे दट्ठुं' (निचू ३ पृ ४३३)।
णडिअ—१ वञ्चित, प्रतारित (ज्ञा १।६।५४; दे ४।१८)। २ व्याकुलता, खिन्नता (पा ५७५)।
णडुली—कछुआ (दे ४।२०)।
णडुरी—पेंढक (दे ४।२०)।
णडुल—१ रतिक्रीडा। २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे ४।४७)।
णड्डुली—कछुआ (दे ४।२० वृ)।
णण्ण—१ कूप। २ दुर्जन। ३ बडा भाई (दे ४।४६)।
णत्तमाल—वृक्ष की एक जाति (अंवि पृ ६३)।
णत्थक—नासारज्जु (अंवि पृ २०२)।
णत्थण—१ नाथना, नाक में छिद्र करना (दअचू पृ १७८)। २ पशु के नाक में बांधी जाने वाली रस्सी (अंवि पृ २१४)।
णत्था—नासारज्जु (भ ६।१४१; दे ४।१७)। नाथ (राज)।
णदीपुत्तक—जलचर प्राणी-विशेष—'अस्समच्छा णरमच्छा णदीपुत्तका सव्वचरा चेति' (अंवि पृ २२८)।
णदीसुत्तक—जलचर प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२५)।
णदुल्लग—नाट्य—'नदुल्लगं च सिक्खावेंति' (ज्ञा १।३।२७)।
णद्दिअ—दुःखित (दे ४।२०)।
णद्ध—आरूढ (दे ४।१८)।
णद्धंबवय—१ अघृणा। २ निन्दा (दे ४।४७)।
णमसिय—मनौती (दे ४।२२)।

णरिंद—पारे को बांधने वाला—'जो उण बंधइ णिउणो रसं पि सो भण्णइ णरिंदो' (कु पृ १६७)।

णल—मत्स्य की एक जाति—'रोहित-पिचक-णल-मीण-चम्मिराजो' (अंवि पृ २२८)।

णलक—खस का तृण (आवचू १ पृ ३७२)।

णलथंभ—वृक्ष-विशेष—'सुचिरंपि अच्छमाणो नलथंभो उच्छुवाडमज्झंमि। कीस न जायइ महुरो जइ संसग्गी पमाणं ते॥' (आवनि ११११७)।

णलय—खस का तृण (दे ४।१६)।

णलिअ—गृह (दे ४।२०)।

णल्लग—पात्र-विशेष (जंबूटी प १००)।

णल्लय—१ कर्दमित, कीचडवाला। २ बाड का विवर। ३ प्रयोजन। ४ निमित्त (दे ४।४६)।

णवणीइया—गुल्म वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३८।३)।

णवतय—बिना पिंजी हुई ऊन से बना आस्तरण-विशेष (ज्ञा १।१।१८)।

णवय—बिना पिंजी हुई ऊन से बना आस्तरण-विशेष—'अत्थुरणं पाउरणं वा अकत्तिय उन्नाए नवयं कज्जति' (निचू ३ पृ ३२१)।

णवर—१ केवल, सिर्फ (आचूला १।३४)। २ अनन्तर।

णवरं—१ केवल, इसके अतिरिक्त—'एवं जहा महब्बले, नवरं—गोयमो नामेणं' (अंत १।१७)। २ अनन्तर (आवचू १ पृ २४६)।

णवरि—१ केवल (प्र ६।१)। २ अनन्तर (से ११।६८)।

णवरिअ—सहसा, शीघ्र (दे ४।२२)।

णवलय—व्रत-विशेष—'दोलाविलाससमए पुच्छंतीहिं सहीहिं पइणामं। लट्ठीहिं हणिज्जंती बहुया णवलयवयं भरइ॥' (दे ४।२१ वृ)। देखें—'णवलया'।

णवलया—नियम-विशेष, जिसके अनुसार सभी लोग पलाश की लताएं लेकर घूमते हैं तथा विभिन्न स्त्रियों को अपने-अपने पति का नाम पूछते हैं। जो स्त्री अपने पति का नाम नहीं बताती, उसे पलाश की लता से आहत करते हैं—'जत्थ पलासलयाए जणेहि पइणाम पुच्छिआ जुवई। अकहन्ती णिहणिज्जइ णिअभविसेसो णवलया सा।' (दे ४।२१)।

णवसिअ—उपयाचितक, मनौती (दे ४।२२ वृ)।

णवूहक—चित्र-विचित्र रंगों वाला पक्षी (अंवि पृ २२५)।
णवोद्धरण—जूठा, उच्छिष्ट (दे ४।२३)।
णव्व—आयुक्त, गांव का मुखिया (दे ४।१७)।
णव्वाउत्त—१ ईश्वर, धनाढ्य (दे ४।२२)। २ नियोगीपुत्र, सूबेदार का लड़का (वृ)।
णव्वाउत्तय—धनाढ्य (दे ४।२२ वृ)।
णहट्टिका—आसन-विशेष—'भद्दासणं पीढगं वा कट्ठखोडो नहट्टिका' (अंवि पृ १५)।
णहमुह—उल्लू (दे ४।२०)।
णहरणि—नहरणी, नाखून काटने का औजार (बृभा ४०९६)।
णहरणिया—नाखून काटने का साधन-विशेष (आवटि प ८०)।
णहरी—छुरिका (दे ४।२०)।
णहवल्ली—विद्युत् (दे ४।२२)।
णहिया—कुहन-वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।
णाअ—अभिमानी (दे ४।२३)।
णाइ—निषेधार्थक अव्यय, नहीं (भ ३।५०)।
णाइं—निषेधार्थक अव्यय, नहीं (उपा २।४०)।
णाउड्ड—१ सद्भाव। २ अभिप्राय (दे ४।४७)। ३ मनोरथ (वृ)।
णाउल्ल—गोमान्, जिसके पास अनेक गायें हों (दे ४।२३)।
णाणग—रुपया, सिक्का—'ताम्रमयं वा जं णाणगं ववहरति तं दिज्जति' (निचू ३ पृ १११)।
णानिका—नानी, माता की माता (अंवि पृ ६८)।
णामत—पर्वत—'णामतो गिरिको व त्ति तहा पव्वतको त्ति वा' (अंवि पृ ७८)।
णामिण—मत्स्य-जाति-विशेष (अंवि पृ ६३)।
णामुक्कसिअ—कार्य, काम (प्रा २।१७४)।
णामोक्कसिअ—कार्य, काम (दे ४।२५)।
णारुट्ट—कूसार, गर्त्ताकार स्थान (पा ३१६)।
णारोट्ट—१ बिल, विवर (दे ४।२३)। २ कूसार, गर्त्ताकार स्थान (वृ)।
णालंपिअ—आक्रन्दित (दे ४।२४)।
णालंबि—कुंतल, केश (दे ४।२४)।

णालक—भोजन करने का पात्र (अंवि पृ ६५)।
णालिअ—मूढ, मूर्ख (प्रा ४।४२२)।
णालिएर—नारियल (आचूला १।१०४)।
णालिएरी—नारियल (आचूला १।११५)।
णावण—वितरण, दान—'नावण त्ति तस्य दानं' (प्र ३।१२ टी प ५७)।
णावा—प्रसूति, अंजलि—'नावा पसई' (प्रसाटी प २२६)।
णावापूर—चुलुक, चुल्लू—'दोहिं तिहिं वा णावापूरेहिं अच्छि धोवति' (निचू २ पृ २२०)।
णावापूरय—चुल्लू—'नावापूरओ नाम पसती' (बृटी पृ १३३)।
णाहिदाम—चंदोवे के बीच में लटकती हुई माला (दे ४।२४)।
णाहिविच्छेअ—जघन (दे ४।२४)।
णाहीए-विच्छेअ—जघन, कटि के नीचे का भाग (दे ४।२४ वृ)।
णिअंधण—वस्त्र (दे ४।३८)।
णिअंसण—वस्त्र (दे ४।३८)।
णिअक्कल—वर्तुल, गोलाकार (दे ४।३६)।
णिअडि—दम्भ (सू २।२।५८; दे ४।२६)।
णिअत्थ—परिहित, पहना हुआ (दे ४।३३)। देखें—णियत्थ।
णिअय—१ शाश्वत (भ २।१२५; दे ४।४८)। २ मैथुन। ३ शय्या ४ कलश (दे ४।४८)।
णिअरिअ—राशि रूप से स्थित (दे ४।३८)।
णिअल—नूपुर (दे ४।२८)।
णिआणिआ—खराब तृणों का उन्मूलन (दे ४।३५)।
णिआर—शत्रु का घर (दे ४।२६)।
णिइग—प्रतिदिन—'नैतिकं प्रतिदिनमिति यावत्' (प्रटी प १४१)।
णिउक्क—मौनी, तूष्णीक (दे ४।२७)।
णिउक्कण—१ कौवा। २ मूक (दे ४।५१)।
णिउर—१ वृक्ष-विशेष (ज्ञा १।६।२०)। २ कटा हुआ। ३ जीर्ण।
णिओद—१ अनंत जीवों का एक शरीर—'कतिविहा णं भंते ! निओदा पण्णत्ता ?' (भ २५।२७३)। २ कुटुम्ब, समूह—'बावत्तरिं निओदा बीयं बीयमेत्ता बिलवासिणो भविस्संति (भ ७।११६)।
णिंदिणी—खराब तृणों का उत्पाटन (दे ४।३५)।

णिबोलिया—नींबोली, नीम का फल (ज्ञाटी प २०६)।

णिक्क—१ स्वच्छ (ज्ञा १।१।१२५)। २ परिमाण—'कायगमासज्ज तहा, कुत्तियमुल्लस्स णिक्कं ति' (बृभा ४२१६)।

णिक्कइला—जीता हुआ (दे १।४ वृ)।

णिक्कइल्ला—जीता हुआ (दे १।४ वृ)।

णिक्कज्ज—अनवस्थित, चंचल (दे ४।३३)।

णिक्कड—१ कठिन (प्रटी प ६७; दे ४।२६)। २ निश्चय।

णिक्कल—सघन, पोलेपन से रहित—'निम्मलं निक्तलं निक्कलं····मणिरयणं' (भ १५।९१)।

णिक्का—१ जलमार्ग—'णिक्का सारणी वा पाणियाहारिपंथो' (आचू पृ ३६६)। २ नाली—'कद्दम बहुलं पाणीयं सेओ भण्णति, तस्स आययणं णिक्का' (निचू २ पृ २२६)। ३ वाम नासिका।

णिक्काणित—नाक की आवाज (अंवि पृ १८१)।

णिक्कार—अधम जाति-विशेष (पंक ५०१)।

णिक्काल—बाहर निकालने वाला—'रिउजीवियनिक्कालं हत्थि' (ति ३०१)।

णिक्कूइला—जीता हुआ (दे १।४ वृ)।

णिक्केतिज्जंती—प्रसव करती हुई—'तं ओव्वरए पवेसेऊणं णिक्केतिज्जंतीए अप्पसागारियनिमित्तं सयं चेट्ठति' (दअचू पृ ५०,५१)।

णिक्कोरण—पात्र आदि के मुख का अपनयन—'मुहस्स अवणयणं णिक्कोरणं' (निचू ३ पृ ४७२)।

णिक्ख—१ चोर। २ कांचन, स्वर्ण (दे ४।४७)।

णिक्खय—निहत, मारा हुआ (दे ४।३२)।

णिक्खसरिअ—मुषित, अपहृतसार, जो लूट लिया गया हो वह (दे ४।४१)।

णिक्खड—१ अकम्प (दे ४।२८)। २ बिल—'पइसंति णिक्खुडेसुं संकड-कुडिलेसु दुक्खेण' (कु पृ ३६)। ३ गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)। ४ भूमि-खंड (आचू १ पृ १९९)।

णिक्खुरिअ—अस्थिर (दे ४।४०)।

णिगढ—गरमी, घाम (दे ४।२७)।

णिगोद—१ अनन्त जीवों का एक शरीर (भ २५।२७४)। २ समूह, पिण्ड, कुटुंब—'निगोदा कुटुंबानि' (भटी प ३०९)।

णिग्गा—हल्दी, हरिद्रा (दे ४।२५)।

णिग्गिण्ण—१ बाहर निकला हुआ (दे ४।३६)। २ वान्त, वमन किया हुआ (से ५।२६)।

णिग्घट्ट—कुशल (दे ४।३४)।

णिग्घत्तिय—क्षिप्त, फेंका हुआ (पा ५४५)।

णिग्घोर—निर्दय (दे ४।३७)।

णिग्घोलिय—खाली किया हुआ—'णिग्घोलियं च पल्लं' निघोलितं—रिक्तीकृतम्' (बृभा ३३९९ टी पृ ९५०)।

णिच्चुड्ड—१ निर्दय (पा १२५)। २ बाहर निकला हुआ।

णिच्छ—योग्य (?) (आचू पृ ३७०)।

णिच्छक्क—१ निर्लज्ज (बृभा २२५६)। २ अवसर को नहीं जानने वाला, असमयज्ञ।

णिच्छुंड—निर्दय (दे ४।३७)।

णिच्छूढ—निष्कासित (उशाटी प १६९)।

णिच्छोलित—छीला हुआ, छाल उतारा हुआ (अंवि पृ १७१)।

णिज्ज—सुप्त, सोया हुआ (दे ४।२५)।

णिज्जाअ—उपकार (दे ४।३४)।

णिज्जूह—१ द्वार के ऊपर बाहर निकला हुआ काष्ठ-विशेष (प्र १।१८)। २ गवाक्ष (व्यभा ३ टी प ६३)। ३ नीव्र, गृहाच्छादन (दे ४।२८)। ४ द्वार।

णिज्जूहअ—द्वार का किनारा (कु पृ ६७)।

णिज्जोअ—१ राशि, ढेर (दे ४।३३)। २ पुष्पों का ढेर (वृ)।

णिज्जोमि—रज्जू, रस्सी (दे ४।३१)।

णिज्जोय—सामग्री, परिकर—'एगाभरणवसणगहियनिज्जोया' (भ ९।२०२)।

णिज्झर—जीर्ण (दे ४।२६)।

णिज्झाअ—निर्दय (दे ४।३७)।

णिज्झूर—जीर्ण (दे ४।२६ वृ)।

णिट्टंक—१ पर्वत से छिन्न भाग। २ विषम (दे ४।५०)।

णिट्टुइय—क्षरित, टपका हुआ (पा १३९)।

णिट्ठुहण—थूक—'निट्ठुहणेण घसिऊण कणयवन्ना कया अंगुली दंसिया' (उसुटी प २४२)।

णिट्ठुहिअ—निष्ठीवन, थूक (दे ४।४१)।

णिट्ठुढ—निष्ठ्यूत (दअचू पृ २२)।
णिट्ठह—स्तब्ध (दे ४।३३)।
णिड—राक्षस (दे ४।२५)।
णिड्डील—निलीन (?) (अंवि पृ १६६)।
णिण्णार—नगर से निष्कासित—'सो पच्छा रण्णा पडिहओ, णिण्णारो य कओ, अण्णहिं नगरे एवं चेव करेइ'। (अनुद्वाहाटी पृ १८)।
णिण्णाला—चञ्चु (दे ४।३६)।
णितण्णिक—पुष्प-जाति-विशेष (अंवि पृ ७०)।
णितरिंगी—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।
णित्त—स्त्री-योनि (बृभा २०७५)।
णित्तिरडि—निरन्तर (दे ४।४०)।
णित्तिरडिअ—त्रुटित, टूटा हुआ (दे ४।४१)।
णित्तुण्ण—बिना चुपड़ा या बिना बघारा हुआ (बृभा १७०६)।
णित्थक्क—१ निर्लज्ज—'णित्थक्को णिल्लज्जो भवति' (निचू ४ पृ ४४)। २ अचानक (ज्ञाटी प १७५)।
णित्थरभल्ल—अस्त्र-विशेष, साधन-विशेष—'णित्थरभल्लेण णहादिणा वा खयं करेज्ज' (निचू ४ पृ १७८)।
णिदा—१ जानकर, प्राप्तकर—'खणं णिदाए पविसिस्सामि' (सू २।४।४)। २ ज्ञानयुक्त वेदना (समप्र १७२।१)।
णिदाय—ज्ञानयुक्त (भटी पृ १४१७)।
णिदोच्च—१ भय का अभाव। २ संघर्ष का उपशमन। ३ स्वास्थ्य (व्यभा ६ टी प ५१)।
णिद्दार—कणिका, टुकड़ा (आवहाटी २ पृ २४३)।
णिद्धअ—अविभिन्नगृह, एक ही घर में रहने वाला (दे ४।३८)।
णिद्धंधस—१ अकृत्यसेवी—'णिद्धंधसो देशीवचनमेतत् अकृत्यं प्रतिसेवमानः' (व्यभा १ टी प १२)। २ निर्दय (दे ४।३७)। ३ निर्लज्ज।
णिद्धंस—निर्लज्ज, दुष्ट (आचू पृ ६५)।
णिद्धम—एक ही घर में रहने वाला (दे ४।३८)।
णिद्धमण—नाली (स्था ५।२१; दे ४।३६)।
णिद्धमाअ—एक ही घर में रहने वाला (दे ४।३८)।
णिद्धम्म—एक तरफ जाने वाला (दे ४।३५)।

णिप्पट्ठ—अधिक (दे ४।३१)।

णिप्पिच्छ—१ ऋजु। २ दृढ (दे ४।४९)।

णिप्फरिस—निर्दय (दे ४।३७)।

णिप्फेस—शब्द-निर्गम, आवाज निकलना (दे ४।२९)।

णिबुक्क—निर्मूल (प्रटी प ४९)।

णिब्भग्ग—उद्यान (दे ४।३४)।

णिब्भुग्ग—खण्डित, भग्न (दे ४।३२)।

णिब्भेरिय—प्रसारित, विस्फारित—'णिब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते (उ १२।२९)।

णिभेलण—घर, गृह (दश्रु ८।२९)।

णिमिय—१ निवेशित (से ६।७६)। २ आघ्रात, सूंघा हुआ।

णिमेण—स्थान (दे ४।३७)।

णिमेल—दांत का मांस (दे ४।३०)।

णिमेला—दांत का मांस (दे ४।३० वृ)।

णिम्मअ—गत, गया हुआ (दे ४।३४)।

णिम्मंसा—चामुण्डा देवी (दे ४।३५)।

णिम्मंसु—तरुण (दे ४।३२)।

णियंसण—१ परिधान, वस्त्र (राज ६९; दे ४।३८)। २ उपभोग्य (बृभा ६४४)।

णियंसणिय—१ पहनने का वस्त्र (निचू ३ पृ ५७८)। २ उपभोग्य (बृभा ६४५)।

णियंसणी—वस्त्र—'अंतो णियंसणी पुण लीणा कडि जाव अद्धजंघातो' (निभा १४०३)।

णियत्थ—१ परिहित, पहना हुआ—'खोमयवत्थणियत्थो' (आचूला १५।२८।९; दे ४।३३)। २ उत्तरीय वस्त्र—'दुहओ संवेल्लियग्गणियत्थाणं' (राज ६९)। ३ परिधापित, जिसे वस्त्र पहनाया गया हो वह—'संपत्थिया नियत्था तो गणियाए पुणो मुयइ' (विभा २६०७)।

णियल—नूपुर (आवचू १ पृ २५५)।

णियल्ल—महाग्रह-विशेष (स्था २।३२५)।

णियल्लय—निकट का (उसुटी प १३३)।

णिरंगी—घूंघट (दे ४।३१)।

णिरक्क—१ चोर। २ स्थित। ३ पीठ (दे ४।४६)।

णिरग्घ—१ पीठ। २ उद्वेष्टित (दे ४।४६)।

णिरद्दन्न—आश्वस्त—'अच्छह निरद्दन्नाओ' (आवचू १ पृ ८८)।

णिरप्प—१ पीठ। २ उद्वेष्टित (दे ४।४६)।

णिरागति—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

णिराद—विनष्ट (दे ४।३०)।

णिराय—१ अत्यंत, प्रचुर (आवचू १ पृ ३१२)। २ सरल। ३ प्रकट। ४ शत्रु (दे ४।५०)। ५ लम्बा किया हुआ (से २।४०)। ६ निरंतर—'पिया य से रण्णो निरायं अच्छिओ' (आवहाटी २ पृ १४७)।

णिराह—निर्दय (दे ४।३७)।

णिरिअ—अविशेषित, साधारण (दे ४।२८)।

णिरिक—नत, झुका हुआ (दे ४।३०)।

णिरिक्क—१ चोर। २ स्थित। ३ पीठ (दे ४।४६)।

णिरित्ता—बुझाकर—'सए गेहे पलित्तम्मि किं धावसि परातकं। सयं गेहं णिरित्ताणं ततो गच्छे परातकं।' (इ ३५।१४)।

णिरुत्त—१ निश्चित (दे ४।३०)। २ निश्चिन्त।

णिरुलि—कुम्भीर, मगर की आकृतिवाला ग्राह-विशेष (दे ४।२७)।

णिरुवक्कय—नहीं किया हुआ (दे ४।४१)।

णिरे—पृष्ठतः, पीछे—'निरे इति पृष्ठतः' (सूचू १ पृ १६८)।

णिलंक—पतद्ग्रह, पात्र (दे ४।३१)।

णिलंजन—करण, करना—'निलंजनं नाम करणं' (सूचू १ पृ १२०)।

णिलुक्क—१ प्रच्छन्न, छिपा हुआ (भ १५।१०२)। २ विरत, अनासक्त—'खिप्पामेव निलुक्को जाहे पडिवज्जइ चरित्तं'। 'निलुक्को त्ति देशीवचनमेतत् विरत इत्यर्थः' (आवमटी प २६६)। ३ लीन, आसक्त।

णिलुक्कण—छुपना (निचू १ पृ १०४)।

णिल्लंक—पतद्ग्रह, पात्र (दे ४।३१)।

णिल्लसिअ—निर्गत, निःसृत (दे ४।३६)।

णिल्लूहित—मांजा हुआ (अंवि पृ १७६)।

णिवच्छण—अवतारण, उतारना (दे ४।४०)।

णिवह—समृद्धि (दे ४।२६)।
णिवाअ—स्वेद, पसीना (दे ४।३४)।
णिवारेज्ज—विवाह (अनुद्वाहाटी पृ ७०)।
णिविद्ध—१ सोकर उठा हुआ। २ निराश। ३ उद्भट। ४ नृशंस, निर्दय (दे ४।४८)।
णिवुक्क—निर्मूल—'निवुक्कच्छिन्नधयभग्गरहवर' (प्र ३।५)।
णिवुर—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।
णिव्व—१ ककुद, थूभ। २ बहाना (दे ४।४८)।
णिव्वडिय—१ पृथक्भूत (से ६।८८)। २ स्पष्टीभूत।
णिव्वढ—नग्न (दे ४।२८)।
णिव्वमिअ—परिभुक्त (दे ४।३९)।
णिव्वर—१ निष्प्रकंप, अचल (अंवि पृ ७९)। २ भग्न (अंवि पृ १५५)।
णिव्वलण—१ प्रमोद—'निर्वलनार्थं प्रमोदार्थम्'। २ स्फेटन, दूर करना—'निर्वलनं स्फेटनम्' (व्यभा ४।२ टी प ८१)।
णिव्वलिअ—१ पानी से धोया हुआ। २ प्रविगणित। ३ विघटित (दे ४।५१)।
णिव्वलित—१ पानी से धोया हुआ। २ वियुक्त (विभा १३२०)।
णिव्वलीय—विघटित, वियुक्त (बृभा १०९)।
णिव्वहण—विवाह (दे ४।३९)।
णिव्वाण—दुःख-कथन (दे ४।३३)।
णिव्विट्ठ—उचित (दे ४।३४)।
णिव्वित्त—सो कर उठा हुआ (दे ४।३२)।
णिव्वूढ—१ घर का पिछला भाग (दे ४।२९)। २ स्तब्ध (दे ४।३३)।
णिव्वेढ—नग्न (दे ४।२८)।
णिव्वेरिस—१ निर्दय (दे ४।३७)। २ अत्यर्थ, प्रचुर (वृ)।
णिव्वोल्लिय—क्रोधयुक्त—'णिव्वोल्लिएण वयणेणं' (कु पृ १८७)।
णिस—१ प्रचुर, अत्यन्त—'णिस भोच्चा पादोसियं ण करेंति' (निचू ३ पृ ८३)। २ अन्धकार (सूटी १ प १२८)।
णिसका—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।
णिसट्ठ—प्रचुर (बृटी पृ १०८)।
णिसट्ठ—१ बद्धुत (ओनि ८७)। २ निर्लज्ज (बृभा ३४९३)।

णिसड्ढ—निश्चित, निःशंक—'तुमं जति सगणं ण सारेसि तो अम्ह णिसड्ढं चेव अण्णं आयरिअं पडिवज्जामो' (निचू ३ पृ ११)।

णिसत्त—संतुष्ट (दे ४।३०)।

णिसामिअ—श्रुत, सुना हुआ (दे ४।२७)।

णिसाय—सुप्त, प्रसुप्त, भली भांति सोया हुआ (दे ४।३५)।

णिसुअ—श्रुत, सुना हुआ (दे ४।२७)।

णिसुट्ट—निपातित (प्रा ४।२५८)।

णिसुट्ठिय—निपातित, गिराया हुआ (से १०।३६)।

णिसुढिअ—नत, भार से नमा हुआ (पा ५६६)।

णिसुद्ध—गिराया हुआ (दे ४।३६)।

णिस्संक—निर्भर (दे ४।३२)।

णिस्सरण—फिसलन—'निस्सरणं नाम फेल्हसणं' (व्यभा ४।४ टी प ६)।

णिस्सरिअ—खिसका हुआ (दे ४।४०)।

णिस्साण—१ अपवाद (बृभा ७७१)। २ वाद्य-विशेष।

णिहण—कूल, किनारा (दे ४।२३)।

णिहत्तण—निधत्त, कर्म की एक अवस्था (भ १।२४।१)।

णिहर—किनारा, कूल (दे ४।२७)।

णिहस—वल्मीक (दे ४।२५)।

णिहाअ—१ स्वेद, पसीना। २ समूह (दे ४।४६)।

णिहिल्लय—गाडा हुआ (उसुटी प ५२)।

णिहुअ—१ अप्रवृत्त, निश्चेष्ट (व्यभा ४।३ टी प ६५; दे ४।५०)। २ तूष्णीक, मौन। ३ रति-क्रीड़ा (दे ४।५०)।

णिहुआ—कामिता स्त्री, मैथुन के लिए प्रार्थित स्त्री (दे ४।२६)।

णिहुण—व्यापार (दे ४।२६)।

णिहुत—१ निष्क्रिय—'णिहुता य जुद्धकाले, ण वुग्गहो णेव सज्झाओ' (निभा २३८३)। २ उन्मत्त, पागल—'णिहुतो त्ति णग्गायते पलवति णच्चइ वा' (निचू ४ पृ २२१)। ३ निमग्न।

णिहुत्थिभगा—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३५)।

णिहुय—१ निष्क्रिय—'णिक्कारणे वा सकप्पकंबलीए पाउया णिहुया सव्वब्भंतरे चिट्ठंति' (निचू ४ पृ २३१)। २ थूहर का फूल (प्रज्ञाटी प ३७)।

णिहूय—१ अकिंचित्कर—'निहूयं ति देशीवचनं अकिञ्चित्करार्थे' (आवहाटी १ पृ २१७)। २ अपलाप—'निहूय त्ति आर्षत्वात् निह्नुतम्' (आवमटी प ४२७)। ३ मैथुन (दे ४।२६)।

णिहेलण—१ गृह, घर। २ जघन, स्त्री की कटि के नीचे का भाग (दे ४।५१)।

णिहेल्लय—निहित, गडा हुआ—'भूमीए दव्वं निहेल्लयं' (उशाटी प १३०)।

णीआरण—बलि रखने का छोटा कलश (दे ४।४३)।

णीणिय—१ चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)। २ गत, गया हुआ (पा ५०६)।

णीपुर—द्वीन्द्रिय प्राणी-विशेष (अंवि पृ २६६)।

णीरंगी—घूंघट (दे ४।३१)।

णीराणिका—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २४३)।

णीलकंठी—बाण-वृक्ष (दे ४।४२)।

णीसंपाय—वह समय जब पूरा जनपद परिश्रान्त हो गया हो, हलचल बंद हो गई हो (दे ४।४२)।

णीसट्ठ—अत्यर्थ, अत्यन्त (बृभा ६११५)।

णीसणिआ—निःश्रेणी, सीढी (दे ४।४३)।

णीसणी—सीढी, निःश्रेणी (दे ४।४३ वृ)।

णीसरण—फिसलन (व्यभा ४।४ टी प ६)।

णीसा—पीसने का पत्थर—'णीसा वा पीसणी' (द ५।१।४५)।

णीसार—मण्डप (दे ४।४१)।

णीसीमिअ—निर्वासित, देश-बाहर किया हुआ (दे ४।४२)।

णीहरिअ—शब्द (दे ४।४२)।

णीहुज्ज—अप्रवृत्त, निश्चेष्ट (व्यभा ४।३ टी प ६५)।

णीहू—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

णीहूत—अकिञ्चित्कर (विभा ३१००)।

णीहूय—अकिंचित्कर—'नीहूयाणं इति देशयुक्त्या प्रवचनक्रियास्वकिञ्चित्कराणां' (आवदी प १४६)।

णुत्तमालक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ १४१)।

णुवण्ण—सुप्त (दे ४।२५)।

णूम—१ प्रच्छन्न स्थान, गुफा आदि (भ १।३६४)। २ प्रच्छादन, असत्य का एक पर्याय (प्र २।२)। ३ माया। ४ कर्म—'नूमं ति कर्म माया वा' (आटी प २६५)। ५ दूसरे को ठगने के लिए प्रच्छन्न स्थान में छुपना (भटी प १०५२)। ६ अन्धकार।

णूमगिह—भूमिगृह, भौंहरा (आचूला ३।४७)।

णूमण—गोपन, छिपाना—'गूहण गोवण णूमण पलियंचणमेव एगट्ठं' (जीभा १७७४)।

णूमि—गोपित (से १।३२)।

णूमिय—१ छिपाया हुआ—'सो वत्थं णूमियं' (निचू १ पृ १११)। २ आच्छादित (उशाटी प ११५)।

णूला—शाखा (दे ४।४३)।

णेउड्ड—सद्भाव (दे ४।४४)।

णेउर—१ द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।४६)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

णेक्कार—चांडाल विशेष—'जुगुच्छितो कोलिगजातिभेदो णेक्कारो' (निचू ३ पृ २७०)।

णेडाली—सिर का भूषण-विशेष (दे ४।३३)।

णेड्ड—घर (आवहाटी १ पृ २६४)।

णेड्डुय—नीड, घोसला (आवमटी प ३४५)।

णेडुरिआ—भाद्रव शुक्ला दसमी का उत्सव-विशेष (दे ४।४५)।

णेत्तपट्ट—रंगीन रेशम का वस्त्र जो चीन से भारत में आता था—'अहं चीण-महाचीणेसु गओ····तत्थ गंगावडिओ णेत्तपट्टाइयं घेत्तूण लद्धलाभो णियत्तोत्ति' (कु पृ ६६)।

णेम—कार्य—'जह कारणं तु तंतू पडस्स तेसिं च होंति पम्हाइं।
नाणाइतिगस्सेवं आहारो मोक्खनेमस्स॥
'नेमशब्दो देश्यः कार्यवाची' (पिनि ७० टी प १६)।

णेम्म—१ सदृश, तुल्य (प्र ६।१)। २ चिह्न, उपलक्षण (बृभा १७५५)।

णेरित—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

णेलक—सिक्का, रुपया—'काञ्चीनगर्याः सम्बन्धी नेलको रूपक इत्यर्थः' (प्रसाटी प २३३)।

णेलकता—रंगीन मिट्टी, पुताई करने की मिट्टी—'सुधा-सेडिका पलेपको णेलकता' (अंवि पृ २३३)।

णेलच्छ—नपुंसक (दे ४।४४)।
णेलय—रुपया (निभा ६५६)।
णेलिच्छी—कूपतुला (दे ४।४४)।
णेल्लक—सुरा-विशेष (जीवटी प २६५)।
णेवच्छ—अवतारण (नंदीचू पृ २७)।
णेवच्छण—अवतारण, नीचे उतारना (दे ४।४०)।
णेसत्थि—वणिक्-प्रधान (दे ४।४४)।
णेसत्थिय—वणिक्-प्रधान, व्यापारी (निचू ३ पृ १०६)।
णेसत्थिया—निक्षेपण से होने वाला कर्मबंध (स्था २।२६)।
णेसर—रवि (दे ४।४४)।
णोमि—रस्सी, डोर (दे ४।३१)।
णोलइसा—चञ्चु (दे ४।३६)।
णोलच्छा—चञ्चु (दे ४।३६)।
णोल्लण—संस्पर्श (निचू २ पृ २५६)।
णोव्व—आयुक्त, गांव-प्रधान (दे ४।१७)।
ण्हं—पादपूर्ति में प्रयुक्त होने वाला अव्यय—'ण्हमिति निपातः पूरणार्थो वर्तते' (आवमटी प २४४)।
ण्होरय—कृतज्ञता (प्रसा १६२)।

त

तउसमिंजग—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१३८)।
तउसमिंजिया—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।
तंजतण—वृक्ष-विशेष (आचू पृ ३७०)।
तंट—पीठ (दे ५।१)।
तंड—१ लगाम में लगी हुई लार। २ मस्तक-विहीन। ३ तेज स्वर (दे ५।१६)।
तंडी—दुष्ट घोड़ा—'तंडीति वा गलीति वा मरालीति वा एगट्ठा' (उचू पृ ३०)।

तंत—आसन-विशेष (अंवि पृ १५)।

तंतडी—करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष (दे ५।४)।

तंतव—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

तंतुक्खोडी—तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५।७)।

तंतुय—जलजंतु-विशेष, मगरमच्छ (?)—'सेतणओ गंधहत्थी णदीए तंतुएण गहितो' (आवहाटी १ पृ २३७)।

तंदूसय—क्रीडा-विशेष। देखें-तेंदूसय (आवचू १ पृ २४६)।

तंबकरोडय—ताम्रवर्ण का द्रव्य-विशेष (प्रज्ञा १७।१२५)।

तंबकिमि—कीट-विशेष, इन्द्रगोप (दे ५।६)।

तंबकुसुम—कटसरैया का वृक्ष, ताम्ररक्त पुष्पों वाला वृक्ष (दे ५।६)।

तंबछिवाडिया—ताम्रवर्ण का द्रव्य-विशेष (प्रज्ञा १७।१२५)।

तंबटक्कारी—शेफालिका, पुष्प-प्रधान लता-विशेष (दे ५।४)।

तंबरत्ती—गेहूं का ताम्ररक्त वर्ण (दे ५।५)।

तंबा—गाय (दे ५।१)।

तंबिरा—गेहूं का ताम्ररक्त वर्ण (दे ५।५)।

तंबेही—शेफालिका, पुष्पप्रधान वृक्ष-विशेष (दे ५।४)।

तंबोल—मुखवास की वस्तुएं, जैसे—इलायची, लवंग, सुपारी, कपूर आदि (उपा १।२६)।

तक्कणा—इच्छा, अभिलाषा (बृभा २०७४; दे ५।४)।

तक्कलि—१ वलयाकार वृक्ष-विशेष (भ ८।२१७)। २ कदली वृक्ष, केले का गाछ (आचूला १।११५)।

तक्कुलि—१ पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)। २ खाद्य-विशेष (अंवि पृ १७६)।

तग्ग—सूत का कंकण (दे ५।१)—'तग्गं च सूत्रकङ्कणम्' (वृ)।

तच्चणित—बौद्ध भिक्षु (पंक ३३१)।

तच्चणिय—बौद्ध भिक्षु (जीभा १३६७)।

तच्चन्निय—बौद्ध भिक्षु (आवचू १ पृ ८५)।

तच्छिड—भयंकर (दे ५।३)।

तट्टक—थाल—'तट्टकं सरकं थालं' (अंवि पृ ६५)। तट्टे (कन्नड़)।

तट्टिका—१ बाड़ (भटी पृ ६६१)। २ दिगंबर जैन साधु का उपकरण-विशेष।

तट्टी—वृति, बाड़ (दे ५।१)।

तडउडा—वृक्ष-विशेष, आउली का वृक्ष (जंबूटी प ३४)।

तडप्फड—व्याकुलता, छटपटाहट (निचू २ पृ ७५)।

तडफडिअ—चारों ओर से प्रकम्पित, तडफड़ाया हुआ, आकुल-व्याकुल (दे ५।९)—'तुह विरहे तीइ इत्थ तडफडिअं' (वृ)।

तडमड—क्षोभ-प्राप्त, क्षुब्ध (दे ५।७)।

तडवडा—वृक्ष-विशेष, आउली का पेड़ (राज २८; दे ५।५)।

तडिअ—बद्ध—'गणेऊण गंठी तडिओ, तओ न तीरइ सिव्वेउं' (आवहाटी १ पृ २८१)।

तडिग—जूता (ओटी प ३४)।

तडिण—विरल, तुच्छ (से १३।५०)।

तडिम—१ भीत। २ कुट्टिम, पाषाण से बंधा हुआ भूमितल (से २।२)। ३ द्वार के ऊपर का भाग (से १२।९०)।

तडिय—बागवान्, मालाकार—'तत्थ कुंभो पुप्फाण उट्ठेइ, तत्थ भगवतो पितिमित्तो तडिओ' (आवहाटी १ पृ १९७)।

तडुविअ—विस्तृत (पा ५२१)।

तडुविय—विस्तीर्ण—'आमुंच सुपट्टिकेसम्मि तडुविय-सिहंडि-कलाव-सच्छहं केसभारं' (कु पृ २५)।

तण—कमल (दे ५।१)।

तणतण—गर्जन (आवमटी प १६९)।

तणय—संबंधी (प्रा ४।३६१)।

तणयमुद्दिआ—अंगूठी (दे ५।९)।

तणरासि—फैलाया हुआ (दे ५।६)।

तणरासिअ—प्रसृत, फैलाया हुआ (दे ५।६ वृ)।

तणवरंडी—छोटी नौका (दे ५।७)।

तणसोल्लि—पुष्प-प्रधान वृक्ष, मल्लिका (दे ५।६)।

तणसोल्लिया—मल्लिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (ज्ञा १।१६।२५६)।

तणेसी—तृण-राशि (दे ५।३)।

तण्ण—आर्द्र (से १।३१)।

तण्णाय—गीला, आर्द्र (दे ५।२)।

तत्तडिय—रंगा हुआ वस्त्र—'तत्तडियाणं च तह य परिभोगो' (ग ८९)।

तत्ति—१ चिन्ता–'कुतत्तीहिं विहम्मइ' (दचूला १।७)। २ प्रवृत्ति–'भिक्षा-सज्झायमुक्कतत्तीया, तप्तिः—व्यापारः' (बृभा २४५६)। ३ आदेश। ४ तत्परता (दे ५।२०)। ५ दोष–'परतत्तितग्गओ जणो' (कु पृ १२७)।

तत्तिल्ल—१ तत्पर–'तत्तिल्लशब्दः तत्परवाची देश्यः तत्तिल्लो तल्लिच्छो य तत्परे' (राजटी पृ १०५; दे ५।३)। २ दक्ष–'तत्तिल्लो विहिराया जाणति दूरेवि जो जहिं वसइ। जं जस्स होइ सरिसं, तं तस्स बिइज्जयं देइ॥' (आवहाटी १ पृ १४१)

तत्तुडिल्ल—संभोग, मैथुन (दे ५।६)।

तद्दिअचय—नृत्य (दे ५।८)।

तद्दिअस—प्रतिदिन (दे ५।८)।

तद्दिअसिअ—प्रतिदिन (दे ५।८ वृ)।

तद्दिअह—प्रतिदिन (दे ५।८ वृ)।

तद्दिवस—प्रतिदिन (बृभा १६०५)।

तपुस—क्षुद्रकीट, श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

तपुसेल्लालुक—एक प्रकार का फल (अंवि पृ ६४)।

तप्पक—डोंगी (अंवि पृ १६६)।

तप्पण—१ सक्तु, सत्तु (प्र १०।६)। २ भाजन या उपकरण-विशेष (अंवि पृ १६१)। ३ तुष (अंवि पृ १०६)।

तप्पणाडुगालिया—सक्तुप्रधान भोजन (दअचू पृ २८)।

तप्पणादुयालिता—१ सक्तुमिश्रित भोजन। २ भोजन-विशेष–'तप्पणादुयालिता भोजन-विशेषः, सक्तुप्रधानं वा भोजनम्' (दअचू पृ २८)।

तप्पोसणिया—आच्छादन-विशेष (आचू पृ ३४७)।

तम—शोक (दे ५।१)।

तमण—चूल्हा (दे ५।२)।

तमणि—१ भुजा, बाहु। २ भूर्ज, भोजपत्र, वृक्ष-विशेष की छाल (दे ५।२०)।

तर—मलाई–'सतरं दधि अन्वेषमाणस्तरग्रहितं चागृह्णन्' (ओटी प ४८)।

तरपअट्ट—शिल्पी-विशेष (अंवि पृ १६०)।

तरमल्लिहायण—युवा–'तरो-वेगो बलं तथा मल्ल–धारणे ततश्च तरोमल्ली तरोधारको वेगधारको हायनः–संवत्सरो वर्तते येषां ते तरोमल्लिहायनाः—यौवनवन्त इत्यर्थः' (भटी पृ ८८१)।

तरवच्छ—शस्त्र-विशेष (अंवि पृ ११५)।

तरवट्ट—वृक्ष-विशेष, चकवाड, पमार (दे ५।५)।

तरस—मांस (दे ५।४)।

तरिअव्व—उडुप, नौका (दे ५।७)।

तरुणरहस—राग-रागिनियां—'जुण्णमएहिं विहूणं जं जूहं होइ सुट्ठुवि महल्लं।
तं तरुणरहसपोइयमयगुम्मइयं सुहं हंसुं॥' (ओनि १४०)।

तल—१ गांव का मुखिया, ग्रामेश। २ शय्या (दे ५।१६)।

तलऊडा—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३।७३)।

तलंगणी—खाद्यपदार्थ-विशेष (ओटी पृ ३६८)।

तलकोड—गुल्म-विशेष (अंवि पृ ६३)।

तलपत्तक—कान का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ११६)।

तलप्फल—शालि, व्रीहि (दे ५।७)।

तलभ—हाथ का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६५)।

तलयागत्ति—कूप, कुआं—'तलयागत्ति वच्चइ णिसि····' (दे ५।८)।

तलवत्त—१ कान का आभूषण-विशेष। २ वरांग, उत्तमांग, शिर (दे ५।२१)।

तलवर—१ नगर-रक्षक, कोतवाल—'राइणा तुट्ठेण चामीकरपट्टो रयणखइतो सिरसि बद्धो यस्स सो तलवरो भण्णति' (अनुद्धाचू पृ ११)।
२ राजा के सदृश सम्मान-प्राप्त व्यक्ति—'रायप्रतिमो चामरविरहितो तलवरो भण्णति' (निचू २ पृ ४५०)।

तलवरी—कोतवाल की पत्नी (अंवि पृ ६८)।

तलसारिअ—१ छना हुआ, शुद्ध (दे ५।६)। २ भोला, मूर्ख—'अन्ये तु तलसारिअं नालिक इति पठन्तस्तलसारिअं मुग्धमाचक्षते' (वृ)।

तला—कृमि-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तलार—नगर-आरक्षक (दे ५।३)।

तलाहण—खाद्य-विशेष (निचू ४ पृ २५६]।

तलाहतिया—खाद्य-विशेष—'तलाहतियातो आवणातो आणिति' (दशचू प ६६)।

तलिका—१ पात्र-विशेष (दअचू पृ १५३)। तलिगे—थाली (कन्नड़)।
२ प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

तलिगा—एक तले वाला जूता (प्रज्ञा ६७६)।

तलिम—१ शय्यागृह, वासभवन—'परिणीया, तलिमे भत्तारस्स सब्भावो कहितो' (दअचू पृ २३; दे ५।२०)। २ शय्या (ज्ञा १।१६।५५; दे ५।२०)। ३ फरस-बन्द जमीन। ४ भूनने का भाजन। ५ घर के ऊपर की भूमी (दे ५।२०)।

तलिमा—वाद्य-विशेष (भटी पृ ८८३)।

तलिय—आसन-विशेष (अंवि पृ ६५)।

तलिया—१ पात्र-विशेष—'अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ' (भ ११।१५६)। २ जूता (बृभा २८८३)।

तल्ल—१ छोटा तालाब। २ 'बरु' नाम का तृण। ३ शय्या (दे ५।१६)।

तल्लकट्ट—(तलवत्त ?)—मस्तक, सिर (जीविप पृ ५४)।

तल्लग—सुरा-विशेष (जंबूटी प ६६)।

तल्लड—शय्या, बिछौना (दे ५।२)।

तल्लिच्छ—तत्पर, तल्लीन (ज्ञा १।२।११; दे ५।३)।

तवअ—व्यापृत, प्रवृत्त (दे ५।२)।

तवणी—१ पकाने का पात्र, तवा (ओटी प ६६)। २ भक्षणयोग्य कण (दे ५।१)। ३ धान्य को क्षेत्र से काटकर भक्षणयोग्य बनाने की क्रिया।

तवप्प—संन्यासी का एक उपकरण (आवचू १ पृ ४७१)।

तव्वणिय—बौद्ध, बुद्धदर्शन का अनुयायी—'तव्वणियाण विय विसयसुहकुसत्थ-भावणाधणियं (विसे १०४१)।

तसिअ—शुष्क (दे ५।२)।

तहरी—पंकवाली सुरा (दे ५।२)।

तहल्लिआ—गोवाट, गायों का बाडा (दे ५।८)।

ताइय—पारस या अरब देश के व्यापारी (कु पृ १५३)।

ताज्जिक—पारस या अरब देश के व्यापारी (कु पृ १५३)।

ताडक—भूमीगत बिल में रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

ताडिअय—रोदन (दे ५।१०)।

तामर—सुन्दर, रम्य (दे ५।१०)।

तामरस—जल में पैदा होने वाला फूल (प्रज्ञा १।४६; दे ५।१०)।

तारत्तर—मुहूर्त्त (दे ५।१०)।

तालप्फली—दासी, चेटिका (दे ५।११)।

तालफली—दासी (दे ५।११ वृ)।

तालहल—शालि, व्रीहि (दे ५।७)।

ताला—लाजा, खोई, धान का लावा (दे ५।१०)।

तालुक—तालाब का जल (अंवि पृ २६६)।

तालूर—१ फेन। २ कपित्थ-वृक्ष (दे ५।२१)। ३ पानी का आवर्त्त (वृ)। ४ पुष्प का सत्त्व।

ताहे—तदा, तब (उशाटी प १४८)।

तिउड—कलाप, मोर-पिच्छ (पा ६४६)।

तिउडग—१ धान्य-विशेष, मोठ (दनि १५६)। २ लौंग, लवंग।

तिउल—मन, वचन और काया को पीड़ा पहुंचाने वाला—'उदयपत्ते उज्जल-बल-विउल-तिउल-कक्खड-पगाढ-दुक्खे' (प्र १०।६)।

तिउल्लिका—वाद्य-विशेष (नंदीटि पृ ६६)।

तिगिआ—कमलरज (दे ५।१२)।

तिगिच्छिक—गले का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६५)।

तिगिछि—१ पराग—'प्राकृते पुष्परजःशब्दस्य 'तिगिछि' इति निपातः देशी शब्दो वा' (जंबूटी प ३०७; दे ५।१२)। २ पीला पुष्प (अंवि पृ ७०)।

तितिणि—बड़बड़ाने वाला (पंक १६७५)।

तितिणिय—१ चिड़चिड़े स्वभाव वाला—'तितिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू' (स्था ६।१०२)। २ चंचल चित्त वाला (बृटी पृ २३६)।

तितिणिया—बड़बड़ाहट (बृभा ६३४०)।

तिदुग—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (उ ३६।१३८)।

तिदूसय—कन्दुक, गेंद—'कणगतिदूसएण कीलमाणी' (अंत ३।५८)।

तिबुरुकी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तिक्खालिअ—तीक्ष्ण किया हुआ (दे ५।१३)।

तिडु—अन्ननाशक कीट-विशेष, टिड्डी (अनुटी पृ ४)।

तिडुय—टिड्डी (बृटी पृ ६७५)।

तिणिस—मधुमक्खियों का छत्ता, मधु-पटल (दे ५।११)।

तित्ति—१ आदेश। २ चिन्ता। ३ वार्ता (आचू पृ ३३१)। ४ सार, तात्पर्य (दे ५।११)। ५ गवेषणा, खोज। ६ पालन (प्रटी प ६७)।

तित्तिरिअ—स्नान से आर्द्र (दे ५।१२)।

तित्तिल—१ परिसर्प-जाति-विशेष (अंवि पृ ६३)। २ उतना।

तित्तुअ—गुरु, भारी (दे ५।१२)।

तिधिणी—देवी-विशेष (अंवि पृ ६६)।

तिन्न—आर्द्र (ज्ञाटी प १२१)।

तिपिसाचक—गले का आभरण-विशेष (अंवि पृ १६२)।

तिपुड—धान्य-विशेष (निभा १०३०)।

तिमिंगिल—१ मत्स्य की एक जाति (प्रज्ञा १।५६)। २ मीन, मछली (दे ५।१३)।

तिमिगर—जलचर-विशेष (निभा ३९६१)।

तिमिच्छअ—पथिक (दे ५।१३)।

तिमिच्छाह—पथिक (दे ५।१३)।

तिमिण—गोला काठ (दे ५।११)।

तिमिरक—गुल्म-विशेष (अंवि पृ ६१)।

तिमिरिच्छ—करंज का पेड़ (दे ५।१३)।

तिरिड—तिमिर वृक्ष (दे ५।११)।

तिरिडिअ—१ तिमिर-युक्त। २ विचित, संगृहीत (दे ५।२१)।

तिरिड्डि—उष्ण वात, गरम पवन (दे ५।१२)।

तिरियाणी—एक तट से दूसरे तट पर ऋजुगामिनी नावा (निचू १ पृ ६९)।

तिरोवइ—बाड़ से व्यवहित (दे ५।१३)।

तिलंडा—तिलों के डंठल (अनु ३।५२)।

तिलितिलिय—जलजन्तु-विशेष (दश्रु ८।३१)।

तिल्लहडिका—गिलहरी (नंदीटि पृ १३३)।

तिविडा—सूचिका, सूई (दे ५।१२ वृ)।

तिविडी—छोटा पुडवा (दे ५।१२)।

तिव्व—१ दीवार का छिद्र—'तिव्वेण व मालेण व वाउपवेसेण अहव सढयाए' (ओभा ५८)। २ दुःसह (सू १।१।४५; दे ५।११)। ३ अत्यंत, प्रचुर (सू १।१।४५; दे ५।११ वृ)।

तिसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

तिसरिय—एक प्रकार का वाद्य—'अण्णा उण तिसरियं छिवइ' (कु पृ २६)।

तिसिग—आसन-विशेष (आचू पृ ३५२)।

तीतिणि—फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।

तीसालिका—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तुंगी—रात्री (दे ५।१४)।

तुंडिय—थिग्गल, पैबंद—'तुंडियं थिग्गलं देसीभासाए सामयिगी वा एस पडिभासा' (निचू २ पृ ४१)।

तुंडीर—मधुर बिम्बी-फल (दे ५।१४)।

तुंडूअ—जीर्णघट (दे ५।१५)।

तुंडेरग—खाद्य-विशेष, बड़ा (आवचू २ पृ १६८)।

तुंतुक्खुडिअ—त्वरायुक्त, उतावला (दे ५।१६)।

तुंबिल्ली—१ मधुमक्खियों का छाता। २ उदूखल, ऊखल (दे ५।२३)।

तुंबुरु—टिंबरू का वृक्ष (औपटी पृ ६८; दे ४।३)।

तुच्छ—अवशुष्क, अत्यंत सूखा हुआ (दे ५।१४)।

तुच्छहय—अनुरक्त, उत्कंठित (दे ५।१५)।

तुच्छय—अनुरक्त, उत्कंठित (दे ५।१५)।

तुडिग—हाथ का आभरण (ज्ञा १।१।१२८)।

तुडित—वाद्य-विशेष (दशचू प ६१)।

तुडिय—१ संख्या-विशेष, चौरासी लाख त्रुटितांग (भ ५।१८)। २ अन्तःपुर (भ १०।६७)। ३ वाद्य-विशेष (भ १०।६६)। ४ थिग्गल, पैबंद—'पायस्स एक्कं तुडियं तड्डेइ' (नि १।४१)। ५ हाथ का आभरण—'तुडियं बाहुरक्खिया' (निचू २ पृ ३६८)।

तुडियंग—१ संख्या-विशेष, ८४ लाख पूर्व—'पूर्वाणि चतुरशीतिलक्षगुणितानि त्रुटिताङ्गानि भवन्ति' (स्था २।३८६ टी प ८२)। २ कल्पवृक्ष का एक प्रकार (प्रसाटी प ३१४)।

तुण—तूण नाम का वाद्य (नि १७।१३७)।

तुणय—१ तूण नाम का वाद्य (आचूला ११।२)। २ शंख नाम का वाद्य (दे ५।१६)।

तुण्हि—सूकर, सूअर (दे ५।१४)।

तुण्हिक्क—१ निश्चल (नंदीटि पृ १३४)। २ मृदु-निश्चल (दे ५।१५)। ३ मृदु—'तुण्हिक्को मृदुनिश्चलयोः'।

तुन्न—त्रुटित, फटा हुआ (नंदीटि पृ १३६)।

तुन्नक—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६)।

तुप्प—१ घृत, घी (प्रसा २३३; दे ५।२२)। तुप्पा (कन्नड़)। २ कलेवर की चर्बी—'तुप्पो पुण मयकलेवरवसा भण्णति' (निचू १ पृ ७४)। ३ कलेवर की चरबी या घी आदि से चुपड़ा हुआ (बृभा २६२२; दे ५।२२)। ४ सरसों का धान्य (प्रसाटी प २३३; दे ५।२२)। ५ विवाह। ६ कौतुक, उत्सुकता। ७ घी आदि भरने का चर्मपात्र (दे ५।२२)। ८ वेष्टित (अनुद्वा २६)।

तुप्पग्ग—चिकना, घृष्ट—'तुप्पगतिक्खसिंगं' (दश्रु ८।२२)।

तुप्पित—अक्षित, चुपड़ा हुआ (अनुद्वाचू पृ १३)।

तुप्पिय—स्निग्ध, चुपड़ा हुआ—'नेहतुप्पियगत्तं' (विपा १।२।१४)।

तुमंतुम—तू-तू मैं-मैं, वाचिक-कलह (भ २५।५६८)।

तुरंत—शीघ्र (आवचू १ पृ ३०१)।

तुरक्क—१ देश-विशेष, तुर्किस्तान। २ अनार्य जाति-विशेष, तुरक।

तुरयमुह—त्वरावाला, जल्दबाज (से ४।३०)।

तुरी—१ पुष्ट, मोटा। २ चित्रकार का उपकरण, तूलिका (दे ५।२२)।

तुरुक्की—तुर्किस्तान की लिपि-विशेष (विभा ४६४ टी)।

तुलग्ग—काकतालीय न्याय, अकस्मात् (दे ५।१५)।

तुलसी—१ भूतों का चैत्य वृक्ष—'कलंबो उ पिसायाणं, वडो जक्खाण चेइयं। तुलसी भूयाण भवे, रक्खाणं च कंडओ।" (स्था ८।११७)। २ सुरसलता, तुलसी (भ २१।२१; दे ५।१४)।

तुवर—रस-विशेष, कषैला रस (दे ५।१७ वृ)।

तुसेअजंभ—लकड़ी (दे ५।१६)।

तूअ—ईख का काम करने वाला (दे ५।१६)।

तूका—मकड़ी (अंवि पृ ७०)।

तूण—रोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

तूणइल्ल—तूण वाद्य को बजाने वाला (जीव ३।६१६)।

तूपरड—१ क्लीब। २ कूबड़ा (दअचू पृ १६८)।

तूमणय (णूमणय ?)—छिपाना, स्थगन—'देशीपदमेतद् स्थगनमित्यर्थः' (व्यभा ३ टी प ४१)।

तूलिणिआ—शाल्मली-वृक्ष (दे ५।१७)।

तूलिणी—शाल्मली-वृक्ष (दे ५।१७ वृ)।

तूवर—कषैला रस (सूचू १ पृ १६)।

तूह—पशुओं के जलपान करने का स्थान, घाट (बृभा ४८६०)।

तूहण—पुरुष (दे ५।१७)।

तेआली—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४३।१)।

तेंडुअ—तुंबुरु-वृक्ष (दे ५।१७)।

तेंदूसय—१ क्रीडा-विशेष। इस खेल में विजेता बालक पराजित बालकों की पीठ पर बैठ कर निर्दिष्ट स्थान तक चंक्रमण करता है—'सामी तंदूसएण अभिरमति····तत्थ सामिणा स जितो, तस्स य उवरि विलग्गो सामी (आवहाटी १ पृ १२१)। २ कन्दुक, गेंद (ज्ञाटी प २४४)।

तेंबरुय—तेंदु का फल (भ १५।१२५)।

तेंबुरु—क्षुद्र कीट, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीवटी प ३२)।

तेजण—चाबुक (दजिचू पृ ३१५)।

तेडु—१ शलभ। २ पिशाच (दे ५।२३)।

तेदुरणमज्जिया—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

तेयलि—वलयाकार वृक्ष (प्रज्ञा १।४३)।

तेयाली—वलयाकार वृक्ष (प्रज्ञा १।४३ पा)।

तेयालीस—तेतालीस (सम ४३।१)।

तेरणि—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

तेरिम—तेली (निचू २ पृ २४३)।

तेलाल—धान्य-विशेष (अंवि पृ २५७)।

तेल्लकेला—मिट्टी से बना बिना पेंदे वाला तेल-पात्र—'तेल्लकेला इव सुसंगोविया' (ज्ञा १।१।१७)—'सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य भाजनविशेषः' (ज्ञाटी प १५)।

तेल्लग—शराब-विशेष (जीव ३।५८६)।

तेवण्ण—तिरेपन (सम ५३।१)।

तेवरुक—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

तेह—परत (दजिचू पृ १५५)।

तोअय—चातक पक्षी (दे ५।१८)।

तोंतडी—करम्ब, दही-चावल का बना खाद्य पदार्थ (दे ५।४)।

तोक्कअ—बिना ही कारण कार्य में तत्पर होने वाला (दे ५।१८)।

तोट्ट—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।
तोडण—१ असहिष्णु (दे ५।१८)। २ फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।
तोडहिया—वाद्य-विशेष (कु पृ ८२)।
तोडुका—चतुष्पद परिसर्प की एक जाति (अंवि पृ २२६)।
तोडु—क्षुद्र कीट, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (अंवि पृ २३७)।
तोडुक—१ वृक्ष पर रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२६)। २ टिड्डी। ३ भ्रमर (अंवि पृ २२७)।
तोणी—शरीर—'आहारे ताव च्छिंदाहि गेहिं तोणिं चइस्ससि' (व्यभा १० टी प ६६)।
तोत्तडि—करंब, दही-चावल से बना हुआ खाद्य (पा ४४०)।
तोप्पडुय—अनिष्पन्न (निचू २ पृ ४८)।
तोप्पारुभणा—उत्सव-विशेष (?) (अंवि पृ ६८)।
तोमरिअ—शस्त्र-प्रमार्जक, शस्त्रास्त्रों पर धार चढाने वाला (दे ५।१८)।
तोमरिगुंडि—लता-विशेष (पा ३४५)।
तोमरी—वल्ली, लता (दे ५।१७)।
तोरण—फल की एक जाति (अंवि पृ ६४)।
तोरविय—उत्तेजित (पा ५३५)।
तोलण—पुरुष (दे ५।१७)।
तोला—वाद्य-विशेष (आचू १ पृ ३०६)।
तोवट्ट—१ 'त्रपुपट्टिक' नाम का आभूषण। २ कमल-कर्णिका (दे ५।२३)।
तोस—धन, ऐश्वर्य (दे ५।१७)।

थ

थइया—१ नौली, कमर में बांधने की रुपयों की थैली—'संबलथइयासणाहो' (उसुटी प ६२)। २ थैला (अंवि पृ २२१)।
थउड्ड—भल्लातक वृक्ष, भिलावा (दे ५।२६)।
थंडिक्क—कांस्य-पात्र (आचू पृ ३४५)।

थंडिल्ल—१ क्रोध (सू १।६।११)। २ वह स्थान जहां शव को जलाया गया हो और जहां राख आदि न हो—'छारचिता-विरहितं तु थंडिल्लं' (निभा १५३५)। ३ मंडल, वृत्त प्रदेश (दे ५।२५)। ४ शुद्ध भूमि (बृचू प २०७)।

थंब—१ विषम (दे ५।२४)। २ पतवार (पा ८८२)।

थंभ—बिंदु (पा २१४)।

थंभायण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

थकित—थका हुआ, श्रांत (अंवि पृ २४५)।

थक्क—१ श्रान्त, थका हुआ—'पच्चूसे पुणो पत्थिया, मज्झण्हे तहेव थक्का' (उसुटी प ६३)। २ अवसर (आवचू १ पृ ५३१; दे ५।२४)। ३ ध्वनि-विशेष (जीवटी प २४८)।

थगथगित—थर-थर कांपता हुआ (उसुटी प ६५)।

थग्गया—चोंच (दे ५।२६)।

थग्घ—थाह, अगाध, ऊंडा (दअचू पृ १७४; दे ५।२४)।

थग्घा—अगाध, ऊंडा (पा ८४४)।

थट्टि—पशु (दे ५।२४)।

थडिक्कग—कांस्य-पात्र (आचू पृ ३४५)।

थत्तिअ—विश्राम (दे ५।२६)।

थमिअ—विस्मृत (दे ५।२५)।

थर—दही के ऊपर की मलाई, थिरकी (दे ५।२४)।

थरथरित—कांपता हुआ—'सत्तू इव उवट्टिओ थरथरितो' (निभा ५६१)।

थरहरिअ—प्रकंपित—'थरहरिउमारद्धा गिरिणो' (उसुटी प २७८; दे ५।२७)।

थरु—तलवार की मूंठ (दे ५।२४)।

थलअ—मण्डप (दे ५।२५)।

थली—१ देवद्रोणी, गांव का ऐसा स्थान जहां देवी-देवता का मंदिर बना हो और जहां भेंट-पूजा चढ़ाई जाती हो (निचू ३ पृ ५२१)। २ वैसा स्थान जहां विभिन्न प्रकार के भिक्षुक भोजन लेने आते हों (व्यभा ७ टी प ४२)। ३ सत्रशाला (बृभा १७७५)।

थव—पशु (दे ५।२४)।

थवइल्ल—जांघ फैलाकर बैठा हुआ (दे ५।२६)।

थविआ—प्रसेविका—१ वीणा के अंतिम भाग में लगाया जाने वाला छोटा काष्ठ। २ थैला (दे ५।२५)।

थवी—प्रसेविका—१ वीणा के अंतिम भाग में लगाया जाने वाला छोटा काष्ठ (दे ५।२५ वृ)। २ थेला।

थस—विस्तीर्ण (दे ५।२५)।

थसल—विस्तीर्ण (दे ५।२५)।

थह—आश्रय, स्थान (दे ५।२५)।

थाइणी—प्रतिवर्ष प्रसव करने वाली घोड़ी (बृभा ३९५९)।

थाणइल्लग—पहरेदार, प्रातिहारिक—'थाणइल्लगा वि न वारिंति पव्वइओ त्ति' (आवहाटी २ पृ १३४)।

थाणय—१ पुलिस चौकी, थाना। २ पहरेदार, चौकीदार (कु पृ १३५)।

थाणिज्ज—गौरवान्वित, सम्मानित (दे ४।५ वृ)।

थाम—१ स्थान (उसुटी प ६२)। २ विस्तीर्ण (दे ५।२५)।

थार—मेघ (दे ५।२७)—'थारत्थणिअं सोउं' (वृ)।

थारुगिणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१८२)।

थालग—१ पिंड, समूह (आचूला १।१३३)। २ (फली का) पाक (आटी प ३५४)।

थाली—१ पिंड, समूह—'थाली सव्वातो चेव, पिंडो समूहो य' (आचू पृ ३४४)। २ (फली का) पाक (आटी प ३५४)।

थासग—१ दर्पण के आकार का पात्र (विपा १।२।१४)। २ कुदाल (आवटि प ५९)।

थाह—१ स्थान। २ ऊंडा गम्भीर जल वाला। ३ विस्तीर्ण। ४ दीर्घ (दे ५।३०)।

थिक्क—स्पृष्ट—'वड्ढइ हायइ छाया तत्थिक्कं पूइयंपि व न कप्पे' (पिनि १७४)।

थिक्किल्ल—सुन्दर (आवचू १ पृ २५७)।

थिग्गल—१ घर का वह द्वार जो किसी कारण-वश फिर से चिना हुआ हो (व ५।११।१५)। २ मैल—'थिग्गलं जल्लो भणति' (निचू २ पृ २२१)। ३ छिद्र—'थिग्गल त्ति गिम्हे वातागमणट्ठा गवक्खादि छिड्डे करेंति' (निचू २ पृ ३३८)। ४ खंडित वस्तु को ठीक करने के लिए लगाई जाने वाली जोड़—'अन्नेण चंदणेण य भेरीए थिग्गलं दिन्नं' (नंदीटि पृ १०९)।

थिग्गलय—पैबंद—'पडियाणिया थिग्गलय छंदंतो च एगट्ठा' (निचू ३ पृ ५६)।

थिग्गलिआ—पैबंद (आवहाटी १ पृ ६५)।

थिच्चण—उपमर्दन, उत्पीड़न—'हरियच्छेअण छप्पईअ थिच्चणं' (बृभा १५३७)।

थिण्ण—१ निःस्नेह दयालु। २ अभिमानी (दे ५।३०)।

थिन्न—गर्वित (पा १२९)।

थिभग—कंद-विशेष (भ २३।२)।

थिमिअ—स्थिर, निश्चल—'जहा मंधादए णाम थिमियं पियति दगं' (सू १।३।७१; दे ५।२७)। २ मंथर, मंद (पा १५)।

थिरणाम—चलचित्त, चंचल, अधीर (दे ५।२७)।

थिरसीस—१ निर्भीक। २ निर्भर। ३ जिसने सिर पर कवच बांधा हो वह (दे ५।३१)।

थिल्लि—दो खच्चरों की बग्घी (दश्रु ६।३)।

थिल्ली—१ वाहन विशेष (अनुद्धाचू पृ ५३)। २ दो घोड़ों या खच्चरों से वाह्य यान। ३ लाट देश में प्रसिद्ध यान-विशेष—'अड्डपल्लाण' (औपटी पृ ११२)।

थिविथिविंत—थिव-थिव आवाज करता हुआ (विपा १।७।७)।

थीणद्धि—घोर निद्रालु जिसकी चेतना जड़ीभूत हो जाती है—'इद्धं चित्तं तं थीणं जस्स अच्चंतदरिसणावरण-कम्मोदया सो थीणद्धी भण्णति' (निचू १ पृ ५५)।

थोहु—कन्द-विशेष—'लोहिणीहू य थीहू य' (उ ३६।९८)।

थीहू—कंद-विशेष (भ ७।६६)।

थुक्किअ—१ जुगुप्सित, तिरस्कृत—'धिक्कारथुक्कियाणं तित्थुच्छेदो दुलभवित्ती' (बृभा ५९३७)। २ उन्नत (दे ५।२८)।

थुड—स्कंध, तना (स्थाटी प १७६)।

थुडंकिय—रोष-युक्त वचन (पा ६५१)।

थुडुंकिअ—१ मौन। २ अल्पकुपित मुंह का संकोच (दे ५।३१)।

थुडुलिय—स्वल्प (आवचू २ पृ २८८)।

थुडुहीर—चामर (दे ५।२८)।

थुण्ण—दृप्त, अभिमानी (दे ५।२७)।

थुरग—तृण-विशेष (भ २१।१६)।
थुरय—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२।२)।
थुरुथुल्लणय—शय्या (दे ५।२८)।
थुलम—पटकुटी, तंबू (दे ५।२८)।
थुल्ल—परिवर्तित (दे ५।२७)।
थूण—घोड़ा (दे ५।२६)।
थूणा—शरीर का एक अवयव (अंवि पृ ६६)।
थूणिका—धान्य-विशेष (अंवि पृ २२०)।
थूर—१ बिना किनारी वाला। २ अगर्हित (निचू २ पृ ६७)। ३ थोड़ा (निभा १६१४)।
थूरक—शरीर का अवयव-विशेष (अंवि पृ ६६)।
थूरी—तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५।२८)।
थूलघोण—सूकर, वराह (दे ५।२६)।
थूह—१ प्रासाद का शिखर। २ चातक पक्षी। ३ वल्मीक (दे ५।३२)।
थेक्कार—ध्वनि-विशेष (आवमटी प १८८)।
थेग—कंद-विशेष (प्रसा २३८)।
थेच्चण—उपमर्दन (बृटी पृ ४५३)।
थेणिल्लिअ—१ छीना हुआ। २ डरा हुआ (दे ५।३२)।
थेर—विधाता, ब्रह्मा (दे ५।२६)।
थेरासण—कमल (दे ५।२६)।
थेव—बिन्दु (दे ५।२६)।
थेवरिअ—जन्म के समय बजने वाला वाद्य (दे ५।२६)।
थेविद्ध—स्तब्ध (अंवि पृ १४८)
थोअ—१ धोबी। २ मूला, कंद-विशेष (दे ५।३२)।
थोर—१ स्थूल (ज्ञा १।१।१५६)। २ क्रमशः लम्बा और गोल—'गोवच्छगं थोरगत्तं सेयं पिच्छइ' (उसुटी प १३५; दे ५।३०)। ३ गांव में घूम-घूम कर किया जाने वाला व्यापार—'लग्गा थोरेसु कह वि दुक्खत्ता' (कु पृ १६१)। ४ गोणी—'मणथोरं भरिऊणं आगमभंडस्स गुरुसया-साओ' (कु पृ १६३)।
थोरुद्दणिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञाटी प ४६)।
थोल—वस्त्र का एक देश (दे ५।३०)।

थोह—बल (दे ५।३०)।
थोहर—थूहर का पेड़ (विपाटी प ८०)।
थोहरी—थूहर का वृक्ष (प्रसा २३७)।

द

दइअ—रक्षित (दे ५।३५)।
दंडसंपुच्छणी—बुहारने का साधन-विशेष (राज १२)।
दंडि—सांधा हुआ जीर्ण वस्त्र (निभा ७८२)।
दंडिणी—राज-पत्नी (पिनि ५००)।
दंडिया—पत्र पर लगाई जाने वाली राजमुद्रा (बृभा १६५)।
दंडी—१ सांधा हुआ जीर्ण वस्त्र—'दंडीखंडनिवसणा', कृतसंधानं जीर्णवस्त्रम्' (ज्ञा १।१६।२६ टी प २०७)। २ स्वर्ण-सूत्र (दे ५।३३)। ३ सांधा हुआ वस्त्रयुगल (वृ)।
दंत—पर्वत का एक भाग (दे ५।३३)।
दंतवण—दन्तकाष्ठ, दतौन—'दन्तमलापकर्षणकाष्ठम्' (उपाटी पृ १६)।
दंताल—दांती, घास काटने का उपकरण-विशेष (निचू १ पृ ३१)। दंताली (राजस्थानी)।
दंतिअ—शशक, खरगोश (दे ५।३४)।
दंतिअय—खरगोश (दे ५।३४ वृ)।
दंतिक्क—१ तन्दुल, चावल। २ चावलों का आटा (बृभा ३०६४)। ३ दांतों से चबाकर खाये जाने वाले पदार्थ (निचू ४ पृ १११)।
दंतिक्कय—मांस से मिश्रित खाद्य-पदार्थ (पंव ६६)।
दंभन—सूची की भांति तीक्ष्ण शस्त्र-विशेष (विपा १।६।२६ पा)।
दंसणीय—उपहार, भेंट—'गहियं दंसणीयं। दिट्ठो राया' (कु पृ ६७)।
दक्खज्ज—गीध पक्षी (दे ५।३४)।
दगंगुलिगा—छाल—'दगंगुलिगा पुण वक्को भण्णति' (निचू १ पृ ७१)।
दगमालग—स्फटिकमय प्रासाद (जंबूटी प ४४)।
दगर—रोग-विशेष (जीवटी प १५३)।
दगवीणिया—जलप्रवाह, पानी की नाली (नि १।१२)।

ढच्छ—तीक्ष्ण, तीखा (दे ५।३३)।

ढडवड—१ धाटी, कपट से आक्रमण करना, छापा मारना (दे ५।३५)। २ शीघ्र।

ढढक—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

ढढगालि—१ धोया हुआ वस्त्र—'ढढगालिधौंतपोतिः' (जीविप पृ ५१)। २ ब्राह्मणों का धोया हुआ किनारी वाला वस्त्र-विशेष (प्रसा ६७६)।

ढढमूढ—१ मूर्ख। २ एकग्राही, एक ही बात को पकड़कर चलने वाला (दे १।४ वृ)।

ढत्थर—कर-शाटक, रूमाल (दे ५।३४)।

ढड्ढर—१ ढड्ढर नामक पर्वत—'ढड्ढरमलयगिरिसिहर' (ज्ञा १।१६।२५८)। २ सघन, प्रचुर—'गोसीससरसरत्तचंदणढड्ढरदिण्णपंचंगुलितला' (समप्र १४४)। ३ चपेटा का आघात—'ढड्ढरेण—चपेटाभिघातेन।' ४ सोपानवीथी—'ढड्ढरेषु—सोपानवीथीषु' (टी प १२८)। ५ प्रहार—'पाददड्ढरं करेंति' (आवचू १ पृ १४८)। ६ वचन का आटोप (प्रटी प ४६)। ७ वाद्य-विशेष (जंबू २)। ८ पात्र के मुंह पर बांधा जाने वाला कपड़ा, ढक्कन (आवचू २ पृ १०१)। ९ वस्त्र से अवनद्ध मुंह वाला पात्र (भटी पृ ८७७)।

ढड्ढरग—१ प्रहार—'पायदड्ढरगं करेइ' (भ ३।११२)। २ गोह के चर्म से मढा हुआ वाद्य—'यस्य चतुर्भिश्चरणैरवस्थानं भुवि स गोधाचर्मावनद्धो वाद्यविशेषः' (जंबूटी प १०१)।

ढड्ढरय—१ आच्छादन—'भायणे छुहित्ता पोत्तेण ढड्ढरओ कीरइ' (आवहाटी २ पृ ६०)। २ आघात, प्रहार—'अप्पेगतिया पाददड्ढरयं करेंति' (राज २८१)।

ढड्ढरिका—वाद्य-विशेष (अनुद्वाचू पृ ४५)।

ढड्ढरिगा—वाद्य-विशेष—'ताडिज्जंताणं ढड्ढरगाणं ढड्ढरिगाणं' (राज ७७)।

ढड्ढरिया—१ वाद्य-विशेष—'गोधा चम्मावणद्धा गोहिता सा य ढड्ढरिया' (अनुद्वाहाटी पृ ६६)। २ प्रहार, आघात (ज्ञा १।१६।२६१)।

ढधिफोल्लइ—वनस्पति-विशेष (भ २२।६)।

ढप्पसायण—एक प्रकार का बंधन—'ढिण्णं से ढप्पसायणं णाम बंधं' (कु पृ १३६)।

ढब्भमील—म्लेच्छ-विशेष—'ते य मिलक्खू ढब्भमीलादि' (निचू ३ पृ ३५०)।

दमग—दरिद्र–'तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमग-पुरिसं पासइ' (ज्ञा १।१६।७२)। २ मंदबुद्धि–'दमग मंदबुद्धि त्ति' (जीभा ८६५)।

दमय—१ कर्मकर (बृभा १८२२)। २ दरिद्र, निर्धन (द ७।१४; दे ५।३४)।

दय—१ जल (दे ५।३३)। २ शोक–'दयं शोक इत्यन्ये' (वृ)।

दयच्छर—ग्रामस्वामी, गांव का प्रधान (दे ५।३६)।

दयरी—सुरा, मद्य (दे ५।३४)।

दयाइअ—रक्षित (दे ५।३५)।

दयावण—निर्धन (दे ५।३५)।

दयावणय—निर्धन (दे ५।३५ वृ)।

दर—१ ईषत्, अल्प (बृभा ६६)। २ आधा (ओभा २५४; दे ५।३३)।

दरंदर—उल्लास (दे ५।३७)।

दरमत्ता—बलात्कार (दे ५।३७)।

दरवल्ल—गांव का मुखिया (दे ५।३६)।

दरवल्लणिहेलण—शून्यगृह (दे ५।३७)।

दरवल्लह—१ प्रिय व्यक्ति (दे ५।३७)। २ कातर, भीत।

दरविंदर—१ दीर्घ। २ विरल (दे ५।५२)।

दराल—पुष्प-विशेष (भ २१।२१)।

दरि—गर्त्त, विवर–'दरिं ति शृगालादिकृतभूविवरविशेषम्' (भटी पृ १२५५)।

दरिय—निम्न भूप्रदेश (भटी पृ ८००)।

दरिसाव—दर्शन, साक्षात्कार (निचू १ पृ ६)।

दरी—बिलों वाला प्रदेश–'मूषिकादिकृता लघ्वी खड्डा दरी' (जीवटी प २८२)।

दरुम्मिल्ल—सघन, निबिड़ (दे ५।३७)।

दलिअ—१ अंगुली। २ टेढी नजर वाला। ३ काष्ठ. लकड़ी (दे ५।५२)।

दलुक—गीध पक्षी (अंवि पृ २३६)।

दल्लभी—दंडनायक की पत्नी (अंवि पृ ६८)।

दव—गद्गद्, अस्पष्ट ध्वनि (दे ५।३३)।

दवर—१ तन्तु, धागा (दे ५।३५)। २ रज्जु।

दवरक—रस्सी (आवहाटी २ पृ ८७)।

दवरय—रस्सी (सू २।२।१२)।
दवरिका—पलाश आदि की छाल के तंतुओं को बंटकर बनाई जाने वाली डोरी (नंदीटि पृ १२७)।
दवहुत्त—ग्रीष्मकाल का प्रारम्भ (दे ५।३६)।
दविउलंक—भाजन-विशेष (अंवि पृ १९३)।
दव्वहलिया—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।
दव्वी—हरित वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।
दसतीण—धान्य-विशेष (प्रज्ञाटी प ३४)।
दसियाल—पतला धागा—'उण्णामय दसियालं एयं पुण पिंछयं कत्तो' (कु पृ १४१)।
दसीरिका—खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।
दसु—शोक (दे ५।३४)।
दसेर—स्वर्ण-सूत्र (दे ५।३३)।
दहफुल्लह—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।
दहबोल्ली—स्थाली, पकाने का पात्र (दे ५।३६)।
दहर—छोटा (अंवि पृ ११९)।
दहिउप्फ—मक्खन—'दहिउप्फकोमलंगी' (दे ५।३५)।
दहिट्ठ—कपित्थ का वृक्ष (दे ५।३५)।
दहित्थर—दधिसर, दही की मलाई (दे ५।३६ वृ)।
दहित्थार—दधिसर, दही की मलाई—'सदहित्थारयदहिणा णवदहबोल्लीइं विरइयकरंबं' (दे ५।३६)।
दहिमुह—बन्दर—'दहिमुहशब्दोऽपि देश्यः कपिवाची केनिचदुक्तः' (दे ५।४४ वृ)।
दहिवासह—वनस्पति-विशेष (जीवटी प ३५१)।
दाअ—प्रतिभू, ऋण लेने वाले और ऋण देने वाले के बीच जमानत देने वाला (दे ५।३८)।
दाइत—दर्शित (आवचू २ पृ ३५)।
दाइय—दर्शित (आचूला १।१३१)।
दाढिया—दाढी—'दाढियाए लोमाइं लुंचमाणे' (भ १५।१२०)।
दाढीय—दाढी (आवचू २ पृ ३०४)।
दाण—शुल्क, चुंगी—'करेह सेट्ठिस्स अद्धदाणं' (उसुटी प ६५)।

दाणामा—प्रव्रज्या का एक प्रकार। इसमें भिक्षु चार पुट वाला लकड़ी का पात्र लेकर भिक्षा के लिए जाता है। पहले पुट की भिक्षा पथिकों के लिए, दूसरे की कौए-कुत्तों के लिए, तीसरे की मच्छ-कच्छों के लिए और चौथे पुट की भिक्षा स्वयं के लिए होती है (भ ३।१०२)।

दादलिआ—अंगुली (दे ५।३८)।

दामक—रुपया, मूल्य (व्यभा ४।३ टी प १०)।

दामणि—स्त्री-पुरुष के शरीरगत बत्तीस शुभ लक्षणों में से एक—'दामणि त्ति रूढिगम्यम्' (प्रटी प ८४)।

दामणी—१ प्रसव। २ आंख, नयन (दे ५।५२)।

दायणा—दिखाना (बृभा ६२६४)।

दार—कटिसूत्र, कांची (दे ५।३८)।

दारछंता—पेटी (दे ५।३८)।

दारिआ—वेश्या (दे ५।३८)।

दाल—दाल (प्रटी प १४१)।

दालि—१ रेखा (ओनि ३२४)। २ दाल, दला हुआ चना आदि अन्न।

दालिअ—नेत्र, नयन (दे ५।३८)।

दालिमपूसिक—पात्र-विशेष (अंवि पृ ६५)।

दावर—द्वितीय, दूसरा—'द्वापरः इति समयपरिभाषया द्वितीयः' (बृटी पृ ३३६)।

दासय—फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।

दासि—नीले फूल वाली गुच्छ वनस्पति (प्रज्ञा १।३६।५)।

दाहा—प्रहरण-विशेष (ज्ञा १।१८।३५)। दाव (बंगला)।

दिअ—दिवस (दे ५।३६)।

दिअंड—प्रावरण-विशेष (अंवि पृ १६१)।

दिअज्झ—स्वर्णकार, सुनार (दे ५।३६)।

दिअधुत्त—कौआ (दे ५।४१ वृ)।

दिअधुत्तअ—काक, कौआ (दे ५।४१)।

दिअलिअ—मूर्ख (दे ५।३६)।

दिअली—स्थूणा, खंभा (पा ३६०)।

दिअसिअ—१ नित्य-भोजन (दे ५।४०)। २ प्रतिदिन (वृ)।

दिअहुत्त—पूर्वाह्ण का भोजन (दे ५।४०)।

दिआहम—भासपक्षी (दे ५।३९)।

दिक्करअ—बच्चा (आवमटी प १३६)।

दिक्करिका—दुहिता, पुत्री (आवहाटी १ पृ २६७)। दीकरी (गुजराती)।

दिक्करुय—पतली डोरी (व्यभा २ टी प ४४)।

दिगिछा—क्षुधा, बुभुक्षा—'दिगिछत्ति देशीवचनेन बुभुक्षोच्यते' (उशाटी प ८२)।

दिट्ठिल्लिय—देखा हुआ (उसुटी प ६५)।

दिण्णेल्लिय—दिया (आवहाटी १ पृ २८९)।

दिप्पंत—अनर्थ (दे ५।३९)।

दिय—दिवस (बृभा २७६७; दे ५।३९)।

दियल—शाखा—'दियलम्मि ओलइया' (व्यभा १० टी प ८०)।

दिरुल—तिर्यञ्च जाति-विशेष (अंवि पृ २३८)।

दिलिवेढय—ग्राह-विशेष, जलजन्तु की एक जाति (प्र १।५)।

दिल्लिदिलिअ—शिशु, बालक (दे ५।४०)।

दिल्लिदिलिआ—बालिका (पा ९६)।

दिव्वासा—चामुण्डा देवी (दे ५।३९)।

दीणार—सोने का सिक्का (आवचू १ पृ ४४६)।

दीणारमालिआ—गले का आभूषण-विशेष—'दीनाराद्याकृतिमणिकमाला' (जंबूटी प १०५)।

दीणारमासक—स्वर्ण-सिक्का (अंवि पृ ६६)।

दीणारी—सोने का सिक्का (अंवि पृ ७२)।

दीपकाण—काणा, एक आंख वाला—'काणा दीपकाणा फरला इत्यर्थः' (प्रटी प २५)।

दीवअ—कृकलास, गिरगिट (दे ५।४१)।

दीवालिका—दीपावली के अवसर पर बनाया जाने वाला खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

दोविआ—१ उपदेहिका, उदई (जीभा ५३८; दे ५।५३)। २ शाकुनिक—पक्षीघातक व्यक्ति द्वारा अन्य पक्षियों को आकृष्ट करने के लिए पिंजरे में रखा गया तीतर पक्षी (ज्ञाटी प २४०)। ३ व्याध की हरिणी जो दूसरे हरिणों को आकृष्ट करने के लिए रखी जाती है (दे ५।५३)।

दीविका—दर्वी–'दव्वी तध कवल्ली य दीविक त्ति कडच्छकी' (अंवि पृ ७२)।

दीविच्चग—एक प्रकार का सिक्का। देखें–'दीविच्चिक' (निभा ६५८)।

दीविच्चिक—द्वीप-विशेष में होने वाला सिक्का जो एक रुपये के समान होता था–'साहरको णाम रूपकः, सो य दीविच्चिको। तं च दीवं सुरट्ठाए दक्खिणेण जोयणमेत्तं समुद्दमवगाहित्ता भवति' (निचू २ पृ ६५)।

दीहजीह—शंख (दे ५।४१)।

दुअक्खर—नपुंसक (दे ५।४७)।

दुअग्ग—दंपती (उनि ३६७)।

दुएक्का—शौचक्रिया, देहचिन्ता (आवटि प २५)।

दुंदुमिअ—गल-गर्जित, गले से चिल्लाना (दे ५।४५)।

दुंदुमिणी—रूपवती स्त्री (दे ५।४५)।

दुंबवती—नदी, सरिता (दे ५।४८)।

दुक्कर—माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया जाता स्नान (दे ५।४२)।

दुक्कुक्कणिआ—पात्र, पीकदान (दे ५।४८)।

दुक्कुह—१ असहन, असहिष्णु (दे ५।४४)। २ रुचि-रहित (वृ)।

दुक्ख—जघन (दे ५।४२)।

दुक्खरय—दास (बृभा ६२८५)।

दुगंछणा—संयम–'पहू एजस्स दुगंछणाए' (आ १।१४५)।

दुगुंछा—जुगुप्सा (सम २१।२)।

दुगुल्ल—१ वृक्ष-विशेष। २ दुकूल वृक्ष की छाल से बना वस्त्र–'दुकूलो वृक्ष-विशेषस्तस्य वल्कं गृहीत्वा उदूखले जलेन सह कुट्टयित्वा बुसीकृत्य सूत्रीकृत्य च वूयन्ते यानि तानि दुकूलानि' (प्रटी प ७०,७१)। ३ गौड देश में विशिष्ट रूई से निष्पन्न वस्त्र (आटी प ३६३)।

दुगूल—१ वृक्ष-विशेष। २ दुकूल वृक्ष की छाल से बना वस्त्र। ३ दुकूल वृक्ष की छाल के सूक्ष्म रोओं से निर्मित वस्त्र। (ज्ञा १।१।३३ टी प ३०)। देखें–'दुगुल्ल'।

दुग्ग—१ कष्टप्रद–'वेयणं उदीरेंति—उज्जलं विउलं····दुग्गं' (भ ५।१३८)। २ दुःख–'दुग्गजलोघदूरणिवोलिज्जमाण' (प्र ३।३३)। ३ कमर (दे ५।५३)। ४ युद्ध।

दुग्गव—दुष्ट बैल (द ६।२।१६)।

दुग्घुट्ट—हाथी (दे ५।४४)।

दुघाण—दुर्भिक्ष—'दुघाणं ति वा दुभिक्खं ति वा एगट्ठं' (बृचू प १४८)।

दुच्चंडिअ—१ दुर्ललित। २ दुःशिक्षित, दुर्विदग्ध (दे ५।५५)।

दुच्चंबाल—१ झगड़ालू। २ दुश्चरित। ३ परुषभाषी (दे ५।५४)।

दुज्जाय—कष्ट, दुःख, उपद्रव (दे ५।४४)।

दुट्ठ—द्वेषयुक्त (ओनि ७५८)।

दुट्ठस्स—गर्दभ (बृटी पृ ४५०)।

दुणा—दुर्गन्धयुक्त—'जाणि एयाणि खारकडुयाणि दुणापाणियाणि उवभुंजेह' (आवहाटी २ पृ ४४)।

दुणियत्थ—जांघ तक पहना हुआ वस्त्र (बृभा ४११२)।

दुण्णिअत्थ—१ जघन पर पहना हुआ वस्त्र। २ जघन (दे ५।५३)।

दुण्णिक्क—दुश्चरित (दे ५।४५)।

दुण्णिखित्त—१ दुश्चरित (दे ५।४५)। २ दुर्दर्श, जो कष्ट से देखा जा सके (वृ)।

दुत्ति—शीघ्र (दे ५।४१)।

दुत्थ—जघन (दे ५।४२)।

दुत्थुरुहंड—कलहकारी पुरुष (दे ५।४७ वृ)।

दुत्थुरुहंडा—कलह करने वाली स्त्री (दे ५।४७)।

दुत्थोह—अभागा (दे ५।४३)।

दुद्दम—देवर, पति का छोटा भाई (दे ५।४४)।

दुद्दोली—वृक्ष-पंक्ति (दे ५।४३)।

दुद्धअ—समूह (दे ५।४२)।

दुद्धगंधिअमुह—बालक, शिशु (दे ५।४०)।

दुद्धगंधिअमुही—छोटी लड़की (पा ६६)।

दुद्धट्टी—१ खट्टी छाछ आदि से मिश्रित दूध, किलाटिका—'अंबिलजुयंमि दुद्धे दुद्धट्टी' (प्रसाटी प ५४)। २ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध।

दुद्धट्ठी—१ खट्टी छाछ आदि से मिश्रित दूध, किलाटिका, बलाई (प्रसाटी प ५४)। २ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध।

दुद्धवलेही—चावल का आटा डालकर पकाया गया दूध—'तंडुलचुण्णयसिद्धंमि अवलेही' (प्रसाटी प ५४)।

दुद्धसाडी—द्राक्षा डालकर पकाया गया दूध—'दक्खमीसरद्धंमि पयसाडी' (प्रसाटी प ५४)।

दुद्धिअ—लौकी, कद्दू (आवनि १३१८)। दूधी (गुज)।

दुद्धिग—लौकी, कद्दू (सूचू १ पृ १२५)।

दुद्धिणिआ—१ तुम्बी। २ तेल रखने का पात्र (दे ५।५४)।

दुद्धिणी—१ तेल-भाजन। २ तुम्बी (दे ५।५४ वृ)।

दुद्धोलणी—वह गाय जिसका दुबारा दोहन किया जा सके—'दुद्धोलणी दुहिअदुज्झाए' (दे ५।४६)।

दुद्धोली—वृक्षों की कतार (दे ५।४३ पा)।

दुप्परिअल्ल—१ अशक्य। २ दुगुना। ३ अनभ्यस्त (दे ५।५५)।

दुब्बोडित—दुर्मुण्ड, अपमानजनक संबोधन (बृभा ३३५०)।

दुब्बोल्ल—उपालम्भ (दे ५।४२)।

दुब्भपुप्फ—सांप का एक प्रकार (जीवटी प ३६)।

दुमंतअ—केश-बंध, जूड़ा (दे ५।४७)।

दुमण—१ परिताप—'.....वणण-दुमण-वाहणादियाइं साहेंति' (प्र २।१२)। २ घवलन—'.....छायण-दुमण-लिंपण.....' (प्र ८।६)।

दुमणी—सुधा, चूना (दे ५।४४)।

दुम्मइणी—कलह करने वाली स्त्री (दे ५।४७)।

दुम्मुह—बन्दर (दे ५।४४)।

दुयग्ग—१ दोनों—'एहि दुयग्गा वि य वयामो' (निचू ३ पृ १४३)। २ दम्पती—'दुयग्गावि त्ति देशीपदं प्रक्रमाच्च द्वावपि दम्पती' (उशाटी प ३६४)।

दुरंदर—दुःख से उत्तीर्ण (दे ५।४६)।

दुरालोअ—अन्धकार (दे ५।४६)।

दुरियखारी—वेश्या—'दुरियखारि सो उरि धरइ' (उसुटी प ३०)।

दुरुक्क—थोड़ा पीसा हुआ, अच्छी तरह से नहीं पीसा हुआ (आचूला १।१११)।

दुरुय—दुर्गन्ध-युक्त (ज्ञा १।१।१०६)।

दुरूढ—आरूढ (स्था ६।६२)।

दुरूय—मलमूत्रयुक्त कीचड़—'दुरूयं णाम उच्चार-पासवण-कद्दमो' (सूचू १ पृ १३१)।

दुरूव—विष्ठा, रक्त, मांस आदि का कर्दम—'ते तत्थ चिट्ठंति दुरूवभक्खी' (सू १।५।२०)।

दुलि—कछुआ (उशाटी प ४००; दे ५।४२)।

दुल्ल—वस्त्र (दे ५।४१)।

दुल्लग्ग—अघटमान, अयुक्त (दे ५।४३)।

दुल्लसिआ—दासी (दे ५।४६)।

दुवक्खरय—दास (पंक ४४७)।

दुवग्ग—दोनों—'देशीवचनत्वात् द्वावपि' (बृटी पृ ४६१)।

दुव्वाली—वृक्ष-पंक्ति (पा ४००)।

दुव्वोज्झ—दुर्वाह्य, कष्ट से मारने योग्य (से ३।५)।

दुसुंठ—उद्दण्ड—'दुसुण्ठा उल्लण्ठा खिङ्गाः' (जीविप पृ ५२)।

दुहअ—चूर-चूर किया हुआ (दे ५।४५)।

दुहदुहग—दुह-दुह आवाज करना (जीव ३।४४७)।

दुहुदुहुग—दुहु-दुहु की आवाज (राज २८१)।

दूण—हाथी (दे ५।४४)।

दूणावेढ—१ अशक्य। २ तालाब (दे ५।५६)।

दूमक—पीडाकारक—'अमणोरमाइं हिययमण-दूमकाइं' (प्र २।१७)।

दूमण—उत्पीडन—'''''पहार-दूमण-छविच्छेयण' (प्र १।३०)।

दूमित—झुलसा हुआ—'दवदूमितंजणदुमो' (विभा १३०४)।

दूमिय—१ ईषत् भक्षित (आचूला १।११६)। २ धवलित (ज्ञा १।१।१८)। ३ पीडित।

दूरुल्ल—दूरवर्ती (उसुटी प ७६)।

दूलि—मत्स्य-विशेष (विपाटी प ७६)।

दूसल—मन्दभाग्य, अभागा (दे ५।४३)।

दूसि—छाछ, तक्र—'दूसिमिति देशीवचनत्वाद् दूष्यमेतत् मथितं तक्रम्' (प्रज्ञाटी प ३५६)।

दूहट्ठ—लज्जा से उद्विग्न (दे ५।४८)।

दूहल—मन्द-भाग्य (दे ५।४३)।

दे—१ अपशब्द-सूचक अव्यय—'दे ! मंदभग्ग ! धुक्किय तूससि तं णाममेत्तेण' (जीभा ८३८)। २ पादपूरक अव्यय।

देअड—दृतिकार, मशक वहन करने वाला (अनुद्वा ३६०)।

देयड—चर्मकार (प्रज्ञा १।६७)।

देवउप्फ—पका हुआ पुष्प, पूर्ण विकसित फूल (दे ५।४६)।

देवड—१ चर्मकार (जीभा ४२५)। २ पुजारी (अंवि पृ १६०)।

देवडिगर—वह सार्वजनिक स्थान जहां देवताओं की स्थापना की जाती है; एक प्रकार का मंदिर (व्यभा ७ टी प ४१)।

देस—एक, दो या तीन प्रसृति का नाप—'एक्का पसति दो वा तिण्णि वा पसतीतो देसो भण्णति' (निचू ३ पृ ४६५)।

देसराग—जिस देश में जो रंगने की विधि हो उससे रंगा जाने वाला वस्त्र—'जत्थ विसए जा रंगविधी ताए, देसे रत्ता देसरागा' (निचू २ पृ ३६६)।

देसियमेली—व्यापारी-मंडल—'स तत्थ देसियमेलीए गओ' (कु पृ ६५)।

देसो—अंगूठा—'देशीत्यङ्गुष्ठोऽभिधीयते,' 'देसी पोरपमाणा' (व्यभा ८ टी प ४)।

देहंबलिया—भिक्षावृत्ति—'गेहंगेहेणं देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ' (ज्ञा १।१६।२६)।

देहणी—पंक, कर्दम (दे ५।४८)।

देहमाण—देखता हुआ (भ ६।१४७)।

देहवच्च—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

देहिय—देखकर (सू १।२।३)।

दोआल—वृषभ (दे ५।४६)।

दोग्ग—युगल (दे ५।४६)।

दोघट्ट—हाथी (पा ६)।

दोच्च—चोर आदि का भय—'दोच्चं ति चौरादिभयम्' (बृभा ३८६५ टी)।

दोच्चंग—१ पकाया हुआ शाक (बृभा ८०१)। २ तीमन (ओभा २६७)।

दोट्टग—छिलका उतारा हुआ फल का गुदा-भाग—'दोट्टगं छल्लीमोयगं' (आचू पृ ३६७)।

दोड्डिय—तुम्बा (व्यभा १० टी प ६३)।

दोणअ—१ गांव का मुखिया, गांव का अधिकारी, आयुक्त (दे ५।५१)। २ हल चलाने वाला (वृ)।

दोणक्का—सरघा, मधुमक्खी (दे ५।५१)।

दोण्णक—दोना, पत्तों का पुडवा (व्यभा ४।२ टी प ८४)।

दोद्धिअ—चर्मकूप, मशक (जीभा ४०३; दे ५।४६)।
दोद्धिग—तुम्बा (बृभा ६५८)।
दोद्धियक—तुंबे से बना पात्र—'दोद्धियकं तुंबघटितं' (निचू २ पृ ४६)।
दोयडी—दुसरसूत्री पटी (जीविप पृ ५१)।
दोर—१ धागा (आवनि १०३१)। २ छोटी रस्सी (ओभा ६४)। ३ कटि-सूत्र (दे ५।३८)।
दोरक—रज्जु—'रज्जुओ दोरको त्ति वुत्तं भवति' (निचू २ पृ ४०)।
दोरग—डोरा (निचू ४ पृ १३३)।
दोरिया—वस्त्र-विशेष, डोरिया (प्रसाटी प १६१)।
दोला—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।
दोवेली—सायंकालीन भोजन (दे ५।५०)।
दोस—१ द्वेष (उ ३२।७)। २ आधा। ३ कोप (दे ५।५६)।
दोसणिज्जंत—चन्द्रमा (दे ५।५१)।
दोसरिय—चांदनी—'दोसरियाणं मज्झे देवउले जोइया सिला तेणं' (उसुटी प ६१)।
दोसाकरण—कोप (दे ५।५१)।
दोसाणिअ—निर्मल किया हुआ (दे ५।५१)।
दोसिणा—ज्योत्स्ना (स्था २।३६१)।
दोसिणाभा—चन्द्र की अग्रमहिषी (स्था ४।१७५)।
दोसिणी—ज्योत्स्ना (दे ५।५०)।
दोसिल्ल—द्वेषयुक्त (विभा ११११०)।
दोसीण—बासी अन्न (प्र १०।१७)।
दोहणहारी—१ दोग्ध्री, दोहने वाली स्त्री (दे १।१०८)। २ पनीहारी, जल लाने वाली। ३ पारिहारिणी—१ माला गूंथने वाली। २ पारी (दुहने का पात्र) लाने वाली (दे ५।५६)।
दोहणी—पंक, कर्दम (दे ५।४८)।
दोहासल—कमर (दे ५।५०)।
दोहूअ—शव (दे ५।४६)।
द्रवक्क—भय (प्रा ४।४२२)।
द्रेहि—दृष्टि (प्रा ४।४२२)।

घ

घअ—पुरुष (दे ५।५७)।

घंग—भ्रमर (दे ५।५७)।

घंत—अत्यधिक—'घंतं पि दुद्धकंखी न लभइ दुद्धं अधेणूतो' (बृभा १९४४)—देशीवचनत्वाद् अतिशयेन' (टी पृ ५६६)।

घंधा—लज्जा (दे ५।५७)।

घंसाडिअ—नष्ट, व्यपगत (दे ५।५९)।

घकंटि—वृक्ष की एक जाति (अंवि पृ ७०)।

घडहड—वेग से—'घडहड जीविउ जाइ चित्तु परलोयह दिज्जउ' (उसुटी प ११३)।

घणिअ—१ अत्यधिक, अतिशय (भ ९।२०८; दे ५।५८)। २ स्वामी, पति।

घणिआ—१ भार्या, पत्नी (दे ५।५८)। २ स्तुति-पात्र स्त्री, धन्या।

घणित—अत्यन्त (आवचू २ पृ २८४)।

घणिता—तरुण स्त्री, प्रिया, गृहस्वामिनी (अंवि पृ६८)।

घणिया—गाढ—'अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ' (उ २९।२३)।

घणी—१ पत्नी। २ पर्याप्ति, पर्याप्त। ३ जो बंधा हुआ होने पर भी अभय हो (दे ५।६२)।

घणुहुल्लक—छोटे धनुष का खिलौना (सूचू १ पृ ११८)।

घण्णक—पशु-विशेष (अंवि पृ ६२)।

घण्णपइरण—धान्य का मर्दन—'जोवणं ति धान्यप्रकर:·····लाटविषये जोवणं धण्णपइरणं भण्णइ' (ओटी प ७५)।

घण्णाउस—१ धन्य आयुष्मन्! इस प्रकार कहा जाने वाला आशीर्वाद (दे ५।५८)। २ आशीर्वाद (वृ)।

घण्णारिया—भ्रमरी (निचू २ पृ १९७)।

घत्त—१ निहित, स्थापित (आवहाटी १ पृ ३१८)। २ वनस्पति-विशेष।

घनक—घर के बाहर का कमरा (ओटी प ५७)।

घमघमित—जाज्वल्यमान—'रोसेण धमधमितो' (प्रसा १६५)।

घम्मअ—१ चार अंगुल का हस्त-व्रण। २ चण्डी देवी की नरबलि (दे ५।६३)।

धम्मकरक—पानी छानने का कपड़ा (निचू १ पृ ७४)।
धम्मणग—फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।
धम्मण्ण—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।
धयण—गृह (दे ५।५७)।
धर—तूल, रूई (दे ५।५७)।
धरग्ग—कपास (दे ५।५८)।
धरच्छ—आभूषण-विशेष—'मगधकं धराक्षं च रूढिगम्यम्' (औपटी पृ १०३)।
धव—वेग, तीव्रता—'धवसगसद्देण जलमुट्ठाहियं' (आवचू १ पृ ५५३)।
धवल—स्वजाति में उत्तम, जैसे—अश्वधवल—उत्तम घोड़ा (दे ५।५७)।
धवलसउण—हंस (दे ५।५६)।
धवासि—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।
धव्व—वेग (दे ५।५७)।
धस—गिरने की आवाज—'कोट्टिमतलंसि धस त्ति सव्वंगेहिं संनिवडिया' (भ ६।१६८)।
धसल—विस्तीर्ण (दे ५।५८)।
धाडण—आक्रांत—'वारेह सरडुवेक्खण, धाडण गयणास चूरणता' (निभा २७८६)।
धाडि—१ हमला, आक्रमण, डाका—'चोरधाडिभएण बहू गामा एगट्ठिता' (निचू ३ पृ १६३)। २ निरस्त, निराकृत (दे ५।५६)।
धाडित—तिरस्कृत, निष्कासित—'ततिओ रुट्ठो घेत्तुं पिट्टिता धाडिता य' (आवचू १ पृ ८१)।
धाडिय—१ तिरस्कृत, निष्कासित—'तेण दढं पिट्टिया धाडिया य' (अनुद्धाहाटी पृ २६)। २ बगीचा (दे ५।५६)।
धाडी—आक्रमण—'गामे निवडिया चोरधाडी' (उसुटी प १६३)।
धाणग—धनिया, धाना (निचू २ पृ १०६)।
धाणूरिअ—विशेष प्रकार का फल (दे ५।६०)।
धात—१ पीछा करने वाला—'इतरेवि धाता नियत्ता' (आवचू १ पृ ४६७)। २ सुभिक्ष। ३ विभव—'धातं सुभिक्खं अथवा धातं विभवो (उचू पृ ६४)।
धाय—सुभिक्ष—'धायं ति वा सुभिक्खं ति वा एगट्ठं' (निचू ३ पृ ७०)।
धार—लघु, छोटा (दे ५।५६)।

धारधारी—तापसों का काष्ठमय उपकरण जो कांख में धारण किया जाता है (नंदीटि पृ १०१)।

धारा—रणभूमि का अग्रभाग, मोर्चा (दे ५।५६)।

धारावास—१ बादल। २ मेंढक (दे ५।६३)।

धारिट्ठ—साहस—'पगब्भं ति धारिट्ठं' (नंदीचू पृ ११)।

धाह—गहराई का अंत, थाह—'जाहे कोति महासमुद्दं तरिऊण जाहे अणेण धाहो, (थाह) लद्धो भवति ताहे मुहुत्तं अच्छिऊण सेसं तरति' (आवचू १ पृ १०६)।

धाहा—शोरगुल—'सो धाहाओ करेइ' (उसुटी प २७)।

धाहाधाह—चिल्लाहट, क्रंदन—'एसो अवकंदंतो बंधुयणो पिट्ठओ य रुयमाणो। तणकट्ठ अग्गिहत्थो, धाहाधाहं करेमाणे॥ (कु पृ १८६)।

धाहाविय—पुकार, चिल्लाहट—'तओ धाहावियं णेण' (कु पृ ६७)।

धिइल्लिया—पुतली, शालभंजिका (आवहाटी १ पृ २२६)।

धिकुण—क्षुद्र जन्तु, चींचड (अंवि पृ २३७)।

धिज्जा—बालिका (अंवि पृ ६८)।

धितिगा—पुतली (आवहाटी २ पृ १४३)।

धियइल्ल—मगदंतिया, मल्लिका (दजिचू पृ १६६)।

धिवल—दीन, मलिन—'निस्सोयमइलं दीणं अट्ठमं धिवलागतं' (अंवि पृ ४१)।

धीउल्लिका—पुतली (अनुद्वामटी प १२)।

धीउल्लिगा—पुतली (अनुद्वाहाटी पृ ७)।

धीउल्लिया—पुतली—'अट्ठचक्काणमुवरिं ठविया धीउल्लिया सा अच्छिम्मि विधेयव्वा' (उसुटी प ६६)।

धीतर—पुत्र—'महपितुकधीतरं वा पित्तियधीतरं वा····जोणिभगिणिं वा' (अंवि पृ २१६)।

धीतरी—पुत्री—'पितुस्सियाधीतरिं बूया, मातुस्सियाधीतरिं वा' (अंवि पृ २१६)।

धीतिगा—कठपुतली (आवचू १ पृ ४४६)।

धीतीगा—पुतली—'सा धीतीगा अच्छिमि विद्धा' (आवहाटी २ पृ १४३)।

धीम्मरग—धीवर (आवहाटी २ पृ २२६)।

धीया—कठपुतली (आवचू १ पृ ४५०)।

धीयार—ब्राह्मण (आवमटी प २७६)।

धुअगाअ—भ्रमर (दे ५।५७)।
धुंधुमारा—इन्द्राणी (दे ५।६०)।
धुक्कुद्धुअ—उल्लसित (दे ५।६०)।
धुक्कुद्धुगिअ—उल्लसित (दे ५।६०)।
धुत्त—१ विस्तीर्ण (व्यभा ८ टी प २९; दे ५।५८)। २ आक्रान्त।
धुरुड—कृमिविशेष (अंवि पृ २२९)।
धूण—हाथी (दे ५।६०)।
धूतुल्लिका—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।
धूमंग—भ्रमर (दे ५।५७)।
धूमणत्त—भांड-विशेष (अंवि पृ २३०)।
धूमद्दार—गवाक्ष, वातायन (दे ५।६१)।
धूमद्धय—१ तालाब। २ महिष, भैंसा (दे ५।६३)।
धूमद्धयमहिसी—कृत्तिका नक्षत्र (दे ५।६२)।
धूममहिसी—कुहरा, कुहासा (दे ५।६१)।
धूमरी—१ नीहार, कुहासा (दे ५।६१)। २ हिम।
धूमसिहा—नीहार, कुहासा (दे ५।६१)।
धूमा—नीहार, कुहासा (स्थाटी प ४५१)।
धूमिआ—नीहार, कुहासा (स्था १०।२०; दे ५।६१)।
धूयरा—लड़की—'पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयरं' (उ २१।३)।
धूरिअ—दीर्घ, लम्बा (दे ५।६२)।
धूरिअवट्ट—अश्व (दे ५।६१ वृ)।
धूलडिया—धूल, रजकण (प्रा ४।४३२)।
धूलीवट्ट—अश्व (दे ५।६१)।
धोक—छात्र (उचू पृ २०)।
धोयगि—मद्य के नीचे एकत्रित होने वाला कर्दम—'मज्जस्स हेट्ठा धोयगिमादि-किट्टिसंखेलो' (निचू ४ पृ २२३)।
धोरण—गति-चातुर्य (जंबू ३।१७८)।
धोरिगिणी—नर्तकी (आवहाटी २ पृ १४१)।

प

पइ—मूत्र–'पइ त्ति पासवणं' (प्रसा ६६)।

पइअ—१ भर्त्सित, तिरस्कृत। २ रथ का चक्र (दे ६।६४)।

पइट्ठ—१ रस को जानने वाला, ज्ञातरस। २ विरल। ३ मार्ग (दे ६।६६)। ४ प्रेषित, भेजा हुआ।

पइट्ठाण—नगर (दे ६।२६)।

पइण्ण—विपुल (दे ६।७)।

पइरिक्क—१ एकान्त–'पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं···तत्थऽहियासए' (उ २।२३; दे ६।७१)। २ यथेच्छ (आवहाटी १ पृ ४३)। ३ तुच्छ (से १।५८)। ४ विशाल। ५ शून्य (दे ६।७१)। ६ प्रचुर (जीव ३।५६४)।

पइरिक्कय—प्रचुर (ओनि २४६)।

पइलाइय—सर्प की एक जाति (अंवि पृ ६)।

पइल्ल—१ ग्रह-विशेष (स्था २।३२५)। २ रोग-विशेष, श्लीपद रोग (प्र १०।१५)।

पइहंत—जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र (दे ६।१६)।

पउअ—दिन (दे ६।५)।

पउट्ट—परिवर्त–मरकर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होना। देखें–पउट्टपरिहार (भ १५।७५)।

पउट्टपरिहार—मर कर पुनः उसी शरीर में बार-बार उत्पन्न होना–'पउट्टपरिहारो नाम परावर्त्य परावर्त्य तस्मिन्नेव सरीरके उववज्जंति' (आवचू १ पृ २६६)।

पउढ—१ घर (दे ६।४)। २ घर का पिछला भाग–'पउढो गृहस्य पश्चिम-देश इति केचित्' (वृ)।

पउण—१ घाव का भरना, व्रण-प्ररोह। २ एक प्रकार का नियम (दे ६।६५)।

पउण्ण—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पउत्थ—१ प्रोषित, प्रवास में गया हुआ (आवचू १ पृ ५३०; दे ६।६६)। २ गृह (उपभा ७ टी प ८८; दे ६।६६)।

पउत्थपतिया—जिसका पति प्रवास में गया हो वह स्त्री (आवचू १ पृ ५३०)।

पउत्थवइआ—जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री (आवहाटी १ पृ २६६)।

पउप्पय—शिष्यसंतति—'पउप्पएत्ति शिष्यसन्तानः' (भटी पृ १२७१)।

पउमलअ—वसन्त (दे ६।३३)।

पउल—वनस्पति-विशेष (भ २३।८)।

पउलण—पचन, पाक (प्र १।२५)।

पउसिया—'पउस' देश में उत्पन्न स्त्री (औप ७०)।

पउसी—'पउस' देश में उत्पन्न स्त्री (नि ९।२९)।

पऊढ—घर (दे ६।४)।

पएणी—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पएर—१ बाड का छिद्र। २ मार्ग। ३ दुःशील, दुश्चरित्र। ४ कंठदीनार नाम का आभूषण। ५ गले का छिद्र। ६ दीन-नाद, आर्त्तस्वर (दे ६।६७)।

पएस—१ प्रातिवेश्मिक, पडोसी (दे ६।३)। २ एक प्रकार का वाद्य (नि १७।१३६)।

पएसिणी—पड़ोसिन (दे ६।३ वृ)।

पओत्थ—प्रोषित, प्रवास में गया हुआ (दशचू पृ ४८)।

पओप्पय—१ शिष्य-परम्परा, प्रशिष्य—'विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे' (भ ११।१६५)। २ प्रशिष्य की शिष्य-परंपरा (भटी पृ १००८)।

पंखुडिआ—पत्र—'पंखुडिअव्व विकिण्णो' (दे ६।८ वृ)।

पंखुडी—पत्र, पत्ता (दे ६।८)।

पंगुलिगा—आसन-विशेष (दअचू पृ १७२)।

पंचंगुलि—एरण्ड का गाछ (दे ६।१७)।

पंचंगुलिया—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।१)।

पंचपुल—मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

पंचमधारा—अश्व की गति-विशेष (उसुटी प २३७)।

पंचमेजण—उत्सव-विशेष (अंवि पृ ९८)।

पंचवडय—शौचालय—'वच्चं नाम पंचवडओ' (आचू पृ ३३८)।

पंचवन—शौचभूमी—'अण्णया राया विरेयणं पीतो पंचवनगमतीति' (दअचू पृ ५२)।

पंचावण्ण—पचपन की संख्या (दे ६।२७)।

पंजर—१ आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर और गणावच्छेदक—इन पांचों का समुदाय। २ आचार्य आदि की परस्पर सारणा। ३ प्रायश्चित्त आदि के द्वारा अकुशल प्रवृत्ति से निवारण करना (व्यभा २ टी प २८)। ४ जलवायु-विशेषज्ञ—'पंजरपुरिसेण उत्तर-दिसाए दिट्ठं एक्कं सुप्पमाणं कज्जलकसिणं मेहपडलं' (कु पृ १०६)।

पंडरंग—१ शिवभक्त संन्यासी (बृटी पृ १३८६)। २ रुद्र, शिव (दे ६।२३)।

पंडरकुडुग—ग्वालों की जाति-विशेष—'अम्हे पंडरकुडुगा रायगिहे गोवाला पसिद्धा' (नंदीटि पृ १३४)।

पंडविअ—जलार्द्र, पानी से भीगा हुआ (दे ६।२०)।

पंडु—सफेद-मिट्टी, धूसर-मिट्टी—'पाण्डुमृत्तिका नाम देशविशेषे या धूलिरूपा सती पाण्डू इति प्रसिद्धा' (जीवटी प २३)।

पंडुइय—तिरस्कृत, प्रताड़ित (निभा १६८५)—'तम्मि घरासे पंडुइया भ्रमिया' (चू)।

पंडुल्लुइय—पांडुर वर्ण वाला (आवचू १ पृ २०६)।

पंतावणा—लकड़ी, मुष्टि आदि से मारना—'यष्टिमुष्ट्यादिभिस्ताडना' (बृभा ८६६ टी पृ २८५)।

पंति—वेणी, केश-रचना (दे ६।२)।

पंथच्छुहणी—ससुराल से पहली बार आनीत वधू (दे ६।३५)।

पंथोलग—क्षुद्र जंतु-विशेष (अवि पृ २३८)।

पंपुअ—दीर्घ (दे ६।१२)।

पंपोट—बहुबीज वाली वनस्पति (प्रसाटी प ५८)।

पंफुल्लिअ—गवेषित, खोजा हुआ (दे ६।१७)।

पंसुल—१ कोयल, कोकिल। २ जार, उपपति (दे ६।६६)। ३ रुद्ध, रोका हुआ।

पंसुलिगा—पार्श्व की हड्डी (प्र ३।१२)।

पंसुलिया—पार्श्व की हड्डी (प्रसाटी प ४०२)।

पंसुली—पार्श्व की हड्डी, पसली (तंदु १४२)। पांसली (राज)।

पक्क—१ दृप्त, उन्मत्त। २ समर्थ (दे ६।६४)।

पक्कग्गाह—१ मगरमच्छ (दे ६।२३)। २ पानी में रहने वाला सिंहाकार जलजन्तु—'पक्कग्गाहो जलसिंहे देशी' (से ५।५७)।

पक्कण—१ म्लेच्छ जाति, चाण्डाल (जंबू ३।११)। २ असहिष्णु। ३ समर्थ (दे ६।६६)। ४ एक नीच जाति का घर, शबर-गृह। ५ अधम (कु पृ ८१)। ६ एक अनार्य देश।

पक्कणकुल—गर्हित कुल—'पक्कणकुले वसंतो सउणीपारोऽवि गरहिओ होइ' (आवहाटी २ पृ २०)।

पक्कणय—एक अनार्य देश (प्रसा १५८३)।

पक्कणि—१ अत्यन्त शोभित। २ भग्न, टूटा हुआ। ३ प्रियभाषी, (दे ६।६५)।

पक्कणिक—अनार्य देश में रहने वाली जाति-विशेष (प्रटी प १५)।

पक्कणिय—म्लेच्छजाति-विशेष (प्रटी प १४)।

पक्कणी—अनार्य देश-विशेष की दासी (जा १।१।८२)।

पक्कल—१ प्रौढ। २ समर्थ (कु पृ १६८)। ३ दर्पयुक्त, गर्वित।

पक्कस—सुरा आदि का पुराना मैल (निचू ४ पृ २२३)।

पक्कसावअ—१ शरभ, अष्टापद। २ व्याघ्र (दे ६।७५)।

पक्काणिय—म्लेच्छ जाति-विशेष (प्र १।२१)।

पक्खडिअ—प्रस्फुरित (दे ६।२०)।

पक्खपेंड—त्रिकोण वस्तु-विशेष (अंवि पृ ११७)।

पक्खर—१ पाखर, घोड़े का कवच (आवचू १ पृ ५६७)। २ जहाज की रक्षा का एक उपकरण।

पक्खरा—घोड़े का कवच, अश्व-संनाह (विपा १।२।१४; दे ६।१०)।

पक्खरिअ—कवचित, कवच से सज्जित (अश्व)—'पक्खरिअपत्थिअहओ' (दे ६।१० वृ)।

पक्खापक्खि—नपुंसक का एक प्रकार—'वामदक्खिणेसु पक्खापक्खिणो विण्णेया' (अंवि पृ २२४)।

पक्खोडिअ—झाड़ा हुआ, निर्झाटित (व्यभा १० टी प ५२; दे ६।२७)।

पखरगत—वाद्य-विशेष—'वीणा मसूरका पखरगतं दद्दरका आलिंगा मुरव' (अंवि पृ २३०)।

पगढग—पथ-दर्शक, नायक (सूचू १ पृ २१३)।

पग्गेज्ज—निकर, समूह (दे ६।१५)।

पचलाक—वृक्ष पर रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२६)।

पच्चंगिर—चोरी का दोष (बृभा २०३८)।

पच्चग—मुंह से बजाया जाने वाला बाजा (आवचू १ पृ ३०६)।

पच्चड्डिय—क्षरित (प्रा २।१७४)।

पच्चड्डिया—मल्लों का एक प्रकार का करण (विभा ३३५७)।

पच्चत्तर—खुशामद (दे ६।२१)।

पच्चवलोवक—आसक्त चित्तवाला पुरुष (दे ६।३४)।

पच्चर—फलक—'असति एगंगियस्स दो पच्चरा संघातिगा गहेयव्वा' (निचू २ पृ १६२)।

पच्चल—१ समर्थ (उशाटी प १०४; दे ६।६६)। २ असहनशील (दे ६।६६)।

पच्चवर—१ श्रेष्ठ (अंवि पृ १७)। २ क्षुद्र (अंवि पृ २२६)। ३ मुसल (दे ६।१५)।

पच्चा—तृण-विशेष, बल्वज (स्था ५।१६१)।

पच्चापिच्चिय—बल्वज नाम की मोटी घास को कूटकर बनाया हुआ रजोहरण (स्था ५।१६१)।

पच्चारण—उपालंभ (पा ६६०)।

पच्चुअ—प्रस्नुत, प्रक्षरित—'पच्चुअं प्रस्नुतं इत्यन्ये' (दे ६।२५ वृ)।

पच्चुच्छुहणी—नया मद्य, ताजी मदिरा (दे ६।३५)।

पच्चुत्थ—प्रत्युप्त, पुनः बोया हुआ (दे ६।१३)।

पच्चुद्धरिय—सम्मुखागत, सामने आया हुआ (दे ६।२४ वृ)।

पच्चुद्धार—सम्मुख आगमन (दे ६।२४)।

पच्चुरस—निकट (व्यभा ५ टी प १६)।

पच्चुल्ल—प्रत्युत्—'किं कारणं न तुमं रुट्ठो, पच्चुल्लं ममं पूएसि' (व्यभा १ टी प ५२)।

पच्चुहिअ—प्रस्नुत, प्रक्षरित (दे ६।२५)।

पच्चूढ—थाल, भोजन-पात्र (दे ६।१२)।

पच्चूह—सूर्य, रवि (दे ६।५)।

पच्चेड—मुसल (दे ६।१५)।

पच्चोणी—सम्मुख आगमन (पिभा ३३)।

पच्चोयड—१ मणि आदि के किनारे का उठा हुआ प्रदेश (जीव ३।३२७)। २ अवच्छादित—'वेरुलिय-मणिफालियपडलपच्चोयडाओ' (राज १७४)।

पच्चोवणिअ—सम्मुख आया हुआ (दे ६।२४ वृ)।

पच्चोवणी—सम्मुख आगमन (दे ६।२४)।

पच्छयण—पाथेय—'गहियपच्छयणा निग्गया' (कु पृ ५७)।
पच्छि—पिटिका, पिटारी (भटी प ३१३; दे ६।१)।
पच्छिया—पात्र-विशेष (जीभा १५५१)।
पच्छियापिडय—'पच्छी' रूप पिटारी (राज ७७२)।
पच्छिलिय—पश्चात् (पंवटी प ५६)।
पच्छेणय—पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन-सामग्री (दे ६।२४)।
पच्छोकड—जिसका पिछला भाग ऊंचा हो (दे ६।१५ वृ)।
पच्छोलित—छीला हुआ (अंवि पृ १६८)।
पज्जण—१ पिलाना (बृभा १७६७)। २ पीना, पान करना (दे ६।११)।
पज्जणय—पिलाना, जल में डुबोना—'पज्जणयं····पायनं—जलनिबोलनं' (भ १४।८५ टी पृ ११९५)।
पज्जणी—लाल मिट्टी (अंवि पृ २३३)।
पज्जय—१ प्रपितामह, परदादा। २ परनाना (भ ६।१७५)।
पज्जा—सीढी, निःश्रेणी (दे ६।१)।
पज्जिया—१ परदादी। २ परनानी (द ७।१५)।
पज्जुणसर—इक्षु के सदृश तृण-विशेष (दे ६।३२)।
पज्झरिय—क्षरित, प्रवाहित—'दंतीपज्झरियमयजलपवाहो' (उसुटी प ८५)।
पज्झुत्त—जड़ित, खचित (पा १४०)।
पट्ट—१ कीट-विशेष (पतंग) की लार से निष्पन्न वस्त्र—'····पदंगकीडा आगच्छंति, तं तं मंसचीडाइयं आमिसं चरंता इतो ततो कीलंतरेसु संचरंता लालं मुयंति एस पट्टो' (अनुद्धाचू पृ १५)। २ ललाट का आभूषण-विशेष (विपाटी प ७०)।
पट्टइल्ल—पटेल, गांव का मुखिया (जंबूटी प १९३)।
पट्टइल्ल—१ वस्त्रधारी (उसुटी प २५)। २ पटेल, गांव का मुखिया।
पट्टगभत्त—पूज्य व्यक्तियों के लिए बनाया गया भोजन—'पूया उक्खित्तं ति य, पट्टगभत्तं च एगट्ठा' (बृभा ३६५५)।
पट्टाढा—घोड़े के बांधा जाने वाला चमड़े का पट्टा—'छोडिया पट्टाढा, ऊसारियं पल्लाणं' (उसुटी प २३७)।
पट्टाधा—घोड़े के बांधा जाने वाला चमड़े का पट्टा (उसुटी प २३७)।
पट्टिस—शस्त्र-विशेष (प्र १।२८)।
पट्टुआ—पाद-प्रहार (दे ६।८ पा)।

पट्टुहिअ—कलुषित पानी, हिलाया-डुलाया हुआ पानी (पा १५८)।
पट्ठिसंग—ककुद, बैल के कंधे का कूबड़ (दे ६।२३)।
पडंचा—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी (दे ६।१४)।
पडंसुआ—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी (दे ६।१४)।
पडक—उद्भिज्ज जन्तु की एक जाति (अंवि पृ २२६)।
पडच्चर—साले की भांति हंसी-मजाक करने वाला विदूषक आदि (दे ६।२५)
पडप्पयार—बहाना, मिष—'इमेण दिव्व-चित्तयम्म-पडप्पयारेण कारणंतरं किं पि चिंतयंतो दिव्वो देवलोयाओ समागओ त्ति' (कु पृ १६०)।
पडमट्ठ—खाद्य-विशेष (अंवि पृ ७१)।
पडल—नीव, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं (दे ६।५)।
पडलग—टोकरी—'पुप्फपडलगं वा पुप्फछज्जियं वा' (राज १२)।
पडवा—पट-कुटी, तम्बू (दे ६।६)।
पडहत्थिग—भाजन-विशेष (आवचू २ पृ ७०)।
पडाग—मत्स्य का एक प्रकार (प्रज्ञा १।५६)।
पडाल—फलक, मुष्टि (दशचू प ७४)।
पडालिका—गृह-उपकरण, चटाई आदि (अंवि पृ ७२)।
पडालो—१ कच्ची छत, चटाई आदि से छाया हुआ स्थान (निचू २ पृ ४२०)। २ छोटी कुटिया (आवटि प ३६)। ३ पंक्ति, श्रेणी (बृभा ११०७; दे ६।६)।
पडिअ—विघटित, वियुक्त (६।१२)।
पडिअंतअ—कर्मकर, नौकर (दे ६।३२)।
पडिअग्गिअ—१ परिभुक्त। २ वर्धापित। ३ पालित (दे ६।७४)। ४ अनुव्रजित, अनुसृत (वृ)।
पडिअज्झअ—उपाध्याय (दे ६।३१)।
पडिअट्टलिय—घृष्ट, घिसा हुआ (से ६।३१)।
पडिअर—चूल्हे का मूल भाग (दे ६।१७)।
पडिअलि—त्वरित, वेगयुक्त (दे ६।२८)।
पडिएल्लिअ—कृतार्थ (दे ६।३२)।
पडिएल्लिआ—कृतार्थता—'पडिरंजिअपडिमाए किं रे पडिएल्लिआइ होइ फलं' (दे ६।३२ वृ)।

पडिकक्कय—प्रतिकृति (अंवि पृ २५६)।

पडिक्कय—प्रतिक्रिया (आवचू १ पृ ४०६; दे ६।१६)।

पडिक्खर—१ क्रूर, निर्दय (दे ६।२५)। २ प्रतिकूल।

पडिखंध—१ जल वहन करने का दृति आदि साधन (दे ६।२८)। २ जलवाह, पानी लाने वाला (वृ)।

पडिखंधी—१ जल वहन करने का दृति आदि साधन (दे ६।२८)। २ जलवाह, पानी लाने वाला (वृ)।

पडिखद्ध—मृत—'किमेइणा सुणहपाएण पडिखद्धेणं' (उसुटी प ६४)।

पडिच्छ—मध्य—'मणिरयणं छत्तरयणस्स पडिच्छभाए ठवेति' (आवहाटी १ पृ १००)।

पडिच्छअ—१ अवान्तर गण का अधिपति (व्यभा ६ टी प ५४)। २ समय (दे ६।१६)।

पडिच्छंद—१ मुख (दे ६।२४)। २ समान, तुल्य (से १४।२४)।

पडिच्छिआ—१ प्रतीहारी (दे ६।२१)। २ चिरकाल से ब्याई हुई भैंस—'पडिच्छिआ चिरप्रसूता महिषीत्यन्ये' (वृ)।

पडिच्छिर—सदृश, समान (प्रा २।१७४)।

पडिणायित—विनष्ट (अंवि पृ १६६)।

पडिणिअंसण—रात्री में पहनने का वस्त्र (दे ६।३६)।

पडितलिय—पदत्राण, जूता-विशेष (पंक ८४७)।

पडितालिय—पैबंद, फटे वस्त्र में लगने वाली जोड़ (निचू २ पृ ५६)।

पडित्थिर—समान, सदृश (दे ६।२०)।

पडिपिंडिअ—प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ (दे ६।३४)।

पडिभेय—उपालंभ (पा ६६०)।

पडिया—वाचना—'पेसेह मेहावी सत्त पडियाओ देमि' (आवहाटी २ पृ १३८)।

पडियाणय—पर्याण के नीचे रखा जाने वाला एक उपकरण (ज्ञाटी प २३६)।

पडियाणिय—पैबंद—'वत्थस्स एगं पडियाणियं देइ' (नि १।४७)।

पडियाणिया—पैबंद—'पडियाणिया थिग्गलयं छंदंतो य एगट्ठं' (निचू २ पृ ५६)।

पडिरंजिअ—भग्न, टूटा हुआ (दे ६।३२)।

पडिलग्गल—वल्मीक, कीट-विशेष द्वारा निर्मित मृत्तिका-स्तूप (दे ६।३३)।

पडिल्ली—१ वृति, बाड़ । २ यवनिका, परदा (दे ६।६५) ।

पडिवेस—विक्षेप, फेंकना (दे ६।२१) ।

पडिसंत—१ प्रतिकूल (दे ६।१८) । २ अस्तमित, अस्तप्राप्त—'पडिसंतं अस्तमितमिति तु सातवाहनः' (वृ) ।

पडिसराखारमणि—कंठ का वह आभूषण जिसकी प्रत्येक लड में मणि पिरोया हुआ हो (अंवि पृ १६३) ।

पडिसाअ—घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला (दे ६।१७) ।

पडिसाइल्ल—घर्घर कण्ठ वाला (दे ६।१७ वृ) ।

पडिसार—१ स्मृति—'पव्वसारस्स दिट्ठिवायस्स नत्थि पडिसारो' (ति ७२३) । २ पटुता (दे ६।१६) । ३ पटु, निपुण (वृ) ।

पडिसारिअ—स्मृत, याद किया हुआ (दे ६।३३) ।

पडिसारी—यवनिका, परदा (दे ६।२२) ।

पडिसिद्ध—१ भीत । २ भग्न (दे ६।७१) ।

पडिसुत्ति—प्रतिकूल (दे ६।१८) ।

पडिसूर—प्रतिकूल (दे ६।१८) ।

पडिहच्छ—पूर्ण, भरा हुआ (दे ६।२८ पा) ।

पडिहत्थ—१ अत्यधिक—'देशीशब्दोऽयं पडिहत्थमुद्धुमायं अइरेइयं च जाण आउण्णं इति वचनात्' (जंबूटी प ४२) । २ परिपूर्ण—'पडिहत्थाओत्ति परिपूर्णाः देशीशब्दोऽयम्' (जंबूटी प ५७; दे ६।२८) । ३ प्रतिक्रिया (दे ६।१६) । ४ वचन (वृ) । ५ अपूर्व । ६ प्रत्युपकार (से १२।६६) ।

पडिहत्थी—बुद्धि (दे ६।१६) ।

पडीर—चोरों का समूह (दे ६।८) ।

पडुआलिय—१ निपुण बनाया हुआ । २ ताडित । ३ धारित (दे ६।७३) ।

पडुजुवइ—तरुणी (दे ६।३१) ।

पडुल्ल—१ छोटा पिठर, छोटी थाली । २ चिरप्रसूत (दे ६।६८) ।

पडुवइअ—तीक्ष्ण, तेज (दे ६।१४) ।

पडुवत्ती—यवनिका, परदा (दे ६।२२) ।

पडोअ—बालक (दे ६।१६) ।

पडोगार—उपकरण (दशचू प ५२) ।

पडोयार—उपकरण, सामग्री (पिनि २८) ।

पडोहर—घर का पिछला भाग (दे ६।२२)।

पड्डु - १ पाडा, भैंसा (दजिचू पृ १७६)। २ धवल, सफेद (उचू पृ १७८; दे ६।१)।

पड्डंस—गिरि-गुहा, पहाड़ की गुफा (दे ६।२)।

पड्डुच्छी—भैंस–'पड्डुच्छिखीरं' (ओनि ८७)।

पड्डुत्थी—१ बहुदुग्धा, बहुत दूध देने वाली। २ दूध दुहने वाली स्त्री (दे ६।७०)।

पड्डुय—भैंसा, पाडा (उसुटी प १३५)।

पड्डुला—चरणघात, पाद-प्रहार (दे ६।८)।

पड्डुस—सुसंयमित (दे ६।६)।

पड्डुका—१ छोटी भैंस, पाडी। २ छोटी गौ, बछिया (विपाटी प ४८)।

पड्डुच्छिर—सदृश, समान (प्रा २।१७४)।

पड्डुया—१ पाडी, छोटी भैंस। २ बछिया (विपा १।२।२०)। ३ प्रथम प्रसूता गाय। ४ नवप्रसूता महिषी (व्यभा ४।३ टी प १०)।

पड्डी—प्रथम प्रसूता, पहली बार ब्यानेवाली (दे ६।१)।

पड्डुआ—चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६।८)।

पढमालिया—नाश्ता, प्रातराश (आवचू १ पृ ८२)।

पढमिल्लुय—प्रथम (राज ७६८)।

पढमेल्ल—प्रथम–'देशीवचनमेतत्, यथा—पढमेल्ला एत्थ घरे' (आवमटी प ११६)।

पढमेल्लुग—पहला–'प्रथम एव प्रथमेल्लुका देशीवचनमेतत्' (आवमटी प ११६)।

पण—पांच (बृभा २४०८)।

पणअत्तिअ—प्रकटित (दे ६।३० वृ)।

पणग—१ सूक्ष्म पंक–'पंक-पणग-पासजालभूयं' (प्र ४।१)। २ काई (द ८।१५)। ३ पञ्चक (जीभा १७६७)। ४ वनस्पति-विशेष (आ ६।१।१२)।

पणपण्ण—पचपन (सम ५५।१)।

पणपन्न—पचपन (जीव २।२०)।

पणय—१ पंचक (भ ६।१५०।१)। २ सूक्ष्म पंक (प्र ४।१ पा)। ३ तृण-विशेष, शैवाल (पिनि २५)। ४ काई (ओनि ३५०)। ५ कर्म

—'पावे वज्जे वेरे पंके पणए य' (उशाटी प ६७)। ६ कर्दम (दे ६।७)।

पणयत्तिअ—प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (दे ६।३०)।

पणयाल—पैंतालीस (सम ४५।७)।

पणल—प्रावरण-विशेष (निचू २ पृ ३६८)।

पणवण्ण—पचपन की संख्या (भ २।१२१; दे ६।२७)।

पणसक—१ थाली के आकार का पात्र (अंवि पृ ६५)। २ नकुलिका का एक प्रकार (अंवि पृ २२१)।

पणहय—पीना (निर ४ टी पृ ३४)।

पणामणिआ—स्त्री-विषयक प्रणय (दे ६।३०)।

पणाली—देह-प्रमाण यष्टि (प्रटी प ५८)।

पणिअ—प्रकट, स्पष्ट (दे ६।७)।

पणिआ—करोटिका, सिर की हड्डी (दे ६।३)।

पणुल्लिअ—प्रेरित (पा १४७)।

पणोल्लि—प्राजनक, चाबुक (प्र ३।१५)।

पण्ण—पचास (स्था ७।१२८।१)।

पण्णगार—शर्त (निचू ३ पृ १४०)।

पण्णत्त—१ बीज-वपन के योग्य भूमि (औप १)। २ परिकर्मित (सूर्यटी प २६३)। ३ स्वस्थ—'सो य (अस्सो) पण्णत्तो' (निचू ४ पृ ३०४)।

पण्णा—पचास (सम ४६।१)।

पण्णास—पचास (सम ५०।२)।

पण्णासय—पचास वर्ष की उम्र वाला (तं ५७)।

पण्णी—एक प्रकार की नावा (निचू १ पृ ७२)।

पण्णेलिका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ११६)।

पण्हअ—स्तन-धारा (दे ६।३)।

पतिरिक्क—१ एकांत—देशीभाषया एकान्ते' (उशाटी प ६६५)। २ प्रचुर (बृभा ५२६७)। ३ यथेच्छ, अकेला (आवहाटी १ पृ ४३)।

पतुज्ज—प्राणी-विशेष के रोओं से बना वस्त्र—'पाणजोणिगतं वत्थं तिविधमाधारये कोसेज्जं पतुज्जं आविकं चेति' (अंवि पृ १६३)।

पतोप्पय—प्रशिष्य (भ ११।१६२ पा)।

पत्तउर—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३६।३)।

पत्तंबेल्लि—खाद्य-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पत्तट्ठ—१ कुशल, बहु-शिक्षित (भ १४।३; दे ६।६८)। २ सुन्दर (दे ६।६८)।

पत्तण—१ बाण का अग्रभाग। २ पुंख, बाण का मूल भाग (दे ६।६४)।

पत्तणा—१ पुंख में की जाने वाली रचना-विशेष (से ७।५२)। २ इषु-फलक। ३ बाण का मूल भाग, पुंख (से १५।७३)।

पत्तपसाइआ—पत्तियों की एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६।२)।

पत्तपिसालस—पत्तियों की एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६।२)।

पत्तरक—आभूषण-विशेष (प्रटी प १४६)।

पत्तल—१ तीक्ष्ण, तेज (औप ४७; दे ६।१४)। २ कृश (वृ)।

पत्तला—राजपत्र, अधिकार-पत्र—'समप्पिज्जंति सेवयाणं महापडिहारेहिं गाम-णयर-खेडकव्वड-पट्टणाणं पत्तलाओ त्ति' (कु पृ १८)।

पत्तवासित—बंधा हुआ (निचू ४ पृ २२१)।

पत्तादार—श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

पत्तिसमिद्ध—तीक्ष्ण (दे ६।१४)।

पत्ती—पत्तों की बनी हुई एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६।२)।

पत्तुण्ण—वल्कल से बना हुआ वस्त्र (आचूला ५।१४)।

पत्तुल्लक—भाजन-विशेष—'सा तीए रुट्ठाए पत्तुल्लकाणि धोवेंतीए मसिलित्तेण हत्थेण' (दअचू पृ ४७)।

पत्थर—पाद-प्रहार—'एस परक्कपडीरो पत्थरकुसलेण पड्डुअं दिन्तो' (दे ६।८ वृ)।

पत्थरभल्लिअ—कोलाहल करना (दे ६।३६)।

पत्थरा—चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६।८)।

पत्थरिअ—पल्लव, कोंपल (दे ६।२०)।

पत्थार—विनाश—'पत्थारो णाम कुल-गण-संघविणासो भण्णति' (निचू १ पृ ११६)।

पत्थारी—१ समूह। २ प्रस्तर, शैय्या (दे ६।६६)। पथारी (गुज), पथरणा (राज)।

पत्थिआ—१ काष्ठ की बड़ी पट्टिका (ओनि ४७८)। २ बांस का बना बड़ा भाजन (टी पृ ३७४)।

पत्थिय—१ पुष्प-करंडक—'पुप्फचयं करेइ, पत्थियं भरेइ' (अंत ६।२१)। २ शीघ्र (दे ६।१०)।

पत्थियपिडग—बांस का बना हुआ भाजन-विशेष (विपा १।३।२०)।

पत्थीण—१ मोटा कपड़ा (दे ६।११)। २ स्थूल (बृ)।

पथरा—शस्त्र-विशेष (कु पृ २७४)।

पदकणु—आभरण-विशेष—'पदकणु इत्ययं शब्दो देशभाषायाः प्रतीयते' (राजटी पृ ४८)।

पदुम—जल में रहने वाला प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

पदोलि—यान-विशेष—'संदण-रध-वलभी-पदोलि-पवहण····' (अंवि पृ २००)।

पद्द—१ ग्राम-स्थान (दे ६।१)। २ छोटा गांव (पा ३६६)।

पद्दिया—अभिनव प्रसूता महिषी (व्यभा ४।३ टी प १०)।

पद्धर—१ ऋजु, सरल (दे ६।१०)। २ शीघ्र।

पद्धार—जिसकी पूंछ कटी हुई हो वह (दे ६।१३)।

पधकली—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २३२)।

पनक—सूक्ष्म पंक (प्रटी प ६५)।

पन्नग—दुर्गन्धित—'कटुयं तेल्लं तु पन्नगतिलाणं' (व्यभा ३ टी प १०६)।

पन्नाडिअय—भसला हुआ (पा ५०२)।

पप्पड—पर्पट, पापड़ (प्रसा ४३४)।

पप्पडग—गीली मिट्टी के सूख जाने पर उसके ऊपर की तह (निचू १ पृ ६१)।

पप्पडिग—खाद्य वस्तु-विशेष (जीभा १५३७)।

पप्पडी—गीली मिट्टी के सूख जाने पर उसके ऊपर की तह (निचू १ पृ ६१)।

पप्पीअ—चातक-पक्षी (दे ६।१२)।

पप्फाड—अग्नि का एक प्रकार (दे ६।६)।

पप्फिडिअ—प्रतिफलित (दे ६।२२)।

पप्फुअ—१ दीर्घ, लंबा। २ उड्डीयमान, उड़ता हुआ (दे ६।६४)।

पप्फोडिअ—१ झाड़ा हुआ, निर्झाटित (दे ६।२७)। २ तोड़ा हुआ।

पब्भार—१ ईषत् कुब्ज (प्रज्ञाटी प ७३)। २ संघात, समूह (दे ६।६६)। ३ गिरि-गुहा, पर्वत-कन्दरा—'पब्भारकंदरगया साहिती अप्पणो अट्ठं' (महा ८१; दे ६।६६)। ४ आधा (से ५।१८)। ५ अंश (से ४।६)। ६ उपरि भाग (से ४।२०)।

पब्भारगय—अवनत, झुका हुआ—'ईसिं पब्भारगएणं काएणं' (अंत ३।८८)।

पब्भोअ—भोग, विलास (दे ६।१०)।

पभवाल—तरु-विशेष (जंबूटी प ६८)।

पम्हट्ठ—१ प्रस्मृत, विस्मृत—'अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हट्ठदिसाभाए' (ज्ञा १।१८।४७)। २ प्रभ्रष्ट, विलुप्त (से ४।४२)। ३ परिष्ठापित, प्रक्षिप्त—'पम्हट्ठं ति परिठवियं ति एगट्ठं' (व्यभा ८ टी प २६)।

पम्हर—अपमृत्यु, अकाल-मरण (दे ६।३)।

पम्हल—कमल-केसर, किञ्जल्क (दे ६।१३)।

पम्हार—अपमृत्यु (दे ६।३)।

पम्हुट्ठ—१ विस्मृत—'किंच तयं पम्हुट्ठं, जंथ तया भो! जयंतपवरम्मि। श्रुत्था समयणिबद्धा देवा तं संभरह जाइं॥' (ज्ञा १।८।१८०)। २ गिरा हुआ—'पम्हुट्ठं णाम पडियं वीसरियं वा' (निचू २ पृ ४६१)।

पम्हुसाविय—विस्मारित (उसुटी प १६)।

पयंचुल—मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १।८।१६)।

पयट्टिअ—प्रवर्तित (दे ६।२६)।

पयडी—नारियल की छाल—'पयडी—णालिएरिचोदयं' (निचू २ पृ ३८)।

पयडुणी—१ प्रतिहारी, द्वाररक्षिका। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ चिरप्रसूता महिषी (दे ६।७२)।

पयय—प्रतिदिन, निरंतर (दे ६।६)।

पयरग—पैरों का आभूषण-विशेष (जीवटी प १४७)।

पयरण—प्रथम दी जाने वाली भिक्षा (बृभा ३५४८)।

पयरोक्क—१ सुन्दर। २ अव्याबाध, एकान्त (उचू पृ ६६)।

पयरेक्क—१ सुन्दर। २ अव्याबाध, एकान्त (उचू पृ ६६)।

पयल—नींद, घोसला (दे ६।७)।

पयला—१ खड़े या बैठे हुए जो निद्रा आए वह (स्था ६।१४)। २ निद्रा (दे ६।६)। ३ भुजपरिसर्प का एक प्रकार (अंवि पृ २२६)।

पयलाअ—१ हर, महादेव। २ सांप (दे ६।७२)। ३ भुजपरिसर्प की एक जाति (जीवटी प ४०)।

पयलाइय—हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति (सू २।३।८०)।

पयलाक—परिसर्प की एक जाति (अंवि पृ २२६)।

पयलापयला—चलते-फिरते जो नींद आए (स्था ६।१४)।

पयलायभत्त—मयूर (दे ६।३६)।

पयल्ल—प्रसृत, फैला हुआ (पा ५३३)।

पयवई—सेना (दे ६।१६)।

पयसाडी—द्राक्षा डालकर पकाया गया दूध (प्रसाटी प ५४)।

पया—चूल्हा (व्य ६।६)।

पयाम—अनुक्रम (दे ६।६)।

पयुका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पयुमक—उद्भिज्ज जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

पयोट्टपरिहार—मरकर पुनः उसी शरीर में बार-बार उत्पन्न होना (आचू १ पृ २६६)।

परक्क—लघु स्रोत (दे ६।८)।

परग—१ बांस की बनी हुई टोकरी, छाब आदि (आचूला १।१४२)। २ तृण-विशेष (सू २।२।४)। ३ धान्य-विशेष (सू २।२।६)।

परज्झ—१ परतन्त्र—'जे संखया तुच्छ-परप्पवाई, ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा' (उ ४।१३)। २ अपराध (ज्ञा १।२।४५)। ३ पात्र-विशेष—'अलंदिगा वा कुंडगं वा परज्झं मणिमयमादी विरूवरूवभायणाणि' (आचू पृ ३४५)।

परज्झा—परतन्त्रता, पराधीनता (स्था १०।१०८)।

परडा—विशेष प्रकार का सर्प (दे ६।५)।

परत्तिका—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

परद्ध—१ पीड़ित—'अणुबद्धखुहापरद्धा' (प्र ३।१७)। २ पतित, गिरा हुआ। ३ भीरु (दे ६।७०)। ४ व्याप्त।

परब्भंत—निषिद्ध, निवारित (निचू २ पृ १७७)।

परब्भस—घिरा हुआ—'चोरो य णगरारक्खेण परब्भसमाणो तत्थेव अतिगतो' (निचू १ पृ १६)।

परभाअ—रति-क्रीडा, मैथुन (दे ६।२७)।

परमासक—पैरों का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६५)।

परसुहत्त—वृक्ष (दे ६।२६)।

परस्सर—१ दीर्घ नाखून वाला पशु-विशेष। २ गेंडा (प्रज्ञा १।६६)।

परहुत्त—पराजित (कु पृ १७३)।

परा—तृण-विशेष (प्र ८।१०)।

परासर—शरभ, महाकाय पशु-विशेष जो हाथी को भी अपनी पीठ पर उठा लेता है (प्रटी प ६)।

पराहुत्त—पराङ्मुख—'वक्खित्तपराहुत्ते अ पमत्ते मा कया हु वंदिज्जा' (आवनि ११६८)।

परिअट्ट—धोबी, रजक (दे ६।१५)।

परिअट्टलिअ—परिच्छिन्न (दे ६।३६)।

परिअडी—१ वृति, बाड। २ मूर्ख (दे ६।७३)।

परिअत्त—प्रसृत, फैला हुआ—'सव्वासण-रिउसंभवहो करपरिअत्ता तावं' (प्रा ४।३६५)।

परिअर—लीन, आसक्त (दे ६।२४ वृ)।

परिअली—थाली, भोजन-पात्र (दे ६।१२)।

परिउत्थ—प्रवास पर गया हुआ (दे ६।१३)।

परिकट्टलिय—एक स्थान पर एकत्रित किया हुआ (पिनि २३६)।

परिकल्ल—धान का ऐसा ढेर जो राख या गोबर-जल से संस्कारित नहीं है (बृभा ३३१२)।

परिक्खार—१ उत्तम। २ प्रचुर—'कोऽत्थ परिक्खारं देज्ज वस्त्राणि ?' (सूचू १ पृ २०१)।

परिखंध—काहार, जल आदि लाने वाला नौकर (दे २।२७)।

परिगोह—१ आसक्ति। २ कीचड़—'परिगोहो णाम परिष्वङ्गः, दव्वे परिगोहो पंको' (सूचू १ पृ ६३)।

परिघासिय—गुण्डित, लिप्त—'रयसा वा परिघासियपुव्वे' (आचूला १।३५)।

परिघोलण—विचार—'उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला। साहुक्कारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी॥'(नंदी ३८।८) —'परिघोलनं—विचारः' (टी पृ ४८)।

परिच्छड—विधि, वृत्तान्त (निचू १ पृ ६)।

परिच्छूढ—१ उत्क्षिप्त (दे ६।२५)। २ परित्यक्त (से १३।१७)।

परिच्छेक—लघु (ज्ञाटी प २२८)।

परिज्जुसित—बुभुक्षित (निचू २ पृ १२७)।

परिज्झुसित—बुभुक्षित (निचू २ पृ १२७)।

परिण—पण्य, बेचने योग्य वस्तु (अंवि पृ २५३)।

परित्थड—विधि, वृत्तान्त—'दिट्ठो य रण्णो अंबगहणपरित्थडो' (निचू १ पृ ६)।

परिपदणय—अभिनय—'सा अप्पणो परिपदणयं करेति' (आवचू १ पृ ५२५)।

परिपरि—वाद्य-विशेष (नि १७।१३६)।

परिपरिया—वाद्य-विशेष (राज ७१ पा)।

परिपिरिया—वाद्य-विशेष (भ ५।६४ पा)।

परिपूणक—१ सुघरी नामक पक्षी का घोसला। २ घी छानने का साधन—सुघरी पक्षी के घोसले से घी छाना जाता है। घी का कचरा भीतर रह जाता है और घी छनकर बाहर आ जाता है—'परिपूणको नाम सुघरीचिटिकाविरचितो नीडविशेषः, तेन च घृतं गाल्यते ततस्तत्र कचवरमवतिष्ठते घृतं तु गलित्वा अधः पतति' (नंदीटि पृ १०५)।

परिपूणग—छानने का एक साधन जिससे घेवर का 'घोल' छाना जाता है। सार-सार नीचे झर जाता है और कल्मष अन्दर रह जाता है—'परिपूणको नाम येन घृतपूर्णयोग्यं पानं गाल्यते, तत्र सारो गलति कल्मषं तिष्ठति' (बृटी पृ १०४)।

परिब्भंत—१ निषिद्ध। २ भीरु (दे ६।७२)।

परिब्भुसित—बुभुक्षित—'अहवा वि परिब्भुसितस्स मणुण्णं होति पंतं पि' (निचू २ पृ १२७)।

परिमास—नौका का काष्ठ-विशेष (ज्ञाटी प १६६)।

परियच्छ—दलाल (स्थाटी प ३६)।

परियल्ल—परत (निभा ५८०१)।

परियाण—परिपूर्ण—'देंति फलं विज्जाओ, पुरिसाणं भागधेज्जपरियाणं। न हु भागधेज्जपरिवज्जियस्स विज्जा फलं देति॥' (चं १८)।

परिरय—१ पर्याय, समानार्थक शब्द—'एगपरिरयं ति वा एगपडिरयं ति वा एगपज्जायं ति वा एगणामभेदं ति वा एगट्ठा' (आवचू १ पृ २६)।

परिलिअ—लीन, आसक्त (दे ६।२४)।

परिली—१ मुंह की हवा से बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा—'फूमिज्जंताणं वंसाणं वेलूणं वालाणं परिलीणं बद्धगाणं' (राज ७७)। २ गुच्छ वनस्पति की एक जाति (प्रज्ञा १।३७।५)।

परिल्ल—अपर (से ६।१७)।

परिल्लवास—अज्ञात गति वाला (दे ६।३३)।

परिवच्छ—अवधारण, निश्चय—'परिवच्छि त्ति देशीशब्दोऽयं निर्णयार्थे वर्तते' (वृटी पृ ६१५)।

परिवारिअ—घटित (दे ६।३०)।

परिवास—खेत में सोने वाला पुरुष (दे ६।२६)।

परिवाह—दुर्विनय, अविनय (दे ६।२३)।

परिसित्तिय—पानक-विशेष (निभा १६६३)।

परिसिल्ल—परिषद् वाला—'परिसिल्लस्स तु परिसा' (निचू ४ पृ ७७)।

परिह—रोष, क्रोध (दे ६।७)।

परिहच्छ—१ पटु, निपुण। २ क्रोध (दे ६।७१)।

परिहट्टि—आकृष्टि, आकर्षण (दे ६।२१)।

परिहण—परिधान, वेश (दे ६।२१)।

परिहत्थ—१ जलजन्तु-विशेष (प्र ३।२३)। २ दृप्त (ज्ञा १।१३।१७)। ३ परिपूर्ण—'परिहत्थशब्दो देश्यः परिपूर्णतार्थे' (राजटी पृ १२४)।

परिहत्थग—जलजंतु-विशेष—'जलचर-पहगर-परिहत्थग-मच्छ....' (दश्रु ८।३०)।

परिहत्थत्तण—दक्षता, निपुणता—'अहो, पेच्छ पेच्छ वणिय-धूयाए परिहत्थत्तणं' (कु पृ २३२)।

परिहरण—परिधान (स्था ५।१३१)।

परिहलाविअ—जल-निर्गम, मोरी, नाला (दे ६।२९)।

परिहाअ—क्षीण, दुर्बल (दे ६।२५)।

परिहार—परिभोग (भटी पृ १२२७)।

परिहारइत्तिआ—ऋतुमती स्त्री, रजस्वला नारी (दे ६।३७)।

परिहारिणी—चिरकाल से ब्याई हुई भैंस (दे ६।३१)।

परिहाल—जल-निर्गम, मोरी, नाला (दे ६।२९)।

परिहेरक—१ जंघा का आभरण-विशेष—'जंघासु गंडूपयकं णीपुराणि परिहेरकाणि' (खंवि पृ १६३)। २ पांव का आभरण-विशेष (औपटी पृ १०३)।

परीयल्ल—वेष्टन (ओनि ७०९)।

परीसह—नापित (व्यभा ४।३ टी प २१)।

परेअ—पिशाच (दे ६।१२)।

परेवय—प्रणिपात करना, चरण-स्पर्श करना (दे ६।१८)।

परोहड—घर का पिछला आंगन (ओनि ४१७; पा ९३४)।

पल—स्वेद, पसीना (दे ६।१)।

पलंजी—भूसा, छिलका—'जहा धन्नेसु पलंजी' (उसुटी प १०९)।

पलग—पात्र-विशेष (आचू पृ ३४४)।

पलस—१ कार्पास-फल। २ स्वेद, पसीना (दे ६।७०)।

पलसु—सेवा, भक्ति (दे ६।३)।

पलहिअ—१ विषम, असम (दे ६।१५)। २ चारदीवारी से घिरा हुआ मकान (वृ)।

पलही—कपास (दे ६।४)।

पलाअ—चोर (दे ६।८)।

पलाडीका—पक्षिणी-विशेष (अंवि पृ ६९)।

पलाल—लेह्यभोज्य (अंवि पृ १८२)।

पलासि—भल्ली, छोटा भाला (दे ६।१४)।

पलासिया—छाल की बनी हुई बांसुरी (सू १।४।३८)।

पलिगोव—कीचड़—'महया पलिगोवं जाणिया जा वि य वंदण-पूयणा इहं' (सू १।२।३३)।

पलिट्ठ—१ फलक, तख्ता (दजिचू पृ १७५)। २ उत्तम, अच्छा—'पलिट्ठं पज्जत्तं दव्वं पलोएति' (निचू २ पृ २०९)।

पलिय—१ कर्म—'अणुवीइ पास णिक्खित्तदंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति' (आ ४।२७)। २ निंदित आचरण—'पलियं ति कर्म जुगुप्सितमनुष्ठानम्' (टी प २४१)।

पलियट्ठाण—कर्मस्थान, कारखाना (आ ९।२।२)।

पलिहअ—मूर्ख (दे ६।२०)।

पलिहस्स—ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष (दे ६।१६)।

पलिहाअ—ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष (दे ६।१६)।

पलोट्टजीह—रहस्य-भेदी, रहस्य को प्रकट करने वाला (दे ६।३५)।

पलोत्थित—उभरा हुआ, भरा हुआ (अंवि पृ २४३)।

पल्ल—धान्य भरने का कोठा (बृटी पृ ९२६)।

पल्लग—धान्य रखने का बडा कोठा—'पल्लगत्ति पल्लको नाम लाटदेशे धान्याधारं भवति' (आवमटी प ६८)।

पल्लट्ट—१ चलित, पर्यस्त (प्र ६।२)। २ काल-विशेष।

पल्लत्थ—पर्यस्त (से २।५)।

पल्लत्थिया—पालथी का आसन (उशाटी प ८)।

पल्लवग्ग—पर्यव-परिमाण—'पल्लवग्गोत्ति पर्यवपरिमाणं' (समटी प १०५)।

पल्लवाय—क्षेत्र, खेत (दे ६।२६)।

पल्लविअ—लाख से रंगा हुआ (दे ६।१६)।

पल्लालिय—बेसवार का एक घटक (निचू २ पृ ६५)।

पल्लालु—फल-विशेष (अंवि पृ २३८)।

पल्लालुक—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

पल्लुल—कठोर शब्द, उत्त्रास पैदा करने वाले शब्द—'पल्लुलं भणंति—हण छिन्द भिन्दधत्ति मारेत्ति पचे-पचे त्ति' (सूचू १ पृ १३६)।

पल्लोट्ट—प्रवृत्त, उत्पन्न—'तुरियपहाविअ-पल्लोट्टफेणाउलं—पल्लोट्ट त्ति प्रवृत्तः उत्पन्नः' (ज्ञा १।१।३३ टी प २६)।

पल्लोय—द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (उ ३६।१२६)।

पल्ह—अनार्य देश की एक जाति (भ ३।६५)।

पल्हत्थिअ—विरेचित, रिक्त (पा ५६२)।

पल्हत्थी—साधु का एक उपकरण (जीविप पृ ५०)।

पल्हवि—एक प्रकार का वस्त्र जो हाथी की पीठ पर बिछाया जाता है (जीभा १७७०)।

पल्हविया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

पवडुय—पर्दा, चटाई—'कुटिका-पवडुकेन कटकेन पश्यति' (ओटी प ५२)।

पवड्ढ—घन, हथौड़ा, लोहे को कूटने का साधन (दे ६।११)।

पवरंग—शिर, मस्तक (दे ६।२८)।

पवलाइया—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।६)।

पवहाइअ—प्रवृत्त (दे ६।३४)।

पविआ—पक्षियों के पानी पीने का भाजन (दे ६।४)।

पवित्तय—१ अंगूठी (भ २।३१)। २ तांबे की अंगूठी—'पवित्रकं ताम्रमय-मंगुलीयकम्' (ज्ञाटी प ११७)।

पविरइअ—त्वरित, वेगयुक्त (दे ६।२८)।

पविरंजिअ—१ स्निग्ध, स्नेहिल। २ कृत-निषेध, निवारित (दे ६।७४)। ३ भांगा हुआ (वृ)।

पवित्थरिल्लिय—विस्तृत (प्र ५।१)।

पवियाय—प्रस्फुटित (जीव ३।११८)।

पवियेल्लिय—विस्तारवाला (प्रटी प ६३)।

पवीसग—वाद्य-विशेष—'तंतीवीणा-पवीसगादि ततंति भणंति' (दशचू प ६१)।

पवुत्थ—१ प्रवासी (बृटी पृ ५३)। २ घर।

पव्वइसेल्ल—बालमय कंडक (कंदुक ?), शृंगार के लिए बालों में लगाया जाने वाला एक उपकरण (दे ६।३१)—'पडुजुवईण णिमित्तं पव्वइसेल्लाइ गुम्फेइ' (बृ)।

पव्वज्ज—१ नाखून, नख। २ बाण। ३ मृग-शावक (दे ६।६६)।

पव्वडिया—भिडने की क्रिया-विशेष (निचू ३ पृ ३४८)।

पव्वाय—म्लान, अर्द्धशुष्क—'ववहारस्स य सेसो मीसो पव्वायरोट्ठाई' (पिनि ४४)।

पव्वालिय—प्लावित, जल-व्याप्त (पा १३६)।

पव्विद्ध—प्रेरित (दे ६।११)।

पव्वीसग—वाद्य-विशेष (प्र ४।४)।

पव्वोणि—सम्मुख—'तण्हाइयस्स पाणं जोग्गाहारं च नेइ पव्वोणि' (व्यभा ६ टी प ५३)।

पसंडि—स्वर्ण, कनक (दे ६।१०)।

पसढ—जो विक्रेय वस्तु बहुत दिनों तक न बिकी हो (द ५।१।७२)।

पसत—१ मृग-विशेष। २ अटवी का प्राणी-विशेष (अंवि पृ २३६)। ३ गवय (अंवि पृ २३८)।

पसति—गवयी, नीलगाय (अंवि पृ ६६)।

पसय—१ मृग-विशेष (भ ८।१०३; दे ६।४)। २ जंगली पशु-विशेष—'आटविको द्विखुरः चतुष्पदविशेषः' (अनुद्दामटी प ३५)। ३ मृग-शिशु (विपा १।४।१६)।

पसर—१ प्रातःकाल—'अहो समतिरेगं रंधिज्जासु जेण एयाणं पसरवेलाए आगयाणं होइत्ति' (ओटी प १४८)। २ वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पसरेह—किञ्जल्क, कमल-केसर (दे ६।१३)।

पसलचित्त—क्षुद्र जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

पसल्लिय—पार्श्ववर्ती (अंवि पृ १८४)।

पसवडक्क—विलोकन, देखना (दे ६।३०)।

पसाइया—पत्तों की बनी हुई एक प्रकार की पगडी जिसे भील सिर पर पहनते हैं (दे ६।२)।

पसाणग—उपकरण-विशेष (अंवि पृ १९३)।

पसिंडि—सोना, स्वर्ण (पा ८०)।

पसिय—सुपारी (भ २२।२ पा; दे ६।६)।

पसिव्विका—थैली का एक प्रकार (अंवि पृ १७८)।

पसुत्ति—एक प्रकार का कुष्ठरोग (निचू ३ पृ ३९२)।

पसुहत्त—वृक्ष (दे ६।२९)।

पसूअ—कुसुम, पुष्प (दे ६।९)।

पसूइ—धान्य-विशेष—'सालि पसूई व गद्दभिया य छिन्ना' (आवहाटी १ पृ २९०)।

पसेवअ—ब्रह्मा (दे ६।२२)।

पसेव्वक—थैला (अंवि पृ २२१)।

पस्सिण्ण—पसीने से गीला—'तिलगो से खमगललाडं पस्सिण्णं संकंतो' (दअचू पृ २५)।

पहएल्ल—अपूप, पूआ (दे ६।१८)।

पहकर—समूह—'पहकरो त्ति देशीशब्दोऽयं समूहवाची' (जंबूटी प १४५)।

पहगर—जलजंतु-विशेष—'जलचर-पहगर-परिहत्थग-मच्छपरिभुज्जमाणजल-संचयं' (दश्रु ८।३०)।

पहट्ठ—१ दृप्त, उन्मत्त (तंदु पृ ४५; दे ६।९)। २ अचिरतर दृष्ट।

पहण—कुल (दे ६।५)।

पहणि—सामने आए हुए का निरोध, रुकावट (दे ६।५)।

पहद—सदा दृष्ट, सदा देखा हुआ (दे ६।१०)।

पहम्म—१ देवताओं द्वारा खोदा हुआ (दे ६।११)। २ खात जल-कुण्ड। ३ विवर, छिद्र—'मणिपहम्म'—'मणिमयं विवरं यद्वा मणीनां प्रथमः खात इति देशी' (से ९।४३)।

पहयर—समूह, निकर (दे ६।१५)।

पहिअ—मथित, विलोड़ित (दे ६।६)।

पहेण—१ विवाह के समय वधू के पीहर (पितृगृह) में किया जाने वाला भोज। २ अन्य घरों में ले जाई जाने वाली भोजन-सामग्री। ३ जो

भोज्य पदार्थ वर के घर से वधू के घर में ले जाया जाता है वह। ४ अन्य घरों से वर-वधू के घर में ले जाई जाने वाली भोजन-सामग्री (निचू ३ पृ २२३)। ५ खाद्य वस्तु का उपहार–'पहेणंति वा उक्खित्तभत्तंति वा एगट्ठा' (आचू पृ ७७)। ६ उपानत्, जूता (व्यभा १० टी प ७३)। ७ उपहार। ८ उत्सव (अंवि पृ २६८)।

पहेणग—वस्तु की भेंट, विवाह अथवा उत्सव के उपलक्ष में किसी दूसरे घर से भेंट स्वरूप प्राप्त भोजन-विशेष (पिनि ३३५)।

पहेणय—१ खाद्य वस्तु का उपहार (ओनि १०३; दे ६।७३)। २ उत्सव (दे ६।७३)।

पहेरक—आभूषण-विशेष (प्र १०।१४)।

पहोइअ—१ पर्याप्त (दे ६।२६)। २ प्रभुत्व (वृ)।

पहोलिर—इधर-उधर फेंकने वाला (से ११।१२)।

पाअ—रथ का पहिआ, रथचक्र (दे ६।३७)।

पाइअ—मुंह फाड़ना, मुंह बाना (दे ६।३६)।

पाइणग—चाबुक–'तुत्तयघातैश्च विषमवाहोऽथ पीड्यते, तुत्तगो–पाइणगो' (आवहाटी २ पृ २०५)।

पाइल्लग—१ चटाई बनाने का लोहमय ओजार (उशाटी प १६५)। २ छेदन करने का साधन, चाकू आदि (निचू २ पृ ५)।

पाउ—१ भोजन। २ ईक्षु (दे ६।७५)।

पाउअ—१ हिम (दे ६।३८)। २ भोजन। ३ ईक्षु (दे ६।७५ वृ)।

पाउक्क—मार्गीकृत, प्रकटित (दे ६।४१)।

पाउक्खालय—१ पाखाना, मलोत्सर्ग-स्थान–'पाउक्खालयगेहे दुग्गंधेऽणेगसो वसिओ' (भक्त ११२)। २ मलोत्सर्ग-क्रिया।

पाउग्ग—सभ्य, सभासद (दे ६।४१)।

पाउग्गिअ—१ जुआ खेलाने वाला (दे६।४२)। २ सहन करने वाला–पाउग्गिओऽपि सोढः' (वृ)।

पाउरणी—कवच, बख्तर (दे ६।४३)।

पाउल्ल—१ काष्ठ-पादुका (सूचू १ पृ ११८)। २ मूंज से निर्मित पादुका (सूटी १ प ११८)।

पाउल्लग—१ काष्ठपादुका–'पाउल्लगाइं ति कट्ठपाउगाओ' (सूचू १ पृ ११८)। २ मूंज की बनी पादुका (सूटी १ प ११८)।

पाए—प्रभृति, वहां से प्रारम्भ कर—'जत्तो पाए खेत्तं, गया उ पडिलेहगा ततो पाए' (बृभा १५३८)।

पांडविअ—पानी से आर्द्र (दे ६।२०)।

पागडा—पैर का आभूषण—'चरणमालिका—संस्थानविशेषकृतं पादाभरणं लोके पागडा इति प्रसिद्धं' (जंबूटी प १०६)।

पाघट्टिका—पैर का आभूषण-विशेष, पायजेब (अंवि पृ ७१)।

पाट्टालिका—पाढल का फूल (अंवि पृ ७०)।

पाडच्चर—आसक्त चित्तवाला (दे ६।३४)।

पाडल—१ हंस। २ वृषभ। ३ कमल (दे ६।७६)।

पाडलसउण—हंस (दे ६।४६)।

पाडलसउणय—हंस (दे ६।४६ वृ)।

पाडवण—पाद-पतन, प्रणिपात (दे ६।१८)।

पाडिअग्ग—विश्राम (दे ६।४४)—'रे हलिय! पाडिअग्गं कुण इण्हिं' (वृ)।

पाडिअज्झ—पिता के घर से वधू को पति के घर ले जाने वाला (दे ६।४३)।

पाडिया—उत्तरीय वस्त्र (भ १५।५१)।

पाडिसार—पटुता, निपुणता (दे ६।१६)।

पाडिसिद्धि—१ स्पर्धा। २ सदृश। ३ समुदाचार (दे ६।७७)।

पाडिसिरा—खलीनयुक्त (दे ६।४२)।

पाडिहच्छी—मस्तक की माला (दे ६।४२ वृ)।

पाडिहत्थी—मस्तक पर स्थित माला (दे ६।४२ वृ)।

पाडुंकी—व्रणी-शिविका, घायल के लिए बैठने की शिविका (दे ६।३९)।

पाडुंगोरि—१ विगुण, गुणहीन। २ मद्य में आसक्त। ३ मजबूत वेष्टन वाली बाड (दे ६।७८)—'यदाह—पाडुंगोरी च वृतिर्दीर्घं यस्या विवेष्टनं परितः' (वृ)।

पाडुक्क—१ समालंभन, शरीर पर चन्दन आदि का उपलेप। २ पटु, निपुण (दे ६।७६)।

पाडुच्चय—सजा हुआ अश्व (दे ६।३९ वृ)।

पाडुच्ची—अश्व-मंडन, अश्व को सजाना (दे ६।३९)।

पाडुहुअ—१ साक्षी (आवहाटी १ पृ ४२)। २ प्रतिभू, जमानत करने वाला (दे ६।४२)।

पाढा—वनस्पति-विशेष (भ २३।६)।

पाण—१ भाजन-विशेष—'पाणशब्देन भाजनविशेष उच्यते' (अनु ३।३८ टी)। २ चाण्डाल—'पाणा नाम ये ग्रामस्य नगरस्य च बहिराकाशे वसन्ति तेषां गृहाणामभावात्' (व्यभा ४।३ टी प २१; दे ६।३८)। ३ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

पाणंधि—आने-जाने का मार्ग—'पाणंधीति देशीपदमेतत् वर्तिनीवाचकं' (व्यभा ४।२ टी प ८)।

पाणद्धि—रथ्या, गली (दे ६।३६)।

पाणाअअ—श्वपच, चांडाल (दे ६।३८)।

पाणामा—१ सबको प्रणाम करने की पद्धति से अनुप्राणित प्रव्रज्या का एक प्रकार। (भ ३।३४)। २ वैनयिकवादियों का एक भेद (सूचू १ पृ २०७)।

पाणाली—दोनों हाथों का प्रहार (दे ६।४०)।

पाणी—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।४)।

पाण्णयिक—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २३७)।

पातंक—मुद्रा-विशेष, सिक्का (नंदीटि पृ १४२)।

पातिक—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

पातिज्ज—उत्सव विशेष (?) (अंवि पृ ६८)।

पादकुहडि—पैरों को हिलाना, आगे-पीछे करना, पैरों से कुचेष्टा करना—'हत्थणट्ट-पादकुहडि-सरीरमोडणाति परिहरंतो' (दअचू पृ १६६)।

पादखडुयग—पैर का आभूषण-विशेष, बिछुआ (अंवि पृ ६५)।

पापडक—पैरों का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६५)।

पापहिक—सर्प की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

पामद्दा—पैरों से धान्य को मसलना (दे ६।४०)।

पामाड—पमाड का पेड़ (पा ३७०)।

पामिच्च—उधार लिया हुआ—'कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं' (आ ८।२१)।

पामिच्चय—उधार लिया हुआ (आचूला १०।११)।

पामेच्छा—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ६२)।

पाय—१ रथ-चक्र, रथ का पहिया (दे ६।३७)। २ फणी, सांप।

पायंक—विशेष प्रकार का सिक्का—'पायंकाणं नाणगविसेसरूवाणं' (आवमटी प ५३०)।

पायड—आंगन (दे ६।४०)।

पायप्पहण—कुक्कुट, मुर्गा (दे ६।४५)।

पायय—घोषणा—'पायओ लंबिओ—जो हत्थि महइमहालयं तोलेइ तस्स य सयसहस्सं देमि' (आवहाटी १ पृ २८०)।

पायल—चक्षु, आंख (दे ६।३८)।

पारंक—मदिरा को मापने का पात्र-विशेष (दे ६।४१)।

पारंपर—राक्षस (दे ६।४४)।

पारदोच्च—चोरों का भय (बृभा ३६०५)—'पारदोच्चं चौरभयम्' (टी पृ १०७२)।

पारद्ध—१ पूर्वकृत कर्मों का परिणाम, प्रारब्ध। २ आखेटक, शिकारी (दे ६।७७)। ३ पीड़ित (ज्ञा १।१८।६२; दे ६।७७)। ४ विनाशित—'दिणकर-करपरंपरोयारफारद्धंमि अंधयारे' (ज्ञा १।१।२४)।

पारद्धि—शिकार—'मंसक्खाया पारद्धिणिग्गया' (निभा २५५३)।

पारमाणि—अत्यन्त कोप, परम क्रोध समुद्घात—'अप्पे वि पारमाणि, अवराधे वयति खामियं तं च' (बृभा ५२०७)।

पारय—मदिरा-पात्र (दे ६।३८)।

पाराई—लोहकुसी-विशेष (प्र ३।१३)।

पारावण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

पारावत—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

पारावर—गवाक्ष, झरोखा (दे ६।४३)।

पारिग—प्रावरण-विशेष (निचू २ पृ ४००)।

पारियल्ल—पहिए के पृष्ठ भाग की बाह्य परिधि—'संजम-तवतुंबारयस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स' (नंदी ५)।

पारियासिय—रात्रि का बासी भोजन—'पारियासियं णाम रातो पज्जुसियं' (निचू ३ पृ २८७)।

पारिहच्छी—माला (दे ६।४२)।

पारिहट्ट—चिरप्रसूता भैंस का दूध (ओटी प ४१)।

पारिहट्टी—१ द्वारपाल। २ आकर्षण। ३ चिरप्रसूता महिषी (दे ६।७२)।

पारिहिट्टि—चिरप्रसूता भैंस (ओटी प ४८)।

पारिहत्थी—१ माला (दे ६।४२)। २ शिरोमाल्य (वृ)। ३ पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

पारिहेरग—आभूषण-विशेष (जीव ३।५६३)।

पारी—१ पात्र-विशेष (जीव ३।५८७)। २ दूध दुहने का पात्र (दे ६।३७)।

पारुअग्ग—विश्राम (दे ६।४४)।

पारुअल्ल—पृथुक, चिउडा (दे ६।४४)—'तित्तिं ण मण्णासे पारुअल्लअसणम्मि' (वृ)।

पारुहल्ल—मालीकृत, श्रेणीरूप में स्थापित (दे ६।४५)।

पाल—१ कलवार, शराब बेचने वाला। २ जीर्ण, फटा-टूटा (दे ६।७५)।

पालंक—पालक का शाक (बृभा २०९४)।

पालक्क—पालक का शाक—'पालक्कं महरट्ठविसए गोल्लविसए य सागो जायइ इति विशेष-चूर्णौ' (बृटी पृ ६०३)।

पालप्प—१ विप्लुत, उपद्रुत। २ प्रतिसार—अपसरण, मरहमपट्टी, विनाश (दे ६।७६)।

पालिआ—१ खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ। २ तलवार की धार (पा २७५)।

पालिका—भाजन-विशेष (अंवि पृ ७२)।

पाली—१ दिशा, दिक् (दे ६।३७)। २ पल्योपम, समय का परिमाण-विशेष (उ १८।२८)। ३ धान्य मापने का नाप।

पालीक—भोज्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १०९)।

पालीबंध—तालाब (दे ६।४५)।

पालीहम्म—बाड, वृति (दे ६।४५)।

पालु—अपान (नि ३।४०)।

पालुकिमिय—अपान में उत्पन्न होने वाले कृमि (नि ३।४०)।

पाव—सर्प (दे ६।३८)।

पावक्खालय—मलोत्सर्ग का स्थान, पाखाना—'वयंस! पावक्खालयं पविसामो' (कु पृ ६७)।

पाववल्ली—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।२)।

पाविएक्क—आच्छादित (से ११।४८)।

पावीर—स्थान-विशेष (अंवि पृ १३६)।

पास—१ एक प्रकार का भाला—'तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा····पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया' (दश्रु १०।१४)। २ आंख। ३ शोभाहीन (दे ६।७५)। ४ दांत (वृ)। ५ अन्य वस्तु का मिश्रण।

पासणिअ—साक्षी (सू १।२।५०; दे ६।४१)।

पासल्ल—१ द्वार। २ तिर्यक्, वक्र (दे ६।७६)। ३ पार्श्व, समीप (से ६।३८)।

पासल्लइय—टेढा किया हुआ (से ६।७७)।

पासाणिअ—साक्षी (दे ६।४१)।

पासाला—भल्ली, छोटा भाला (दे ६।१४)।

पासावअ—गवाक्ष, झरोखा (दे ६।४३)।

पासिय—सुपारी (भ २२।२)।

पासी—जूड़ा, चोटी (दे ६।३७)।

पासुलिया—पार्श्व की हड्डी (अनु ३।५२)।

पासुलीय—पार्श्व की हड्डियों वाला (तंदु १४७)।

पासोअल्ल—टेढा, तिर्यक् (से ६।४७)।

पाहडिया—गर्भवती स्त्री—'पुणो पाहडियासंजतीवेसेण पुरतो ठितो' (दअचू पृ ५०)।

पाहुड—कलह—'पाहुडं कलहमित्यर्थः' (निचू ३ पृ ३८)।

पाहुडिया—१ सार्वजनिक स्थान जहां बलि आदि के पिंडार्थ बिखेरे जाते हैं (बृभा ५५४)। २ पापकारी प्रवृत्ति (बृभा १५३१)। ३ मकान की मरम्मत (बृभा १६७४)। ४ भिक्षा। ४ अर्चनिका—'प्राभृतिका भिक्षाऽपि भण्यते अर्चनिकाऽपि' (बृभा ५५८ टी)।

पाहुण—बेचने योग्य, विक्रेय (दे ६।४०)।

पाहुणय—संघ-स्थविर, कुल-स्थविर, गण-स्थविर—तीनों की संयुक्त संज्ञा (बृभा ३७२६)।

पाहुणिय—ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (निचू ३ पृ २२४ पा)।

पाहुणी—स्त्री-अतिथि (कु पृ ६६)।

पाहुय—श्रोत्रेन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

पाहेज्ज—पाथेय (दे ६।२४)।

पाहेण—उत्सव पर किया जाने वाला भोज-विशेष (जीभा १२३४)।

पाहेणग—जीमनवार में बनाई जाने वाली मिठाई, मोदक आदि (पिनि २८८)।

पिअण—दुग्ध, दूध (दे ६।४८)।

पिअमा—प्रियंगु-वृक्ष (दे ६।४६)।

पिअमाहवी—कोयल, कोकिला (दे ६।५१)।

पिउड—१ मांस का बचा हुआ भाग हड्डी आदि—'पोग्गले पिउडं' (बृभा १७११)। २ कचरे का ढेर—'पिउडं पुण उज्झं भण्णति' (निचू १ पृ १००)।

पिउली—१ कपास। २ रूई की पूनी (दे ६।७८)।

पिंगंग—बन्दर, मर्कट (दे ६।४८)।

पिंचु—पक्व करीर, पका करील (दे ६।४६)।

पिच्छोला—गृह-उपकरण-विशेष (अंवि पृ ७२)।

पिछोली—मुंह से हवा भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६।४७)।

पिंजरण—सजावट, शृंगार—'पाडुच्ची तुरयदेह पिंजरणं' (पा ६३१)।

पिंजरुड—दो मुंह वाला पक्षी, भारुंड पक्षी (दे ६।५०)।

पिंजिअ—विधुत, कंपित (दे ६।४६)।

पिंजिअय—विधुत, कंपित (दे ६।४६ वृ)।

पिंडरय—दाडिम (दे ६।४८ वृ)।

पिंडलइय—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४ वृ)।

पिंडलग—पटलक, पुष्प का भाजन (स्था ७।२२)।

पिंडिका—वर्तुलाकार नौका (अंवि पृ १६६)।

पिंडी—मञ्जरी (दे ६।४७)।

पिंडीर—दाडिम (दे ६।४८)।

पिसुली—मुंह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६।४७)।

पिक्खुर—म्लेच्छ जाति-विशेष (आवचू १ पृ १६१)।

पिगाण—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

पिचक—मत्स्य की एक जाति (अंवि पृ २२८)।

पिचुगाल—भीगे हुए गेहूं आदि का खाद्य (आवहाटी २ पृ २४३)।

पिच्च—पानी—'कोंकणादिषु पयः पिच्चं नीरमुदकमित्यादि' (प्रसाटी प २६२)।

पिच्चिय—कूटी हुई छाल—'पिच्चिउ त्ति वा, विच्चिउ त्ति वा कुट्टितो त्ति वा एगट्ठं' (निचू २ पृ ६८)।

पिच्छि—पिटारी (राज ७७२ पा)।

पिच्छिली—लज्जा (दे ६।४७)।

पिच्छी—जूड़ा, चोटी (दे ६।३७)।

पिच्छोला—बांस की कोमल छाल से बनी हुई बांसुरी जिसे दांतों में बाएं हाथ से पकड़कर दाएं हाथ से वीणा की भांति बजाया जाता है (सूचू १ पृ ११६)।

पिट्ट—पेट, उदर (बृभा ५९८५)।

पिट्टापिट्टी—मारपीट, झगड़ा (निचू ३ पृ ४१)।

पिट्ठ—मिट्टी का पात्र—'पिट्ठं पुढविकायभायणं' (निचू ३ पृ ४८४)।

पिट्ठंत—गुदा (नि ६।१४; दे ६।४९)।

पिट्ठखउरा—कलुषित सुरा, पंकसुरा (दे ६।५०)।

पिट्ठखउरिआ—मदिरा, दारु (पा ६३६)।

पिडच्छा—सखी, सहेली (दे ६।४९)।

पिडालुकि—लता-विशेष (अंवि पृ ७०)।

पिणाअ—बलात्कार (दे ६।४९)।

पिणाई—आज्ञा, आदेश (दे ६।४८)।

पिण्णिया—श्यामक नाम का गंध-द्रव्य (उशाटी प १४२)।

पिण्ही—क्षामा, कृश स्त्री (दे ६।४६)।

पितुच्छा—सखी (आवचू १ पृ १७६)।

पिपिल्ली—यान-विशेष (जीवटी प १५२)।

पिप्पअ—१ मशक, मच्छर। २ उन्मत्त (दे ६।७८)। ३ पिशाच (पा ३९)।

पिप्पडा—ऊन में होने वाली कीड़ी (दे ६।४८)।

पिप्पडिअ—जो बडबडाया हो, निरर्थक उल्लपित (दे ६।५०)।

पिप्पर—१ वृषभ, बैल। २ हंस (दे ६।७९)।

पिप्पल—छोटा चाकू (विपा १।६।२२)।

पिप्पलमालिका—गले का एक आभूषण (अंवि पृ ७१)।

पिब्ब—पानी, जल (दे ६।४६)।

पियंगाल—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

पिरली—तृणमय वाद्य-विशेष (जीव ३।५८८)।

पिरिडी—शकुनिका, चील (दे ६।४७)।

पिरिपिरिया—वाद्य-विशेष—'कोलिकपुटकावनद्धमुखो वाद्य-विशेषः' (भटी प २१६)।

पिरिली—पक्षिणी-विशेष (अंवि पृ ६९)।

पिलग—पक्षी-विशेष (जंबू २।१३६)।

पिलज—जलचर पक्षि-विशेष—'जधा ढंका य कंका य पिलजा मग्गुका सिही' (सू १।११।२७)।

पिलण—फिसलने वाला स्थान, चिकना स्थान (दे ६।४९)।

पिलय—पक्षी-विशेष (अंवि पृ ६२)।

पिला—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

पिल्ल—शिशु, बच्चा (दे ६।४६ पा)।

पिल्लक—१ बालक—'बालको दारको व त्ति सिगको पिल्लको त्ति वा' (अंवि पृ ९७)। २ हीन अंगवाला (अंवि पृ १५३)।

पिल्लग—शिशु, बच्चा (पंक ५३०)।

पिल्लणा—उभरा हुआ—'अइसिरिभरपिल्लणा विसप्पंत-कंत-सोहंत-चारुककुहं' (दथु ८।२२)।

पिल्लिका—बालिका (अंवि पृ ६८)।

पिल्लितेल्लय—अत्यन्त भयभीत—'ताए सो पिल्लितेल्लओ' (आवचू १ पृ ३१९)।

पिल्लिय—१ ग्रस्त, पीड़ित (निचू १ पृ ८१)। २ बालक, शिशु (उशाटी प १२१)। ३ भीत (आवहाटी १ पृ १५०)।

पिल्लिरी—१ गंडुत् नाम का तृण। २ चीरी, झींगुर। ३ घर्म, पसीना (दे ६।७९)।

पिल्ह—पक्षियों के बच्चे, लघुपक्षी (दे ६।४६)।

पिल्हय—पक्षी का शिशु—'पाडलसउणयपिल्हय ! तुमयं मरुमण्डलम्मि मा वच्च' (दे ६।४६ वृ)।

पिविपिण—मत्स्य-जाति-विशेष (अंवि पृ ६३)।

पिवियाइय—पिलाया—'भगवतो इक्खुरसं पिवियाइया' (आवमटी प १९२)।

पिसल्ल—पिशाच (प्रटी प २५)।

पिसल्लय—पिशाच (प्रटी प १६२)।

पिसायक—धूम्रपान का साधन-विशेष (अंवि पृ २५४)।

पिसुग—क्षुद्र कीट-विशेष, चींचड़ (जीव ३।६२४)।

पिसुणिय—कथित (पा १४५)।

पिहंड—१ वाद्य-विशेष। २ विवर्ण (दे ६।७९)।

पिहय—नौका खेने का काष्ठ-विशेष (आचूला ३।१६)।

पिहुण—मोरपंख (द ४।२१)।

पिहुणभिंजिया—पिहुणभज्जा, मध्यवर्ती अवयव—'पिहुणभिंजियाइ वा भिसेइ वा मुणालियाइ वा' (राज २६)।

पिहुणहत्थ—मोरपिच्छी (नि १७।१३२)।

पिहुल—मुंह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६।४७)।

पिहोअर—कृश (दे ६।५०)।

पीइ—तुरंगम, अश्व (दे ६।५१)।

पीडरइ—चोरपत्नी (दे ६।५१)।

पीडोलक—लता-विशेष (अंवि पृ ३०)।

पीढ—१ राज्य-कर्मचारी (आवचू १ पृ ४८०)। २ ईख पेरने का यंत्र (दे ६।५१)। ३ समूह, यूथ। ४ पीठ, शरीर के पीछे का भाग।

पीढमद्द—१ मुंह पर मीठा बोलने वाला—'पीठमर्दा नाम मुखप्रिय-जल्पाः' (व्यभा ६ टी प ८)। २ सभामंडप में राजा के समीप बैठने वाले अधीनस्थ राजा या मित्रराजा—'पीठमर्दाः—आस्थाने आसीनासीनसेवकाः, वयस्या इत्यर्थः' (ज्ञाटी प २६)। ३ समवयस्क तथा प्रीतिबहुल महाराजपुत्र जो सदा राजा के निकट बैठते हैं (आवचू १ पृ २४५)। ४ महान् राजा—'दासीदासपरिवुडो परिकिण्णो पीढमद्देहिं' (आवभा ६६; टी पृ १२१)।

पीढमुद्द—मुंह पर प्रिय बोलने वाला—'पीढमुद्दा मुहपियजंपगा' (व्यभा ६ टी प ८)।

पीण—चतुष्कोण (दे ६।५१)।

पीणक—प्याले के आकार का पात्र (अंवि पृ ६५)।

पीणाइय—गर्व से किया हुआ—'पीणाइय-विरस-रडिय-सद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं' (ज्ञा १।१।१५६)।

पीणाया—गर्व, हठ (ज्ञाटी प ७३)।

पीरव्वायणी—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ १८७)।

पीरिपीरिया—वाद्य-विशेष (आचूला ११।४)।

पीलु—दूध—'दुद्धं पओ पीलु खीरं च' (पिनि १३१)।

पीलुट्ठ—जला हुआ, दग्ध (दे ६।५१)।

पीहग—दूध आदि (आवचू १ पृ ३६१)।

पोहय—नवजात शिशु को पिलाई जाने वाली वस्तु (बृटी पृ ५६)।
पुअंड—तरुण—'पुअंडमंडलइं ति' (कु पृ १६६; दे ६।५१)।
पुआइ—१ तरुण। २ उन्मत्त। ३ पिशाच (दे ६।८०)।
पुआइणी—१ भूताविष्ट महिला, पिशाचगृहीता (दे ६।५४)। २ उन्मत्त स्त्री। ३ दुःशीला, कुलटा (वृ)।
पुंजाय—ढेर किया हुआ,—'पुंजायं पिंडलइयं' (पा ६२२)।
पुंडइअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।
पुंडे—जाओ (दे ६।५२)।
पुंढ—गर्त्त, गढा (दे ६।५२)।
पुंपुअ—संगम (दे ६।५२)।
पुंफली—वल्ली-विशेष (भटी पृ १४८३)।
पुंसुलिया—पार्श्व की हड्डी—'तह छ पुंसुलिए होइ कडाहे' (प्रसाटी प ४०३)।
पुक्कली—देश-विशेष की दासी (भ ६।१४४ पा)।
पुक्का—जोर से आवाज करना, पुकारना (पा ६२१)।
पुक्कार—आवाज (जीभा १७२२)।
पुक्खरविग—वनस्पति-विशेष (आचू पृ ३४१)।
पुक्खलग—जल में होने वाली वनस्पति-विशेष (आचू पृ ३४१)।
पुक्खलच्छिभग—जलीय-वनस्पति-विशेष (सू २।३।४३)।
पुगारिया—वस्त्र को काटने वाले जंतु-विशेष—'मा से पुगारियाइं खज्जेज्ज' (सूचू १ पृ ११६)।
पुच्चड—अत्यन्त सघन (प्र १।२३)।
पुच्छलक—कंठ का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६२)।
पुच्छिय—धान्य-भाजन-विशेष (आवहाटी १ पृ २६०)।
पुट्ट—उदर, पेट (प्रसा ८८०)।
पुट्टलिका—पोटली, छोटी गठरी (आवचू २ पृ० १८४)।
पुट्ठ—पोंछा हुआ (बृभा १७३४)।
पुडइअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।
पुडइणी—नलिनी, कमलिनी (दे ६।५५)।
पुडग—तन्तु—'लूतापुडगंपि—लूतातन्तुमपि' (आवहाटी १ पृ १६२)।
पुडपुडि—मुंह से सीटी बजाना (प्रसा ४३६)।
पुडाली—फटी हुई जमीन (आचू पृ ३३७)।

पुंडिग—१ मुख । २ बिन्दु (दे ६।८०) ।

पुडिया—गुच्छा—'पुप्फपुडियाइ जं पइ, गोरसघडओ करेइ कज्जाइं ।
मणिबंधम्मि पयलिते, साणुग्गह होंति सव्वगहा ॥' (बृटी पृ १०) ।

पुणइ—श्वपच, चांडाल (दे ६।३८) ।

पुण्णवत्त—खुशी से हृत वस्त्र (दे ६।५३) ।

पुण्णाली—असती, कुलटा (दे ६।५३) ।

पुताई—पागल स्त्री (बृभा६०५३) ।

पुताकी—उन्मत्त स्त्री—'पुताकी देशीवचनत्वाद् उद्भ्रामिका'
(बृटी पृ १५९७) ।

पुत्त—१ कटि-वस्त्र, धोती (बृटी पृ ५३) । २ वस्त्र (बृटी पृ ११२३) ।

पुत्तंजीवय—जियापोता का वृक्ष जिसके बीजों की या फूलों की माला बच्चों
को स्वस्थ रखने के लिए गले में पहनाते हैं
(प्रज्ञाटी प ३१) ।

पुत्तल—पुतला—'दब्भमया पुत्तला उ कायव्वा' (आवहाटी २ पृ ९६) ।

पुत्तलग—पुतला (निचू १ पृ ६३) ।

पुत्तलिया—पुतलिका—'विंधेहि पुत्तलियं' (उशाटी प १४९) ।

पुत्तल्ल—पुतला (निचू १ पृ ६८) ।

पुत्तल्लग—पुतला—'मंतेऊण व विंधइ पुत्तल्लगमादि पडिणीए'
(निभा १६७) ।

पुत्तिगा—पुतली (सूचू १ पृ ११८; दे ६।९२) ।

पुत्तिया—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२) ।

पुत्ती—वस्त्र (उशाटी प ८) ।

पुत्तुय—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०९) ।

पुत्थ—मृदु (दे ६।५२) ।

पुप्पुअ—पीन, पुष्ट (दे ६।५२) ।

पुप्फय—पीछे (आवहाटी २ पृ १०२) ।

पुप्फल—गंध द्रव्य-विशेष (भक्त ४२) ।

पुप्फसि—फेफड़ा (आवचू १ पृ० ३०) ।

पुप्फा—फूफी, पिता की बहिन (दे ६।५२) ।

पुप्फिआ—बुआ, फूफी (पा ८७१) ।

पुप्फितिका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१) ।

पुयलइ—कंद-विशेष (भ २३।१)।

पुयली—पुत-प्रदेश (भ १५।१२०)।

पुरओट्टी—रुई का वस्त्र-विशेष—'रुतपूरितः पटः पुरओट्टी यदुच्यते' (जीविप पृ ५१)।

पुराण—सिक्का, कार्षापण (अंवि पृ ६६)।

पुरिम—प्रस्फोटन-प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (ओनि २६५)।

पुरिल्ल—१ प्रवर, श्रेष्ठ (दे ६।५३)। २ पूर्ववर्त्ती (विभा १३२९)। ३ अग्रगामी (से १३।२)।

पुरिल्लदेव—असुर, दानव (दे ६।५५)।

पुरिल्लपहाणा—सांप की दाढ (दे ६।५६)।

पुरुपुरिआ—उत्कंठा (दे ६।५५)।

पुरुस—कुम्भकार—'पुरुषः कुम्भकारः' (व्यभा १० टी प ६६)।

पुरुहूअ—घूक, उल्लू (दे ६।५५)।

पुरोहड—१ घर का पिछला भाग (बृभा २०५९)। २ अग्रद्वार (ओनि ६२२)। ३ विषम। ४ चारदीवारी से घिरा हुआ मकान (दे ६।१५)। ५ पच्छोकड—पिछले भाग में उभरा हुआ (?) (वृ) ६ गृह का कूडा-करकट डालने का स्थान (आचू पृ ३७०)। ७ बाड़ा, वाटक (बृटी २)।

पुल—फोडा-फुंसी (स्था १०।१५९)।

पुलइय—दृष्ट, देखा हुआ (पा १३५)।

पुलंपुल—१ प्रभूत—वरफेणपउरधवलपूलंपुल-समुट्ठियट्टहासं' (प्र ३।७३)। २ अनवरत—'पुलंपुलप्पभूयरोगवेयण' (प्र ३।२३)।

पुलग—१ टुकड़ा, अंश। २ सार, वर्णातिशय (ज्ञाटी प १०)।

पुलय—गति-विशेष (भटी प ८८१)।

पुला—अपान (प्रज्ञा १।४९)।

पुलाकिमिय—द्वीन्द्रिय जंतु, अपान प्रदेश में उत्पन्न होने वाले कृमि—'पुलाकिमिया नाम पायुप्रदेशोत्पन्नाः कृमयः' (जीवटी प ३१)।

पुलासिअ—अग्नि का कण, स्फुलिंग (दे ६।५५)।

पुलोअण—विलोकन, देखना (दे ६।३०)।

पुल्ल—पोल, शुषिर (आचू पृ ३६२)।

पुल्लि—१ व्याघ्र। २ सिंह (दे ६।७९)। हुली (कन्नड)।

पुव्वड—दुर्बल (निरटी पृ ३४)।

पुव्वाड—पीन, पुष्ट (दे ६।५२)।

पुव्विय—हलवाई, कंदोई—एगं पुव्वियावणे मोयगं गहाय इंदसीले ठवेहि' (आवहाटी १ पृ २७८)।

पुव्विल्लय—पूर्वज (उशाटी प १३०)।

पूअ—दही (दे ६।५६)।

पूआ—भूताविष्ट महिला (दे ६ ५४)।

पूइआलुग—जलीय वनस्पति-विशेष (आटी प ३४८)।

पूइकरंज—एक अस्थिवाला वृक्ष (प्रज्ञा १।३५)।

पूइय—१ वनस्पति-विशेष (भ २२।२)। २ हलवाई—'एवं सलाहिज्जंतो बलो गओ पूइयावणं' (उसुटी प ४०)।

पूंडरिअ—कार्य (दे ६।५७)।

पूडलग—पूआ, खाद्य-विशेष (निचू १ पृ १५)।

पूण—हाथी, गज (दे ६।५६)।

पूणअ—छींके का ढक्कन—सिक्कयंतयं णाम तस्सेव पिहणं, मा तत्थ संपातिमा पडिस्संति, सो तु 'पूणउ' त्ति देसीभासाते वुच्चति' (निचू २ पृ ३६)।

पूणिआ—पूनी, रूई का पहल (दे ६।७८)।

पूणी—पूनी, रूई की पहल (दजिचू पृ १४६; दे ६।५६)।

पूतणा—मादा पक्षि-विशेष (अंवि पृ ६६)।

पूतरग—त्रस प्राणी-विशेष (निचू ४ पृ ५४)।

पूतिआलुग—जलीय वनस्पति-विशेष (आचूला १।११३)।

पूतिकरंज—पुष्प और फल वाला वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३२)।

पूतिल—फल-विशेष (अंवि पृ २३२)।

पूयणा—भेड़—'पूयणा णाम ओरणीया' (सूचू १ पृ ६८)।

पूयलिया—पूपिका, खाद्य-विशेष (आचूला १।११६)।

पूयली—रोटी (उचू पृ १७५)।

पूरण—१ खाद्य-पदार्थ, पूरणपोली (उपाटी पृ २२)। २ छाज, शूर्प (दे ६।५६)।

पूरिमंस—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

पूरी—१ हाथी की पीठ पर बिछाया जाने वाला आस्तरण—'पूरी पल्हवी हस्त्यास्तरणम्' (जीविप पृ ५१)। २ तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ६।५६)।

पूरोट्टी—अवकर, कूड़ा-करकट (दे ६।५७)।

पूलिय—घास का पूला—'जइ अग्गिम्मि वि पवले खडपूलिय खिप्पमेव झामेइ' (म २६२)।

पूलिया—खाद्य पदार्थ-विशेष (निचू १ पृ २६)।

पूस—१ फली-विशेष (भ २२।६)। २ सातवाहन राजा। ३ शुक, तोता (दे ६।८०)।

पूसअ—तोता (पा २६१)।

पूसमाणय—मंगल-पाठक (भ ६।२०८)।

पेंड—१ टुकड़ा, खंड। २ वलय (दे ६।८१)।

पेंडअ—१ तरुण (दे ६।५३)। २ नपुंसक—'पेंडओ षण्ढ इत्यन्ये' (वृ)।

पेंडधव—खड्ग, तलवार (दे ६।५६)।

पेंडपाली—स्थान-विशेष (अंवि पृ २३३)।

पेंडबाल—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पेंडल—रस (दे ६।५८)।

पेंडलिअ—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पेंडार—१ गो-पाल, गायों को पालने वाला (दे ६।५८)। २ महिषी-पाल, महिषियों को पालने वाला—'पेंडारो गोपः। पेंडारो महिषीपाल इति देवराजः' (वृ)।

पेंडिका—खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

पेंडी—मंजरी (अंवि पृ २३६)।

पेंडोली—क्रीड़ा (दे ६।५६)।

पेंढा—कलुष-मदिरा, पंकसुरा (दे ६।५०)।

पेच्चुका—कण्ठ का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६३)।

पेच्छअ—दृष्टमात्र का अभिलाषी, जो देखे उसी को चाहने वाला (दे ६।५८)।

पेच्छग—प्रत्युत्—'किं कज्जं तुमं न रुट्ठो, पेच्छगं मम पूएसि, पाएसु य पडसि' (निचू ४ पृ ३१२)।

पेज्जल—प्रमाण (दे ६।५७)।

पेज्जाल—विपुल, विशाल–'सोहइ मइंदरुंदं णियंबबिंबं इमस्स पेज्जालं' (कु पृ १८२; दे ६।७)।

पेट्टग—सेवक आदि को राजकुल से दिया जाने वाला भोजन–'रायकुलातो पेट्टगादि भत्तं णिग्गच्छति' (निचू २ पृ ४५५)।

पेडइअ—धान्य आदि बेचने वाला वणिक् (दे ६।५९)।

पेडय—समूह–'तम्मि य गामे एक्कं णडपेडयं' (कु पृ ४६)।

पेडु—महिष, भैंसा (दे ६।८० वृ)।

पेड्डा—१ भींत। २ द्वार। ३ महिषी, भैंस (दे ६।८०)।

पेढाल—१ विपुल (दे ६।७)। २ वर्तुल–'पेढालं वर्तुलमिति द्रोणः' (वृ)।

पेढी—बैठने का आसन या स्थान-विशेष (बृटी पृ ५२६)।

पेया—बृहत् वाद्य-विशेष–'पेया नाम महती काहला' (राज ७१ टी पृ १२६)।

पेयाल—१ प्रधान, मुख्य–'सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा.....' (उपा १।३१)। २ विचार–'सुहं मोच्छिइ व सुदिट्ठपेयालो' (विभा १३६१)। ३ प्रमाण (विभा १६९ टी; दे ६।५७)। ४ सार (स्थाटी प २०३)। ५ भरण-पोषण की चिन्ता–'एयस्स पेयालं गहिएल्लयं' (सूचू १ पृ ११९)। ६ प्रसिद्ध (अंवि पृ ६४)। ७ परिमाण (व्यभा ४।३ टी प ३२)।

पेयालणा—परिमाण की विवक्षा–'पज्जवपेयालणापिंडो' (पिनि ६५)।

पेयालन—परिज्ञान, अभिगमन, ज्ञात–पेयालनं परिज्ञानं अभिगमनमित्यर्थः' (आवचू १ पृ ५५२)।

पेयालिय—१ विचारित–'पेयालियगुणदोसो जोग्गो जोग्गस्स भासेज्जा' (विभा १४८२)। २ परिपूर्ण (अंवि पृ २४१)।

पेरण—१ ऊर्ध्व-स्थान, ऊंचा स्थान (दे ६।५९)। २ खेल तमाशा।

पेरिज्ज—सहायता, मदद (दे ६।५८)।

पेरुंड—पर्वकाण्ड, नाल–'तए णं ते सालीसल्लइयपत्तइया हरियपेरुंडा जाया' (ज्ञा १।७।१४)।

पेरुल्लि—पिंडीकृत, एकत्रित (दे ६।५४)।

पेलग—शिर का आभूषण-विशेष (अंवि पृ २४२)।

पेलु—पूणी, रूई की पहल–रूयपडलं पिंजियं तमेव वलितं पेलू भण्णति' (निचू २ पृ ३२६)।

पेलुकरण—पूनी कातने का उपकरण-विशेष जिसे महाराष्ट्र में पेलु कहते हैं—'पेलुकरणादि लाटविषये रूतप्राणिका, महाराष्ट्रविषये सैव पेलुरित्युच्यते (सूचू १ पृ ५ टि)।

पेल्लग—बालक, बच्चा (उचू पृ ८८)।

पेल्लण—१ क्षेपण। २ पीडन (उसुटी प ३४)। ३ आक्रमण—'पेल्लणं अक्कमणं' (निचू ४ पृ १४०)।

पेल्लय—बच्चा, शिशु (विपा १।२।६८)।

पेल्लिका—गृह-उपकरण-विशेष (अंवि पृ ७२)।

पेल्लित—१ लूट लिया—'जणे गते गोट्ठील्लएहिं घरं पेल्लितं' (आवहाटी २ पृ २२१)। २ आक्रान्त—'अवि अंबखुज्ज पादेण पेल्लितो अंतरंगुलगओ वा' (निभा ६२८)।

पेल्लिय—१ शिशु (जीभा ५३६)। २ पीड़ित (जीभा १३७; दे ६।५७)। ३ क्षिप्त, पातित (व्यभा ४।२ टी प २०)।

पेस—१ कार्य, प्रयोजन (दश्रु ६ गा २८)। २ सिन्धु देश के सूक्ष्म चर्म वाले पशुओं की चमड़ी से निष्पन्न वस्त्र (आचूला ५।१५)—'पेसाणि त्ति सिन्धुविषय एव सूक्ष्मचर्माणः पशवः तच्चर्मनिष्पन्नानि' (टी प ३९३)।

पेसण—कार्य (ज्ञा १।७।२६; दे ६।५७)।

पेसणआरी—दूती, दूतकर्म करने वाली (दे ६।५९)।

पेसणकारिया—बाहरी कार्यों को निपटाने के लिए नियुक्त स्त्री—'बाह्यानि प्रेषणानि कर्माणि करोति या सा' (ज्ञाटी प १२६)।

पेसलेस—सिन्धु देश के पेश नामक पशु-चर्म के सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र (आचूला ५।१५)।

पेसी—फल का चतुर्थांश (आचू पृ ३६७)।

पेहुण—१ मोर-पंख—'पेहुणं मोरपिच्छगं वा'। २ अन्य किसी भी पक्षी का मोर जैसा पंख—'अण्णं किंचि वा तारिसं पिच्छं' (दजिचू पृ १५६)। ३ मयूर-पिच्छ से निष्पन्न—'पेहुणं मोरगं' (दअचू पृ ८९)। ४ पिच्छ, पंख—'पिच्छम्मि पेहुणं' (दे ६।५८)। ५ एक प्रकार की वनस्पति (बृभा ४६३८)।

पेहुणमिंजा—मध्यवर्ती अवयव—'पेहुणमिंजाति वा भिसेति वा मिणालियाति वा' (जीव ३।२८२)।

पोअ—१ धव का वृक्ष। २ छोटा सांप (दे ६।८१)।

पोअइआ—निद्राकरी लता (दे ६।६३)।

पोअंड—१ तरुण–'जुवाणो जोव्वणत्थो वा पोअंडो पुरिसो त्ति वा' (अंवि पृ ६२)। २ भयमुक्त, अभय (दे ६।६१)। ३ नपुंसक (वृ)।

पोअंत—शपथ (दे ६।६२)।

पोअड—उदग्र, कर्मठ (अंवि पृ ६८)।

पोअलअ—१ आश्विन मास का एक विशेष उत्सव जिसमें पति अपनी पत्नी के हाथ से लेकर अपूप खाता है। २ अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६।८१)। ३ बालवसन्त—यदाह–'भर्त्ता भुङ्क्तेऽपूपं यत्र गृहिण्याः करात् समादाय। आश्वयुजे पोअलओ स उत्सवोऽपूपभेदश्च॥ पोअलओ बालवसन्त इत्यन्ये' (वृ)।

पोआअ—गांव का मुखिया, ग्राम-प्रधान (दे ६।६०)।

पोआल—१ शिशु (ओनि ४४७)। २ वृषभ, बैल (दे ६।६२)।

पोइअ—१ निमग्न (ओनि १३७)। २ स्पंदित–'देशीवचनत्वादितस्ततः स्पन्दितं।' ३ त्रासित (बृभा १४५६ टी पृ ४३४)। ४ हलवाई (दे ६।६३) ५ जुगनू (वृ)।

पोइआ—निद्राकरी लता (दे ६।६३)।

पोइत—त्रासित–'पोइता त्रासिताः इति चूर्णौ विशेषचूर्णौ च' (बृटी पृ ४३४)।

पोइयल्लय—पिरोया हुआ (ओटी प १८०)।

पोई—निद्राकरी लता (प्रज्ञाटी प ३४)

पोउआ—करीषाग्नि, कंडे की आग (दे६। ६१)।

पोंगिल्ल—१ परिपूर्ण, खचित–'दीसंति जीय एए पासाया रयणपोंगिल्ला' (कु पृ १६०)। २ परिपक्व।

पोंट—घूंट–'खिप्पं पाणियं पाउं लग्गो·····कहवि पोंटे (घोट्टे) करिता पलातो' (व्यभा ४।१ टी प १८)।

पोंड—१ फल–'सामलीपोंडघणनिचिय·····' (प्र ४।७ टी प ८२)। २ फूल–'एगं सालियपोंडं बद्धो आमेलगो होइ' (उनि ३)। ३ अविकसित कमल (विभा १४२५)। ४ कपास (अनुद्वाहाटी पृ २१)। ५ यूथ का अधिपति (दे ६।६०)।

पोंडइ—फल-विशेष (भ २२।४)।

पोंडग—अविकसित कमल (आवचू १ पृ २२३)।

पोंडय—कपास–'पोंडयं कप्पासो' (निचू २ पृ ३८)।

पोंडरीय—लोमपक्षी (जीवटी प ४१)।

पोक्क—पुकारने वाला, बुलाने वाला (निचू २ पृ १८)।

पोक्कड—पुकार (जीभा १३३२)।

पोक्कण—'पोक्कण' देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति (प्रटी प १५)।

पोक्कसालिय—जुलाहा (आचूला १।२३)।

पोक्खलत्थिभय—जलीय वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

पोच्च—सुकुमार (दे ६।६०)।

पोच्चड—१ जुगुप्सित (ज्ञा १ ८।७२)। २ असार—'मयूरीअंडए····पोच्चडे जाए' (ज्ञा १।३।२२)। ३ मलिन—'पोच्चडं—मइलं' (निचू ३ पृ २७०)। ४ अत्यंत सघन—'पोच्चडं ति अतिनिबिडम्' (प्रटी प १६)।

पोच्चडग—निस्सार, मलिन—'असारः मलिनं वा देशीभाषायाम्' (निचू ३ पृ २८)।

पोट्ट—पेट—'पोट्टत्ति देश्यत्वाद् उदरम्' (जंबूटी प १२५; दे ६।६०)

पोट्टल—१ पोटली—'अतिपरिणामो पोट्टल बंधूणं आगतो तत्थ' (जीभा ५७७)। २ राशि, समूह—'पुप्फरासी णिगरो वा पुप्फाणं पोट्टलो त्ति वा' (अंवि पृ ६४)।

पोट्टलि—पोटली (व्यभा ६ टी प २)।

पोट्टलिका—पोटली (अंवि पृ २१६)।

पोट्टलिय—पोटली उठाने वाला, भारवाहक—'भारवहा पोट्टलिया वाहगा' (निचू ४ पृ ११०)।

पोट्टलिया—गठरी (आवहाटी २ पृ १३६)।

पोट्टसरणी—अतिसार रोग—'खाइत्ता रत्तिं पडिमं ठिओ,····पोट्टसरणी जाया' (आवहाटी २ पृ १३६)।

पोट्टह—गठरी-वाहक (अंवि पृ ६२)।

पोडइला—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

पोणअ—छींके का आच्छादन (निभा ६४५)।

पोणिअय—पूर्ण (दे ६।२८)।

पोणिआ—सूते से भरा हुआ तकुवा (दे ६।६१)।

पोतलय—बछडा, बच्चा—'तिवरिसा गोणपोतलया हट्ठसरीरा उवट्ठिया' (आवहाटी १ पृ १३२)।

पोति—निवसन, अधोवस्त्र (अनुद्धाचू पृ ४८)।

पोतित—१ स्पन्दित—'पोतितं ति देशीवचनत्वादितस्ततः स्पन्दितम्' २ त्रासित (बृटी पृ ४३४)।

पोतिय—हलवाई (निचू ३ पृ १०६)।

पोत्तअ—वृषण, अण्डकोश (दे ६।६२)।

पोत्तग—सूती वस्त्र (आचूला ५।१)।

पोत्तणय—वस्त्र-विशेष (जीभा १७६६)।

पोत्तय—रूई से निष्पन्न वस्त्र—'साणयं पोत्तयं खोमियं' (आचूला ५।१७)।

पोत्तिय—१ रूई से निष्पन्न वस्त्र (स्था ५।१६०)। २ तापसों का एक प्रकार (औप ६४)।

पोत्तिया—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (भ १५।१८६)।

पोत्ती—१ वस्त्र (भ ६।१८८)। २ काच (दे ६।६३)।

पोत्तुल्लया—वस्त्रमय पुतली (ज्ञा १।१८।८)।

पोदइल—तृण-विशेष (भ २१।१६)।

पोप्पण—हाथ का स्पर्श (आवचू १ पृ ६०)।

पोप्पय—हाथ का स्पर्श—'तेण उदरपोप्पयं करेंतेणं कहवि सा जोणिद्वारे हत्थेण आहता' (आवहाटी १ पृ ४४)।

पोप्फस—फेफड़ा, शरीर का अवयव-विशेष (प्र १।११)।

पोम—कुसुम्भ-रक्तवस्त्र—'पोमं ति कुसुंभयं' (निचू १ पृ १००)।

पोमर—कुसुम्भ से रंगा हुआ वस्त्र (दे ६।६३)।

पोयलि—पूआ (दअचू पृ ११४)।

पोया—वाद्य-विशेष (भ ५।६४)।

पोयाल—१ बच्चा, शिशु (ओनि ४४७)। २ वृषभ, बलिवर्द (व्यभा ४।१ टी प २०)।

पोर—पर्व (व्यभा ८ टी प ४)।

पोरग—हरित वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४।१)।

पोरच्छ—दुर्जन (दे ६।६२)।

पोरय—खेत, क्षेत्र (दे ६।२६)।

पोरायाम—अंगूठे के पर्व पर तर्जनी अंगुली के रखने पर जितनी पोलाल रहती है वह (ओनि ७०७)।

पोरु—गांठ (सूचू २ पृ ३७६)।

पोरुस—शरीर का अवयव-विशेष (अंवि पृ १३४)।

पोलंडण—प्रोल्लंघन (ज्ञा १।१।१८६)।

पोलंडिअ—प्रोल्लंघित (ज्ञा १।१।१५५)।

पोलच्चा—हल से कृष्ट भूमि, खेटित भूमी (दे ६।६३)।

पोलिअ—सौनिक, कसाई (दे ६।६२)।

पोलिंदि—पुलिन्द देश की लिपि (प्रज्ञा १।९८)।

पोलिया—पूरी, पोलिका—'संपुण्णचंदमण्डलसरिसं पोलियं लहेसि' (उशाटी प १४७)।

पोल्ल—पोला, शुषिर—'पोल्लरुक्खेसु अंतो-अंतो झियायमाणेसु' (ज्ञा १।१।१५६)।

पोल्लक—कटनिवर्तक लोहमय उपकरण-विशेष (आवहाटी १ पृ ३०४)।

पोल्लड—शुषिर, पोला—'वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य' (ओनि ७३५)।

पोल्लडय—पोल (निचू २ पृ ३६६)।

पोवलक—खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

पोवलिया—पूपलिका—'पोवलियं-पोलिकां' (आवहाटी १ पृ २२६)।

पोसंत—योनि (नि ६।१४)।

पोसय—उपस्थ (स्था ६।२४)।

पोसिय—१ पूगफल, सुपारी (भ २२।२ पा)। २ दरिद्र, निर्धन (दे ६।६१)।

पोह—भैंस, बैल आदि का गोबर (पिनि २४५)—'महिषी समागत्य छगणपोहं मुक्तवती' (टी प ८३)। 'पोठा' (राजस्थानी)।

पोहट्टी—स्त्री, युवती—'अंगणा महिला नारी पोहट्टी जुवति त्ति वा' (अंवि पृ ६८)।

पोडण—लघु मत्स्य (दे ६।६२)।

प्रेयंड—धूर्त्त (दे १।४ वृ)।

फ

फंडण—प्रवेश–'अगणिफंडणट्ठाणेसु' (आचूला १०।१६)।

फंफसअ—एक प्रकार की लता (दे ६।८३)।

फंसण—१ युक्त। २ मलिन (दे ६।८७)।

फंसुल—मुक्त, त्यक्त (दे ६।८२)।

फंसुली—नवमालिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ६।८२)।

फग्ग—बसन्त का उत्सव, फगुआ (दे ६।८२)।

फग्गुपुग्ग—बिखरे हुए केश वाला (उपा २।२१ पा)।

फट्ट—फटा हुआ–'महला फट्टा कुसंघाडी' (निचू २ पृ २६६)।

फड—१ सांप का पूरा शरीर। २ सांप का फण (दे ६।८६)।

फडही—कपास (दे ६।८२ पा)।

फड्डु—१ गणावच्छेदक के अधीन एक छोटा गण–'गच्छागच्छि गुम्मागुम्मि फड्डाफड्डि' (औप ४५ टी)। २ अवधिज्ञान का निर्गमस्थान–'फड्डा य असंखेज्जा' (विभा ७३८)। ३ पृथक्-पृथक्–'फड्डगफड्ड पवेसो' (बृभा १५६४)।

फड्डुक—१ अवधिज्ञान का निर्गम स्थान। २ द्वार आदि का छोटा छिद्र–'इह फड्डुकानि अवधिज्ञाननिर्गमद्वाराणि अथवा गवाक्षजालादिव्यवहितप्रदीपप्रभाफड्डुकानीव फड्डुकानि' (आवहाटी १ पृ २६)। ३ गणावच्छेदक के अधीन एक छोटा गण (औपटी पृ ८६)। ४ विभाग, अंश (ओटी पृ २०६)।

फड्डुग—१ अंश, भाग (पिनि २५३)। २ गण का अवान्तर विभाग (निभा ६३१३)। ३ वर्गणा-समुदाय।

फड्डुगपतिय—गण के अवान्तर विभाग का नायक (निभा ६३१३)।

फड्डुगवतिय—गण के अवान्तर विभाग का नायक–'फड्डुगवतिया वि आगंतुं पक्खियादिसु मूलायरियस्स आलोएंति' (निचू ४ पृ २८४)।

फड्डुय—१ साधुओं का छोटा समुदाय (निभा २८४२)। २ विभाग, अंश (ओभा १११)।

फड्डुवती—गण के अवान्तर विभाग का नायक (जीभा ७८१)।

फणक—कंघी (उसुटी प २८३)।

फणग—कंघी–'अह सा भमरसन्निभे कुच्चफणगपसाहिए। सयमेव लुंचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया।।' (उ २२।३०)।

फणज्जुय—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३४)।

फणिका—१ गृहउपकरण–विशेष (अंवि पृ ७२)। २ कंघी (अंवि पृ २३०)।

फणिगा—केश संवारने का उपकरण (कंघा)–'फणिगाए वाला जमिज्जंति ओलिहिज्जंति जूगाओ वा उद्धरिज्जंति' (सूचू १ पृ ११७)।

फणिज्जय—वनस्पति-विशेष, मरुआ का वृक्ष (प्रज्ञा १।४४)।

फणित—१ पका हुआ। २ रांधा हुआ–'फणितं णाम पक्कं रद्धं वा' (सूचू १ पृ ११७)।

फणिह—कंघा (सू १।४।४२)।

फणेज्जा—वनस्पति-विशेष (भ २१।२१)।

फर—१ अस्त्र-विशेष–'दोण्णि वि फरम्मि णिउणा' (कु पृ २५२)। २ ढाल, फलक (दे १।७६)।

फरअ—फलक, ढाल–'किं रे फरेसि फरयं' (दे ६।८२)।

फरखेड्ड—शस्त्र-विशेष की विद्या–'धणुवेओ फरखेड्डं असिधेणु.....' (कु पृ १५०)।

फरल—काना (प्रटी प २५)।

फरावेड्ड—शस्त्र-विशेष की विद्या 'अण्णे फरावेड्ड उवज्झाया' (कु पृ १६)।

फरुगद्दभ—१ कीटिका-नगर। २ गर्दभाकार कीट-विशेष (निचू ३ पृ ३७६)।

फरुस—१ कुम्भकार, कुम्हार (बृभा ४२५३)। २ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३१)।

फरुसग—कुम्हार, कुंभार–'पोग्गल मोयग फरुसग, दंते वडसालभंजणे सुत्ते' (बृभा ५०१७)।

फल—चपेटा का प्रहार–'फलं चवेडाप्रहारः' (सूचू १ पृ ८२)।

फलय—शाक आदि उगाने की बाडी (व्यभा ५ टी प ७)।

फलह—शाक आदि उगाने की बाडी (व्यभा ५ टी प ७)।

फलही—१ कपास–'फलहीओ उप्पाडेइ' (उसुटी प ७६; दे ६।८२)। २ कपास की लता।

फलि—१ लिंग, चिह्न। २ वृषभ, बैल (दे ६।८६)।

फलिआरी—दूर्वा, दूब (दे ६।८३)।

फलिका—फली (अंवि पृ ७१)।

फलिय—नाना प्रकार के व्यंजन और भक्ष्यपदार्थों द्वारा बनाया हुआ खाद्य-विशेष—'फलियं पहेणगाई वंजणभक्खेहिं वा विरइयं तु' (व्यभा ६ टी प १६)।

फलिह—१ आकाश—'अगमे इ वा फलिहे इ वा अणंते इ वा' (भ २०।१६)। २ कपास का टेंटा (अनुद्घामटी प ३१)। ३ पार्ष्णि, एड़ी (उशाटी प १६३)।

फलिही—कपास का टेंटा (अनुद्घामटी प ३१)।

फसल—१ सारभूत। २ स्थासक, हस्तबिंब (दे ६।८७)। ३ चितकबरा (पा १६७)।

फसलाणिअ—विभूषित (दे ६।८३)।

फसलिअ—विभूषित, जिसने विभूषा की हो वह (दे ६।८३)।

फसुल—मुक्त (दे ६।८२)।

फालहिय—शाक आदि की बाडी का स्वामी (व्यभा ५ टी प ७)।

फालि—१ फली, छीमी (आचू पृ २००)। २ शाखा—'सिंबलिफालिच्छ अग्गिणा दड्ढो' (सं ८४)। ३ फांक, टुकड़ा।

फालिय—देशविशेष में होने वाला वस्त्र (आचूला ५।१४)।

फिक्कि—हर्ष (दे ६।८३)।

फिज—टखना—'कुल्लेसु सुउप्पत्ती ऊरूहिं बंधुणो अणिट्ठं तु। पासेसु वल्लहत्तं वाहणलाभो फिजे भणिओ॥' (उसुटी प १३०)।

फिडित—१ इधर-उधर बिखरे हुए—'भत्तट्ठा अण्णण्णतो फिडिताणं' (नंदीचू पृ ६)। २ अतिक्रांत—'पडिलेहणिया काले फिडिए कल्लाणगं तु पच्छित्तं' (ओभा १७४)।

फिडिय—अपगत, च्युत (ओनि ११२)।

फिडु—वामन (दे ६।८४)।

फिप्प—कृत्रिम (दे ६।८३)।

फिप्फिस—फेफड़ा (प्र १।११)।

फिरडि—फुर्-फुर् कर उड़ जाना (बृटी पृ ६१०)।

फिरिडि—फुर्-फुर् कर उड़ जाना—'फिरिडित्ति णिग्गया सुघरा' (आवचू १ पृ ३४५)।

फिलिय—भ्रष्ट (से ८।६८)।

फिल्लसिय—फिसला हुआ—'सा तत्थ वच्चंती फिल्लसिया' (बृटी पृ ६२६)।

फिल्लुसण—फिसलन (बृचू प १४१)।

फिहय—नाव चलाने का साधन-विशेष (नि १८।१४)।

फुंटा—केश-बंध का एक प्रकार, केश-रचना (दे ६।८४)।

फुंफमा—करीषाग्नि (सूचू १ पृ ११०)।

फुंफुअ—करीषाग्नि—'दट्ठुं विओअफुंफुअतत्ता तरुणी सुहाइ व णिबुड्ढा' (दे ६।८४ वृ)।

फुंफुआ—करीषाग्नि (भटी पृ १२७९; दे ६।८४)।

फुंफुक—करीषाग्नि, कण्डे की आग—'फुम्फुकशब्दो देशीत्वात् कारीषः' (जीवटी प ६५)।

फुंफुग—करीषाग्नि (बृभा २२८५)।

फुंफुगा—करीषाग्नि (दनि १११)।

फुंफुम—करीषाग्नि (बृभा २०९८)।

फुंफुमा—१ कचवर-वह्नि (उसुटी प ३)। २ करीषाग्नि।

फुंफुया—१ करीषाग्नि। २ कचवर-वह्नि (तंदु १५५)।

फुक्क—उभरा हुआ मोटा नाक (उशाटी प ३५८)।

फुक्का—१ मिथ्या (दे ६।८४)। २ फूंक।

फुक्किय—१ व्यर्थ—'हे मंदभग्ग! फुक्किय तूससि तं नाममेत्तेणं' (आवहाटी २ पृ ८५)। २ फूमित, फुफकारा हुआ—'फुक्किय···· फूमितस्त्वमिति देशीभाषया आक्रोशः' (आवटि प ९४)।

फुक्की—धोबिन (दे ६।८४)।

फुग्ग—शरीर का अवयव-विशेष, पुत (सूनि ७९)

फुग्गफुग्ग—विकीर्ण रोम वाला—'तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ' (उपा २।२१)।

फुट्ट—१ टूटा हुआ, फूटा हुआ—'फुट्टपत्थरं' (बृभा ५८५७)। २ कठोर—णिण्णेहकं अणेहं वा फुट्टं ति फरुसं ति वा' (अंवि पृ १०६)।

फुण्ण—स्पृष्ट (प्रसाटी प ३०४)।

फुप्फुयायंत—फुफकार करता हुआ—'अवहोलंत-फुप्फुयायंत-सप्प-बिच्छुय' (ज्ञा १।८।७२)।

फुप्फुस—फेफड़ा (सूनि ७३)।

फुमंत—फूंक देता हुआ (द ४।२१)।

फुमण—फूंक (निभा १४९५)।

फुरिअ—निन्दित (दे ६।८४)।

फुल्ल—१ निर्मल—'णिम्मला-फुल्ला' (निचू ३ पृ ४२८)। २ आंख का रोग (निचू १ पृ ९)। ३ फूल, पुष्प (ओटी प ९७)। ४ पूर्णरूप से नष्ट (दअचू पृ १४३)।

फुल्लंधुअ—भ्रमर (दे ६।८५)।

फुल्लग—पुष्प की आकृतिवाला आभूषण-विशेष (जीव ३।५६३)।

फुल्लय—आंखों का रोग-विशेष—एक्कं अच्छिए फुल्लयं भवउ' (निचू १ पृ ६)। फूला (राज)।

फुल्लवड—पुष्प-विशेष, मदिरावामक पुष्प (से निष्पन्न वस्त्र ?) (निचू ३ पृ ३२१)।

फुल्लि—काई (आवहाटी २ पृ ५६)।

फुल्ली—काई (ओटी प १३१)।

फुसार—फुहार, महिन बूंदों की झडी—सुहुमफुसारेहिं पडमाणेहिं फुसियं वरिसं' (निचू ४ पृ २३०)।

फुसिया—वल्ली-विशेष (प्रटी प ३३)

फूअ—लोहकार (दे ६।८५)।

फूमित—फुक्कित, फूंक दिया हुआ (अंवि पृ १६८)।

फूमिय—फूंक मारा हुआ, फुक्कित—'भक्खणनिमित्तं फूमिया तिला नडेण' (उसुटी प २५१)

फूसल्लि—अल्प-बिन्दु वाली वृष्टि, तुषाकार वृष्टि—'फूसल्लि यत्थ वासति ण य होंतित्थ सारधण्णाणि' (अंवि पृ २५७)।

फेक्कार—सियार की आवाज (उसुटी प १३८)।

फेट्टा—वन्दन का एक प्रकार—'फेट्टावंदणयं देइ' (अनुद्वाहाटी पृ ३)।

फेणक—भोज्य-विशेष, फीनी (अंवि पृ १८२)।

फेणबंध—वरुण, जलदेवता (दे ६।८५)।

फेणवड—वरुण (दे ६।८५)।

फेफस—फुप्फुस (आवहाटी २ पृ १०७)

फेरंड—पर्वकाण्ड, नाल—'तए ते साली हरियफेरंडा जाया' (ज्ञा १।७।१४)।

फेलाया—मातुलानी, मामी (दे ६।८५)।

फेल्ल—निर्धन, दरिद्र—'फेल्लमाहणेणं रत्थाए वइरहीरतो लद्धो' (पंक १६७८; दे ६।८५)।

फेल्लुसण—१ पिच्छिलभूमि, वैसी भूमी जहां पांव फिसलते हैं। २ फिसलन, स्खलन (दे ६।८६)।

फेल्हसण—फिसलन (व्यभा ४।४ टी प ६)।

फेस—१ त्रास। २ सद्भाव (दे ६।८७)।

फेसय—फुप्फुस (कु पृ २२५)।

फोअ—भयोत्पादक ध्वनि, डराने की आवाज (दे ६।८६ वृ)।

फोइअय—१ मुक्त। २ विस्तारित (दे ६।८७)।

फोंफा—भयोत्पादक ध्वनि, डराने की आवाज (दे ६।८६)—'तरुणिं दट्ठूण करइ तह फोंफं' (वृ)।

फोक्क—उभरा हुआ मोटा नाक—'फोक्क' देशीपदं, अग्रे स्थूलोन्नता च नासाऽस्येति फोक्कनासः' (उसुटी प १७६)।

फोड—भक्षक—'बहुफोडे त्ति बहुभक्षकाः' (ओभा १६१ टी)।

फोडिअय—१ राई से बघारा हुआ शाक आदि। २ रात्रि के समय जंगल में सिंह आदि हिंसक प्राणियों से बचने का एक उपाय (दे ६।८८)।

फोडित—राई आदि से बघारा हुआ—'उवरि धूमणेण धोवितं फोडितं भण्णति' (निचू २ पृ ६५)।

फोप्फल—गंध द्रव्य-विशेष, एक प्रकार की औषधि जो मृदु रेचन के लिए काम आती है—'महुरविरेअणमेसो कायव्वो फोप्फलाइदव्वेहिं' (भक्त ४२)।

फोफल—एक प्रकार की औषधि (प्रसाटी प ७५)।

फोफस—शरीर का अवयव-विशेष (तंदु ११६)।

फोस—१ अपानदेश, गुदा—'सउणिप्फोस-पिट्ठंतरोरुपरिणया' (तंदु ६७)। २ उद्गम (दे ६।८६)।

ब

बइट्ठ—बैठा हुआ (आवचू २ पृ ३५)।

बइल्ल—बैल (दश्रुनि ६१; दे ६।६१)।

बउसी—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

बउहारी—बुहारी, झाड़ू (दे ६।६७ वृ)।

बंदण—कैदी, बंदी—'जावज्जीवबंदणो कीरिस्सामि' (नंदीटि पृ १३६)।

बंध—भृत्य, नौकर (दे ६।८८)।

बंधोल्ल—मेल, संगति (दे ६।८६)।

बंभच्च—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

बंभणिआ—कीट-विशेष (दअचू पृ १८६; दे ६।६०)।

बंभणी—कीट-विशेष (दे ६।९०)।

बंभहर—कमल (दे ६।९१)।

बक—बक की आकृति का कर्णाभरण—'कुंडलं वा बको व त्ति मत्थगो तलपत्तगं' (अंवि पृ ६४)।

बक्कर—परिहास (दे ६।८९)।

बक्करय—बकरा (दअचू पृ १०५)।

बज्झरस—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

बतिल्ल—बैल—'तस्स य एगो बतिल्लो सो मूलधुरे जुप्पति' (आवचू १ पृ २७२)।

बद्धअ—'त्रपुपट्ट' नामक कान का आभूषण (दे ६।८९)।

बद्धणिया—काष्ठ का गड्डुलक—'दगवारबद्धणिया उल्लंकायमणिवल्ललाऊ य' (निभा ४११३)।

बद्धिल्लय—बद्ध, गृहीत (अनुद्वाहाटी पृ ८८)।

बद्धीसग—वीणा-विशेष (नि १७।१३७)।

बद्धेल्लय—बंधा हुआ—'ताहे धोवंतीए बाला बद्धेल्लया छुट्टा' (आवहाटी १ पृ १४९)।

बप्प—१ पिता (द ७।१८; दे ६।८८)। २ योद्धा (दे ६।८८)—'बप्पो सुभटः। पितेत्यन्ये' (वृ)।

बप्पीकी—पैतृकी—जा बप्पीकी भुंहडी चम्पिज्जइ अवरेण' (प्रा ४।३९५ टी)।

बप्पीह—चातक (दे ६।९०)।

बप्फाउल—अत्यधिक उष्ण, गरम (दे ६।९२)।

बब्बक—एक प्रकार का तृण (बृटी पृ ५९१)।

बब्बग—एक प्रकार का तृण (बृभा २०४३)।

बब्बरी—१ देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)। २ केशरचना (दे ६।९०)।

बब्बीसय—वाद्ययंत्र-विशेष (कु पृ २६)।

बब्बूल—बबूल (स्थाटी प २३६)।

बब्भ—चर्ममयी रज्जू, पदयात्रा में उपकरणों को शरीर के साथ बांधने वाला चर्ममय पट्टा (जीविप पृ ५१; दे ६।८८)।

बमाल—कोलाहल (दे ६।९०)।

बयल्ल—बैल, बलीवर्द (उशाटी प १६२)।

बरग—बरट्टी, धान्य-विशेष (जंबूटी प १२४)।

बरट्ट—धान्य-विशेष (प्रसा ६६६)।

बरठ—धान्य-विशेष (प्रसाटी प २६७)।

बरड—खरदरा—'थुल्लं वा बरडं वा थेरस्स पोत्तं होहिइ' (आवहाटी १ पृ ६०)।

बरुअ—इक्षु-सदृश तृण (दे ६।६१)।

बरुड—चटाई बनाने वाला शिल्पी (प्रसाटी प २३०)।

बलजंत—व्यवसाय के लिए जाते हुए—'बालंजुयवणियाणं बलजंताणं वत्था पडंति' (निचू ३ पृ १६४)।

बलद्द—बैल (बृटी पृ ५३)। बलद (राज)।

बलमड्डा—बलात्कार (दे ६।६२)।

बलवट्टि—१ सखी (दे ६।६१)। २ श्रम को सहन करने वाली स्त्री (वृ)।

बलहरण—छांद का आधारभूत ऊंचा तथा लंबा काष्ठ (भ ८।२५७)।

बलामोडि—बलात्कार (बृचू प २०४; दे ६।६२)।

बलामोडिय—बलात्, जबरदस्ती से—'तेण दंडिएण बलामोडिए पडिग्गहो गहिओ' (उसुटी प ५५)।

बलामोलि—बलात्कार (से १०।६४)।

बलिअ—१ पीन, पुष्ट (भ ६।२३०; दे ६।८८)। २ गाढ, दृढ (ज्ञाटी प ६४)। ३ अत्यर्थ—'बलियतरं भीया तत्था तसिया' (ज्ञा १।६।२७)।

बलिमोडय—चक्राकार पर्व-परिवेष्टन (प्रज्ञाटी प ३७)।

बले—१ निश्चय। २ निर्धारण—इन अर्थों का सूचक अव्यय (प्रा २।१८५)।

बलेद्द—बैल (दशचू पृ २१७)।

बव्वाड—दाहिना हाथ (दे ६।८६)।

बव्वीस—वाद्य-विशेष (राज ७७)।

बहल—पंक (दे ६।८६)।

बहली—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

बहिणी—बहिन (निचू ३ पृ ४३०)।

बहिद्ध—१ बाह्य वस्तु का ग्रहण (सू १।६।१०)। २ मैथुन। ३ परिग्रह—'बहिद्धं मिथुनपरिग्रहो गृह्यते' (सूचू १ पृ १७७)।

बहिद्धा—१ बाहर का। २ मैथुन। ३ परिग्रह, विशेष परिग्रह—स्त्री आदि (स्थाटी प १६०)।

बहिफोड—बहुभक्षक (आवहाटी १ पृ १३८)।

बहिलग—१ बैल (निभा १४८६)। २ वह सार्थ जिसमें बैल, ऊंट आदि हों (बृभा ३०६६)।

बहुआरिआ—बुहारी, झाड़ू (दे ८।१७ वृ)।

बहुआरी—संमार्जनी, झाडू (दे ८।१७ वृ)।

बहुकरिका—बुहारी, झाडू (बृटी पृ ४६५)।

बहुण—१ चोर। २ धूर्त्त (दे ६।६७)।

बहुमुह—दुर्जन (दे ६।६२)।

बहुराणा—तलवार की धार (दे ६।६१)।

बहुरावा—शृगाली (दे ६।६१)।

बाउल्लिआ—पुतली (दे ६।६२ वृ०)।

बाउल्ली—पंचालिका, पुतली (दे ६।६२)।

बाण—१ सुभग। २ पनस का वृक्ष (दे ६।६७)।

बायालीस—बयालीस (ग ५७)।

बाल—कम्बल—'बालत्ति कम्बलः' (जीविप पृ ५०)।

बालअ—वणिक् पुत्र (दे ६।६२)।

बालंजुय—वस्त्र के व्यापारी—'बालंजुयवणियाणं बलजंताणं वत्था पडंति' (निचू ३ पृ १६४)।

बालग्गपोइया—१ चन्द्रशाला। २ जलाशय में निर्मित लघु प्रासाद (उचू पृ १८३)।

बालपज्जेय—साधु का उपकरण-विशेष (व्यभा ४।४ टी प ५७)।

बालवीरा—प्रावारक-विशेष, प्राणिज-वस्त्र—'अजिणप्पवेणी चम्मसाडीओ बालवीरा चेति' (अंवि पृ २२१)।

बालसाडी—व्यजन—'चामरं अजीणकंबलो बालसाडि बालमुंडिका बालव्वयणी' (अंवि पृ २३०)।

बालेय—आर्द्र (अंवि पृ २६१)।

बास—बाज पक्षी (अंवि पृ ६२)।

बाहाड—प्रचुर (बृभा ४६६७)।

बाहाडित—भर्त्सित, तिरस्कृत (बृभा ४१३२)।

बाहाया—वृक्षविशेष (अंतटी पृ ५)।

बिआया—संलग्न भ्रमण करने वाला कीट-युग्म (दे ६।९३)।

बिंबवय—भिलावां, फलविशेष (पा ३८०)।

बिंबोयणय—१ क्षोभ। २ विकार। ३ उच्छीर्षक, तकिया (दे ६।९८)।

बिग्गाइया—संलग्न भ्रमण करने वाला कीट-युग्म—'यौ कीटौ संलग्नौ भ्रमतो बिग्गाइया ख्यातौ' (दे ६।९३ वृ)।

बिग्गाई—संलग्न भ्रमण करने वाला कीट-युग्म (दे ६।९३)।

बिट्टी—पुत्री, बेटी (प्रा ४।३३०)।

बिट्ठ—बैठा हुआ (ओनि ४७१)।

बिब्बोय—उपधान, तकिया—'सयणीयं तूलियं सबिब्बोयं' (ग ११४)।

बिब्बोयण—उपधानक, तकिया (भ ११।१३३)।

बिरचिरालिया—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

बिल—कूप (राजटी पृ १९१)।

बिलकोलीकारक—वे चोर जो दूसरों को व्यामूढ करने के लिए विस्वर वचन बोलते हैं (प्र ३।३)।

बीअअ—असन-वृक्ष, विजयसार वृक्ष (दे ६।९३)।

बीअजमण—खलिहान (दे ६।९३)।

बीअण—असन वृक्ष, विजयसार वृक्ष (दे ६।९३ वृ)।

बीडग—पान का बीड़ा (निचू २ पृ १९०)।

बीयय—गुल्म वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३८)।

बोलअ—कान का एक आभरण, कुंडल—'विणा पिअं बोलएहि किं इत्थ' (दे ६।९३)।

बीहणक—भीषण (प्र ३।९)।

बीहणकर—भयंकर (प्र १।३६)।

बीहणग—भयानक (प्र १।२४)।

बीहणय—भीषण (प्र १।२)।

बुंदि—१ शरीर (सूर्य २०)। २ चुम्बन। ३ सूअर (दे ६।९८)।

बुंदिणी—कुमारी-समूह (दे ६।९४)।

बुंदी—शरीर (आवनि १४४६)।

बुंदीर—१ भैंसा। २ महान् (दे ६।९८)।

बुंबुअ—समूह (दे ६।९४)

बुंभल—चोटी, शेखरक (ज्ञा १।८।७२ पा)।

बुक्क—१ विस्मृत (व्यभा २ टी प २२)। २ छिलका। ३ वाद्य-विशेष।
बुक्कण—काक, कौआ (दे ६।९४)।
बुक्कण्णय—पासा—'बुक्कण्णएण रमंति' (निचू १ पृ १७)।
बुक्कस—अन्न-विशेष, मूंग-उड़द आदि की नखिका से निष्पन्न भोजन—'मुद्गमाषादिनखिकानिष्पन्नमन्नम्' (उसुटी प १२९)।
बुक्का—१ मुष्टि (दे ६।९४)। २ व्रीहिमुष्टि (वृ)। ३ वाद्य-विशेष।
बुक्कारिय—पुकारा हुआ (कु पृ ७४)।
बुक्कास—जुलाहा, तन्तुवाय (आटी प ३२७)।
बुक्कासार—भीरु, डरपोक (दे ६।९५)।
बुक्किकल्ल—गृह-शूर, झूठा शूर (दे ७।८० वृ)।
बुण्ण—१ भीत, डरा हुआ। २ उद्विग्न (दे ७।९४ वृ)।
बुत्ती—ऋतुमती स्त्री, रजस्वला नारी (दे ६।९४)।
बुदिर—भैंस (दे ६।९८ पा)।
बुदीर—भैंस (दे ६।९८ पा)।
बुब्बुय—बकरे की 'बें-बें' आवाज (उसुटी प ५४)।
बुलंबुला—बुद्बुद, बुलबुला (दे ६।९५)।
बूर—वनस्पति-विशेष (भ ११।१३३)।
बेकिक्का—शौचक्रिया, शरीरचिन्ता (आवटि प २६)।
बेट्टिया—बेटी, राजकन्या (बृभा ४९१५)।
बेट्ठ—बैठा हुआ—'कहिं उ बेट्ठो कहेति' (आवचू १पृ ३३३)।
बेट्ठिय—स्थापित (अंवि पृ २४५)।
बेड—नौका (दे ६।९५)।
बेडा—नौका (आवदी प ३६)।
बेडिअ—नाविक—'रे बेडिअसुअ! बोक्कडबोड्डुर किं तुज्झ उग्गया बेड्डा' (दे ६।९५ वृ)।
बेडिका—जहाज, नौका (प्रसाटी प १२५)।
बेड्डु—श्मश्रु, दाढ़ी-मूंछ (दे ६।९५)।
बेबे—बें-बें-ऐसी आवाज, बकरे की आवाज (उशाटी प १३८)।
बेभेल—सन्निवेश-विशेष—'बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था' (भ ३।१००)।
बेभेलक—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।
बेल्लि—खूंटा (बृभा ५८२; दे ६।९५)।

बेसक्खिज्ज—शत्रुता (दे ७।७६ वृ)।

बेसण—वचनीय, लोकापवाद (दे ७।७५ वृ)।

बेहिम—दो टुकड़े करने योग्य (दहाटी प २१६)।

बोंगिल्ल—१ विभूषित। २ आटोप, आडंबर (दे ६।६६)।

बोंटण—चूचुक, स्तन-वृन्त (दे ६।६६ वृ)।

बोंड—१ पद्म (आवनि १३२)। २ कपास (सूचू १ पृ ४)। ३ चूचुक, स्तनवृन्त (दे ६।६६)।

बोंडज—सूती वस्त्र (सूचू १ पृ ५४)।

बोंडीवमण—कपास (निचू २ पृ ३६६)।

बोंद—मुख (दे ६।६६ वृ)।

बोंदि—१ शरीर (भ ८।८८; दे ६।६६)। २ आकार, रूप—'सुहुमबोंदिकलेवरे' (भ १५।१०१; दे ६।६६)। ३ मुंह (दे ६।६६)। ४ अव्यक्त अवयवों वाला शरीर (भटी पृ १२६०)।

बोंदिया—शाखा (आचूला १।५४)।

बोक्कड—बकरा (निचू ३ पृ ४१०; दे ६।६६)। 'बोकडु' (गुज)।

बोक्कडी—बकरी (दे ६।६६ वृ)।

बोक्कस—वर्णसंकर जाति—१ निषाद के द्वारा अम्बष्ठ जाति की स्त्री से उत्पन्न संतान। २ निषाद के द्वारा शूद्र स्त्री से उत्पन्न संतान—'निसाएणं अंबट्ठीए जाओ बोक्कसोत्ति वुच्चइ, निसाएण सुद्दीए जातो सोवि बोक्कसो' (आचू पृ ६)।

बोक्कसालिय—तन्तुवाय, जुलाहा (आचूला १।२३ चू)।

बोक्कार—ध्वनि-विशेष (आवमटी प १८८)।

बोक्किकल—गृह-शूर, झूठा शूर (दे ७।८० वृ)।

बोगिल्ल—चितकबरा (पा १६७)।

बोट्टी—अपवित्र, उच्छिष्ट (बृभा ३५६५)।

बोड—१ मुण्ड, मुण्डितमस्तक—'एमेव अडइ बोडो लुक्कविलुक्को जह कवोडो' (पिनि २१७)। २ बिना किनारों वाला घट—'बोडो जस्स उट्ठा णत्थि' (आवचू १ पृ १२२)। ३ धार्मिक (दे ६।६६)। ४ तरुण (वृ)।

बोडघेर—'छुइमुई' का पौधा (पा ६००)।

बोडमच्छक—मत्स्य की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

बोडावित—मुण्डित—'ण्हावियं वाहिरावित्ता सा चंदणा बोडाविता····
(आवमटी प २६५)।

बोडाविय—मुण्डित (आवहाटी १ पृ १४६)।

बोडिगिणी—ब्राह्मणी (आवहाटी २ पृ १००)।

बोडिगी—ब्राह्मणी (आवहाटी २ पृ १००)।

बोडिय—१ जैन संप्रदाय-विशेष—'बोडियसिवभूइओ, बोडियलिंगस्स होई उप्पत्ती। कोडिन्नकोट्टवीरा, परंपरा फासमुप्पन्ना॥' (निभा ५६२०)। २ मुंडितमस्तक (ओभा ८३)।

बोडियसाला—मठ (व्य ६।२७)।

बोड्डुर—श्मश्रु, दाढ़ी-मूंछ (दे ६।६५)।

बोड्डिआ—कार्दिका, कौडी—'गुणहि न संपइ कित्ति, पर फललिहिआ भुञ्जन्ति। केसरि न लहइ बोड्डिअ, वि गय लक्खेहिं घेप्पन्ति॥' (प्रा ४।३३५)।

बोदर—विशाल (दे ६।६६)।

बोद्द—१ मूर्ख (पंक ४८३)। २ मुण्डित-मस्तक (आवचू १ पृ २८६)। ३ तरुण (आवचू २ पृ ३०; दे ७।८)।

बोद्दह—१ मूर्ख—'जइ तुमं बोद्दहो ता किं अम्हेवि बोद्दहा' (आवमटी प १३६)। २ तरुण (बृटी पृ ४६६)।

बोद्दह—तरुण (दे ७।८० वृ)।

बोब्बड—मूक, भाषा-जड़ (व्यभा १० टी प १०६)।

बोरक—बोरी, गोणी (बृटी पृ १०२२)।

बोल—१ कलह—'डमरा इ वा कलहा इ वा बोला इ वा' (भ ३।२५८; दे ६।६०)। २ कोलाहल (औप ४६)। ३ समूह (बृभा २२७३)। ४ मुख पर हाथ रखकर उच्च स्वर से किसी को पुकारना—'बोलो नाम मुखे हस्तं दत्त्वा महता शब्देन पूत्करणम्' (सूर्यटी पृ २८१)।

बोलग—१ खिचाव। २ निमज्जन—'अप्पेगइए अगडंसि ओचूलं बोलगं पज्जेइ' (विपा १।६।२३)।

बोलेअव्व—लंघनीय (से २।१)।

बोल्ल—बातचीत—'बोल्लालाव-संकहाए अच्छिस्सामि' (निचू ४ पृ ४६)।

बोल्लित—कथित (आवहाटी २ पृ २२१)।

बोव्व—क्षेत्र, खेत—'बोडाण पुण्णबोव्वे' (दे ६।६६ वृ)।

बोहहर—स्तुति-पाठक, मागध (दे ६।९७)।
बोहारी—बुहारी, झाड़ू (दे ६।९७)।
बोहिग—म्लेच्छ-विशेष (बृभा १९६८)।
बोहित्थ—नौका (प्रटी प ३९; दे ६।९६)।
बोहिय—म्लेच्छ-विशेष (बृभा १९७०)।

भ

भंगिय—तृण-विशेष—'भंगिय त्ति तृणभेदविशेषः' (भटी पृ १४७६)।
भंजुलिका—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ ७०)।
भंड—१ मण्डन, आभूषण (भ ६।१५०; दे ६।१०६)। २ क्षुर, उस्तरा। ३ मुण्डन (बृभा ५१७७)। ४ मिट्टी। ५ रूई—'राइणा भंडहत्थी कारावितो' (दहाटी प ९९)। ६ बैंगन (दे ६।१००)। ७ स्तुति पाठक। ८ मित्र। ९ दोहित्र, पुत्री का पुत्र। १० छिन्नमूर्धा, सिरकटा (दे ६।१०६)।
भंडविकय—भांड की कुचेष्टा—'भाण्डानां विटानां कक्षावादनादिका क्रिया' (प्रसाटी प १०५)।
भंडसाइय—एक प्रकार का रसायन जो लोहे को भी गला देता है (आवचू २ पृ २४)।
भंडग—आभूषण, मंडन (औप ५९)।
भंडण—१ वाक्कलह, गाली-गलौज (भ १२।१०३; दे ६।१०१)। २ क्रोध (सम ५२।१)।
भंडमुल्ल—मूल पूंजी—'खीणम्मि भंडमुल्ले किं करिही अन्नजम्मम्मि' (सा ११३)।
भंडमोल्ल—मूल पूंजी—'तत्थ वि य णत्थि किंचि वि जेण भवे भंडमोल्लं ति' (कु पृ १९१)।
भंडिय—१ गुप्तचर। २ चोर—'णूणं एते चारिया भंडिया, चोरा वा वेस-परिच्छण्णा' (निचू १ पृ ५३)।
भंडियालिछ—विशेष प्रकार का चूल्हा (जीव ३।११८)।
भंडिवडेंसय—मथुरा नगरी का एक उद्यान जिसमें विशिष्ट वृक्षों की बहुलता थी (ज्ञा २।८।५)।

भंडी—१ शिरीष वृक्ष (ज्ञा २।८।५; दे ६।१०६)। २ गुच्छवनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७)। ३ कुलटा (आचू पृ ३३५; दे ६।१०६)। ४ गाड़ी—'आभीरो भंडीए उवरिं ठितो घयगकुंडं पणामेति' (आवचू १ पृ १२४; दे ६।१०६)। ५ अटवी (आवचू २ पृ २७६; दे ६।१०६)।

भंडु—१ मुंडन—'भंडुत्ति मुण्डनम्' (आवहाटी २ पृ ६१; दे ६।१००)। २ क्षुर, उस्तरा—भंडुत्ति खुरो, तेण सो मुंडिज्जति' (निचू ३ पृ २५१)।

भंतिय—तृण-विशेष (भ २१।१६)।

भंभब्भूय—दुःख में निकलने वाली भाँ भाँ की आवाज (भ ७।११७)।

भंभल—१ अप्रिय। २ मूर्ख (दे ६।११०)।

भंभा—वाद्य-विशेष (भ ५।६४; दे ६।१००)।

भंभाभूय—दुःख में निकलने काली भां-भां की ध्वनि (भ ७।११७ पा)।

भंभी—१ रसायन शास्त्र (व्यभा ३ टी प १३२)। २ असती, कुलटा (दे ६।६६)। ३ नीति-विशेष।

भंसला—कलह—'विसयप्पसिद्धासु भंसलासु' (आवहाटी २ पृ १६६)।

भंसुरुला—म्लेच्छ जाति का उत्सव-विशेष जहां अनेक संन्यासी एकत्रित होते हों (निचू ३ पृ ३५०)।

भंसुल—क्रीडा के समय उछलने वाले रजकण—'भंसुला क्रीडोत्क्षिप्तरेण्वादि-निकरा इति' (आवटि प १०६)।

भग्ग—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

भग्ग—लिप्त (दे ६।६६)।

भज्जय—भानजा (बृभा ५११५)।

भज्जि—विशेष भोजन-सामग्री (बृभा ३६१८)।

भट्ट—१ आदरसूचक संबोधन (द ७।१६)। २ गारुडिक, मंत्र-तंत्र से विष उतारने वाला (उसुटी प १७४)।

भट्टि—आदरसूचक संबोधन (दअचू पृ १६६)।

भट्टिअ—विष्णु (दे ६।१००)।

भट्टे—१ पुत्र-रहित स्त्री के लिए प्रयुक्त संबोधन—'भट्टेति अब्भरहितवयणं पायो लाडेसु' (दअचू पृ १६८)। २ ननद—'भट्टेति लाडाणं पति-भगिणी भण्णइ' (दजिचू पृ २५०)।

भट्ठि—धूलरहित मार्ग (भ ७।११७)।

भत्तिजग—भतीजा (निचू ४ पृ ६७)।

भत्तिज्जय—भतीजा (भ १२।३०)।

भत्तिय—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

भत्तोस—भूने हुए चने, गेहूं आदि—'भक्तं च तद् भोजनमोषं च दाह्यं भक्तौषं रूढितः परिभ्रष्टचनकगोधूमादिः' (प्रसाटी प ५१)।

भद्द—आमलक, आंवला (प्रज्ञा १६।५५; दे ६।१००)।

भद्दसिरी—श्रीखंड, चन्दन (दे ६।१०२)।

भद्दाकरि—प्रलंब, अति लंबा (दे ६।१०२)।

भममुह—आवर्त्त (दे ६।१०१)।

भमस—इक्षु-सदृश तृण (दे ६।१०१ वृ)।

भमाड—भ्रमण, घूम कर जाना—'सो परिरएणं-भमाडेण वच्चइ' (ओटी प २०)।

भमाडण—घुमाना (जीविप पृ ३४)।

भमाडय—घुमाने वाला (ओटी प ५६)।

भमास—इक्षु-सदृश तृण (प्रज्ञा १।४१।१; दे ६।१०१)।

भयवग्गाम—मोढेरक, गुजरात का एक गांव (दे ६।१०२)।

भरयाल—भारवाही पशु—'आरोविय-गोणिभरयाला' (कु पृ १६१)।

भरिउल्लट्ठ—१ विकसित (पा ५५६)। २ भरकर खाली किया हुआ।

भरिय—१ हाथ से फेंका जाने वाला पाश, फंदा—'भरिएहिं ति हस्तपाशितैः' (विपा १।३।२४ टी प ५६)। २ स्मृत—'भरिअं लद्धिअं सुमरिअं' (पा ५६४)।

भरिली—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

भरोच्छय—ताल का फल (दे ६।१०२)।

भरोलग—एक प्रकार का धान्य (आवचू २ पृ ३१७)।

भलंत—स्खलित होता हुआ (दे ६।१०१)।

भलि—लक्ष्य, आग्रह—कमलइं मेल्लवि अलि उलइं करि गंडाइं महन्ति। असुलह मेच्छण जाहं, भलि ते ण वि दूर गणन्ति॥ (प्रा ४।३५३)।

भल्लु—भालू, रीछ (दे ६।६६)।

भल्लुंकी—शृगाली, शिवा (अंवि पृ ६६; दे ६।१०१)।

भव्व—भागिनेय, भानजा (दे ६।१००)।

भव्वग—भानजा—'भव्वगत्ति भागिनेयः' (जीविप पृ ५५)।

भसल—भ्रमर (दे ६।१०१ वृ)।

भसुंडिया—मादा सूअर (ति ६४६)।

भसुया—शृगाली, सियारिन—'फेक्कारंति भेरवं भसुयाओ' (उसुटी प १३८; दे ६।१०१)।

भसेल्ल—धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्रभाग—'सालि-भसेल्ल-सरिसा से केसा कविलतेएणं दिप्पमाणा' (उपा २।२१)।

भसेल्लग—धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्रभाग (आवचू १ पृ २४६)।

भसोल—एक नाट्य-विधि—'चउव्विहे णट्टे पण्णत्ते, तं जहा—अंचिए, रिभिए, आरभडे, भसोले' (स्था ४।६३३)।

भाअ—बड़ी बहिन का पति (दे ६।१०२)।

भाइर—भीरु, डरपोक (दे ६।१०४ वृ)।

भाइल—१ जातिवान् अश्व। २ हल में जुतने योग्य अश्व—'कोसलरण्णा महं दिण्णाइं महंताइं भाइलतुरंगेहिं समं गयपोययाइं' (कु पृ ६५)।

भाइल्ल—किसान, हालिक (दश्रु ६।३; दे ६।१०४)।

भाइल्लग—किसान (दश्रुचू प ३८)।

भाउअ—१ ज्येष्ठ भगिनी का पति (दे ६।१०२ वृ)। २ आषाढ मास में मनाया जाता पार्वती का उत्सव (दे ६।१०३)।

भाउज्जा—भाभी, भोजाई (आचू पृ १८८; दे ६।१०३)।

भाओज्जातिया—भाभी (आवचू १ पृ ५२६)।

भाणिज्ज—भानजा, बहिन का लड़का (आचू पृ ३४८)।

भाणी—जलज वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।

भायल—जातिवान् अश्व (दे ६।१०४)।

भारंदुदुह—भारवाही—'खद्धोवहिणा भारंदुदुह त्ति उड्डाहं करेंति' (निचू २ पृ १२२)।

भालुंकी—शृगाली—'भालुंकीए करुणं खज्जंतो घोरवेयणत्तो वि' (भक्त १६०)।

भावइआ—धार्मिक गृहिणी (दे ६।१०४)।

भाविअ—गृहीत (दे ६।१०३)।

भास—कौआ—'अत्र भासशब्देन काक इत्यर्थः सम्भाव्यते' (सूचू १ पृ १६४ टि)।

भासल—दीप्त (दे ६।१०३)।

भासिअ—दत्त, दिया हुआ (दे ६।१०४)।

भासुंडणा—विनाश, भ्रंसना—'सपडिदुवारे उवस्सए, निग्गंथीण न कप्पई वासा। दट्ठूण एक्कमेक्कं, चरित्तभासुंडणा सज्जो' (बृभा २२४१)।

भासुंडि—निःसरण, निर्गमन (दे ६।१०३)।

भिउडी—मकड़ी की जाति-विशेष (अंवि पृ ७०)।

भिग—१ कृष्ण, काला (दे ६।१०४)। २ नीला। ३ स्वीकृत।

भिंगारी—१ चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष, चीरी (उ ३६।१४७; दे ६।१०५)। २ मशक, मच्छर (अंवि पृ २३७)। ३ सर्प की एक जाति (अंवि पृ २३८)।

भिजा—अभ्यंग, मालिश (सू १।४।३६ पा)।

भिंड—१ मिट्टी। २ रूई (दहाटी प ६६)।

भिंडिया—ललकार, आह्वान—'मुंचति अ भिंडियाओ, एक्केक्कं भेडतिवाएमि' (निभा ५६१)।

भिंडियालिंग—विशेष प्रकार का चूल्हा—'अग्नेराश्रयविशेषः' (जीवटी प १२३)।

भिभिया—वाद्य-विशेष (दश्रुचू प ६०)।

भिच्छुंड—१ भिक्षा से निर्वाह करने वाला। २ बौद्ध साधु (ज्ञा १।१५।६ टी प २०२)।

भिच्छुंडग—भिक्षा से निर्वाह करने वाला (आचूला १५।१३)।

भिडिय—जिसने मुठभेड़ की हो वह—'भिडिया महइं वेलं, जाव न एगो वि तीरए छलिउं' (उसुटी प ६३)।

भिणासि—पक्षि-विशेष (प्रटी प ८)।

भिणिभिणेंत—भनभनाती हुई—'भिणिभिणेंत-मच्छियं सडसडेंत-चम्मयं' (कु पृ २२५)।

भित्त—१ आधा भाग—'अद्धं भित्तं' (निचू ३ पृ ४८१)। २ चौथा भाग—'भित्तं चउभागादी' (निचू ३ पृ ४८२)। ३ द्वार। ४ गृह (दे ६।११०)।

भित्तग—१ खंड, टुकड़ा (आचूला ७।२६)। २ आधा भाग (आटी प ४०५)। ३ चौथा भाग—'भित्तगं चतुर्भागो' (निभा ४७००)।

भित्तय—१ खंड, टुकड़ा। २ आधा भाग—'अंबभित्तयं आम्रार्द्धम्' (आटी प ४०५)। ३ चौथा भाग (निचू ३ पृ ४८२)।

भित्तर—१ द्वार (दे ६।१०५)। २ भीतर, अन्दर।

भित्ति—नदी का तट—'नईणं वा तडी भित्ती' (निचू ३ पृ ३७८)।

भित्तिरूव—टंक से छिन्न (दे ६।१०५)।

भिब्भियमच्छ—मत्स्य की जाति-विशेष (जीवटी प ३६)।

भिब्भिसमाण—अत्यंत दीप्यमान (ज्ञा १।१।८९)।

भिमोर—हिम का मध्य भाग (?) (प्रा २।१७४)।

भिरिंड—कुए की मेंढ—'जुण्णकूवभिरिंडे तणपूलितं गहाय उस्सिचति' (आवचू १ पृ २१०)।

भिरुइय—ठगा जाना, वंचित—'कयाइ कहं पि न भिरुइओ होमि, ता णिहुयं होऊण पेच्छामि' (कु पृ २५१)।

भिलंग—१ धान्य-विशेष, मसूर (दश्रु ६।१८)। २ अक्षण (सूचू १ पृ ११६)।

भिलंगाय—अक्षणक, चुपड़ना, अभ्यंगन—'तेल्लं मुहे भिलंगाय-मुहमक्खणयं तेल्लं आणेहि' (सूचू १ पृ ११६)।

भिलिग—१ अक्षण—'तेल्लं मुहे भिलिगाय' (सू १।४।३९)। २ धान्य-विशेष, मसूर (आवचू २ पृ १२०)।

भिलिगाय—अक्षणक, चुपड़ना—'भिलिगाय त्ति देसीभासाए मक्खणमेव' (सूचू १ पृ ११६)।

भिलिजाय—अक्षण, अभ्यंग (सू १।४।३९ पा)।

भिलुंग—हिंसक पक्षी—'वणसंडंसि बहवे भिलुंगा नाम पावसउणा परिवसंति' (राज ७०३)।

भिलुगा—फटी हुई जमीन—'भिलुगत्ति स्फुटितकृष्णभूराजिः' (आचूला १।५३ टी प ३३७)।

भिलुया—फटी हुई जमीन, जमीन की दरार (आचूला १०।१७)।

भिलुहा—भूमी की दरार—'कण्हभूमिदली भिलुहा' (दअचू पृ १५६)।

भिल्लिरी—मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल (विपा १।८।१९)।

भिल्लुगा—भूमी की रेखा (आचूला १।५३ पा)।

भिसंत—अनर्थ (दे ६।१०५)।

भिसमाण—दीप्यमान (ज्ञा १।१।८९)।

भिसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१९)।

भिसिगा—आसन-विशेष (सू २।२।२५)।

भिसिया—बृसी, ऋषि का आसन (भ २।३१; दे ६।१०५)।

भिसोल—नृत्य-विशेष (स्थाटी प २७२)।

भीराहि—सर्प की जाति-विशेष—'भीराहि गोणसो व त्ति अजो अजगरो त्ति वा' (अंवि पृ ६३)।

भीरुय—वृक्ष-विशेष—'दधिवण्णो सत्तिवण्णो त्ति कोसंबो भीरुओ त्ति वा' (अंवि पृ ६३)।

भुअ—भूर्जपत्र, वृक्ष-विशेष की छाल (दे ६।१०६)।

भुंड—सूकर (दे ६।१०६)।

भुंडीर—सूकर (दे ६।१०६)।

भुंदण—एक प्रकार का काष्ठ (निचू २ पृ ३६४)।

भुंभर—शेखरक (ज्ञा १।८।७२)।

भुंभल—१ शेखरक, चोटी (ज्ञा १।८।७२ पा)। २ मद्यस्थान (प्राक १ टी प ६२)।

भुंभलक—मद्यपात्र (प्राक १ टी प ६२)।

भुंभलय—चोटी, शेखरक (उपाटी पृ १०३)।

भुंहडी—भूमि (प्रा ४।३६५ टी)।

भुक्कण—१ कुत्ता, श्वा। २ मद्य आदि का मान (दे ६।११०)।

भुक्ख—१ भूखा, बुभुक्षित (निर १।३५)। २ रूक्ष—'सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा' (अनु ३।५२)।

भुक्खा—भूख (ज्ञा १।१।३४; दे ६।१०६)।

भुक्खालु—जिसे भूख अधिक लगती हो वह (निचू २ पृ ४२८)।

भुक्खित—१ भूखा (दअचू पृ १५५)। २ चूर-चूर किया हुआ—'भिन्ने [भुक्खिते भेदिते' (अंवि पृ १४८)।

भुक्खुत्त—भूख से पीडित (व्यभा ६ टी प १६)।

भुज्जित—भुना हुआ (आवचू २ पृ ३१७)।

भुज्जिय—भुना हुआ (आचूला १।६)।

भुज्झग—भुने हुए गेहूं (आचू पृ ३२६)।

भुण्ण—भग्न—'भुण्णकोट्ठा (णावं)' (सूचू १ पृ ३६)।

भुत्तूण—भृत्य, नौकर (दे ६।१०६)।

भुरुंडिया—शृगाली, शिवा (दे ६।१०१)।

भुरुकुंडिय—उद्धूलित, धूल से लिप्त (दे ६।१०६ वृ)।

भुरुहुंडिय—उद्धूलित, धूल से लिप्त (दे ६।१०६)।

भुल्लुंकी—शृगाली (पा २६७)।

भुस—भूसा, बुस (भ २१।१६)।

भुसुट्ठ—भूसे का ढेर (निचू १ पृ ६८)।

भूअ—यंत्रवाहक पुरुष या यंत्र की देखरेख करने वाला पुरुष (दे ६।१०७)।

भूअण्ण—जोती हुई खल-भूमि में किया जाने वाला यज्ञ (दे ६।१०७)।

भूणग—बालक—'देशीपदमेतत् बालके' (व्यभा ४।२ टी प ६६)।

भूणिया—लड़की—'सो सेज्जातरभूणियाते सह खेड्डं करेति' (निचू ३ पृ २४३)।

भूमिपिसाअ—ताड का वृक्ष (दे ६।१०७)।

भूयणा—वनस्पति-विशेष (भ २१।२१)।

भेंड—१ रूई। २ मिट्टी—'रण्णा भेंडमतो हत्थि कतो' भेंडमतो—रूतमयः मृण्मयो वा' (दअचू पृ ४७)। ३ वनस्पति-विशेष—'थुल्लसारं भेंडं एरंडकट्ठं वा' (आचू पृ १५५)।

भेंडिता—ललकार, आह्वान—'मुंचति य भेंडितातो एक्केक्कं भे निवादेमि' (बृभा ४९२७)।

भेज्ज—भीरु (दे ६।१०७)।

भेज्जक—मस्तिष्क (प्रटी प ११)। भेजा (राजस्थानी)।

भेज्जलअ—भीरु (दे ६।१०७)।

भेड—भीरु (दे ६।१०७)।

भेडिगा—जालिकारहित कँचुली—'भेडिगत्ति जालिकारहिता कञ्चुलिकोच्यते' (आवटि प ९२)।

भेडिय—भिडाना, लडाना—'तेणावि कड्ढिऊणालक्खं पिव सूइओ भेडिओ नियकुक्कुडो' (उसुटी प १९१)।

भेणासि—पक्षि-विशेष—'वीरल्ल-सेण-वायस-विहंगभेणासि-चास-वगुलि' (प्र १।९)।

भेणी—बहिन—'इमीए सिरिसोमाए भेणीए समप्पिऊण वच्चामि णडं दट्ठुं' (कु पृ ४६)।

भेरुंड—१ चीता, चित्रक (दे ६।१०८)। २ निर्विष सर्प।

भेलअ—बेडा, नौका (दे ६।११० वृ)।

भेली—१ आज्ञा। २ नौका, बेडा। ३ चेटी, दासी (दे ६।११०)।

भेल्लिय—मिलाया—'कोसलेण रण्णा ओक्खंदं दाऊण भेल्लियं तं सन्निवेसं' (कु पृ ९९)।

भेल्लिया—नौका (सूचू १ पृ ११८)।

भेसुंडिया—सूअर की मादा (ति ९४९)।

भोअ—भाड़ा, किराया (दे ६।१०८)।

भोइ—१ सम्मान-सूचक-सम्बोधन—'भोइ त्ति भवति ! आमंत्रणमेतत्' (उसुटी प २१०)। २ पत्नी—'भोइत्ति भारिया' (निचू ४ पृ ६७)।

भोइक—गृहस्वामी, पति (निचू २ पृ १८२)।

भोइत—गृहस्वामी, पति (निभा १३६४)।

भोइय—१ ग्रामप्रधान, गांव का मुखिया (उ १५।६; दे ६।१०८)। २ गारुडिक, मंत्र-तंत्र से विष उतारने वाला (उसुटी प १७४)। ३ पति (उसुटी प २)।

भोइया—१ भार्या, पत्नी (निचू ३ पृ ४८८)। २ वेश्या (व्यभा ७ टी प ४३)।

भोई—भार्या (पिनि ३६८)।

भोज्ज—गुरुस्थानीय व्यक्ति-विशेष—'भोज्जा गुरुत्थाणीया' (आचू पृ ३३१)।

भोतिग—पति (निचू २ पृ ३८३)।

भोतिगा—पत्नी (आचू पृ ३४८)।

भोतिया—पत्नी (निचू ३ पृ ६२)।

भोत्ती—भार्या (व्यभा ४।२ टी प ६७)।

भोत्तूण—भृत्य, नौकर (दे ६।१०६ वृ)।

भोयग—१ ग्राम का मुखिया (आवचू २ पृ १८०)। २ पति (निभा ५०८१)।

भोयगुग्गुलि—कापालिक के पात्र का ढक्कन-विशेष (निचू २ पृ ३८)।

भोयडा—लाट देश में जिसे 'कच्छा' कहा जाता है, उसीको महाराष्ट्र में 'भोयडा' कहते हैं। कन्याएं इसे बचपन से लेकर विवाहित होने तथा गर्भवती होने तक पहनती हैं। जब वे गर्भधारण कर लेती हैं, तब सामूहिक भोज किया जाता है। उस भोज में सगे-संबंधी एकत्रित होते हैं और वे तब उस गर्भवती कन्या को अन्य शाटक पहनने के लिए देते हैं। उसके पश्चात् वह कन्या 'भोयडा' पहनना छोड़ देती है—'भोयडा णाम जा लाडाणं कच्छा सा मरहट्ठयाणं भोयडा भण्णति। तं च बालप्पभिति इत्थिया ताव बंधंति जाव परिणीया, जाव य आवण्णसत्ता जाया ततो भोयणं कज्जति सयणं मेलेऊण पडओ दिज्जति, तप्पभिइं फिट्टइ भोयडा' (निचू १ पृ ५२)।

भोरुड—भारुण्ड-पक्षी (दे ६।१०८)।

भोलिय—वंचित, ठगा हुआ—'विसएहिं भोलियहं' (उसुटी प ४७)।

भोल्लय—पाथेय-विशेष, प्रबन्ध-प्रवृ १ पाथेय, य आ-पाथेय (दे ६।१०८)।

म

मआई—शिरोमाला (दे ६।११५)।

मइअ—मर्दित, तिरस्कृत (दे ६।११४)।

मइमोहणी—सुरा, मदिरा (दे ६।११३)।

मइय—बोए हुए खेत को सम करने के लिए उपयोग में आने वाला कृषि का एक उपकरण—'वाहितच्छेत्तोवरि समीकरणवीयसारणत्थं समं कट्ठं मइयं' (द ७।२८ अचू पृ १७२)।

मइल—१ मलिन (भ ७।११७)। २ कलकल, कोलाहल। ३ निस्तेज (दे ६।१४२)।

मइलवत्ती—रजस्वला स्त्री (दे ६।१२५ पा)।

मइलिय—दूषित—'कम्म-मल-मइलियस्स' (जीचू पृ २)।

मइल्लय—मृत (बृभा ६३२०)।

मइल्लिय—मलिन (भ ६।२३)।

मइहर—ग्राम-प्रधान, गांव का मुखिया (दे ६।१२१)।

मई—मदिरा (दे ६।११३)।

मउ—पर्वत (दे ६।११३)।

मउअ—दीन (दे ६।११४)।

मउड—धम्मिल्ल, केशकलाप, जूड़ा (पा ९३)।

मउडि—जूट, जूड़ा (दे ६।११७)।

मउर—अपामार्ग का पौधा (दे ६।११८)।

मउरंद—अपामार्ग का पौधा (दे ६।११८)।

मउलि—हृदय-रस का उच्छलन, वमन के संवेदन से होने वाली उथल-पुथल (दे ६।११५)।

मएल्लय—मृत (बृटी पृ १६६९)।

मंख—अण्ड, वृषण (दे ६।११२)।

मंगरिया—वाद्य-विशेष (राज ४६)।

मंगल—१ अग्नि—'अग्गिस्स मंगलोति णामं केसुवि देसेसु भवति' (आवचू १ पृ ५)। २ डोरा बुनने का साधन। ३ बन्दनमाला (विभा २७)। ४ सदृश, समान (दे ६।११८)।

मंगलय—सदृश–'एगेण मज्झे हत्थो छूढो, दड्ढो रोवइ, ताए भण्णइ-चाणक्कमंगलयं' (आवहाटी १ पृ २६०)।

मंगलसज्झ—वह खेत जिसमें बीज बोना बाकी हो (दे ६।१२६)।

मंगुल—१ असुन्दर (स्था ४।५४३।१)। २ अशुभ, अनिष्ट–'सो हु तवो कायव्वो जेण मणो मंगुलं न चिंतेइ' (पंव २१४; दे ६।१४५)। ३ पाप (दे ६।१४५)। ४ चोर (वृ)।

मंगुली—अनिष्ट, असुन्दर (उपा ६।२०)।

मंगुस—नकुल, नेवला (सू २।३।८०; दे ६।११८)। मुंगि, मुंगिसि–नेवला (कन्नड़)।

मंच—बंधन (दे ६।१११)।

मंचुलक—प्राणी-विशेष (अंवि पृ २३८)।

मंचुल्लिया—छोटी खाट, मंचिका (आवचू १ पृ ११२)। मंचिगे–(कन्नड़)।

मंजरिया—मत्स्य की जाति-विशेष (जीवटी प ३६)।

मंजिआ—तुलसी (दे ६।११६ वृ)।

मंजीर—सांकल, जंजीर (दे ६।११६)।

मंजुआ—तुलसी (दे ६।११६)।

मंट—विकलांग (आवनि ११०६)।

मंठ—१ शठ (दे ६।१११)। २ बन्धन–'मंठो बंध इति केचित् पठन्ति' (वृ)।

मंड—१ स्थूल, मोटा–'मंडं ति बहुलं व त्ति पुत्थव्वा मेदितं ति' (अंवि पृ ११४)। २ मिष्टान्न-विशेष–'मंडकोंडगादीणि खतिताणि। (निचू १ पृ १५)।

मंडक—मांडा, एक प्रकार की रोटी (प्रसा २०७)। मंडगे–मैदा से निर्मित एक खाद्य पदार्थ (कन्नड़)।

मंडल—१ कुत्ता (दे ६।११४)। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग (निचू ३ पृ ३६२)।

मंडिल्ल—अपूप, पूआ (दे ६।११७)।

मंडिल्लका—चक्राकार खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

मंडी—१ पात्र-विशेष–'बिरालो पुव्वमंडीए दुद्धं तत्थेव ण पिबति' (आवचू १ पृ १२३)। २ अन्न का अग्रभाग–'मंडीएत्ति सिद्धान्त-शैल्या किलाग्रकूरसंस्कृतभक्तशिखागतौदनलक्षणं मण्डीशब्देनोच्यते'

(आवटि प ६१)। ३ पिधानिका, ढक्कन (दे ६।१११)। ४ शिरीष वृक्ष (प्रज्ञा १।३७।५)।

मंडुक्किय—शाक-विशेष (उपा १२)।

मंडुक्की—हरित वनस्पति, ब्राह्मी (प्रज्ञा १।४४)।

मंतक्ख—१ लज्जा। २ दुःख (दे ६।१४१)। ३ अपराध।

मंति—विवाह का मुहूर्त्त बताने वाला ज्योतिर्विद् (दे ६।१११)।

मंतिक—कर्मजीवी (अंवि पृ १६०)।

मंतुआ—लज्जा (दे ६।११६)।

मंतुलित—दीन, पतित (अंवि पृ १२१)।

मंतेल्लि—सारिका, मैना (दे ६।११६)।

मंथर—१ बहुत, प्रचुर। २ कुसुम्भ, कुसूम का वृक्ष। ३ कुटिल (दे ६।१४५)।

मंथरा—कुसूम का वृक्ष (पा ७०७)।

मंथु—१ बेर का चूर्ण (द ५।१।६८)—'बदरामहितचुण्णं मंथू' (अचू पृ १२४)। २ बेर, जौ आदि का चूर्ण—'मंथू नाम बोरचुन्न जवचुन्नादि' (जिचू पृ १६०)। ३ फलों का चूर्ण—'मंथु नाम फलचूर्ण एव' (आचू पृ ३४१)। ४ मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था—'क्षीरादिकं यावन्नवनीतमस्तु' (पिटी प ६१)।

मंदीर—१ शृंखला। २ मन्थान (दे ६।१४१)।

मंदुक्क—जलजन्तु-विशेष (अंवि पृ २२८)।

मंदुक्कडिंबिया—जलजंतु-विशेष, मेंढकी—'अंडके जीवंते चेव सप्पा गस्संति, मणूसावि केइ छुहाइंता जीवंतिया चेव मंदुक्कडिंबिया' (सूचू २ पृ ३७६)।

मंदुय—जलजंतु-विशेष (प्र १।५)।

मंदुलय—विकलाङ्ग, रोगग्रस्त—'पंगुलय-मंदुलय-मडहय-बामणय' (कु पृ ५५)।

मंधातइ—मेष, मेंढा—'मंधातइ णाम मेसो' (सूचू १ पृ ६८)।

मंधादय—मेंढा—'जहा मंधादए णाम थिमियं पियति दगं' (सू १।३।७१)।

मंधाय—आढ्य, समृद्ध (दे ६।११६)।

मंस—भुजपरिसर्प (जीवटी प ४०)।

मंसखल—वह स्थान जहां मांस सुखाया जाता है (आचूला १।४२)।

मंसुडग—मांस-खंड—'बालाई मंसुडग मज्जाराई विराहेज्जा' (पिनि ५८६)।

मकण्णी—कान का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

मकरिय—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

मकसक—सूखा क्षेत्र (अंवि पृ १६२)।

मक्कड—जाल बुनने वाला कीड़ा (दे ६।११६वृ)।

मक्कडबंध—स्वर्णसूत्र से निर्मित गले का आभरण-विशेष जो जनेऊ की भांति बाएं कंधे के ऊपर तथा दाएं कंधे के नीचे पहना जाता है (दे ६।१२७)।

मक्कोड—यंत्र से गुंफित करने के लिए किया जाने वाला ढेर—'मक्कोडो यन्त्रगुम्फनार्थं राशिश्च' (दे ६।१४२ वृ)।

मक्कोडग—चींटा, मकोड़ा (आचू पृ २६०)।

मक्कोडय—मकोड़ा, चींटा (ओनि ५५८)।

मक्कोडा—ऊर्णापिपीलिका, मकडी (दे ६।१४२)।

मगइय—हाथ से फेंका जाने वाला पाश (विपा १।३।४३)।

मगदंतिगा—मालती (दअचू पृ १२८)।

मगदंतिया—१ मालती (द ५।२।१४)। २ मोगरा। ३ मल्लिका (बेला) (अचू पृ १२८; हाटी प १८५)। ४ मेंहदी का गाछ।

मगरिग—आभूषण-विशेष (जीव ३।५६३)।

मगसक—चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष। (अंवि पृ २३७)।

मगसिर—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

मगहगधरच्छ—आभरण-विशेष (औप ५१ टि)।

मगा—पश्चात् (दे १।४ वृ)।

मग्ग—पश्चात्, पीछे (आचू १ पृ ५६; दे ६।१११)। मग-पीछे (मराठी)।

मग्गय—पश्चात्, पीछे (पा ६६४)।

मग्गहय—हस्तपाशित, हाथ से फेंका जाने वाला फंदा (विपाटी प ६२)।

मग्गओ—पीछे (नंदी १३)।

मग्गण्णिर—अनुगमनशील (दे ६।१२४)।

मग्गतो—पृष्ठतः, पीछे से—'अण्णयरे पुरिसे मग्गतो आगम्म' (भ १।३७०)।

मग्गमग्गी—पीछे-पीछे (आवहाटी १ पृ २५६)।

मग्गरिमच्छ—एक प्रकार का मत्स्य (प्रज्ञा १।५६)।

मग्गवच्छक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २३८)।

मग्गिल्ल—१ पीछे का, पश्चाद्वर्ती (पंक ४८८)। २ पहले का, पूर्ववर्ती (व्यभा ४।४ टी प ९६)।

मग्गिल्लिय—पीछे (आचू १ पृ २१७)।

मघोण—इन्द्र (प्रा २।१७४)।

मच्च—कचरा, मैल (दे ६।१११)।

मच्चिअ—मलयुक्त, मैला (दे ६।१११ वृ)।

मच्छंधुल—मत्स्यबन्ध-उपकरण (विपा १।८।१९)।

मज्जा—१ माता, देवी-विशेष (अनुद्वाचू पृ १३)। २ सीमा, मर्यादा (दे ६।११३)।

मज्जाया—सीमा, व्यवस्था—'मज्जाया सीमा ववत्था' (निचू १ पृ १३७)।

मज्जार—वायु-विशेष—'मार्जारो वायुविशेषः' (भटी पृ १२७०)।

मज्जिअ—१ अवलोकित। २ पीत (दे ६।१४४)।

मज्जोक्क—प्रत्यग्र, नवीन (दे ६।११८)।

मज्झअ—नापित, नाई (दे ६।११५)।

मज्झआर—मध्य (दे ६।१२१)।

मज्झंतिअ—मध्याह्न (दे ६।१२४)।

मज्झंतिक—मध्य (अंवि पृ ७७)।

मज्झमिल्ल—मध्यम (जीचू पृ २३)।

मज्झयार—मध्य—'सिवियाए मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचेवइयं।
सीहासणं महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥ (आचूला १५।२८।८)।
'जो न विवट्टइ रागे नवि दोसे दोण्ह मज्झयारम्मि।
सो होइ उ मज्झत्थो सेसा सव्वे अमज्झत्था ॥' (विभा २६९१)।

मज्झरस—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

मज्झिमगंड—उदर, पेट (दे ६।१२५)।

मट्ठ—भृगविहीन (दे ६।११२)।

मट्ठग—घडा (निचू २ पृ २५३)।

मट्ठुहिअ—१ विवाहित स्त्री का कोप। २ कलुष। ३ अशुचि (दे ६।१४६)।

मट्ठु—अलस, आलसी (दे ६।१२२)। माठा (राजस्थानी)।

मट्ठोरु—आलसी (कु पृ १५१)।

मड—१ मृत, मरा हुआ (दश्रु ८।५४; दे ६।१४१)। २ कण्ठ (दे ६।१४१)।

मडंब—वह ग्राम-विशेष जिसके चारों ओर एक योजन तक दूसरा गांव न हो (सू २।२।७)।

मडगगिह—म्लेच्छ जाति के व्यक्तियों के घर का वह अभ्यंतर भाग जहां शव गाड़ा जाता है—'मडगगिहं णाम मेच्छाणं घरब्भंतरे मतयं छोढुं विज्जति ण डज्झति' (निचू २ पृ २२५)।

मडप्फर—१ उत्साह—'को दूरमग्गेण मडप्फरो ते' (व्यभा ४।४ टी प १६)। २ गर्व, अभिमान—'भग्गमयणमडप्फरो कुमारो' (उसुटी प २६३; दे ६।१२०)।

मडभ—१ ठिगना (बृटी पृ १६१०)। २ कुब्ज—'मडभाः कुब्जाः' (व्यभा ४।३ टी प २१)।

मडय—१ आराम, बगीचा (दे ६।११५)। २ मृतक (निचू २ पृ २२५)।

मडवोज्झा—शिविका (दे ६।१२२)।

मडह—१ लघु एवं स्थूल—'लडहमडहजाणुए' (उपा २।२२)। २ ठिगना (बृभा ६०६०)। ३ लघु (दे ६।११७)। ४ स्वल्प।

मडहक—छोटा (अंवि पृ ११५)।

मडहर—गर्व (दे ६।१२०)।

मडहिया—बौनी स्त्री (अंवि पृ ६८)।

मडाह—प्रासुकभोजी (भ २।१३)।

मडासय—श्मशान—'मसाणासण्णे आणेत्तुं मडयं जत्थ मुच्चति तं मडासयं' (निचू २ पृ २२५)।

मडिआ—आहत स्त्री (दे ६।११४)।

मडुवइअ—१ हत, विध्वस्त। २ तीक्ष्ण (दे ६।१४६)।

मडुय—वाद्य-विशेष (राज ७७)। मड्डु-ढोल (कन्नड़)।

मड्डा—१ जबरदस्ती—'अम्हे मड्डाए पव्वाविया' (उसुटी प २६; दे ६।१४०)। २ हठ, गर्व (ज्ञाटी प ७३)। ३ आज्ञा (दे ६।१४०)।

मढणा—कटु और कठोर वचन—'मढणाहिं निवारणं सउणिदिट्ठंतो' (व्यभा २ टी प २८)।

मढिअ—१ परिवेष्टित (दे २।७५)। २ खचित।

मण—१ लोकवाद्य-विशेष (कु पृ २६)। २ निषेधार्थक अव्यय।

मणगुलिया—पीठिका (जीव ३।४१२)।

मणाम—मन के लिये प्रिय, सुन्दर (स्था २।२३३)।

मणामत्त—मन के लिए प्रियता आपादित करने वाला (भ ६।२२)।

मणावण—मनाना (निभा ३४५)।

मणिणायहर—समुद्र (दे ६।१२८)।

मणिरइआ—स्त्रियों की करधनी, कटिसूत्र (दे ६।१२६)।

मणिसोमाणक—गले का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १६३)।

मणोगुलिया—पीठिका (जीव ३।३२६)।

मणोज्जा—गुल्म वनस्पति-विशेष (भ २२।५)।

मण्ह—मसृण, चिकना (औपटी पृ १७)।

मतिय—कृषि का उपकरण-विशेष (प्रटी प १३)।

मतिलित—मैला (निभा ४४६१)।

मतेल्लित—मृत (आवचू १ पृ २७८)।

मत्तग—प्रस्रवण, मूत्र—'मत्तग सुवणं च जयणाए' (बृभा २३३१)।

मत्तबाल—मदोन्मत्त, मत्त (दे ६।१२२)।

मत्तल्ली—बलात्कार (दे ६।११३)।

मत्तवाल—मदोन्मत्त (दे ६।१२२ पा)।

मत्तालंब—मत्तवारण, बरंडा (दे ६।१२३)।

मत्थकत—खाद्य-विशेष (अंवि पृ १८२)।

मत्थग—कान का आभूषण-विशेष—'कुंडलं वा बको व त्ति मत्थगो तलपत्तगं' (अंवि पृ ६४)।

मत्थयधोय—दासत्व से मुक्त किया हुआ—'धौतमस्तकाः····अपनीतदासत्वाः' (ज्ञा १।१।७५ टी प ४३)।

मत्थयपच्छालण—दासत्व से मुक्ति (व्यभा ६ टी प ३८)।

मदगंतिया—१ मालती, मोगरा। २ मल्लिका—'मदगंतिआ—मेत्तिया, अन्ने भणंति—धियइल्लो मदगंतिया भण्णइ' (दजिचू पृ १६६)।

मद्दग—गुच्छ-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।४)।

मद्दल—मृदंग (दश्रु १०।२४)।

मधुरक—मुख का आभूषण-विशेष (अंवि पृ १८३)।

मधुला—पादगण्ड, (निचू २ पृ ६०)।

मधूला—पाद-गण्ड (बृभा ३८६५)।
मन्नक्ख—महान् दौर्मनस्य (बृभा ४१५६)।
मन्ने—वितर्क अर्थवाला अव्यय—'मन्ने इति वितर्कार्थो निपातः' (अंतटी प ८)।
मप्पक—नाप-तोल—'जं वाणियगा परस्स चक्खुं वंचेऊण मप्पकं करेंति' (निचू १ पृ ११५)।
मब्भीसडी—अभय-वचन (प्रा ४।४२२)।
ममच्चय—मेरा (निचू २ पृ १६२)।
मम्मक्का—१ उत्कण्ठा। २ गर्व (दे ६।१४३)।
मम्मण—१ मदन, कामदेव। २ रोष (दे ६।१४१)।
मम्मणिआ—नीलमक्षिका (दे ६।१२३)।
मम्मी—मामी, मामा की पत्नी (दे ६।११२)।
मयंसल—कृमि-विशेष (अंवि पृ ७०)।
मयगल—हाथी (दे ६।१२५ वृ)।
मयड—बगीचा (दे ६।११५)।
मयणसलाया—सारिका, मैना (दे ६।११६)।
मयणसाल—सारिका, मैना (आवचू १ पृ ४७६)।
मयणसाला—सारिका, मैना (प्र १।६)।
मयणिवास—कन्दर्प, कामदेव (दे ६।१२६)।
मयघुत्त—गीदड़ (दे ६।१२५ वृ)।
मयरंद—कुसुम-रज, पराग (दे ६।१२३)।
मयल—मलिन (उशाटी प २१५)।
मयलबुत्ती—रजस्वला स्त्री (दे ६।१२५)।
मयलवुत्ती—रजस्वला स्त्री (दे ६।१२५ पा)।
मयल्लय—मलिन (बृटी पृ १०६)।
मयहर—१ गांव का मुखिया (उसुटी प १४३)। २ मुखिया, नायक।
मयहरिया—मुख्या साध्वी—'सच्छंदा समणीओ मयहरियाए न ठायंति' (ग ११८)।
मयाई—शिरो-माला (दे ६।११५ पा)।
मयार—एक प्रकार का अपशब्द—'जत्थ जयार-मयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं' (ग ११०)।

मयाली—निद्राकरी लता (दे ६।११६)।

मर—१ मशक, मच्छर। २ उल्लू (दे ६।१४०)।

मरकल—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३८)।

मरट्ट—गर्व (दे ६।१२०)।

मराल—१ अविनीत—'खलुंका गली मरालो शठो प्रतिलोमो अविनीतः इत्येकार्थः' (उचू पृ २७०)। २ आलसी (दे ६।११२)। ३ हंस—'मरालो हंस इति सातवाहनः' (वृ)।

मरालि—आलसी बैल या घोड़ा—'गंडी गली मराली अस्से गोणे य हुंति एगट्ठा' (उनि ६४)।

मराली—१ सारसी, मादा सारस। २ दूती। ३ सखी (दे ६।१४२)।

मरिचग—कुंथु आदि सूक्ष्म प्राणी (दश्रुचू प ५१)।

मरुल—भूत, पिशाच आदि—'काममरुलमडिआ सा मउआ' (दे ६।११४)।

मल—स्वेद, पसीना (दे ६।१११)।

मलंपिअ—अहंकारी (दे ६।१२१)।

मलक—मणि-विशेष—'गोमेदका अंका मलका सासका सिलप्पवाला' (अंवि पृ २३३)।

मलय—१ आस्तरण-विशेष (ज्ञा १।१७।२२)। २ पर्वत का एक भाग। ३ उपवन (दे ६।१४४)।

मलवट्टी—तरुणी (दे ६।१२४)।

मलहर—तुमुल ध्वनि, कोलाहल (दे ६।१२०)।

मलिअ—१ लघु क्षेत्र। २ कुण्ड (दे ६।१४४)।

मल्ल—१ मैल—'जल्लमल्लकलंकसेय-रहियसरीरे' (ज्ञा २।१।१६)। २ बलि—'मल्लंति बलीए णामं' (आवचू १ पृ ३३२)। ३ सिकोरा (आवहाटी १ पृ ४२)। ४ भीत का आधारभूत काष्ठ (भटी प ३७७)।

मल्लग—पात्र-विशेष, शराव (नंदी ५१)।

मल्लय—१ शराव, सिकोरा (ज्ञा १।१६।२६; दे ६।१४५)। २ पूआ, अपूप का एक भेद। ३ कुसुम्भ-रक्त। ४ चषक, प्याला (दे ६।१४५)।

मल्ला—दीवार का आधारभूत काष्ठ (भ ८।२५७)।

मल्लाणी—मामी, मातुलानी (दे ६।११२)।

मल्लुंडी—जलचर प्राणि-विशेष (अंवि पृ ६६)।

मल्हण—लीला, मनोरंजन (दे ६।११६)।

मसार—कसौटी का पत्थर—'मसारो मसृणीकारकः स चात्र कषपट्टः संभाव्यते' (औपटी पृ १६)।

मसिण—१ रम्य (दे ६।११८)। २ मन्द, धीमा (से १।४५)।

मसूरक—वाद्य-विशेष जो चर्म से मढा हुआ हो—'वीणा मसूरका पखरगतं दद्दरका' (अंवि पृ २३०)।

महंग—ऊंट (दे ६।११७)।

महंत—आकांक्षा करते हुए—'परधणं महंता' (प्र ३।५)।

महच्चय—मेरा (उशाटी प ५१)।

महण—पितृ-गृह, पीहर (दे ६।११४)।

महत्थार—१ भाण्ड, भाजन (दे ६।१२५)। २ भोजन—'महत्थारं भोजनमिति सातवाहनः' (वृ)।

महमहिय—१ प्रसृत (प्रा १।१४६)। २ सुरभित।

महयर—गह्वरपति, निकुंज या गुफा का मालिक (दे ६।१२३)।

महर—असमर्थ (दे ६।११३)।

महल्ल—१ बड़ा (ज्ञा १।२।११)। २ वृद्ध—'डहरा य महल्ला य जुवाणा य' (अंत ६।५५; दे ६।१४३)। ३ दीर्घ—'महान्तो दीर्घतया' (प्रटी प ६१)। ४ समूह। ५ पृथुल, विस्तीर्ण। ६ मुखर। ७ समुद्र (दे ६।१४३)।

महल्लय—बड़ा (आचूला ४।२८)।

महल्लिय—बड़ा, विस्तीर्ण (आचूला १।२६)।

महाणड—रुद्र, महादेव (दे ६।१२१)।

महापाली—गणनातीत (उपमेय) काल, सागरोपम-प्रमाण कालमान (उ १८।२८)।

महाबिल—आकाश (दे ६।१२१)।

महायत्त—आढ्य, समृद्ध (दे ६।११६)।

महाल—जार, उपपति (दे ६।११६)।

महालक्ख—तरुण (दे ६।१२१)।

महालयक्ख—श्राद्ध-पक्ष, भाद्रव मास में होने वाला श्राद्ध-पक्ष (दे ६।१२७)।

महावल्ली—नलिनी, कमलिनी (दे ६।१२२)।

महाविडिम—वृक्ष (प्र ६।१)।

महासउण—उल्लू (दे ६।१२७)।

महासद्दा—शिवा, शृगाली (दे ६।१२०)।

महि—छाछ (आवचू २ पृ १०१)।

महिआ—मेघ-समूह (पा ४१६)।

महिट्ठ—मट्ठे से संसृष्ट, तक्र-संस्कारित (विपा १।८।१२)।

महिय—तक्र, छाछ (बृटी पृ ५३)।

महियाडुक—घी का मल (बृटी पृ ५०५)।

महियाडुव—घी का किट्ट, घृत-मैल—'घृतघट्टः महियाडुवं' (पंवटी प ६३)।

महिलाथूभ—कूपतट—'महिलास्तूपं च कूपतटमित्यर्थः' (आवमटी प ३६०)।

महिलिया—महिला, स्त्री (जीभा १६२२)।

महिसंद—शिग्रु का वृक्ष (दे ६।१२०)।

महिसवक—महिषी-समूह (उसुटी प ७; दे ६।१२४ पा)।

महिसिंदु—१ खज्जूरी वृक्ष—'महिसिंदु-रुक्खस्स त्ति खज्जूरीवृक्षस्येत्यर्थः' (आवटि प २३)। २ शिग्रु का वृक्ष, सहिंजना का पेड।

महिसिवक—महिषीसमूह (दे ६।१२४)।

महिसेंद—शिग्रु का वृक्ष (आवचू १ पृ २७६)।

महुअ—१ स्तुति कर याचना करने वाला, मागध। २ वह पक्षी जो 'श्री', 'श्री' ऐसी आवाज करता है, श्रीवद पक्षी (दे ६।१४४)।

महुंडिम—ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (निचू ३ पृ २२४)।

महुमुह—पिशुन, चुगलखोर (दे ६।१२२)।

महुरालिअ—परिचित (दे ६।१२५)।

महुला—चिलोड़ी, फोड़ा-विशेष—'पादे गण्डं महुला भण्णति' (निचू २ पृ ६०)।

महुसित्थ—कर्दम-विशेष, स्त्री के पैरों में लगे अलक्तक तक लगने वाला कर्दम (ओनि ३३ टी)।

महेड्ड—पंक, कीचड (दे ६।११६)।

माअलिआ—मातृष्वसा, मौसी (दे ६।१३१)।

माइ—पक्ष्मल, बालों से युक्त (ज्ञाटी प २४६; दे ६।१२८)। २ मयूरित, पुष्पित।

माइं—मा, मत, नहीं (दे ६।१२८ वृ)।

माइंदा—आमलकी, आंवला का गाछ (दे ६।१२६)।

माइघर—योगिनी का मंदिर—'वच्च माइघरे सुसाणे कण्हचउद्दसीए बलिं देहि' (उसुटी प ७५)।

माइय—पक्ष्मल, रूक्ष बालों से युक्त (ज्ञा १।१८।३५)। २ जिसके हाथ में पाश–फंदा हो वह–'माइय त्ति हस्तपासिका:' (प्रटी प ४७)। ३ मयूरित, पुष्पित (औप ५)।

माइलि—मृदु (दे ६।१२९)।

माइवाह—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३१)।

माइवाहय—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१२८)।

माईण—जटाधारी देवी–'उन्भडजडाकडप्पा खरफरुसा-दीहकेसणहरिल्ला। चक्कलपीणपओहर माईण व आगया एक्का॥' (कु पृ १२२)।

माईवाह—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (प्रज्ञा १।४९)।

माउआ—१ मूंछ (ज्ञा १।९।१६)। २ सखी। ३ माता–'माउयाउ उत्तरौष्ठरोमाणि सम्भाव्यन्ते अथवा माउया—सख्यो मातरो वा' (ज्ञाटी प १६६; दे ६।१४७)। ४ दुर्गा (अंवि पृ २२३; दे६।१४७)।

माउक्क—मृदु (दे ६।१२९ वृ)।

माउग—वस्त्र का आदि भाग (बृभा ३९५२)।

माउग्गाम—१ स्त्री–'मरहट्ठविसयभासाए वा इत्थी माउग्गामो भण्णति' (निचू २ पृ ३७१)। २ स्त्रीवर्ग–'समयपरिभाषया स्त्रीवर्ग:' (बृटी पृ ६०४)।

माउच्छ—मृदु (दे ६।१२९)।

माडंबिय—मडंब का नायक–'सन्निवेशविशेष-नायक:' (भटी पृ ९५०)।

माडिअ—गृह (दे ६।१२८)।

माढ—शिखर (जंबूटी प ४९)।

माणं—१ निषेधसूचक अव्यय (ज्ञाटी प १६)। २ वाक्यालंकार में प्रयुक्त अव्यय–'माणमिति वाक्यालंकारे' (व्यभा ४।४ टी प ४८)।

माणंसि—१ मायावी। २ चन्द्रवधू, वीरबहूटी, कीटविशेष (दे ६।१४७)। ३ मनस्वी (वृ)।

माणक—एक प्रकार का घट–'अरंजरो अलिंदो त्ति कुंडगो माणको त्ति वा' (अंवि पृ ६५)।

माणिअ—अनुभूत (दे ६।१३०)।

मात—दुर्बल, कृश–'ओझीणं परिहीणं ति मातं ति' (अंवि पृ ११४)।

मातलाहणग—खाद्य-विशेष (निचू २ पृ २५१)।

माथु—खाद्य-विशेष, दही के ऊपर का द्रवपदार्थ (आवटि प २४)।

मादलिआ—माता (दे ६।१३१)।

माभाइ—अभय-दान (दे ६।१२६)।

माभीसिअ—अभय-दान (दे ६।१२६ वृ)।

मामणा—ममता, ममकार—'मामण त्ति ममीकारार्थे देशीवचनम्' (आवहाटी १ पृ ८६)।

मामा—मातुलानी, मामी (दे ६।११२)।

मामि—सखी का आमंत्रण-शब्द (दे ६।१२८ वृ)।

मामिया—मामी, मातुलानी (विपा १।३।१४)।

मामी—मामा की पत्नी, मामी—'मामी शब्दोऽपि देश्यः' (दे ६।११२ वृ)।

मायंद—आम्र (दे ६।१२८)।

मायंदी—श्वेतपटा साध्वी, श्वेत वस्त्र धारण करने वाली संन्यासिनी (दे ६।१२६)—'मायंदी उवदिसइ' (वृ)।

मायार—मदारी, बन्दर पकड़ने वाला (बृटी पृ ८६)।

मार—मणि का लक्षण-विशेष (जंबूटी प ३२)।

मारामारी—मारपीट (पिटी प १५०)।

मारिलग्गा—कुत्सिता (दे ६।१३१)।

माल—१ खाद्य पदार्थ आदि रखने के लिए ऊपर बनाया गया मंच (द ५।१।६६)। २ घर का ऊपरि भाग, दूसरी मंजिल—'मालो य घरोवरिं होति' (भटी प २७४)। ३ समूह (आवहाटी २ पृ ८६)। ४ मञ्च, आसन-विशेष (ज्ञाटी प ७२; दे ६।१४६)। ५ आराम, बगीचा। ६ सुन्दर (दे ६।१४६)। ७ गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।५)। ८ चिनकर बनाई हुई पाल—'सण्हकट्ठेहि य मालं करेंति, चिक्खिल्लेणं लिंपइ कंटयछायाए व उच्छाएइ' (आवहाटी २ पृ ८६)। ९ देश-विशेष।

मालग—घर का ऊपरी भाग, मंजिल (जीभा १२७०)।

मालय—म्लेच्छ-विशेष जो मनुष्यों का अपहरण करते हैं (व्यभा ४।४ टी प १३)।

मालवी—ज्योत्स्ना, चांदनी (दे ६।१२८)।

मालाकुंकुम—प्रधान कुंकुम, श्रेष्ठ कुंकुम (दे ६।१३२)।

मालि—वृक्ष-विशेष (समप्र २३१)।

मालुका—पक्षिणी-विशेष—'उलुकी मालुका व त्ति सेणा' (अंवि पृ ६६)।

मालुग—श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (उ ३६।१३७)।

मालुय—तीन इन्द्रिय वाले जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५०)।

मालूर—१ कपित्थ, कैथ (दे ६।१३०)। २ बिल्व का गाछ (वृ)। ३ बिल्व-फल।

मासाल—उच्च आसन-विशेष—'मासालो मचको वत्ति पल्लंको पडिसेज्जको' (अंवि पृ ६५)।

मासिअ—पिशुन, चुगलखोर (दे ६।१२२)।

मासी—छाछ—'एगस्स पिया छासी मासी अण्णस्स वेसरी' (आचू पृ १६६)।

मासुरी—श्मश्रु, दाढी के बाल (दे ६।१३०)—'ता माहिल! तुज्झ मुहे किमुग्गया मासुरी एसा' (वृ)।

माह—कुन्द-पुष्प (दे ६।१२८)।

माहकी—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

माहय—चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (उ ३६।१४८)।

माहारयण—१ वस्त्र (दे ६।१३२)। २ वस्त्रविशेष (वृ)।

माहिल—महिषीपाल, भैंसों को चराने वाला (दे ६।१३०)।

माहिवाअ—१ शिशिर-पवन (दे ६।१३१)। २ माघ का पवन।

माहुर—शाक (दे ६।१३०)।

माहुरग—खाद्य-विशेष (निचू २ पृ २५१)।

मिचणक्कीला—चक्षुःस्थगनक्रीडा, आंखमिचौनी (दे ३।३०)।

मिंजिक—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (अंवि पृ २६७)।

मिंठ—महावत (दजिचू पृ ६१)।

मिंढिय—ग्राम-विशेष (आवमटी प २६७)।

मिंढिया—मेषी (पा ६६६)।

मिथ—महावत (दजिचू पृ ६१)।

मिगंड—कस्तूरी—'मिगंड-कप्पूरागरु-कुंकुम-चंदण' (निचू २ पृ ४६७)।

मिणाय—बलात्कार (दे ६।११३)।

मित्तल—कंदर्प, कामदेव (दे ६।१२६ वृ)।

मित्तलय—कन्दर्प, कामदेव (दे ६।१२६)।

मित्तिवअ—ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई (दे ६।१३२)।

मिय—हरिण के आकार का पशु-विशेष जो हरिण से छोटा होता है और जिसका पुच्छ लंबा होता है—'मिएहिंतो लहुतरा मृगाकृतयो बृहत्पिच्छा' (अनुद्वाचू पृ १५)।

मिरा—मर्यादा (पिनि २३७)।

मिरिआ—कुटी, झोंपडी (दे ६।१३२)।

मिलाण—पर्याण (औप ६४ टी)।

मिलिंदक—सर्प की एक जाति (अंवि पृ ६३)।

मिलिमिलिमिलंत—चमकता हुआ (प्र ३।५)।

मिसिमिसंत—अत्यन्त चमकता हुआ (औप ६३)।

मिसिमिसित—अत्यन्त चमकता हुआ—'वेरुलियवरिट्ठरिट्ठअंजणनिउणोवियमिसिमिसितमणिरयणमंडियाओ' (दश्रु ८।१०)।

मिसिमिसेमाण—उत्तेजित—'कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा' (भ ३।४५)।

मिस्सिग—पूज्य—'अह उवज्झाओ से पिट्टेइ अपढंते ताहे साहेंति माइमिस्सिगाणं' (आवहाटी २ पृ १४२)।

मिहिआ—मेघसमूह (दे ६।१३२)।

मिहुज्जुहिय—विवाह का मंडप, वर-वधू का परिणयन-स्थल—'वधुवरपरिआणं ति मिहुज्जूहिया' (निचू ३ पृ ३४८)।

मीअ—समकाल, उसी समय (दे ६।१३३)।

मीढ—भास पक्षी—'भासो मीढसउणओ' (बृटी पृ २४८)।

मीरा—दीर्घ चुल्ली, बड़ा चूल्हा (सूनि ७६)। २ सीमा (निचू २ पृ १६६)

मीराकरण—द्वार को चटाई आदि से ढकना—'मीराकरणं नाम—कटेद्वारादेराच्छादनम्' (बृटी पृ ५६१)।

मीसालिअ—मिश्र, संयुक्त (दे ६।१३३ वृ)।

मुअंगी—चींटी (दे ६।१३४)।

मुआइणी—डुम्बी, चंडालिन (दे ६।१३५)।

मुइअ—योनिशुद्ध, निर्दोषमातृक—'मुइओ जो होइ जोणिसुद्धो त्ति' (औप १४ टी पृ २१)।

मुइअंगा—चींटी (पिनि ३५१)।

मुइंगा—चींटी (ओनि ५५८)।

मुईग—मकोडा—'मुईगत्ति देशीपदमेतत् मत्कोटवाचकम्' (व्यभा ३ टी प ७७)।

मुंगसी—नेवली (अंवि पृ ६६)।

मुंजापिच्चिय—मूंज को कूटकर बनाया हुआ (रजोहरण) (स्था ५।१६१)।

मुंड—१ स्थाणु-विशेष जो भैंसों के बाडे में अर्गला के रूप में काम आता है (अनु ३।३८ टी)। २ तीक्ष्ण—'मुंडपरसूहिं' (प्रटी प ६०)।

मुंडग—पात्र-विशेष, प्याला (अंवि पृ ६५)।

मुंडा—मृगी, हरिणी (दे ६।१३३)।

मुंडी—नीरंगी, घूंघट (दे ६।१३३)।

मुंदिका—फल-विशेष (अंवि पृ ७०)।

मुक्क—पर्याप्त, उचित, योग्य (व्यभा ७ टी प १६)।

मुक्कय—किसी कन्या के विवाह में निमंत्रित अन्य कन्याओं का विवाह (दे ६।१३५)।

मुक्कल—१ मुक्त, स्वतंत्र (बृटी पृ ६००)। २ उचित। ३ स्वैर, स्वच्छंद (दे ६।१४७)।

मुक्कलिअ—बन्धन-मुक्त, स्वतंत्र (दे १।१५६ वृ)।

मुक्किल्लय—मुक्त, त्यक्त (अनुद्वाहाटी पृ ८८)।

मुक्कुंडी—जूट, जूड़ा (दे ६।११७)।

मुक्कुरुड—राशि, ढेर (दे ६।१३६)।

मुक्केल्लय—मुक्त, त्यक्त (अनुद्वाहाटी पृ ८८)।

मुगुंस—नकुल, न्यौला—'मुगुंसपुच्छं व तस्स भुमक्काओ फुग्गफुग्गाओ' (उपा २।२१)।

मुगुंसिया—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।६)।

मुगुसिआ—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

मुग्गड—मोगल, म्लेच्छ-जाति-विशेष (प्रा ४।४०६)।

मुग्गस—नकुल, न्यौला (दे ६।११८)।

मुग्गिल्ल—पर्वत-विशेष (भक्त १६१)।

मुग्गुसु—नकुल, न्यौला (दे ६।११८)।

मुग्घड—मोगल, म्लेच्छ जाति-विशेष (प्रा ४।४०६)।

मुग्घुरुड—राशि, ढेर (दे ६।१३६)।

मुट्ठि—पुस्तक का एक प्रकार—'चउरंगुल दीहो वा वट्टागिइ मुट्ठिपुत्थगो अहवा चउरंगुलदीहो च्चिय चउरंसो होइ विन्नेओ' (प्रसा ६६६)।

मुट्ठिक्का—हिक्का, हिचकी (दे ६।१३४)।

मुण—मुक्त (आवदी प १०१)।

मुणमुणंती—बड़बडाहट करती हुई (व्यभा ५ टी प ५)।

मुणि—अगस्ति-वृक्ष (दे ६।१३३)।

मुणिय—१ पागल, भूताविष्ट—'मुणिओत्ति काउं मुक्को, मुणिओ पिसाओ' (आवहाटी १ पृ १३७)। २ ज्ञात (उसुटी प २)।

मुत्तोली—१ धान्य का वह कोठा जो ऊपर-नीचे संकरा तथा मध्य में विशाल हो—'मोट्टा हेट्ठुवरि संकडा इसि मज्झे विसाला' (अनुद्वाचू पृ ५०) २ मूत्राशय (तंदु १३६)। ३ प्राणि-विशेष (अंवि पृ २५३)।

मुदग्ग—जीव पुद्गल-निर्मित ही है—ऐसा मिथ्या ज्ञान (स्था ७।२)। देखें—'मुयग्ग'।

मुंदिग—चींटी (निभा ४२६०)।

मुदिय—योनि-शुद्ध—'मुदिओ जो होति जोणिसुद्धो तु' (जीभा १९९७)।

मुद्दुग—ग्राह-विशेष, जलजन्तु की एक जाति (प्रज्ञा १।५८)।

मुद्दी—चुम्बन (दे ६।१३३)।

मुद्धड—मूर्ख, भोला (कु पृ २१०)।

मुद्धय—जलचर-विशेष, ग्राह (प्रज्ञा १।५८)।

मुद्धुय—ग्राह-विशेष (प्रज्ञा १।५८ पा)।

मुधुलूक—पक्षि-विशेष, उलूक की एक जाति (अंवि पृ ६२)।

मुब्भ—घर के मध्य का तिर्यक् काष्ठ (दे ६।१३३)। 'मोभ' (गुजराती)।

मुम्मुई—१ अस्पष्टभाषी। २ मूक हो जाना—'से मुम्मुई होइ अणाणुवाइ' (सू १।१२।५)।

मुम्मुर—१ तुषाग्नि (सू १।५।१०)। २ भस्मच्छन्न अग्नि (प्र १।२३)। ३ करीषाग्नि (द ४।२०; दे ६।१४७)। ४ करीष, गोइंठा (दे ६।१४७)।

मुम्मुलक—जन्तु-विशेष (अंवि पृ ७०)।

मुयग्ग—जीव पुद्गल-निर्मित ही है—ऐसा मिथ्या ज्ञान—'मुयग्गे त्ति बाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितशरीरो जीव इत्यवष्टम्भवतु, भवनपत्यादिदेवानां बाह्याभ्यन्तरपुद्गल-पर्यादानतो वैक्रियकरणदर्शनात्' (स्थाटी प ३६४)

मुरई—असती, कुलटा (दे ६।१३५)।

मुरग—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

मुरल—धान्य का माप-विशेष (ज्ञाटी प १२६)।

मरली—नालिका, मुरली—'णालियत्ति अपव्वा भवति, सा पुण लोए मुरली भण्णति' (निचू १ पृ ८४)।

मुरय—१ धान्य रखने का कोठार। २ धान्य मापने का पात्र-विशेष (अनुद्वा ३७५)। ३ धान्य से भरी गाड़ी के ऊपर दिया जाने वाला ढक्कन—'मुरवं गन्त्र्या उपरि यद्दीयते' (अनुद्वामटी प १४०)।

मुरवि—आभूषण-विशेष (भ ६।१६०)।

मुरवी—मुरज के आकार का आभरण (भटी पृ ८७६)।

मुरिअ—१ त्रुटित (दे ६।१३५)। २ मुड़ा हुआ।

मुरुंडी—अनार्य देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

मुरुंब—मिट्टी-विशेष—'कण्हमत्तिका पंडुमत्तिका तंबभूमी मुरुंबो कडसक्करा' (अंवि पृ २३३)।

मुरुमुंड—धम्मिल्ल, बंधे हुए बालों का जूड़ा (दे ६।११७)।

मुरुमुरिअ—कामासक्ति से होने वाली उत्सुकता, रणरणक (दे ६।१३६)।

मुरुव—चिकनी मिट्टी—'मिदूसु कण्हमत्तिका मुरुवो तंबो वेति विण्णेया' (अंवि पृ २३३)।

मुलासिअ—स्फुलिंग, चिनगारी (दे ६।१३५)।

मुसंढी—१ अनंतकाय वनस्पति-विशेष (भ ७।६६)। २ लोहमय गोल कांटों से जटित दारुमय प्रहरण-विशेष (उ १६।६१)।

मुसली—दुष्प्रतिलेखना का एक प्रकार (पंव २४०)।

मुसह—मन की आकुलता (दे ६।१३४)।

मुसुंढि—१ अनन्तकाय वनस्पति-विशेष (भ ८।२२१)। २ प्रहरण-विशेष (औप १)।

मुसुमूरणा—चबाया जाना—'करवत्त-करालदाढावली-मुसुमूरणाचुक्कस्स' (कु पृ २२३)।

मुसुमूरिअय—चूर्णित, टूटा हुआ (पा ५१६)।

मुसुमूरिय—त्रुटित, तोड़ा हुआ—'दिण-पक्ख-णक्खत्त-करवत्त-दंतावली-मुसुमूरिओ महाकालमच्चुवेयालेणं ति' (कु पृ २१३)।

मुहत्थडी—मुख के बल पर गिरना (दे ६।१३६)।

मुहमक्कडिय—मुंह को मोड़ना, मुंह मचकाना (आवचू २ पृ १६४)।

मुहरोमराइ—भौंह, भ्रू (दे ६।१३६)।

मुहल—मुख (दे ६।१३४)।

मुहिअ—वैसे ही करना (दे ६।१३४)।

मुहिआ—वैसे ही करना, व्यर्थ ही करना (दे ६।१३४ वृ)–जिणसासणं पि कहमवि लद्धुं हारेसि मुहियाए'।

मुहुमुह—दुर्जन, खल (पा १२३)।

मूअल—मूक (दे ६।१३७)।

मूअल्ल—मूक (दे ६।१३७)।

मूअल्लइअ—मूक (से ५।४१)।

मूइंग—चींटी–'मूइंगमाति खइते' (निभा २१८६)।

मूइंगलिया—पिपीलिका, चींटी (पंव २३८)।

मूइंगा—चींटी (ओनि ५६०)।

मूइंगुलिया—चींटी (सं ८५)।

मूइयंग—चींटी–'जीवा मूइयंगमूसादी' (जीभा १२६३)।

मूएल्लि—मूक (कु पृ ८२)।

मूड—अन्न का एक दीर्घ परिमाण–'चउत्थीए भाउयखेत्तेसु आरोविऊण वुड्ढि नीया, जाया वरिसपणगेण मूडसहस्सा' (व्यभा ४।४ टी प ३५)।

मूढक—शरासन, आसनविशेष (ज्ञाटी प ४७)।

मूढत्थ—धान्य-विशेष–'मासा मूढत्थ चणका कुलत्थ त्ति सण त्ति वा' (अंवि पृ ६६)।

मूढिगाह—धान्य आदि भरने के लिए जमीन को खोदकर, ऊपर से संकरा और नीचे से विस्तीर्ण बनाया गया भूगृह जो अग्नि से संस्कारित किया जाता है। इसमें एकत्रित धान चिरकाल तक सुरक्षित रहता है–'मूढिगाहा भूमी एगा खणितु भूमीघरगं उवरिं संकडं हेट्ठा विच्छिन्नं अग्गिणा दहित्ता कज्जति, ताहिं तु चिरंपि गोधूमादि वत्थुं अच्छति' (आचू पृ ३३६)।

मूतिंगलिया—चींटी, पिपीलिका (जीभा २१)।

मूयंगा—चींटी (आचू पृ ३२८)।

मूयग—मेवाड़ देश में होने वाला तृण-विशेष–'मेदपाटप्रसिद्धस्तृणविशेषः' (प्रटी प १२८)।

मूरग—भञ्जक, तोड़ने वाला (प्र ४।५)।

मूरण—तोडने वाला–'जय महामोहमूरण' (कु पृ २४२)।

मूरय—भञ्जक, तोड़ने वाला–'पंचविहो ववहारो, दुग्गइभवमूरएहिं पण्णत्तो' (जीभा ८)।

मूलवेलि—घर के छप्पर का आधारभूत स्तम्भ–'पट्ठीवंसो दो धारणउ चत्तारि मूलवेलीओ' (प्रसा ८७१)।

मूलिल्ल—मूल पूंजीवाला—'अत्थि य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो' (उसुटी प ६१)।

मूसरि—भग्न (दे ६।१३७)।

मूसल—पुष्ट, मांसल (दे ६।१३७)।

मूसा—छोटा द्वार (दे ६।१३७)।

मूसाअ—लघु द्वार (दे ६।१३७)।

मेअज्ज—धान्य (दे ६।१३८)।

मेअर—असहन, असहिष्णु (दे ६।१३८)।

मेंट—विकलांग (आवचू २ पृ २१)।

मेंठ—महावत (निभा २४६१; दे ६।१३८)।

मेंठी—मेषी, भेड़ (दे ६।१३८)।

मेंढिय—ग्राम-विशेष (आवचू १ पृ ३१६)।

मेंढो—भेड़, मेषी—'मेण्ढीशब्दोऽपि यदि देश्यः तदा पर्यायभङ्ग्या निबद्धः' (दे ६।१३८ वृ)।

मेज्जुक—पक्षी-विशेष (अंवि पृ १४५)।

मेज्जुल्लअ—मज्जा—'मिज्जं मेज्जुल्लउत्ति वुत्तं भवति' (निचू २ पृ २१)।

मेडंभ—मृगतंतु, मृगजाल (दे ६।१३९)।

मेढ—वणिक्-सहाय, व्यापारी का सहयोगी (दे ६।१३८)।

मेढक—काठ का छोटा डंडा (प्र १।१८)।

मेती—चाण्डालिन—'पुरोहितसुतो तीए दुगुंछाए रायगिहे मेतीपोट्टे आगतो' (आवचू १ पृ ४९४)।

मेत्तिया—मगदंतिका, मालती (दशचू पृ १२८)।

मेरा—१ मर्यादा, सीमा (भ ७।२४; दे ६।११३)। २ तृण-विशेष (प्र ८।१०)।

मेलिमिंद—फण वाले सर्प की जाति-विशेष (प्रज्ञा १।७०)।

मेली—संहति, समूह (दे ६।१३८)।

मेसर—लोमपक्षी-विशेष (जीवटी प ४१)।

मेहच्छीर—जल, पानी—'पेडंभखलिज्जन्ता मेहच्छीरं पि कह वि अपिअन्ता' (दे ६।१३९)।

मेहर—गांव-प्रमुख—'आगओ निजमेहरपेसितो नडो' (उसुटी प २५०; दे ६।१२१ वृ)।

मेहुण—म मा का पुत्र (बृभा २८२२)।

मेहुणय—फूफा का लड़का (दे ६।१४८)।

मेहुणि—१ मामे की लड़की। २ बूआ की लड़की—'मेहुणि त्ति माउलपिउस्सय धाता' (निचू ४ पृ १३५)।

मेहुणिआ—१ मामा की लड़की—'मेहुणिया माउलदुहिया' (निचू २ पृ २४; दे ६।१४८)। २ भार्या (व्यभा ७ टी प ४३)। ३ साली, पत्नी की बहिन (दे ६।१४८)।

मेहुल—मामा का बेटा—'मेहुलो (णो) माउलपुत्तो' (निचू ३ पृ ५८६)।

मो—पादपूरक अव्यय (उ ६।१४)।

मोअ—१ अधिगत, प्राप्त। २ ककड़ी आदि का बीजकोश (दे ६।१४८)।

मोंढ—म्लेच्छ-जाति-विशेष (प्रज्ञा १।८६)।

मोकलि—वनस्पति-विशेष (भ २२।६)।

मोक्कणिआ—कमल का काला मध्य भाग, कृष्ण-कर्णिका (दे ६।१४०)।

मोक्कणी—कृष्ण-कर्णिका (दे ६।१४० वृ)।

मोक्कल—स्वतंत्र (निचू २ पृ २२२)।

मोक्कलय—खुला छोड़ना (ओटी प ६७)।

मोगरावड—मत्स्य की एक जाति (जीवटी प ३६)।

मोगली—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

मोग्गड—१ नीच जाति-विशेष (पंवटी प ३७)। २ व्यन्तर-विशेष।

मोग्गर—१ गुल्म-विशेष (जीव ३।५८०)। २ मुकुल, कलिका (दे ६।१३६)। ३ मोगरा, मगदंतिका का पुष्प (निचू ३ पृ ५१७)।

मोग्गरग—मोगरा (निभा ४८३८)।

मोग्गरिअ—संकुचित, मुकुलित—'भयमोग्गरिअमुहा तुह रिउणो गयमोचया वणे जंति' (दे ६।१३६ वृ)।

मोच—१ अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता (दे ६।१३६)। २ मूत्र, प्रस्रवण (सूचू १ पृ ११८)।

मोचय—एक प्रकार का जूता (दे ६।१३६वृ)।

मोट्टा—छोटा कोठा (अनुद्वामटी प १४०)।

मोट्ठा—धान का वह कोठा जो ऊपर-नीचे से संकरा और मध्य में विशाल हो (अनुद्वाहाटी पृ ७५)।

मोड—जूट, शिर पर बंधे हुए केशों का जूडा, धम्मिल्ल (दे ६।११७)।

मोडाउड—अहमहमिका—'जेणुम्मत्तपमत्तउ हिंडइ पुरिपहिहिं। मोडाउडि करंतउ वेढिउ बहुनरहिं। (उसुटी प १३५)।

मोढरी—वनस्पति-विशेष (भ २३।६)।

मोद्दालक—वृक्ष-विशेष (जीव ३।५८०)।

मोब्भ—घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ (दे ८।४)।

मोभ—घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ—'धरणयोरुपरिवर्ति तिर्यगायतकाष्ठं 'मोभं' इति यत्प्रसिद्धम्' (भटी पृ ६९१)।

मोय—१ मूत्र (स्था २।२४७)। २ बीजकोश, गिरी—'मोयं पुण छल्लिपरिहीणं' (निभा ५४११), 'मोय अब्भंतरो गीरो' (निचू ४ पृ ६६)।

मोयइ—देश-विशेष में प्रसिद्ध एक अस्थिवाला वृक्ष (प्रज्ञा १।३५।१)।

मोयमेहा—प्रस्रवण—'कोसं च मोयमेहाए' (सू १।४।४३)।

मोयारग—मदारी (अनुद्वाहाटी पृ १२)।

मोयारय—बंदर पकड़ने वाला—'मोयारएहिं गहिओ' (अनुद्वाहाटी पृ १२)।

मोर—श्वपच, कुत्तों को पकाकर खाने वाले चांडालों की एक जाति (दे ६।१४०)।

मोरउल्ला—मुधा, व्यर्थ (प्रा २।२१४)।

मोरंग—कान का आभूषण-विशेष—'घडेहि मे एत्थ मोरंगाइं' (निचू ३ पृ २६६)।

मोरंड—१ तिल आदि के मोदक बेचने वाला (बृभा ३२८१)। २ तिल आदि के मोदक। ३ खाद्य-विशेष—'मोरंडा नाम रोट्टमया गोलया जारिसया कीरंति इति विशेष चूर्णौ' (टी पृ ९१६)।

मोरंडक—तिल आदि के मोदक बेचने वाला (बृभा ३२८१)।

मोरकुल्ला—अवज्ञा, व्यर्थ—'मोरकुल्ला, मुहा य मुहियत्ति नायव्वा' इति बचनात् अवज्ञयेति भावः। उक्तञ्च मूलटीकायां 'मुधिकया अवज्ञया' (जीवटी प १०६)।

मोरग—१ कुण्डल—'लोभेण मोरगाणं, भच्चग! छेज्जेज्ज मा हु ते कन्ना' (बृभा ५२२७)। २ तृण-विशेष (आवचू २ पृ १२८)। ३ मयूर की पांख से निष्पन्न (पंक ४८३)।

मोरड—क्षाररसवाला एक पौधा (व्यभा २ टी प ४०)।

मोरत्तअ—१ श्वपच, श्वपाक (दे ६।१४०)। २ चण्डाल—'मोरत्तओ चण्डाल इत्यन्ये' (वृ)।

मोरत्तिय—चांडाल-जाति (निचू २ पृ २४३)।

मोरेंडक—तिलमोदक (अंवि पृ १८२)।
मोसली—दुष्प्रतिलेखना का एक प्रकार (स्था ६।४५।१)।

र

र—निश्चयार्थक अव्यय—'तेण र विसमं नायं वासतणा तस्स पडिसेहे',—'र इति निपातः किलशब्दार्थः' (दनि १४७ हाटी प ७६)।
रइगेल्ल—अभिलषित (दे ७।३)।
रइगेल्ली—रतितृष्णा, मैथुन-लालसा—'रइगेल्ली रतितृष्णेति केचित्' (दे ७।३ वृ)।
रइलक्ख—१ रति-संयोग, मैथुन। २ नितम्ब (दे ७।१३)।
रइल्लय—प्रियंगु—'आहाकम्माणि भक्खाणि रइल्लयाणि' (ओटी पृ ३५६)।
रंखोलिर—झूलने वाला (पा ५३२)।
रंग—त्रपु, रांगा, धातु-विशेष (दे ७।१)।
रंघड—दरिद्र—'किं एतेहिं रंघडकुलेहिं ? इस्सरकुलेहिं....?' (दअचू पृ १३१)।
रंजण—१ घट (दे ७।३)। २ कुण्ड—'रंजणं कुण्डमिति केचित्' (वृ)।
रंजुअ—रज्जु (दे ७।३)।
रंभ—आन्दोलनफलक, झूले का पाटिया (दे ७।१)।
रंकि—भाण्ड, उपकरण-विशेष—'कुंडगतं वा उक्खलिगतं वा रंकिगतं वा' (अंवि पृ २१४)।
रक्ख—राख, भस्म (आवहाटी १ पृ २१४)।
रगडा—एक सन्निवेश का नाम (कु पृ ४५)।
रगसिया—वाद्य-विशेष (जीव ३।५८८)।
रग्गय—कौसुंभ वस्त्र (दे ७।३)।
रच्छाभित्ति—भोज्य-पदार्थ-विशेष (अंवि पृ ७१)।
रच्छामअ—कुत्ता (दे ७।४)।
रज्जवइ—स्वतंत्र—'रज्जवई राया भविस्सइ—रज्जवइ त्ति स्वतंत्र इत्यर्थः' (भ ११।१३४ टी पृ ६६४)।
रज्जुग—लिखने का काम करने वाला (दशचू प ६५)।
रज्जुगसभा—१ लेखक-गृह (दशु ८।८३)। २ शुल्क-गृह।

रज्जुगोज्ज—संघर्ष—'रज्जुगोज्जं करेति संघसं करोतीत्यर्थः' (आवचू २ पृ ४३)।

रडिय—कलहयुक्त—'कलहाइअं रडिअं' (पा ७४६)।

रणरणय—१ अधृति—'अदिट्ठी अरई य रणरणओ' (पा ४४७)। २ उत्सुकता (दे १।१३६)। ३ निःश्वास।

रण्हक—दीर्घ, लंबा (अंवि पृ ११५)।

रत्तक्खर—सीधु, मद्य-विशेष (दे ७।४)।

रत्तच्छ—१ हंस। २ व्याघ्र (दे ७।१३)।

रत्तय—बंधूक वृक्ष का फूल (दे ७।३)।

रत्ति—आज्ञा (दे ७।१)।

रत्तोअ—नापित, नाई (दे ७।२)।

रद्धि—प्रधान, मुख्य (दे ७।२)।

रप्फ—१ वल्मीक, बांबी (निचू १ पृ ६६; दे ७।१)। २ रोग-विशेष।

रप्फग—खराब फोडा—'दुट्ठवणो रप्फगादि, किरियाए विणा ण विसुज्झति ण णप्पति' (निचू २ पृ २४)।

रप्फडिआ—गोह, गोधा (दे ७।४)।

रप्फा—बांबी, वल्मीक (पा ४७६)।

रब्बा—१ राब, यवागू—'एहि किल शीतलीभवति रब्बा' (आवहाटी १ पृ ६१)। २ रूक्ष पदार्थ (बृटी पृ ४१४)।

रयणिद्धय—कुमुद (दे ७।४)।

रयवली—बाल्य, शिशुत्व (दे ७।३)।

रल्लक—१ त्रीन्द्रिय जीव-विशेष (आवटि प २५)। २ एक प्रकार के मृग या भेड़ के रोओं से बना कंबल (कु पृ १८)।

रल्लग—प्रावरण-विशेष (जीव ३।५६५)।

रल्ला—१ दही में उत्पन्न होनेवाला त्रीन्द्रिय प्राणी (आवचू २ पृ १०१)। २ प्रियंगु, मालकंगनी (दे ७।१)।

रल्लिका—एक प्रकार का कंबल (कु पृ १८)।

रवअ—मंथान-दंड, बिलोने की लकड़ी (दे ७।३)।

रविउ—टुकड़े-टुकड़े किया हुआ—'रविउ' त्ति द्रावितः खण्डशो नीतो मयाऽसौ' (नंदीटि पृ १०३)।

रसद्द—चूल्हे का मूल भाग (दे ७।२)।

रसय—वसा, मेद आदि (बृभा १७११)।

रसाअ—भ्रमर, भौंरा—'रसाऊ तथा रोलंबो भ्रमरः। रसाअशब्दोऽयमित्यन्ये। यद् गोपालः—अलिरपि रसाओ स्यात्' (दे ७।२ वृ)।

रसाउ—भ्रमर, भौंरा (दे ७।२)।

रसाल—खाद्य-विशेष—'खंड तुलादसभागो दस खंडपला हवंति णायव्वा। ते तम्मि पक्खित्ता मज्जिय णामं रसालोत्ति॥' (पंक ७३५)।

रसाला—पेय-विशेष, मार्जिता (दे ७।२)।

रसालु—राजा के लिए निर्मित खाद्य पदार्थ-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिर्च तथा दस पल चीनी से बना हुआ पाक-विशेष—'दो घतपला महुपलं दहिस्स अद्धाढयं मरिय वीसा। खंडतुलादसभागो, एस रसालू निवइजोगो॥' (पंक ७३४)।

रसिगा—पीव (व्यभा ६ टी प ६१)।

रसिय—रसी, पीव—'किडिभं जंघासु कालाभं रसियं वहति' (निचू ३ पृ ६२)।

रसिया—१ पीव (प्र १।२३)। २ छंद-विशेष।

रसोतीगिह—रसोईघर (अंवि पृ १३६)।

रहिअ—१ एकाकी, अकेला—'रहिए विहारइत्ता, जहारिहं देंति पच्छित्तं' (जीभा ६६१)। २ रहा हुआ, स्थित।

राअ—चटक, गौरैया पक्षी (दे ७।४)।

राअला—प्रियंगु, मालकंगनी (दे ७।१)।

राइल्ल—१ रंगा हुआ (निचू २ पृ २१२)। २ शोभित (कु पृ १२८)।

राइल्लेऊण—चीरकर—'ओट्ठियं सयलगं राइल्लेऊण रयणाणि छूढाणि' (आवहाटी १ पृ २८३)।

राडि—१ चिल्लाहट—'ते हम्मंता राडिं करेंति' (उसुटी प २६)। २ कलह (उशाटी प १००)। 'राड़' (राजस्थानी)। ३ संग्राम (दे ७।४)।

राणयभोत्ति—राज्य—'राणयभोत्ती रज्जं भण्णति' (निचू १ पृ १३३)।

राणिया—रानी (निचू १ पृ १७)।

रातण—राजादन फल (अंवि पृ २३८)।

राती—संध्या—'संझा राती भणिया' (दश्रुचू प १५)।

रायंछुअ—वेतस का पेड़ (पा ८९९)।

रायंबु—१ वेतस, बेंत का पेड़। २ शरभ, अष्टपाद पशु (दे ७।१४)।

रायगइ—जलौका, जौंक (दे ७।५)।

राला—प्रियंगु, मालकांगनी (आवहाटी १ पृ २८३; दे ७।१)।

रावग—राजपुरुष (निचू ३ पृ ४३६)।

राविअ—आस्वादित (दे ७।५)।

रावित—रसी, पीव (आवमटी प २६७)।

राह—१ दयित, प्रिय। २ निरंतर। ३ शोभित। ४ सनाथ। ५ पलित, सफेद केशों से युक्त (दे ७।१३)। ६ रुचिर, सुन्दर (पा १४)।

रिंगणी—वल्ली-विशेष, कण्टकारिका (दे २।४)।

रिंगिअ—भ्रमण (दे ७।६)।

रिंगिणिका—वल्ली-विशेष, कण्टकारिका—'रिंगिणिकाकंटको अश्वशरीरेऽनुप्रविष्टः' (व्यभा २ टी प ४४)।

रिंगिसिगि—घर्षण-वाद्य, घर्षण से स्वर उभारने वाला वाद्य (जंबूटी प १०१)।

रिंछोली—श्रेणि, पंक्ति—'कुंदुज्जलपवरदसणरिंछोलि' (नंदीटि पृ १०६; दे ७।७)।

रिंडी—कन्था की भांति फटा वस्त्र (दे ७।५)।

रिकिसिक—पक्षी-विशेष (अंवि पृ ६२)।

रिकिसिका—आपस के संघट्टन से बजने वाला वाद्य-विशेष—'घट्टिज्जंतीणं रिकिसिकाणं' (आवचू १ पृ ३०६)।

रिक्क—अल्प—'जाओ रिक्को मे वित्तवयो' (निचू २ पृ ३२६; दे ७।६)।

रिक्कविरिक्क—अत्यन्त भारहीन—'तुमं पुण समणगस्स रिक्कविरिक्कस्स मग्गं देसि' (आवचू १ पृ ५३६)।

रिक्किअ—शटित, सडा हुआ (दे ७।७)।

रिक्ख—१ वृद्ध (दे ७।६)। २ बुढापा—'रिक्खो वयःपरिणाम इति केचित्' (वृ)।

रिक्खण—१ उपलंभ, अधिगम। २ कथन (दे ७।१४)।

रिक्खा—थकान—'अण्णा रिक्खाओ अवणेइ' (कु पृ १०१)।

रिगिसिगि—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ १८७)।

रिगिसिगिआ—वाद्य-विशेष—'घर्ष्यमाणवादित्र-विशेषः' (जंबूटी प १०१)।

रिग्ग—प्रवेश (दे ७।५)।

रिच्छ—वृद्ध (दे ७।६)।

रिच्छभल्ल—भालू (दे ७।७)।

रिट्ठ—१ कौआ (दे ७।६)। २ दैत्य-विशेष (से १।३)।

रिणकंठ—एक जनपद, जहां की भूमि वर्षाकाल में पानी से भर जाती है और शेष समय में उसमें दरारें पड़ जाती हैं (निचू २ पृ १५०)।

रित्तूडिअ—शाटित, झड़वाया हुआ (दे ७।८)।

रिद्ध—पका हुआ (दे ७।६)।

रिद्धि—राशि, समूह (दे ७।६)।

रिप्प—पृष्ठ, पीठ (दे ७।५)।

रिमिण—रोदनशील (दे ७।७)।

रिरिअ—लीन, आसक्त (दे ७।७)।

रीढ—अवगणना, अनादर (दे ७।८)।

रीढा—यदृच्छा, इच्छा के अनुसार (बृभा २१६२)।

रुअरुइआ—उत्कण्ठा (दे ७।८)।

रुंचण—रूई से कपास को अलग करने की क्रिया (पिनि ५८८)।

रुंचणी—धरट्टी, दलने का प्रस्तर-यंत्र (दे ७।८)।

रुंचिय—पिष्ट, पीसा हुआ (बृटी पृ ३९२)।

रुंजग—वृक्ष—'कुहा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाई य' (दनि १)।

रुंटणया—अवज्ञा (पिनि २१०)।

रुंटणा—अवज्ञा—'बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य' (ज्ञा १।१८।१०)।

रुंटणिया—१ अवज्ञा, अनादर। २ रोदन क्रिया (ज्ञा १।१६।६७)।

रुंढ—आक्षिक, जूआरी (दे ७।८)।

रुंढिअ—सफल (दे ७।८)।

रुंद—१ दीर्घ—'रुंदाइं पलोएमाणे' (भ १५।१२०)। २ विस्तीर्ण (औप ४६)। ३ महान्, विशाल—'संघसमुद्दस्स रुंदस्स' (नंदी गा ११)। रुंद्र-विशाल (कन्नड़)। ४ विपुल। ५ वाचाल (दे ७।१४)।

रुक्क—बैल की भांति शब्द करना—'रुक्कं ति सद्दकरणं' (अनुद्वाचू पृ १३)।

रुगण—कृमण वस्तु-विशेष—'अंजणं कज्जलं व त्ति रुगणं' (अंवि पृ ९२)।

रुण्णमाला—कंठ या वक्षस्थल का आभूषण (कु पृ १९४)।

रुप्फय—सर्प आदि के काटने पर किया जाने वाला उपचार-विशेष—

'तहविय अठायमाणो गोणसखइयाइ रुप्फए वावि ।
कीरइ तयंगछेओ सअट्ठिओ सेसरक्खट्ठा' । (आवनि १४२४) ।

रुल्ल—विकलांग—'रुल्ला अजंगम च्चिय पंगुलया चलण-परिहीणा' (कु पृ ४०) ।

रूय—रूई, तूल (भ ११।१३३; दे ७।९) ।

रूरुइअ—काम का आवेग, उत्कंठा—'मुरुमुरिअं रूरुइअं' (पा ५१८) ।

रूवमिणी—रूपवती स्त्री (दे ७।९) ।

रूवि—गुच्छ-विशेष, अर्क-वृक्ष (प्रज्ञा १।३७।१ दे ७।९) ।

रेअविअ—१ शून्य किया हुआ, क्षणीकृत (दे ७।११) । २ मुक्त, त्यक्त (वृ)।

रेंकिअ—१ आक्षिप्त । २ लीन । ३ लज्जित (दे ७।१४)

रेक्खण—१ उपलंभ, अधिगम । २ कथन (दे ७।१४ वृ) ।

रेग—विविक्त अवसर—'रेगो नत्थि दिवसतो रत्तिंपि न जग्गते समुव्वातो' (व्यभा ६ टी प २५) ।

रेणि—पंक, कर्दम (दे ७।९) ।

रेल्लग—प्रवाह—'जह वप्प-कूव-सारणि-नइरेल्लगसालिरोप्पाई' (आवहाटी २ पृ ६१) ।

रेल्लण—प्लावन (पिटी प १६४) ।

रेल्लिया—जल-प्रवाह से युक्त (निचू १ पृ ६१) ।

रेवई—मातृका, देवी (दे ७।१०) ।

रेवज्जिअ—उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया हो वह (दे ७।१०) ।

रेवट्ट—धान्य-विशेष (आचू पृ ३३८) ।

रेवय—प्रणाम, नमस्कार (दे ७।९) ।

रेवलिआ—घूल का आवर्त्त (दे ७।१०) ।

रेसणिया—कांस्य-भाजन-विशेष (पा ८१५) ।

रेसणी—१ अक्षि-निकोच । २ करोटिका, एक प्रकार का कांस्य भाजन (दे ७।१५) ।

रेसि—लिए, निमित्त, वास्ते—'पंचह दिवसह रेसि राय ! मं पाविहिं वट्टह' (उसुटी प १२५) ।

रेसिअ—छिन्न, काटा हुआ (दे ७।९) ।

रेहंत—शोभित होता हुआ (ज्ञा १।११२४) ।

रेहिअ—जिसकी पूंछ काट दी गई हो वह, छिन्नपुच्छ (दे ७।१०) ।

रेहिर—शोभित (कु पृ ११७)।

रोअणिआ—डाकिनी (दे ७।१२)।

रोंकण—रंक, निर्धन (दे ७।११)।

रोक्कणि—१ शृंगी, सींग वाला प्राणी। २ नृशंस, क्रूर (दे ७।१६)।

रोक्कणिअ—१ शृंगी, सींग वाला प्राणी। २ नृशंस (दे ७।१६ वृ)।

रोघस—रंक, निर्धन (दे ७।११)।

रोज्झ—रोझ, नील गाय (प्रज्ञा १।६४; दे ७।१२)।

रोट्ट—चावल का आटा (निभा १४८; दे ७।११)।

रोट्टग—रोटी—'लभिहिसि तुमं अज्ज घयगुलसम्पन्नं महंतं रोट्टगं' (उसुटी प ६३)।

रोड—१ अनादर। २ हैरानी (निचू १ पृ १६४)। ३ गृहप्रमाण, घर का मान (दे ७।११)।

रोडी—१ इच्छा। २ ऋणी की शिविका (दे ७।१५)।

रोढ—भूमिगत स्रोत से रुका हुआ पानी (अंवि पृ २६६)।

रोद्ध—१ कूणिताक्ष। २ मल (दे ७।१५)।

रोमराइ—जघन, नितम्ब (दे ७।१२)।

रोमलयासय—उदर, पेट (दे ७।१२)।

रोमूसल—जघन, नितम्ब (दे ७।१२)।

रोर—१ कोलाहल। २ रंक, निर्धन (उसुटी प ८६; दे ७।११)।

रोल—१ कोलाहल—'वंदणवोलं रोलं करेंता विसंति' (निचू २ पृ १३)। २ कलह (ओटी प १०३; दे ७।१५)।

रोलंब—भ्रमर (दे ७।२)।

रोसाणिय—मृष्ट, परिमार्जित (पा ६६४)।

रोह—१ प्रमाण। २ नमन (दे ७।१६)। ३ मार्गण—'रोहो मग्गण इत्यन्ये' (वृ)।

रोहणिक—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष—'कुंथु-पिपीलिका-उपचिक-रोहणिक-तेवरुक' (अंवि पृ २६७)।

रोहिणिक—१ द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)। २ अरुण रंग का पक्षी (अंवि पृ २२५)।

रोहिणीय—त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष—'ओवइया रोहिणीया कुंथू पिपीलिया' (प्रज्ञा १।५०)।

रोहिय—रोझ, नील गाय (प्र १।६; दे ७।१२)
रोहियंस—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

ल

लइअ—१ परिहित, पहना हुआ—'एकावलि-कंठलइय-वच्छा' (समप्र २४१; दे ७।१८)। २ अंग में पिनद्ध (वृ)।
लइअल्ल—वृषभ (दे ७।१६)।
लइणी—लता (दे ७।१८)।
लउस—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ २३८)।
लउसिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।
लंका—१ शरीर का एक अवयव—'कंडरा पण्हिका लंका' (अंवि पृ ६६)। २ शाखा।
लंखक—गायक, चंडाल-विशेष जो गाना गाते हैं (व्यभा १० टी प ६६)।
लंगंती—धीरे-धीरे चलती हुई, लंगडाती हुई—'करिणी·····लंगंती ओसरइ' (उशाटी प ५३)।
लंगवलग—धान्य-विशेष (निचू २ पृ १०६)।
लंच—कुक्कुट, मुर्गा (दे ७।१७)।
लंचापलि—वृक्ष की एक जाति (अंवि पृ ७०)।
लंचिक्क—हीरा, माणक आदि—'हयगयलंचिक्कारं तेणेंतो तेणओ उ उक्कोसो' (निभा ३६५४)।
लंछ—चोर-विशेष (विपा १।१।४६)।
लंद—काल, समय—'लंदं तु होइ कालो। समयपरिभाषया लन्दशब्देन कालो भण्यते' (प्रसा ६११ टी प १७३)।
लंदय—गाय आदि पशुओं का भोजन-पात्र (प्रसा ११६)।
लंपिक्क—१ चोर। २ लुब्ध, आसक्त (कु पृ १७२)।
लंपिक्ख—चोर (दे ७।१६)।
लंब—गोवाट, गायों का बाड़ा (दे ७।२६)।
लंबण—१ एक प्रकार का भोज्य-पदार्थ (पंक ७७८)। २ कवल (पंव ३५८)। ३ हाथ (ओटी पृ २१)।

लंबा—१ केश, बाल (दे ७।२६)। २ वल्लरी।

लंबाली—पुष्प-विशेष (दे ७।१६)।

लंबूस—कन्दुक के आकार का एक आभरण (आवचू १ पृ २२४)।

लंबूसग—कन्दुक के आकार का एक आभरण—'ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा' (राज ४०)।

लंभण—मत्स्य की एक जाति (विपाटी प ७६)।

लंभूसास—वाद्य-विशेष (अंवि पृ १४७)।

लकड—आभरण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

लक्कुड—लकड़ी, यष्टि (दे ७।१६)।

लक्ख—१ छद्म (निचू १ पृ १२७)। २ शरीर (दे ७।१७)।

लगंड—वक्रकाष्ठ (उसुटी प ३४६)।

लगड्ड—लकड़ी का भारा, लक्कड—'गोणातिपिट्ठीए लगड्डादिएसु आणिज्जति' (निचू २ पृ २०६)।

लग्ग—१ असंबद्ध, ऊंची-नीची—'सडिय-पडिय-मग्गलग्गाओ' (आचू पृ ३१८; दे ७।१७ वृ)। २ चिह्न (दे ७।१७)।

लचय—गण्डुत् नामक तृण (दे ७।१७)।

लज्जालुइणी—१ लज्जावती (प्रा २।१७४)। २ कलहकारिणी स्त्री।

लट्ठ—कुसुंभ धान्य (बृभा २०६४)।

लट्ठणी—यष्टि (आवहाटी १ पृ २७८)।

लट्ठय—१ कुसुम्भ—'लट्ठयवसणा कहं होही' (दे ७।१७)। २ खसखस आदि का तेल।

लट्ठा—कुसुंभ धान्य (बृटी पृ ६०३)।

लट्ठ—१ सुन्दर, मनोज्ञ (दश्रु ८।२२; दे ७।२६)। २ अन्यासक्त, दूसरे में आसक्त। ३ प्रियभाषी (दे ७।२६)। ४ प्रधान, मुख्य।

लट्ठिय—खाद्य-विशेष—'जेट्ठाहिं लट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साहिंति' (सूर्य १०।१७)।

लडभ—मनोज्ञ, सुन्दर (बृटी पृ ६५३)।

लडह—१ सुन्दर, लावण्य-युक्त—'लडहसुकुमाल-मउयरमणिज्जरोमराइं' (दश्रु ८।२४; दे ७।१७)। २ लटकते हुए शिथिल बन्धन-युक्त (जानुवाला)। ३ गाड़ी के पिछले भाग में लटकता हुआ काष्ठ जो गाड़ी के अग्र भाग की रक्षा करता है—'इह लडहशब्देन गन्त्र्याः पश्चाद्भागवर्ति तदुत्तराङ्गरक्षणार्थं यत्काष्ठं तदुच्यते'

(उपाटी पृ १०२)। ४ विदग्ध, विद्वान् (दे ७।१७ वृ)। ५ कोमल। ६ प्रधान।

लडहक्खमिय—विघटित, वियुक्त (दे ७।२०)।

लड्डुग—लड्डू, मोदक (आवचू १ पृ ४०६)।

लड्डुय—लड्डू, मोदक (बृभा ६१४६)।

लढिय—स्मृत, याद किया हुआ—'भरिअं लढियं सुमरिअं' (पा ५६४)।

लत्तग—आतोद्य-विशेष—'घणं लत्तगादी' (सूचू २ पृ ३६०)।

लत्ता—पाद-प्रहार, लात—'लत्ताहिं य हंतुं गता' (निचू २ पृ ६०)।

लत्तिका—आतोद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६)।

लत्तिगा—यष्टि (दशचू प ६१)।

लत्तिया—१ वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)। २ पार्ष्णिप्रहार—'लत्तिय त्ति कंसिका:, ता हि आतोद्यत्वेन न विवक्षिता इति, अथवा लत्तिया-सद्दे त्ति पार्ष्णिप्रहारशब्दः' (स्थाटी प ५६)।

लद्दित्तय—लदा हुआ, भारयुक्त—'उट्टो वा लद्दित्तओ' (सूचू १ पृ ११६)।

लद्धीय—स्वस्थ—'वेज्जेण संसोहण-वमण-विरेयणकिरियाहिं णिक्कसाएत्ता लद्धीओ कओ' (निचू ४ पृ ३०६)।

लप्पसिया—लापसी, एक प्रकार का मिष्टान्न (प्रसा २३४)।

लय—नव दंपती का आपस में नाम लेने का उत्सव—'णवदंपईण अण्णुण्ण-णामगहणोसवम्मि लयं' (दे ७।१६)।

लयण—१ तनु। २ मृदु। ३ वल्ली, लता (दे ७।२७)।

लयणी—लता (पा ३३४)।

लयापुरिस—वह स्थान जहां पद्महस्त वधू का चित्रण किया जाए—'पउमकरा जत्थ वहू लिहिज्जए सो लयापुरिसो' (दे ७।२०)।

लल्ल—१ उत्सुक, तत्पर, सस्पृह। २ न्यून (दे ७।२६)।

लल्लक्क—१ भयंकर—'लल्लक्कं वा सीतं पडंतं ण सहंति' (निचू ३ पृ १६७; दे ७।१८)। २ ललकार, आह्वान।

लल्लाय—अस्पष्ट-वाक्, 'लल्लर' वाणी से बोलने वाला—'आरियकुले वि जाया अंधा बहिरा य होंति लल्लाया' (कु पृ ४०)।

लल्लि—खुशामद (प्रटी प १०६)।

लल्लिरी—मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपाटी प ८५)।

लवय—गोंद (पा ८८६)।

लवइत—अंकुरित (आवचू १ पृ ४७७)।

लवइय—पल्लवित (भ १।५०)।

लवली—लता-विशेष (कु पृ १६७)।

लसइ—कंदर्प, काम (दे ७।१८)।

लसक—तरु-क्षीर, पेड़ का दूध (दे ७।१८)।

लसिया—पीब, रसी (अंवि पृ १७७)।

लसुअ—तेल (दे ७।१८)।

लहुअवड—न्यग्रोध, बरगद का वृक्ष (दे ७।२०)।

लहुइय—तोला हुआ (पा ५३६)।

लाइम—१ लाजा के योग्य, खोई के योग्य। २ रोपणयोग्य, बोने लायक (आचूला ४।३३)।

लाइय—१ भूमी को गोबर आदि से लीपना (प्रज्ञा २।४१)। २ गृहीत (बृटी पृ १०७; दे ७।२७)। ३ आभूषण। ४ चर्मार्ध, आधी चमड़ी (दे ७।२७)। घृष्ट (से २।२६)।

लाइल्ल—वृषभ (दे ८।१६)।

लाउल्लोइय—गोमय आदि से भूमि का लेपन और खड़ी आदि से भींत आदि का पोतना (दश्रु ८।६२)।

लाउल्लोपिक—लिपाई-पुताई (अंवि पृ १८३)।

लाउल्लोयिक—लिपाई-पुताई (अंवि पृ २१०)।

लागतरण—भूने हुए चावलों से बनाया गया पेय-विशेष (जीभा ६०५)।

लाजिका—वेश्या (अंवि पृ ६८)।

लाढ—१ आत्मनिग्रही मुनि—'लाढे त्ति साधुणो अक्खा' (निचू ४ पृ १२५)। २ निर्दोष आहार से संयम-यात्रा का निर्वाह करने वाला मुनि। ३ प्रशस्य—'लाढयति प्रासुकैषणीयाहारेण साधुगुणैर्वा आत्मानं यापयतीति लाढः, प्रशंसाभिधायि वा देशीपदमेतत्' (उशाटी प १०७)। ४ प्रधान (उशाटी प ४१४)। ५ एक जैन आचार्य।

लाढय—साधु-गुणों से जीवन-यापन करने वाला (उचू पृ ६६)।

लाणी—पुष्प-विशेष (अंवि पृ १०४)।

लातुल्लोइय—गोबर से भूमी का लेपन करना तथा खड़ी आदि से भींत को पोतना (आवचू १ पृ २२६)।

लाम—सुन्दर (जंबू ३।१७८)।

लामंजय—पानी को शीतल एवं सुगंधित करने वाला घास-विशेष (पा ३८५)।

लामा—डाकिनी (दे ७।२१)।

लाय—१ आग—'दिण्णाओ लायंजलीओ। समप्पिया य तस्स करंजली कुवलय-मालाए' (कु पृ १७१)। २ भूना हुआ धान—'लाया नाम वीहिया भुज्जिया' (जीविप पृ ३४)।

लायतर—भूने हुए आर्द्र व्रीहि का तंडुल के साथ बनाया जाने वाला पेय (निभा ४८७)।

लायतरण—चावल से बना पेय-पदार्थ—'कते वा विकिट्ठतवे पारणए लायतरणादी पिएज्ज' (निचू १ पृ १६२)।

लालंपिअ—१ प्रवाल। २ घोड़े की लगाम। ३ आक्रन्दित (दे ७।२७)।

लालस—१ मृदु (दे ७।२१)। २ इच्छा (वृ)।

लासा—१ दीपक की बाती (बृभा ३४६५)। २ लार—'अहिस्स मूसगस्स वा उस्सिघमाणस्स लाला पडेज्ज' (निचू ४ पृ १३३)।

लाली—दीपक की बाती (निभा ५३७७)।

लावंज—सुगंधित तृण-विशेष, उशीर (दे ७।२१)।

लावणी—गुड़-निष्पन्न खाद्य पदार्थ-विशेष—'गुलकत तह लावणी य बोद्धव्वा (पंक ७३२)।

लासयविहअ—मयूर (दे ७।२१)।

लासिया—देश-विशेष की दासी (ज्ञा १।१।८२)।

लाहण—भोज्य का एक प्रकार (दे ७।२१)।

लाहणय—प्रहेणक, उत्सव के उपलक्ष में किसी दूसरे घर से भेंटस्वरूप प्राप्त भोजन-विशेष (पिटी प ६३; दे ७।२१ वृ)।

लिक—बालक (दे ७।२२)।

लिकिअ—१ आक्षिप्त। २ लीन (दे ७।२८)।

लिंगिच्छी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

लिछ—१ चूल्हा (स्था ८।१०)। २ अग्नि-विशेष (स्थाटी प ४१६)।

लिड—१ हाथी की विष्ठा (ज्ञा १।१।१५६)। २ शैवालरहित पुराना पानी—'अशैवालपुराणजलम्' (प्रटी प १६३)।

लिडा—ऊंट, बकरी आदि की विष्ठा, मेंगनी—'उब्भामिगा य महिला जावगहेउंमि उंटलिडाई' (दनि ८८)।

लिडिया—विष्ठा, लिंडी, मेंगनी (नंदीटि पृ १३४)।

लिंब—१ कोमल, मृदु—'णवतयकुसंतलिंब-केसरपच्चत्थुयाभिरामे' (राज ३७)। २ बाल उरभ्र का रोओं सहित चर्म—'बालोरभ्रस्योर्णा-युक्ता कृत्तिः' (ज्ञा १।१।१८)।

लिक्ख—१ कोमल (राज ३७)। २ लघु स्रोत (दे ७।२१ वृ)।

लिक्खा—१ परिमाण-विशेष (अनुद्वा ३६५)। २ छोटा स्रोत (दे ७।२१)।

लिच्च—कोमल (जीव ३।३११)।

लिच्छारिय—लिप्त (आवभा २२१)।

लिट्ठिअ—१ खुशामद,चाटुकारिता (दे ७।२२)। २ लम्पट।

लित्त—कोमल (जीवटी प २१०)।

लित्ति—खड्ग आदि शस्त्रों का दोष (दे ७।२२)।

लित्थारिय—खरंटित, लिप्त (बृभा ५१५)।

लिव्व—कोमल (ज्ञा १।१।१८ पा)।

लिसय—तनूकृत, क्षीण (दे ७।२२)।

लिहिअ—१ तनु। २ सुप्त (दे ७।२८)।

लीच्छुभ—तुषशाला, कुंभकार जहां जौ, गेहूं आदि का पलाल एकत्रित करता है—'लीच्छुभ त्ति तुससाला कुंभकारा जत्थ तुसा ठबेंति' (आचू पृ ३६६)।

लीय—बच्चा (कु पृ ४५)।

लील—यज्ञ (दे ७।२३)।

लीव—बालक (दे ७।२२)।

लीसना—सन्धान, जोड़—'लीसना नाम सन्धनैव' (सूचू १ पृ १५६)।

लुअ—छिन्न, काटा हुआ (दे ७।२३)।

लुंक—सुप्त (दे ७।२३)।

लुंकडी—लोमड़ी (प्रज्ञाटी प २५४)।

लुंकणिया—तिरोभाव (दे ७।२४ वृ)।

लुंकणी—लुकना, छिपना (दे ७।२४)।

लुंख—नियम (दे ७।२३)।

लुंखाअ—निर्णय—'रे अलस! इत्थ लीलो होहि त्ति सलुंखयाण लुंखाओ' (दे ७।२३)।

लुंखिय—१ मलिन (से १५।४२)। २ स्पृष्ट (से १।२१)।

लुंठण—१ कोलाहल। २ कलह—'ते विसेसलुंठणाणि विग्घाणि करेंति' (उशाटी प १४६)।

लुंबिया—गुच्छा—'न दुक्करं तोडिय अंबलुंबिया, न दुक्करं नच्चिउ सिक्खियाए। तं दुक्करं तं य महाणुभाव, जं सो मुणी पमणवणंमि वुच्छो॥ (आवहाटी २ पृ १३८)।

लुंबी—१ स्तबक, फूलों का गुच्छा (भटी प ३७; दे ७।२८)। २ लता (ज्ञाटी प ६; दे ७।२८)।

लुक्क—१ लुञ्चित, मुण्डित (पिनि २१७)। २ छिपा हुआ—'बोहिगादिभएण णस्संतो लुक्को' (निचू ३ पृ ३५५)। ३ रोगी (प्रा २।२)। ४ भग्न। ५ सुप्त।

लुक्कणी—लुकना, छिपना (दे ७।२४ पा)।

लुक्ख—वृक्ष (उशाटी प १३८)।

लुग्ग—१ शुष्क (व्यभा ५ टी प ७)। २ भग्न (दे ७।२३)। ३ रोगी (प्रा ४।२५८)।

लुरणी—वाद्य-विशेष (दे ७।२४)।

लूया—१ वात-रोग (कु पृ ४१)। २ मृगतृष्णा—'कत्थइ लूयाए हओ' (कु पृ २७४; दे ७।२४)।

लेंड—हाथी आदि की लीद—'ताहे तत्थ नलगिरिणा मुत्तियं लेंडं च मुक्कं' (आवचू १ पृ ४००)।

लेंडि—लीद (पंक १५४१)।

लेंडिया—लिंडी, लीद (आवहाटी १ पृ २७८)।

लेखा—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ ७१)।

लेच्छारिय—लिप्त, खरंटित—'लेच्छारियतुंडेण' (निभा ६१०८)।

लेडुअ—ढेला (पा ४०३)।

लेडुक्क—१ लम्पट। २ लोष्ट, रोड़ा (दे ७।२६)।

लेड्डु—पत्थर का टुकड़ा, ढेला (आवहाटी १ पृ १४६)।

लेढिअ—स्मरण, स्मृति (दे ७।२५)।

लेढुक्क—लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ७।२४)।

लेण—मृतक की स्मृति में बनाया जाने वाला देवकुल—'मडयस्स उवरिं जं देवकुलं तं लेणं भण्णति' (निचू २ पृ २२५)।

लेत्थरिय—लिप्त (निचू २ पृ ३०१)।

लेत्थारण—लेप (निभा १८७४)।

लेत्थारिय—खरंटित, लेप से युक्त—'लेत्थारियाणि देशीपदमेतत् खरंटितानि' (बृटी पृ १५०)।

लेलु—मिट्टी का ढेला (द ४।१८)।

लेस—१ स्त्री की योनि (व्यभा ६ टी प ६६)। २ लिखित। ३ आश्वस्त। ४ निद्रा। ५ निःशब्द (दे ७।२८)।

लेहड—लंपट (दे ७।२५)।

लेहुड—लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ७।२४)।

लोअडी—कंबल (प्रा ४।४२३)।

लोआणी—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३६)।

लोंक—सुप्त, सोया हुआ (दे ७।२३ वृ)।

लोट्ट—१ कच्चा चावल (दअचू पृ ११०)। २ हाथी का छोटा बच्चा (आवहाटी २ पृ १६५)।

लोट्टक—कुमार-अवस्था वाला हाथी (ज्ञाटी प ७२)।

लोट्टय—हाथी का छोटा बच्चा (ज्ञा १।१।१५७)।

लोट्टिय—उपविष्ट (दे ७।२५)।

लोट्टिया—१ हाथी की छोटी बच्ची (ज्ञा १।१।१५७)। २ काष्ठपात्र (निचू ३ पृ ३४३)।

लोट्ठ—पत्थर, लेष्टु (व्यभा ६ टी प ५१)।

लोढ—१ लोढा—'लोढेण वावि लेवेण, सिलेसेण व केणइ' (द ५।१।४५)। २ पद्मिनी कंद (प्रसा २३७)। ३ स्मृत। ४ शयित (दे ७।२९)।

लोढणी—कपास निकालने अथवा ऊन आदि को साफ करने का यंत्र (ओनि ४७४)।

लोढिनी—कपास के बीज निकालने का यन्त्र (पिटी प १०३)।

लोपक—बिल में रहने वाला पंचेन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २२७)।

लोपा—सियारिन—'वाणर-सस-लोयासु' (अंवि पृ २३८)।

लोभिल्ल—लालची (ओभा १३३)।

लोमंथिक—नट (आवटि प ६१)।

लोमंथिय—नट—'णट्टं लोमंथियं वा' (आवचू २ पृ ३०३)।

लोमंधिय—नट (आवचू १ पृ ५५६)।

लोमटक—लोमड़ी (आटी प ३३७)।

लोमठिका—लोमड़ी (जीवटी प ३८)।

लोमसिका—ककड़ी (अंवि पृ ७१)।

लोमसिगा—ककड़ी (अंवि पृ २३८)।

लोमसिया—ककड़ी (आवचू १ पृ ५४६)।

लोमसी—१ ककड़ी, खीरा—'लोमसी कर्कटिकादीनां देशीवचनम्' (निचू १ पृ ३)। २ ककड़ी का गाछ (व्यभा २ टी)।

लोय—१ रससंपन्न और मनोज्ञ भोजन—'पिंडं वा लोयं वा खीरं वा दधिं वा' (आचूला १।४६)। २ रूक्ष भोजन—'इमे लोए इमे तित्तए इमे कडुयए' (आचूला १।१३८)।

लोयक—१ शटित धान्य (अंवि पृ ३३)। २ पशु-विशेष—'लोयको वा ससो वेत्ति' (अंवि पृ ६२)।

लोयय—खाद्य-विशेष (बृ २।८)।

लोलंठिअ—खुशामद, चाटुकारिता (दे ७।२२)।

लोलग—गुटिका, गोली—'गुलिग त्ति लोलगे काउं रुक्खकोटरे वा ठवेति' (निचू ३ पृ २०६)।

लोलुंचाविअ—सतृष्ण, लालसायुक्त (दे ७।२५)।

लोलुग—प्रगाढ़—'लोलुगं भृशं गाढं प्रगाढं निरन्तरम्' (सूचू १ पृ १३०)।

लोहि—कन्द-विशेष (उ ३६।९८)।

लोहिणी—कन्द-विशेष (प्रज्ञा १।४८।१)।

लोहिल्ल—१ अविशुद्ध (निचू ४ पृ १४४)। २ लम्पट (दे ७।२५)।

लोही—१ कन्द-विशेष (भ ७।६६)। २ मंडक आदि पकाने का भाजन (भ ८।३६१)।

ल्हिक्क—१ नष्ट (प्रा ४।२५८)। २ गत।

व

वइअ—१ पीत, जिसका पान किया गया हो वह (दे ७।३४)। २ ढका हुआ (पा ५०५)।

वइउला—फणरहित सर्प की एक जाति (प्रज्ञा १।७१)।

वइंदबुद्धि—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

वइड्ढ—छोटा गांव—'खेत्तओ वइड्ढदेसे महुराए वा' (आवचू १ पृ ४०९)।

वइरोअण—बुद्ध, बुद्धदेव (दे ७।५१)।
वइरोड—जार, उपपति (दे ७।४२)।
वइल्ल—बैल (व्यभा १० टी प ६३)।
वइवलय—दुंदुभ सर्प (दे ७।५१)।
वइवेला—सीमा (दे ७।३१)।
वउ—लावण्य, शरीर-कान्ति (दे ७।३०)।
वउणी—कपास (दे ३।५७)।
वउलिअ—शूला में पिरोया हुआ मांस-खंड (दे ७।४४)।
वओवउप्फ—विषुवत्, समान रात और दिन वाला काल (दे ७।५०)।
वओवत्थ—विषुवत्, समान रात और दिन वाला काल (दे ७।५०)।
वंक—कलंक, दाग (दे ७।३०)।
वंग—वृन्ताक, भंटा (दे ७।२६)।
वंगच्छ—प्रमथ, शिव के अनुचर-विशेष (दे ७।३६)।
वंगेवडु—सूअर (दे ७।४२)।
वंजण—भोजन (दअचू पृ १६०)। देखें—संदेण।
वंजर—नीवी, कटि-वस्त्र (दे ७।४१)।
वंटग—विभाग—'वडो वंटगो विभागो वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ २४४)।
वंठ—१ कपट-वेश, ठग (आवचू १ पृ ३१)। २ जो अविवाहित है और मजदूरी से अपनी आजीविका चलाता है वह—'अकयविवाहा भीति-जीविणो य वंठिति' (ओटी पृ १९६)। ३ अविवाहित (ओनि २१९; दे ७।८३)। ४ निःस्नेह, स्नेहहीन। ५ गण्ड, गाल ६ खंड। ७ भृत्य, दास (दे ७।८३)।
वंड—पीडित (ति ६७४)।
वंडुअ—राज्य (दे ७।३६)।
वंडुर—घुड़साल, अस्तबल—'ततो वासुदेवस्स आसरयणं गहाय पधावितो, सो वंडुरापालएण णाओ' (आवहाटी १ पृ ६५)।
वंढ—बन्ध (दे ७।२९)।
वंदालग—पूजापात्र (सू १।४।४४)।
वंफ—उल्लाप—'वंफेति णाम देसीभासाए उल्लावो वुच्चति' (सूचू १ पृ १८०)।
वंफिअ—१ भुक्त, खाया हुआ (दे ७।३५)। २ अभिलषित।
वंस—कलंक (दे ७।३०)।

वंसकवेल्लुय—लंबे बांस पर रखे जाने वाले तिरछे बांस (जीव २६४)।

वंसकवेल्लुया—छत के नीचे दोनों ओर तिरछे रखे जाते बांस (राज १३०)।

वंसटोक्कर—बांस की डोरी या खपाची (बृटी पृ १६४१)।

वंसप्फाल—१ प्रकट, व्यक्त (दे ७।४८)। २ ऋजु, सरल (वृ)।

वंसी—मस्तक पर अवस्थित माला (दे ७।३०)।

वक्कड—१. दुर्दिन, मेघकृत अन्धकार (दे ७।३५)। २ निरन्तर वृष्टि—'वक्कडं निरन्तरवृष्टिरित्येके' (वृ)

वक्कडबंध—कान का आभूषण (दे ७।५१)।

वक्कल्लय—आगे किया हुआ (दे ७।४६)।

वक्कस—१ पुराना धान का चावल। २ पुराना सत्तुपिंड। ३ बहुत दिनों का बासी गोरस। ४ गेहूं का मांड (उ ८।१२ पा)।

वक्काडय—तृण-विशेष (आचू पृ ३५७)।

वक्किक—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २३२)।

वक्खर—सामान, भाण्ड (बृभा ४४७७)।

वक्खार—१ एकान्त कमरा (व्यभा ६ टी प ६१)। २ गोदाम।

वक्खारय—१ रतिगृह (दे ७।४५)। २ अन्तःपुर (वृ)।

वक्खीर—तृण विशेष (भ २१।१६)।

वक्खोइलिया—छिपकली (दजिचू पृ २७८)।

वक्खोड—विघ्न—'विग्घोत्ति वा वक्खोडत्ति वा एगट्ठा' (आचू पृ १०६)।

वग्गडा—परिक्षेप, परिधि (व्य ६।१)।

वग्गंसिअ—युद्ध, लड़ाई (दे ७।४६)।

वग्गय—वार्त्ता, बात (दे ७।३८)।

वग्गली—रोग-विशेष, वमन की व्याधि—'जेमणवेलाए जिमितो वा तं संभरित्ता उड्ढं करेति। एवं तस्स वग्गली वाही जातो, विणट्ठो य' (निचू ३ पृ ८१)।

वग्गुडाव—पत्नी के अधीन रहने वाले पति की एक अवस्था—'इत्थिवयणातो दगमाणेति, सो य लोगसंकितो अप्पभाए चेव सुहसुत्ते पगे रोडेंतो आणेति त्ति वग्गुडावो' (निचू ३ पृ ४२०)।

वग्गुरी—अंगुलियों और पैर के ऊपरी भाग को आच्छादित करने वाला जूता—'उवरिं तु अंगुलीओ जा छाए सा तु वग्गुरी होति' (निभा ६१८)।

वग्गुलिया—व्याधि-विशेष—'तस्स संकाए वग्गुलिया वाही जातो' (निचू १ पृ १५)।

वग्गेज्ज—प्रचुर (दे ७ ३८)।

वग्गोअ—नकुल, न्यौला (दे ७।४०)।

वग्गोरमय—रूक्ष, रूखा (दे ७।५२)।

वग्घरणसाला—तोसलि देश में प्रसिद्ध विवाह-मंडप (बृभा ३४४६)—'व्याघरणशाला नाम तोसलिविषये ग्राममध्ये शाला क्रियते, तत्राग्निकुण्डं स्वयंवरहेतोर्नित्यमेव प्रज्वलति, तत्र च बहवश्चेटकाः एका च स्वयंवरा चेटिका प्रवेश्यन्ते इत्यर्थः। यस्तेषां मध्ये तस्यै प्रतिभाति तमसौ वृणीते, एषा व्याघरणशाला' (टी पृ ९६३)।

वग्घाअ—१ साहाय्य, मदद। २ विकसित, खिला हुआ (दे ७।८६)।

वग्घाडिया—१ उपहास के लिए की जाने वाली विशेष ध्वनि (ज्ञा १।८।१४६)। २ विभिन्न देशों की भाषाओं को इस प्रकार बोलना जिससे सब हंसने लग जायें (बृभा ६३२४)।

वग्घाडी—उपहास के लिए की जाती एक प्रकार की आवाज—'अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति' (ज्ञाटी प १५१)।

वग्घारित—प्रलंबित (जीव ३।३९७)।

वग्घारिय—प्रलम्बित—'वग्घारिय-पाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी' (भ ३।१०५)।

वचाई—क्षुद्र जंतु-विशेष—'भिंगारी अरका व त्ति वचाई इंदगोविगी (धंवि पृ ६९)।

वच्च—१ घर के चारों ओर की भूमी,—'गिहस्स समंततो वच्चं भण्णति' (निचू २ पृ २२४)। २ मृतक के दग्ध-स्थान के चारों ओर की भूमि। ३ श्मशान के चारों ओर की भूमि—'मडयपेरंतं वच्चं भण्णति। सव्वं वा सीताणं सीताणस्स वा पेरंतं वच्चं भण्णति' (निचू २ पृ २२५)। ४ कूड़ा-करकट का स्थान (आचूला १०।२६)।

वच्चक—दर्भ जैसा तृण (बृभा ३६७५)।

वच्चग—१ तृणरूप वाद्य-विशेष (जीव ३।५८८)। २ तृण-विशेष—'वच्चगो दब्भागिती तणं' (निचू २ पृ ३८)।

वच्चयचिप्प—वल्वज घास को कूटकर बनाया हुआ (रजोहरण) (बृभा ३६७४)।

वच्चाचिप्पय—तृण-विशेष को कूटकर बनाया हुआ (रजोहरण) (बृटी पृ १०२१)।

वच्चाडक—अपान—'अवाणे वच्चाडकगतं बूया' (अंवि पृ २२२)।

वच्चापिच्चिय—वल्वज नाम की मोटी घास को कूटकर बनाया हुआ (रजोहरण) (बृ २।२६)।

वच्चिवक्का—स्तबक, बिन्दु (व्यभा ७ टी प ६७)।

वच्छ—पार्श्व, समीप (दे ७।३०)।

वच्छाणी—गजपीपर की वल्ली (प्रज्ञा १।४०।४)।

वच्छिउड—गर्भाशय—'वच्छिउडो गर्भाश्रय इत्यन्ये' (दे ७।४४ वृ)।

वच्छिमअ—गर्भाशय (दे ७।४४)।

वच्छीउत्त—नापित, नाई (दे ७।४७)।

वच्छीव—गोप, ग्वाला (दे ७।४१)।

वज्जरण—कथन (प्रा ४।२)।

वज्जरा—नदी (दे ७।३७)।

वज्जरिय—कथित (प्रा ४।२)।

वज्जलाढ—म्लेच्छ—'अरे वज्जलाढा! एस पंथो कहिं वच्चइ? वज्जलाढा नाम मेच्छा' (आवहाटी १ पृ १४१)।

वज्जा—१ माता, देवी-विशेष (अनुद्वाचू पृ १३)। २ अधिकार (दे ७।३२)।

वज्जिअ—१ अवलोकित, दृष्ट (दे ७।३६)। २ बजाया हुआ।

वज्जियाव—इक्षु—'वज्जियावो नाम देशीवचनत्वादिक्षुः' (व्यभा २ टी प २२)।

वाज्जियावग—इक्षु—'वाज्जियावगो उच्छु इति' (व्यभा २ टी प २२)।

वज्जिर—लोकवाद्य-विशेष (कु पृ ६६)।

वज्झार—एक प्रकार का शिल्पी (प्रज्ञा १।६७)।

वज्झुवक—बाह्य क्रीडा-विशेष, एक प्रकार की क्रीड़ा जिसमें पीठ पर बैठा जाता है—'अण्णया वज्झुवकेण रमंति' (आवहाटी २ पृ २१७)।

वट्ट—१ एक प्रकार का लड्डू (प्र १०।६)। २ प्याला (अनु ३।३६)। ३ छात्र—'उवज्झायनिउत्ता वट्टा दिवसे दिवसे धणुगेहिं गहिएहिं रक्खंति' (आवहाटी २ पृ ४७)। ४ नट आदि की विद्या से आजीविका कमाने वाला—'जूइयरसोलमेंठा वट्टा' (आवहाटी २ पृ ६८)। ५ लोढा, शिला-

पुत्रक (भटी पृ १४१६)। ६ गाढी कढी, खाद्य-विशेष (प्रटी प १५३)। ७ हानि। ८ मार्ग।

वट्टखिड्ड—जादू का खेल, इन्द्रजाल—'एकस्मिन् हस्ते गोलकद्वयमेकस्मिन् गोलकत्रयं दर्शयित्वा पुनरिन्द्रजालप्रयोगेन केचिद् व्यत्ययेन गोलकान्यत्र दर्शयन्तीन्द्रजालिकाः तद् वट्टखिड्डमुच्यते' (आवटि प ५३)।

वट्टखेड—इन्द्रजाल—'किमेयं वट्टखेडं' (आवचू १ पृ ५२८)।

वट्टखेड्ड—वृत्तक्रीडा, इन्द्रजाल (सम ७२।७)।

वट्टण—दो धागों को एक साथ बंटना—'सिक्कगदोरो वलणं वा वट्टणं' (निचू २ पृ २२३)।

वट्टमाण—१ अंग, शरीर। २ गन्ध-द्रव्य की एक प्रकार की सुगंध (दे ७।८७)।

वट्टय—१ कटोरा—'गहिया वट्टयम्मि सत्तुया' (उसुटी प ६२)। २ लाख आदि से बना खिलौना (ज्ञा १।१८।८)।

वट्टा—मार्ग—'सगडवट्टाए लोलइ' (आवमटी प ४६७; दे ७।३१)।

वट्टावरय—लोढा, शिला-पुत्रक—'तिक्खेणं वइरामएणं वट्टावरएणं' (भ १६।३४)।

वट्टिम—अतिरिक्त, अधिक (दे ७।३४)।

वट्टिय—१ पीसा हुआ, चूर्ण किया हुआ (निचू २ पृ ६५)। २ परिवेषित, भोजन परोसना—'थेरीए पुत्तभंडाणं विलेवी वट्टिया' (आवहाटी १ पृ २६०)।

वट्टिव—पर-कार्य (दे ७।४०)।

वट्टिफोड—बहुभक्षक—'सो य वट्टिफोडो ण चेव धाति' (आवचू १ पृ २६१)।

वड—१ क्षेत्र का एक देश, एक विभाग—'वडो वडूगो विभागो एगट्ठं' (आवचू २ पृ २३४; दे ७।८२)। २ दरवाजे का एक भाग (दे ७।८२)। ३ मत्स्य की एक जाति (प्रटी प ४७)।

वडंवग—बड़े परिवार वाला—'बहुसयणो वडंवगो' (निचू ३ पृ २५३)।

वडक—उद्भिज्ज जंतु-विशेष—'तत्थ उब्भिज्जा संखणा काकुंधिका वडका सिरिवेट्टका' (अंवि पृ २२६)।

वडग—सूती वस्त्र (भ ११।१५६)।

वडगर—मत्स्य-विशेष (जीवटी प ३६)।

वडप्प—१ लता-गहन । २ निरंतर-वृष्टि (दे ७।८४) ।

वडभ—वामन, कुब्ज, जिसका पीछे के या आगे के शरीर का भाग उभरा हुआ हो (निचू ३ पृ २७१) ।

वडय—सूती वस्त्र—'कोसेज्जा वडओ भण्णति । टसर इति भाषायाम्' (निचू २ पृ ६८) ।

वडह—पक्षि-विशेष (दे ७।३३) ।

वडा—वृति, परिक्षेप—'एगवडाए इति एकवृतिपरिक्षेपायाम्' (व्यभा ३ टी प ६६) ।

वडार—विभाग (व्यभा ७ टी प ६३) ।

वडालि—पंक्ति, श्रेणी (दे ७।३६) ।

वडिसर—चूल्हे का मूल (दे ७।४८) ।

वडी—बड़ी, शाक-विशेष (प्रसा ४३४) ।

वड्ड—१ उद्दंड (ति ११६३) । २ उच्च, महान्—'वड्ढेणं सद्देणं जोक्कारोत्ति भणितं' (आवहाटी १ पृ ४३) । ३ कलह (उशाटी प १७६) । ४ बड़ा (ज्ञा २।१।१८; दे ७।२६) ।

वड्डंवग—बड़े परिवार वाला (निभा ३६२२)।

वड्डखेड्ड—जादू का खेल, इन्द्रजाल देखें—'वट्टखिड्ड' (आवटि प ५३) ।

वड्डग—१ पात्र (बृभा ४८०६) । २ बड़ा (भ १६।७८) ।

वड्डवास—मेघ (दे ७।४७) ।

वड्डहुल्लि—मालाकार, माली (दे ७।४२) ।

वड्ढ—१ पौ फटते-फटते, शीघ्र—'ते वड्ढे पभाए उट्ठेत्ता गया' (आवहाटी १ पृ १३७) । २ बड़ा (निचू १ पृ ६) ।

वड्ढइ—वर्धकी, बढई (सम १४।७) ।

वड्ढइअ—१ चर्मकार, मोची (दे ७।४४) । २ बढई (वृ) ।

वड्ढणभिर—पीन, पुष्ट (दे ७।५१) ।

वड्ढणसाल—पुच्छहीन, जिसकी पूंछ कट गई हो वह (दे ७।४६) ।

वड्ढर—गृहस्थ के प्रयोजन के लिए जादू-टोना करना (व्यभा ४।३ टी प ४६) ।

वड्ढवण—१ वस्त्र का आहरण । २ बधाई, अभ्युदय-निवेदन (दे ७।८७) ।

वड्ढाविअ—समाप्त किया हुआ (दे ७।४५) ।

वड्ढिआ—कूपतुला, कूए से पानी ऊपर खींचने का साधन-विशेष (दे ७।३६) ।

वण—१ अधिकार। २ श्वपच, चाण्डाल (दे ७।८२)।
वणइ—वन-राजि, वृक्ष-पंक्ति (दे ७।३८)।
वणण—बुनना (द १।१ टी)।
वणति—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।
वणद्धि—गायों का समूह (दे ७।३८)।
वणपक्कसावअ—शरभ, श्वापद-विशेष (दे ७।५२)।
वणव—दावानल (दे ७।३७)।
वणसवाई—कोयल (दे ७।५२)।
वणाय—शिकारी से आकुल, व्याघ्र से त्रस्त (दे ७।३५)।
वणार—दमनीय बछड़ा (दे ७।३७)।
वणुल्लय—वन—'वीसमइ खणे एला-वणुल्लए' (कु पृ ३३)।
वण्ण—१ चन्दन आदि का चूर्ण—'वण्णेहिं वा उव्वट्टेइ' (नि १।५)। २ अच्छ, स्वच्छ। ३ रक्त, लाल (दे ७।८३)।
वण्णग—चंदन—'चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलवं' (भ १६।३४)।
वण्णय—१ श्रीखण्ड, चन्दन (दे ७।३७)। २ सुगंधित चूर्ण (वृ)।
वतिभेदक—क्षुद्र जन्तु-विशेष (अंवि पृ २३८)।
वतु—समूह (दे ७।३२)।
वत्तट्ठ—१ सुंदर। २ बहुशिक्षित (दे ७।८५ पा)।
वत्तणासी—जलचर प्राणी-विशेष (अंवि पृ ६६)।
वत्तद्ध—१ सुन्दर। २ बहु-शिक्षित (दे ७।८५)।
वत्ता—सूत्र-वलनक-यंत्र, सूत्र-वेष्टन-यंत्र (प्रटी प ८०)।
वत्तार—गर्वित, अभिमानी (दे ७।४१)।
वत्ति—सीमा (बृभा २०१; दे ७।३१)।
वत्तुस्सय—वृद्ध (अंवि पृ १००)।
वत्थउड—तंबू, वस्त्र से निर्मित आश्रय-स्थान (दे ७।४५)।
वत्थरिका—बिछाने का आस्तरण (अंवि पृ ७२)।
वत्थाणी—वल्ली-विशेष (प्रज्ञाटी प ३३)।
वत्थाणीय—खाद्य-विशेष—'हत्थेण वत्थाणीए भोच्चा कज्जं साधेंति' (सूर्य १०।१७)।
वत्थी—तापसों की कुटिया (दे ७।३१)।

वत्थुल्ल—वनस्पति-विशेष, बथुआ (निचू ३ पृ १५६)।

वदिकलिअ—वलित, लौटा हुआ (दे ७।५०)।

वद्दल—१ बादल—'समोहणित्ता अब्भवद्दलए विउव्वंति' (राज १२)।
२ दुर्दिन, मेघकृत अन्धकार (दे ७।३५)।
३ छठी नरक का दूसरा नरकेन्द्रक, नरकस्थान।

वद्दलग—बादल (आचू १ पृ १३७)।

वद्दलिया—१ बदली, छोटा बादल (आचू १ पृ ३८५)। २ घटाटोप, मेघाडंबर (स्था ६।६२)।

वद्धणिया—झाड़ू (दे ८।१७)।

वद्धणी—संमार्जनी, झाड़ू (दे ७।४१ वृ)।

वद्धमाण—१ स्कन्धारोपित पुरुष। २ स्वस्तिक-पञ्चक। ३ प्रासाद-विशेष (ज्ञाटी प ६२)।

वद्धय—प्रधान, मुख्य (दे ७।३६)।

वद्धिय—नपुंसक-विशेष जिसका अंडकोश छेदकर गला दिया गया हो (निचू १ पृ ४०; दे ७।३७)।

वद्धी—अवश्य-कृत्य, आवश्यक कर्त्तव्य (दे ७।३०)।

वद्धीसक—वाद्य-विशेष (प्र १०।१४ टी)।

वद्धीसग—वाद्य-विशेष (अनु ३।४६)।

वधूज्ज—विवाह (अंवि पृ १४१)।

वधूपुत्ती—सुहागरात्री में वधू के रक्त-खरंटित वस्त्रों को देखकर स्वजन प्रसन्न होते हैं। वे उस वस्त्र को घर-घर ले जाकर गुरुजनों को सविनय दिखाते हैं। यह इसलिए कि सभी जान जाएं कि लड़की अक्षतयोनि वाली है अर्थात् गर्भ-धारण करने में समर्थ है—'का एसा वधूपुत्ती ? भण्णति-पढमे वासहरे भत्तुणा जोणिभेए कते तच्छोणियेण पोत्ति खरंडियं सूरुदए सयणो से परितुट्ठो पहलकं तं तं पोत्ति घरंघरेण गुरुजणपुरतो परिवंदइ दंसेति य, णज्जते रुहिरक्खंसणातो अक्खयजोणि त्ति' (अनुद्वाचू पृ ४८)। देखें—'आणंदवड'।

वप्प—थूभ (भ १५।८७ पा)।

वप्प—१ तनु, कृश। २ बलिष्ठ, बलवान्। ३ भूतगृहीत, भूताविष्ट (दे ७।८३)।

वप्पक—बालक—'पिल्लक-वप्पक-सिंगक-खुड्डक' (अंवि पृ १६६)।

वप्पग—खेत, क्षेत्र (निभा १२६५)।

वप्पडी—खाद्य-विशेष (अंवि पृ २४६)।

वप्पिण—१ खेतों वाला प्रदेश। २ तटों वाला प्रदेश (भटी प २३८)। ३ खेत (प्र १।१४; दे ७।८५)। ४ बसा हुआ (दे ७।८५)।

वप्पिणी—छोटी बावडी (प्र १०।१५)।

वप्पीअ—चातक पक्षी (दे ७।३३)।

वप्पोह—१ स्तूप, मिट्टी आदि का ढेर (दे ७।४०)। २ चातक पक्षी (दे ६।६० वृ)।

वप्पु—ढूह, थूभ, बांबी—'इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूअ अब्भुग्गयाओ' (भ १५।८८)।

वप्पूअ—थूभ (भ १५।८७)।

वप्फलिग—असत्य (आवमटी प ५३०)।

वप्फाउस—अधिक उष्ण (दे ६।६२)।

वब्भय—कमल का मध्यभाग (दे ७।३८)।

वमणि—कपास (निचू ३ पृ ५७)।

वमनी—कपास (अनुद्वामटी प ३१)।

वमारक—थलचर प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

वमाल—१ कलकल, कोलाहल (दे ६।६० वृ)। २ राशि।

वमालिय—पुंजीभूत, उपलिप्त—'असुइमलरुहिरकद्दम-वमालिओ गब्भवासमज्झम्मि' (कु पृ २५४)।

वमालीभूत—पुंजीभूत—'अह ण सक्केति रक्खिउं वमालीभूतं, ताहे कप्पं पत्थरेत्ता सव्वोवकरणं बंधति' (निचू २ पृ १७६)।

वम्मिका—पैरों का आभूषण—पामुट्टिक त्ति वा बूया वम्मिका पायसूचिका' (अंवि पृ ७१)।

वम्मीसर—कामदेव, कन्दर्प (दे ७।४२)।

वम्ह—वल्मीक (दे ७।३१)।

वम्हल—कमल-केसर, किंजल्क (दे ७।३३)।

वय—गृध्रपक्षी, गीध (दे ७।२६)।

वयड—वाटिका, बगीचा (दे ७।३५)।

वयण—१ घर, गृह। २ शय्या, बिछौना (दे ७।८५)।

वयर—चूर्णित (दे ७।३४)।

वयल—१ विकसित होता हुआ, खिलता हुआ। २ कलकल, कोलाहल (दे ७।८४)।

वयली—निद्राकरी लता (दे ७।३४)।

वर—धान्य-विशेष (भ २१।१६)।

वरअ—शालि-विशेष एक प्रकार का धान्य (दे ७।३६)।

वरइ—जलचर प्राणी-विशेष व पृ ६६)।

वरइअ—धान्य-विशेष (दे ७।४६)।

वरइत्त—दुलहा (दे ७।४४)।

वरउप्फ—मृत (दे ७।४७)।

वरंड—१ प्राकार, किला। २ कपोतपाली, कबूतरों का दरबा (दे ७।८६)। ३ तृणपुंज। ४ समूह।

वरंडग—प्राकार (निभा २३८७)।

वरंडा—बरामदा, बरण्डा (जीविप पृ ३४)।

वरक—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

वरक्क—प्रावरण-विशेष—'कोयवगो वरक्को' (निचू ३ पृ ३२१)।

वरक्खु—व्याघ्र (बृटी पृ २२१)।

वरग—१ शालि-विशेष, एक प्रकार का धान्य (भ ६।१३१)। २ मूल्यवान् पात्र (आचूला १।१४३)।

वरट्ट—धान्य-विशेष (स्था ७।६०)।

वरट्टग—धान्य-विशेष (आवचू २ पृ १२८)।

वरड—अति-स्थूल, बहुत मोटा (बृटी पृ ५३)।

वरडी—१ वंश-भ्रमर के जहर को उतारने की विद्या—'राइणा वाहरावियाओ गारुडिया भोइयभट्टचट्टाइणो इति। अपि य—जो वरडिं पि न याणइ सो वि तत्थ वाहरिओ' (उसुटी प १७४)। २ ततैया, गंधोली। ३ दंश-भ्रमर, काटनेवाली मधुमक्खी (दे ७।८४)।

वरढ—स्थूल, परिवृद्ध—'थूलं वड्ढं वरढं ति परिवूढं ति वा पुणो' (अंवि पृ ११४)।

वरण—सेतुबंध, पुल—'वरणेन सेतुबन्धेन व्रजति' (ओनि ३० टी)।

वरवरिका—ईप्सित वस्तु के दान देने की घोषणा, जो मांगो वह मिलेगा—इस प्रकार घोषणापूर्वक दिया जाने वाला दान—'वरवरिका घोष्यते—वरं याचध्वं वरं याचध्वमित्येवं घोषणा समयपरिभाषया वरवरिकोच्यते' (आवहाटी १ पृ ६१)।

वरसरक—खाद्य-विशेष—'सक्कुलि-वेढिम-वरसरक-चुण्णकोसग' (प्र १०।६)।

वरिल्लिया—जिसकी सगाई की गई हो वह—'सा य उग्गसेणनत्तुस्स धणदेवस्स वरिल्लिया' (बृटी पृ ५६)।

वरिसाल—वर्षावास (उसुटी प ६०)।

वरिसोलग—पक्वान्न-विशेष, खाद्य वस्तु (प्रसाटी प ५६)।

वरुअ—इक्षुसदृश तृण (दे ६।६१ वृ)।

वरुंड—एक प्रकार के शिल्पी (अनुद्वा ३६० पा)।

वरुट्ट—मयूर-पंख के शिल्पी (प्रज्ञा १ ६७)।

वरुंड—एक प्रकार के शिल्पी (अनुद्वा ३६०)।

वरेहत्थ—फल, लाभ, प्रयोजन (दे ७।४७)—'वरउप्फमारणे तुज्झ किं वरेहत्थं' (वृ)।

वरेल्ल—रोम पक्षी-विशेष (प्रज्ञा १।७६)।

वलअंगी—बाड़वाली (दे ७।४३)।

वलंगणिआ—बाड़वाली (दे ७।४३)।

वलग्गंगणी—वृति, बाड़ (दे ७।४३)।

वलद्द—बैल (आवहाटी २ पृ १२३)।

वलभी—यान-विशेष—'संदण-रथ-वलभी-पदोलि' (ओवि पृ २००)।

वलमय—शीघ्र, जल्दी—'किमागओ वच्च वलमयं तत्थ' (दे ७।४८ वृ)।

वलय—१ धान्यशाला—'कडपल्लाणं सण्णा तणपल्लाणं च देसितो वलया' (बृभा ३२६८)। २ खेत, क्षेत्र (आचूला ३।४८; दे ७।८५)। ३ घर (दे ७।८५)।

वलयणी—वृति, बाड़ (दे ७।४३)।

वलयबाहा—जहाज में स्थापित एक दीर्घ काष्ठ जिस पर ध्वजा आदि बांधी जाती है—'संसारियासु वलयबाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु' (ज्ञाटी प १४३)।

वलयबाहु—१ लंबा काष्ठ जिस पर ध्वजा आदि बांधी जाती है, आवेल्लक (ज्ञाटी प १४३)। २ हाथ का आभूषण-विशेष, चूडा (दे ७।५२)।

वलया—१ माया (सू १।१३।२३)। २ वेला, समुद्रतट—

'तिवलागमुहुम्मुक्को, तिक्खुत्तो वलयामुहे।
तिसत्तक्खुत्तो जालेणं, सइ छिन्नोदए दहे॥

एयारिसं ममं सत्तं, सढं घट्टियघट्टणं ।
इच्छसि गलेण घेत्तु, अहो ते अहिरीयया ॥ (पिनि ६३२,६३३) ।

वलवट्टि—१ सखी । २ परिश्रमशील स्त्री (दे ६।९१ वृ) ।

वलवाडी—वृति, बाड़ (दे ७।४३) ।

वलविअ—शीघ्र (दे ७।४८) ।

वलही—कपास, (दे ७।३२) ।

वलामोडिय—बलपूर्वक—'वलामोडिय घेप्पंति' (कु पृ ८) ।

वलिअ—भुक्त, भक्षित (दे ७।३५) ।

वलिआ—धनुष की डोरी (दे ७।३४) ।

वलिमोडअ—चक्राकार वेष्टनवाली वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४८।४७) ।

वलुक्की—वीणा-विशेष—'मुच्छिज्जंतीणं वीणाणं विवच्चीणं वलुक्कीणं' (आचू १ पृ ३०९) ।

वल्ल—१ निष्पाव, काली उरद (पिनि २४५) । २ शिशु (दे ७।३१) ।

वल्लई—१ गाय (दे ७।३६) । २ गोपी । ३ वीणा (वृ) ।

वल्लर—१ अरण्य (सूचू १ पृ १५८; दे ७।८६) । २ खेत (प्र १।२०; दे ७।८६) । ३ लता-निकुंज (उ १९।८१) । ४ अरण्य का खेत (पा ३५६) । ५ भैंसा । ६ युवा, तरुण । ७ पवन, समीर । ८ निर्जल-देश । ९ वन (दे ७।८६) । १० आलिंगन करने की आदतवाला । ११ वेष्टनशील । १२ वालुकायुक्त क्षेत्र । १३ जनप्रिय ।

वल्लरी—केश, बाल (दे ७।३२) ।

वल्लवाय—खेत, क्षेत्र (दे ६।२६ वृ) ।

वल्लाअ—१ श्येनपक्षी । २ नकुल, न्यौला (दे ७।८४) ।

वल्लाइय—आच्छादन, ढकने का साधन (दे ७।४५) ।

वल्लि—अशुचिमय—'वल्लिकरेसु आहारेति' (निचू १ पृ १६) ।

वल्लिका—कान का आभूषण-विशेष, बाली—'कुंडल वल्लिका तलपत्तक' (अंवि पृ १८३) ।

वल्लिपरिपल्लक—दीर्घकाल—'दुक्खं उव्वेल्लेउं वल्लिपरिपल्लकं ति गुपितं ति । एयादीया सद्दा पडिरूवा दिग्घकालस्स ॥' (अंवि पृ २४०) ।

वल्ली—१ पलाशकंद—'विरालिया गोत्तविसए वल्ली' (आचू पृ ३४०) । २ केश, बाल (दे ७।३२) ।

ववण—कपास, रूई–'ववणसरिसाओ महिलियाओ त्ति' (कु पृ २४१)।

ववणी—कपास (दे ७।३२)।

ववत्थंभ—बल, पराक्रम (दे ७।४६)।

ववसिअ—बलात्कार (दे ७।४२)।

ववहिअ—मत्त, उन्मत्त (दे ७।४१)।

वव्वय—आतोद्य-विशेष (आवचू १ पृ १८७)।

वव्वाड—अर्थ, प्रयोजन (दे ७।३६)।

वव्वीसक—लोकवाद्य-विशेष (कु पृ २६)।

वसभुद्ध—काक, कौआ (दे ७।४६)।

वसल—दीर्घ (दे ७।३३)।

वसिम—वसतिवाला स्थान–'अंतराले य दिट्ठं वसिमं' (उसुटी प ६३)।

वसुआअ—शुष्क–'वसुआअशब्दः शुष्कवाची' (से १।२० टी)।

वसुआइय—शुष्क किया गया (से ६।२५)।

वसुग—मधुर और स्नेहिल आमंत्रण–'गोलवसुगावि महुरं सप्पिवासं आमंतणं' (दजिचू पृ २५०)।

वसुल—१ युवा का प्रिय संबोधन-शब्द–'वसुल जुवाण प्रियवयणं' (दअचू पृ १६६)। २ अवज्ञा सूचक तुच्छ संबोधन–'वसुलो सुट्ठपरिभववयणं' (दअचू पृ १६८)। ३ निष्ठुर आमंत्रण-शब्द (दहाटी प २१५)।

वसुला—स्त्री के लिए प्रिय संबोधन (द ७।१६)।

वस्सासण—एक प्रकार का आसन (दर्भासन ?) (ति १०५१)।

वह—१ वृष-स्कन्ध (विपा १।२।२४)। २ स्कन्ध-व्रण, कन्धे पर होने वाला व्रण (दे ७।३१)। ३ व्रण, घाव–'सामान्येन व्रण इत्यन्ये' (वृ)।

वहड—दम्य-वत्स, दमनीय बछड़ा (दे ७।३७)।

वहढोल—चक्राकार वायु, आंधी (दे ७।४२)।

वहिल्ल—शीघ्र (प्रा ४।४२२)।

वहु—चिविड़ा, गन्ध द्रव्य-विशेष (दे ७।३१)।

वहुधारिणी—नववधू (दे ७।५०)।

वहुण्णी—जेठानी, पति के बड़े भाई की पत्नी (दे ७।४१)।

वहुमास—वह मास जिसमें पति नवोढा के साथ रमण करता हुआ उसके घर से बाहर नहीं निकलता–'प्रथमोढायाः सदनाद्यत्र पतिर्नापयाति बहिः। स स्याद् रमणविशेषो वहुमासो॥ (दे ७।४६ वृ)।

बहुरा—शिवा, शृगाली (दे ७।४०)।

बहुल्ला—छोटी सास (दे ७।४०)।

बहुहाडिणी—एक स्त्री के रहते हुए ब्याही जाती दूसरी स्त्री (दे ७।५०)।

बहूपोत्ति—देखें 'वधूपुत्ती' (अनुद्वा ३१४।६)।

बहोल—छोटा जल-प्रवाह (दे ७।३९)।

बाअड—शुक, तोता (दे ७।५६ पा)।

बाइंगण—बैंगन (प्रज्ञा १।३७; दे ७।२९)।

बाइंगणी—वृन्ताकी, बैंगन का गाछ (भ २२।४)।

बाइंगिणी—बैंगन का गाछ (प्रज्ञाटी प ५२७)।

बाइग—१ मद्य—'बाइगं णाम मज्जं' (निचू १ पृ १६४)। २ बैंगन—'बाइग-पलंडु-लसुणाई' (बृभा ६०४९)।

बाइद्ध—वक्र—'बाइद्धं ति वक्कामिति वृद्धाः' (भटी पृ १२९७)।

बाइल—इस नाम का वणिक्—'तत्थ बाइलो नाम वाणिओ जत्ताए पधाविओ' (आवमटी प २९६)।

बाइव—पूर्ववर्ती (अंवि पृ १९)।

बाउ—इक्षु, ईख (दे ७।५३)।

बाउक—आस्तरण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

बाउत्त—१ विट, भड़ुआ। २ जार, उपपति (दे ७।८८)।

बाउप्पइय—भुजपरिसर्प की एक जाति (प्र १।८)।

बाउप्पइया—भुजपरिसर्पिणी-विशेष—'वातोत्पतिका रूढ्यावसेया' (प्रटी प १०)।

बाउप्पिया—भुजपरिसर्प-विशेष (प्रटी प १०)।

बाउलग्ग—१ पुरुष का पुतला (निभा १५५)। २ सेवा, भक्ति।

बाउलि—वातूल (ज्ञा १।१।१५९)।

बाउल्ल—प्रलाप करने वाला, वाचाल (दे ७।५६)।

बाउल्लग—पुरुष का पुतला—'बाउल्लगं णाम पुरिसपुत्तलगो' (निचू १ पृ ६१)।

बाउल्लय—पुतला—'जाओ मणिमयबाउल्लओ विय दारओ त्ति' (कु पृ २१२)।

बाउल्लिआ—पुतली (दे ६।९२ वृ)।

बाउल्ली—पाञ्चालिका, पुतली (दे ६।९२ वृ)।

वाऊलिय—नास्तिक (दनि ७०)।

वागली—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०)।

वागुरा—एक प्रकार का जूता—'अंगुलिं च्छादित्ता पादावुपरि च्छादयति सा वागुरा' (निचू २ पृ ८७)।

वाघारि—लंबित—'वाघारि' लंबियभुजो' (आवहाटी २ पृ १०६)।

वाघारिय—प्रलंबित—'वाघारियलंबिअभुओ' (प्रसा ५८८)।

वाड—टक्कर (निभा ४१२३)।

वाडंतरा—कुटीर, झोंपड़ी (दे ७।५८)।

वाडकम्म—खेती, कृषि (उसुटी प २५१)।

वाडहिया—गर्भवती—'पुणो वाडहियासंजतिवेसेण पुरओ ठिओ' (निचू १ पृ २०)।

वाडा—भींत या वृति से परिवेष्टित स्थान-विशेष (नन्दीटि पृ १३६)। बाड़ा (राज०)।

वाडि—बाड, वृति (बृभा १०९६)।

वाडिम—गण्डकमृग, गेंडा (दे ७।५७)।

वाडिल्ल—कृमि, कीट (दे ७।५६)।

वाडी—वृति, बाड़ (दे ७।४३)।

वाडु—विनाश—'देशीवचनमेतत् नशने' (व्यभा ३ टी प १०३)।

वाणि—वणिक्-सहाय, वैश्य-मित्र (दे ७।५३)।

वाणिअ—वैश्य-मित्र (दे ७।५३ वृ)।

वाण—पूरणार्थक अव्यय—'वाणमिति पूरणार्थो निपातः' (आवहाटी १ पृ १७३)।

वाणअ—वलयकार, कंकण बनाने वाला शिल्पी (दे ७।५४)।

वाणमंतर—१ व्यन्तरदेव (स्था १।१६२)। २ देवकुल, मन्दिर (बृभा १०९३)।

वाणमंतरी—देवों की एक जाति, व्यन्तरी (आवचू २ पृ ३५)।

वाणवाल—इन्द्र (दे ७।६०)।

वाणीर—जम्बू-वृक्ष, जामुन का वृक्ष (दे ७।५६)।

वातंड—वायुरोग-विशेष (अंवि पृ २०३)।

वातंडविस—प्राणी-विशेष (?) (अंवि पृ २२६)।

वातंसु—बिल में रहने वाला जंतु-विशेष—कसका वातकुरीला वातंसु कुतिपि एवमादयो ···एतेसु बिलासया भवंति' (अंवि पृ २२६)।

वातकुरील—बिल में रहने वाला जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।

वातकोणय—क्षुरप्र, अस्त्र-विशेष—'वातकोणएण णक्काणि छिण्णाणि' (आवहाटी १ पृ २६४)।

वातिंगण—बैंगन (दअचू पृ २०३)।

वातोली—आंधी (तंदु पृ ५८)।

वाधुज्ज—१ विवाह से संबंधित (अंवि पृ ४०)। २ विवाह (अंवि पृ १६३)।

वाधेज्ज—विवाह (अंवि पृ १३४)।

वाम—१ मृत (दे ७।४७)। २ आक्रान्त।

वामणिअ—खोई हुई वस्तु को पुनः प्राप्त करने वाला (दे ७।५६)—'तुह वासवारवाला वामणिआ हुन्ति कुमारवाल णिव !' (वृ)।

वामणिआ—दीर्घ काष्ठ की बाड (दे ७।५८)।

वामपार—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

वामरि—सिंह (दे ७।५४)।

वामी—महिला (दे ७।५३)।

वाय—१ वनस्पति-विशेष (सू २।३।२२ पा)। २ गन्ध (दे ७।५३)। ३ शुष्क (से ५।५७)।

वायउत्त—१ विट, भड़ुआ। २ जार, उपपति (दे ७।८८ वृ)।

वायंगण—बैंगन (प्रसा २४६)।

वायडघड—वाद्य-विशेष, दर्दुर नामक वाद्य (दे ७।६१)—'वायडघडो दर्दुरकाख्यो वाद्यविशेषो भरते प्रसिद्धः' (वृ)।

वायडाग—सर्प की एक जाति (प्रज्ञाटी प ५१)।

वायण—१ बुनना—'तन्तुवायनं शिल्पमस्य इति तान्त्रिकः' (अनुद्वाहाटी पृ ७४)। २ भोज्योपायन, खाद्य पदार्थ का उपहार (दे ७।५७)।

वायणय—भोज्य पदार्थों की भेंट (पा ६१३)।

वायलिय—सपेरा (प्रटी प ३७)।

वायाड—शुक, तोता (दे ७।५६)।

वायार—शिशिर ऋतु का पवन (दे ७।५६)।

वार—१ चषक, पान-पात्र (सूचू २ पृ ३५८; दे ७।५४)। २ प्रहार (निरटी पृ २२)।

वारंग—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

वारग—मंगल घट—'वारकः मरुदेशप्रसिद्धनामा मांगल्यघटः' (जंबू १०१)।

वारडिय—रक्त वस्त्र, लाल कपड़ा—'जत्थ य वारडियाणं तत्तडियाणं' (ग ८६)।

वारमट्ठिय—फल-विशेष—'सेलुफल-कोलफल-वारमट्ठिएसु य तधेव' (अंवि पृ २३८)।

वारवत्त—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष (अंवि पृ २३७)।

वारसिआ—मल्लिका, पुष्प-विशेष (दे ७।६०)।

वारिअ—नापित (दे ७।४७)।

वारिक—नापित—'नापिता नखशोधका वा रिका इत्यर्थः' (व्यभा १० टी प १५)।

वारिखल—परिव्राजक-विशेष—'वारिखलाणं बारस मट्टीया छच्च वाणपत्थाणं' (बृभा १७३८)।

वारिज्ज—विवाह (अनुद्धाचू पृ ४८; दे ७ ५५)।

वारिज्जिय—विवाह-संबंधी—'पत्तो वारिज्जियवासरो' (उसुटी प २७६)।

वारिणील—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

वारुअ—१ शीघ्र (दे ७।४८)। २ शीघ्रतायुक्त—'ण वारुआ अम्हे' (वृ)।

वारुआ—१ शीघ्र। २ शीघ्रता से—'आरूढो य एक्कं वारुआसज्जं करिणिं' (कु पृ ३३)।

वारेज्ज—विवाह (अनुद्धा ३१४)।

वारेज्जय—विवाह (उसुटी प २७६)।

वाल—१ मुंह से बजाया जाने वाला वाद्य (आवचू १ पृ ३०६)। २ शकुनि-गृह—'वालं सउणिघरए' (आचू पृ ३४०)।

वालंक—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

वालंजक—कपड़े का व्यापारी (औपटी पृ ६४)।

वालंजुय—वणिक्—'वाणिय त्ति वालंजुओ' (निचू ३ पृ १६३)।

वालंफोस—कनक, सोना (दे ७।६०)।

वालंब—मुकुट का प्रालंब—'वालंबा मउडादिसु ओचूला' (निचू २ पृ ३६८)।

वालकल्लि—भोज्य-विशेष (अंवि पृ ७१)।

वालग—१ पात्र-विशेष (आचला १।१०४)। २ शकुनी-गृह (आचू पृ ३४०)।

वालगपोतिया—जलमंदिर (सूर्यटी प ७०)।

वालग्गपोइया—१ वलभी, अट्टालिका। २ तालाब के मध्य में स्थित छोटा प्रासाद—'वालग्गपोइयातो य त्ति देशीपदं वलभीवाचकं, अन्ये त्वाकाशतडागमध्यस्थितं क्षुल्लकप्रासादमेव वालग्ग-पोइया य त्ति देशीपदाभिधेयमाहुः' (उशाटी प ३१२)।

वालग्गपोतिका—तालाब के मध्य क्रीड़ा करने का लघु प्रासाद—'वालाग्र-पोतिकाशब्दो देशीशब्दत्वादाकाशतडागमध्ये व्यवस्थितं क्रीडास्थानं लघुप्रासादमाह' (सूर्यटी प ७०)।

वालग्गपोत्तिया—१ वलभी—'वालग्गपोत्तियाओत्ति देशीयपदं वलभीवाचकम्' (उसुटी प १४८)। २ जलमंदिर।

वालप्प—पुच्छ, पूंछ (दे ७।५७)।

वालवास—मस्तक का आभूषण (दे ७ ५६)।

वालिआफोस—कनक, सोना (दे ७।६०)।

वालिजुक—१ व्यापार के लिए एक गांव से दूसरे गांव जाने वाले (ओटी पृ १६६)। २ कपड़े का व्यापारी (बृटी पृ ११५८)।

वालिका—कान की बाली, आभूषण-विशेष—'वालिका कण्णवल्लीका कण्णिका कुंडमालिका' (अंवि पृ ७१)।

वालिखरग—जलीय वनस्पति-विशेष (आचू पृ ३४१)।

वालिया—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

वाली—वाद्य-विशेष, मुंह के पवन से बजाया जाने वाला तृण-वाद्य (राज ७७; दे ७।५३)।

वालीण—मत्स्य-विशेष—'वालीणा सुंसुमारा कच्छपमगरा' (अंवि पृ २२८)।

वालु—दूध—'एगट्ठ णाणवंजण दुद्ध पयो वालु खीरं च' (जीभा ११३२)। हालु (कन्नड)। पाल (तमिल)।

वालुंक—पक्वान्न-विशेष—'खीर - दधि-सूव-कट्टरलंभे गुड-सप्पि-वडग-वालुंके' (पिनि ६३७)।

वालुंजुक—व्यापार के लिए एक गांव से दूसरे गांव जाने वाले (ओटी पृ १६६)।

वालुंडय—रोमकूप (तंदु ११६)।

वालेपतुंद—कर्मजीवी (अंवि पृ १६१)।

वावअ—आयुक्त, गांव का प्रमुख (दे ७।५५)।

वावड—१ कुटुम्बी, गृहस्थ (दे ७।५४)। २ व्याकुल (वृ)।

वावडय—विपरीत मैथुन (दे ७।५८)।

वावडया—विपरीत मैथुन (पा ४३२)।

वावणी—छिद्र, विवर (दे ७।५५)।

वावदारी—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

वाविअ—विस्तारित (दे ७।५७)।

वावोण्य—विकीर्ण, बिखरा हुआ (दे ७।५९)।

वासंदी—कुन्द का पुष्प (दे ७।५५)।

वासपडाग—सर्प की एक जाति (प्रज्ञा १।७१ पा)।

वासवार—१ तुरंग, घोड़ा (दे ७।५९)। २ कुत्ता।

वासवाल—श्वान, कुत्ता (दे ७।६०)।

वासाणिया—वनस्पति-विशेष (सू २।३।२२)।

वासाणी—रथ्या, गली (दे ७।५५)।

वासिय—पर्युषित, रात का बचा हुआ (खाद्य आदि)—'अच्छइ जाव पभायं वासियभत्तं च से वसभा' (ओनि १२)।

वासीमुह—द्वीन्द्रिय जंतु-विशेष, वासीमुख (उ ३६।१२८)।

वासुरुल—स्थान-विशेष, उपद्रुत स्थान (अंवि पृ २२२)।

वासुल—१ कुन्द का फूल (अंवि पृ ७०)। २ गोत्र-विशेष (अंवि पृ १४९)।

वासुली—कुन्द का पुष्प (दे ७।५५)।

वासेलिका—जलक्रीड़ा (अंवि पृ २५५)।

वाहगण—मंत्री (दे ७।६१)।

वाहगणय—मंत्री (दे ७।६१ वृ)।

वाहड—भरा हुआ, परिपूर्ण—'बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा' (द ७।३९)।

वाहणा—ग्रीवा, गला (दे ७।५४)।

वाहली—लघु जल-प्रवाह (दे ७।३९)—'वाहलीशब्दः लघुजलप्रवाहवाचको देश्य एव वर्तते' (दे ३।२७ वृ)।

वाहा—वालुका, रेत (दे ७ ५४)।

वाहाडिया—गर्भवती (वृटी पृ १०३१)।

वाहाया—वृक्ष-विशेष—'समिसंगलिया इ वा वाहायासंगलिया इ वा' (अनु ३।४१)।

वाहि—चिरप्रसूता गाय—'न वि वच्छएसु सज्जंति वाहिओ नेव वच्छमाऊसु' (बृभा २१२०)।

वाही—एक कला-विशेष—'पत्तच्छेज्जाणि वा वाहीणि वा वेहिमाणि वा' (निचू ३ पृ ३४६)।

वाहुया—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष (जीवटी प ३२)।

विअओलिअ—मलिन, मैला (दे ७।७२)।

विअंगिअ—निन्दित (दे ७।६६)।

विअंसअ—व्याध, बहेलिया (दे ७।७२)।

विअडिय—सुरा-संधानकारी, मद्य बनाने वाला (व्यभा ६ टी प ४३)।

विअलंबल—दीर्घ (दे ७।३३)।

विआरिआ—पूर्वाह्ण का भोजन (दे ७।७१)।

विआल—१ संध्या—'राओ य विआले य पविसमाणे' (विपा १।५।२६; दे ७।६०)। २ चोर (दे ७।६०)।

विआलुअ—असहन, असहिष्णु (दे ७।६८)।

विउव्वाढ—१ विस्तीर्ण। २ दुःखमुक्त (दे १।१२६ वृ)।

विऊरिअ—नष्ट (दे ७।७२)।

विएऊण—चुनकर—'सुयसागरा विएऊण जेण सुयरयणमुत्तमं दिण्णं' (प्रज्ञाटी प ४)।

विओल—उद्विग्न (दे ७।६३)।

विख—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६)।

विचिणिअ—१ पाटित, विदारित। २ धारा, प्रवाह (दे ७।६३)।

विटल—वशीकरण-विद्या—'निमित्तादिना विण्टलेन कृते—भाविते' (बृटी पृ ६३३)।

विटलिया—१ वशीकरण-विद्या। २ निमित्त आदि का प्रयोग—'विटलियाणि पउंजति' (ग ११६)।

विटिया—१ गठरी, पोटली (उशाटी प ८७)। २ मुद्रिका, बींटी।

विकडुभ—शालनक (बृटी पृ ३१२)।

विकालिका—आभूषण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

विकिच्चिका—रोग-विशेष—'कुट्ठं किडिभं दद्दू विकिच्चिका पामा' (निचू २ पृ २१४)।

विक्कभण—चतुर चाल वाला घोड़ा (दे ७।६७)।

विक्किय—संस्कृत, सुधारा हुआ (दहाटी प २२१)।

विक्केणुअ—विक्रेय, बेचने योग्य (दे ७।६६)।

विक्ख—नपुंसक का एक प्रकार—'विक्खो य संढो वा वि णरेतरो' (अंवि पृ ७३)।

विक्खंभ—१ बीच का भाग, अंतराल (आवचू २ पृ १२३; दे ७।८८)। २ स्थान (दे ७।८८)। ३ छिद्र, विवर (से ३।१४)।

विक्खण—कार्य (दे ७।६४)।

विक्खास—विरूप, कुत्सित (दे ७।६३)।

विक्खिण्ण—१ आयत, लम्बा। २ जघन (दे ७।८८)। ३ अवतीर्ण (वृ)।

विगड—निर्जीव, प्रासुक—'विगतजीवं विगडं' (आचू पृ ३०८)।

विगरणी—भंजन—'तओ सा आयरिएहिं चउत्ति विगरणी कया' (बृटी पृ १३१६)।

विगलि—अरण्य—'धीरा वाएण उदीरिएण विगलिम्मि ओलाइया' (म ४८१)।

विग्गुत—विपरीत, विप्रतिपन्न (सूचू १ पृ २३०)।

विग्गोव—व्याकुलता (दे ७।६४)।

विचिक्की—वाद्य-विशेष (राज ७७)।

विच्च—१ बीच में—'णहमलो णहविच्च रेणू' (निचू २ पृ २२१)। २ स्तूप—'इट्ठगादिचिया विच्चा थूभो भण्णति' (निचू २ पृ २२५)। ३ बुनने की क्रिया—'ण य ताण कुच्चविच्चाणि निज्झातियव्वाणि' (आवचू १ पृ ३५४)। ४ मार्ग (प्रा ४।४२१)। ५ जटित।

विच्चग—स्तूप—'थूभा पुण विच्चगा होंति' (निभा १५३५)।

विच्चोअअ—उपधान, तकिया (दे ७।६८)।

विच्छड्ड—१ समूह, निकर (से २।२; दे ७।३२)। २ ठाटबाट, धूमधाम—'पूइओ महाविच्छड्डेण कुसुमवत्थाईहिं' (उसुटी प १३६)।

विच्छिअ—१ पाटित, विदारित। २ विचित, चुना हुआ। ३ विरल (दे ७।६१)।

विच्छेअ—१ विलास। २ जघन (दे ७।६०)।

विच्छोलिअ—धौत, धोया हुआ—'धोअं विच्छोलिअं' (पा ६२०)।

विच्छोह—विरह, वियोग (दे ७।६२)।

विजढ—परित्यक्त (उ ३६।८२)।

विजाय—लक्ष्य–'लक्खं विजायं' (पा ८४०)।

विज्जल—१ पंकिल मार्ग (द ५।४)। २ चिकने कीचड़ वाला स्थान–'स्निग्ध कर्दमाविलस्थानं यत्र जनोऽतर्कित एव पतति' (जंबूटी प १२४)।

विज्जुल—पंकिल मार्ग (आटी प ४०६)।

विज्झडावेउं—डांट-फटकार कर–'रायपुरिसेहि य घेत्तुं पिट्टित्ता रण्णो य णीओ पासं, सिट्ठे रण्णा विज्झडावेउं वज्झो आणत्तो' (आचू पृ १८७)।

विज्झडित—व्याप्त–'बहुखंडंतरेसु वा कंटगेसु विज्झडितं किज्जति वा' (निचू २ पृ ६३)।

विज्झडिय—व्याप्त–'सीयउण्हखरफरुसवाय-विज्झडियमलिणपंसु-रउग्गुडियंगमंगं' (भ ७।११६)।

विज्झिडि—मत्स्य की एक जाति (विपाटी प ७६)।

विज्झिडिय—मत्स्य की जाति-विशेष (प्रज्ञा १।५६)।

विटपोल्लक—ललकार, विस्वर (प्रटी प ५८)।

विट्टल—नीच–'अहमो चिलीणकम्मो पावो अह विट्टलो णिहीणो य' (कु पृ २२३)।

विट्टाल—उच्छिष्टता, अपवित्रता (प्रा ४।४२२)। [मराठी-विटाल]

विट्टालणा—अपवित्रता, उच्छिष्टता (बृटी पृ ६६६)।

विट्टालित—भ्रष्ट, उच्छिष्ट (निचू ३ पृ १३७)।

विट्टी—गठरी (ओनि ३२४ पा)।

विट्ठ—१ ऐसा स्थान जिसके चारों ओर पानी हो–'जूवयं णाम विट्ठं पाणियपरिक्खित्तं' (निचू ४ पृ ५४)। २ सुप्तोत्थित, सोकर उठा हुआ।

विट्ठर—भाजन-विशेष (जंबूटी प १००)।

विड—विष्ठा–'विडित्ति विट्ठा' (प्रसा ६६)।

विडअ—राहु, ग्रह-विशेष (दे ७।६५)।

विडओलण—धाड़ा, लूट (ओटी प ४४)।

विडंकिआ—वेदिका, वेदी (दे ७।६७)।

विडप्प—राहु, ग्रह-विशेष (दे ७।६५)।

विडसण—स्वाद लेकर खाना–'विडसणं पि णेच्छामो' (निभा ४८४३)।

विडसणा—स्वाद लेते हुए थोड़ा-थोड़ा खाना—'विडसणा णाम आसादेंतो थोवं थोवं खायति' (निचू ३ पृ ५१८)।

विडिचिअ—विकराल, भयंकर (दे ७।६६ वृ)।

विडिच्चिर—विकराल, भयंकर (दे ७।६६)।

विडिम—१ वृक्ष (प्र ६।१)। २ वृक्ष का मध्य भाग। ३ वृक्ष का विस्तार (ज्ञाटी प ५)। ४ बाल मृग। ५ गेंडा (दे ७।८६)। ६ शाखा (दअचू पृ ७)।

विडिमा—प्रशाखा—'तत्थ जे खंधाओ ते साला भण्णंति, सालाहिंतो जे णिग्गया ते विडिमा भण्णंति' (दजिचू पृ २५५)।

विडिमी—वृक्ष—'दुमा य पायवा रुक्खा विडिमी य अगा तरू' (दनि १४), 'विडिमाणि जेसिं विज्जंति ते विडिमी' (दअचू पृ ७)।

विडोमिअ—गण्डकमृग, गेंडा (दे ७।५७)।

विडु—१ प्रपंच, विस्तार (दे १।४ वृ)। २ दीर्घ, लंबा (दे ७।३३)।

विडुर—१ आभोग। २ भयंकर (दे ७।६० पा)। ३ आडंबर।

विडुर—१ । २ रौद्र, भयंकर (दे ७.६०)। ३ आटोप, आडंबर (पा ६१४)।

विडुरिल्ला—रात्री (दे ७।६७)।

विड्डेर—नक्षत्र-विशेष, पूर्वद्वार वाले नक्षत्रों में पूर्व दिशा से जाने के बदले पश्चिम दिशा से जाने पर प्राप्त होने वाला नक्षत्र—'पूर्वद्वारिकेषु नक्षत्रेषु पूर्वदिशा गन्तव्ये अपरया गच्छतो विड्डेरम्' (विभामहेटी २ पृ ३२७)। 'जं जत्थ गमणकम्म समारंभादिसु अणिभिहियं तं विड्डेरं विगतद्वारमित्यर्थः' (निचू ४ पृ ३०१)।

विड्डुर—गृहस्थ के लिए जादू-टोना में । ृत्त होना (व्यभा ४।३ टी प ४६)।

विढणा—पार्ष्णि, एड़ी (दे ७।६२)।

विढत्त—अर्जित (प्रा ४।२५८)।

विणडिअ—व्याकुल—'रायउत्तविरहुव्विग्गा य गब्भभरविणडिया चिंतिउं पयत्ता' (कु पृ ७५)।

विणण—बुनना (निचू ३ पृ ५७३)।

विणाड—ढेंढरा, टेंटर, आंख का एक रोग जिसमें मांस उभर आता है (दअचू पृ १६७)।

विणिव्वर—पश्चात्ताप (दे ७।६८)।

वितत—कार्य (दे ७।६४)।

वितिहव—परिचित–'संजयभावियसेत्ते तस्स असतीए त चक्खुवितिहवे–चक्षुर्विटिहते दृष्ट्या परिचिते' (व्यभा ८ टी प ५५)।

वित्त—दीर्घ, लम्बा (दे ७।३३ वृ)।

वित्तइ—१ गर्वित, अभिमानी। २ विलसित (दे ७।९१)। ३ गर्व, अहंकार–'वित्तई गर्वे इत्यन्ये' (वृ)।

वित्तीकप्प—प्रायः पूर्ण–'अट्ठमे मासे वित्तीकप्पो हवइ' (तंदु १९)।

वित्थक्कंत—१ स्थिर होता हुआ। २ विलंब करता हुआ (से १३।७०)।

विदर—जलस्थान-विशेष (ज्ञाटी प ४०)।

विद्दंडिय—विनाशित (दे ७।७०)।

विद्दणा—लज्जा (दे ७।६५ पा)।

विद्दूणा—लज्जा, शरम (दे ७।६५)।

विधित्तिका—फल-विशेष (अवि पृ ७०)।

विपित्त—विकसित (दे ७।६१)।

विप्प—पुच्छ पूंछ (दे ७।५७)।

विप्पय—१ खल-भिक्षा। २ वैद्य। ३ दान। ४ वापित, बोया हुआ (दे ७।८९)।

विप्परद्ध—विशेष-पीड़ित–'कर-चरण-दंत-मुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे' (ज्ञा १।१।१६१)।

विप्पराद्ध—हत-प्रहत (ज्ञाटी प ७३)।

विप्पवर—भल्लातक, भिलावा (दे ७।६६)।

विप्पावग—हास्यकर्त्ता, उपहास करने वाला—'तेण वि विप्पावगो त्ति नाऊण संजायमाणकोवेण भणियं' (उसुटी प ४)।

विप्पास—मल-मूत्र–'विट्ठा पत्ति प्रश्रवणं मूत्रं' (प्रटी प १०५)।

विप्पिडिय—विनाशित (दे ७।७०)।

विप्पित—१ विघ्नयुक्त–'विग्घतत्ति विप्पितत्ति एगट्ठा' (आचू पृ २४२)। २ विकलांग।

विप्पिय—कूटा हुआ, छिन्न–'पिच्चिउ त्ति वा विप्पिउ त्ति वा कुट्टितो त्ति वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ २०६)।

विप्फाडिअ—नाशित, नष्ट किया हुआ (दे ७।७०)।

विप्फाल—पृच्छा–'देशीवचनमेतत्' (व्यभा २ टी प २१)।

विप्फालण—पृच्छा (व्यभा २ टी प २१)।

विप्फालणा—प्रश्न, पृच्छा–'विप्फालणा णाम वियडणा' (निचू ३ पृ ३६)।

विब्बोक—शरीर का एक प्रकार का विकार—'विब्बोकः देशीपदं अंगज-विकारार्थे' (अनुद्वाहाटी पृ ६६)।

विब्बोय—१ स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष। २ काम-विकार (अनुद्वा ३११)।

विब्बोयण—उपधानक, तकिया (सूयं २०।७)।

विब्भवण—उपधान, तकिया (दे ७।६८)।

विब्भिडिय—मत्स्य की एक जाति (प्रज्ञा १।५६ पा)।

विब्भेइअ—सूई से विद्ध (दे ७।६७)।

विभंगु—तृण-विशेष (प्रज्ञा १।४२)।

विभमण—उपधान, तकिया (दे ७।६८ वृ)।

विभइअ—भर्त्सित, तिरस्कृत (दे ७।७१)।

विभय—पर्व-वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४१)।

विभलहर—कोलाहल (दे ७।७२)।

विभलिअ—१ मत्सर से उक्त। २ शब्द-सहित, शब्दवाला (दे ७।६२)।

विभा—बांस का एक प्रकार (भ २१।१७)।

विभिसित—प्रकाशित (अंवि पृ ६)।

विम्हराइय—१ मूर्छित। २ विस्मापित (से ६।४१)।

वियंछिय—विकर्षण—'मा तेण अंछवियंछियं कज्जिहिति' (आवहाटी २ पृ २२८)।

वियट्ट—आकाश—'अट्टे इ वा वियट्टे इ वा आधारे इ वा' (भ २०।१६)।

वियड—१ प्रासुक, निर्जीव—'जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था' (आ ६।१।१८)। २ जल—'वियडं समयभाषया जलम्' (ज्ञाटी प २६८)। ३ मद्य (पिनि २३६)। ४ तुच्छ (से ६।२६)।

वियडग—प्रासुक, निर्जीव (दश्रु ८।२४०)।

वियडत्ता—मदिरापान का नशा, मत्तता—'पच्छा वियडत्ता जाया' (उसुटी प ३४)।

वियडासय—चुल्लू—'वियडासय चुलुकमाहुर्वृद्धाः' (भटी पृ १२२७)।

वियडि—अटवी, जंगल—'वियडिशब्देन लोके अटवी उच्यते' (ज्ञाटी प ७२)।

वियड्डि—तलाई—'वियड्डि त्ति देशीवचनतः तडागिका' (उशाटी प १३८)।

वियर—१ नदी आदि के सूख जाने पर पानी निकालने के लिए किया जाने वाला गर्त्त (स्थाटी प २६६)। २ गर्त्त (ज्ञाटी प २३६)।

वियरग—१ नदी आदि जलाशय के सूख जाने पर पानी के लिए किया जाने वाला गढा (ज्ञा १।१।१५६)। २ कूपिका, छोटाकूप—'वियरगोत्ति-कूविया' (निचू ३ पृ ५८४)।

वियरय—१ लघु स्रोत वाला जलाशय जो सोलह हाथ विस्तृत होता है। नदी या महागर्त्त में इसका संकुचन तीन हाथ विस्तृत होता है (व्यभा ४।३ टी प ६)। २ गर्त्त (ज्ञा १।१७।२२)।

वियली—घर के चार कोनों में रखा जाने वाला छोटा स्तंभ—'थूणाओ होंति वियली' (निभा ४२६८)।

वियाउया—पैर फटना, बिवाई—'सीतेण वि पव्वीसु वियाउआसु फुट्टंतीसु खल्लगादि पुडगे बंधति' (निचू ३ पृ २३)।

वियार—१ विस्तीर्ण—'सवियारो त्ति वित्थिन्नो' (बृभा २०२२ चू)। २ शौच-स्थान (निचू १ पृ ४४)।

वियाल—संध्या—'वियाले त्ति सन्ध्यायाम्' (विपाटी प ६६)।

वियावड—आकुल (ओटी प १३८)।

वियावत्त—जीर्णशीर्ण, अपरिलक्षित—'वियावत्तं नाम अव्यक्तमित्यर्थः, भिन्न-पडियं अपागडं' (आवहाटी १ पृ १५२)।

विरमालिय—प्रतीक्षित (पा ५७०)।

विरय—१ लघु स्रोत वाला जलाशय जो सोलह हाथ विस्तृत होता है। नदी या महागर्त में इसका संकुचन तीन हाथ विस्तृत होता है (व्यभा ४।३ टी प ६)। २ छोटा जल-प्रवाह (दे ७।३६)।

विरलि—वस्त्रविशेष, डोरिया (प्रसाटी प १६१)।

विरली—चतुरिन्द्रिय प्राणी-विशेष (उ ३६।१४७)।

विरल्लिअ—जलार्द्र, जल से भीगा हुआ (दे ७।७१)।

विरल्लित—विकीर्ण, विस्तारित (स्था ४।५७७)।

विरल्लिय—विस्तारित—'जह उल्ला साडीया आसु सुक्कइ विरल्लिया संती' (विभा

विरस—वर्ष (दे ७।६२)।

विरसमुह—काक, क आ

विरह—१ एकान्त (विपा १।६।३१; दे ७।६१)। २ कुसुंभ रंग से रंगा हुआ वस्त्र (

विरहाल—कुसुंभ रंग से रंगा हुआ वस्त्र (दे ७।६८)।

विराय—विलीन, पिघल हुआ (पा ८०२)।

विरालो—आस्तरण-विशेष (जीविप पृ ५१)।

विरिंचिल्ल—१ विमल, निर्मल। २ विरक्त, उदासीन (दे ७।९३)।

विरिंचिर—१ अश्व, घोड़ा। २ विरल (दे ७।९३)।

विरिंचिरा—धारा, प्रवाह—'विरिंचिरा धारेति केचित्' (दे ७।९३ वृ)।

विरिक्क—१ अपना विभाग लेकर जो अलग हो गया हो वह—'दो भाउया वाणिया ते य परोप्परं विरिक्का' (ओटी पृ ३८७)। २ पाटित, विदारित (दे ७।६४)।

विरिक्का—बिंदु, लेश (उसुटी प ३६)।

विरिज्जअ—अनुचर (दे ७।६६)।

विरुअ—१ खराब, कुत्सित (दे ७।६३)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल।

विरुंगण—१ उपद्रुत। २ छिन्न (बृभा ६०४)।

विरुंगिय—१ उपद्रुत। २ छिन्न (निचू ३ पृ २००)।

विरुंचण—विरूप, कुडौल (बृभा २५०२)।

विरूग—१ व्याघ्र। २ भेडिया (नंदिटि पृ १३३)।

विरूव—१ भेड़िया—'तं चरंतस्स ण हायइ बलं विरूवं च पेच्छंतस्स भएण ण वड्ढइ' (आवहाटी १ पृ २७८) २ व्याघ्र—'वग्घो त्ति विरूवो (निचू ३ पृ ४९२)।

विरेग—१ अवसर। २ विश्राम—'दिवसतो विरेगो नत्थि, रत्तिंपि पडिपुच्छण-सिक्खगाईहिं सुइयं न लहइ' (उशाटी प १२९)।

विरेल्लिय—विस्तृत (ज्ञा १।१७।३६)।

विरोलिअ—मथित (पा ५५५)।

विलअ—सूर्य का अस्त होना, सूर्य की अस्तमन वेला (दे ७।६३)।

विलइय—१ अधिज्य, धनुष्य की डोरी पर चढाया हुआ। २ दीन, गरीब (दे ७।९२)। ३ नियोजित, आरोपित। ४ शिरोधार्य—'पढुमं चिअ रहुवइणा उवरिं, हिअअ तुलिओ भरो व्व विलइओ' (से ३।५)।

विलउलग—लुटेरा—'लुंटागा विलउलगा' (निचू ३ पृ २१९)।

विलउलय—लुटेरा (निचू ३ पृ २१९)।

विलउली—१ तलाशी (प्र ३।१३)। २ ठगने के लिए विस्वर वचन (बोलना) (प्र ३।१४)।

विलओलग—लुटेरा (बृटी पृ ८२५)।

विलओलण—धाड़ी, डाका (ओनि ८५)।

विलओलय—लुटेरा—'देशीपदत्वाद् लुण्टाकाः' (बृटी पृ ८२५)।

विलओली—१ ललकार, विस्वर। २ तलाशी (प्रटी प ५८)

विलंक—मांस—'अविलंको न सक्केमि पातुं' (दअचू पृ २७)।

विलका—तरुण स्त्री—'जोसिता धणिता व त्ति विलक त्ति विलासिणी' (अंवि पृ ६८)।

विलमा—धनुष की डोरी (दे ७।३४)।

विलय—पक्षी-विशेष (म १२।१६१)।

विलया—वनिता, स्त्री (तंदु १६३)।

विलालु—पर्वत के बिलों में रहने वाला प्राणी-विशेष, बिडाल (अंवि पृ २२७)।

विलिंजर—पुष्प-विशेष (अंवि पृ ७०)।

विलिंजरा—धाना, भुने हुए जौ (दे ७।६६)।

विलिप्पिल—कीचड (निचू ३)।

विलिय—१ लज्जित—'सो उड्डाहिओ समाणो विलिओ अग्गओ गच्छइ' (उसुटी प ५५)। २ लज्जा (दे ७।६५)। ३ विप्रिय (वृ)।

विलियंध—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।

विलिव्विली—कोमल और निर्बल शरीर वाली स्त्री (दे ७।७०)।

विलुंगयाम—साधु, निर्ग्रन्थ—'विलुंगयामो त्ति निर्ग्रन्थः अकिञ्चनः' (आटी प ३२६)।

लुंपअ—कीट, कीड़ा (दे ७।६७)।

विलुंपिअ—१ अभिलषित, कांक्षित (दे ७।६६)। २ अशित, कवलित—'असिअं विलुंपिअं वंफिअं खइअं' (पा १३४)।

विलुक्क—१ छिपा हुआ (आवमटी प ४६३)। २ विमुण्डित, सर्वथा लुंचित (पिनि २१७)।

विलुत्तहिअअ—जो समय पर काम करना न जानता हो वह (दे ७।७३)।

विल्ल—१ अच्छ, स्वच्छ। २ विलसित, विलासयुक्त (दे ७।८८)। ३ सुगंधी द्रव्य-विशेष जो धूप खेने में काम आता है।

विल्लरी—१ पक्षिणी, राजहंसिनी—'विल्लरी रायहंसि त्ति कलहंसि त्ति वा पुणो' (अंवि पृ ६६)। २ केश, बाल (दे ७।३२)।

विल्लहल—१ स्फीत, तीव्र—'सललिय-विल्लहलगई' (आवनि १२५७)। कोमल। ३ विलासी (दे ७।६६ पा)।

विल्ह—धवल, सफेद (दे ७।६१)।

विवच्चि—पैर में बिवाई फटना—'पुडगविवच्चि सीते' (निभा ३४३२)।

विवणिज—फेरी कर माल बेचने वाला व्यापारी (बृटी पृ ६१८)।

विवहार—कष्ट (आवहाटी १ पृ ३०१)।

विवाहेंडल—अल्पश्रुत, मंदबुद्धि—'तं पुण ण को ति जाणति पूएति वा, मय-मायवच्छदो विवाहेंडलो, अणाढितो सव्वलोयस्स' (निचू ३ पृ २५)।

विवित्त—मुषित, लूटित—'अद्धाणंमि विवित्ता, अद्धाणे विवित्ता मुषिता इत्यर्थः' (निचू १ पृ ८३)।

विव्वाअ—१ अवलोकित। २ विश्रान्त (दे ७।८६)।

विसंवाय—मलिन, मैला (दे ७।७२)।

विसकुंभ—१ मकडी, लूता—'विसकुंभो त्ति लूता भण्णति' (निचू १ पृ ७५)। २ मकडी के काटने से होने वाला विषैला फोड़ा-विशेष (बृटी पृ १०७२)।

विसट्ट—१ विघटित, विश्लिष्ट (पा ८१०)। २ विशीर्ण, विदलित (भ ८।८८)। ३ विकसित—'हरिसवसविसट्टकंटयकरालो' (भत्त ३०)। ४ उत्थित।

विसट्टमाण—विदलित करता हुआ (स्था ४।५१४)।

विसढ—१ नीराग, रागरहित (दे ७।६२)। २ नीरोग, स्वस्थ। ३ विषम (वृ)। ४ विशीर्ण (से ६।६६)। ५ आकुल-व्याकुल (से ११।८६)। ६ सहन किया हुआ।

विसमय—भल्लातक, भिलावा (दे ७।६६)।

विसमिअ—१ विमल, निर्मल। २ उत्थित, उठा हुआ (दे ७।६२)।

विसर—सेना, लश्कर (दे ७।६२)।

विसरा—जाल-विशेष (विपा १।८।१६)।

विसरिया—गिरगिट—'विसरिया सरडो भण्णति' (निचू ३ पृ ६०)।

विसलाइत—विकीर्ण—'विक्खिन्नं णिक्खिन्नं विसलाइतं' (अंवि पृ ८०)।

विसारण—फल-फूल आदि के टुकड़ों को सुखाने के लिए धूप में रखना (पिनि ५६०)।

विसारय—धृष्ट, ढीठ (दे ७।६६)।

विसारि—कमलासन, ब्रह्मा (दे ७।६२)।

विसालअ—जलधि, समुद्र (दे ७।७१)।

विसालिस—विसदृश, विभिन्न—'विसालिसेहिं ति मागधदेशीयभाषया विसदृशैः' (उशाटी प १८७)।

विसि—गज-पर्याण, हाथी की झूल (दे ७।६१)।

विसिण—रोमश, प्रचुर रोमवाला (दे ७।६४)।

विसिरा—एक प्रकार का मत्स्य-जाल (विपाटी प ८१)।

विसुयावण—सुखाना (निभा ८४५)।

विसुयावेंत—सुखाता हुआ (नि २।८)।

विसूरणा—खेद, खिन्नता—'आयासविसूरणाकलहपकंपियग्गसिहरो' (प्र ५।१)।

विसूरिय—खिन्न (से १०।७६)।

विसोवद—कौडी का बीसवां भाग—'विसोवदेण घेत्तुं ठावेहि ससक्खितं णगरद्दारेण मोदगं' (दअचू पृ २६)।

विस्कल्ल—कर्दम—'विस्कल्लो देशयां संस्कृतेऽपि' (अचि १०।६०)।

विस्सामण—वैयावृत्त्य (दश्रुचू प १३)।

विह—१ मार्ग (आ ८।४।५८)। २ अटवी (बृभा ७४२ टि)। ३ लंबा मार्ग, अनेक दिनों में उल्लंघनीय मार्ग (आचूला ३।१२)। ४ कला-विशेष (नि १२।१७)।

विहई—वृन्ताकी, बैंगन का गाछ (दे ७।६३)।

विहडप्फड—१ व्याकुल, व्यग्र—'जइ घडियं विहडिज्जइ घडियं घडियं पुणो वि विहडेइ। ता घडण-विहडणाहिं होहिइ विहडप्फडो देव्वो।।' (कु पृ ६६)। २ त्वरित।

विहण्ण—पींजना, धुनना (दे ७।६३)।

विहय—पिंजित, धुना हुआ (दे ७।६४)।

विहरिअ—सुरत, संभोग (दे ७।७०)।

विहलंघल—व्याकुल, मूर्च्छित—'नट्ठचेयणो सिंहासणाओ मुच्छाविहलंघलो निवडिओ' (उसुटी प २३५)।

विहलंघलि—उन्मत्त—'पुरिसो विसयासत्तो विहलंघलिउव्व मज्जेण' (प्रटी प ६५)।

विहल्लप्फलय—प्रमत्तता से व्याप्त—'सो णत्थि कोइ पुरिसो महिला वा तम्मि नयरमज्झम्मि। जो ण विहल्लप्फलओ कुवलयमाला-विवाहेण।।' (कु पृ १७०)।

विहसिव्विअ—विकसित (दे ७।६१)।

विहाडण—अनर्थ (दे ७।७१)।

विहाण—१ विधि, विधाता। २ प्रभात, प्रातःकाल (दे ७।६०)। ३ पूजा, अर्चा।

विहुंडअ—राहु, ग्रह-विशेष (दे ७।६५)।

विहोढ—अनादर करना, लज्जित करना (निभा ४७८२)।

वीअ—१ विधुर-चंचल, अत्यंत व्याकुल। २ तत्काल (दे ७।६३)।

वीअजमण—खलिहान (दे ६।६३ वृ)।

वीचि—संकरी गली, संकीर्ण मार्ग (दे ७।७३)।

वीडक—चावल आदि खाने का साधन (निचू ३ पृ ५२१)।

वीणण—१ बीनना (आवदी प ११४)। २ प्रकट करना। ३ ज्ञापन।

वीणिया—नाला, जल-प्रवाह-'जे भिक्खू दगवीणियं···करेति' (नि १।१२)।

वीय—राशि-'वीयं रासी' (अंवि पृ २४१)।

वीयरग—कूपिका, छोटा कूप (निभा ५०७४)।

वीलण—पिच्छिल, फिसलन युक्त (दे ७।७३)।

वीलणी—पिच्छिल, फिसलन युक्त (अंवि पृ २४३)।

वीलय—कर्णाभूषण, ताडंक (दे ६।६३ वृ)।

वीली—१ तरंग, कल्लोल (दे ७।७३)। २ वीथी, पंक्ति, श्रेणी।

वीवाह—वधूपक्ष-संबंधी भोज (व्यभा ६ टी प ८)।

वीसंदण—अधजले घी में डाले हुए तंदुल से बना खाद्य-विशेष-'वीसंदणं अद्धनिद्दड्ढघयमज्झछूढतंदुलनिप्फन्नं' (बृभा १७१०)।

वीसु—पृथक् (दे ७।७३)।

वीसुंभण—विष्वग्भाव, पृथग्भाव (स्थाटी प २६५)।

वुंफ—बातचीत-'वुंफं करेंतो जाति' (आचू पृ ३५८)।

वुक्कड—विकट, भयंकर-'विसयमच्छकच्छवुक्कडं इंदियमहामयरसमाउलं'··· जोव्वणमहासागरं' (कु पृ ७४)।

वुक्कस—१ मूंग, उड़द आदि की नखिका से निष्पन्न भोजन। २ अत्यन्त नीरस भोजन (उशाटी प २६५)।

वुक्कार—गर्जन (राज २८१ पा)।

वुक्ख—वृक्ष (अंवि पृ २२२)।

वुक्खण—विशेष प्रकार का बाज पक्षी-'वुक्खणसेणे व्व हरणे व सण्णिरुद्धे वा' (अंवि पृ २५५)।

वुच्छ—१ विनष्ट, अवदग्ध—'देशीपदत्वाद् अवदग्धं विनष्टमिति यावत्' (बृटी पृ ३९२)। २ निवसित—'वुच्छो अमेज्झमज्झे असुइप्पभवे असुइयम्मि' (तंदु ४१)।

वुज्झण—बहाकर ले जाना—'वुज्झणं अपोहनं पानीयेन हरणं स्यात्' (बृटी पृ १६३५)।

वुणाविय—बुनाया—'तीए दुक्खदुक्खेण छुहाए मरंतीए कत्तिऊण एक्का पोत्ती वुणाविया' (आवहाटी १ पृ २०५)।

वुण्ण—१ त्रस्त, भीत—'भयवुण्णलोयणा गच्छामो' (उसुटी प ३९; दे ७।९४)। २ उद्विग्न (दे ७।९४)।

वुन्न—भीत, त्रस्त (प्रा ४।४२१)।

वुप्पसुत्त—मस्तक की माला (अंवि पृ १६३)।

वुप्फ—शेखर, शिरोभूषण (दे ७।७४)।

वुब्भण—१ डूबना (बृभा ५६३२)। २ बहा कर ले जाना (बृभा ६१८९)।

वुय—१ बुना हुआ। २ बुनवाया हुआ (प्रसा ८४९)।

वुल्लुवंत—बोलता हुआ—'अह विसरिसं वुल्लुवंतो य आलोएति' (निभा ६३९५)।

वूरुट्टो—रूई से भरा हुआ वस्त्र-विशेष—'रूतपूरितः पटः वूरुट्टीति यदुच्यते' (प्रसाटी प १९१)।

वेअडिअ—१ फिर से बोया हुआ (दे ७।७७)। २ खचित, जडित (पा १४०)। ३ मोती बींधने वाला शिल्पी, जोहरी।

वेअड्ड—भल्लातक, भिलावा (दे ७।६६)।

वेअल्ल—१ मृदु, कोमल (दे ७।७५)। २ असामर्थ्य (वृ)।

वेआरिअ—१ प्रतारित, ठगा हुआ। २ केश, बाल (दे ७।९५)।

वेआल—१ अन्धा। २ अन्धकार (दे ७।९५)।

वेइआ—१ पनीहारी, पानी लाने वाली स्त्री (दे ७।७६)। २ अंगूठी (वृ)।

वेइद्ध—१ ऊर्ध्वीकृत, ऊंचा किया हुआ। २ विसंस्थुल, विषम, चंचल। ३ आविद्ध, बींधा हुआ। ४ शिथिल (दे ७।९५)।

वेउट्टिया—बार-बार, पुनः पुनः (व्य ४।२१)।

वेंगी—बाड़वाली (दे ७।४३)।

वेंट—साधु का एक प्रकार—'संविग्ग णितियवासी, कुसील ओसण्ण तह य पासत्था संसत्ता वेंटा वा, अहछंदा चेव अट्ठमगा॥' (निभा ३०९४)।

वेंटक—अंगूठी—'अंगुलेयकं मुद्देयकं वेंटकं' (अंवि पृ १६३)।

वेंटल—वशीकरण-विद्या, निमित्त-शास्त्र (ओनि ४२४)।

वेंटिया—गठरी (निभा २८७)।

वेंढसुरा—कलुषित मदिरा (दे ७।७८)।

वेंढि—पशु (दे ७।७४)।

वेंढिअ—वेष्टित, लपेटा हुआ (दे ७।७६)।

वेगपक्क—मांस पकाने की विधि-विशेष—'जम्मपक्काणि वेगपक्काणि य त्ति रूढिगम्यम्' (विपाटी प ८०)।

वेगल—दूरवर्त्ती—'एवं तुब्भं पि पुरेकम्मकओ कम्मबंधदोसो ब्रह्महत्यावद् वेगलो भवति' (बृटी पृ ५४४)।

वेग्गल—दूरवर्त्ती (प्रा ४।३७०)।

वेच्च—जटित (जीवटी प २१०)।

वेज्झल—विह्वल (भटी प ३०७)।

वेट्ठावण—बैठाना—'अस्संजतस्स वेट्ठावणादि पडिसिद्धं' (दअचू पृ १७७)।

वेट्ठि—बेगार—'ण बला कारिज्जति। वेट्ठिं वा मण्णति' (आचू पृ २८६)।

वेड—नौका, नाव (दे ६।९५ वृ)।

वेडहअ—वणिक्, व्यापारी (दे ७।७८)।

वेडंतिय—धातु-विशेष—'रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह' (औप १०५)।

वेडयकारि—रेशमी वस्त्र बनाने वाला (निचू ३ पृ २७१)।

वेडिअ—मणिकार, जौहरी (दे ७।७७)।

वेडिकिल्ल—संकीर्ण, जनसंकुल (दे ७।७८)—'किं लोअवेडिकिल्ले वेंढसुरं देसि पाणिअं खिविअ' (वृ)।

वेडुंबक—नृपादि-कुल में उत्पन्न (आवदी २ प ७०)।

वेडुल्ल—गर्वित, अभिमानी (दे ७।४१)।

वेड्ड—लज्जित, अपमानित—'ततेणं से राया लज्जिते विलिए वेड्डे तुसिणीए संचिट्ठति' (आवचू १ पृ ४८४)।

वेढल—एक प्रकार का ग्राह (प्रज्ञा १।५८)।

वेण—नदी का विषम घाट (दे ७।७४)।

वेणिअ—वचनीयता, लोकापवाद (दे ७।७५)।

वेणुणास—भ्रमर, भौंरा (दे ७।७८)।

वेतव्वग—खाद्य-विशेष (निचू २ पृ २४१)।

वेतालिया—किनारा, तट, देखो—'वेताली' (आवहाटी १ पृ २३७)।

वेताली—१ स्थान-विशेष, नदी आदि का तट—'मए य सव्ववेतालीओ तुज्झचएण गवेसाविताओ' (आवचू १ पृ ४६८)। २ वेताला नदी का तट—'वेतालीशब्दोऽत्र देशीवचनत्वात् वेतालातटवाची' (प्रज्ञाटी प ३३०)। ३ रथ्या, गली।

वेत्त—स्वच्छ वस्त्र (दे ७।७५)।

वेदूणा—लज्जा (दे ७।६५)।

वेध—वस्त्र-वेध, एक प्रकार का द्यूत (सू १।६।१७)।

वेप्प—भूत आदि से आविष्ट चेतना, भूतगृहीत (दे ७।७४)।

वेप्पुअ—१ शिशुत्व, बचपन (दे ७।७६)। २ भूत-गृहीत, भूताविष्ट (वृ)।

वेयडित—सुरापायी—'अजसो य सपक्ख परपक्खे एस वेयडितो त्ति' (दअचू पृ १३४)।

वेयारणिय—प्रतारण से उत्पन्न (स्थाटी प ४०)।

वेयारिऊण—ठगकर, बहकाकर—'केण वि पासंडिएण वेयारिऊण पव्वाविओ' (कु पृ १२५)।

वेयावत्त—जीर्ण-शीर्ण चैत्य (आवटि प २८)।

वेरिज्ज—१ असहाय, एकाकी (दे ७।७६)। २ सहायता (वृ)।

वेल—दन्त-मांस, दान्त के मूल का मांस (दे ७।७४)।

वेलंब—विडंबना (दे ७।७५)।

वेलंबक—१ विदूषक (प्र ६।४ टी प १३७)। २ विडंबना करने वाला (जीव ३।६१६ टी प २८१)।

वेलंबग—विदूषक (ज्ञा १।१।७६)।

वेलंबिय—विडम्बित (आवहाटी १ पृ २८७)।

वेलणअ—१ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, लज्जारस (अनुद्वा ३०६)। २ लज्जा, शर्म (दे ७।६५ वृ)।

वेलयण—क्रीडन—'संभलि विणोयकेयण वेलयणं चिहुरगंडेसु' (व्यभा ५ टी प १७)।

वेलवण—ठगाई, वंचना—'णाणावेलवणेहि य वीवाहेयव्वाओ' (कु पृ ७८)।

वेलविअ—वञ्चित, ठगा हुआ (पा ५३७)।

वेलविका—आस्तरण-विशेष (अंवि पृ ७१)।

वेला—दन्त-मांस (दे ७।७४ वृ)।

वेलाइअ—१ मृदु, कोमल। २ दीन, गरीब (दे ७।९६)।
वेलागय—लोमपक्षी (जीवटी प ४१)।
वेलातिक—खाद्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ १८२)।
वेली—१ घर के चार कोनों में रखा जाने वाला छोटा स्तंभ (निचू ३ पृ ३७८)। २ निद्राकरी लता (दे ७।३४)।
वेलु—१ भाला (आवहाटी १ पृ २३४)। २ चोर। ३ मुसल (दे ७।९४)।
वेलुंक—विरूप, कुत्सित (दे ७।६३)।
वेलुय—बेल का गाछ (आचूला १।११८)।
वेलुलिअ—वैडूर्य-मणि, रत्न की एक जाति-विशेष (दे ७।७७)।
वेलूणा—लज्जा (दे ७।६५)।
वेल्ल—१ पल्लव। २ विलास। ३ केश। ४ वल्ली (दे ७।९४)। ५ मूर्ख। ६ कामपीडा। ७ ऊपर से ढकी हुई गाड़ी।
वेल्लरी—१ वेश्या, वारांगना (दे ७।७६)। २ वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।
वेल्लविय—विलिप्त, पोता हुआ (से १।२६)।
वेल्लहल—१ स्फीत (आवहाटी २ पृ ५१)। २ कोमल। ३ विलासी (दे ७।९६)। ४ सुन्दर (कु पृ १४१)।
वेल्ला—१ वल्ली, लता। २ केश (दे ७।९४)।
वेल्लाइअ—संकुचित—'लज्जावेल्लाइअं इमं बालं' (दे ७।७९ वृ)।
वेल्लियकम्म—चित्रकर्म—'धीउल्लिगादिवेल्लियकम्मादि निव्वत्तियं च जाणाहि' (अनुद्वाहाटी पृ ७)।
वेवा—एक प्रकार का वाद्य—'खरमुहिसद्दाणि वा परिपरिसद्दाणि वा वेवासद्दाणि वा' (नि १७।१३९)।
वेवाइअ—उल्लसित (दे ७।७९)।
वेव्व—१ भय। २ वारण। ३ विषाद। ४ आमंत्रण—इन अर्थों का सूचक अव्यय (प्रा २।१९३,१९४)।
वेसंभरा—गृहगोधा, छिपकली (दे ७।७७)।
वेसविखज्ज—द्वेष, शत्रुता (दे ७।७९)।
वेसण—लोकापवाद (दे ७।७५)।
वेसरी—खाद्य पदार्थ-विशेष—'एगस्स पिया च्छासी मासी अण्णस्स वेसरी' (आचू पृ १६६)।
वेसविलया—दासी—'संपत्ता मम भत्तं घेत्तूण एक्का वेसविलया' (कु पृ ५९)।
वेहविअ—१ अनादर। २ क्रोधी (दे ७ ९६)। ३ वंचित, प्रतारित (वृ)।

वेहारुग—विहरणशील मुनि जिसका शरीर, वस्त्र आदि मैला हो और जो एक पात्र रखता हो (निचू ३ पृ ४४०)।

वोंड—चूचुक, स्तनवृन्त (ज्ञा १।१७।१४)।

वोकिल्ल—गूह-शूर, वीरत्व का बहाना करने वाला मिथ्यावीर (दे ७।८०)।

वोकिल्लिअ—रोमन्थ, चबाई हुई चीज को पुनः चबाना—
'उप्पाइउमसमत्था जे चव्विअचव्वणं कुणन्ति कई।
वोभीसणा फुडं ते वोकिल्लिअकारिणो पसुणो ॥'
(दे ७।८२ वृ)।

वोक्किकतक्क—खाद्य पदार्थ-विशेष—'पोवलिकं वा वोक्किकतक्कं वा पोवलके वा पप्पडे वा' (अंवि पृ १८२)।

वोच्चत्थ—विपरीत-मैथुन (दे ७।५८)।

वोज्झ—बोझ, भार (आवचू १ पृ २५५; दे ७।८०)।

वोज्झमल्ल—भार, बोझ (दे ७।८०)।

वोज्झर—१ अतीत। २ भीत, त्रस्त (दे ७।९६)।

वोट्टित—अपवित्र किया हुआ (व्यभा ७ टी प ८५)।

वोडाण—वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४४)।

वोडिय—मुंडित-मस्तक (उशाटी प १८१)।

वोड्ड—मूर्ख (व्यभा ६ टी प ५)।

वोण्ण—कर्म—'कम्मं ति वा खुह ति वा वोण्णं ति वा कलुसं ति वावज्जं ति वा वेरं ति वा पंको त्ति वा मलो त्ति वा एते एगट्ठिता' (निचू ४ पृ २७४)।

वोण्णमंत—लकड़हारा (सू २।२।३१)।

वोद्द—तरुण (निचू ३ पृ २६७)।

वोद्दह—तरुण—'वोद्दहजणस्स उस्सुयकरं' (ज्ञा १।१६।१६३)।

वोद्रह—तरुण, युवा (दे ७।८०)।

वोद्रही—तरुणी (प्रा २।८०)।

वोभीसण—बराक, दीन, गरीब (दे ७।८२)।

वोमज्झ—अनुचित वेष (दे ७।८०)।

वोमज्झिअ—अनुचित वेष का ग्रहण (दे ७।८० वृ)।

वोमीका—परिसर्प की एक जाति (अंवि पृ ६६)।

वोयाण—वनस्पति-विशेष (भ २१।२०)।

वोरच्छ—तरुण, युवा (दे ७।८०)।

वोरल्ली—१ श्रावण शुक्ला चतुर्दशी को होने वाला उत्सव-विशेष (दे ७।८१)। २ श्रावण शुक्ला चतुर्दशी (वृ)।

वोरट्टी—रूई से भरा हुआ वस्त्र-विशेष (प्रसा ६८०)।

वोल—१ कोलाहल (दे ६।९० वृ)। २ एक प्रकार का पौधा।

वोलिय—१ गत, गया हुआ (उसुटी प १४२)। २ अतिक्रांत, उल्लंघित (से ४।४८)। ३ अपगत (से १।३)।

वोलीण—१ अतीत, व्यतीत—'वोलीणा चक्कवट्टिणो बारसवि, विणस्सिहिसि तुमं' (दहाटी प ५१)। २ अतिक्रांत (प्रा ४।२५८)। ३ व्यतिक्रांत (पा १४१)।

वोल्लाह—उत्तम जाति का अश्व (कु पृ २३)।

वोवाल—वृषभ, बैल (दे ७।७६)।

वोव्वड—मूक, भाषा-जड (व्यभा १० टी प १०६)।

वोसट्ट—१ भरकर खाली किया हुआ (दे ७।८१) २ विकसित (प्रा ४।२५८)।

वोसट्ठ—ऊपर तक भरा हुआ (बृभा ४०४८)।

वोसेअ—उन्मुख-गत, उफना हुआ (दे ७।८१)।

वोहत्तिय—गृहीत—'एक्केण परिग्गहिता सव्वे वोहत्तिया होन्ति' (जीभा २०८२)।

वोहार—जल-वहन, पानी ले जाना (दे ७।८१)।

स

स—अथ (व्य ३।४)।

सअअ—१ शिला। २ घूर्णित (दे ८।४६)।

सअड—लम्बा केश (दे ८।११ पा)।

सइज्झ—पड़ोसी (दे ८।१०)।

सइज्झक—प्रातिवेशिक, पड़ोसी—'सइज्झका नाम सहवासिनः प्रातिवेशिका इत्यर्थः' (बृटी पृ ९४०)।

सइज्झिय—१ पड़ोसी (निचू १ पृ ८)। २ पड़ोसीपन, प्रातिवेश्य (दे ८।१० वृ)।

सइज्झिया—पड़ोसिन (पिनि ३४२ टी)।
सइदंसण—मनोदृष्ट, विचारों में प्रतिभासित (दे ८।१९)।
सइविट्ठ—मनोदृष्ट (दे ८।१९)।
सइरवसह—धर्म के अभिप्राय से त्यक्त बैल, स्वैरवृषभ, स्वच्छन्द बैल (दे ८।२१)।
सइलंभ—मनोदृष्ट, चित्त में प्रतिभासित (दे ८।१९)।
सइलासय—मयूर, मोर (दे ८।२०)।
सइसिलिंब—स्कन्द, कार्तिकेय (दे ८।२०)।
सइसुह—मनोदृष्ट (दे ८।१९)।
सईणा—रहर, तुवरी (दश्रु ६।३)।
सउडि—रजाई—'पवेसिओ सउडिमज्झे हत्थो' (बृटी पृ ५८)।
सउण—रूढ, प्रसिद्ध (दे ८।३)।
सउलिअ—प्रेरित (दे ८।१२)।
सउलिया—१ शकुनिका, चील (अनुद्वा १४१)। २ एक महौषधि।
सउली—१ चील, शकुनिका (दे ८।८)। २ एक महौषधि।
सएज्जिया—पड़ोसिन (ओनि १६७)।
सएज्झअ—पड़ोसी (बृभा ३३४६)।
सएज्झि—पड़ोसिन (बृभा १५३६)।
सएज्झिग—पड़ोसी, साधर्मिक (निचू ४ पृ ६०)।
सएज्झिया—पड़ोसिन, सखी (आवहाटी १ पृ २३५)।
संकडिल्ल—निश्छिद्र (दे ८।१५)।
संकर—रथ्या, मार्ग (व्यभा ८ टी प ३३; दे ८।६)।
संकाइयग—तापसों का पात्र-विशेष (भ ११।६४)।
संख—१ शरीर का अवयव-विशेष—'दंता संखा य गंडा य करमज्झो तहेव य' (अंवि पृ ७७)। २ स्तुतिपाठक (दे ८।२)।
संखड—कलह, झगड़ा (पिनि ३२४)।
संखडि—सरस भोजन, जीमनवार (आ ६।१।१६)।
संखद्दह—गोदावरी नदी का ह्रद (दे ८।१४)।
संखबइल्ल—किसान की इच्छानुसार उठकर खड़ा होने वाला बैल (दे ८।१९)।
संखलय—शम्बूक, शुक्ति के आकार का जल-जंतु-विशेष (दे ८।१६)।

संखलि—कर्णभूषण-विशेष, शंखपत्र का बना हुआ ताडङ्क (दे ८।७)।

संखाल—शंबर नाम का मृग (दे ८।६)।

संखिल्ल—संख्येय—'णरवसभा के वणंतसंखिल्ल' (कु पृ २०१)।

संखेण—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

संगइ—मित्रता (ज्ञाटी प ३८)।

संगइय—मित्र—'दच्छिसि णं गोयमा ! पुव्वसंगइयं' (भ २।३२)।

संगय—मसृण, चिकना (दे ८।७)।

संगरिगा—फली-विशेष (प्रसा २२६)। सांगरी (राजस्थानी)।

संगलिक—फल-विशेष (अंवि पृ ७१)।

संगलिग—फली (अंवि पृ २४४)।

संगलिया—फली—'एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाइस्संति' (भ १५।७२)।

संगह—घर के ऊपर का तिरछा काष्ठ (दे ८।४)।

संगा—वल्गा, घोड़े की लगाम (दे ८।२)।

संगार—संकेत—'एगंतमंते संगारं कुव्वंति' (भ १५।१३४)।

संगिणेल्ली—समूह (ज्ञाटी प ६४)।

संगिल्ल—१ गायों का समूह—'संगिल्लो नाम गोसमुदायः' (व्यभा ४।२ टी प ७)। २ समूह (व्यभा ४।४ टी प २६)।

संगुलिया—समूह (आचू पृ ३२६)।

संगेल्ल—समूह (दे ८।४)।

संगेल्लि—समूह—'पिट्ठओ रहसंगेल्लि' (दश्रु १०।१६)।

संगेल्ली—१ परस्पर अवलम्बन—'ते····हत्थसंगेल्लीए····' (ज्ञा १।३।१६)। २ समूह—'संगेल्ली समुदायः देश्योऽयं शब्दः' (जंबूटी प २६५)।

संगोढण—व्रण-युक्त (दे ८।७१)।

संगोली—समूह (दे ८।४)।

संघट्ट—१ अर्ध जंघा-प्रमाण जल—'जंघद्धा संघट्टो' (ओभा ३४)। २ वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।३)।

संघड—निरन्तर (आ ४।५२)।

संघडिय—मित्र—'संघडिय त्ति देशीपदमव्युत्पन्नमेव मित्राभिधायि' (उशाटी प ३६४)।

संघयण—१ शरीर (आटी प ३६२; दे ८।१४)। २ धृति—'थिरसंघयणे

—दृढकायो दृढधृतिश्च' (आटी प ३६२)। ३ अस्थि-रचना (स्था ६।३०)। ४ अस्थि-रचना का कारणभूत कर्म (समटी प ६७)।

संघयणि—अस्थि, शिरा एवं स्नायु से युक्त शरीर वाला (समप्र १८७)।

संघरिस—स्पर्धा—'संघरिसो जमलिओ तू, को सिग्घगति त्ति वच्चति तु' (जीभा १७२०)।

संघाड—१ युग्म (निचू ३ पृ ३५७)। २ प्रकार—'संघाड त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठं' (बृटी पृ ८११)। ३ जलयान (अंवि पृ १६६)। ४ ज्ञाताधर्मकथा आगम का दूसरा अध्ययन (सम १६।१)।

संघाडय—सहयोग (नि ४।२७)।

संघाडि—जैन-साध्वी का उत्तरीय वस्त्र (ज्ञा १।१६।१०७)।

संघाडी—१ प्रावरण-विशेष—'प्रायेण संघातिज्जंति त्ति संघाडी, गुणसंघाय-कारणी वा संघाडी, देसीभासातो वा पाउरणं संघाडी' (निचू ३ पृ ३२६)। २ युगल, युग्म (दे ८।७)।

संघासय—स्पर्धा (दे ८।१३)।

संघोडी—व्यतिकर, मिश्रण (दे ८।८)।

संचक्कार—अवकाश—'संचक्कारं व से दिण्णं' (कु पृ १६४)।

संचर—१ स्नान कराने वाला। २ शरीर का शोधन—परिकर्म करने वाला—'संचरो ण्हाणिया सोधओ' (निचू २ पृ २७६)।

संचारी—दूती (पा ८०४)।

संछुढ—परित्यक्त (ज्ञा १।१७।१३)।

संछोभ—संक्रामण, परावर्तन (बृभा १६७६)।

संछोभण—परिवर्तन, परावर्त्त (बृभा २३३०)।

संजत्थ—१ क्रुद्ध, कुपित (दे ८।१०)। २ क्रोध—'संजत्थो कोप इत्यन्ये' (वृ)।

संजमिअ—संगोपित, छिपाया हुआ (दे ८।१५)।

संजविअ—संगोपित (पा ६४४)।

संजीहार—ललकार—'तहा गुरवो वसभा वा संजीहारं करेंति' (निचू ४ पृ ४४)।

संजुकारक—कर्मोपजीवी (अंवि पृ १६०)।

संजुद्ध—स्पन्दनयुक्त, प्रकम्पित (दे ८।६)।

संडपट्ट—धूर्त्त (विपाटी प ७२)।

संडिब्भ—बालकों का क्रीडास्थल–'डिब्भाणि—चेडरूवाणि णाणाविहेहिं खेलणएहिं खेलंताणं तेसिं समागमो संडिब्भं' (दअचू पृ १०२)।

संडो—घोड़े की लगाम (दे ८।२)।

संडेव—पानी को लांघने के लिए रखा जानेवाला पाषाण आदि–'पडिवक्खेण उ गमणं तज्जाइयरे व संडेव' (ओनि ३१)।

संडेवग—पैर रखने के लिए पानी में रखा जाने वाला पत्थर (निचू १ पृ ७२)।

संडोलिअ—अनुगत (दे ८।१७)।

संति—बहुवचनान्त अव्यय (आचूला १५।६५)।

संथड—१ राज्य–'संथडं नाम राज्यं' (व्यभा ७ टी प ६१)। २ अविभक्त, सामान्य–'साहारण सामन्नं अविभत्तमच्छिन्नसंथडेगट्ठं' (व्यभा ६ टी प ६)।

संथडिअ—तृप्त (बृचू प २०८)।

संथोभ—संक्रामण, परावर्तन–'सो णिज्जति गिलाणो, अंतरसम्मेलणाए संथोभो' (निभा ३०८०)।

संदट्ठ—१ संबद्ध। २ संघट्ट, संघर्षण (दे ८।१८ वृ)।

संदट्ठय—संलग्न (दे ८।१८)।

संदुमिअ—प्रदीप्त (पा १६)।

संदेण—भोजन–'भिण्णदेसिभासेसु जणवदेसु एगम्मि अत्थे संदेण-वंजण-कुसण-जेमणादि भिण्णमत्थपच्चायणसमत्थमविप्पडिवत्तिरूवेण' (दअचू पृ १६०)।

संदेव—१ सीमा, मर्यादा (दे ८।७)। २ नदी-संगम–'संदेवो सीमा, नदी-मेलक इत्येके' (वृ)।

संधारिअ—योग्य (दे ८।१)।

संधिल—दुर्गन्ध (दे ८।८)।

संधुक्किअ—१ प्रदीप्त (पा १६)। २ उत्तेजित।

संपडिअ—लब्ध, प्राप्त (दे ८।१४)।

संपडिका—करधनी–'कंची व रसणा व त्ति, जंवूका मेखल त्ति वा। कंटिक त्ति व जो बूया तधा संपडिक त्ति वा॥ (अंवि पृ ७१)।

संपणा—घेवर बनाने के लिए तैयार किया हुआ गेहूं का आटा (दे ८।८)।

संपण्णा—घेवर (मिष्टान्न-विशेष) बनाने के लिए तैयार किया हुआ गेहूं का आटा (दे ८।८)।

संपत्तिआ—१ बालिका, बाला (दे ८।१८)। २ पीपल का पत्ता—'पिप्पली-पत्रवाचकोऽपि संपत्तिआशब्दो लक्ष्येषु दृश्यते' (वृ)।

संपत्ती—भवितव्यता—'तेवि संपत्तीए सयाहि सयाहि गया' (आवहाटी २ पृ २२२)।

संपत्थिअ—शीघ्र (दे ८।११)।

संपर—१ नाई। २ वस्त्रशोधक (निभा ३७०८)।

संपा—काञ्ची, मेखला (दे ८।२)।

संपासंग—दीर्घ, लम्बा (दे ८।११)।

संफ—कुमुद, चन्द्रकमल (दे ८।१)।

संफाणि—प्रासुक शीत या उष्ण जल से प्रक्षालन—'सीतेण व उसिणेण व वियडेणं धोवणा तु संफाणि' (निभा १९३९)।

संफाणित—धुला हुआ (निभा १९४३)।

संफाणिय—धुला हुआ (नि ५।१४)।

संफाली—पंक्ति (दे ८।५)।

संफाह—बहुत दिनों के वस्त्र एकत्रित करके एक दिन धोना (निभा १९३९)।

संफोडिउं—संयुक्त करके, मिलाकर—'संफोडिउं मेलितुमित्यर्थः' (निचू २ पृ ३१४)।

संबर—कचरा उठाने वाला (व्यभा ७ टी प ८०)।

संबलिका—बांस की टोकरी—वेणुफलाइं ति वेलुमयी संबलिका संकोसको पेलिया करण्डको वा' (सूचू १ पृ ११६)।

संभरण—संस्मरण, स्मृति (ज्ञाटी प ७६)।

संभराविअ—स्मारित, याद कराया हुआ (दे ८।२५)।

संभली—१ दूती (व्यभा ५ टी प १७; दे ८।९)। २ कुट्टनी, पर-पुरुष के साथ अन्य स्त्री का योग कराने वाली स्त्री।

संभव—प्रसव-जरा, प्रसवजन्य दौर्बल्य (दे ८।४)।

संभारिय—१ संस्मारित, याद कराया हुआ—'मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारिय-पुव्वभवे' (ज्ञा १।१।१९१)।
२ संस्मृत याद किया हुआ—'संभारिअक्खणिहणो ओत्थरइ सरेहिं मारुइं धुम्मक्खो' (से १४।६५)।

संभुल्ल—दुर्जन (दे ८।७)।
संभोएत्ता—मिश्रण करके (आचूला १।१०२)।
संल—पत्नी का भाई, साला (अंवि पृ २१६)।
संवट्टि—संवृत, संकुचित, एकत्रित (उशाटी प १६२)।
संवट्टिअ—संवृत, संकोचित (दे ८।१२)।
संवणिय—परिचित—'ताहे एगं रिसिआसमपयं दिट्ठं, सा तत्थ अल्लीणा संवणिया य अणाए रिसओ' (उशाटी प ५३)।
संवर—१ शौचवादी (बृभा ३८०४)। २ बारहसिंगा (प्रटी प ६)।
संवाअअ—१ नकुल, नेवला। २ बाज पक्षी (दे ८।४८)।
संविल्लिय—संकुचित—'संविल्लियग्गसोण्डं' (उपाटी पृ ११०)।
संवेल्ल—संकुचित (भटी पृ १३११)।
संवेल्लिअ—संवृत (राज ६६; दे ८।१२)।
संसप्पिअ—कूदकर जाना (दे ८।१५)।
संसाहण—अनुगमन (दे ८।१६)।
संसाहणा—अनुगमन (दनि ३२२)।
संसुरुला—कलह, लड़ाई (निचू ४ पृ २३४)।
संहिय—विरल (प्र ४।८)।
सकराह—१ एक बार। २ एक साथ—सकराहं ति सकृत् अहवा सकराहंति संववहारात् युगपत् स्याद्' (अनुद्वाचू पृ ५६)।
सकह—१ तापसों का उपकरण-विशेष—'सकहं वक्कलं ठाणं सिज्जाभंडं कमंडलुं' (भ ११।६४)। २ दाढा (जंबूटी प १५८)।
सकहा—अस्थि, हड्डी—'वयराभएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुयाओ जिण-सकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति (राज २४०)।
सकुचिक—जलचर-विशेष (अंवि पृ २२८)।
सकुलिया—शकुनिका (अनुद्वा ३२१)।
सगय—श्रद्धा (दे ८।३)।
सगल—बाहरी छाल—'सगलं पुण तस्स बाहिरा छल्ली' (निचू ४ पृ ६६)।
सगलग—टुकड़ा—'मोदगच्छोडियतं उच्छुसगलगं' (आचू पृ ३६७)।
सगेह—निकट, समीप (दे ८।६)।
सग्गह—मुक्त (दे ८।४ वृ)।
सचक्कार—सशंकित, भयभीत—'पडिणीयापि दुज्जणो सचक्कारा य सासंका भवंति' (निभा १७३६)।

सचिल्लय—अपचक्षु, खराब आंख वाला (प्र १।३७)।

सच्चविय—१ देखा, प्राप्त किया—'जहा ण अम्हेहिं कोइ कहिंचि सच्चविओ' (उसुटी प १६३)। २ अभिप्रेत, इष्ट (दे ८।१७)।

सच्चिल्लय—सत्य (दे ८।१४)।

सच्चेविअ—रचित, निर्मित (दे ८।१८)।

सच्छह—सदृश (उसुटी प ८७; दे ८।६)।

सज्ज—प्रत्युत्तर—'साहूहिं वा ओतप्रोतं संबाधुवस्सए या सज्जं अलभंतो उल्लंघिउं वयंतस्स···(निचू ३ पृ १०)।

सज्जअ—१ नाई। २ धोबी। ३ आगे किया हुआ, पुरस्कृत। ४ दीप्त, चमकीला (दे ८।४७ पा)।

सज्जंतिया—भगिनी (व्यभा ४।३ टी प ५२)।

सज्जण—१ गच्छ—'सज्जणोत्र गच्छो' (बृचू प २०५)। २ वस्त्र में मांड देना (निचू ३ पृ ५७३)।

सज्जाय—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।

सज्जिअ—१ नापित, नाई। २ रजक, धोबी। ३ पुरस्कृत, आगे किया हुआ। ४ दीप्त (दे ८।४७)।

सज्जुक्क—नया, तरोताजा (पा ४३७)।

सज्जोक्क—प्रत्यग्र, नवीन, ताजा (दे ८।३)।

सज्झंतिग—साधर्मिक (निचू २ पृ ३७६)।

सज्झंतिय—१ सहदीक्षित (बृभा ५४२१)। २ ब्रह्मचारी।

सज्झय—कल्यपाल, कलाल—'सज्झया कल्लालगिहा इति चूर्णौ विशेषचूर्णौ च' (बृटी पृ १५६७ टि)

सज्झविय—साधर्मिक, पड़ोसी (निचू २ पृ ३७६)।

सज्झिअ—१ नाई। २ धोबी। ३ आगे किया हुआ, पुरस्कृत। ४ दीप्त, चमकीला (दे ८।४७ पा)।

सज्झिलक—१ सगा भाई—'एगम्मि गामे दो सज्झिलका, भायरो इत्यर्थः' (बृटी पृ १६५२)। २ गुरुभाई—'गुरुसज्झिलकः गुरूणां सहाध्यायी पितृव्यस्थानीयः' (बृटी पृ १४३८)।

सज्झिलग—१ साधर्मिक (निभा २३६८)। २ भ्राता (बृभा ६२५८)।

सज्झिलगा—बहिन, भगिनी (पिनि ३१६)।

सज्झिलय—भ्राता—'गुरुसज्झिलओव्व तस्स सीसो वा' (पंक २५६०)।

सज्झिलिया—बहिन (निभा ४४६४)।

सट्टती—बांस की टोकरी—'कलिजो णाम वंसमयो कडवल्लो सट्टती वि भण्णति' (निचू ४ पृ १९२)।

सट्ठर—ऊटपटांग बातें—'सट्ठरं आलजालं कुर्वतः' (बृभा ५२८४ टी)।

सट्ठर—आलजाल, व्यर्थ (निभा ४१६३)।

सडसडेंत—सडता हुआ (कु पृ २२५)।

सडिका—पक्षिणी-विशेष—'सडिक त्ति बलाक त्ति चक्कवायि त्ति वा पुणो' (अंवि पृ ६६)।

सढ—१ केश। २ विषम। ३ स्तम्ब, गुच्छा (दे ८।४६)। ४ पाल, जहाज का बादवान।

सढअ—१ स्तम्ब, गुच्छा (बृभा ४२३०)। २ फूल (दे ८।३)।

सढि—सिंह (दे ८।१)।

सणालिय—वाद्य-विशेष (नि १७।१३८)।

सणिअ—१ साक्षी, गवाह। २ ग्राम्य, ग्रामीण (दे ८।४७)।

सण्णत्तिअ—परितापित (दे ८।१८)।

सण्णविअ—१ चिन्तित। २ सान्निध्य, निकटता (दे ८।५०)।

सण्णा—भुजपरिसर्पिणी (जीवटी प ५२)।

सण्णाड—उत्सर्ग की संज्ञा से युक्त—'जोयणमधि गच्छेज्जा सण्णाडो थंडिलऽसती' (पंक १८७२)।

सण्णि—गीला (दे ८।५ पा)

सण्णिअ—आर्द्र, गीला (दे ८।५)।

सण्णुमिअ—१ सन्निहित। २ मापित। ३ अनुनीत, अनुनययुक्त (दे ८।४८)। ४ प्रच्छादित, ढका हुआ (वृ)।

सण्णेज्झ—यक्ष (दे ८।६)।

सण्हाई—दूती (दे ८।९)।

सण्होर—लज्जा-सहित—'धुत्तेण सण्होरं जेमावेत्ता सगडभरो विसज्जितो' (दअचू पृ २८)।

सतपत्त—पक्षी-विशेष—'वंजुलो सतपत्तो त्ति उवो कपिलको त्ति वा' (अंवि पृ ६२)।

सतिर—तिरोहित—'अचित्त सचित्तेणं, अतिरं सतिरं च जं भवे पिहितं' (जीभा १५५०)।

सतोण—तुवरी, धान्य-विशेष (भ २१।१५)।

सतीहत्थ—शक्ति—'पुव्वं मए भणितं मम बहु सतीहत्थो इदाणिं पच्चक्खं' (निचू १ पृ ११५)।

सतेरक—मुद्रा-विशेष, सिक्का—'काहापणो खत्तपको पुराणो···सतेरको त्ति' (अंवि पृ ६६)।

सत्तत्थ—अभिजात, कुलीन (दे ८।१०)।

सत्तल्ली—शेफालिका, सुगंधित फूल वाली लता-विशेष (दे ८।४)।

सत्तावीसंजोअण—चन्द्रमा (दे ८।२२)—'सत्तावीसंजोअणमुही समरसदृहय तुह कए सा' (वृ)।

सत्ति—१ तिपाई, तीन पाया वाला गोल काष्ठ-विशेष (दे ८।१)—'पल्लङ्क-पायसरिसं तिदारुअं उद्धणिमिअआयरिसं, तं जाणसु सत्ति।
२ घड़ा रखने का ऊंचा काष्ठ-विशेष—'सत्ती कलसाधारो दारु भवेत्तल्पसमसमुच्छ्रयणम्' (वृ)।

सत्तिअणा—कुलीनता (दे ८।१६)।

सत्थ—१ लीला—'ताहे देवा सत्थं साहरित्ता' (ओटी पृ ३५६)।
२ गत, गया हुआ (दे ८।१)।

सत्थइअ—उत्तेजित (दे ८।१३)।

सत्थर—१ समूह (दे ८।४)। २ शय्या (वृ)।

सदुम्मणिआ—रूपवती स्त्री (दे ८।४० वृ)।

सदुय—वाद्य-विशेष (नि १७।१३६)।

सद्द—उद्भिज्ज जंतु-विशेष—'तत्थ उब्भिज्जा संखणा काकुंथिका वडका····· पयुमका सद्दा तीलका इति' (अंवि पृ २२६)।

सद्दाल—नूपुर (दे ८।१०)।

सन्नाड—१ मलोत्सर्ग की इच्छा—'सन्नाडोप्पीलितेण सिग्घं वोसिरित्ता' (दअचू पृ २४)। २ शौचसंज्ञाकुल (आवहाटी १ पृ २४७)।

सन्निर—पत्र-शाक—'कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिन्नं व सन्निरं' (द ५।१।७०)।

सप्पक—बालक—'सप्पक-वच्छक-बालक-साडक' (अंवि पृ १७०)।

सप्फ—१ कुमुद, कैरव—'चंदुज्जयं च कुमुयं गद्दहयं केरवं सप्फं' (पा ५८)।
२ बाल तृण (कु पृ १६१)।

सप्फाय—कुहन वनस्पति का एक प्रकार (प्रज्ञा १।४७)।

सफा—वनस्पति-विशेष (भ २३।४)।

सब्बल—१ गदा (प्र ३।५)। २ भाला (प्रटी प ४८)।

समर—गीध पक्षी (दे ८।३)।

समइंछिय—अतिक्रांत (से १२।७२)।

समइच्छमाण—अतिक्रांत करते हुए (भ ६।२०६)।

समइच्छिअ—अतिक्रांत (दे ८।२०)।

समगुण्हिक—भोज्य पदार्थ—'समगुण्हिक त्ति वा बूया जागु त्ति कसरि त्ति वा' (अंवि पृ ७१)।

समर—१ लोहार की शाला। २ स्त्रियों के साथ सम्पर्क—संबंध स्थापित करने का गुप्त स्थान—'समरं नाम जत्थ हेट्ठा लोहयारा कम्मं करेंति। अहवा समरं नाम दिट्ठादिट्ठी संबंधो तासिं' (उचू पृ ३७)।
३ खरकुटी, नाई की दुकान (उसुटी प १०)।

समरसद्दृय—समवयस्क (दे ८।२२)।

समसीस—१ सदृश। २ निर्भर (दे ८।५०)। ३ स्पर्धा (से ३।८)।

समसीसी—स्पर्धा (दे ८।१३)।

समहुत्त—अभिमुख—'केई पुरिसे परसुं गहाय अडवीसमहुत्तो गच्छेज्जा' (अनुद्वाहाटी पृ ४१)।

समाय—उत्सव—'उस्सयं वा समायं वा' (अंवि पृ १३४)।

समायोग—सैनिकवर्दी—'परिहिज्जंति समायोगे' (कु पृ १६८)।

समास—उत्सव—'उस्सवो त्ति समासो त्ति विहि जण्णो छणो त्ति वा' (अंवि पृ १२१)।

समिला—युग-कीलक, गाड़ी की धौंसरी में दोनों ओर डाला जाता लकड़ी का कीलक (उ २७।४)।

समीखल्लय—छोंकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट (दशचू पृ ८)।

समीज्झुक्खर—शमी वृक्ष की शाखा (आवहाटी २ पृ १६)।

समुइ—१ अभ्यास—'समुइं ति देशीवचनत्वाद् अभ्यासम्' (बृटी पृ ४१४)।
२ स्वभाव (व्यभा ७ टी प २१)।

समुग्गिअ—१ प्रतीक्षित (दे ८।१३)। २ प्रतिपालित (वृ)।

समुच्छणी—संमार्जनी, झाड़ू (दे ८।१७)।

समुच्छिअ—१ तोषित, संतुष्ट किया हुआ। २ समारचित। ३ अंजलिकरण (दे ८।४६)।

समुत्तइत—गर्वित (निचू २ पृ १००)।

समुत्तइय—गर्वित—'ओच्छाहिओ परेण व, लद्धिपसंसाहि वा समुत्तइओ।
अवमाणिओ परेण य, जो एसइ माणपिंडो सो॥
(पिनि ४६५)।

समुद्दणवणीअ—१ अमृत। २ चन्द्र (दे ८।५०)।
समुद्दहर—जलगृह (दे ८।२१)।
समुद्देस—१ भोज। २ सूर्यमंडल (जीचू पृ ६)।
समुप्पिंजल—१ अयश। २ रज (दे ८।५०)।
समोसिअ—१ पड़ोसी। २ प्रदोष, सायंकाल। ३ वध्य (दे ८।४६)।
समोसितग—पड़ोसी (निचू २ पृ १५४)।
समोसितिया—पड़ोसिन (दअचू पृ ५२)।
समोसियग—साधर्मिक, पड़ोसी—'सेज्जगो समोसियगो' (निचू २ पृ २७२)।
सम्म—भुजपरिसर्प की एक जाति—'देशविशेषतो वेदितव्याः' (जीवटी प ४०)।
सम्मिका—कान का आभूषण-विशेष—'सासा-सम्मिका-वतंसक-ओवास-कण्णपीलक' (अंवि पृ १८३)।
सयक्खगत्त—द्यूतकार, जुआरी (दे ८।२१)।
सयग्घी—घरट्टी, चक्की (दे ८।५)—'रदसंफालिसयग्घी ण हु थक्कइ सण्णिअम्मि सुक्के अ' (वृ)।
सयज्झया—पड़ोसिन (पिनि ३४२)।
सयढा—लंबे बालों वाली (दे ८।११)।
सयत्त—मुदित, प्रसन्न (दे ८।५)।
सयराह—एक साथ, युगपत्—'सयराहेण पणट्ठाइं जाण चत्तारि पुव्वाइं' (ति ८०२)।
सयराहं—१ युगपत्—'सयराहमिति देशीवचनं युगपदर्थाभिधायकम्' (आवहाटी १ पृ १००)। २ एकबार (अनुद्वामटी प १६३)। ३ शीघ्र (दे ८।११)। ४ अकस्मात्—'अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि जलं सयराहं उत्तरित्तए' (औप १२२)।
सयराहा—युगपत् (विभा ६५६)।
सयराहु—१ एकसाथ। २ शीघ्र—'सयराहु—युगपत्तूर्णं वा' (आवदी प ७४)।
सरंड—भुजपरिसर्प की एक जाति (जीवटी प ४०)।
सरग—बांस के छींके के आकार का भाजन (जीव ३।५८७)।
सरड-सरड—भोजन करते समय होने वाला शब्द (ओटी प १८७)।
सरडीभूत—वह फल जो पकता नहीं (निचू ३ पृ ४८५)।
सरडु—कोमल—'पुप्फाणं पत्ताणं सरडुफलाणं तहेव हरियाणं' (पिनि ४५)।
सरडुय—वह फल जिसमें अभी गुठली न बनी हो (आचूला १।११०)।

सरत्ति—सहसा, अभी (दे ८।२)।
सरभेअ—स्मृत, याद किया हुआ (दे ८.१३)।
सरल—वृक्ष-विशेष, चीड (प्रज्ञा १।४३)।
सरली—चीरिका, झींगुर (दे ८।२)।
सरलीआ—१ श्वावित् नाम का प्राणी, साही (दे ८।१५)। २ कीटविशेष (बृ)।
सरह—१ वेतसवृक्ष। २ सिंह (दे ८।४७)।
सरा—माला (दे ८।२)।
सराह—गर्व से उद्धत (दे ८।५)।
सराहअ—सर्प (दे ८।१२)।
सरिका—भाजन-विशेष—'करोडी कंसपत्ति त्ति पालिका सरिक त्ति वा' (अंवि पृ ७२)।
सरिभरी—समानता—'तओ जाया दोण्ह वि सरिभरी' (उसुटी प १६१)।
सरिया—मोतियों की माला—'वरमउड-सरिय-कुंडल' (प्र ४।४)।
सरिवाअ—आसार, तेज वर्षा (दे ८।१२)।
सरिसाहुल—सदृश (दे ८।६)।
सरेवअ—१ हंस। २ घर का जल बहने का नाला, मोरी (दे ८।४८)।
सरोडुअ—वह फल जिसमें अभी गुठली न पड़ी हो (आचू पृ ३४१)।
सरोडुग—काष्ठपात्र, दर्वी (आचू पृ ३४१)।
सललो—सेवा (दे ८।३)।
सलहत्थ—कड़छी आदि का हत्था (हस्तक) (दे ८।११)।
सलेट्ठुग—समूल, मूल-सहित—'ततो गोपालेण असद्दहंतेण ओसरिऊण सलेट्ठुगो उप्पाडिओ एगंते पडिओ' (आवहाटी १ पृ १४२)।
सल्ल—सर्प की एक जाति (सू २।३।८०)।
सल्लग—सर्प की जाति-विशेष (प्र १।८)।
सल्लिका—साली—'रमा त सुण्ह सावत्ती सल्लिका मेधुण त्ति वा' (अंवि पृ ६८)।
सल्ली—१ भुजपरिसर्पिणी (जीव २।६)। २ साली (अवि पृ २१६)।
सवडंमुह—अभिमुख, सम्मुख—'सवडंमुहं वलंतो कालो व्व अकारणे कुद्धो' (उसुटी प ८५; दे ८।२१)।
सवडहुत्त—सम्मुख—'सो तस्स निवट्टमाणो दंडियस्सेव सवडहुत्तो गओ' (उसुटी प ५५)।

सवडो—उत्तरीय वस्त्र—'संघाडी णाम सवडी' (निचू २ पृ ३१२)।

सवलाहिका—जलचर प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२७)।

सवाअ—बाज पक्षी (दे ८।७)।

सवार—प्रातःकाल (बृटी पृ ५७६)।

सवास—ब्राह्मण (दे ८।५)।

सविस—सुरा, मदिरा—'बुद्धिविहूणा संभवगयव्व सविसं विसं ति ण मुणन्ति' (दे ८।४)।

सविहोढ—चोरी के माल से युक्त (निचू ३ पृ ५०२)।

सव्वल—कुंत, बर्छा (कु पृ ४०)।

सव्वला—कुशी, लोहे का अस्त्र-विशेष (प्र १।२८; दे ८।६)।

सव्वावंति—सर्व, सव—'एआवन्ती सव्वावन्ती ति एतौ द्वौ शब्दौ मागधदेशी-भाषाप्रसिद्धचा एतावन्तः सर्वेऽपीत्येतत्पर्यायौ' (आ १।७ टी प २६)।

ससबिंदु—वल्ली-विशेष (प्रज्ञा १।४०।५)।

ससबिंदुक—फल-विशेष (अंवि पृ ६४)।

ससराइअ—निष्पिष्ट, पिसा हुआ (दे ८।२०)।

सह—१ सहायक, समर्थ (सू १।३।२३)। २ योग्य (दे ८।१)।

सहउत्थिआ—दूती, संदेशवाहिनी (दे ८।६)।

सहगुह—उल्लू (दे ८।१६)—'संखलयदंत हिण्डसि जं बाहिं सहगुहो व्व राईसु' (वृ)।

सहज्झय—पड़ोसी (कु पृ २२४)।

सहण—साथ—'सहणं ति देसीभासा सहेत्यर्थः' (सूचू १ पृ १०७)।

सहत्थकारी—दक्ष, निपुण (अंवि पृ ६८)।

सहरला—महिषी, भैंस (दे ८।१४)।

सहिणग—वस्त्र-विशेष (जीव ३।५६५)।

सहोढ—चोरी की वस्तु-सहित—'सहोढ गहितो पलंबठाणेसु' (निभा ४७८२)।

साइ—कमल-केसर, किंजल्क (दे ८।२२)—'सालतले सारिठिआ अच्चइ चण्डि ससाइपउमेहिं' (वृ)।

साइअ—१ संस्कार (दे ८।२५)। २ आलिंगन।

साइज्जिअ—अवलम्बित (दे ८।२६)।

साइतंकार—स-प्रत्यय, विश्वस्त—'जं च राएण उल्लवियं साइतंकारो तेण तं पत्तए लिहियं' (आवहाटी २ पृ १४२)।

साइयंकार—विश्वस्त—'पुच्छा समणे कहणं साइयंकारसुमिणाई' (पिभा ३३)।

साउल्ल—अनुराग, प्रेम (दे ८।२४)।

सांड—सांड, वृषभ (व्यभा ४।२ टी प २०)।

साकिज—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

सागारिय—मैथुन—'जे छेए से सागारियं ण सेवए—सागारियं मेहुणं ससमयवण्णो वा' (आ ५।१० चू)।

साडक—बालक—'सिगक-खुड्डक-बालक-साडक' (अंवि पृ १६६)।

साणद्धअ—उत्तेजित (दे ८।१३)।

साणुप्पग—प्रभात—'सानुप्रगे—प्रत्यूषवेलायां लभ्यते या भिक्षा' (बृभा १६७६ टी)।

साणुप्पय—दिन का अन्तिम प्रहर—'साणुप्पओ णाम चउभागावसेसचरिमाए' (निचू २ पृ २६७)।

साणुप्पाय—दिवस का अन्तिम प्रहर (नि ४।१०८ पा)।

साणुवेला—प्रभात—'जाव जणो ण संचरति ताव साणुवेलाए दोसीणं तक्कं वा गेण्हंति' (निचू ४ पृ १२२)।

साणूर—देवालय, देवमंदिर (दे ८।२४)।

साधी—क्रम, पंक्ति (निचू ४ पृ २३८)।

साभरग—रुपया, सिक्का—'साभरग त्ति देशीवचनाद् रूपकाः' (बृटी पृ १८६)।

सामंती—समभूमि (दे ८।२३)।

सामग्गिअ—१ चलित। २ अवलम्बित। ३ पालित, रक्षित (दे ८।५३)। ४ आलिंगित (पा १५१)।

सामच्छण—मंत्रणा, पर्यालोचन (बृभा ११६१)।

सामच्छिय—पर्यालोचित, सुचिंतित (उसुटी प ७)।

सामत्थ—मंत्रणा, पर्यालोचन (व्यभा ४।३ टी प ५२)।

सामत्थण—पर्यालोचन—'सामत्थणं देशीवचनतः पर्यालोचनं भण्यते' (आवहाटी १ पृ ७३)।

सामरि—शाल्मली, सेमर का पेड़ (दे ८।२३)।

सामाइत—१ वह व्यक्ति जिसको रात्री में नहीं दिखता, रात्री-अन्धक। २ कृषक (दअचू पृ ५१)।

सामिअ—दग्ध (दे ८।२३)।

सामिणी—स्त्री का संबोधन (द ७।१६)—'सामिणित्ति सव्वदेसेसु, सामिणीगोमिणीओ चाटुवयणं' (दअचू पृ १६८)।

सामुंडुय—तृणविशेष, वरु (पा ३७३)।

सामुद्द—इक्षु-सदृश तृण (दे ८।२३)।

साय—१ महाराष्ट्र का एक नगर। २ दूर (दे ८।५१)।

सायंकार—सत्यंकार, सत्य-करण (स्था १०।९६)।

सायंदूर—महाराष्ट्र का एक नगर (दे ८।५१ वृ)।

सायंदूला—केतकी, केवड़े का गाछ (दे ८।२५)।

सायमंडुक्कि—वनस्पति-विशेष (भ २१।२०)।

सारमिअ—स्मारित, याद कराया हुआ (दे ८।२५)।

सारवण—१ समारचन, सम्मार्जन। २ निष्क्रय (ओटी प ४१)।

सारविय—साफ किया हुआ (बृभा १५५१; दे ८।४६)।

सारा—भुजपरिसर्पिणी (जीव २।६)।

साराडि—आटी पक्षी, शरारी पक्षी (दे ८।२४)।

सारि—ऋषि का आसन-विशेष (पा ६५४)।

सारिकह—गृहस्थ, शय्यातर—'सारिकह त्ति सागारिकः—शय्यातरः' (बृटी पृ ३९३)।

सारिच्छिआ—दूर्वा, दूब (दे ८।२७)।

सारित—आहूत, आकारित—आरिओ आगारितो सारितो वा एगट्ठं' (निचू ४ पृ २४४)।

सारी—१ वृसी, ऋषियों का आसन (दे ८।२२)। २ मिट्टी—'सारी मृत्तिकेत्यन्ये' (वृ)। ३ मैना, पक्षि-विशेष (अंवि पृ २५८)।

साल—१ छाल—'बाहिरा छल्ली सालं भण्णइ' (निचू ३ पृ ४८१)। २ अच्छिन्न छल्ली—'नखादिभिः अक्खुण्णं सालं भण्णति' (निचू ३ पृ ४८२)।

सालंकी—सारिका, मैना (दे ८।२४)।

सालंगणी—अधिरोहिणी, सीढी (दे ८।२६)।

सालग—१ रस, गिरी (आचूला ७।२९)। २ बाहरी छाल (निचू ४ पृ ६५)। ३ लम्बी शाखा।

सालहिया—सारिका, मैना (प्रसाटी प ६३; दे ८।२४)।

सालही—सारिका, मैना (दे ८।२४)।

साला—शाखा (सू २।२।२३; दे ८।२२)।

सालाका—पक्षिणी-विशेष—'कोरी मदणसलाग त्ति सालाका कोकिल त्ति वा' (अंवि पृ ६६)।

सालाकालिक—गोल खाद्यपदार्थ—'पेंडिका वा पप्पडे वा मोरेंडकाणि वा सालाकालिकं वा अंबट्ठिकं वा' (अंवि पृ १८२)।

सालाणअ—१ स्तुत, जिसकी स्तुति की गई हो वह (दे ८।२७)। २ स्तुत्य, स्तुति-योग्य (वृ)।

सालिंगणवट्टिय—शरीर-प्रमाण वाले उपधान वाला—'सहालिंगनवर्त्या-शरीरप्रमाणोपधानेन यत् तत् सालिंगन-वर्तिकम्' (ज्ञाटी प १७)।

सालिका—एक प्रकार की नौका—'णावा पोतो कोट्टिंबो सालिका तप्पको' (अंवि पृ १६६)।

सालिभ—पर्वत की गुफा में रहने वाला प्राणी-विशेष—'अच्छभल्ला तरच्छा सालिभा सेधका' (अंवि पृ २२७)।

सालुअ—१ शम्बूक, शंख। २ शुष्क यव आदि धान्य का अग्रभाग (दे ८।५२)।

सालुग—शालि, यव आदि का अग्रभाग—'सालि-जव-अच्छि-सालुग, णिस्सरणं मासमुग्गमादीसु' (बृभा ३३०७)।

सावअ—१ शरभ, श्वापद पशु-विशेष (दे ८।२३)। २ बालों की जड़ में होने वाला क्षुद्र कीट विशेष।

सासवुल—कपिकच्छू, कवाछ का पौधा (दे ८।२५)।

सासा—कान का आभूषण—'सासा-सम्मिका-वतंसक-ओवास-कण्णपीलक' (अंवि पृ १८३)।

सासेरा—यान्त्रिक नर्तकी—'देशीपदत्वाद् यन्त्रमयी नर्तकी' (बृटी पृ १६४५)।

साह—१ बालू। २ उल्लू। ३ दधिसर, दही की मलाई (दे ८।५१)। ४ प्रिय, पति।

साहंजण—गोक्षुर, गोखरू (दे ८।२७)।

साहंजय—गोक्षुर, गोखरू (दे ८।२७)।

साहणा—कथन (व्यभा ६ टी प १६)।

साहरअ—मोहरहित (दे ८।२६)।

साहरक—रुपया—'साहरको णाम रूपकः' (निचू २ पृ ६५)।

साहस—परदारगमन–'साहसमिति परदारगमनम्' (सूचू १ पृ १०५)।

साहि—१ ईरान देश का सामन्त–'तत्थ एगो साहित्ति राया भण्णति' (निचू २ पृ ५६)। २ राजमार्ग–'साहिशब्दो राजमार्गे देशी' (से १२।६२)।

साहिअय—कथित, प्रतिपादित। (पा १४५)।

साहिणिया—गीतिका–'तरुणा सूरजुवाणा इमं साहिणियं गायंति' (आवहाटी २ पृ ४५)।

साहिय—कथित (आ ८।८।१२)।

साहिलय—मधु, शहद (दे ८।२७)।

साही—१ छोटा दरवाजा, खिड़की–'साही पुरोहडे वा उवस्सए मत्तगम्मि वा णिसिरे' (ओनि ६२२)। २ मार्ग, रास्ता–'णोघरंतरडणेगविहं वाडग साही निवेसण गिहेसु' (पिनि ३३४)। ३ मुहल्ला, रथ्या (दअचू पृ ४७; दे ८।६)। ४ गृहपंक्ति–'घरपंती साही भण्णति' (निचू २ पृ २०६)।

साहोय—गृहपंक्ति (बृभा २२१०)।

साहुली—१ शाखा (निचू १ पृ ८५; दे ८।५२)। २ वस्त्र। ३ भौंह, भ्रू। ४ भुजा। ५ सदृश। ६ कोयल। ७ सखी (दे ८।५२)। ८ कटिवस्त्र (पा ११७)। ९ मयूर-पिच्छ।

साहेज्जअ—अनुगृहीत (दे ८।२६)।

सिअ—चंवर–'से सिएण वा विहुयणेण वा....न फुमेज्जा' (द ४ सूत्र २१)।

सिअंग—वरुण, जलदेवता (दे ८।३१)।

सिआली—डमर, राष्ट्रविप्लव (दे ८।३२)।

सिइ—सीढी (पिनि ४७३)।

सिउंठा—साधारण वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३५)।

सिउंढि—साधारण वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।४८।१)।

सिखल—नूपुर, घुघरू (दे ८।१०)।

सिग—कृश, दुर्बल (दे ८।२८)।

सिगक—बालक (अंवि पृ १६९)।

सिगग—पानी छिड़कने का पात्र-विशेष–'सिंचिज्जइ सिगगादिणा' (निचू ४ पृ ४७)।

सिगणा—१ याचना। २ पहचान–'मा तस्स पुव्वसामी सिगणं करिस्सति' (निचू ३ पृ ४६२)।

सिंगनाइय—संघ का कार्य (नंदीटि पृ १६२)।

सिंगय—तरुण (दे ८।३१)।

सिंगरेखाणिय—कर्माजीवी (अंवि पृ १६०)।

सिंगा—फली (आचू पृ ३४१)। सिंगा (गुजराती, मराठी, कन्नड़)।

सिंगाडय—गले का हार, आभूषण (कु पृ ८३)।

सिंगालक—पक्षी-विशेष (अंवि पृ २३८)।

सिंगिका—बालिका—'दारिया बालिया व त्ति सिंगिका पिल्लिक त्ति वा' (अंवि पृ ६८)

सिंगिणी—गाय (दे ८।३१)।

सिंगिरिड—चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।५१)।

सिंगिरीडि—चतुरिन्द्रिय जंतु-विशेष (उ ३६।१७)।

सिंगेरिवम्म—वल्मीक (दे ८।३३)।

सिंगुग्गु—वनस्पति-विशेष (अंवि पृ २३२)।

सिंघाडय—राहु का नाम—'राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—सिंघाडए जडिलए' (भ १२।१२३)।

अ—राहु (दे ८।३१)।

सिंटी—नाक छींकने का शब्द (आवचू १ पृ ३०)।

सिंड—मोटित, मोड़ा हुआ (दे ८।२६)।

सिंढ—मयूर, मोर (दे ८।२०)।

सिंढा—नासिका-नाद, नाक की आवाज (दे ८।२६)।

सिंढिय—श्लैष्मिक (व्यभा १० टी प ३)।

सिंद—खजूर (आवहाटी १ पृ १४८)।

सिंदवासि—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।

सिंदि—खजूरी—'सिंदि—खज्जूरी' (आवचू १ पृ ३१६)।

सिंदी—खजूरी—'सिंदिकंदयेण आहणामित्ति पहाविंतो, सिंदी—खजूरी' (आवहाटी १ पृ १४८; दे ८।२६)।

सिंदीर—नूपुर (दे ८।१०)।

सिंदु—रस्सी (दे ८।२८)।

सिंदुरय—१ राज्य। २ रज्जु (दे ८।५४)।

सिंदुवण—अग्नि (दे ८।३२)।

सिंदोल —खजूर (पा ३६८)।

सिंदोला—खजूरी, खजूर का पेड़ (दे ८।२६)।

सिंपुअ—भूतगृहीत, भूताविष्ट (दे ८।३०)।

सिंबलि—शाल्मली वृक्ष (भ ७।१३)।

सिंबलिगि—शाल्मली वृक्ष—'सिंबलिगिं विउव्वित्ता तथारुभिऊणं कड्ढेंति' (सूचू १ पृ १२६)।

सिंबाडी—नाक से होने वाली आवाज (दे ८।२६)।

सिंबीर—पलाल (दे ८।२८)।

सिंभ—श्लेष्म, कफ (प्र १०।६)।

सिंव—नाव के बीच का स्तंभ जहां पाल बांधा जाता है (निचू १पृ७४)।

सिंहलिआ—शिखा, चोटी (पा ६४)।

सिकुत्थी—जलचर परिसर्प-विशेष (अंवि पृ ६६)।

सिकूवाली—जलचर परिसर्प-विशेष (अंवि पृ ६६)।

सिक्क—छींक (कु पृ २२)।

सिक्कगणंतअ—छींके का आच्छादन—'सिक्कगणंतओ उ पोणओ उच्छाडणं भण्णति' (निचू २ पृ ३८)

सिक्कगणंतग—छींके का आच्छादन (नि १।१३)।

सिक्कडि—डाकिनी (उसुटी प ८०)।

सिक्कणंतग—छींके का आच्छादन (निचू २ पृ ३७)।

सिक्कयंतय—छींके का ढक्कन,—'अह सिक्कयंतयं पुण, सिक्कतओ पोणओ मुणेयव्वो' (निभा ६४५)।

सिक्कर—खंड, टुकड़ा—'सयसिक्करे गओ' (उसुटी प ४२)।

सिगिला—जलचर परिसर्प-विशेष (अंवि पृ ६६)।

सिगिलि—प्राणी-विशेष (अंवि पृ २३७)।

सिग्ग—१ परिश्रम—'सिग्गत्ति देशीपदमेतत् परिश्रम इत्यर्थः' (व्यभा ४।४ टी प ६)। २ श्रांत, थका हुआ (ओनि २४; दे ८।२८)।

सिग्गअ—श्रम (ओटी प ६२)।

सिग्गड—कला-विशेष (कु पृ १५०)।

सिचकत—वस्त्र-विशेष (अंवि पृ १४१)।

सिज्जूर—राज्य (दे ८।३०)।

सिज्जिया—साथ में रहने वाली, पड़ोसिन (बृभा १७२५)।
सिट्ठ—चेष्टा—'छेदणादिसिट्ठेहिं अच्छंति' (निचू २ पृ ५)।
सिण्हक—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ६३)।
सिण्हा—१ ओस, कुहरा (पंव ८०; दे ८।५३)। २ हिम (दे ८।५३)। ३ शिशिर—'सिण्हा शिशिरे देशी'।
सिण्हालय—फल-विशेष (अनु ३।५१)।
सित—चंवर—'सितं चामरं' (दअचू पृ ८६)।
सिति—सीढी (जीभा ३२६)।
सितीय—१ शिविका। २ निःश्रेणी (अंवि पृ ३१)।
सित्थ—१ जीवा, धनुष्य की डोरी—'सित्थं जीवा गुणो पडंचा य' (पा २७७)। २ मत्स्य की जाति-विशेष (अंवि पृ २२८)।
सित्था—१ लार, लाला। २ जीवा, धनुष की डोरी (दे ८।५३)।
सित्थि—मत्स्य (दे ८।२८)।
सिद्ध—परिपाटित, विदारित (दे ८।३०)।
सिद्धत्थ—रुद्र, महादेव (दे ८।३१)।
सिप्प—पलाल, तृण-विशेष (दे ८।२८)।
सिप्पिका—सीप, घोंघा (अंवि पृ २६७)।
सिप्पिय—पलाल, तृण-विशेष (भ २१।१६)।
सिप्पिर—तृण-विशेष (प्रज्ञाटी प ३३)।
सिप्पिसंपुड—द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (प्रज्ञा १।४६)।
सिप्पी—सूई (निचू १ पृ ५२)।
सिभम—श्लेष्म (भ ७।११६)।
सिय—चामर (द ४।२१)।
सियलिया—रोग-विशेष (निचू २ पृ २१५)।
सियवल्ली—वृक्ष-विशेष (आचू पृ ३७३)।
सियाण—श्मशान (व्यभा ७ टी प ७६)।
सिरिंग—विट, लम्पट (दे ८।३२)।
सिरिदृह—पक्षियों का पान-पात्र (राजटी पृ १०५)।
सिरिदृही—पक्षियों का पानपात्र (दे ८।३२)।
सिरिमुह—मदमुख, जिसके चेहरे पर नशे की झलक हो (दे ८।३२)।
सिरियक—गुल्म-विशेष (अंवि पृ १४१)।

सिरिली—कन्द-विशेष (भ ७।६६)।
सिरिवअ—हंस (दे ८।३२)।
सिरिवच्छोव—गोपाल, ग्वाला (दे ८।३३)।
सिरिवेट्ठक—उद्भिज्ज जंतु-विशेष (अंवि पृ २२६)।
सिलअ—उञ्छ, गिरे हुए अन्नकणों का ग्रहण (दे ८।३०)।
सिलंब—बालक, बच्चा (पा ६५)।
सिलिका—शलाका—'दढवज्जसिलिकाणिम्मवियं पिव तुह हिययं' (कु पृ २३)।
सिलिंब—शिशु (दे ८।३०)।
सिलेच्छिय—मत्स्य की एक जाति (जीवटी प ३६)।
सिल्लि—रज्जु, रस्सी (उसुटी प ३१६)।
सिल्हा—शीत—'सिल्हा शीते देशी' (से १२।७)।
सिव्वणी—१ सिलाई (निचू ३ पृ ६०)। २ सूची, सूई (नंदीटि पृ १३८)।
सिव्विणी—सूची, सूई (दे ८।२६)।
सिव्वी—सूई (दे ८।२६)।
सिसिर—दही (दे ८।३१)।
सिस्सिरिली—कन्द-विशेष (उ ३६।६७)।
सिहंड—चोटी (पा ६४)।
सिहंडइल्ल—१ बालक। २ दधिसर, दही की मलाई। ३ मयूर (दे ८।५४)।
सिहरिणी—सिखरन, दही-चीनी से बना खाद्य-विशेष (प्र १०।६; दे ८।३३)।
सिहरिल्ला—सिखरन, दही-चीनी से बना खाद्य-विशेष (दे ८।३३)।
सिहि—कुक्कुट, मुर्गा (दे ८।२८)।
सिहिण—स्तन (दे ८।३१)।
सिहिरिणी—दही और चीनी से बना खाद्य-विशेष (आचू पृ ३३६)।
सीअ—सिक्थक, मोम (दे ८।३३)।
सीअउरय—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञाटी प ३२)।
सीअणय—१ दुग्धपारी, दूध दोहने का पात्र। २ श्मशान (दे ८।५५)।
सीअल्लि—१ हिमकाल में होनेवाला मेघाच्छन्न दिन। २ झाड़ी, लतागहन (दे ८।५५)।
सीआलोयय—१ चन्द्रमा। २ हिमऋतु (से ३।४७)।

सीइआ—झड़ी, निरन्तर वृष्टि (दे ८।३४)।
सीई—सीढ़ी, निःश्रेणी (पिनि ९८)।
सीउक—मस्तक का आभूषण-विशेष (अंवि पृ ६४)।
सीउग्गय—सुजात, कुलीन (दे ८।३४)।
सीकवल्लोकी—वृक्ष-विशेष (अंवि पृ ७०)।
सीकुंडी—छोटा मत्स्य-विशेष (अंवि पृ २२८)।
सीकूणिक—जलज प्राणी-विशेष (अंवि पृ २२९)।
सीडा—फल-विशेष—'रातण-तोडण-सीडा लउसु तुंबुरु पिप्पलफलेसु' (अंवि पृ २३८)।
सीत—चामर—'सीतं चामरं भण्णइ' (दजिचू पृ १५६)।
सीता—शरीर का अवयव-विशेष—'णासिका कण्णपालीओ थूणा सीता य तालुका' (अंवि पृ ६६)।
सीताण—श्मशान (निभा ६११२)।
सीतिय—सोपान, सीढी—'सोमाणे सीतियं वा वि' (अंवि पृ ३३)।
सीपिंजुला—पक्षिणी-विशेष—'उलुकी मालुका व त्ति सेणा सीपिंजुल त्ति वा' (अंवि पृ ६९)।
सीभर—१ समान, तुल्य—'तत्थवि सीभरमेव उवदिसियव्वं' (आचू पृ २६२)। २ बोलते हुए थूक उछालने वाला (व्यभा ४।३ टी प २९)।
सीभरग—बोलते समय थूक उछालने वाला (व्यभा ४।३ टी प २९)।
सीमंतय—सीमंत—बालों की रेखा-विशेष (मांग) में पहना जाने वाला अलंकार-विशेष (दे ८।३५)।
सीय—१ शिविका—'सीय त्ति शिविका कूटाकारेणाच्छादितो जम्पानविशेषः' (भटी पृ ७३०)। २ सोम (आवचू १ पृ ५)।
सीयउरय—गुच्छ वनस्पति-विशेष (प्रज्ञा १।३७।३)।
सीयाण—श्मशान (व्यभा ७ टी प ५५)।
सीयालु—जिसे सर्दी अधिक लगती हो वह (निचू २ पृ ४२८)।
सीरिय—भिन्न (पा ९२४)।
सीरोवहासिआ—लज्जा (दे ८।३६)।
सीलुट्ट—खीरा, ककड़ी (पा ४७७)।
सीलुट्टय—त्रपुस, खीरा (दे ८।३५)।
सीवणी—सूई—'तेण सीवणीए सीविऊण विसज्जियं' (आवहाटी १ पृ २८५)।

सीसक्क—शिरस्त्राण, शिर की रक्षा के लिए पहना जाने वाला फौलादी टोप (दे ८।३४)।

सीसपुच्छ—पीठ की चमड़ी (सूनि ६८)।

सीसय—प्रवर, श्रेष्ठ (दे ८।३४)।

सीहंडअ—मत्स्य (दे ८।२८)।

सीहकेसरय—विशेष प्रकार के मोदक (पिनि ४६१)।

सीहणही—१ करमन्दिका, करौंदी का वृक्ष (दे ८।३५)। २ करौंदी का पुष्प—'सीहणही करमन्दिका। तत्कुसुममित्यन्ये' (वृ)।

सीहपुच्छ—पीठ की चमड़ी—'कप्पंति कागणीमंसगाणि छिंदंति सीहपुच्छाणि' (सूनि ७७)।

सीहरअ—आसार, तेजवर्षा (दे ८।१२)।

सीहलय—वस्त्र आदि को धूपित करने का यन्त्र (दे ८।३४)।

सीहलिआ—१ शिखा, चोटी। २ नवमालिका, नवारी का गाछ (दे ८।५५)।

सीहलिपासग—वेणी बांधने के लिए काम में आने वाला ऊन या स्वर्ण का कंकण (सू १।४।४२)।

सुअणा—अतिमुक्तक वृक्ष (दे ८।३८)।

सुई—बुद्धि (दे ८।३६)।

सुंकय—किशारु, जौ आदि का अग्रभाग (दे ८।३८ वृ)।

सुंकल—किशारु, धान्य आदि का अग्रभाग (दे ८।३८)।

सुंकलि—तृण-विशेष (भ २१।१६)।

सुंकलिकडय—क्रीडा-विशेष—यह खेल वृक्ष को केन्द्र मानकर खेला जाता है। खेलने वाले सभी बच्चे वृक्ष की ओर दौड़ते हैं। जो बच्चा सबसे पहले वृक्ष पर चढ़कर उतर आता है, वह विजेता माना जाता है। विजेता बच्चा पराजित बच्चों के कंधों पर बैठकर दौड़ के प्रारम्भ बिन्दु तक जाता है—'भगवं च पमद-वणे चेडरूवेहिं सद्धिं सुकलिकडएण अभिरमति' (आवचू १ पृ २४६)।

सुंग—वर्षात्राण के उपकरण का एक प्रकार—'वालो सुत्तो सुंगो' (जीविप पृ १७)।

सुंघिअ—घ्रात, सूंघा हुआ (दे ८।३७)।

सुंठय—पकाने का भाजन-विशेष—'मीरासु सुंठएसु य कंडूसु य पयणगेसु य पयंति' (सूचू १ पृ १२४)।

सुंडक—पकाने का भाजन-विशेष—'मीरासु सुंडएसु य कंडूसु पयणगेसु य पयंति' (आवहाटी २ पृ १०७)।

सुंभल—चोटी, शेखरक (ज्ञा १।८।७२ पा)।

सुंभलग—मदिरा-विशेष (अंवि पृ २४७)।

सुंसुमारित—वाद्य-विशेष (आवचू १ पृ ३०६)।

सुकुमालिअ—सुघटित (दे ८।४०)।

सुक्ख—कंडा—'गोब्बरो त्ति करीसं त्ति सुक्खं वा छगणं पुणो' (अंवि पृ १०६)।

सुग—सूची, सूई—'तण सुगादी साधू अणाभोगेण अणणुण्णवितं गेण्हेज्ज' (दअचू पृ ८४)।

सुगिम्हअ—फाल्गुन का उत्सव (दे ८।३६ वृ)।

सुग्ग—१ आत्मकुशल। २ निर्विघ्न। ३ विसर्जित (दे ८।५६)।

सुघर—गोत्र-विशेष (अंवि पृ १५०)।

सुजड्ढिय—भली भांति बंद किया हुआ—"चाणक्कघरमणुप्पविट्ठो ओव्वरगं सुजड्ढियं दट्ठुं चिंतेति' (दअचू पृ ४२)।

सुज्झ—धातु-विशेष (राज १७४)।

सुज्झय—१ रौप्य, चांदी। २ धोबी (दे ८।५६)।

सुज्झरअ—रजक, धोबी (दे ८।३६)।

सुढिअ—१ श्रान्त, थका हुआ (दे ८।३६)। २ संकुचित अंग वाला (बृभा ३४६)।

सुढित—चरणों में गिरा हुआ—'छन्नालयम्मि काऊण कुडियं अभिमुहंजली सुढितो' (बृभा ३७४)।

सुणेलूग—श्रोता, सुनने वाला (सूचू १ पृ १८५)।

सुण्हसिअ—स्वपनशील, सोने की आदत वाला (दे ८।३६)।

सुत्त—१ कांजी (बृभा ८०१)। २ मद्य के नीचे का कर्दम। ३ द्रव्य-विशेष—'सुत्तं मदिराखोलः देशविशेषप्रसिद्धो वा कश्चिद् द्रव्यविशेषः' (बृटी पृ १५५७)।

सुत्तजगलिका—त्रीन्द्रिय जंतु-विशेष—'सुत्तजगलिका कुंथू उरणी सुयम्मुत्ता' (अंवि पृ २३७)।